भारत-भ्रमण।

पांच खण्डों में से

→ अप्रिथम खण्डे अस्ट् बाबू साधुचरणप्रसाद विरचित जिसमें भारतवर्ष अर्थात् हिन्दुस्तान के तीर्थ, शहर और अन्य प्रसिद्ध स्थानों के भूतकालिक और वर्त्तमान काल के ब्रत्तांत पूर्ण रीति से लिखे गए हैं।

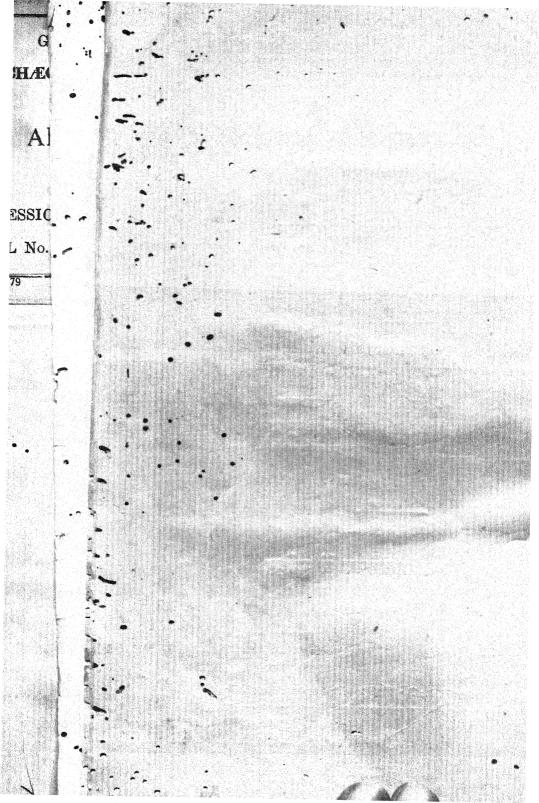
पेक्ट २५ सन् १८६७ ई० के अनुसार रिजस्तरी हुई है इसे छापने वा अनुवाद करने का कोई साहस न करें।

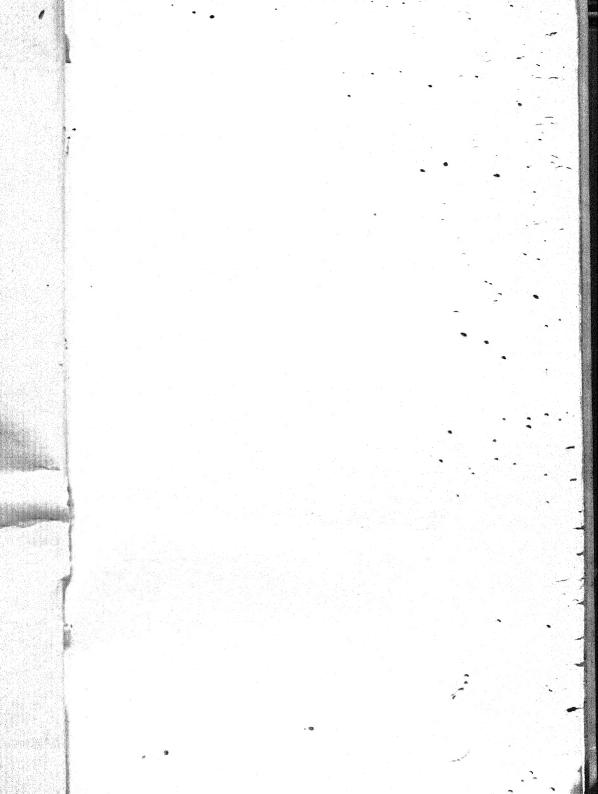
काशी।

हरिप्रकाहा यन्त्रालय में मुद्रित

१९०२ ई०

पतिती बार १०५० पुस्तक छपी मृत्य प्राते पुस्तक १॥) केवल प्रेस का खर्च





HÆ

A

essiq - -

. No. . -

79



बाबू तपसीनारायण प्रन्थकर्त्ता के लघुभाता



436 पांच बण्डों में से प्रथम खण्ड ।

बाबू साधुचरण प्रसाद लिसित्

जिसमें

भारत वर्ष अर्थात् हिन्दुस्तान के तीर्थ, शहर और अन्य प्रसिद्ध स्थानों के भूतकाछिक और वर्त्तमान काल के दृत्तांत पूर्ण रीति से लिखे गए हैं।

ऐक्ट २५ सन् १८६७ ई० के अनुसार रिजस्तरी हुई है इसे छापने वा अनुवाद करने का कोई साहस न करें।

910.40954 Sad

काशी।

हरिप्रकाश यन्त्रालय में मुद्रित

१९०२ ई०

पहिली बार) १००० पुस्तक र् मूल्य प्रति पुस्तक १॥) केवळ प्रेस का खर्च े ५।

LIBRARY NEW DELHL

LIBRARI DEN DEURL

JHÆ CENTRAL ARCHAEGE SOIGAL Aca No. ESSIC -L No.

भारत-भ्रमण के पांचो खण्ड का सूंचीपत्र, अकारादि अक्षर के क्रम से;—*

-656:03

तीर्थ, शहर आदि	खंड	पृष्ठ	तीर्थं, शहर आदि	खं	ड पृष्ठ
√ श्रजयगढ़	1	१६९	/अलीबाग		५१६
∽ भळवर	१	233	/अहमदाबाद	. 8	498
्र भ जमेर शहर	2	₹ ₹₹	अ ल्मोड़ा	4	. 840
🗡 अजमेर देश	ŧ	३३७	शाजमंग ढ़	•	११६
अमरकंटक तीर्थं	१	धरे	आगरा	• 8	. २१८
< अयोध्या तोर्थं	Ŕ	२४	∕शारां	•	(
√अवध प्रदेश	२	११६	/आसाम देश	•	१६३
√भ्रमृतसर तीर्थं	₹	इंहर	+आसनसोल	ŧ	१
√अमरनाथ शिवं	R	850	/आरकाट	. :	3 558
्रभटक	হ	४१ ९	आरकोनम् जंक्शन	. (३ .२१२
/अमरकोद	৾ঽ	४५ ६	/आवू पहाड़	•	३ ७०८
्भ लोगढ़	ঽ	428	/आदि बदरी तीर्थं	•	१०७
्धज्ञ गयबोनाथं	ą	११४	शॉकारनाथ तीर्ध		इ १४
्रभमरावती	ક	४८	औरंगाबाद	•	३ ७२
∕ अ कोला	8	५३	/अंबाला		१ ३०इ
अजंता के गुफा मन्दिर	ષ્ટ	६०	इलाहाबाद तीर्थं		१ १२४
√शहमदनगर	8	ટર	। इटारसी जंक्शन		१ २०१
+ अनकापल्ली	ક	१२६	'हरावां	•	4419
्रवानी	왕	१८८	इलोरा के गुफा मन्दिर	-4	14
ंगमरनाथ	ß		⊬ वैरोर्ड		342

जिन कसनों या स्थानों के नाम इस खर्की पत्न में नहीं हैं, वे उन जिलों या राष्यों
 के नृत्तांतों में स्थिति, जिनमें वे कसने या स्थान है।

	. 21 M.AI	an Alia	ग लण्ड का सचापता		
ं तीर्थं, शहर आद्	खंब	. de	। तीर्थं, शहर आदि	खंश	g
√ ब न्दौर	٤	. ४०२		¥	
- 🕂 इङ्गलिस बाजार	ą		र्ककृपा	ध	
√डरङा	१		क ड़ालूर	8	- \``\ - 288
्रं डदयपुर	ę		क्रकर े	당	388
्र डज्जैन तीर्थ	ą.		कलीकोद	8	३७२
√उमाव ं	ঽ		√कननृर	8	360
्र चड़ीसा वेश	ą		कल्याण	8	४९५
√ ड व्यगिरि	ą		कनारी के गुफामन्दिर	R	५५८
°⊣ उत कमंद	ધ		कच्छ-राज्य	ક	६२७
्रडत्तरकाशो तीर्थं	Ć,		कल्पेश्वर तीर्थं	4	१०८
्र डबीमङ तीर्थ	ų		कर्णं प्रयाग तीर्थं	ષ	१४०
+ षबदाबाद	Ą		काशी तीर्थ		१३
्र प दा	*		कालिंजर तीर्थ	8	१६४
्र पलिचपुर	B	ધ્યુ .			१८५
√ पळीर	ß		काइमीर देश	٠ ٦	४ १०
मिलिफेंटा के गुफामन्दिर	y		/कासगंज	٠ ٦	428
√करवी .	१	१५७	ं कानपुर	ર	५४७
∕ क रौली	ર	1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1	कामाक्षा तीर्थं	3	१५७
🖊 कनखल तीर्थ	2	1 2 1 1 1 1 1 1 1 1	-कामटी	8	٠. ٦٤
∕ कर्नाल	2		ं काछहस्तो तीर्थं	ध	१९५
√ कपुरथ ला ः	₹	The second re-	/कारवार	ષ્ઠ	880
✓कटासराज तीर्थं	ঽ	Table 1 and	कारली के गुफामन्दिर	B	838
+ करांची	ર		काठियावा <i>ड</i>	¥	६१२
√कस् ^र	ર	४७२	काठगोदाम	4	१५८
∕ केकोज ेे	ર		∤काशोपुर	4	१५९
√कळकत्ता े	ą		∕कांगड़ा तीर्थ	٠ ٦	348
∕ कटक ।	ą		कांचो तीर्थ	ષ્ઠ	૨ ૫૫
√कवरदह तीर्थं	8	818	∕কাৰ •	u	6.70

						•
तीर्थं, शहर अदि	खंड	ৰূম্ভ	तीर्थं, शहर आदि		खंड	र्वेह
√किसनगढ़	8	३३२	खुलनां		ą	२०६
√किष्किन्धा तीर्थं	ધ	१५५	ें बेड़ा		ક	492
कुरुक्षेत्र तीर्थ	ર	३१३	/खैराबाद		ર	१२६
ेक ुष्टिया	ર	१८२	खैरपुर	•	₹	880
∕कुं द्रमाळ	당	१०	ेखैरागढ़		ម	રક
्रकुमारस्वामी तीर्थ	ម	१५०	खंडवा	•	Ą	४१८
्रकु मारी तीर्थ	8	38€	. खंडगिरि		ą	२१०
्रकुर्ग देश	8	362	गढ़मुक्ते इवर तीर्थ		ંર	813
्कुम्भकोषम् तीर्थं	8.	२७७	गया तीर्थ		₹.	· १५ ·
√कृचविहार	ą	इ क्ष	्रगद् श		8	१७२
√ कृष्णनगर	ð	२०१	गाजीपुर		٠ ٠	3
अकेदारनाथ तीर्थं	ų	८२	ं वालियर		1	२०३
⊸कोटा	8	इ७४	/ग्वालपाड़ा		ą	१५२
्रकोहाट	ર	ध २५	ंग्वालंडो		à.	१८५-
ंकोदरी	१	843	गिरनार पर्वत तीर्थं	•	8	६८१
∕को हिमा	. 2	१७६		•	ર	344
- ोको मिला	1	888	्गुज्ञरांवाळा		ર	388
ंकोणार्क तीर्थं	ą	329	गुजरात शहर		ર	Rod
⊹कोकालाइा	ષ્ઠ	१२५	भुरगांवा		ર	४८३
√कोचीन	ध	३५६			8	38
⊬कोचीन देशी राज्य	ષ્ટ	३५८	गुजरात देश		¥	६०४
∕कोयम्बत् र	ន	३६३	र्गुप्तकाशी तीर्थं		4	દ્દછ
∨कोलार [`]	8	330	गुंदूर			१३१
∽कोल्हापुर	8		∤गुंटकल जंक्शन			१४५
ेखाना जंक्शत	3	340	गूडी		The State of the	\$28
∔खामगांव े	8	ધક	गोबर्डन तीर्ध	•		२८४
√ खोरी	२	१२८	∕गो क ल तीर्थं			२८६
√शुर्जा .	3	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	गोरखपुर		100 mg 100 mg	e î

तीर्थ, शहर बादि.	खंड	पृष्ठ	वीर्थ, शहर आदि	संड	58
< गीलागोकणनाथ तीर्थं	₹	१२१	/चंदेरी	1	१८१
:√गोआ .	용	ध३६	चंदीसी	R	588
√गोकण तोथं .	8	धधर	/चंबा	R	2419
्रगोकाँक का जलप्रपात	8	४५३	्रमंदर नगर	3	383
√ गोघड़ा	8	466	चं द्रगिरि	¥	२०६
√ गोपेश्वर तीर्थं	4	98	चंद्रोक्य तीर्थं	8	408
√ शोखा	३	80	⁄ छत्त रपुर	ŧ	१७७
्रगोंडळ.	8	६३२	/ छपरा	્ર	•
🖏 गौतंमकुण्ड	ą	90	⊬छोटा नागपुर देश	3	388
· vihigi .	ğ	१२१	जयतपुर	8	१७६
्र गोहार्टी	3	१५४	जयपुर	ę	Sofi
🗸 गौरीकृण्ड तीर्थ	4	७८।	जबलपुर	ę	ध२५
√ गंगासागर तीर्थ	ğ	२६४	जगाद्वी	Ą	३०६
्रांगोत्तरी तीर्थ्	4	ર ૧	जलंघर	ર	230
∕शुरमेश्वर तीथ्	g	७५	ज्वालामुखी तीर्थ	3	इष्ठ७
्र बरसंपुरा	- 8	8.	जनकपुर तोर्थ	ş	30
्र घरणारी	. \$	१७६	जमालपुर	3	१०१
√ घटगांव	ş	१८९	जलपाई गोड़ी	3 -	१३५
4 वादेवा सा	8	. B.	∕जसर ⊹	3	२०५
्र म मोळी॰	4	808	जगनाथपुरी तीथी	3	2:3
√ घ्रोदा →	¥	86 -	जरसोपा का जलप्रपात	ន	८८७
्रचित्रकूट तीर्थं	₹.	१५८	जाळीन	8	१८४
√ विचौर	8	३५३	∕जावरा	8	३८८
⁄ चिकाकोल	R	१३४	ंजाजपुर तीर्थं	₹	३३४
्विद्वरम् तीर्थ	8	२६१५	(जिंजी का किल)	8	२६२
🗸 ब्रीस्वासा भैरव	4	66	्ष ीन्द	ર	850
∕ इंगार	- 8	1-15 1 H 1-1 A 15 A	/जूनागढ़	ષ્ઠ	६७५
्र च्चे गलप र ्	B	242	/जेकवाबाद्	3	840
이 보고 있는 사람들이 있다면 가는 없어 그렇지만 그 그는 그는 그를 모르는 것이 없는 것이 없다.					

						•
तीर्थं, शहर आदि	खंड	বূদ	तोथं, शहरं आदिं	•	वंड	वृ ष्ठ
∔ज्ञेतपुर	R	६८६	तालबेहद		8	१८८
्रजै सलमेर	8		तारकेश्वर तीर्थ		-3	388
्र नीघपुर	१	373	∔ताइपतो		8	660
न्नोशोमठ तीर्थं	4	११०	ितिखहर		२	183
ंन्नोत्नपुर	ą.	883	⊬ तिरूपदी तीर्थं		ध	२०२
∕जंबू	-3	2:5	निष्वकामलई		8	२०८
े जंबुके दवर	8	₹1€	∤तिघत्तनी		ક	२१३
्रह्माळ्यपाटन	8		/तिस्बलूर		8.	283
√ <mark>श्</mark> रांसी	1	१८७	ेतिस्वन्नामलई		B	२६ ८
√ शे लम	2	४०२	ति रूचनापही		8	264
√ क्षांग	ર	ध३२	तिरुचेंदूर तीर्थ		8.	383
∱ टिकारी	3	५६	तिरुवछवेछो		8	384
√टिपरा	3	833	√तिरुबंद्रम्		B	18€
⊣ टिहरी	ų	48	्रियुगोनारायण		4	७३:
∤टीकमगढ़	ą.	१७८	न्तृतिकुड़ी		8	231
√टोंक्त	ર	384	तुंगताथ तीर्थं	•	4	18
√ठहा	2	४५७	/त्यूरा		. 3	840
⁄डलहैं।सी	3	३५६	तेज्ञपुर		3	१७२
⊭ डभोई	8	५७३	तोताद्री तीर्थ		8	३४८
्रहाकौर तीर्थं	8	५८६	∕तंजोर		8	201
√ डिब्रूगढ़	3	१७८	ञ्यंबक तीर्थं		8	400
√ङ्गमरां व		4	-थानेसर तोथ ²		२	212
ं ड्`गर पुर		३८६	थना		8	484
√ढाका	3	१९६	∕दमोह ्		. 8	११२
√तरन तारन तीर्थं	२	३६७.	/दतियाः		1	२०२
🕂 तप्तकुण्ड तीर्थ	1	२८३ ।	/दरभंगा	•	ą	98
∤त छीचेरी	8	306	∕रगदम		3	२१०
†तमकूर •	왕	ध्२०	्र भंशयन तोर्थ		8	286

⁄ क्ष्मण					28
	ક	480	र्मरसिंहपुर		ध२४
/बानापुर	3	4	नवावगंज	२	રહ
⁄ दार्जिलिंग	3	१३६	न्हायगंज	3	880
्रद्वारिका तीर्थं	ម	६३७	<i>,</i> म्हगीना	R	१इ१
√ दिल्ली	8	864	मजोबावाव	ર	१६२
∕ दिंडीगळ	8	३०२	⊹नवशहुरा	3	820
्र हीनाजपुर	1	१३२	नवगांब	3	१७४
ंदे वयानी तीर्थ	ş	380	निद्या तीथ	3	२०१
ं दे वास	1	806	्न ई हाटी	3	206
√देवीपाटन तीर्थ	२	28	निद्याङ्	¥	417
√वेहरा [*]	2	१८६	नवातगर	8	६२ध
र्वराइ स्मा इ लखां	2	ध३६	_ा नागी(द	?	844
ं देरा गोजीखां	3	ध३७	नाहन	વ	3019
्रदेवीपस्तक तीथ ⁰	¥	338	नाधा	3	338
∕ देव प्रयाग तोर्थ [°]	4	२६	/गारायणगंजः	R	2804
्रदी स्रताबाद :	8	७०	-गागपुर	8	30
√ धव लेश्वरम् तोध [*]	8	१२४.	्नागेश तीथ [°]	8	96
√ घा ड ़	१	880	<i>न</i> ।गपट्टनम्	8	२७५
🕂 श्रामशुरः	२	१५१	∕गासिक तोथ"	8	818
∕ ध्रारवाड़	8	४३३.	मारायणसर तीथी		६३ १
✓ धामाकोड़ी तीर्थः	4	E (0)	नारायण कोटी	4	६६
+ झांवधा	8	820	∕गांवेड्	8	8.85
्र धूर्िया	R	६२	- किराना	ş	326
∔ घोंद जंक्शन	8	૮૪	भीमच	ę	340
∕ धेलपुर	8	२१५	∕नेव्लूर	8	200.
⊹मयनी जंक्शनः	ş	58 6	मैमिपारण्य तीर्थं	२	१३२
√म्रसिंह गढ़		888	_∕ ਜੈਧਾਲ ਜੀ ਬੰ	3	60
†ब ्हीरा बाद	8	343	नैनोताल	4	848

					•
खंड	पृष्ठ	तीर्थ, शहर आदि	•	खंड	पृष्ठं
ą	१८७	पांडुआं		ą	१२३
8				8	२६४
1	१७१	/पांडुकेश्वर		ેષ	११५
8	४१ ३		•	3	७ २८
bę	१३७	पीछीभोत		ą	१८७
2	१२९	भीडापुरम्		R	१२६
8	१४४			2	383
į					१३०
१	323	⁄पुबलियां		à	346
R	१०९	⊬पुद्कोटा		8	300
Ŕ				. 8.	800
२				ঽ	820
ą	Ę	ਪੈ ਟਜ		ષ્ટ	७७
ą	१७९	पोर वन्दर		B	६३३
ą	163	।पौड़ो		4	43
놩	હદ	विजाब देश		ঽ	. \$58
8	१३४	∕पंढरपुर तीर्थ		8	29
8				ę	225
ષ્ઠ				ર	३३२
ঽ	इ२४	फर्घखाबाद		ૅર	439
ğ	१३४	कतहपुर		२	448
à	३६४	∙फरोदपुर		ą	१८६
8					338
ષ્ઠ				ঽ	४७२
				न्	204
8	६८७	√बलिया			R
8	513	⁄बहाप्रः			8
¥	300				· O
	M 3	3 4 5 8 9 5 9 5 9 5 9 5 9 5 9 5 9 5 9 5 9 5	३ १८७ वांडुआं ३ ५६१ वांडीचरी वांडीचरी वांडीचरी वांडीचरी वांडीचरी वांडिचरा वांडिचरा वांडिचरा वांडिचरा वांडिचरा वांडिचरा वांडिचरा वांडिचरा वांडिचरा वांडिचरा वांडिचरा वांडिचरा वांडिप्रम्	१८० पांडुआं १६१ पांडीचरी १६९ पांडुकेश्वर १६९ पांडुकेश्वर १६० पांडुकेश्वर १६० पांडुकेश्वर १६० पांडुकेश्वर १६० पांडापुरम् १६० पुंकित तीर्थं १९१ पांडापुरम् १९१ पांडापुरम् १९१ पांडापुरम् १९१ पांडापुरम् १९१ पांडापुरम् १९१ पांडापुर १६० पांटुकोटा १९१ पांडापुर १६० पांटुकोटा १९१ पांडापुर १६० पांडुकोटा १६० पांडुकोटा १९१ पांडापुर १९१ पांडुकोटा १९१ पांडुकोटा १९१ पांडुकोटा १९१ पांडुकोटा १९१ पांडुकोटा १९१ पांडुकोटा १९० पांडुको	३ १८७ पाँडुवां ३ १८७ पाँडुवां १ १८० पाँडुवां १ १८० पाँडुवां १ १८० पाँडुवां १ १८० पाँड्जां १ १८० पाँडापुरम् १ १४४ पुर्कार तीर्थ १ १८० पुर्जां १ १८० पाँड्जां १ ११८० पाँड्जां १ १९८० पाँड्जां १ ११८० पाँड्जां १ १९८० पाँड्जां १

बीर्थ, शहर आदि .	खंड	पृष्ठ	तीथ, शहर आदि	खंड	da
√ग्रनारस तीर्थं	1	83	/बालेश्वर	1	338
√बटेश्वर	1	\$\$8	बासिम	v	44
ं बरसाने तोथी	2	205	वासी	8	4 \$
√ घस्ती ं	ą	18	् <u>बादामी</u>	8	EUS
्रब ळरामपुर	ঽ	20	/बाळाजी तीथ [*]	R	२०३
√वहरारच •	Ą	22	⁄बाईं	8	धद्ध
√ <u>ब</u> रैलो	Ą	188	वाह्वान	8	६१८
√ बटाला	Ą		अंबाडनगर •	8	७०२
k -m-	ą	858	/बांदा	1	EUS
्र बहावलपुर	ą	883	्वां लवाड़ा	ę	364
√ बदाऊः *	R	430	~	1	•
∕बरहं मपु र	ą	१३०	श्वांकुड़ा	ą	340
√ मक् पपुत्र तीर्थं	ą		# विज्ञानर		100
√. बळवाकुण्ड तोथ [°]	1	268	बियावर	1	383
√ घर वान •	1		∕बिझनीर	8	120
्रवस्था •	8	88	∕बिट्रर तीथं	R	431
√ बरार देश ्	8		बिहार देश	1	१०
्र प्रहा पुर	8	१३५	विरादनगर	1	40
्र. •/. बरुटारी	W.		विहार कसवा	ì	42
√.बसीन	V		• बिळासपुर	V	88
⊬बड़ोदा	U		बिरावल	8	846
⊹ बड़ोदा-राज्य	8		/बिष्णुप्रयाग तीथ ¹	4	883
√ बद्रीनाथ तीथ [*]	4		/बिन्ध्याचलं तीथं	1	१२२
ा बादीकुं ई जंक्शन		290	∕बीकानेर	1	388
√बाढ़	ą	७४	/बीदर	U	208
✓ बाराहक्षेत्र तीथ [°]	1		⁄ बीजापुर	¥	१७६
्र भारकपुर	113		्व विरमगीव	8	६१७
√ वारावत			/बीसनगर	e e	७०१

보통 1일 시간 등 경기 위험 기계 시간 시간 시간 시간 시간 시간 통해 1일 기계 보고 기계						
तीर्थं, शहर आदि	खंग	ह पृष्ठ	तीर्थं, शहरं वादि	•	संड	58
√बु रहानपुर	१	ध२१	/भावनगर		ષ્ટ	६१४
√ बु लंदश हर	२	428	∕भिलसा		.3	880
- √बुगड़ा	3	१८०	†भिवानी		3	४८१
⊤ बुन्देलखंड	१	१७३	भीमशंकर तोर्थं		8	890
√ब्दो	8	३७७	/भीलेंदवर तीर्थं		ૡ	धरु
√वृग्दाबन तोर्थ	१	२६७	⁄भोमताळ		4	१५७
+वृद्धवद् री तीथ°	4	१०९	भींगा		२	२३-
∽वे तिया	ą	७९	/भुवनैश्वर तीध ⁹		Ę	263
्र बे जवाड्।	ध	११४	भुसावल		용	ે પૂછ
√ <mark>बे</mark> लूर	8	२०७			8	६२६
√बेलूर	ક	ध२२	भूट। न		, á.	१४२
्रबेलगांव	ध	848			8	२१४
√वेटद्वारिका तीथ ²	R	६५२	a brief to be the transfer and the same and the transfer and the		ę	2
∕वेंक टगिरि	ક	\$88	भीपाल		Į.	8810
ने ब ैरीसाळ	3	२०७	<i>्</i> भंडारा		8	રફ
√वैद्यनाथ तीथ [°]	3	३६५	महोबा		१	१७४
√बोधगया तोध ²	₹	83	मऊ रानीपुर		8	१७७
ेबोद्धस्तूप	ર	८०४	मध्यभारत		-	284
∔बं गाल हाता	3	२५५	मथुरा तीर्ध		8	२३७
े बंगाल देश	3	२५८	मऊ छावनी		2	808
√ बं गळोर	ક	388	-मगहर		ર	१४
√ वंबर्रे	ઇ	488	महाभारत		ર	११५
+ बंब ई हाता	ક		∕मलियर कोटला		2	334
∨भरतपुर	ę	२९१	/मगियाना		२	४३२
√भड़ोंच			मनोपु र		1	8813
√भविष्यबदरी तीर्थं			÷मध्यदेश -	•	B	38
√भारत वर्षाय संक्षिप्त विवर					8	84
√भाग ळपुर			∕मछ लीपहम्		8	११६

तीर्थं, शहर आदि	कंड	áß	तीर्थं, शहर बादि	संड	58	
🗸 मिल्लकार्जुन तीर्थं	8	180		4	७५	
मदरास शहर	8	२२५	मूलदारिका तीर्थं	8	शहरू	
∔ मेव् रास हाता,	8	२३३		२	880	
ं महावैलीपुर के गुफामन्दिर	8	283	मेदनोपुर	ą	३३८	
्र महुरा	ន	३०२	मैनपुरी	२	५३३	
्र मरकाड	8	३८१	मैमनसिंह	ą	222	
,∕महाबळेश्वर तीर्थ	8	४६८	मैसूर शहर	೪	804	
्रमध्यमेहवर तीर्थं	4	38	मैसूर-राज्य	8	८०७	
े मार्शहर	2	१५६	/मोकामा जंक्शन	ą	७४	
[‡] मालर्ह ़	3	883	मोतीहारो	ą	७७	
्र भा यावरम्	R	२७४	मोरवी	8	६२१	
- माही	8	१७६	⁄मंडला	Į.	ध२८	
्रमानसरोवर तीर्थं	4	२६	मंस् री	२	१८७	
√मों डू	8	808	मंडी	ર	344	
🕆 मांरगोमरी	2	853	मंगलूर	ક	३८५	
- मांडवी	8	६२६	मंडपेश्वर के गुफा मंदिर	છ	449	
∕ मिर्जापुर	8	१२०	/मंडलगांव	ų	99	
+ मीराज	8	४५४	वोगेश्वर का गुफामंदिर	ષ્ઠ	५५६	
√मीलचे∖र	4	१४५	/योगबदरी तीर्थ	4	११६	
🕂 मुगळसराय जंक्शन	8	११	/रतलाम	8	\$25	
्रमुरादाबाद	२	१५१	∕रतनपुर	ន	83	
्रमुजप्रकरमगर	२	१८८	रत्नागिरि	8	885	
्र मुजप हरगढ़	ર	8३१	रामनगर	8	15	
⊅ शुळतान	२	४६४	ेराजापुर	8	१५८	
् मुजफ् करपुर	3	७५	+राजगढ़	8	\$? \$	
्रश्चिक्तनाथ तीर्थ	ą	. 90	∤राजपुतान।	8	266	
्रमुशिंदाबाद	3	१२४	그리다 경험을 통안하는 일 시간 공기 원호 되는 것으로 함께 살아 있다.	ર	38	
्रशुगेर	3	११०	-रायबरैली	3	१२३	

शीर्थ, शहर आदि	बंड	वृष्ठ	तीर्थं, शहर आद्		खंड	विष्ठ
⁄ रामपुर	२	१५७	रोड़ी		ર	884
्रावलपिंडी	2	८०४	होजा		ંક	23
ेरायबंद जंक्शन	3	८७०	∕रंगपुर		ą	१४४
्रराजगृह तीर्थ	Ę	६२	े छितपुर		Q	966
्रराजमहरू	Ę	११८	⁄ लखनऊ		२	११२
√रामपुर बैलिया	ą	१८१	- लक्षोमपुर		२	१२९
े रानीगंज	3	३५४	ं छर खना		ર	843
- रायगढ़	ક	\$	⊹लकी		`₹	843
∨ रायपुर	8	१९	लक्षीसराय जंक्शन		ર	२०८
√राजनंदगांव	8	२३	√लकुंडो		8	१७१
्र रामटेक	8	२१	लाहरपुर		₹•	१२८
्राजमहें द्री	8	१२१	लाहोर		२	इं७०
√शयचुर	8	१८६	⊬लालामुसा जंक्शन		२	850
√रामनाद	8	382	्रे ला डी		8	६८६
्ररामेश्वर तीर्थ	8	384	⊬िलंबड़ी	•	8	E 18
ं राजकोट	8	६२२	े खुधियाना	•	2	. \$ \$8
∨राधनपुर	8	६११	/वजीरावाद		ર	394
+ रानीखेत	4	१४३	⊣वाडी जंक्शन		8	18
_{र्} गंची	3	३५ ९	वारंगल		8	११३
∤ रिविलगंज	२	8	विजगापदृम्		8	१२७
<i>्</i> रीवां	1	१५२	विजयानगरम्		8	१३१
\ रुड़की	2	१८१	विजयानगर		ន	१५५
ं-∤ब्हतक	२	४७८	∤विळोपुरम्		8	२६३
√रुद्रप्रयाग तोर्थं	4	५५,	शवरीनारायण तीर्थ		8	88
्र रुद्रनाथ तीर्थं	4	१८	शत्रुंजय पहाड़ी		े ध	\$23
्रस्वारी	२	४८१	्शाहजहांपुर	•	२	१४१
र्+रेणुगुँटा जंक्शन	. 8	885	∕शाहपुर		ંર	850
्रधेवालसर तीर्थ			श्रावन बड़गुला		8	ध२१

	त-अवर	1 30 AII.	વાલયક આ જ્યાપત્રા		
तीर्थं, शहर माद्	खंड	वृष्ठ	तीथ [°] , शहर आदि	खंड	पृष्ठ
्रशाकम्मरी दुर्गा	4	७१	संची	१	१९६
⁄ धिमला	2	३२६	सांभर	8	388
⊣ शिकारपुर	२	888	स्त्रांतीपुर	3	204
/ शिकम	3	580	सिउनी	१	४२३
4 शिलांग	ą	१५९	र्शसंबान	2	१०
⁄ शिवसागर	ą	१७४	िसिरसा	2	808
√ र्शावसमृद्गम् तीर्थ	8	333	सिकंदराबाद	ર	420
्रश्रीनाथद्वारा तोर्थं	8	303	सिटहल	3	१६३
🛶 श्रीनगर (काइमीर)	२	८०७	सिलचर	3	१६६
। श्रीरामपुर	ą	380	सिराजगंज	ą	158
्रश्चीरंगञ् र्तार्थं	8	२९१	सिउड़ो	3	498
श्रीरंगपद्दनम् तीर्थं	8	Ros	+सिलोन	8	388
√श्रीतगर (गढ़वाल)	4	84.	सिद्धपुर तोर्थ	8	७०२
्रशुक्त तीर्थ	R	408	सिरोही	R	७१३
्रेश्ट गेरो मठ	8	ध२३	∤सिंघ देश	2	<i>४६१</i>
🕂 शेरशाह जंक्शन	ર	४४२	⊬सीताकुण्ड	ર	१०८
्र धोळापुर	8	૮૬	्सीतापुर	२	१२६
्रशोणितपुर	4	48	सीतामढ़ो	ą	१०१
्र घद्दसराम	8		सीताकुण्ड तीर्थं	3	१८८
🕂 सहारमपुर	2		सी'गेश्वरनाथ तीर्थं	3	१०२
+ सरधना	2	१९०	्र छलतांपुर	२	१०८
√ स रहिंद्	२		सूरत	8	५६२
-/- सकरं	२		/सेहवन	२	४५२
√स्तारा	8	धह३	सेगांव	8	48
्र सागर	१	830	/सेलम	8	320
्र स्यालकोट	ર	३१६	सोगामिरि	ę	२०२
) साहबगंज	ą	११६	सोरां तीर्थं	2	423
्रे सारनगढ़	8	8	्र सोमनाथपर	· · ·	30/

तीर्थं, शहर आदि	खंड	पृष्ठ	तोथं, शहरं आदि		खंड	वृष्ठ	
√सोमनाथप ट्टन तीर्थं ा	8	६५९	⁄हलद्वानी		ų	१६०	
∤ सं डीला	3	१३१	/हाजीपुर		.2	*	
ं संभल	२	१५३	⁄हाथरस	•	२	426	
√ सं भलपुर	8	Ę	√हांसी	٥	२	ହିତଞ	
√संगळो	ક	४६२	/हिसार		2	४७५	
√हमीरपु र	ę	१८७	-हिंगलाज तीर्थं		ર	४६३	
−॑हरदा	8	ध२२	√हुशंगा बाद्		ę	993	
√ हरिहरक्षेत्र तीर्थं	ર	હ્	्रहुगली		3	383	
√हरदोई	3	१४०	⊹हवलो		8	धे३१	
्रहरिद्वार तीर्थं	2	१६३	ह्योकेश तीर्थ		4	ŧ	
∕ इ स्तिनापुर	२	११४	हैदराबाद (सिंध)		` ? '	848	
्रहसन अबदाल	२	880	हैदराबाद (दक्षिण)		8	. १६	
्र हवड़ा	ą		🛊 हैदराबाद-राज्य		8	१०२	
्रहजारी वाग	ą	३६२	/होशियारपुर		ર	384	
्रहलेविड के मन्दिर	8	ध२१	∔होतगो जंक्शन		8	8.5	
√ ह रिहर	8		हीसपेंट	•	શ	१५८	
					•		

भारत-भ्रमण में दिए हुए फोटो, नक्जे,

आदि का सूचीपत्र;-

फोटो नकशे बादि	खंड	वृष्ठ	फोटो नकशे आदि खं	ह	पृष्ठ
त्रन्थकर्त्तां का फोटो	8	प्रथम	ग्वालियर के किले का नकशा	8	204
प्रन्थकर्त्ता के लघुम्राता			आगरा शहरका नकशा	8	२१८
का फोटो	१	तथा	आगरा के किले का नकशा	8	२२०
वनारस शहर का नकशा	१	१३			To May (1924)
मणिकणिंका घार का फोरो	1 8	३०	नकसा	8	२२३
इलाहाबाद का नकशा	१	१२९	ताजमहल का फोटो	१	२२३
इलाहाबाद के अशोक			बुन्दाबन के गोविंददेवजी	di.	
स्तंथ के अपर का लेख	?	१३५	के मंदिर का फोटो	8	२६८ .

१४ ् भारत-भ्रमण में दिए हुए फोटो, नक्के, आदि का मूचीपत ।

फोटो नकशे आदि	क्षंड	पृष्ड	फोटो नकशे आदि	वं ड	মূ
यृन्दावन के श्रीरंगजी			किष्किंधा के विरुपाक्ष शिव		
के मंदिर,का नकशा	१	२७२	के मन्दिर का नकशा	8	299
मृन्दावन के श्रीरंग जी			श्रीवेंकटेशजो का चित्र	8	२०४
के मैदिर के फोटो	2	२७२	तामिळ बर्णमाला	ន	२३४
टाकरी वर्णमाळा	3	३५२	द्राविड बर्णमाला	8	२३४
अमृतसर के स्वर्ण-			विष्णु कांची के मंदिर का		
अंदिर का फोटो	2	३६३	नक्तशा	8	246
गुरुमुखी बर्णमाला	२	388	चिंदवर के नटेश के मंन्दिर		
कार्रमोरी वर्णमाला	2	ध १२	का नकशा	8	२६९
दिवली का नकशा	2	858	तंजीर के शिव मन्दिर का		
दिवली के जामा मसजिद			नकशा	8	२८१
का फोटो	2	866	तंजोर के खास शिव मंदिर		
दिवली के कुतवमीनार क	ī		का चित	8	२८१
फोटो	3	830	श्रीरंगम् के श्रीरंगजी के		
बोधगयाके मंदिर का फोट	ते ३	81	मंदिर का नकशा	8	२१३
मैथिल वर्णमाला	3	38	तथा मंदिर के पूर्व के बड़े		
कलकत्ता का नकशा	3	२१२	गोपुर के पश्चिम के मंडपम्		
बंगला वर्णमाला	ą	249	का फोटो	8	2:8
डिंड्या वर्णमाला -	3	२७८	मंदुरा के मंदिर का नकशा	8	इ०४
भुवनेश्वर के मंदिर का फो	टो ३	२८४	मदुरा के मंदिर के दक्षिण		
जगन्नाथजी के मन्दिर का			के गोपुरम् का फोटो	ક	३० ४
नक्शा	ą	300	रामेश्वर के मंदिर का नकशा		386
जगन्नाथजी के मन्दिर			तुलु वर्णमाला	8	३७४
का फोटो	3	300	कनड़ी वर्णमाला	8	४१३
इलोरा का कैलास नामक			मोड़ी अर्थात महाराष्ट्री		
गुफा मन्दिर	ષ્ટ	६८	बर्णमाला	8	४७८
इलोरा का घारवार नाम	7		कारली के गुफा मन्दिर		
गुफा मन्दिर	8	६८	का नक्शा	8	४१२

भारत-भ्रमण में दिए हुए फोटो, नक्के, आदि का सूचीपत । १६

फोटो नकशे आदि	खंड	वृष्ठ	फोटो नकशे आदि . खंड	58
वंबई शहर का नकशा	B	५१९	गिरनारं के चट्टान का समुद्र	•
अहमदाबाद का नकशा	B	498	गुप्त का शिलालेख ध्	६८२
गुजराती वर्णमाला	8	203	गिरनार के नेमीनाथ के	
द्वारिका के मंदिर का नकश	18	६४१	मंदिर का नकशा ध	६८३
बेटद्वारिका के मंदिर का			गिरनार के तेजवाल और	
नकशा	8	६५५	बास्तुपालके मंदिरकानकंशा ४	६८४
सोमनाथ के पुराने मन्दिर			झंपान का चित्र ५	२३
का नकशा	ß	६६२	दरीदंडी का चित्र ५	्२२
गिरनार के चट्टान का अशोव	r		कंडीकाचित्र ५	`.44
के समय का शिला लेख	8	६८२	लक्ष्मण झुला का चित्र ५	२७
나는 얼마나 하는 얼마나는 그렇게 그 없었다.			이 생겨 다 중심하게 되는 것이 같아. 그 사이 가게 되었다.	

रेलवे के बड़े जंक्शनों का सूचीपत्र । .

	対し、対し、対する。	Y	•			
जंक्शन	खंड	पृष्ठ	जंक्शन		खंड	वृष्ठ
मुगळसराय	2	११	शेरशाह		2	४४२
नयनी	•	१४१	रायबंद	•	२	800
झांसी	8	१८३	दिवली		3	408
इटारसी	?	२०१	कानपुर		२	५५४
भागरा	8	२३६	वांकीपुर		Ą	१३
बादोकुँई	8	२३७	मोकामा		3	હા
अजमेर		३४१	छक्षीसराय		3	१०८
खंडवा		ध२०	साहबगंज		ą	११७
छपरा	3	4	पार्वतीपुर		3	१३४
फै नाबाद्	3	१०७	कलकत्ता		3	२१३
ळखनऊ	₹.	१२१	कटक		ą	२७३
चंदौसी	3	१५०	खाना जंक्शन		ą	340
सहारनपुर	3	१८४	वासनसोळ	•	8	२
ळाहोर ँ	ર	338	नागपुर		8	8.5
ब्रा लामुसा	3	ध२७	मुसाव क		8	46
					A Property	

जंक्शन •	विड	पृष्ठ	जंक्शन	संड	ás
धांद		68	तिरुचनापल्ली	8	२८६
होतगी		\$3	ईरोड	8	363
वेजवाड़ा	. 8	११५	बंगलोर	8	318
गुंटकल		१४५	हुबली		४३२
	· ·	838	पूना	8	858
रेणुगु'टा सदरास		224	वंबर्ध	8	420
बद्दरास बिळीपुरम्	8	263	थहमदाबाद	8	५१५
<u> चिलायुरम्</u>		164			

मत और महात्माओं के बत्तांतों का सूचीपत्र ।

नास आर नारा	لطاء	11 44	8/11/11 11 0		
मतं भादि	खंड	वृष्ठ	मत आदि	खंड	र्वड
तु लसोदास.	१	६१	जयदेव कवि	3	343
कवोरसाहब	8	96	कवीरसाहब	8	१०
रामानंद स्वामी	8	60	कवीरसाहब	8	१७
<u>तु</u> ळसीदास	१	१५८	सत्तनामी पंथ	ี่ย	80
.बहुमाचार्य 🗼	१	२८७	कुँभी पंथिया	8	85
दाद्जी	8	३३१	सिंह पंथी	8	४२
मीरावा ई	ફ	३५९	नामदेवजी	8	60
बहुभाचार्यं	8	३७३	रांका और बांका	당	66
राजा भतृ हिर	8	३१५	रामानुजस्वामी	ន	२१६
अहिल्याबाई	8	४०६	रामानंदस्वामी	8	२२१
गोषीचंद	1	४१२	माधवाचार्यं	8	८१ ८
गोरखनाथ	3		शंकराचार्य	ષ્ઠ	ध२३
कवोरसाहव	ર	१४	पारली	8	423
गुरु नानक आदि	ર	३६६	बुढ़ान भक्त	ક	468
गुरु गोविद्सिंह	ą	6	स्वामीनारायण	B	488
बौद्ध मत	ą	43	स्वामी दयानंद सरस्वती	8	६०९
चैतन्य महाप्रमु	3		राधाखामी	8	888
ब्रह्मसमाज	ર		नरसी भक्त	8	६८०
कमीवार्र			जैन मत	8	६१३
			그리다 경기 아니라 엄마 하셨다는 하나는 하라 쓰다		

भूमिका।

मैं परम कारुणिक परमेश्वर को बार बार नमस्कार करता हूं, जिनकी अपार कृपा से मेरा भारत-भ्रमण समाप्त हुआ। इस के पश्चात् में किंचित आरंभ का द्वतांत खिलता हूं। मेरे पिता जी की तीथों में बड़ी श्रद्धा थी; वह प्रतिवर्ष तीर्थयात्रा के लिये जाया करते थे। सन १८८० ईस्बी से तो वह अपने गृह का समस्त कार्य छोड़ तीर्थ स्थानों या अपने शिवमन्दिर में अपना काल क्षेप करने लगे। जमीदारी और अदालत के संपूर्ण कार्य का भारे मेरे ऊपर था। मैं सौभाग्य बग्न एक समय अपने पिता के साथ अनेक तीथों में पर्यटन करता हुआ उज्जैन गया। उस यात्रा के समय मुझको ऐसा जान पड़ा कि भारतवर्ष में भ्रमण करने वाले सर्वसाधारण लोग तीथों के संपूर्ण प्रसिद्ध स्थानों और शहर तथा प्रसिद्ध स्थानों की सब दर्शनीय वस्तुओं को नहीं देख सकते। यंडे लोग तथा दिखलाने वालों को तो केवल अपने लाभही से काम रहता है। इसलिये मेरे मन में एका एक यह अंकुर जया कि एक ऐसी पुस्तक होनी चाहिए जो भारत में भ्रमण करने वालों को आगे आगे मार्ग दिखलाने और किसी प्रधान स्थान अथवा वस्तुओं को वेखने से छूटने न वेवे।

कुछ दिनों के उपरांत मेरा मन एक वारगी भारत-भ्रमण में लग गया।
सो मैंने संपूर्ण भारतवर्ष अर्थात हिन्दुस्तान के भिन्न भिन्न मांतों में ५ बार ५ यात्रा करके मायः संपूर्ण तीर्थ स्थानों, शहरों और अन्य अन्य मिस्ह स्थानों में जाकर जिस मकार हो सका सब स्थानों और वस्तुओं का पता लगा कर उनका हत्तांत लिला और अनेक वड़े बड़े मन्दिर और दर्शनीय वस्तुओं का नकशा बनाया और हिन्दुओं के तीर्थ स्थानों, देवमन्दिरों इत्यादि के अतिरिक्त भारतवर्ष के जैन, बौद्ध, सिक्ल, पारसी इत्यादि के पवित्र स्थानों और मन्दिरों और मुसलमानों की मसजिदों, दरगाहों और मिस्ह स्थानों के हत्तांतों को भी लिल लिया।

मेरी पहिली यात्रा सन १८९१-१८९२ ईस्बी, दूसरी यात्रा सन १८९२, तीसरी यात्रा सन १८९२-१८९३, चौथी यात्रा सन १८९३ ओर पांचवी यात्रा सन १८९६ ईस्बी में हुई थी। मैंने जिस कम से भारतवर्ष में भ्रमण किया उसी क्रम से पांचो यात्रा के पांच खंड बनाकर इस पुस्तक का नाम भारतभ्रमण रक्ता। पहिले खंड में पश्चिमोत्तर देश का भाग, मध्यभारत, राजपूताना, अजमेर और मध्यदेश का हिस्सा; दूसरे खंड में पश्चिमोत्तर देश का भाग, अवध, पंजाब, काश्मीर और सिंध देश; तीसरे खंड में बंगाल के चारो सबे अर्थात् विहार, बंगाल, उड़ीसा और छोटा नागपुर और स्वतंत्र राज्य नैपाल तथा भुटान और अंगरेजी राज्य आसाम; चौथे खंड में मध्यदेश का भाग, बरार, बंबई हाता, मदरास हाता, हैदराबाद का राज्य, मैसर का राज्य और कुर्ग और पांचवें खंड में पश्चिमोत्तर देश के बदिरकाश्रम हत्यादि पहाड़ी देशों के हत्तांत लिखे हुए हैं।

मैंने अनेक अंगरेजी, पारसी तथा हिन्दी की कितावों से हत्तांत और पितिहासिक वातों को और स्मृति, पुराण, महाभारत, रामायण आदि धर्म पुस्तकों से पाचीन कथाओं को निकाल कर भारत-भ्रमण में लिखा है।

निम्नलिखित स्मृति, पुराण इत्यादि धम पुस्तकों की भारत-वर्ष संबंधी माचीन कथा संक्षिप्त करके भारत श्रमण के उचित स्थलों में लिखी गई हैं उनके नाम ये हैं;—२० स्मृतियां;—१ मनुस्मृति, २ अत्रिस्मृति, ३ विष्णुस्मृति, ४ हारितस्मृति, ५ औशनसस्मृति, ६ अंगिरास्मृति, ७ यमस्मृति, ८ आपस्तवस्मृति, ९ संवर्तस्मृति, १० कात्यायनस्मृति, ११ दृहस्पतिस्मृति, १२ पाराश्वरस्मृति, १३ व्यासस्मृति, १४ शंखरमृति, १५ लिखितस्मृति, १६ दक्षस्मृति, १७ गौतमस्मृति, १८ शातातपस्मृति, १९ विश्वपुर्मृति और २० याञ्चवल्क्यस्मृति। १८ पुराण;—१ ब्रह्मपुराण, २ पद्मपुराण, ३ विष्णुपुराण, ४ वेवीभागवत, ४ श्रीमद्भागवत, ५ वाद्यपुराण, ५ शिवपुराण, ६ दृहन्नारदीयपुराण, ७ मार्क-हैयपुराण, ८ अग्निपुराण, ९ कूमपुराण, १० ब्रह्मवैवर्वपुराण, ११ लिंगपुराण, १३ वासनपुराण, १३ मतस्यपुराण, १४ वाराहपुराण, १५ भविष्यपुराण, १६

ब्रह्मांडपुराण, १७ स्कंदपुराण और १८ गरुडपुराण । (वेवीभागवत और श्रीमद्भागवत दोनों अपने को १८ पुराणों में कहते हैं। बहुतेरे लोग वेवीभागवत को और वहुतेरे श्रीमद्भागवत को १८ पुराणों में मानते हैं। पुराणों में सब्ज १८ पुराण में एक पुराण भागवत लिखा है और कई एक पुराणों में शिवपुराण को लोड़ कर अठारह पुराणों में वायुपुराण और कई एक में वायुपुराण को निकाल कर अठारह पुराणों में शिवपुराण लिखा है) अन्य धर्म पुस्तकों और उपपुराण;—१८ पर्व महाभारत, वाल्मीकिशमायण, दृसरा दृहद्शिवपुराण जद्भ अनुवाद, गणेशपुराण, वृसिंहपुराण, किलकपुराण, सौरपुराण, सांवपुराण और कैंमिनीपुराण। इनके अतिरिक्त अनेक भाषा पुस्तकों की कथा भी स्थान स्थान में लिखी गई हैं। जो विक्र पुरुष प्राचीन कथाओं को विस्तार पूर्वक धर्मपुस्तकों में वेखना चाहें वे भारत-भ्रमण में लिखे हुए पते से उन कथाओं को सहज में पा सकते हैं। मैंने प्राचीन कथाओं या इतिहासों में कुछ तर्क या बढ़ाव नहीं किया है। यदि अनुवाद की भूल से किसी स्थान में चूक हुई हो तो पाठकगण उसे क्षमा करें।

इस पुस्तक में शहर, कसवे, देशी राज्य और जिलों की मनुष्य-संख्या भी लिली गई हैं। जिनकी संख्या सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय की नहीं मिली; उनकी सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय की लिली गई। मैंने अधिकाई के कम से इस पुस्तक में संख्या लिली है क्योंकि ऐसा न करने से शीव नहीं जान पड़ेगा कि इस जिले या शहर में किस मत के या किस जाति के मनुष्य अधिक हैं; इस कारण बहुतेरे स्थानों में ब्राह्मण इत्यादि उच्च जातियों से प्रथम चमार इत्यादि नीच जाति, जिनकी संख्या अधिक है, लिली गई है। चमार डोम इत्यादि नीच जाति, जिनकी संख्या अधिक है, लिली गई है। चमार डोम इत्यादि नीच जातियों के लोग हिन्दुओं के देव वैचियों को मानते हैं और हिन्दुओं की अनेक रीतियों पर चलते हैं इस कारण मनुष्य-गणना के समय वे लोग हिन्दुओं में गिने गए हैं; अतएव मनुष्य-गणना के अनुसार मैंने इनको हिन्दुओं में लिला है। इनके अतिरिक्त भारतवर्ष में जहां जहां रेलवे का जंक्शन अर्थात मेल है उन स्थलों से मत्येक दिशाओं के प्रसिद्ध

स्टेंबनों का फासिला इस पुस्तक में लिखा गया है और प्रथमवंड के आरंभ में भारतवर्षीय विवरण दिया गया है।

इस पुस्तक में भारतवर्ष के संपूर्ण प्रसिद्ध स्थान, शहर, कसके और तीर्थ स्थानों के बर्तमान और भून कालिक इत्तांत यथासाध्य लिखे गए हैं। भारतवर्ष में सैकड़ों पित्र स्थान और इर्जनीय वस्तुएं विद्यमान हैं और इनके संबंध में असंख्य पवित्र प्राचीन कथा और ऐतिहासिक वातें लिखी हुई हैं। इनको केखने और जानने की श्रद्धा किसको नहीं होगी; किन्तु सर्वसाधारण लोग इस अनुपम वेश का पर्यटन और बहुतेरे ग्रन्थ और ऐतिहासिक किताबों का अबलोकन नहीं कर सकते। मुझको आशा है कि उनके लिये इस भारक भ्रमण का पर्वना अवस्थ आनंद दायक होगा और जो इसको अपने साथ लकर पर्यटन करेंगे उनको यह पुस्तक संपूर्ण दर्शनीय स्थान और बस्तुओं को वतला-वेगी। मेरा अभिपाय इस ग्रन्थ के लिखने से यही है कि सर्वसाधारण लोग इसे पढ़ कर लाभ उठाएं। इससे यदि उनका कुछ भी उपकार होगा तो मैं अपना परिश्रम सफल जानूंगा। अंत में मैं अपने अनुज बाबू तपसीनारायण को असंख्य भन्यबाद देता हूं जिनकी सहायता से मैंने इस दृहद ग्रन्थ को समाप्त किया।

and property of the second

1997

विज्ञजन और महात्माओं का कृपाभिलापी साधुचरणप्रसाद

भारतवर्षीय संक्षिप्त विविरण का शुद्धिपत्रम्।

पृष्ट	पंक्ति ः	अशुद्ध	शुद्ध
₹	१९ उ	त्तर से दक्षिण	उड़ीसा से दक्षिण
१६	नीचे ।	१६०७४६	इ६०७४६
		9४६०१	८४६०१
26	तथा	१२	22
१८	(क)पश्चि- मोत्तर	७२१३४	८२१३४
26	(ख)सिंध	21	280
99	(ग)अदन	३५१३	३५१९३
२०	वड़ोदा	२१३७६६८	२१३७५६८
२०	संपूर्ण- वेशी	६६०५४७९	६६०५०- ४७९
ঽ৹	राज्य संपूर्ण- भारतवर्ष	<i>५७६२११६४</i>	१६४ १६४

पृष्ट पंक्ति अगुद्ध ं शुद्ध २३ २८ बालियर ग्वालियर २४ ५१ ५८०३३ ६८०३३ २५ जोड़ ४२८२९८ ९४२८२९८ ३६ नं०२० कोज कोच ३७ नं०५० कोरवी कोरी. ३९ नं०१६० जोगी—ट जोगी—ठ संथाल ४७ नं०३७ संथला परियात्र पारिपात्रं 43 80 शीघोदा ५३ २५ घोदा ५४१४ मागर्व मागघ ६२ न०७६ २९९८९६ १९९८९६ ८४ ९ मुरादाबाद मुश्चिदाबाद ८४ १२ मुंगेर मुंगेर में ८४ २६ मुरादाबाद मुर्शिदाबाद

मारत-भ्रमण प्रथम खंड का शुद्धिपत्रम्।

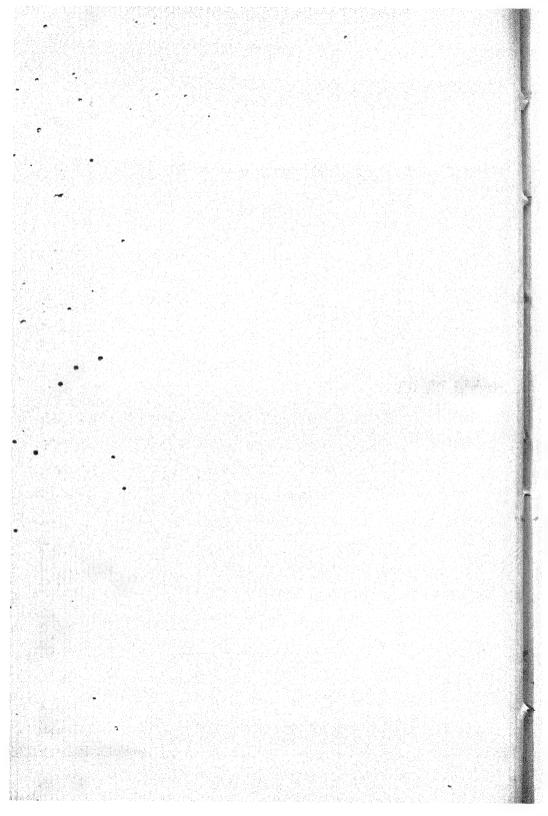
वृष्ट्	पंक्ति अशुद्ध	যুদ্ধ	पृष्ट पंक्ति अशुद्ध	ग्रह ं
	४ जातियों के	जातियां थीं	२१ २० कत्तरों	कत्तारो
ৎ	१२ पोते	भाई	२२ ५ पर	घाटं पर
9	१२ १५५६	१५५५	२७. १४ ओसारे	कपड़ा ओहा
90	१ ३३०७७	२३०७७		रहता है
१७	२० स्तान	स्थान	२८ २ जपर	ऊपर तक

पृष्ट पंक्ति अशुद्ध	शुख	पृष्ट पीक्त अशुद्ध	शुद्ध
४१ १७ बाप छक्षण	पाप भक्षण	१३४ १६ उसवी	उसको
४३ १९ दोहरा चौलूटा	दोहरी चक्टी	१३६ ७ संशिक	संशित
४४., ३ दिपादासेश्वर	दिवोदासेश्वर	१३६ २३ पुरुखा	युरु
४५ २६ खंटियां	खूंटियां	१३८ १९ फला है	फैला है
५७ २० सहकार	सरकार	१३८ २२ तीय	तीर्थ
७५ ८ दन्सि	मन्दिर	१४४ १३ किले	जि ले
७८ ५ वड़े २	वहे	१४४ १८ खागर	सागर
८० ५ कमला	कमाल	१५७ १२ वेश	पश्चिमोत्तर
८० ८ मगह	मगहर		वेश
८० ८ मगइ	मगहर	१५९ ९ कामदानाथ	कामदानाथ
८४ २४ आध	हाय	के पास	के पास छ-
८६ १५ सड़क से	सड़कसे उतर		क्मणपहाड़ी
८७ ४ कमालमोचन	कपालमोचन		पर
८९ २ सन १८३४३५	सन १८३४-३५	१५९ २५ चिन्ह	चरण-चिन्ह
८९ १९ मतवाछ	मतवाळे	१६५ १४ छरि	छरसरि
९१२५ क्रकसे	ऋग से	१६५ २४ समम	समय
९५ २५ दाह	दान	१६७ १९ सयय	समय
९६ १५ तट से निकट	तट के निकट	१७७ २५ पील	मील
१०७ १० कार	कारण	१८४ १ उज्जन	उ ज्जैन
११५ १७ ५ ईर की	५ दस्की	१९९ ३ बीज	बीच
११६ ७ इनमें से में	जौन3र में	१९९ ९ कड़ड़ी	लड़की
११८ ९ स्रोभ	लोग	२१० ८ मान	मधान
१२८ १० द्वत्राखर	वैत्राप्तर	२२२ १५ सायधान	सायवान
१२८ १६ द्वत्राखर	बैत्रास्टर	२२६ ६ रौशमी	रोशनी
१३२ १६ विध्याचल में	विन्ध्याचल	२२७ १५ कार्बुछ	मार्चुळ

पृष्ट पंक्ति अशुद्ध गुद्ध २२७ १७ एवमादुदौला **एतमादु**दीला चारो २२७ १८ चरो २२८ १४ चौथी चौथी मंजिल सिकंदरे २२८ ४ सिकरे २२८ २० दावारे दीवारे छोटा २३८ २ छाटा फैला है २३८ ३ फला है संपत्ति २४० ५ सपात्त **मंगलेश्वर** २४३ ८ मंगसेश्वर २५० ५ दिलता है मिलता है २६१ २६ रीप पुरी २६३ ९ अनुनति अनुमति २६६ ८ अनिरुद्ध वज्र २६७ १ वगर्नर गवर्नर २६७ १८ था उसी में या उसी में

पृष्ट पंक्ति अञ्च २७६ १५ ने भीतर २८० २२ विताष हुए २८१ २२ मिमित्त २९५ १४ प्रसाह २९६ २ ऊपर ३४३ २ मेरवाड **\$9**\$ १ ससर ३८२ १९ हलवाड़ ३८७ ११ हंगरपुर ३९० ११ मील ३९० १४ उद्यसिंह ३९९ ७ बादरागण ४१७ २४ अमरकंटन ४३० ६ जळपुर

शुद्ध
के भीतर
विताए
निमित्त
सप्ताह
ऊत्तर
मेरवाड़ा
सर
हलवाड़ के
ढूंगरपुर
भील
उदयसिंह
बादरायण
अमरकंटक
जवलपुर



भारतवर्षीय संक्षिप्त विवरण

अर्थात्

भारत=भ्रमण ग्रंथ का सारांश।

-ॐ भारतबर्ष ।

महाभारत और पुराणों में राजा भरत के नाम से इसका नाम भारत-वर्ष छिखा है। मुसळमानों ने भारत-वर्ष का नाम हिंदुस्तान रक्खा। अंगरेज कोग इसको इंडिया कहते हैं।

भारत-वर्ष एक वड़ा देश (८ अंश से ३५ अंश उत्तर अक्षांश तक और ६७ अंश से ९२ अंश पूर्व देशांतर तक) तिभुज के समान आकार का एशिया महा द्वीप के मध्य से दक्षिण की ओर समुद्र में कुछ दूर तक फैछा हुआ है। इसकी उत्तरी सीमा हिमाछय पर्वत की श्रेणी है; पश्चिमकी ओर अरव का समुद्र और पूर्व की ओर वंगाछे की लाढ़ी है। इसके पश्चिमोत्तर में सुलेमान और हाछा पर्वत हैं, जिनके उस पार बळ्चिस्तान और अफगगानिस्तान देश हैं और पूर्वोत्तर में आसाम की पहाड़ी है, जो ब्रह्मा देश से इसको अन्तर करती हैं। भारत-वर्ष की छंबाई उत्तर से दक्षिण तक मायः १९०० मील और चौड़ाई भी पूर्व से पश्चिम तक अधिक से अधिक इतनीही है, परंतु इसकी शकल कन्या अमारी की ओर, जो भारत-वर्ष का दिश्वणी शिरा है, गावदुम होती चली गई है।

यह देश स्वामानिक ३ खंडों में बँटा है, पहिछे भाग में हिमाछय पर्वत शामिल है, जो उत्तर की ओर दीवार की तरह पड़ा है; बूसरा भाग हिमाछय की जड़ से दक्षिण की ओर फैला हुआ है, उसमें वह संपूर्ण भूमि शामिल है, जो हिमालय की बड़ी बड़ी नदियों से सी वी जाती है, तीसरा भाग नदियों के मैदान की दक्षिण सीमा से ऊपर की ओर दालुआं होता-गया है और छंवी सतह त्रिकोण की शकल का बन गया है, जिस पर भारत-वर्ष का आधा दिशाणी भाग शामिल है। इस जमीन के दुकड़े में मध्य देश, वरार, मदरास,

मईसूर, निजाम हैदराबाद का राज्य और सेन्धिया और होलकर के राज्य ह-ह्यादि देश शामिल है। इस भाग के पूर्ववाल समुद्र के किनारे को 'कारोमंडल' और पश्चिम के तट को 'मलेवार' कहते हैं। जिस भाग में हिमालय है, उसको उत्तराखंड, विन्ध्याचल और हिमालय के बीच के भाग को 'अधीवत' वा पुरूष हिन्दुस्तान और समुद्र के वीच के भाग को 'दक्षिण' कहते हैं। अंगरेजों ने बंगाले की खाड़ो के पूर्व के ब्रह्मा मुल्क को हिन्दुस्तान में मिलादिया है।

पर्वत ।

हिमालय, पृथ्वी के जाने हुए संपूर्ण पर्वतों से ऊचा है। उसकी छंबाई र पूर्व में पश्चिमको अनुमान से १५०० मील और सबसे अधिक चौड़ाई **उत्त**रमें दक्षिणको लगभग ४०० मील है। उस पर उंचाई के कारण सदा हिम अर्थात् वर्फ रहती है, इसी कारण उस पर्रत को हिमालय, हिमाचल और हिमादि कहते हैं। उसीके अंतर्गत उत्तरीय भाग में कैलास पर्वत है। हिमालय की २ पहाड़ी दीवार करीब करीब पूर्व से पञ्चिम तक समानांतर न्देखा की तरह स्वीं ची हुई हैं और मध्य में नीची जमीन या घाटी है। इनमें में दक्षिणी दीवार के छंब की उंचाई, जो मारत वर्ष के मैदानों की उत्तर सीमा पर है, २००० फीट से अधिक अर्थात् ४ मीछ है। उसकी सबसे हाँची चोटी एवरेष्ट पहाड़ २९००० फीट ऊंची है। इस सिलमिले का बतार उचरकी ओर सीढ़ियों की भांति है, जो लगभग १३ हजार फीट समद्र के जल से ऊंचा है। इन नीची जगहों के पीछे हिमालय पहाड़ का भीतरी सिल्लिसला एक बड़ी पहाड़ी दीवार के समान वर्फ से देंका हुआ हैस पड़ता है। दोनों दीवार के उस पार वह घाटियां हैं. जिनमे सिन्ध सतळज और ब्रह्मपुत्र निदयां निकली हैं। इन घाटियों के उत्तर समुद्र के जल से १६०० फीट फंचा तिब्बत का मैदान आरंभ होता है। हिमालयकी चोटियां तिब्बत और हिन्द के बीच में सर्वदा वर्फ से हपी रहती हैं और पहाड़ियों के ढालूए भाग पर वड़े बड़े वर्फ के मैदान है, जिनमें से एककी छवाई लगभग ६० मील के हैं। हिमालय के कम से कम ४० चोटी वा शूंग २००० फीट से अधिक ऊ चे हैं, जिनमें मिसद ये हैं; मुटान में चमकारी

(२४००० फीट ऊंची); शिक्षम में किनविनचिंगा (२८१५६ फीट); नैपाल में गौरीशंकर वा मर्डंट एविष्ट्र (२६००० फीट); और घौलागिरि वा वेवव गा. (२६८६० फीट); कमार्क में नंदा वेबी (२६००० फीट); गढ़बाल में यमनोली (२६५०० फीट) और कश्मीर में नंदा पर्वत (२६६०० फीट)।

विन्ध्याचल भारत-वर्ष के बीच में नर्मदा नदी के उत्तर है। उसकी जामघाट नामक चोटी समुद्र के जल से २३२८ फीट ऊंची है।. अवेली पर्वत, जिसका नाम पुराणों में अर्बुद गिरि है, राजपूताने में है। उसकी सबसे क वी चाटी आबू पहाड़ राजपूताने के मैदान से ५६५० फीट क वी है। सतपुड़ा विन्ध्याचल को समानांतर रेखा में नर्मदा और तापती चिंदयों के बीच में स्थित है। पश्चिमी घाट तापती के पूहाने से कुमारी अन्तरीप तक समुद्र के किनारे किनारे चळा गया है, जिसको सद्यादि पर्वत भी कदते हैं। (देवीभागवत-सप्तमस्कंध-३८ वें अध्याय में लिखा है कि कोलापुर सच्चीद्रि पर्वत पर है। बाल्पीकिरामायण-युद्धकांड के चौथे सर्ग में लिखा है कि श्रीराम-चन्द्र किसकिन्धा से चल कर सह्याचल और मलयाचल पर्वतों के पार हो महॅद्राचल पर गए जहांसे समुद्र वेख पड़ता था) इसीके अन्तगंत दक्षिण भाग में पळया गिरि है। यह पहाड़ बोनेसनहिल के निकट ७००० फीट के लगभग क वा है। पूर्वी घाट 'कारो मंडल' तट का किनारा कावेरी से उडीसा तक चलागया है, जो पश्चिमी घाट के बरावर ऊंचा नहीं है। (महाभारत के बन-पर्व में राजा युधिष्ठिर की यात्रा के बृत्तांत से जान पड़ता है कि उत्तर से दक्षिण महंद्राचळ है। नरसिंहपूराण के ५० वें अध्याय में है, कि संपाति पक्षी महेंद्राचळ के बनमें रहता है और बाल्मीकिरामयण-सुन्द्रकांड ५७ वें सर्ग तथा पद्मपु-राण-पाताल खंड के ३६ वें अध्याय में लिला है कि इनुमानजी लंकादइन कर के महेंद्राचल पर लौट आए) पश्चिमी और पूर्वी घाट के वीच में नीलांगरि है, जिसकी दादाबेटिया नामक सबसे ऊंची चोटी समुद्र के जल से ८६२२ फीट ऊंची हैं। नील गिरि के एक भाग में समुद्र के जल से ७००० ऊंची उत्त-कगंद पहाड़ी है, जिस पर गंदरास गवर्नमेंट का सदर मुकाम गर्मी के दिनों में होता है, इनके अतिरिक्त भारतवर्ष में छोटी छोटी बहुत पहाड़ियां हैं।

	- 2			10	,
			_	_	
•	-				
46		-		-	è
•	- 25				•
	- 60			_	2
	2	4	93		ø
	-42		30		
	40	4	ь.	,	
	- 58		ж		
	32			-	۵.
	- 10				r
a.	12	7	١.	7	r
8	•		en.	•	
ш.	.8	-	-		ĕ
-	70		-	4	×
	-	-	-	*	ú
	-81	•	v		۰
	-88		œ.	ď.	
	-	13		æ	
	-		74	т.	
	*				
•	3			w	×
æ	- 25				7
•	:48	215	Ŕ.	c	٧
	-	7	ш		3
	纙	12			ø
	8	ĸ	-	•	-
<	4		-	-	4
	10	-	r.	۳	H
	礷	4	и	В.	
	46	-4	v		
		10	7		

नदियों का पुराना	न देशा में अरच के समुद्रे में	पश्चिम की थार पद्मा में और पूर्व	मा वार तचुर मा गाले की खाड़ी में
नदियों के किनारे बा निकट के श्वहर और मसिछ स्थान	इसकाडा, अटक, काछा- सिंध देश में अरब बाग, देराइस्माइछखां, के समुद्र में . देरागाजीखां, मिहनकोट, उद्दराबाद और	मागर, तैहादी,	विदि, व स्टाहा- चनार,
दिशा, जिस ओर बहती हैं	पश्चिमोत्तर और पश्चिम दक्षिण		दक्षिण-पश्चिम दक्षिण-पूर्व पूर्व मीर पूर्व-दक्षिण
ढेश जिन में होकर बहती सहायक नदियां दिशा, जिस हे	कैलास पर्वत तिब्बत पंजा शदक और पंजा- के उत्तर ओरव और सिंध व की पांची न- दियां आपस में सिल कर पंचनद	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	हिमालय में पश्चिमोत्तर रामगंगा, यमु- दक्षिण-पश्चिम मंगोली बिहार और ना, गोमती, सर दक्षिण-पूर्व पूर्व बंगाल पू. सोन, गंहकी और पूर्व-दक्षिण
हेश जिन में होकर बहती। हे	तिब्बत पंजा व और निध	सरोवर तिब्बत, आ- शस कै- साम और पर्वत। बंगाल	पश्चिमोत्तर बिहार और बंगाछ
निकास का स्यान	कैलास पर्वत के उत्तर् थोर	मानसरोवर तिब्बत, आ के पास कै-साम और स्टास पर्वत। बंगाछ	हिमालय में मंगोत्री
अंबाई मीख	2	စို့ရှင်	* £
* **	E		Ę

		ब ङ्गी मदियां ।	. 5
	सपुद्र में राज पहेंद्री के पास	ह्याहाबाद के नीचे गंगा में	चनाव में बहावल पुर से ४० मील नीचे
	दानापुर, पटना, मुगेर, मागलपुर, राजपहल्ल, इत्यादि ज्यंबक नासिक, पैठन, नांदेङ्, और राजपहंदी	दिल्ली, मधुरा, ब्रुंदाबन, आगरा इंटावा, काल्पी, हमीरपुर, और राजापुर	रामपुर, फिजिलका और , बहाबलपुर
	द्रिया-पूर्व	दक्षिण और दक्षिण-पूर्व	पश्चिम, क्
	गरदा और बाल संगा	चंबल और धेतवा	
	षड़े हाते में बंबई हाते, नासिक के निजाम राज्य	पास ग्यंबक और मदरास हाते हिमाख्य में पंजाब और यमुनोली पश्चिमोचर की सीमा	प्राप्त दश्व । पंजाब
		पास भ्यंबक हिमास्त्र्य में यक्नोत्ती	हिमालय में मानसरोवर झीख के पास
Dec.	:	ŵ	\$°
		\$ 7	सत्छन
	•		•

' \$:	भारतवर्ष	िय संक्षि	। हेंदरण।	
नर्दियों का मुहाना	सपुद में मच्छळी बन्दर के नीचे	मिहनकोट के नीचे सिंध नहीं में	बंग्ड्रहाता में भड़ीच के तीचे खंभात	का लाहा छपरा में ७ गोझ पूर्व गया में
नदियों के किनारों के ब्रहर वा प्रसिद्ध स्थान	महावलेड्चर, बाई, पॅज- बाडा और मच्छली- बन्दर	सियालकोट, गुजरात, झंग और गुलतान	हुजंगावाट, हड़िया. ओ कारनाय, और महीच	अयोध्या, मनियर, रिविक्त- मंज, छप्रा
दिया जिस और बहतीर्ह	द्क्षिण-पूर्व और पूर्व	दक्षिण, पश्चि- मोत्तर पश्चिम	और द्धिण- पडिनम । पडिनम	दक्षिण-पूर्व
देश जिन में होकर बहती ६ हायक नादयां दिशा जिस ओर हे	ति में बम्बईहाता पाळपूर्व, गतपूर्व, छेश्वर निजाम राज्य भीमा और और मदरास तुंगभद्रा हाता	हिमालय के कश्मीर और झेलम राबी और इंजिण अले- पंजाब सत्तळत्र		
वय जिन में होकर वहती हो	ति में बम्बईहाता । छेडबर निजाम राज्य और मदरास हाता	क्डमीर थीर वंजाब	मध्य भारत और वंबई-	अवध्, पठिव- गोत्तर और बिह्नार
निकास का स्थान	वंबहुं हाते में महाब्लेश्बर्	हिमालय के दक्षिण अले-	ग मे रीवां राज्य में अमर-	्रिमाल्य
खंबाई मील	ŝ	200	ŝ	8
*	\$	F	1	मावू म
T. E		1 (1 (1 (1 (1 (1 (1 (1 (1 (1 (1 (1 (1 (1		

	?? संबंख ८,७०	995	माछवा में बिध्याचळ	मध्यभारत और राज-		:	ज्ञार और वृष्टींतर	कोटा और घौलपुर	यमुना में इंटावें के पास
# &	महानिद्	025	Salver of the sa	पुताना मध्यदेश में न-मध्यदेश और नगह केलाम	•	•	्हि	मंभलपुर और कटक	कटक से पूर्व बंगा छे
	集	÷	हिषालय	., 0	•		दक्षिण-पूर्व	नैमिषारण्य लखनज् और जननण	का खाला म बनारस के नीचे गंगा वें
	Į.	8	बंबई हाते में				दक्षिण पून	पंढरपुर	कुष्णा नदी म
	\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	, °, °, °, °, °, °, °, °, °, °, °, °, °,	राज्य हिमास्त्रयकेद- कश्मीर और सिष्ण अल्लामे पंजाब	राज्य कन्नीर और वंजाव			पश्चिम और पश्चिम-दक्षिण	श्रीनगर (कब्पीर) झेल्म. पिंडदादनखां, भेरा ओर	भ्रांग से २० मील्. नोचे चनाव में
. F	कार्वे री	; \$	कूर्ण को प- साहियां	मईसूर और करनाटक		* 188	द् स्थिया-पूर्व	बाहपुर श्रीरंगपटन, तंजोर, लि- मदरास हाते में पोटी- चना परखी और श्रीरंग नोबो के निकृद पूबीः	मदरास हाते में पोटी- नोबों के निकट पूर्वीः घाट में

Y 1

भारतवर्षीय मंतिप्त विवरण।

			The state of the s	The second livery of the secon	The same of the sa		The second secon		
1	智	खेबाहे मीख	निकास का स्थान	देश जिन में होकर बहती सहायक नदियां है	सहायक	عالاها	दिशा, जिम ओर बहती है	नदियों के किनारों के शहर का मिसक स्थान	नदियों का मुहाना
2.	Æ	30 60, 30	मध्य देश में अम्रक्टक	मध्य देश में मध्यदेश, बंदे- अमर्रकंटक कावंड और			जनर और	 	छपरा मे ६ मील पूर्व गंगा में
X	E	ŝ	हिमालय के दक्षिण अर्थ्या	बिहार हिमास्यय के क्रिस्मीर और दक्षिण अर्छंग पंजाब			पश्चिम दक्षिण	चंना और छाहो र	मुखतान में ४० मोळ ऊपर चनाव में
\$	वायवी	3	सतपुदा पहाड़ी	म सतपुदा मध्यवेश और पहाड़ी बंबई हाता			uffean	बुरहानपुर और मृरत	मूरत से पश्चिम संभात को खाड़ी।
*	इंगाभ <u>द्</u> रा	Š	महमूर राज्य	मईमूर राज्य मईमूर राज्य. में मदरास हाता ओर नीजाम राज्य की			" E.	र्गिरहर और कत्तिव	कृष्णानदी में
				中	*************				

गोदावरी नदी मे	पटना से उत्तर	यमुना में हमीरपुर के पास	फर्र सावाद के	गाव गागा म सत्तेल में हरी के पटन के पास	गंगा में भागछ पुर् के नीचे
• • • •	मुक्तिनाथ, हाजीपुर, ओर सोनवर	भोपाळ. भिलसा, झांसी और उन्छा	मुरादावाद और वरैही	महर्गयल/	.
दक्षिण पूर्व	दक्षिण-पूर्व	कूबोंतर	दक्षिण-पृब	पश्चिम और पश्चिम-दक्षिण	दक्षिण कुछ पूर्व
		•	.	:	
- I					ŧ
गोंडवाने के बरार और इलाके में मध्य देश की मध्यदेश की और निजाय पहाड़ो राज्य और मध्य देश की	नैपाल राज्य और विदार।	मध्यसारत, औरमध्यदेश की सीमा।	अवध और पश्चिमोत्तर	त् वाब	नैपाल राज्य और विहार
गोंडवाने के इलाके मं पध्यवेश की पहाड़ो	हिमालय	मालवा में विध्यामळ	िहिपालय	हिमालय के दक्षिण अल्ला अभयकेटा	
<u>%</u>	0 20 20	w m	00 8-	ž	224
E	गंदम	THE STATE OF THE S		•्वतासा •व्यासा	霍
<i>≈</i>	g ·	*	7	*	ust of

भारतवर्षी य मंक्षिप्त विवरण।

संज्ञफल, बर्गमील, कसबे और गांव तथा मनुष्य-संख्या सन् १८११ ई० में। क्षेत्रफल आदि सारतवर्ष अंगरेजी देश देशीराज्य क्षेत्रफल बर्गमील १५६०१६० £28832 4949819 कसवा और गांव 184518 ५ इ.७१०१ 283109 (क-) कसबे **E** ? ? 2034 \$888 (ख) गांव ७१५५१४ ५३६४८५ \$ 105058 मकाने, जिनमें **५२**९३२१०२ E318 \$808 १२४६८१३९ आवमी हैं (क) कखवां में ५१२८३१५ ३७४५४०८ १३८२१८७ (बा) गोवीं में *८००६०* ११०८५१५२ ३६७१८५५५ संपूर्णमनुष्य-संस्था २८७२२३४३१ २२११७२१५२ * 40408/38 (क)कसर्वो में

२०३१११२१

२००७८१८२३

C800333

41810837

२७२५११७६

२५१९७२२५५

(ख) गांची में

दर्जे और संख्या सन् १८९१ ईं में ।

	इरजे थीर संक्या	कसर्वी और गावीं को संख्या	मनुंध्य-संख्या
	१०१ ओ १९९ तक	३४३०५२	32824242
	२०० से जपर	२२२!!६	७११८००१८
	५०० से ऊपर	१७८४६	<i>६७४७५१</i> ०;
	१०१० से ऊपर	३८१२८	46581335
	२००० से ऊपर	9108	११११३६१६
	३००० खे ऊपर	३७७०	१४०५१०८१
	५००० से ऊपर	१५०२	१००४८८३८
	१००० से अपर	३६६	<i>५</i> ४०३०६३
	१५००० से जपर	१५०	२५४११३५
	२०००० से जपर	1 84	४१२५ १५८
	५०००० से ऊपर	υş	१३०१४५४
विश	(क) मोसाफिर इ- खादि	•••	48338
बरजं का	(स्त) नहों रिजस्टर किया हुआ	१५८१	१३७४४२
	संपूर्ण	व्यव्यव	२८७ २२३ ४३ ४

विभाग।

नंबर	• विसाग	क्षेत्रफ ल बर्गमोल		संख्या. प्रति बर्ग	संपूर्ण क्षेत्रफळ	संष्ण मनुष्य संख्या मै
			सन् १८११	मोल में	में सैकड़े	सैकड़े
•	हिमालय और प् बी पहा ड़ियां	१५०५७०	६५४२६५०	83	• १∙६८	3:34
2	उत्तरी मैदाने	५३७२०१	१५१६८१६७६	२८२	इ४.४३	५२:८३
3	र्मध्य पहाडियां	२२०ध३१	२४६८०६६१	११२	१४१२	6.50
8	मध्य मैदान	\$10880	१३७३८३६२	११४	85.30	20:40
4	डेकान का छे द्	803218	३०१४८८०२	१५६	65.30	१०५०
•	दक्षिणी मैदान	६२४१४	१९८६२३७६	३१८	8.00	\$:13
v	पूर्वीत्तर लिटरल	१७२०६	११२१७२०३	353	R.80	3:18
٤	पश्चिमी लिट्रप्ल	१६५८१	२१६४८१८५	२२४	६:२२	છ.48
,	PEI	१७१४३०	७६०५५६०	88	\$0.68	2 84
	संपूर्ण	१५६००८०	२८७१३३४८१	१८४	१००	100
	अदन, के टा अंडमन टायूप इत्यादि	co	८११५०			
	संपूर्ण	१५६०१६०	२८०२२३४३१			

बिभाग ।

नंबर	विभाग			मनुष्य-संख्या
8	शिकम (रिजिष्टर किया हुआ)			३०४५८
ર	ममीपुर (तसबीसी)		•••	₹ '40000
3	बृटिस बलोचिस्तान (रजिष्टर किया हुः	10		१४५४१७
궣	सिससाछिषिनशानराज्य (रजिष्टर किय	ा हुआ)		3,05,68
લ	ब्रह्मा के सरहदी देश			११६४१३
Ą	राजपूताने के पहाड़ीदेश (रजिष्टर किय	ा हुआ)	•••	२०४२४ १
	कुळ—जो मर्दुम शुमारी में शामिल नई	ì à		११११५७८
3	फरांसीसियों के अधिकार में			२८२१२३
2	पोर्चुगीयों के अधिकार में			५६१३८४
	कुलहिंदुस्तान में विदेशो राज्यों में			<i>©</i> 0€88>
		दोनों जोड़		११६३८८५
	मर्वुमधुमारी में शामिल किया हुआ	••	•••	२८७२२३४३१
		संपूर्ण	•••	२८११८७३१६

अन्नरेजी देशों का विवरण ।

.# 	Sample Samp Sample Sample Sample Samp Sample Samp S	मनुष्य-सन्		4	मतुष्य- संख्या	पढ़ें हार	ь	पढ़ते हुप	E,	
	बर्गमील	्टरः में	4 ,		प्रतिवर्ग- मील	त्वत	<u>a</u>)	0,0व	al)	हैं विक्रम
र बंगाल	हेसर्वत्र	करइस्टरक	1	उत्पह्तरहा इंप्छट्डह्ट	808	318C018	823308	८८३२५०	० हर हे अहर अहर	इ०६००१
श्रीक्षमौक्त	Eohnoà 3	ちつのちのは当器	रे०३६०६८४	82820366	•	१२५७१५०	3782	र३८४४०	8082	
(क) पश्चि- मोलर देश		おっとおっとおき きっともつ	१७८१२८५०	ลงคริกครั้ง	2 20	okane:	308	त्र इ.	30	
(स) अवध	28266	18204328	2490383	0700313	825	व्राव्य	34,79	E00184	E083	
Ship Cite	\$2888	34.530880	भारत १९३१५	48021072	242	२०२१२८९ १२०३२४	१२०३२४	500305	ordish	323758
क व्यव्यक्त	9 8 80 8 8	20058680	इश्रयप्रदृष्ट	\$\$500.25	22	देशका के	\$6208	182268	8528	
्र बंबई प्रेसी- इसी	न् १९५४	१८१०११२३	रणस्टर	Enlacis		20,95.55	\$1 32 5	अक्र तिहे हे विकास कर्मा	रक्षादर्	
(m) ##	20200	रम् १८६२७०	002817	2100100	8	550887	25.39	39280E	र्यस्थ	
(ब) सिथ	1200B	3001002	{48C410	8303858	3	502500	23.52	25 8.20	3868	

(w) अदन ।	97	हेट हेत्र त	Risot	2000		920	W.	35	<u>~</u>	•
कृष्ण देश	99997	300000000000000000000000000000000000000	おったのいたり	4368550	28.8	2300452	838	30830	000	
1 mg	० हरा है	०३५५०३६	368308	३७२१२५६		2204343	39837	288888	१८२२५	
(45) sauft	E9882	E. C. C. S. S. C.	১০০৪১৪১	१५३२१३८	2	द ५३६३३	00 00 00 00 00	35.23	8 8 8 8 9 8 9 8 9 8 9 9	
(ब) निव- ला महा।	95392	1237h38	२४६२२ १६	MY MY MY UP OA OA OA	3	0 56 00 00 00 00	5. 5. 5. 5. 5. 5. 5. 5. 5. 5. 5. 5. 5. 5	200	६५७८४	
८थासाम	800 900 900 900 900 900 900 900 900 900	ととつきのおり	५०१११७५	2 586845	283	१६२५६३	99	25.53	2826	08588
Ë	>१७७१	368888	१८११८२६	5 3 3 5 0 8 6	or m. W.	८७११८	१८८४	अ८५०२	398	
१• अजमेर मेखारा	हेरे ० ट	2585	स्टरइस्	हहे०८१५	300	8000 B	0858	59 8 2	9 3 3	
**************************************	8258	pposos	9,025	>Bina	80.	ର୍ନ୍ଧର୍ଭଧ	9	0° 20 30	9	
१२ क्वेटा हत्तावि	•	००१०१	83288	30 AS E		2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2	Š	u. a	w.	
१३ अंडमन	•	\$ 5 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8	१३३७५	88.5.5		. %.	2 2	30 30 87	99	
. संपूर्ण	१६४११३	संपूर्ण १६४११३ २२११७२१५२११२५४१७३१ १०८६३०२१३	र्रथ्यस्था	\$0C830283	430	रेडेंड्डिइस अफ्राय्य स्वरंड्टर्ड रहेंड्डिइस	823088	१५१३८८७	१६२२४८	\$ 582 to 8

•

देशी राज्यों का विवरण । राज्य था पजेंसो।

	क्षेत्रफल	मनुष्य-सन्		ſ	मनुष्य- संस्याः	पढ़े हुत		पहते हुप	Ľ,	पढ़े ब पढ़ कुछ तहों
2	बर्गमाल	१८११ में	3		प्रतिवर्गः मीळ	b g h	(E	ged	佢	
१४दाजपूताना	१३०२६८	१२०१६१०२	フンおとりをま	30 80 80 80 80 80 80 80 80 80 80 80 80 80	<u>.</u>	95 87	823	5 35 30	e.	क्रिक्स अव्ह
१५ है दराबाद	2383	०८००६५११	५८७३१२१	84 84 84 84 84	23	20 20 10.	82°	664939	3230	- Anna - Arrester
१इक्षिक्यमार्	20200	१०३१८८१२	५३१५५३६	8823208	.33	28678	2888	448	इंडिंड इंडिंड	0.
Postar Tron	PROSE	2048286	सरकर्दस	25.25.63	8	883538	100 200 600 600 600 600 600 600 600 600 6	585502	5525	
१८ महस्र	26328	Posenia .	रेफहरइहर	इ. १०३८५	200	5,58005	30	2000	5.83	
्ट वंजाब के तत्त्व	ž	82833Co	रवरप्रदेश	0.7 0.5 0.5 0.5 0.5 0.5 0.5 0.5 0.5 0.5 0.5		के के के कि के के कि कि के कि के कि कि के कि कि के कि कि कि के कि कि क	2000	30 30 80 80 80 80 80 80 80 80 80 80 80 80 80	2	
२० मद्दरास के राज्य	\$	3000833	१८५३१७६	3833871		320033	86360	3	÷	

वित्ति हह वित्ति हे वित्ति है वित्त					देशी राज्यों	का वि	बर्ण।	
व्याद्वेष व्याद्वेषण के क्ष्यव्याद्व क्ष्यव्याद्व क्ष्यव्याद्व क्ष्यव्याद्व क्ष्यव्याद्व क्ष्यव्याद्व क्ष्यव्याद्व क्षय्वयद्व क्षयद्व क्षय्वयद्व क्षयद्व क्षय्वयद्व क्षयद्व क्षय्वयद्व क्षयद्व क्षय्वयद्व क्षयद्व क्ययद्व क्षयद्व क्ययद्व क्षयद्व क्षयद्व क्ययद्व क्षयद्व क्षयद्व क्षयद्व क्षयद्व क्य		इ १७६३८१३	•		•	•	e 3366682	১০১৪ ০১১
व्यत्वेष व्याह्वेषा १६७३१८६ १६२३११३ ८०१०० १५४३१५२ १३५३२२। ११६०७२३ ८१४३५ २१६०५११ १०८१०११ १०७१५०० व्याह्वेप २१६०५११ १०८१०११ १०७१५०० व्याह्वेप २१६०५११ १०८१०११ १०७१५०० व्याह्वेप १६६०५११ १८६०३११ १८६०११३२२	85	u.	225	9	N.	~	8 8 8 8 8	: 2 2 2 2 3 5 5 5
व्यत्वेष व्यह्वेष्ठा हृद्धवृद्द हृद्वहृद्व द्राप्तवेष व्यह्वेष्ठा हृद्धवृद्द हृद्धाः व्यह्वेष्ठाः द्राप्तवेष व्यह्वेष्ठाः हृद्ध्येष्ठाः हृद्ध्याः व्याव्याः व्याव्याः व्याव्याः हृद्ध्येष्ठाः हृद्ध्याः व्यव्यव्याः व्याव्याः व्यव्यव्याः हृद्ध्येष्ठाः हृद्ध्याः व्यव्यव्याः व्यव्यव्याः व्यव्यव्याः व्यव्यव्याः हृद्ध्याः व्यव्यव्याः व्यव्यव्यव्याः व्यव्यव्याः व्यव्यव्यव्याः व्यव्यव्यव्याः व्यव्यव्यव्याः विष्ठाः विष्ठाः व्यव्यव्यव्याः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठ्यः विष्ठाः विष्याः विष्याः विष्ठाः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः व	259.53	N	33280	007 007 007 008	\$ W	•	85 SE 039	
व्यत्वेष व्यह्वेष्ठा हृद्धवृद्द हृद्वहृद्व द्राप्तवेष व्यह्वेष्ठा हृद्धवृद्द हृद्धाः व्यह्वेष्ठाः द्राप्तवेष व्यह्वेष्ठाः हृद्ध्येष्ठाः हृद्ध्याः व्याव्याः व्याव्याः व्याव्याः हृद्ध्येष्ठाः हृद्ध्याः व्यव्यव्याः व्याव्याः व्यव्यव्याः हृद्ध्येष्ठाः हृद्ध्याः व्यव्यव्याः व्यव्यव्याः व्यव्यव्याः व्यव्यव्याः हृद्ध्याः व्यव्यव्याः व्यव्यव्यव्याः व्यव्यव्याः व्यव्यव्यव्याः व्यव्यव्यव्याः व्यव्यव्यव्याः विष्ठाः विष्ठाः व्यव्यव्यव्याः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठ्यः विष्ठाः विष्याः विष्याः विष्ठाः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः व	8 0 0 C C C C C C C C C C C C C C C C C	ş	8,443		3%	2	89888	5 8 8 8 8 8 5 8 5 8 5 8 5 8 5 8 5 8 5 8
व्यत्वेष व्यह्वेष्ठा हृद्धवृद्द हृद्वहृद्व द्राप्तवेष व्यह्वेष्ठा हृद्धवृद्द हृद्धाः व्यह्वेष्ठाः द्राप्तवेष व्यह्वेष्ठाः हृद्ध्येष्ठाः हृद्ध्याः व्याव्याः व्याव्याः व्याव्याः हृद्ध्येष्ठाः हृद्ध्याः व्यव्यव्याः व्याव्याः व्यव्यव्याः हृद्ध्येष्ठाः हृद्ध्याः व्यव्यव्याः व्यव्यव्याः व्यव्यव्याः व्यव्यव्याः हृद्ध्याः व्यव्यव्याः व्यव्यव्यव्याः व्यव्यव्याः व्यव्यव्यव्याः व्यव्यव्यव्याः व्यव्यव्यव्याः विष्ठाः विष्ठाः व्यव्यव्यव्याः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः विष्ठ्यः विष्ठाः विष्याः विष्याः विष्ठाः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः व	त्य हस अ व	· ·	१३ व्याप्त १	०१७२१	११११	१२२१	र्वहरुव्य	১ ১৪ ১৪ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১
वित्तक व्यव्यव्यक्त हिल्क्ष्रित हिल्हे । अति ।	E.	*	30	er 9	3. 8. 8.	•	0.1 0.1	20
वित्वत् व्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव	१६२३१९३	हे इ००१ इ	क्रिक्ट करे	००५१४००१	केट व्हें इंटर	0 % X	वर्टह्पश्चर	586388081
स्वर्थक हह क्ष्युक्त विश्व के स्वर्थक के स्वर्यक के स्वर्यक के स्वर्यक के स्वर्यक के स्वर्यक के स्वर्यक के स्	१६७३१८६	१३५३२३	१२४२४८३	१४०६२०४	99,830,8	3558		१४६७२७३४१
; E		देश्वक्रात्य		र१६०५११	, s	3883	र्शक्ष कर्	र्डसहर्द्रकार
; E	34528	00807	C228	288	8024	•	গ্রধ্ন	0360356
स्ति स्वास्ति स्वासि स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वासि	२१वंगाल के राज्य	२२ कझ्मोर	, बड़ोबा	२८ मच्य देश के राज्य	पश्चिमोत्तर देश के राज्य	१६ शान राज्य	सं जूषी देशो राज्य	नंतूण मारतबर्प

अंग्रेजी राज्य निवासियों के मत का विभाग ।

हो मित्र हदमही खिबा गवा	भार	तम्पी ८	व संक्षिप्त क्ष	विवा <u>१</u>	E tohat				•
		m/		m					-Anadis.
क्षा वा	2				å	36	2	2	*
(F)	0,88 ≥	ŵ.	#	3,5	C'A	200	りきみとる	38.23	8
वारखी	808	84. 30	ν. Κ	20	25 25 25	かがな	हडेटस्ड	13850	REYS
øĘ.	2800	रे०३८०	38 6 6 6 9	288	इ ५ ६ ६ ६	99868	E 3 6 7 9 8 8 8 0 7 6	रव्रत्यंत्र अवस्थ	(K)
सिक्ख	200	20 EX	995	er ou	Š	१३८११३४	š	2	620
Evenina Evenina	880038	रेसस्रा	25 25 25 25 25 25 25 25 25 25 25 25 25 2	69.00	226632	92585	००००० ४३४	200352	8300
1 to	१८११२२	4300	87 87 87 87	0.1 0.1	380%	2397	2000	9	~
जंगली जातियां इत्यादि	ररहस्वद्			*	202208		28866	£235E2	かだいのの
मुसळमान	रेडिनिक्रिक्टर	रे भेडे डेस हे डे	इ.च.	\$820830	इव्यक्टिह	११६३४११२	Eodoshi	इत्रहा हुन	9845488
की: ठूब	उ०५८३८ देऽभक्षदेहदे हरदे०देदभत	भेहरेटे अन्तर्भ भेरे भेरे हैं से	य स्टब्बर	११०१६२०१	३१११८३०१	ରଭଞ୍ଚଳର୍ଭ	80° 60° 60° 60° 60° 60° 60° 60° 60° 60° 6	80352083	86203
मनुष्य-संख्या सन् १८११	क्रा इसहर्	১০০১০১১৪	8528528E	१४६५०८३१	08808358	30288708	इंदर-११६३	हैत इंटर स्टेड	HOS CONTE
.8	% बंगाछ	श्रिक्षमोचर	(क)पश्चिमो -सर देश	(ল) সন্ম	इ महराख	क्षपंजाब	प्रबंब प्रसी- हैंसी	(4) (4)	(ब्र)सिंघ

86.

		•											
(ज) व्यक्त		132388	/हेरेक्ट 	en o		****	3000			 788		अहर रहह	272
६ मस्यवंश		इ०७८८२१४	9388622	अ०५०५ १	इस्टर्स	335	र्थश्व र	892	30 30 37 39	829	308 320		8°
ing o		०३५५०३६	ଚ୍ଚ୍ଚ୍ଚର	र्वत्रुव्हर्	ऽ तत्र ३ हे	ha002223.188238	230069	50°		w	87 87 87		25 25 27
(क्)ऊपरी ब्रह्म		2586533	शुरुवदेव	27 24 28	2883	95 30 30 30 30 30 30 30 30 30 30 30 30 30	80 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20	248				: 5	•
(ब) निचला ब्रह्मा		のとさいりとお	224288	इस्ट्रेड इस्ट्रेड	रेट०इस	305E808	\$18862	E 95		श		28 258	ν «
- / 2		हेह्रडेश्वन	2880003	विश्वदेशक	25. 02. 02. 02. 02. 02. 02. 02. 02. 02. 02	9889	20 20 30	er e	7 85 84 84	•		\$ \$:	<i>5</i>
* F		३ ६८७७३३	रवन्द्र १६	323008	२०१०६१	30	१५ हु र १५ हु र	999	\$6368	टरेन		Ar'	œ
१० बज्रमें से- स्वार		र्भाइटल	>>\$6£8	5 2 2 2 2 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3	•	•	m' V W C'	mr or cr	er er er	22		2 9 V 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2	ő
हुड इड	7866 731 S	১১০ <u>২</u> 03	582356	भुद्रदृष्	•		33.52 5.52	•	30	w.	: m		•
१२ क्वेटा इत	T इत्यादि	36360	\$5 85 85 85 85 85 85 85 85 85 85 85 85 85	7 3 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6		•	2000	े हैं हें हें	•	W.		nr' nr' nr' _	₩
१३ अंडमन		20 00	6, 23	3800	30 R	१२१०	823	3° m	m	•		•	•
	विजी २२१	१७३१५३	म्म्येया वर्रर्ध्यत्रपत्र रूपपर्ध्रहेश्यत्र अर्प	रेऽति०५५६त	828282h	उरहेर्ने १०६ किटस्ट्रस्टर्न वेरस्टर्न	रेडडरेडडरे	>३३६००८३	हर्भाव हर्म	25363	३६१५२ १४६६१	30 654 654 654	उद्देश्य १४६६१ १६३ २०२७८
	- 6					•		,					

•

.

•

.

•

٠

देशीराज्य निवासियों के मत का विमाण हंशी राज्य वा प्रतिशी

हिंद	मुसळमान	जातियां जातियां	बीस	हस्तान	तिक्ख	Æ	पारसी	यहदी	1/2 50	कोषे म- ज्ञात्व न-
		इत्यादि							. שוי	गुद्धा
१०११३८२१	\$18834	Paosia		b 628	80° 00° 00° 00° 00° 00° 00° 00° 00° 00°	>3363A	28.5	2	ď	
इध्याप स्था	3337866	28830		२०४२१	98833	58286	2500	ar ar		•
3825200	083735 5	१३१६२०९		97 97	4529	82882	236	a' 9	•	•
5308783	28282	3888		5. 5.	2	ESSAZE	3355	2002	į	•
86३११२७	रप्रश्व	•	5	36734	ลัง	१३२७८	in	8	•	•
र इ. १२ १३	१२८१४५१		30 Eur	22.22	のおとのころ	m, o	ş	o	•	ď
२७५१२११	५३५४७८	•	•	67.386.0		٤	*	9 3 2 0	ď	•

		दे३	गिराज्य ।	निवासियो'	के मत	का विभ	गग।		1
87 99 97 97	30000	ď				22300	>9758 428		
<u></u>	:	•	~		:	œ.	37		
	•	W.			•	५ ६५६	33		
•	62	2062	•	į	or	१२१५२	30 .		
200		40332	7 2 2	र १	•	9 8 8 8 8 8 8	> 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8		
.	के इस देश	2		3	80	25 25 25 25 25 25 25 25 25 25 25 25 25 2	११०७८३३		•
3° 3° 80°	٧. څ	30	2	28	20.5	२१७ ११	3378360	•	
18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 1	28800	~	~	90%	2	EX.			
ならもつもお	•	28648	२०५१ २८	•	~	onocene ene	१३६१६१७ ७३८००८६ ८३११		
इ२०७५६	०रेशहरश्र	\$44080	8 \$ C @ P	रहर्दश्च	80 80 80	m 9 m	त्र १८६६ १		
2803680	007883	2830585	8462988 8462988	२ ७५१८५	3522	ରରର ଖଅର୍ବେନ୍ଦ୍ର ରେଖନ୍ତ୍ର ଓ	संत्यीमारत २८७२२३४३१ २०७७३१७२७५७६२ सर्वाम		
32563	र देश हैं हैं	3884388	रेंद्रेक्टिंदर	2. 20 64 20 9	25.55		उ८७२२३४३१		
बांगाल के सच्य	बाइमीर	बड़ोवा	मध्यवेशके बाज्य	पहिचमो- त्तरदेश के राज्य	शामराज्य	संपू णंदेशोः राज्य	संट्यां भारत सर्वा	के लाथ)	
~	8	6	22	\$					

•

शहर और बड़े कसवे।

नंबर	कसना	देश,या एजेंसी	जिल्ला या राज्य	मनुष्यसंख्या सन् १८९१
9	बंबइं और छावनी	वंबई	चंबई	८२१७६४
3	कलकत्ता. किला और२ शहर तलियां	वंगाल	चोबीस परगना	<i>৩</i> ४११४४
3	मदरास और किला	मद्रास	मद्रास	४५२५१८
8.	्रहेद्शवाद, छावनी और शहर तिलयां	हैदराबाद	हेदराबाद	४१५०३९
ą.	लखनऊ और छ।वनी	াঞ্জৰখ	छलनऊ	20303
Ę	बनारस और छावनी	पश्चिमोत्तर	वनारस	२१९४६।
, 19	दिल्ली और छावनी	पंजाब	दिस्ली	१९२५७
c	मंडला और छावनी	त्रसा	मंडला	966699
९	कानपुर और छावनी	पश्चिमोत्तर	कानपुर	१८८७१
0	वंगलोर और छावनी	गईसूर	बंगलोर	१८०३६।
28	रंगून और छावनी	ब्रह्मा	रंगून	१८०३२
 १२	लाहीर और छावनी	য ান	लाहोर	१७९८५
, ;3	इलाहाबाद और छावनी	पश्चिमोत्तर	इलाहाबाद	१७५२४
१४	आगरा और छावनी	पश्चिमोत्तर	आगरा	१६८६६
े १५	• पटना	बंगाल	एटना	१६५१९
१६	पूना और छावनी	वंबडे	प्ना	१६१३९
919	्र जयपुर	राजपूताना	जयपुर	१५८००

नंबर	कसर्वा	देश या एजेंसी	जिल्ला या राज्य	मनुष्यसंख्या सन्१८९१
१८	अहमदाबाद और छावनी	वंगहे	अहमदाबाद	१४८४१२
१९	अमृतसर और छ।वनी	पंजाब	अमृतसर	१३६७६६
२०	बरैली और छ।वनी	पश्चिमोत्तर	बरैं छी ं	१२१०३९
२१	मेरट और छादनो	पश्चिमोत्तर	प्रेरट	११९३९०
२ २	श्रीनगर और छावनी	कश्मीर	कश्मीर	११८९६०
२३	नागपुर	मध्यवेश	नागपुर	. ११७०१४
28	हांग	बंगाल	होना	११६६०६
રવ	बड़ोदा और छावनी	बड़ोदा	बड़ोदा	शृश्ह्यस्य
२६	सूरत और छावनी	वंबर्द	मृरत	१०९२२९
२७	करांची और छावनी	सिंध	करांची	१०५१९६
२८	वालियर (लस्कर)	मध्यभारत	ग्वालियर	१०४०८
२९	इंदौर और रेजीडेंसी	मध्यभारत	इंदौर	९२३२४
30	त्तिचनापली और छावनी	मद्रास	त्रिचनापली	१०६०
39	मदुरा	मदरास	महुरा	८७४२
32	जवलपुर और छावनी	मध्यदेश	जबलपुर	2882
33	पेशावर और छावनी	पंजाब	पेशावर	८ ৪ १९
8 ≰	मिरजापुर	पश्चिमोत्तर	मिरजापुर	্ ১৪গ্ৰ
રૂહ	वाका	बंगाल	ढाका	८२३३
38	्गया	बंगाल	1 गरा	\$600

र्नवर	, कसवा	देश या एजेंसी	जिला या राज्य	मनुष्यसंख्या सन्१८९१
30	अंबाला और छावनी	ৰ্ণনাৰ	अंबाला	७९२९।
36	फैजाबाद और छावनी	अवध	फैजायाद	७८९२
39	शाहजहांपुर औरछ।वनी	पश्चिमोत्तर	शाहजहांपुर	७८५२
૪૦	फरुखाबाद औरछावनी	पश्चिमोत्तर	फरुखाबाद	७८०३
૪ં!	रामपुर और छावनी	पश्चिमोत्तर	रोमपुर	७६७३
४२	पुछतान और छात्रनी	पंजाव	मुलतान	७४५६
83	मईसूर और छावनी	मश्चूर	मइंसूर	ଜନ୍ଧ
88	रावर्ळापंडी और छावनी	वंजाब '	पिंड़ी	७३७९
४५	दरभंगा	वंगाल	द्रभंगा	७३५६
४६	मुरादाबाद और छावनी	पश्चिमोत्तर	मुरादावाद	७२९३
છેજ	भोपाल	मध्यभारत	भोपाळ	৩০২३
88	कलकत्ते की दक्षिणी सहर तली	बंगाल	चौवीसपरगना	ब् ९६४
४९	भागलपुर	वंगाल	भागलपुर	६९१०
40	अजपेर	अजमेर	अजमेर	६८८६
48	भरतपुर	राजपुताना	भरतपुर	4203
५२	सेलप	मदरास	मेरुप	୍ଟେ ଓଡ଼
43	जलंधर और छावनी	पंजाव	जलंधर	६६२०
५४	काळीकट	मदरास	कारीकट	६६०७
વવ	गोरखपुर और छावनी	पश्चिमोत्तरवेश	गोरखपुर	* 6363
५६	सहारनपुर	पश्चिमोत्तरवैश	सहारनपर	6399

नंबर	कसवा	देश या एजेंसी	जिला या राज्य	मनुष्य-संख्या संन्१८९१
५७	भोलापुर	वंबई	शोलापुर	६१९१५
36	जोधपुर	राजपुताना	मारवाड़	६१८४९
48	अलीगढ़ (कोइल)	पश्चिमोत्तर देश	अलीगढ़	६१४४४
န်သ	मथुरा और छावनी	पश्चिमोत्तरदेश	मथुरा	६११९५
٠ ٩ .	बलारी और छावनी	मद्रास	बळारी :	५९४६७
	नेगापटम	मदरास	तंजोर	५ ९२२ १
६२	हैदराबाद और छावनी	सिंघ	हैदराबाद	५४०४८
६३	भावनगर	वंब ई	काठियावार	५७६५३
६४	छपरा	वंगाल	सारन	ર્વહરૂવ ર
६५	पुंगेर	वंगाल	मु गेर	५७०७७
६६			बीकानेर	५९२५३
ह्७	बीकाने र	राजपुताना	पटियाला	
६८	पटियाला	पंजाब		५५८५६
६९	मोलभेन्	व्रह्मा	ए वष्ट	५५७८६
90	स्यालकोट और छावनी	पंजाब	स्यालकोट	५५०८७
90	तंजोर	मद्रास	तंजोर	५४३१८
૭૨	कंबाकोनम	मद्शस	तंजोर	५४३०७
εల	झांसी और छावनी	पश्चिमोत्तरदेश	झासी	५३७७९
08 ,	हुवली	वस्वद्वं	धारवाङ	६२५९०
૭ ૯	अलवर	राज्युताना	अलवर	५२३९८
	फिरोजपुर और छावनी		फिरोजपुर	५०४३५
७६	जोड़ ७८			826286

भाषा ।

खांदाः	न और झुण्ड ।°	गंबर	भाषा (बोल्लो)।	मनुष्य-संख्या सन् १८११।
	ſ	શ	हिंदी	८५६७५३७३
		2	पंजाबी	१७७२४६१०
		ą	काश्मीरी	२१२७६
	. = 1	8	शाइना इत्यादि	\$
	इत्त्वदी ।	ц	चित्राली	११
		Ę	पहाड़ी (पहिचमी)	१५२३२४९
		ی	पहाड्रो (मध्य)	११५३२३३
	1	E	पहाड़ी (पूर्वी)	२४२६२
	ſ	3	सिंधो	२५१२३४१
विडक		१०	कच्छी	४३१६१७
परियो इण्डिक	ĒΪ	११	गुजराती	१०६१९७८९
6	पश्चिमी	१२	मारवाडी	११४७४८०
İ		१३	महाराष्ट्री	१८८१२८७५
	Ĺ	१ध	गोबानोज और पोर्चुगीज	इ <i>७७</i> ३८
	ſ	શૃષ	हलावी	१४३७२०
	_]	१६	ভ ঙ্গি	१०१०१५७
	E	१७	बंगला	४१३४३६७२
1		१८	आसामी	१४३५८२०
1	E, [88	ब्रद्	3881310
	<u>छित्र</u> सम्	२०	संस्कृत संपूर्ण भार्यभाषा	306
L		1	सपूर्ण आयभाषा	१९५४६३८०७

खांदान	और झुण्ड ।	नंबर	भाषा (बोळी) ।•	मनुष्य-संख्या सन् १८९१
ſ	ſ	२१	तामिल	१५२२१७५९
		२२	तेलगू	१९८८५१३७
		२३	कनारी	१७५१८८५
		२४	कोडागू (कुर्गी)	३७२१८
	दक्षिणी ।	२५	मलेयालम	५४२८२५०
	lo.	२६	तुलू	४११७२८
		२७	तोड़ा और कोटा	१९३७
1		२८	सिंहाली	१८७ •
	L.	२९	माहल	3860
=1	ſ	30	गाँड	१३७१५८०
द्राधिह्यन		38	खांद ।	३२००७१
द्या	बत्तरो ।	32	ओराउन	३६८२२२
		33	मल-पहाडि़्या	30535
		३४	खरवार इत्यादि	७६५१
l		34		२८११०
			संपूर्ण द्राविड्यिन	५२१६४६२ ० १७०१६८०
	<u>.</u> 1	38		६५४५०७
E	情	30		६७७७२
कोलारियन	ř	36 38		४८८८३
THE STATE OF	重】			१८५७७५
	.पहित्त्वमी	स्र ४०		१४८५१६

खांदान	। बोर झण्ड	मंब् र	भाषा (बोली)।	मनुष्य-संस्था सन १८९१
F	. (धर	सवर	१०२०३१
कोलारियम	दक्षिणो ।	ध३	गदावा	२१७८१
100		88	ज्वांग और मलेर	१११६५
			कुल कोलारियन	२९५९००६
रियम	और द्राविड्य	ान ४५	जिप्सी भाषा	४०११२५
बासी		४६	खासी	१७८६३७
1	• •	છહ	तिव्वतन (भोटी)	२०५४४
		86	कनावरी	१२६५
		કડ	नैपाली	१९५८६६
	हिमालयन ।	ૡ૦	लेपचा	१०१२'५
		५१	भुटानी	88.00
		५२	कचारी	१९८७०५
Ē		५३	गारो	१४५४२५
तिब्बतो बरमन	बोडो (आसाम	48	छालु'ग	४०२०४
तिब्बत		qu	, कोच	८१०७।
	बोडी	५१	मेच	९०७१६
		91	७ द्विपरा	१२१८६४
		4	८ छोटी घोड़ो भाषाएं	४३१ ४
	1 2 - 1	4	९ अबोर भीरी	३५७०३
	वृत्वींचर शरहर	\ \	० आकामिस्मी इत्यादि	१२८२

खांद <u>ान</u> ्	और झुण्ड ।	नंबर	भाषा (बोलो) ।	मनुष्य-संख्या सन १८९१
		६१	न(गा	१०२१०८
सन	नागाः	६२	मिकिर	९०२३६
तिब्बतो बरमन	Ĺ	२३	सिंगफो	५६६९
तिब्ब		६४	मनीपुरी	८८३११
	स्रोनलुशाई।	ह्द	कुकी	१८८२८
	恒	६६	लुसाइयाझो	४१९२६ .
		६७	बीन	१२६९१५
ı		६८	अरकानिज	३६६४० ३
	वरमिज	ę :	वरमिज	५५६०४६१
l	16	190	निकोवारी	
			कुल तिब्बतो बरमन	७२१३१२८
	ſ	७१	मोनया तलाइङ्ग	२२६ ४१५
मो	नथनाम । 🚪	७२	पलांउ	२८४७
			कुलमोन अनाम	२२१३४२
ſ	<u>, </u>	७३	शान	१७४८७१
		૭૪	लावो या श्यामी	8
शानयाताइक ।	ſ	७५	अइटोन	ર
वानवा	- E	७६	खामतो	२ १४५
	भासाम	৩৩	फिक्याल कुल शानयाताइक	ह २५ १७८४ ४७

खांदान	भीर झुण्ड ।	नंबर।	भाषा (बोली)।	मनुष्य-संख्या सन १८११ ।
	= (७८	मे ळे	२४३७
	मैलेयन ।	७१	सालोन	१६२८
	L	20	जावानी	l ts
			कुल मलेशन	४०८४
	. Œ (૮१	कारेन	६७४८४६
	स्तिविधिक	૮ર	चीनी	३८५०४
	TR (कुल सिनिटिक	७१३३५०
ানা	पानिज ।	८३	जापानी	. 33
	- (८४	परसियन	२८१८१
नक	असरो ।	24	आरमेनियन	د ع٤
परियो इरैनिक		८६	पस्तो	१०८०१३१
परिव	दक्षिणी ।	60	बलोच	२१ १४७५
			कुलइरैनिक	१३२१४२८
	_ (66	हिन्	२१७१
	#Infee	٤٤	अरविक	५३३५१
	指丨	१०	सिरियक	१२
	L		कुलसेमि टिक	५५५३४
1	तातार	! ११		8003
=	Ē	१२		ધર
तुरैनिक	अधियान -	१३	फीन	(4
107			कुल तुरैनिक	६५१

बांदाः	न और झुण्ड	ः। नंबर।	भाषा (बोली)।	मनप्य-संख्या सन् १८९१ ।
ſ		38	अङ्गरेज	२८८४११
	टिउद्गिक	१५	जरमन	२२१५
	दिख	१६	दन	१११
		१७	ल्फोमस _	२२
	त्यन	35	डैनिस	88
	स्कंडीनेवियन	33	स्बेडिस	१८७
		१००	नरवेजियन	१५२ :
İ		१०१	बेल्स	२४५
	संलटिक	१०२	आइरिस	२१:
	कि व	१०३	गायलिक	२६४
	Ĺ	१०४	सेलटिक	२
परियो यरोपियन।		१०५	श्रीक	३८०
योय		१०६	ਲੈ हिन	!
쫍	5	१०७	इटालियन	£90
	मेडोटरेनियन	१०८	मालटिज	38
I	沿	१०९	रोमानियन	२२
		११०	इसपैनिस	843
		- १११	फ्रॅंच	२१७१
		११२	रूसी	19
	- 16	११३	पोळिस	86 .
	स्लेबोनिक।	११४	बोहेलियन	1
	W	११५	बुलगारियन	88
		११६	स्लैवोनिक	1
		1	कुल य्रोपियत	२४५७४५

कांदान और झुण्ड।	नंबर।	भाषा (बोली)।	मनुष्य-संख्या सन १८९१।
	११७	बास्क	
	११८		1588
		बेला पहचान के लावक	363
		नहीं दाखिल कियां हुआ	११६५१ *
		कुछ गिनतो किया हुअ।	२६२०४७४४०
		भाषो द्वारा	
		नहीं गिनती किया हुआ	२५१७५९९१
		भाषा द्वारा	
		हिन्दुस्तान	२८७२२३४३१
•			

जाति और पेशेः।

জ	लइकरी, किस्तकार और खेत में काम करने वाले	८५७२९२२७
ख	मबेशो चराने वाले और भेडिहर इत्यादि	१६७२१४९४
ग	जंगलो जातियां -	१५८०६९१४
ঘ	मछ्हा .	८२६१८७८
'	कारीगर अर्थात् सोनार, छोहार, बद्धं, कसेरा, दरजी, बुनने और रंगने वाले, तेल पेरने वाले, कुंभार, नि- यारिया इत्यादि	२८८८२५५१
व	देहिक और घरेऊ काम करने वाले अर्थात् हज्जाम, धोबी, भरभू जा, हलवाई इत्यादि	१४०११६२६
छ	चमड़े के काम करने वाले और गांव के नीच काम करने वाले इत्यादि	इ०७१५७०३
জ	व्यापारी और विसाती	१२२७०१७३
割	वृत्तिवाले—साधु, पुरोहित, पुजारी इत्यादि और लिखने वाले कायस्थ इत्यादि	२१६५२४२३
व	हुनर और छोटे पेशे वाले, बाजे वाले, नाचने गाने वाले इत्यादि	४१५३२७५
E	गाड़ीवान, मुटिहा, जानवर लादने वाले इत्यादि	९७३६२६
3	जांता चक्की बनाने वाले मिट्टी और पत्थर के काम क- रने वाले, शान धरने वाले, चटाई और बेत का काम करने वाले शिकार करने वाले, जादूगर, इत्यादि	३ ४५ ७६६६
ड	नामुकरर हिंदुस्तानी पदवियां	३०७१२०४
6	हिंदुस्तानो क्स्तान	१८३५६४८
वा	मुसलमान	इ४३४८०८५
त	हिमालियन मंगोलाइट	२४४७२२
থ	आसाम और ब्रह्मा वाले अर्थात् वरमीज, कारेन शान भौर चोनी इत्यादि	
व	पश्चिमो पशियादिक-यहूदी, आरमेनियन और पारसी	१०७८६४
ঘ	युरसियन	८१०४४
ਾਂ ਜ	युरोपियन	१६६४२८
q	अफ्रिकन	१८७७५
	27.74	\$8180117
	### 보고 바다를 많은 여전 에 대표 교육 교회에 보고 있는 그는 그는 그는 그는 생각이 되었다. 그리고 있는 것이 그 것이 그는 그 같은 하는 것이 그 것은 하나면 하나 되었다.	

जाति और संख्या ।

नंबर अ- घिकारंके सिलसिले से ।	. जाति।	मनुष्य-संख्या सन् १८११
१३६	अकसालो—ङ	०७३७०६
. १२४	अप्रवाला – ज	३५४१७७
ફેરફ	अगासे—च	१२६७१०
१५१	मग्रो—ङ	२४१३३६
220.	्थनादी—ग	C83CC
86/3	अफ्किन—प	१८७७५
१६६	थंबात न—च	१८६१८७
۷3	अंबान—क	६१६३२८
કૈ 4ર	अरब—ण	३१३३८
२ १८	अर्ख— छ	८५५२२
۷٥	अरोरा—ज	६७३६१५
₹0€	आरमोनियन—द	१२१५
• ११२	आराकानी—थ	४५२१६ ४
२०६	असारो—ङ	६००८०३
300	बसुरो−ङ	3443
Ę	अहीर (ग्वाला अलग है)—ख	८१५५२१९
२५६	अहेरिया—ठ	३६३२०
१८१	अहोमा—थ	१५३५१८
१०१	औरावन—ग	५२३२५८
८ ८	इडेगा—ख	६६५२३२
१६२	इदगा—च	१९६९०१
230	इंदल!—ग	५८५०३
७३	इऌ्आ—च	७०३२१५
१४६	उपार—ङ	२६७७१५
284	उलमा−श	40884

नंबर अ- धिकाई के सिल्लिले से ।	ন্ধানি ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१।
१५०	कचारी—ग	२४३३७८
3 %	काछी—क	१३८४२२२ .
२६ ५	कंजर—ड	र१४८६
२२६	कथोड़ो—ग	७७७०५
२०२	कंधेरा आदि—ङ	१०५६१३
२५१	कनाकन—झ	४१०१३ •
२६७	कनिसन—अ	२७१९८
૮રૂ	कमार—ङ	६६६८८७
१६८	करन—झ	१४६०५३ .
२४१	करनाम—झ	५४१७७
88	कलाल—च	११९५०३७
१३८	कसाई—च	३०२६१२
१७७	कसेरा इत्यादि—ङ	१६१५१६
३०	कहार—ध	१९४३१५५
२४८	काठी—क	४१ ९९६
२२ १	काथे (मनीपुरी)—ग	८४५४०
33	कांद्—च	५२४१५५
રક	कायस्थ—झ	२२३१८१०
34	कारेन—थ	480508

नंबर ध- धिकाई के सिलसिलें से।	जाति ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१।
११७	काला—क	४१० ९८३
१६३	कालू—ङ	१९१३९५
१६ ९	किरार—ग	१७५५०८
२ ६८	कुकी—ग	२५९४०
B	कुमवी इत्यादि—क	१०५३१३००
l a	कुंभार—ङ	३३४६४८८
१७ ९	कुर—ग	१५५८३१
43	कुरनेवर—ख	१०५११८५
१४२	कुसवन—ङ	१३८०१७
32	कृस्तान हिंदुस्तानो—ढ	१८०७०१२
२६६	कुस्तान गोआनिज—ढ	२८७५६
48	केवर—ध	१८१३५२
133	कैकोला—ख	३१६६२०
48	केवरत—क	२२९८८२४
34	कोइरो-क	१७३५४३१
Ro	कोज—ग	२३६४३६५
३० ४	कोटा—क	१२०१
१६०	कोडागन—क	३ २६४ १
18	कोमठो—ज	५४५२०६

नंबर अ- धिकाई के सिळसिळे से ।	जाति ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१।
१७८	कोरबा—ग	१५८७००
१६१	कोरवी—ड	२०७०४५ .
40	कोरवी—ङ	११८७६१३
१०८	कोळ—ज	अवश्रद्ध
१५	कोली—क,	३०५८१६६
१५६	कोस्ती—ङ	२२५०१\$
૮૧	खंडाइट—क	६७१२७२
१४१	खटिक—च	२१३७७१
१९९	खत्री—ङ	११६८८०
७८	खत्रो— ज	६८६५११
२००	बरवार—ग	११२२९८
१५९	बस—च	२१५२००
१३९	खाती—ङ	३ ०१४७६
19	खांद—ग	६२७३८८
२५९	खांबू—त	338 60
१७१	खासो—ग	१७२१५०
२२२	खोन—ग	८२७१०
२८४	खीन खेरमा—ग	१४२००
२८१	खोनस्रो—ग	१५६६६
२८४	ख्मरा—ढ	इ५५४

नंबर अ- ध्रिकाई के सिलसिले से।	जाति ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१।
२५७	गडवा—ग	३४१२७
११७	गमरा—च	१२२३२२
१५२	ग वंडला—च	२३५९०२
२२७.	गबंडिया आदि—ङ	७६९९५
१ध२	गांडा—ङ	२९१७६८
88.	गाडेरिया—ख	१२९४८३०
२५०	गारुड़ी—झ	ध १ध१२
१८४	गारो—ग	१५०२२७
२५	गावली, म्वाला इत्यादि—ख (अहोर अलगहै)	२२३७३२३
२७	गूजर—क	२१७१६२७
२०१	गूरा इत्यादि—झ	११०५२९
२८६	गूक'—त	१०८१४
१४	गोंड—ग	३०६१६८०
२६७	गोंधाळी—ञ	१८०३४
880	गोरिया इत्यादि—च	१४१६२८
२५८	गोला—च	\$ \$<08
१५३	गोसाई'—झ	२३१६१२
38	गौढी—ध	३१७१११

नंबर अ- धिकाई के सिलसिले से ।	जाति ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१ ।
१८१	धनिगा—ङ	१४२३७४
१९४	घाट ठाकुर—ग	१३०४८१ .
१७५	घाटवाल—छ	१६७०८९
२४६	घासिया—ड	४६०७७ ्
२५५	चंगार—ढ	३६५६९
3	चमार—छ	११२५८१०५ •
२६९	चाकर—च ़	२५७०६
२०८	चारन—झ	33030
३ ०१	चिंगपाऊ आदि—ग	3853
રકક	चोनोज—थ	४ १८३२
२४०	चुरिहार—ङ	५५६१८
८७	चुहारा—छ	१२४३३७०
હર	चंटी—ज	७०२१४१
६००	चेरूमा—क	५२३७४४
११९	जंगम—झ	३९६५९८
२२३	जटापू—ग	८११५२
o e	जाट—क	६६८८७३३
१६०	जोगी—ट	२१४५४६
११६	जॉगी—स	४२४ २१९
288	जोतसी—ञ	८५३०६

नंबर, अ: धिकाई के सिलसिले से।	जाति ।	मनुष्य-सं <u>ख</u> ्या सन् १८९१
		255000
१८	जोरहा—ङ	२६६०१५९
३०५	झालगर—ङ	444
१०३	झिनवार—घ	823288
288.0	झोरा—ङ	७३३७
ં ૨૮૧	टांककार—ठ	3605
२०७	ृद्धिपरा—ग	९९३१५
308	टोडा—ग	७३१
२३५	ठठैरा— ङ	६०८३७
२८०	हंकउत—य	१६०६२
१८६	ड काली इत्यादि—अ	१४७३६४
ध६	डोम—छ	१२५७८२६
१२८	. ततवा—ङ	३२८७७८
१०४	तंता—ङ	४८३१४२
२३१	ततान—ङ	५६८४४
७५	तरखाना—ख	६१६७८१
१५७	तंबोली—च	२२२०४८
3 €	तीया—च	५३८०७५
રક્ષ્ક	तूर्क-ण	५७५०३
\$	तेली और घांची—ड	४१४७८०३
૨ ૪૨	थारू—त	५३८७५
२१०	थोरिया—ज	3090

नंबर,अ- धिकाई के सिलसिले से।	जाति ।	मनुष्य-संख्या, सन् १८११ ।
७२	दरजी और सींपी—ङ	७१००९२
१७२	दुवला—क	१७२०५२
84	दुसाध—छ	१२८४१२६
३०२	देवली—ड	२२८ ९
२७३	दोगला—ध	१९८२१
233	घंगारी—ङ	३६७३
१३ ०	घांका—ग	६७४५१ .
83	घांगर—ख	१३०५५८३
६२	घानुक—छ	८८३२७८
१४४	धीमर—ध	२८७४३६
१०२	घेद—छ	५०८३१०
२ ८	धोबी—चं	२०३१७४३
2 35	नद—ड	१३९०६८
!!	नाई इत्यादि (हजाम अलगहै) —च	२५३२०६७
२०५	नाग—ग	१०१५६८
21	नामासद्रा—क	१९४८६५८
44	नायर—क	१८०८६०
२ १५	नियरिया—इ	4606
२१७	नेवार—त	86.04
२२८	नेकाडां—ग	08801

मंबर, अधिकाई के सिलसिले से	ं जाति	मनुष्य-संख्या, सन् १८९१
१०५	पंचमशालो—क	४८२७६३
288	पटनूळी—कु	१६४४३
13	पठान—ण	३२२५५२ १
R ?\$	पंधारी—ट	६७५१
. २६४	प्रभू—झ	२ ९५५१
्र २६	पराइया (परिया)—छ	२२१०१८८
२३६	परोत—च	६०१२९
(१२६	पान—ग	३४१७४०
२१५	पारसी—द	८१६१८
६५	पाला—क	८१४१८९
23	पाळी—क	२२४२४ ११
80	पासी—छ	१३७८३४४
৩০	पिंजारी—ङ	७५३६७५
E8	फकीर—झ	<3 0838
1888	बडागो—ङ	४५२३३ १
46	बढ्ई—ङ	१३२७१८
£2.	विजारा—ट	५६१६४४
?3	बनिया और महाजन—ज	३१८६६६६
4	षरमिज—थ	५४०८९८४
રફક	बरवाला—ठ	६३८५६

नंवर, अधिकाई के सिलसिले से	बाति	मनुष्य-संख्या, सम् १८:१
१३७	वलाई—ङ	३०५६३५
६७	बळिजा—ज	<i>৩৪३০७</i>
५६	बलोच—ण	१७१८३५
2 ? 8	बंसफोर—द	८९१५५
२२९	बसोर—ड	७३३४५
243	बहेलिया—ड	35203
६६	बागडो—क	<083£0
१६८	बागडी—ढ	१७१०७०
२३ १	बाबा—झ	६६११५
१५८	बांमो—छ	२२०५१६
90	षायरो—क	६१२४३०
2	ब्राह्मण—झ	१४८२१७३२
२६०	विधुर—झ	33830
د 4	बिराध—छ	६५९८६३
२४३	बुरुध—ड	५३४१३
२३२	बेदिया—ठ	६५११४
१८२	बेलदार—ड	१५२५१५
१०७	षेलमा – क	४७१७८३
813	वेगा—ग	१३६४७८
२१७	वैद्य—ञ	٠ ډابون

भारतवर्षीय मंक्षिप्त विवरण।

नंबर, अधिकाई के सिलसिले से	जाति	मनुष्य-संख्या, सन् १८९१
१४५	बैरागी—झ	२७५६०४
१०१	वैष्णव—झ	४६ ९०५२
२ ५४	बोगर—ङ	30005
Rol	भंडारी (हजामत बनाने वाला)—च	१०३०२६
£0\$ \	भंडारी (ताड़ी सराव वाला)—च	१७००१४
. १२५	भरभू जा—च	इध३३०८
. 894	भरवड—ख	१२८२७१
१०६	भाट—झ	४८१११ १
RCU	मांड—श	\$ >01
२७ १	र्भाड्या—ज	28431
ં ૧૭૦	भिछाला—ग	१७५३२१
२०१	भिस्ती-च	१८८२४
38	भिल—ग	१६६५४७४
248	भुँइमाली—छ	२३१४२१
€₹	भुँइया इत्यादि-ग	१०१८२२
84	भुमिहार—क	१२२२६७४ .
! ३१	मुद्रहारी—छ	३१६७८७
99	भोंई—घ	६०६१ ९ ०
-২০৩	मोदिया—त	२५६७०

नंबर, अधिकाई के सिलसिले से	जाति .	मनुष्य-संख्या, सन् १८९१
२७५	मंगार─त	१९३८३
१८२	मंगाला—च	१५४४३८
२१३	मनिहार—ज	\$0838
	मिपला—ज	११६४३६
१३ ५	मरवा—क	३१३८८१
48	मराह (केवर अलग है)	११४७५४४ 🔪
२३८	—घ महत्तम—ड	५६१८४
18	महारा—छ	२१६०५६ट
22	महाराष्ट्र-क	३३२४०१५
, 68	માંગ—છ	६१०४५८
१४८	माछी—ध	२६०४१६ •
**	मांडिगा—छ	१२७३३१
88	माळा—क	१३६५५२०
**	माळी—क	१८७६२११
२१२	मिकर—ग	९४८२ ९
१३४	मिरसो—अ	३१६४२२
ব	मोना—ग	६६१७८५
\$80	मुत्रासा—छ	२१६७४३
२७३ ः	मुरमो—त	२१८८९
46	मुसहर—क	हरर०३४
११८	मृ'बा—ग	ध १०६२ ७
u3	मेओ—क	३६५७२६

नंबर, अधिकाई के सिलसिले से	. जाति	मनुष्य-संख्या, सन् १८९१
१८५	मेघ—छ	१४८२१०
२१०	ਸੇਚ-11	:६८७३
હશ	मेहतर—छ	७२७१८५
844.	मेहरा—छ	२२६२१६
१२७	मोगल—ण	<i>\$\$\$</i> \$\$
.A 8€8	मोघिया—ठ	१४६६६७
40	मोची—छ	६६१३३
शर	मोन—थ	४६७८८५
२७८	यह्दी-द	१६९५१
२८५	याऊ—थ	१२१३४
^ રરક	यूरेसियन—ध	< \$088
१७६	युरोपियन—न	१६६४२८
१६४	रंगरेज—ङ	१८७६१८
१ १५	रवारी—ख	ध३४७८८
રહાય	राज इत्यादि—ङ	११७७०
4	राजपूत-क	१०४२४३४६
233	राभोसी—छ	\$222
१७	रेडी—क	२६६५३११
२ २५	रेहगर—ङ	७७८५६
२६३	लदाखी—त	इ०६७२
१ २९	लवना—ट	३२७७४८

नंबर, अधिकाई के सिलसिले से	জাবি	मनुष्य-संख्या, सन् १८९१
388	लडेरा—ङ	32838
१२३	लाबे—ज	३६४२१३
८ ६	लिंगायत —क	६५५४११
२८३	छिंबू ─त	१५०७१
२४७	लुसाई—ग	83<80
२८८	लेपचा—त	?७४५
39	लोध—क	१६७४०९८
\$<	लोनिया—ङ	. osesse
80	छोद्दाना—ज	५३०४६८
33	लोहार—ङ	१८६९२९३
धर	चिकिलिगा—क	१३६०५५८
१४९	धनान—च	२५८५०८
१६५	बनिया—ङ	१८६२१७
१४३	बलइया—ठ	२८९४११
१७४	वारली—ग	
22	वेलाला—क	3,500,000
ξ }	बोड्यावाडर_ठ	२२५४०७३
{3 0	सक्ला—च	७९३५१६
288	सतानी - झ	३२७७२०
રૂહ	संथला—ग	ेट८३५४ १४१४०४५ -

भारतवर्षीय संक्षिप्त विवरण।

नंबर, अधिकाई के • सिलसिलें सें	্বাবি	मनुष्य-संख्या, सन् १८९१
११४	सबर—ग	४३८३१७
२६२	संसिया—ड	४०७० ४
१२१	साधू—झ	३ ७६१३०
१६७	सान—थ	१८२७४५
. ৩৩	साना—च	६९०४३४
र्र १२०	सार्ली—ङ	≸ःत£त्र७
२७ ;	सिकिलगर—ठ	१६७८१
. ११३	सिकिलिया—छ	४४५३६ ६
91	सुतार—ङ	६८१७९०
234	सुनवार—त	५२१०
· **	सुंडी—च	५२५६ १८
.	सेख-ण	૨૭૬૪૪!!३
१९८	सेवक इत्यादि – झ	१२१६४७
ધર	सोनार-ङ	११७८७१५
199	हजाम (नाई अलग है)—च	६०५७२१
१४७	हलुआई—च	२६०८०१
२०४	हलावा-ज	१०२६४३
१८३	हो—ग	१५०२६२
63	होलर-छ	< < < < < > < < < < > < < < < < < < <

संक्षिप्त=प्राचीन=कथा і

िंगपुराण—(४७ वां अध्याय) शिवपुराण (ज्ञान संहिता ४७ वां अध्याय और विष्णुपुराण ७४ वां अध्याय) राजा प्रियन्नत के वड़े पुत्न 'आग्नीध्र' ने जंबूद्वीप के ९ खंडों को अपने ९ पुत्नों को विभाग करित्या, जिनमें हेम नामक दक्षिण का 'वर्ष' अर्थात् दक्षिणी खंड, जो हिमालय युक्त हैं; आग्नीध्र के बड़े पुत्न, 'नाभि' को मिला। नाभि का पुत्न 'ऋषभ' हुआ और ऋषभ के १०० पुत्न हुए। राजा ऋषभ अपने बड़े पुत्न 'भरत' को राजतिलक वेकर आप परमधाम को गए। यह हिमालय के दक्षिण का देश भरते के अधिकार में हुआ, इस लिये इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

श्री मद्भागवत-५ वां स्कंध-दूसरे अध्याय से ७ वें अध्याय तक और गरुडपुराण ५४ वां अध्याय--राजा पियब्रत का पृत्त आग्नीध्र जंबूद्वीप का रांजा हुआ, जिसके ९ पृत्त थे,—नाभि, किंपुरुष, इरिवर्ष, इलावृत, रम्यक, हिरण्य-मय, कुरु, भद्राक्ष्व और केतुमाल । वे अपने अपने नाम से जंबूद्वीप के ९ संड करके राज्य भोगने लगे । नाभि के पृत्त राजा ऋषभवेव के १०० पृत्त हुए, जिनमें भरत सबसे बड़ा था; उसके नाम से इस संड को भारतवर्ष कहते हैं । इस वर्ष का नाम पहले 'अजनाभ' था, परंतु जबसे भरत राजा हुए, तबसें इसका नाम भारतवर्ष प्रसिद्ध हुआ।

त्रहावैवर्त (कृष्ण जन्मावंड-५९ वां अध्याय),

बिष्णुपुराण—(दूसरा अंश, तीसरा अध्याय) और दृहन्नारदीयपुराण (तीसरा अध्याय) क्षार समुद्र से उत्तर और हिमालय पर्वत से दक्षिण भारतवर्ष (हिंदुस्तान) है।

अग्निपुराण-(११९ वां अध्याय) समुद्र से उत्तर और हिमवान् पर्वत से दक्षिण ९ सहस्र कोस विस्तार का भारतवर्ष है। स्वर्ग और मोक्ष पद के प्राप्त करने वाळे मनुष्यों के लिये यह कर्मभूमि है। मनुस्मृति-(दूसरा अध्याय) पूर्व के समुद्र से पश्चिम के समुद्र तक नर्मदा नदी और हिमवान् पर्वत के बीच के बेश को 'आर्यावर्त' वेश कहते हैं। सरस्वती और हपद्वती, इन

दोनो देव निद्यों के अंतर्वर्ती देश को 'ब्रह्मावर्त' कहते हैं। इस देश में वारो वर्ण और संकर जातियों के बीच, जो आचार परंपरा क्रमसे चले आते हैं, उसे 'सदाचार' कहते हैं। कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पंचाल और श्रूरसेन (मथुरा) देशों को 'ब्रह्महर्षि-देश' कहते हैं, जो ब्रह्मावर्त से कुल निकृष्ट हैं। इन देशों में उत्पन्न हुए ब्राह्मणों के समीप पृथ्वी के सब लोगों को अपना अपना आचार व्यवहार सीखना उचित है। हिमालय और विध्य पर्वतों के मध्य में 'बिनशन, देश के पूर्व और प्रयाग के पश्चिम जो भूमि है, उसे 'मध्यदेश' कहते हैं। द्विजातियों को यत्नपूर्वक इन देशों का अवलंबन करना चाहिए।

्यशिष्ठस्मृति-(पिहला अध्याय) हिमालय के दक्षिण और विध्य पर्वत के उत्तर जो धर्म वा आचार है, वह जानने योग्य है, इसी देश को 'आर्यावर्त' कहते हैं।

महाभारत- (शांतिपर्व-१९२ वां अध्याय) उत्तर में सब गुणों से रमणीय, पिवल, हिमाछय पर्वत के बगळ में पुण्य और कल्याणकारी, जो सब सुंदर देश हैं, उन्हीं को 'परलोक' कहा जाता है। वहां पर कोई मनुष्य पापकर्म नहीं करता, सदा सब पविल और निर्मेळ रहा करते हैं। वे देश स्वर्ग के समान सब गुणों से युक्त हैं।

भविष्यपुराण-(६ वां अध्याय) सरस्वती, दृषद्वती और गंगा इन तीन निदयों के बीच जो देश है, वह देवताओं का बनाया हुआ है; उसकी 'ब्रह्मावत' कहते हैं। हिमालय और बिन्ध्य इन दोनो पर्वतों के मध्य में बुरुक्षेत्र से पूर्व और प्रयाग से पश्चिम जो देश है, उसकी 'मध्यदेश' कहते हैं। हिमालय और बिंध्य पर्वतों के बीच में पूर्वके समुद्र से पश्चिमके समुद्र तक जो देश है, उसको 'आर्यावर्त' कहते हैं।

कूर्मपुराण—(ब्राह्मीसंहिता-उत्तरार्छ-१६ वां अध्याय) हिजों को हिमालय और विंध्य पर्वतों के मध्य में बास करना चाहिए । पूर्व वा पश्चिम के समुद्रवर्ती देशों को छोड़ करके पूर्व अथवा पश्चिम के मागों के शुभ देशों में वे बास कर सकते हैं, किन्तु अन्य देशों में उनको निवास नहीं करना चाहिए। िं गिपुराण-(५२ वां अध्याय) भारतवर्ष के मनुष्यं अनेक वर्ण के होते हैं और कर्म के अनुसार आयुष भोगते हैं, परंतु उनकी परम आयुष १००० वर्ष की है। वे इन्द्रद्वीप, कश्चरू, ताम्रद्वीप, गभस्तिमान, नागद्वीप, सौम्य, गांधर्व, वारुण, कुमारिका खंड, इत्यादि देशों में वसते हैं। म्छेच्छ, पुछिंद, किरात, शवर आदि अनेक जातियां चारो ओर वसती हैं। उनके अंतर यवन रहते हैं। मध्य में ब्राह्मण, क्षत्री, बैक्य और शूद्र इन चारों वणों का निवास है।

विष्णुपुराण-(दूसरा अंश-तीसरा अध्याय) भारत के पूर्व में किरातदेश, पश्चिम में यवन देश है और मध्य में ब्राह्मण, क्षत्नी, बैश्य और शूद्र बसे हैं।

गरुडपुराण-(पूर्वार्छ, ५६ वां अध्याय) भारतवर्ष में ९ द्वीप हैं, इन्द्रद्वीप, कशेरु, ताम्रवर्ण, गभस्तिमान, नाग, कटाइ, सिंइल, सौम्य, और बारुण। भारत में पूर्व किरात, पश्चिम यवन, दक्षिण अंध और उत्तर तुरुष्क बसते हैं; और इसके मध्य भाग में ब्राह्मण, क्षत्रिय, बैश्य और शूद्र निवास करते हैं।

बामनपुराण—(१३ वां अध्याय) भारतखंड में भी ९ खंड हो रहे हैं और समुद्र करके अंतरित हुए नवों खंड आपस में अगम्य हैं,--(१) इंद्रद्वीप,. (२) कसरू, (३) ताम्रपर्ण, (४) गमस्तिमान, (५) नागद्वीप, (६) कटाह, (७) सिंहल, (८) बारूण, और (९) कुमाराख्य । दक्षिण-उत्तर के मध्य कुमाराख्य खंड हैं; पूर्व में किरात, पश्चिम में यवन, दक्षिण में अंग्रू और उत्तर में तुरूष्क स्थित हं; ब्राह्मण, क्षत्नी, बैश्य और शूद्र मध्य भाग में वसते हैं।

मध्य भाग में मत्स्य, मुकुंद, कुणि, कुंडल, पांचाल, कोशल, बृष, शबर, कोबीर, मुलिंग, शक, समाशंख; पश्चिम तक वाह्लीक, वाट धान, आभीर, कालतोपक; पश्चिम दिशा में नर्मदा, भारकच्छ, सारस्वत, सौराष्ट्र, अवंती और अर्बुद; उत्तर में गांधार, यवन, सिंधु, सौवीर, कैकेय, कांबोज, वर्व्वर, अंग, चीन; पूर्व में बंग, मह्गर, प्रागज्योतिष, प्रष्ट, बिदेह, और मागध; और दक्षिण में चोल, मुषिकाध, महाराष्ट्र, कलिंग, आभीर, शवर, नल, इत्यादि वेश हैं। विंध्य पर्वत के मूल में मेकल, उत्कल, दशार्ण, भोज, तोसल, कोशल, कीपुर, नैषध, अवंती, बीति होत और पर्वतों के समीप खस, तिगर्व, किरात, शिखाद्रिक देश हैं।

मत्स्यपुराण—(११३ वां अध्याय) बुरु, पांचाल, शाल्व, जांगल, श्रूरसेन, भद्रकार, ब्राह्म, पट्टचर, मत्स्य, किरात,कुल्य, कुंतल, काशी, कोशल, अवंती, कलिंग, पूक और अंधक यह मध्य के वेश हैं; वाह्लीक, वाटधान, अभीर, कालतोपक, यह श्रूद्रोंके वेश हैं; और पल्लव, आंतरवंडित, गांधार, यह यबनों के वेश हैं। सिंधु, सौवीर, मुद्रक, श्रक, पुलिंद, कैकय आदि वश वेशों में क्षित्य, बैश्य और श्रूद्र बसते हैं।

खत्तर में आत्रेय, भरद्वाज, प्रस्थल, जांगल इत्यादिः पूर्व में अंग, वंग, मालव, प्राग्रुयोतिष, पुंडू, विदेह, ताम्रलिप्तक, शालव, मागधः दक्षिण में पांड्य, केरल, चोल, नवराष्ट्र, कलिंग, कारुष, शवर, पुलिंद, विध्य, बैदर्भ, वंडक इत्यादिः विन्ध्य के समीप में भारुकच्छ, सारस्वत, कच्छिक, सौराष्ट्र, आनर्त और अर्बुदः विध्याचल, के पीठपर मालव, करुष, मेकल, उत्कल, दशार्ण, भोज, किस्किंधक, तोशल, कोशल, लेपुर, नषध, अवंती इत्यादि और पर्वतों में तिगर्त मंडल, किरात इत्यादि देश वसे हैं। (१२० वां अध्याय)- हिमवान पर्वत के, पृष्टभाग के मध्य में कैलाश पर्वत है।

आदिब्रह्मपुराण—(२६ वां अध्याय) भारतवर्ष १००० योजन है, जिसके पूर्व में किरात, पिश्चम में यवन आदि और मध्य में ब्राह्मण, क्षत्रिय, बैश्य और शूद्र बसते हैं और मध्य में मत्स्य, कुल्य, बाद्छीक, मेकल, गांधार, यवन, सिंधु, सौवीर, भद्रक, कलिंग,केंकय, कांबोज, वर्ब्बर, पुष्कल, काश्मीर हेश; पूर्व में अंधक, प्रग्ज्योतिष, मद्र, बिदेहदेश; दक्षिण में कुमार, बासक, महाराष्ट्र, माहिषक, कालिंग, आभीर, पुलिंद, मेंलेय, बैदर्भ,दंडक, भोजबर्धन, कौलक, कुंतल देश; और बिंध्याचल के पृष्टपर दशार्ण, किस्किंधक, तोषल, कोशल, तुसार, कांबोज, यवन देश हैं।

कूर्मपुराण—(ब्राह्मीसंहिता ४६ वां अध्याय) पूर्व कुरु, पांचाल, मध्यवेश, और कामकुप; दक्षिण में पुंडू, कलिंग, मगधवेश इत्यादि; पारियाल पर्वत पर सौराष्ट्र, आभीर, अर्बुद, मालक, और मालवा; और पश्चिम में सौबीर, सैंधव, हूण, शालव, कान्यकुट्ज, मद्र, अंवर और पारसीक वेश हैं।

महामारत—(भीष्मपर्व—९ वां अध्याय) महेंद्र, मंख्य, सह्य, शुक्ति-मान, ऋक्षवान, विंध्य और पारिपात्न; येही पहाड़ों के ७ कुछ हैं। इनके पास-अप्रसिद्ध हजारों पहाड़ विद्ध्यमान हैं(महाभारत में हिमाल्य, कैलाश, गंधमादन, अर्बुद आदि पहाड़ों के भी नाम हैं)।

बाराहपुराण-(८३ वां अध्याय), मत्स्यपुराण-(११३ वां अध्याय), भिबच्यपुराण (५७ वां अध्याय), कूर्मपुराण (४७ वां अध्याय), आदिब्रह्म-पुराण—(२६ वां अध्याय), गरुडपूराण (पूर्वार्द्ध, ५५ वां अध्याय), अग्नि-पुराण—(११९ वां अध्याय) और विष्णु पुराण (दूसरा अंश-तीसरा अध्याय) महेंद्राचल, मलयाचल, सह्याचल, श्रुक्तिमान, ऋक्षवान, विध्याचल और परियात्र ये ७ भारतवर्ष में मुख्य पर्वत हैं।

मत्स्यपुराण (११३ वां अध्याय), कूर्मपुराण (ब्राह्मीसंहिता, ४६ वां अध्याय), बराहपुराण (८३ वां अध्याय), भविष्यपुराण (५७ वां अध्याय), आदिब्रह्मपुराण (२६ वां अध्याय) और विष्णुपुराण (द्वितीय अंश, तृतीय, अध्याय)---हिमालय पर्वत से गंगा, यमुनो, लोहिता (रामगंगा), गोमती, सर्यू,गंडकी, कौशिकी(कोशी),सिंध,शतदू,(सतलज),विपाशा(व्यासा),ऐरावती (रावी), चन्द्रभागा(चनाव),सरस्वती, दृषद्रती, देवीका, कुहू, धूतपापा, बाहुदा, निखिरा, चक्षुमती,बितस्ता(अलम),निश्चला,इक्षु और विशिरा; महेन्द्राचल से विसामा, ऋषिक्ल्या, त्रिभौगा, पितृसोमा, बहुला,इक्षु इत्यादि नदियाँ; मळया चल से ताम्पणी, कृतमाला, पुष्पजाती, उत्पलावती, आदि नदियां; सहचाचल में गोदावरी, भीमरथी (भीमा), कृष्णा, वेणी, तुंगभद्रा, कावेरी, सुपयोगा, पापनाशिनी आदिः शुक्तिमान पर्वत से काशिका, सुकृपारी, पद्बाहिनी, इत्यादिः पारिपात पर्वत से वर्मण्वती (चंवछ),बेत्रवती (वेतवा),चन्द्रनामा,पणीशा, कावेरी,(ओकारनाथ के पासवाली),वेणुमती, वेदवती,मनोरमा,इत्यादिः ऋक्षवान पर्वत से चित्रकूटा, तमसा, करतोया, पिशाचिका, विश्वाला, विरुणा, वौद्धवाहिनी, दशाणी इत्यादि और बिंध्यपर्वत से बैतरणी, बेणा, घ्रोदा, विपाशा, इत्यादि नदियां निकली हैं। तापी (तापती) नदी को निकास स्थान किसी पुराण में

बिन्ध्याचल, किसी में ऋक्षवान पर्वत और किसी पुराण में पारिपाल पहा-इंजिखा है; इसो प्रकार से नर्भदा, सान, पंदाकिनी, महानदी, शिपा, मही, और पयोष्णी का भी।

पनुस्मृति-(१० वां अध्याय) ब्राह्मण, क्षत्नी, बैंड्य, भूद्र, अम्बष्ठ, निषाद, बिल के जीवों को पारने वाला उग्र, सूत (सारथी), पागध, बैंदेह (अंतः पुर का रक्षक), अयोग्व (काष्ठ चीरने वाला), क्षत्ता (बिल के जीवों को पारने पाला), चांडाल, आक्षत, आभीर, धिम्वर्ण (चर्मकार), पुकस (बिल के जीवों को पारने वाला), कुक्कुटक, श्वपाक, बेण (करताल मृदंग बजाने वाला), भुर्ज, कांक; झल्ल, पल्ल, निल्लि, नट, करण, खस, द्रविड, सुधन्वा, आचार्य, काक्ष्व, बिजन्मा, मैत्रा, सात्वत, सैरिंध्र, मैत्रेय (राजा को जगाने वाला), पार्गवा (नौंकाचलाने वाला), कारावरट, (चर्म लेदक), मैद (जंगलो पशुओं की हिंसा करने पाला), पांडुपाक (बांसुरो बेचने वाला), आहिंडक, स्वपाक (जल्लाद का कार्य करने वाला), अंत्यावसाई (इमसान कार्य से जीविका करने वोला)।

औशनसस्पृति-(आरंभ में) बेणुक, चर्मकार, रथकार, मागर्ब (स्तुति करने वाले), चांडाल (मल को उठाने वाला), व्यपच (कुत्ते का मांस लाने वाला), आयोगव(बल्ल बुनने और कांसे के ब्यापार में जीविका करने वाला), ताम्रोपजीवी (ठठेरा), मूनिक (सोनी), उद्धन्धक (बल्लो को घोने वाला), पुलंद (मांस दृत्ति करने वाला), पुलंकस (सुरा दृत्तिवाला), रजक (घोबी), रंजक (रंगरेज), नर्चक (नट), बैदेहिक (बकरी, मैंस और मौ को पालने वाला), मूचिक (दरजी) पाचक (रसोइया), चक्री (तेल वा लवण की जीविका करने वाला तेलो), भिषक (बैद्यक करने वाला), अंबष्ठ (खेती और लकड़ी में जिविका करने वाला), कुंभकार (मही के पाल बनाने वाला), नापित (नाई), पार्शव (पहाड़ों पर रहने वाला), मणिकार, उग्न (राज का दन्ड धारण करने वाला),शुंडिक (मूली देने का काम करनेवाला), मूचक (दरजी), तक्षक (बढ़ई), मत्स्यबंधक (धीवर), कन्ठकार ।

अंगिरास्पृति-(आरंभ में) रजक, चर्मक (चमार), नट, बुहरू, कैवर्त, भेद, भीछ।

पारासरस्पृति (११ वां अध्याय) दास, नापिक (नाई), गोपाल, अर्द्ध सीरी (उप विधया),

ब्यासस्पृति-(पहला अध्याय) वणिक, किरात, कायस्थ, मालाकार (माली), कुटुंबो, वरष्ट, भेदु, चोंडाल, दास, श्वपच, कोलक।

गौतमस्मृति-(चौथा अध्याय) अंबष्ठ, उग्र, निषाद, दौष्यंत, पार्शव, सूत, मागध, अयोगव, बैदेहक, चांडाळ, धीमर, पुष्कस, भुजकन्टक, माहिष्य, बैदेह, यवन, कर्ण।

बिशव्टस्पृति (१८ वां अध्याय) चांडाळ, बेण, अंत्यावसायी, रोमक, पुल्कस, सूत, अंबष्ट, निषाद, उग्र (भीळ) पार्शव।

पद्मपुराण-(मृष्टिखंड तीसरा अध्याय) कायस्य, कर्ण, (१५ वां अध्या-य) कायस्थ, दास।

(भूमितंड-२९ वां अध्याय) निषाद, किरात, भीछ, नाइछक, भ्रमर, पुछिंद, सूत, सागध, बंदी, चारण (नट)। (स्वर्गतंड-१८ वां और ३१ वां अध्याय) चमार, पासी, कोरी।

ब्रह्मवैवर्तपुराण-(ब्रह्मखंड १० अध्याय) गोप, नाई, भीक, मोदक, कूवर, तांबोली, सोनार, करन, अम्बच्छ, माकाकार, कर्मकार, शंख कार, कुविंदक, कुंभकार, कांसकार, सूत्रधार, चित्रकार, अष्टालिकाकार, कोटक, तैलकार, तीवर, सेट, मल्ल, मातर, भड़, काड, कलंद, चांडाक, चर्मकार,मांसलेद, पोंच, कत्तार, काजरा, इडी, डम, गंगापुत, खुगी, मदक, राजपुत, शौंदक, आंतरी, केंवर्त, धींवर, रजक, कोयाली, सरवस्वी, न्याध, कुद्र (कोटिक), वागतीत, मलेच्छजाति, जोला, शराक, सूत, भद्भ(भाट)।

(कुष्ण जन्म खंड -८५ वां अध्याय) सोनार, कायस्थ ।

अंग्रेज़ी राज्य का आयव्यय ।

भारत वर्षीय अंग्रेज़ी गवर्नमेंट की एक वर्ष की आमद और खर्च— सन् १८८७—८८ ई०।

शोमदनी रुपया •	करो- ड	लाख	खर्च रुपया	करो- ड	लाब
र्भूमि से	२२	36	भूमि, अफिजन,		
अफिक्रन से	૮	48	निमक, आवकारी,		
निमक से	Ę	७२	स्टाम्प, कष्टम,		
व्यावकारी से	8	40	जंगल विभाग, और रजो-		
ल्याम्य खे	ą	64	स्टरी में।	8	88
परदेश की आमदनी			रेलवे में,	१६	५७
रफतनी का महसूल,			डाक, टेलीग्राफ और टक-		
्जंगल की आमदनी,			शाल में	2	8,0
रजीस्टरी की आमदनी,			नहर इत्यादि में	2	88
और देशी राजाओं से कर	હ	१६	सेना में खर्च	२०	88
रेलवे से आमदनी,	१४	धर्	वेतन	12	30
डाक, टेलीग्राफ और टक-			छुरी, पेंशन, कागज,		
शोल से,	ર	१९	कलम, बंटा; इत्यादि,	ક	96
नहर इत्यादि से,	શ	७१	स्द	ધ	५२
अदालत, पुलिस,			्र घाट, रास्ता इत्यादि	ų	ફ૦
जहाज, शिक्षा, चिकित्सा			सीमा रक्षो	0	५७
और विज्ञान सें,	ę	धर	अकाल निवारन	0	3
छापा, कागज और कलम से	8	३५	रेळ इत्यावि	0	۵
सैनिक विभाग से,	٥	36	जोड	ح و	419
स्व,	0	७५			
घाट, रास्ता और मकान से,	0	५७			
जोड,	७७	£2			

देशी राज्यों का विवरण।

नंबर्	राज्य	क्षेत्र फळ, वर्ग मोळ	क्षेत्र फळ, मनुष्य संख्या वर्ग मोळ सन् १८८१ ई०	मालगुनारो	शहर और कसने इत्यादि	ম ক্ষুদ্র ম
	हैद्राबाद	28882	8644828	3000000	हैदराबाद, औरंगावाद, गुलबगां, कादि-	
					राबाद, रायचूर, बीढ़, गड़वाल, मोमीना-	
La C					बाद, नदर, कल्यान, हिगांला, नारांपेट, वा-	
					रगल, इ ड्रर, वस्मध, बादर, निमल, मनवट,	
					मरासिर,प्रमानी, सिकंदराबाद, बळारम, दौ- ळताबाद, इळोर, असाई।	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
	बड़ोदा	(22 A	45८५००५	०००००००८३	वड़ोदा, पाटन, बोलनगर, काडी, नी-	(दक्षिण)
					सारी, सिद्धपुर, बाइनगर, अमरेलो, पेट-	
					लाद, दमोई, सोजिना, ऊंझा, बासो, द्रा-	
	4				- Kan I	वां वां
	'वाळियार ,	(U) 20 00 07 07	क्रिक्टर इस्टर्ड	१२५०००००	ग्वालियर, डज्जैन, मंडेशर, नीमच, सा-	
	मैस्ट	26,000	Cense Year (1997)		त्मगर, नरबर, मिलसा, चंद्रो।	मध्य भारत
	•		23030	000000303	बगलार, मसूर, आरंगपट्टन, कोलर,	
					शिमोगा, तमकूर, चिकवां लापूर। मेसर	मेंसर

प्रदेश	कश्मीर	मध्यभारत (माळवा)	मद्रास		राजपूताना		राजपूतमा मध्यभारत	ारा राजयूतना
शहर और कसबे इत्यादि	८०००००० श्रीनगर, अंबू, अनंतनगर, सोपर, पुंच मीरपुर, बारामूला, बटाला।	७०००००० ह बीर, मऊ, रामपर, मांड्र, मंडलेश्वर।	६६००००० त्रिबेंद्रम, अलोपी, क्षीलन, नागरकोयल।	६१००००० जयपुर, शिकार, फतहपुर, माथवपुर, हिंड- उन, नयलगढ़, सांभर, धुं झनू, रामगढ़, उ-	द्यपुर, खंडेला इत्यादि। ४९००००० परियाला, मारनचल, बूसी, सुनाम, महेन्द्रगढ़	समाना। ४१००००० जोधपुर, नागोड, पाली, कचवाद्वा सुजात.	चिलारा, डिडबाना, फतादा। ४००९०० भोपाल, सिद्दोर।	३७००००० उदयपुर, मिलवाङ्ग, चितौर, श्रोना थद्वारा कांक रीलो.
मालगुजारी	00000	000009	\$\$0000	००००४३	000000000000000000000000000000000000000	००००४८	000008	०००००६
क्षेत्र फळ मनुष्य संख्या वर्ग मोळ सन् १८८१ ई०	०३०३ हे फेट	<u> </u>	258688	35.888.55	EE 20 3 22 3	そっおっかのる	रे०४८५४	१४४४२२०
क्षेत्र फल वर्ग मोळ	00802	0087	2,630	5 3 3 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8	85 85 85	S S S S S S S S S S S S S S S S S S S	きのンさ	१२६७०
E	क्ष्मीर	हन्दीर	द्रावंकोट	अवर्तेर	पटियाला	अपिबद्धर	भोपाळ	डदयपुर
नंबर	8	w .	9	v	~	\$	*	. E

२८६० ४००३२३ ३४०००००भावनगर, ज्यह्म	ह्५०० ५१२०८४ ३०००००मांडवी. मुज, अंजर, मोडवा बंबई	५१७२७५ २१०००००कोटा हप्र५८० २७००००० मरतपुर, दीगः, कामा	8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8	ट. इंचळकरं जी	३२७१ ३८७४११ २१००००० जूनागढ, विरावक, सोमनाथ, पट्टन,	२२३४४ ५०९०२१ १८०००००वीकानेर. चुक. रतनगढ्, सुजनगढ्, भटनेर राजपूताना	१७२८५ ५७३४१४ १६०००० बहाचलपुर अहमदपुर, खांपुर, उच्छ पंजाब	१०९९ ५४१११४ १६०००० रामपुर, तांडा. शाहाबाद पश्चिमोततर	१३६१ ६००२७८ १६०००० आप्नीकोळम, मतनचरर, त्रिचुर मद्यास	रहाध ३४०४८८ १५००००० झालरापाटन छावनो राजपुताना	१३०७ ६०२०८४ १३०००० क्रुचियहार बंगाळ	8289.2
•	- Bau	कोटा मरतपुर	अलवर जनानार	गानागा । कोव्हापुर	जुनागढ़			रामपुर	कोचीन	झालाबार	कूचिविद्यार	रतलाम
or, UA,	30	5 W	2 \	<u>, </u>	8	8	4	en cr	30	*		9

अक्टरहेरा अक्टरहेरा	माळगुजारी . शहर और कसबे इत्यादि		प्रदेश
arar arar ar ar ar	११००००० रीवां, सतना		मध्यभारत (षघेल खंड)
at a or at at a second	१०००००० कपुरधका, पुगवारा, फगवारा. सुकर्तापुर		पंजाब
ര്യ സ്യ് ജ്ര്	१००००० वृ'स्रो	:	राजवृताना .
	१०००००० मीरवी	i	वं वं
	१००००० घोलपुर, बारी. राजखेरा, पुरानी छावनी १००००० वृतिया		(कारियाबार) राजपुताना मध्यभारत
	९००००० उरछाः टिह्ती (टीकमगढ्)		(वृं देलकंड मध्यभारत
	८००००० जायसा	:	(म् नलखंड) मध्यभारत
	७५,०००० घानगड्डा		(मालवा) वंब है
	१००००००	:	(क्रांटियाबार) मध्यभारत
	है ५०००० नामा	*	(मालवा) प्नाव
	हर्५००० कांच	*	वा.
	६००००० प्रतापगढ्	2	राजपूताना
	६००००० राधनपुर	:	ं व्यक्ति
१२३२ २८१८६२	६००००० जो द	*	पंजाब

84 व	खेरपुर	5063	हर्रहरू	५,५०००० विस्तुस	
	रबंदर	es, es, es,	टिडाउटेड	५५०००० पोरबद्द	r church
80 व	गळनपुर	057	र ३३६४८१	५००००० पाछनपुर	(कारिवार)
	चरकाशि	929	500000	५००००० वर्षारा	•••मध्यभारत
i 3			0000		(बुद्दलखंड)
	राजा है	97	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	५००००० राजगढ्	मध्य भारत
9	faienz	600	00000	Second afficiency	(भोपाल प्रजेंसी
2 1 2 1 1 2 1 2 1 1	9.00	A .	2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2	केंद्रिक कें	₽
0.1873	· (2)	U 00 Y X	28080	५००००० महाला	•• राजपूताना
		262	3080100		मध्य भारत
	Hart	X 20 8	7 m	000000000000000000000000000000000000000	(वृद्धावड)
20	देवास	3 3 3	Y 0' 0' 0' 0' 0' 0' 0' 0' 0' 0' 0' 0' 0'		HEAT HILL
10 3 6 1 2 6 3 6					
على على	किस्नुनगढ	200	११२६३३	३५०००० किस्ननगढ	ः याजा वर्गान
	ज्व	5000	930983	३५०००० मंडी	
95	साबंतवाड़ो	800	इहस्रम्भ ३	375000	io lo
ال ا ك	पढूकोटा	वं ० वं वं	०००५०५	३००००० पद्कोटा	मद्रास
ع نو	फरोदकोट -	30 Er	20000	३०००० मरीद्रकोट	. प्रवाब
६० मिल	मिलयरकोटला	30 83	22000	२८४००० मिलयर कोटला	
हुं ह	बांसवाडा	5300	588598	२८०००० बांसवाडा ,	राजपृतामा
हर हा	लिमड़ो	85 20	E 80 06 33	२६४००० लिमड्रो	···वंबई (काठियाबाड)
£3	- हिप्परा	3208	98358	२५०००० भगरताला	बंगाल

ਿਕ ਕ ਨ ਦ**ੇ ਮੈਂ ਕ** ਲ ਲ

भारतवर्षीय संक्षिप्त विवरण।

नंबर		क्षेत्र फळ वर्ग मीळ	मनुष्य संख्या सन् १८८१ ई०	माळगुजारी	. शहर और कृत्मबे इत्यादि	प्रदेश
30	<u>अवेस्तेर</u>	४३११	89 88 88 88 88 88 88	र५०००० खतरपुर	<u>ه</u> عدرود .	मध्यमारत (बुदेळखंड)
3	वंब	38.60	E00733	२३५००० चंबा		पंजाब
W.		* 8	35 35 35 35 37	. २२५००० नवशहर	नवशहर	मध्यमारत (बुदेलखंड)
9	विज्ञावर	er 92 83	११३२८५	२२५००० विज्ञाचर	बिजादर	तथा
3	राज्यक्रमांच	300	\$ 5 K 2 3 3 4		२२२००० रजलंदगांच	मन्य देश
l o	a series	088	760000		२१४००० खैरागढ	तथा
, 8	ड्रॅगरपुर	5000	१५३३८१	28000	२१०००० द्वासतुर	राजपूताना
ã	सिरमोर	5000	११२३७१	२१०००० नाहन		पंजाब
` c'	राजकीट	823	0 33 3'3'3'3		२०५००० राजकोट	बंवह कारिकामार
89	(Farcher)	3050	्रध्य १०३ १	000502	१७५००० सीरोही, आबू	
3	असलमेर	98834	806783		१५८००० जैसलमेर	ज्ञ
5	智	o sa	52.25		१५०००० नागीड, उचहरा	मध्यभारत (बघेलखंड)
w 9	विहरी	8840	२११८१६	१४२००० टिहरी	ंटिहरी	पश्चिमोत्तर
2	बस्तर इस्तार	53083	286386		१४१००० वस्तर या जगदलपुर	मध्य देश तथा

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय देशी राज्यों में से हैदरावाद राज्य में ११५३७०४० मनुष्य, बड़ोदा-राज्य में २४१५३९६, मैमूर-राज्य में -४९४३६०४, कक्मीर में २५४३९५२, ट्राबंकोर में २५५७८४०, जयपुर राज्य में २८२४४८०, पिट्याला-राज्य में १५३८८१०, जोधपुर-राज्य में २५२४०३०, उदयपुर-राज्य में १८३२४२०, भरतपुर-राज्य में ६४०६२०, अलवर-राज्य में ७६९०८०, बीकानेर-राज्य में ८३१२१०, बहावलपुर-राज्य में ६४८१००, रामपुर-राज्य में ५५८२७६, कोचीन-राज्यमें ७१५८७०, टोंक-राज्य में ३७९३३०, कपुरथला राज्य में २९९५९०, मोली-राज्य में ८६१६४, धोलपुर-राज्य में २७९८८०, नाभा-राज्य में २८२७६०, किसुनगढ़ राज्य में १२५५१६, फरीद, कोट-राज्य में ११५०४०, मिलपुर कोटला-राज्य में ७५७५०

कपुरथला के महाराज को पंजाब के राज्य की मालगुजारी के अलावे अ-वध की मिलकियत से ८००००० रुपये मालगुजारी आती है और टिपरा के राजा को अपने राज्य की मालगुजारी के अतिरिक्त अंगरेजी राज्य की जिमी-दारी से २५०००० रुपये की आमदनी है।

ऊपर लिखे हुए देशी राज्यों के अलावे हिंदुस्तान में अंगरेजी रक्षा के आधीन मनीपुर, पटना, पालीटाना; माइहर, रायगढ़, सोनपुर,सारनगढ़, सर-गूजा, वामरा,गंगापुर, शिकम, धोराजी इत्यादि बहुतेरे छोटे देशी राज्य हैं।

स्वाधीन राज्य।

अंरेजी और करद राज्यों के अतिरिक्त हिंदुस्तान में नैपाछ और मूटान दो हिन्दुस्तानी स्वाधीन राज्य है;—(१) नैपाछ-राज्य तिब्बत और भारतवर्ष के अंगरेजी राज्य के कीच में हिमाछय पर्वत के दक्षिणी सिछ सिछे पर स्थित है। इसकी छंबाई पूर्व से पित्रचम तक छगभग ५०० मीछ और चौड़ाई एचर से दक्षिण को ७० मीछ से १५० मीछ तक; और इसका क्षेत्रफछ छगभग ५४००० मीछ बर्गमीछ है। इस राज्य में करीब ३०००००० मनुष्य बसते हैं और १०००००० हुएए माछगुजारी आती है। (२) भूटान-राज्य हिमाछप

और आसाम के बीच में हिमालय परहै। इसका अनुमानिक क्षेत्रफल १९००० बर्गमील और इसकी अनुमान से मनुष्य संख्या १५०००० है।

फ्रांसोसियों और पोर्चु गोजियों का राज्य।

अंगरेजी और हिंदुस्तानी राज्यों के अलावे, जिनका वर्णन हो चुका, हिं-दुस्तान में कुछ थोड़ा सा राज्य परवेशी वादशाह फांसीसियों और पोर्चुगी जों के अधिकार में हैं, —(१) फांसीसियों का राज्य मदरास हाते के दक्षिण अर्काट में पांडीवरी, तंजीर में कारीकाल, गोदावरी में यानाम, और मलेबार में माही और बंगाल हाते के हुगली जिले में चंदरनगर हैं। संपूर्ण राज्य का क्षेत्रफल २७८ वर्गमील हैं, जिसमें सन् १८९१ में २८२९२३ मनुष्य थें। (२) पोर्चुगीजों का राज्य बंबई हाते के रतनागिरि और उत्तरी किनारे के मध्य में गोआ, सूरत और थाना के मध्य में दमन और काठियावाह के दक्षिण में ह्यू है। इसके संपूर्ण राज्य का क्षेत्रफल १०६६ वर्गमील हैं, जिसमें सन् १८९१ ई० में ५६१३८४ मनुष्य थें।

संक्षिप्त ऐतिहासिक विवरण।

भारतभ्त्रमण में स्थान स्थान पर इतिहास किखे गए हैं, इस किये यहां बहुत मंक्षिप्त लिखा जाता है।

छगभग २५०० वर्ष पहले हिंदू-शास्त्र का मत अच्छी तरह से प्रचलित था, परंतु इसके पश्चात् गौतम बुद्ध ने, जिसका जन्म ईशा से ६२३ वर्ष पहले हुआ था, बौद्ध मत नियत किया, जो १००० वर्ष से अधिक समय तक हिंदू मत का मुकाबिला करता रहा। सन् इस्त्री की नवीं शताब्दी में बौद्ध मत के लोग हिंदुस्तान से जबर्वस्ती निकाल दिए गए. परंतु एशिया में अभी तक इस मत के लोग ५०.करोड़ हैं (भारतभ्रमण-तीसराखंड के बुद्ध गया में देखों)

भारतवर्ष का वाहरी इतिहास यूनानियों की चढ़ाई से आरंभ होता है। सन् ईस्वी के ३२७ वर्ष पहले, वर्ष के आरंभ में यूनान का सिकंदर हिंदुस्तान में आ पहुंचा और अटक के निकट सिंध नंदी को पार करके झेलम की ओर चला। उस समय पंजाब में छोटे छोटे अनेक राजा थे, जो एक दूसरे से डाइ करते थे, इनमें से हिंदू राजा पोरस ने झेंलम नदी पर सिकंदर का मुका-विला किया। अंत में वह परास्त हुआ, उसकी पुत्र मारा गया और वह जलमी होकर भागा, परंतु जब पौरस ने आधीनता स्वीकार की, तब सिकंदर ने उ-सका राज्य वापस देकर उसको अपना मिल बना लिया। इसके पश्चात् षद दक्षिण-पूर्व को अमृतसर की ओर बदा और फिर पश्चिम की ओर पीछे को इटा और संग्रहा पर कथेई की कौम को परास्त करके बयासा नदी पर पहुंचा। पीछे वह कई कारणों से छाचार होकर झेलम को लीट गया। वहाँ में उसने नदी की राह से नौंकाओं पर ८ हजार फौज मेजो और बाकी को २ भागों में विभक्त करके स्थल मार्गसे नदी के किनारे किनारे कूच किया। मुल-तान में, जो उस समय भी दक्षिणी पंजाव की राजधानी था, सिकंदर को माली की कौम से बड़ी लड़ाई हुई; शहर के लेने के समय सिकंदर जखमी होगया, इसिलिये उसके सिपाहियों ने क्रोंध में आकर मुलतान के संपूर्ण वा-सिंदों को तलवार से काटडाला। सिकंदर ने वहांसे जाकर चनाब और स-तलन के संगम के पास शहर इस्केंद्रिया की नंत्र दी, जो अब उच्छ कहलाता है। आस पास की रियासतों ने उसकी आधीनता स्वीकार की, इसके उप-रांत वह सिंध प्रदेश में होकर नदी की राह से दक्षिण ओर सिंध के मुहाने तक गया। डेलंटा की चोटी पर उसने पटाला शहर को नंप सिर से वनवाया, जो अब सिंध में हैदराबाद के नाम से प्रसिद्ध है। सिकन्दर पंजाब और सिंध देश में दो वर्ष तक रहा, परंतु इसके बीच उसने कोई सूत्रा फतह नहीं किया; बलिक इस देश की रियासतों से अहदनामा किया और किले में फीं जे नियत की। इसने अपने सहायक सदीरों को बहुत मुल्क देदिया और पश्चिम अफगानिस्तान की सीमा से छे कर पूर्व ब्यास नदी तक और दक्षिण में डैल्टा तक जगह ज-गह सिपाहियों को ग्वला, उसने अपनी फीज का एक भाग पारंस की खाड़ी के किनारे किनारे रवाना किया और वाकी फौज की वर्द्ध विस्तान और पारस हो-करखूदमूसा को छेगया। मार्ग में बहुत तकलीफ उठाते हुए सन् इंस्वी के ३२५ वर्ष पहले वह मूसा मे पहुचा। सिकंदर की मृत्यु होने के पोछे सन ई स्वी के ३२३ वर्ष पहले, जब उसका राज्य बाटा गया; तव वलख और हिंदुस्तान का मृत्क सेलूकस निकेटर के हिस्से मे पड़ा, जिसने शाम का राज्य नियत किया।

जिस समय सिकंदर पंजाब में था, उस समय हिंदुस्तान के वहुत सरदार इसके दरबार में हाजिर रहते थे; उनमें से चंद्रगृप्त नामक सरदार पर किसी कारण में सिकंदर नाराज होगया, तब वह (सन् ईस्वी में ३२६ वर्ष पहले) क्रकर से जान लेकर भाग गया। उसके कई एक वर्ष पीछे चंद्रगृप्त ने डाक् और लुटेरों की सहायता से मगध के राजा नन्द को बरवाद करके ईसा से ३१६ वर्ष पहले एक राज्य नियत किया। उसने नन्द की राजधानी पाटिल पुत्र पर, जिसको अब पटना कहते हैं, अधिकार करके गंगा के मंपूर्ण मैदान में अपनो हुकृमत कायम की और उत्तर और पिश्चम की यूनानी और देशी रि-यासतों की अपने आधीन बनाया । सिकंदर के मरने के पीछे जब उसका सेनापित सेच्युकस ११ वर्ष तक शाम के राज्य के प्रबंध में छगा रहा, उसी समय चंद्रगुप्त उत्तरीय हिंदुस्तान में एक राज्य कायम करने में छगा था; इन दोनों का राज्य बढ़ते बढ़ते एक दूसरे से मिल गया। अन्त में सेल्युकस ने पूनानियों का विजय किया हुआ पुलक, जो कावुल की वादी और पंजाब के मुल्क में था, चंद्रगृप्त के हाथ वे च डाळा और अपनी पुत्री का विवाह भी उससे कर दिया। एक यूनानी एळवी सन् इंस्वी के ३०६ वर्ष पहले से २९८ वर्ष पहळे तक चंद्रगुप्त के दरवार में तैनात रहा।

सिकंदर के बाद यूनानियों की हिंदुस्तान में कोई बड़ी बिजय नहीं हुई।
मेल्युक्स के पोते ए टियोक्स ने सुप्रसिद्ध बौद्ध राजा अशोक से, जो चंद्रगुप्त का पोता था, सन् ईस्वी के २५६ वर्ष पहले अहद नामा किया । यूनानियों ने हिमालय के पश्चिमोत्तर बाक्ट्रिया में अपना राज्य कायम किया था।
१०० वर्ष तक यूनानी बादशाह पंजाब पर आक्रमण करते रहे और इनमें से
कोई कोई सन् ईस्वी से १८१ वर्ष पहले से सन् १६१ वर्ष पहले तक पूर्व मथुरा
और अबध तक और दक्षिण सिंध और कच्छ तक पहुंचे, परंतु उन्होंने कोई

बाद्शाहत कायम न की। यूनानीलोग सिवाय ज्योतिष और उमवे संगत राशी के हिन्दुस्तान में अपने आने का कुछ निशान नहीं छोड़ गए।

सिदिया वाले सन् इंस्वी के करीब १०० वर्ष पहले से सन् ५०० इंस्वी तक हिंदुस्तान पर आक्रमण करते रहे। सिदियन लोग मध्य एसिया से आए, उनका कोई खास नाम न होते के कारण उनको सिदियन कहते हैं; उनके मो-खतिलिफ फिरके थे। कहते हैं कि सूनामक एक तातार या सिदियन के फिरको ने सन् ईस्बी के १२६ वर्ष पदले यूनानी खांदान के वेक्ट्रिया के राज्य से जो हिमालय के पश्चिमोत्तर था, निकाल दिया। उसके चंद रोज बाद सदियन लोग पर्वतों के दरों में होकर हिंदुस्तान में आने लगे और उन्होने उन आबादियों को, जो बैक्ट्या के युनानियों ने कायम की थी, फतह कर लिया। सन् इंस्वी के आरंभ में उत्तरीय हिंदुस्तान और उससे आगे के मुल्कों में सि-दियनों का एक जवरदस्त राज्य कायम होगया। सिदियनों में कनिश्क बहुत प्रसिद्ध बादशाह था, जिसने सन् ४० इंस्वी में बौद्धों का चौथा जलसा मुक र्रर किया था। उसकी राजधानी काञ्मीर था और उसका राज्य दक्षिण में आगरा और सिन्ध से लेकर हिमालय के उत्तर आरकंद और कोहकन्द तकफैला था। इस बड़े अरसे में हिन्दुस्तान के राजाओं ने सिदियनों को अपने मुल्क से निकालने में बड़ी बहादुरी दिखलाई। इनमें उज्जैन के राजा विक्रमादित्य बहुत मिसद्ध हं, जिन्होंने सन् इंस्वी से ५७ वर्ष पहले सिदियनों को परास्त कर के उस विजय की य्यादगार में संवत् वांधा; जिसमे हिंदुस्तान में वर्ष गिन ने की रीति नियत हुई।

सी वर्ष के पीछे बालवाहन नामक राजा सिदियनों का अत्र हुआ, जिसके नाम से सन् ७८ ईस्वी में बालवाहन बाका (शक) नारी हुआ। नीचे लिखं हुए हिंदुस्तान के ३ वड़े राजों के वंशधर फिर ५ सदियों तक सि-दियनों से लड़ते रहे। (१) बाह वंश के राजाओं ने सन् ६० ईस्वी से सन् २३५ तक वंबई के उत्तर और पश्चिम में और (२) गुप्त-वंश के राजाओं ने सन् ३१९ से सन् ४७० ईस्वी तक अवध और उत्तरीय हिंदुस्तान में राज्य किया, और इसके बाद वे सिदियन के नये आए हुए दलों से हार गए। ब-

रछभी-वंश के राजा सन् ४८० से सन् ७२२ ईस्वी के पीछे तक कच्छ, माछवा और बंबई के उत्तर जिलों पर राज्य करते रहे। सरहदी मूबों के निवासियों में अब तक भी बहुत सिदियन हैं। महाभारत और पुराणों में सिदियन लोग 'शक' करके प्रसिद्ध हैं, जिनके सम्बन्ध से विकमादित्य का मूसरा नाम शकारी भी पड़ा था।

महम्मद साहव ने, जो सन् ५७० ईस्वी में अरब में पैदा हुए थे, एक मज़हव जारी किया, जिसकी गरज मुल्कों के विजय करने की थी। सन् ६३२
ईस्वी में उनका देहांत होगया। उसके १५ वर्ष पीछे खळीफा उसमान ने
दिरियाई फौज अरब में बंबई के किनारे की ओर थाना और मड़ौच को
मेजी। इसके अळावे अरब के मुसळमानों ने सन् ६६२ और ६६४ ईस्वी
में हिंदुस्तान पर आक्रमण करके ळूट मार की, परंतु उन आक्रमणों से कोई
नतीजा नहीं निकळा। हिंदुस्तान के छोगों ने हिंदुस्तान के बंद्रगाह में जब
अरव के छोगों का एक जहाज ळूट लिया, तब अरब के महम्मद कासिम ने
सन् ७१२ ईस्वी में सिन्ध देश पर आक्रमण किया। वह उस देश पर विजय
मास करके सिन्ध नदी के देरें में रहने छगा, जो सन् ७१४ ईस्वी में मरगया।
छोग ऐसा भी कहते हैं कि राजपूतों ने सन् ७५० में मुसळमानों के सूचेदार
को निकाल दिया था, परंतु सिंध के मुल्क पर सन् ८२८ ईस्वी तक हिंदुओं
की दोवारा हुकूमत नहीं होने पाई थी।

मुसल्लमानों के विजय के पहले हिंदुस्तान के हिंदू सरदारों के मुल्कों में फीजी इंतजाम बहुत अच्छा था, जिसके कारण मुसलमान लोग आगे नहीं बढ़ सके। विन्ध्याचल पहाड़ के उत्तर ३ राजे हुकूमत करते थे। पिट्यमोत्तर सिंध नदी के मैदानों में और यमुना के ऊपर के भाग के मुल्कों में राजपूत लोग हुकूमत करते थे और मुल्क का वह भाग, जिसको पूर्व काल में मध्यदेश कहते थे, बलबान राज्यों में बटा हुआ था और इन सबका हाकिम कन्नौंज का राजा था, विहार से लेकर नीचे तक गंगा के नीचे दर्रे में पालयानि बुद्ध खांदान के राजा लोग कहीं कहीं राज्य करते थे। विध्याचल पहाड़ के उत्तर और दक्षिण के दोनों हिस्सों के पूर्वी और विचली जमीन में पहाड़ी और

कंगली लोग रहते थे, खनके पिरचम और मालवा कां हिंदू राज्य था, वहां बड़े बड़े जागीर दार बर्तमान थे। विन्ध्याचल पर्वत के दक्षिण द्राविड़ में बहुत लंड़ाके राजा थे जो पांडिया चोला और चेराखांदान के आधीन हुकूमत करते थे। पांडिया अर्थाद पांडय राज्य की राजधानी मदरास हाते में मदुरा थी। यह राज्य सन् ईस्वी से पहले चौथी सदो में कायम हुआ था, जिसको सन् १३०४ ई० में मुसलमान मिलक काफूर ने बरबाद किया; चोला की राजधानी 'का-म्बेकोनम्' और चेरा की राजधानी तालकंद थी, जिसमें सन् २८८ ई० में सन् ९०० ई० तक चेरा खांदान के लोग राज्य करते रहे। अब यह शहर है सूर राज्य में कावेरी नदी के बालू में ढक गया है।

लाहौर के राजा जयपाल ने सन् ९७७ ईस्वी में अफगानों की लूट से तंग होकर अफगानिस्तान के अंतरगत गजनी की वादशाहत पर आक्रमण किया। गजनी-खांदान के शाहजादे सुवुकतगीं ने बड़ी लड़ाई के पत्रवात् उसको परास्त किया, तब वह १० लाख दिरहम अर्थात् ढाई लाख रूपये देने का बादा करके अपनी फौज के साथ छौट आया, उसके पश्चात् जब राजा ने सुबुकतगी को दिरहम नहीं दिया, तब उसने हिंदुस्तान में आकर जयपाल को फिर परास्त किया और पेशावर के किले में एक अफसर के आधीन १० इजार सवार तैनात किया। सन् ९९७ इंस्वी में सु वुकतगीं के मर जाने पर उसका १६ वर्ष का पुत महमूद्रगजनी के तख्त पर बैठा, जिसने सन् १००१ ईस्वी से डिंदुस्तान पर १७ बार आक्रमण किया था। इनमें से १३ इमले पं-जाब के अनेक शहरों के बिजय करने के लिये हुए थे, परंतु कश्मीर के आक-मण में उसकी विजय नहीं हुई और बाकी ३ हमले जो कन्नोज, ग्वालियर और सोमनाथ, दूर के शहरों पर हुए वे बहुत बड़े थे। प्रत्येक हमलों में मु-सलमानों का कञ्जा हिंदुस्तान पर बहुताही गया। महमूद थानेसर, नगर कोट और सोमनाथ के मन्दिरों से बहुत दौलत लेगया । उसका सोलहवां इमला नो सन् १०२४ ईस्वी में गुजरात के सोमनाथ पर हुआ था । बहुत मिसद है। १७ इमलों का नतीना यह हुआ कि पंजाब के पश्चिम के शहर गजनो के राज्य में मिछा छिए गए। महमूद गजनबी ने हिंदुस्तान में रह कर बादशाहत करने की इच्छा कभी नहीं की थी, वह सन् १०३० ईस्वी में मरगया, उसके बाद के गजनी के बादशाहों के आधीन करीब १५० वर्ष तक पैजाब मुसलमानों के राज्य का सूबा बना रहा।

गोर और गजनी, जो अफगानों के २ शहर हैं. उनमें बहुत दिनों से दुश्मनी चली आती थी। सन् १०१० ईस्त्री में महमूद गजनती ने गोर को जोता था, परंतू सन् १०५२ में गोर ने गजनी को लेलिया और खुसरो, जो महमूद की नसल का पिछला बादशाह था, भागकर अपने हिंदुस्तान के राज्य को राजधानी लाहीर में छिपा, परंतू सन् ११८६ ईस्त्री में यह मुल्क भी उसके हाथ से निकल गया और गारियों का सरदार शहाबुदीन, जो महम्मद गोरी के नाम से अधिक प्रसिद्ध है, हिन्द्स्तान को फतह करने लगा।

सन् ११९१ इंस्वी में महम्पद गोरी ने दिल्ली पर आक्रमण किया, जो थानेसर में हिंदुओं से परास्त हुआ और कठिनता से लडाई के मैदान से जान लेकर भागा, परंतु उसने छाहोर में पहुंच कर अपने छितर बितर सिपा-हियों को फिर इक्टा किया और मध्य एशिया से नई फौज की सहयता पा कर सन् ११९३ ईस्वी मे फिर हिंदुस्तान पर चढ़ाई की। चौहान राजपूत पृथ्वीराज अजमेर और दिल्ली का राजा था और राठौर राजपूत जयचंद कन्नीज में राज्य करता था। उस समय राजपूत राजाओं में परस्पर एका न था; इस कारण वे लोग इकट्टे होकर महम्मद्गोरी से नहीं लड़ सके । कन्नोज के राजा जयचंद की दिल्ली के राजा पृथ्वीराज से दुझ्मनी थी, इस लिये वह दिल्ली पर आक्रमण करने के लिये अफगानों को दिल्ली पर चढा छाया। पृथ्वीराज और महम्मदगोरी से दृषद्वतो नदी के किनारे पर बढ़ा संग्राम हुआ, अंत में पृथ्वीराज मारा गया । दिल्ली पर मुसलमानों का अधिकार हुआ। इसके पश्चात् सन् ११९४ ईस्वी में महम्मद गोरी ने कन्नी-ज के राजा जयचंद को परास्त किया. राजा मारगया। यथ के यथ कन्नौज के राठीर राजपूत और उत्तरी हिंदुस्तान के दूसरे राजपूत अपने अपने देश को छोड़ कर उस देश में चले गए. जो सिन्ध नदी के पूर्वी रेगिस्तान से मिला है। वहां जाकर उन्हों ने लड़ने की जगहों की नेव दी. जो अब तक राजपुताने के नाम से प्रसिद्ध है।

महम्मद गोरी खुद बनारस और म्वालियर तक गया, उसके सेनापित बिख्तियार खिलजी ने सन् ११९९ में बंगाले को डेल्टा तक लेलिया। मह-म्मद गोरी कभी अफगानिस्तान में लड़ता था और कभी दिन्दुस्तान पर इमला करता था। उसको ऐसा सावकाश नहीं मिलता था कि वह अपने बिजय किए हुए हिंदुस्तान की मुल्कों का प्रबंध करे; वह संपूर्ण उत्तरो हिन्दुस्तान को सिंध नदी के डेल्टा से लेकर के गंगा के डेल्टा तक अपने सिपइसालारों के हलावे करके अपने देश को चला गया। सन् १००६ में उसके मरने के बाद उसके सिपइसालारों ने अपने अपने आधीन के देशों पर अपना अपना अधिकार कर लिया। कुतबुदीन दिल्ली का बादशाह बन गया।

दिल्ली के मुसलमान बादशाह, --सन् १२०६ से १८५७ ई॰ तक ।

नंबर	बादशाह	बादशाह के पिता	आति	राज्य आरंभ , विवस्ण सन् इंस्टो
a.	क्तवद्दोन ऐवक		गुलाम	१२०६ यह शहाचुद्दोन महम्मद् गीरी का गुलाम था। इसने
	,	•		दिल्ही के निकट ' क्तबुछ इसलाम ' मर्साजद बनवाई।
N	अत्रामशाह	आरामशाह क्तवुद्रानप्षक	•	1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 -
m	शमसुद्दीन अल्तमश	•	•	१२११ यह कृतचुद्दीन का दामाद् था। इसके राज्य के समय बं-
				गाल, मुलतान. कच्छ, सिंध, कन्नोज, बरार माखवा, और ग्वालियर दिह्ली के राज्य में मिल गय थे।
20	स्कनुद्दीन फीरोज	शमसुद्दीन अ-	\$	१२३६ वह ७ महोने तख्त पर रहा। इसको छोगों ने गब्दी से
	alle —	स्तमश्		उतार दिया।
5	रक्षिया बेगाम	IR.	•	१२३६ यह हबस्तो गुलाम से प्रोति रखतो थी, इस कारण सर- दारों ने इसको मार डाला।
w	बहराम शाह	ब	•	
9	मलङ	कीरोजशाह	•	१२४२ यह बहरामशाह का भतीजा था, जिसको छोगों ने मार
				- <u> </u>
V	नासिक्होन महमूद	•	•	१२४६ यह मसऊद का चचा था।

ملق	गयासुद्रीन बलबम	6	3	84 84 84	१२६६ यह नासिक्द्दीक का बहुनों हैं था। इसने मेवात के लाक
	4				राजपूर्तों के सिर काट डाले और दुश्मनों की दवाया।
0,	Spanie Company	क्र राखाः	•	9268	यह बरुषन का पाता था। हमाना न जहर द कर इसका
					माह् डाला
*	जलालुहीन फोरीज	in the second	बिल्जी	हरूर	यह सीया था। इसके राज्य के समय माळवा और उज्जोन
	Ĕ		पठान		जीता गया। अळाडब्द्रान ने इसको मार डाळा।
W	अत्वाउद्गोतः	ô	<u>.</u>	358	यह जलाउद्दोन का भतीजा था, जो अपने चना को मार
					गद्दी पर बैठा। यह बड़ा निर्देयी था। इसने गुजरात और देवगढ़ को जीता।तथा सच्ती से अपना राज्य बढ़ाया।
riv	मुबारकशाह	अत्याउद् दी न		843 843 843	इसकी खुसरो खां ने मार डाला।
20	खुसरोखा		.	र दे ह	REF .
•	4			0 0 0 0	. लाया । यह हिंदू से मुसलमान हो गया था । गाउँ किसी मौन स्वमानिया से बीच में नगळकाबाट
PS			e 8 8 8	ř	
ď	महम्मद् आदिछ	गयासुद्दीन	*	केडहरी	इसने दिल्छी के निकट आदिलाबाद बसा कर बहाँ एक
M	तुगळक. फीरोजशाह.	महस्मद आदिख		3583	क्रिला थनवाया। इसने अनेक धमीर्थ काम किए और कीरोजाबाद शहर
,			N.		

नंबर	बादशाह	बादशाह के पिता	जाति	राज्य आ- रंमसन्हें	Gerry
39	गयासुदोन तुगळक फिरोज्जशाह इसरा	फिरोज्याह	तुगळक	77	यह ५ महीते राज्य करने के पहचाल मारा गया।
*	्र अबूचकरशाह	फिरोज्शाहकापो०	•	3368	यह केंद्र में मरा।
w	नासिरुद्दीनमहम्मद	स्या	*	6380	
9	हमायू सिकंद्रशाह नासिक्द्रोन	नासिरुद्दीन		2383	नेवल ४५ दिन बाष्शाह रहा।
V		हुमायू सिकंट्रशाष्ट	•	8 25 S	
87	मसरवशाह	बरामद्खां		2386	
0	महमूद्शाहदूसरोबार			००८४	
o.		महमूद्खां		87 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20	
•	िखिजिस्याह	मलिक सुभान	भयव	39 39 8	यह दिएलो में तरत पर बैठा और वहांही मरा।
a	मुषारकशाह दूसरा सिजिरशाह	. सिजिरशाह		इंट कर	यह दिल्लो मे तक्त पर बैठा और घहांही मारा गया।
SUN,		फरोद्खां	2	8838	यह खिजिरशाह का पोता था, जो दिल्ली में तक्त पर
					बंदा आर बहाहा गाड़ा गया ।

30	आस्त्रमशाह	महम्मद्शाह	•	522	हिसके समय दिल्ली का राज्य नाम मात्र रह गया था।
					यह बहलोल लोद़ी को दिल्ली का राज्य है कर कमाऊ
					चला गया और मरने पर वहांही गाड़ा गया।
	वहलोललोदी	कालावहार	ळोद्दो	2582	यह अफगान था, जिसने राज्य की बहुत बढ़ाया, भरने
		•			पर यह दिल्ली में गाड़ा गया।
ď	सिकंदरलोदी	बह्लोकलोदी		35.80	यह जंलाली कसवे में राज्य पर बैठा. और मरने पर दिल्ली
					में गाड़ा गया ।
m	इबाहिमलोदी	सिकंद्रलोदो	•	9 2 2 2 2	यह दिल्ली में राज्य पर बैठा, आगरे में रहता था और मारे
e inter					जाने के पश्चात पानीपत में गाड़ा गया।
٠,٠	बाबर	उमरशेख मिर्जा	मुगंख	85. 3.	यह तातारों था। इज्राहिम लोदी को पानीपत में परास्त कर
					के दिल्ली का बादशाद बना।
N	200	बाबर	•	24.20	शेरशाह में सन १५४० में इसको खदेर दिया।
	श्रादशाहि	हसनदां	अफगान	20 20	यह बंगाले की ओर सुलतांपुर में राज्य पर बैठा और।सन
	•				१५४० में हुमायू को खदेर कर दिल्लो में राज्य करने लगा,जो काल्जिर में मारा गयांऔर सहसराम में गाड़ागया।
1 2 VIEW 1	इमलामसाह. उप-	शेरशाह	•	54 45 54	यह कालिजर के किले के नोचे बादशाह बनाया गया,
	नाम जळाळकां नमां- तर सलीम शाह				और मरनेपर सहंस राम में दफन किया गया।

Pichelia					
K	MENIE	बाब्शाह का पाप	antra	राज्य आरं- म सन क्षे०	ं विवस्ता
	भाराबंदाह	इसलामशाह		8¥ 55 55 8*	यह बिल्ला म गद्दा पर बहा । इसक मामा न इसक। मार
	मुहस्मद्यादिलशाह क्षिज्ञामखाँ	किल्लास्या		をかかる	डाली। यह दिल्ली में तब्त पर बैठा।
	स् ळतानइश्राहिमसूर	٠	2	8558	ग्रह शेरशाह का बचेरा भाई था, जो दिल्ली में तक्त पर
	>				4 ≥ 5 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
•	सिकंदरशाह	(eq.)	•	5 5 8	यह शेरशाह का चचेरा भाई था।
a	हुमायूँ दूसरीबार	बाखर	मुगळ	4448	यह दूसरी बार हिंदुस्तान में आकर शेरशाह की संतान
					को परास्त करके आगरे में तखत पर बेठा, और ६ मास
					विस्ती के राज्य करने के उपरांत सम १५५६ के जनवरी
					में सीह़ो से गिरकर मरगया और दिल्लो में गाड़ा गया।
m	अक्रबर	* THE SERVICE	\$	87 95 96	अक्रवर १३ बर्प की अवस्था में गही पर बैठा और लगमग
		<i>\$</i>			५० वर्ष तक राज्य करता रहा। इसने हिंदुस्तान में ब-
					हुत बड़ा मुगळ राज्य कायम कर दिया। यह हिंदू
					और मुसळमान दोनों से समात बतीय करता था। इ-
					सक समान प्रतापी और चतुर भारत वर्ष के मुसलमान

					बादशाही में कोई नहीं हुआ है। अक्षबर आगरे में र- हता था। और मरने पर सिकंदरे में दफन किया गया।
30	जहांगीर	अक्षवर्शाह		85. 85.	यह आगरे में गद्दी पर वैठा, इसके राज्य के समय राज्य की बहती नहीं हुई। यह मरने पर ठाहौर के क्रिकट शाहर में गादा गया।
- W	शाहजहां	जहांगीर		%	इसके राज्य के समय कंघार का सूबा मुगल-राज्य से अ- लग हो गया. परंत इसने दक्षिण में राज्य बढाया कीर
7.		थाह्यक्षां		Y w w ~	उत्तरी हिंद में बंजीड़ आलीशान इमारतें बनवाहै। सन १६५८ ई॰ में इसके पुत्र औरंगजेब ने इसको कैद कर लिया। सन १६६६ में यह आगरे में मरा और ताजमहळ में गाड़ा गया। इसने अपने बाप की कैद किया. अपने भाइयों को मार डाळा, हिंदुओं को बहुत सताया और उनको बहुतेरे दैव मंदिरों को तोड़ दिया। इसकेय राज्य के सम दक्षिण के अनेक राज्य फतेह हुप और मुगळ-राज्य का सबसे अधिक फ़ैळाब हुआ था। यह दक्षिण के अहमद नगर में मरा और ओरंगाबाद में गाड़ा गया।
<u>\$</u> 9	भाजमशाह महम्मद् शाहिद्	मीरंगजेब	- i	9093	औरंगंजेव के मरतेहीं सिक्ख, राजपूत और महाराष्ट्री ने

育	बादशाह	बादशाह का बाप	बाति	राज्य आरंभ सन् ई०	्वितरत्व
					दिल्ली के राज्य को हर तरफ से दबाना आरंभ किया।
·	बहांदुरशाह शाह आलम	उपनाम औरंगक्रेब पहला	विधाद	ನಿಂನಿಕ	आज़मशाह दुव्मनों के द्वाथ से मारा गया। आज़मशाह का भाषे मुअज़िम बहादुरशाह की पदबी से गद्दी पर बैठा।
••	जहांदोरशाह	बहादुरशाह	*	हर्भ	यह फ़र्रं'लस्यर की बगावत में मारा गया।
0	फर्'खस्यर	अज़ीमडल-शा(च-	•	हरेश्व	इसके राज्य के समय कुछ राजपूताना सुगछ राज्य से अ-
		हादूरशाहकाबंदा)			लग हो गया हो सैयहाँ ने सन १७१९ में इस की मार
					डाळा।
o.*	महस्मद्शाह	जहांदार श्राह	•	6030	महस्मद् शाह के राज्य के पहले लगभग एक बर्ष में ४ वा-
					दशाह हो चुके थे। इसके राज्यके समय मुगलों का राज्य बहुत घट गया और नादिरशाह ईरानी ने दिल्ली में आम
ů	अहमतः शह	HETHERIE		788.6	कतल करवाया । इसके राज्य के समय महाराष्ट्रों ने सुवा उद्दोसा और बं-
				77.1	गाल को और अहमद शाह दुरांनी ने पंजाब की लेलिया
		•			अंत्र में यह गईो से उतार दिया गया।
er.	आलमगीर दूसरा	मगद्रहान अहादार	.	8502	इसके राज्य के समय अहमदशाह दुर्गनी के हमछों से

	_ B B	5 & 9 5 0 m 2 V V	धिकार हुआ। बादशाह को उसके बजीर ने मार डाला। यह महाराष्ट्रों के आधीन केबल नाम का बादशाह था। अं- गरेजों ने सन १८०३ ई॰ में शाह आलम और दिल्ली को सिधिया से है लिया। यह अंगरेजों के आधोन नाम का बादशाह रहा। यह मुगल खांदान के अंत का बादशाह था, जिसकों अ- गरेजों सरकार की ओर से ८० हजार रुपये मासिक पें- शन मिलती थी। यह सन १८५७ के बलवे में बागी
	Z	w 9 0 m V V	यह अंगरेजों के आधोन नाम का बादशाह रहा। यह मुगळ खांदान के अंत का बादशाह था, जिसको अं- गरेजो सरकार की ओर से ८० हजार रुपये मासिक पं- शन मिळती थी। यह सन १८५७ के बळबे में बागी
्ष अक्षवर दूसरा शाहआळमदूसरा		のまいと	यह मुगळ खांदान के अंत का बादशाह था, जिसकों अं- गरेजों सरकार की ओर से ८० हजार रुपये मासिक पें- शन मिलती थी। यह सन १८५७ के बलबे में बागी
६ महस्मद् बहादुरशाह अकवर दूसरा			शन मिलती थी। यह सन १८५७ के बलबे मेंबागी
			होने के कारण केंद्र कर के रंगून भेजा गया। जो सन
			१८६२ ई० में बहाहो मर गया।
•			

दक्षिण पदरास हाते के मुद्रा शहर में पांडच बंश के राजाओं ने ईसा से ४०० वर्षे पहले से सन् १३०४ ईस्वी तक ११६ पुस्त तक राज्य किया, जिस (राज्य) को अलाउद्दीन के सेनापति मलिक काफूर ने विनाश कियाया। उसके पश्चात् बहुत से हिंदू राजे अठारहवीं शताब्दी तक पांडच के राज्य पर छगातार राज्य करते रहे। चोला बंश के राजाओं ने ६६ पुरंत तक राज्य किया, जिनकी राजधानी प्रथम काम्बैकोनम और पीछे तंजोर थी। पीछे विजया नगर के एक नायक ने तंत्रीर पर हुकूमत की। शिवाजी के भाई बंका जी ने सन् १६५६ और १६७५ ई० के दरमियान तंजोर को ले कि-या । चेरा वंश के राजागण सन् २८८ में सन् ९०० तक ५० पूस्त तक राज्य करते रहे, जिनकी राजधानी मैसूर के राज्य में तालकद शहर था, जो अब बालू में दक गया है। एक हिंदू राजा के वंशधरों ने बळारी जिले के विजयनगर में सन् १११८ से सन् १५६५ ई. तक राज्य किया, जिसको दक्षिण के मुसळमान बादबाहों ने मिछ कर तिलीकोट की लड़ाई में परास्त कर दिया। बहमनी लॉदान के मुसल्लमानों ने सन् १३४७ से सन् १५२५ ई० तक कमने गुलवर्गा, बारंगल और बीदर में राज्य किया। उनके आधीन करीव करीब वही मुल्क था, जो अव निजाम हैदराबाद के अधिकार में हैं।

दक्षिण के (पीछे के) ५ मुसलमानी राज्य—(१) इमादशाही खांदान के साजाओं ने, जिनकी राजधानी बरार देश को एलिचपुर था, सन् १४८४ से सन् १५७४ ई० तक राज्य किया। वह राज्य पीछे अहमदनगर के राज्य में मिल गया। (२) अहमदनगर में निजामशाही खांदान का राजा राज्य करता था, जिसको सन् १६३६ ई० में बादशाह शाजहां ने लेलिया। (३) आदिलशाही खांदान के राजाओं ने सन् १४८९ से १६८८ ई० तक बीजापुर में राज्य किया। ओरंगजेब ने जस राज्य को लेलिया। (४) कुतबशाही खांदान के राजा सन् १५१२ से सन् १६८८ तक गोलकुंडा में राज्य करते रहे। इस राज्य को भी औरंगजेब ने लीन लिया। (५) बरीदशाही खांदान के राजाओं ने सन् १४९८ से सन् १६०९ ई० के पीछे तक बीदर में राज्य किया। औरंग-केब ने सन् १६०९ ई० में बीदर के किले को सर किया था।

बंगाले का मूबेदार फंकीरुद्दीन सन् १३४० ई० में दिल्ली राज्य की ताबे-दारी छोड़ कर बादशाह बनगया। उसने गौड़ को अपनी राजधानी बना कर अपने नाम का सिका चलाया। बंगाल के २० बादशाहों ने सन् १५३८ ई० तक राज्य किया था। गुजरात का बड़ा सूचा सन् १३७१ ई० में मुसल-मानी राज्य होगया। मालवा प्रदेश को, जो मुसलमान हाकिम के आधीन स्वतंत्र होगया था, सन् १५३१ ई० में गुजरात के बादशाह ने अपने राज्य में मिला लिया। अकबर ने सन् १५७३ ई० में गुजरात को जीता। जीनपुर, जिसके आधीन बनारस की अमलदारी भी थी, सन् १३९३ से १४७८ ई० तक मुसल्यानी राज्य रहा।

महाराष्ट्रों का वर्णन—सन् १६३४ ई० के छगभग शाहजी भौसछा दक्षिण भारत में प्रसिद्ध होने छगा। वह अहमदनगर और बीजापुर की मुसलमानी रियासतों को ओर से मुगलों के साथ लड़ता था। उसकी मृत्यु होने पर उसकी पुत्र शिवाजी, जिसका जन्म सन् १६२७ ई० में था, उसकी जागीर की मालिक हुआ। शिवाजी ने दक्षिण के हिंदुओं को इक्टा करके एक कोमी जमा-. थत बनाई, जिसको उत्तर की बादशाही फीज से और दक्षिण की मुसंख्यांनी रियासतों से शतुता थी। दक्षिण के स्वतंत्र मुसल्यानी राजालोग और औरंगजेंव परस्पर छड़ कर निर्बेछ होने लगे थे, शिवाजी ने सन् १६५६ ईंट में बीजापुर के सिपंहसालार को घोला देकर मारडाला और सन् १६६४ तक बंबई हाते की उत्तरीय सीमा तक देश को छेलिया। सन् १६६४ में उसने राजा की पदवी छेकर अपने नाम का सिक्का जारी किया और सन् १६७४ में रायगढ़ में गदी पर बैंड कर कर्नाटक तक अपनी फौज भेजी। सन् १६८० इंट में शिवाजी के देहांत होने पर उसका पुत्र शंभाजी उत्तराधिकारी हुआ, जिसकी सन् १६८९ में औरंगजेब ने परास्त करके मारडाला और उसके किंक पुत शाहू जी को केंद्र रक्ता। सन् १७०७ में औरंगजेव के मरने पर क्षाहुजी दिल्ली को ताबेदारी कवूल करके अपने बाप की रियासन पर बहाल हुआ। उसने अपनी रियासत का प्रवेध अपने दीवान बार्झाजी विश्वनाथ को वेशवा की पदवी के साथ सपुर्व करदिया, जो स्वतंत्र होंगया।

सन् १७२० ई० में बालानी पेशवा ने दक्षिण की पालगुजारी पर चौथ हासिल की। पूना और सितारा के चारो ओर के देश का राज्य महाराष्ट्रों को पक्के तौर से मिल गया। दूसरे पेशवा बाजीराव ने सन् १७३६ में पालवा पर अपना अधिकार कर लिया और सन् १७३९ में पूर्चगीजों से बसीन का किला जीतिलिया। तीसरे पेशवा बालाजो बाजीराव के समय में महाराष्ट्रों का भय संपूर्ण पुगल-राज्य में फैल गया। महाराष्ट्रों के एक यूथ के सर-दार नागपुर के राघोजी भोंसले ने सन् १७४३ में बंगाल पर चढ़ाई की। गंगा की बादी के जपजाऊ मूवों में भोंसला बराबर लूट पाट करता रहा। पूर्ना के महाराष्ट्रों ने उत्तरी भारत को पंजाब तक लूटा।

सन् १७६१ ई० से पहले चौथे पेशवा माधवराव के राज्य के समय निर्मिथा और हुलकर दो और महाराष्ट्र, मुगलों के पुराने मूबे मालवा और उसके चारो ओर के देश में स्वतंत्र राजा बन गए। उसी समय गायकवार ने बड़ौदा में अपना राज्य नियत कर लिया। सन् १७६१ में महाराष्ट्रों के पानीपत में परास्त होने के पीछे बुछ दिनों तक सिंधिया और हुलकर चुप रहे, परंतु उसके १० वर्ष के भीतरही उन्होंने मालता के कुल मूबों को लेलिया और राजपूत जाट और रहेलों के मूबों पर पश्चिम में पंजाब से लेकर पूर्वमें अवधतक (सन् १६६१ से १६७१ तक) वे चढ़ाई करते रहे। सिंधिया और हुलकर ने सन् १७७१ में दिल्ली के बादशाह शाहआलम को दिल्ली के बाजय पर नाम के लिये बहाल किया, परंतु बास्तव में सन् १८०३—४ ई० सक वह उनका कैंदी बना रहा।

नागपुर के भोंसला ने सन् १७५१ ई० में बंगाल से चौथ मालगुजारी
तहसीली और सूबे उडीसा का दक्षिणी भाग अपने आधीन करलिया,
परंतु जब सन् १७५६ और १७६५ के बीच में बंगाल पर अंगरेजी अधिकार
होगया, तब महाराष्ट्रों की चढ़ाई बंद हुई। सन् १८०३ ई० में अंगरेजों ने
महाराष्ट्रों को सूबे उडीसा से निकाल दिया।

वड़ोदा के गायकवार ने गुजरात, वंबई के पश्चिमोत्तर किनारे पर और काठियावार में अपना राज्य फैलाया।

अंगरेजों का बृत्तांत-पोर्चुगीज और फ्रांसीस युरोपियत हिंदुस्तान में आए; उनका द्वतांत गोआ और पांडीचरी में लिखा गया है। अंगरेज मसाले के टापुओं से हिन्दुस्तान में आए, उन्होंने पहले पहल कारोमंडल के किनारे पर बस्तियां कायम की। सन् १६१० ई॰ में उनकी एक आदत मछली बंदर में नियत हुई । सन् १६३९ में अंगरेजों ने चंद्रगिरिकेराजो से मदरासपट्टन खरीद कर सेंटजार्ज किला बनवाया। कई एक वर्ष तक तो मदरास जावा टापू के बांटम शहर के आधीन रहा; परंतु सन् १६५३ में वह एक अलग सदर मुकाम बनाया गया। सूरत और अहमदाबाद की अंगरेजी कोठियां सन् १६१५ में का-यम हुई थीं। सन् १६६१ में पोर्चुगीज के वादशाह ने वंबई का टापू अंगरेजों को दहेज में देदिया। सन् १७४० में हुगली की कोठी और सन् १८४२ में वाळासोर की कोठी कायम हुई। सन् १६४५ में एक जहांज का सर्जन से-वियल बोटन ते बादशाह शाजहां से अपनी खिदमत के बदले में कंपनी के लिये तिजारत का संपूर्ण इक हासिल किया। सन् १६८१ में बंगाल की कोडियां मदरास की कोडियों से अलग कर ली गई। सन् १६८६ में, जब बंगाले के नवाब बाइस्तालां ने हुक्प दिया कि अंगरेजों की बंगाल की कुल कोदियां जन्त कर लो जांय; तब हुगली के अंगरेज सौदागर सतानती को षक्षे गए। वहाँ उन्होंने फोर्ट विलियम किले की नेवदी और सन् १७०० ई० में औरंगजेव के वेटे आजम से सतानती, कालीकट और गोविंदपुर, इन तीन गावों को खरीदा. जो अब कलकत्ते के हिस्से हैं।

सन् १७०७ ई॰ में ओरंगजेब के मरतेही संपूर्ण दक्षिणी हिंद दिल्ली के राज्य से अलग होगया। निजामुलमुल्क, आर्कट का नवाब, विचना पल्ली का राजा, मैसूर का राजा इत्यादि सब स्वतंत्र बन गए।

सन् १७४६ में फांसीसियों ने अंगरेजों से मदरास छीन लिया था,परंतु सन् १७४८ में एक अहद नामे के अनुसार वह फिर अंगरेजों को मिळ गया। सन् १७६० से सन् १८०३ ई० तक अगरेजों ने फांसीसियों से कई वार पां-डीचरी को छीन लिया था, परंतु सन् १८१७ में उनको छौटा दिया. तबसे वह उनके कब्जे में है। सन् १७५७ ई० में अंगरेजों ने धंगाळ के नवाव सिराजुद्दोळां को प-रास्त किया और मीर जाफर को मुर्मिदाबाद के नवाब की गद्दी पर बैटाया। चन्होंने इस कार्यवाई के लिये बादबाही फरमान हासिल किया। उस अरसे में नवाब ने कलकत्ते की चारों ओर की जिमीदारी, जो अब चौबीस परगने का जिल्ला कहलाता है, इष्ट्रान्डियन कंपनी को देदी। उसके पीछे दिल्ली के बादबाह ने कंपनी के अफसर क्लाइब को सरकारी महमूल भी माफ कर दिया। पीछे चौबीस परगना कम्पनी की दायमी मिलकियत होगई।

सन् १७६१ में अंगरेजों ने मीरजाफर को गद्दी में उतार कर उसके दामाद मीर कासिम को मुरादाबाद कीं गद्दी पर बैठाया। इस कार्रवाई में अंगरेजों को वर्षवान, चटगांव और मेदनीपुर, इन तीन जिलों की माफी मिलो, जिसकीं सालाना तहसील ५० लाख रुपये की थी। उसके पश्चात् भीर कासिम ने अंगरेजों की हुकूमत में लुटकारा पाने के लिए मुंगर फीज हुरस्त की और अवध के नवाब वजीर को मिला कर अंगरेजों से लड़ने का सामान किया। सन् १७६३ में तमाम मूबे में फसाद फैल गया। अंगरेजों के दो हजार हिंदुस्तानी सिपाही पटने में काट डाले गए। मुसलमानों ने दो सौ अङ्गरेजों को, जो उस मूबे में मिले, काटडाला। पीले अङ्गरेजों ने मेरिया और उधानाला की दो बड़ी लड़ाइयों में भीर कासिम की फौज को परास्त किया। मीर कासिम अवध के नवाब के पास भाग गया। अवध के नवाब सुजाउदीला ने पटने को धमक दी। सन् १७६४ ई० में अङ्गरेजों ने बक्सर की लड़ाई में नवाब को परास्त किया।

सन् १७६६ में अङ्गरेनों ने नवाब सिराजुदौला को अवध का मूबा दे दिया और नवाब ने उनको छड़ाई का खर्च ५० लाख रुपये देने का इकरार किया और अङ्गरेनों ने दिल्ली के बादशाह शाहआलम को इलाहाबाद और कोड़ा के सूबे देकर उसके बदले में मूबे बंगाल, विहार और उड़ीसा की दीवानी अर्थात् माल का इन्तजाम और उत्तरी सरकार का मुल्की इन्त-नाम झाहशाह में लेलिया। नवाब मीर कासिम केवल नाम के लिये मुरा-दावाद में रक्खा गया और उसको कंपनी की ओर से ६० लाख रुपये सा-

छाना मिछ ने छगा। इस रकम का आधा बादशाह को बतौर करके बंगाल से दिया जाता था। कंपनी के गवर्नर क्लाइब ने सन् १७६६ में, जब एक नावालिंग को नवाब की गद्दी पर बैदाया, तब उसकी पंचन ६० छाल से ४५ छाल रुपये कर दी और सन् १७६९ में, जब दूसरे नाबालिंग को नवाब ब-नाया; तब ४५ छाल से ३५ छाल रुपया कर दिया। सन् १७७२ ई० में क्लाइब की जगह बारेन हेस्टिंग्ज बंगाल का गवर्नर हुआ, उसने नावा-लिंग नवाब की पंचन आधी कम कर दी।

सन् १७७३—१७७४ में हेस्टिंग्ज ने इकाहावाद और कोड़े के मूबों को अवध के नवाब के हाथ बेच दिया। उस समय दिल्लो का बादशाह महा-राष्ट्रों के आधीन था, इस लिये हेस्टिंग्ज ने करके ३८ लाख रूपये उनको हैने से इनकार किया।

अंगरेजों से महाराष्ट्रों की पहली छड़ाई सन् १७७८ से १७८१ तक हुई। सन् १७८१ में सलबई के अहदनामें से अङ्गरेजों को सिलसट, एलिफेंट के और २ दूसरे टाप् मिले।

उसी समय पैस्र के हैदरअळी की फौंज ने कर्नाटक के पाछीलूर में अङ्ग-रेजी छशकर के एक मजबूत हिस्से को कतल कर डाछा और मैसूर के सवार मदरास के निकट तक लूट पाट करते रहे। हेस्टिंगज़ में अपनी फौंज भेजी, छड़ाई जोर श्रोर से जारी रही, सन् १७८२ में हैदरअली मर गया, अन्त में उसके बेटे टीपू से सन् १७८४ में मेल हुआ। दोनो ओर से अपनी अपनी जीत छौटा दी गई। मैसूर की दूसरी लड़ाई सन् १७९० से सन् १७९२ तक होती रही, उस समय दक्षिण के निजाम और महाराष्ट्रों के यूथ अङ्गरेजों के मददगार थे। आखिरकार टोपू ने ३ करोड़ रुपया लड़ाई का खर्च और अपना आधा राज्य अङ्गरेजों और उनके मददगारों को देकर सुलह कर लिया। सन् १७९९ में मैसूर की तीसरी लड़ाई हुई, उसमें भी हैदराबाद के निजाम और महाराष्ट्रों की सेना अङ्गरेजों की सहायक थी, टीपू सुलतान थोड़ा मुकाबिला करके श्रीरंगपट को लौट गया, जब उसकी राजधानी पर आक्रमण हुआ, तब वह बड़ी वहादुरी से लड़ कर मारागया। अङ्गरेजों ने

जसराज्य के बीच का हिस्सा, जो मैसूर का पुराना राज्य था, मैसूर राज बंश के एक हिंचू नावालिंग को वेदिया और वाको राज्य निजाम, महाराष्ट्रों और अङ्करेजों में बाटा गया। जसी जमाने में तंजोर का राज्य और हिंदु-स्तान के दक्षिण पूर्व का भाग, जो आर्कट के नवाव के हाथ में था; अङ्करेजी सरकार के हाथ में आया। अठारहवीं सदी के समाप्त होने के पहलेही अ-द्वारेजों का राज्य समुद्र से बनारस तक पक्का होगया। सन् १८०१ में छलनज के अहदनामें के अनुसार गंगा और यमुना के बीच की उपजाज भूमि हहेलांड के साथ अङ्करेजों के हाथ में आगई।

सन् १८०० ई॰ में पेश्वा, गायकवाड, भो सला, मिथिया और हुलकार ये ५ महाराष्ट्रों के वड़े सरदार थे, जो पूना के पेशवा को अपने यूथ
का सरदार मानते थे । सन् १८०२ में हुलकर ने जब पेशवा को परास्त
किया, तब उसने भाग कर अङ्करेजी राज्य में पनाह ली और मदद देने वाली
फीज के सर्च के लिये कई एक जिले अंगरेजों को देदिए। सन् १८०२ से सन् १८०४ ई० तक मार्किस आफ वेलस्ली ने आरगाम और असाई की
वड़ी लड़ाइयों में महाराष्ट्रों को परास्त किया और अहमदनगर लेलिया।
लाई लेक ने अलीगढ़ और लसवारी के मैदान में वड़ी लड़ाइयां जीतीं,
दिल्ली और आगरे को लेलिया और सिंधिया की फीज को खड़बड़ा दिया।
सिंधिया ने यमुना नदी के उत्तर के देश के दावें से अपना हाथ खैच लिया
और दिल्ली के वादशाह शाहआलम को अङ्करेजों की रक्षा में छोड़ दिया।
नागपुर के भों सला ने लाचार होकर अङ्करेजों को मूब उड़ीसा और हैदराजाद के निजाम को बरार देश देदिया।

सन् १८०५ ई ० में अङ्गरेजी सेनापित लाईलेक ने भरतपुर पर चढ़ाई की, जो बहुत सैनिकों के पारजाने पर सिकस्त होकर लौट गया।

सन् १८१४ ई॰ में अङ्गरेजों की नैपालियों से छड़ाई आरंध हुई। जनरळ अक्टर छोनी ने सतलज नदी से फौज उतार कर एक एक करके नैपा-लियों के किलें सर किए। सन् १८१५ में इसीने पटने से आक्रमण करके राजधानी काठमांडू के निकट पहुंचकर नैपालियों को लाचार किया। सु-गौली में अहदनामा हुआ, जो आज तक वैसाही बना है।

सन् १८१७ ई० में पूना के अहदनामें के अनुसार गायकवार पूना के राज्य में बाहर होगया और कई नये जिले अंगरेजों को वे दिए गए। अंगरेजों ने किकी में वाजीराव वेशवा को और महीदपुर की बड़ी लड़ाई में हुलकर को परास्त किया और पेशवा का राज्य अपने वंबई हाते के राज्य में मिला-कर उसके लिये आठ लाल रूपये सालाना पेशन करदी। शीवाजी के बश्च में से एक आदमी सितारा की गदी पर बैठायागया, एक नावालिंग हुलकर का उत्तराधिकारी कबूल किया गया और एक नावालिंग नागपुर का राजा बनाया गया। उसी सन् में अंगरेजी सरकार ने पिंडारियों को परास्त किया, उसी जमाने में राजापूताने के राजाओं ने अङ्गरेजी गवर्नमेंट की आधीनता स्वीकार करली।

सन् १८२४ ई० में अङ्गरेनों ने वर्षा पर चढ़ाई की, दो वर्ष तक छढ़ाई होती रही। सन् १८२६ में अहमदनामा हुआ, जिससे वर्षा के बादशाह ने. आसाम की दाबी छोड़ दी और अराकान तथा टेने सरिम के सूबे को, जिन पर अंगरेजी फौज का अधिकार था, वेदिया।

जब भरतपुर की गद्दी के बारे में घरेऊ झगड़ा हुआ, तब अङ्गरेजी सरकार ने भरतपुर पर चढ़ाई की । उन्होंने सन् १८२६ ई० में सुरंग से किले को तोड़ कर भरतपुर को लेलिया और भरतपुर के दुर्जनसाल को राज सिहांसन से जतार कर बलवंतिसंह को बैठाया।

सन् १८३९ के अगस्त में अङ्गरेजी सरकार ने अफगानिस्तान के जमां-शाह दुरीनी के भाई शाहशुजा को, जो भाग कर लुधियाने में रहता था, काबुल की गदी पर बैटाया और वहां के अमीर दोस्त महम्मदलां बारक जई को परास्त करके कलकत्ते में भेज दिया। अङ्गरेजी फौज ने दो वर्ष तक अफ-गानिस्तान में अपना अधिकार रक्ला, परंतु सन् १८४१ ई० को नवंबर में बलवा होगया, अङ्गरेजी एजेंट काबुल में कत्ल किया गया, दोस्त महम्मदलां के बड़े बेटे अकबरलां ने पोलिटिकल अफसर सर विलियम मैकनाटन को दगा में मारहाला, दो पहीने के पीछे जाड़ के समय में अझरेजी फीज ला-पनी से जिंदुस्तान को स्वाना हुई, पहां के सरदारों ने उनको निरोपद हिंदु-स्तान में जाने देने का वादा किया। चलने के समय अंगरेजी फीज में ४ ह-जार लड़ने वाले थे और संपूर्ण लशकर की भीड़ १२हनार थी. जिनमें से के-चल डाक्टर बेहन बच कर जलालाबाद के किले में पहुंचे, बाकी संपूर्ण फीज खर्व काबुल और जगदल के तंग दरों में अफगानों की लूरियों और बंदुकों तथा बर्फ से मर गई; परंतु अकवर लां ने कई एक बच्चे, स्त्री और अफसरों को केंद्र कर स्वस्था। पीछे अंगरेजी सरकार ने बदला लेने के लिये अफगानि-स्तान में फीज भेजी। सन् १८४२ ई० के सितंबर में उसने काबुल का बड़ा बाजार बारूद से उड़ा दिया और सरकारी कैंदियों को वापस लिया। इसके पश्चात् अंगरेजी फीज हिंदुस्तान में चली आई और अफगानिस्तान का अ-मीर दोस्त महम्मद खां छोड़ दिया गया।

सन् १८४३ ई० में अंगरेजों ने सिंघ के अमीरों को परास्त कर के सिंध

देश को छे लिया।

महाराज रणजीतिमंह सन् १८०० ई० में अफगान के बादशाह की ओर में खाहौर के मूबेदार बने, जिन्होंने अपना राज्य दक्षिण मुंखतान, पश्चिम पे-

भावर और उस्तर कञ्मीर तक फैलाया।

सन् १८०९ में महाराज से अंगरेजों को संधि हुई, उसके अनुसार पूर्व में रणजीतिसिंह और अंगरेजो राज्य की सीमा सतळज नदी हुई, सन् १८३९ में महाराज रणजीतिसिंह का देहाँत हुआ, उनके पुत्रों में से कोई पेसा न था, जो उनके राज्य को मबंध कर सके, इस लिये लाहौर में सेनापित, मंत्री और रानियों में बड़ा झगड़ो आरंभ हुआ। सिक्खों की फौज स्वतंत्र बन गई। सन् १८४५ में सिक्खों की फौज ने सतलज पार हो कर अंगरेजी राज्य पर आक्रमण किया। दो महीने के अरसे में मुदकी फिरोजपुर, अलीबाल और सुब-रांव में चार बड़ी लड़ाइयां हुई। मित लड़ाइयां में अंगरेजी फौज बहुत मारी गई, परंतु अंत में सिक्ख परास्त हो कर भाग गए। लाहौर दरबार ने अक्करेजी आ-धीनता स्वीकार की, संधि के अनुसार महाराज रणजीतिसिंह के शिशुपुत दि-

कीपिसंह लाहीर के राजा हनाए गए सहलज और रावी के बीच की भूमि अक्नरेजों को मिली। लाहीर दरवार में रजीडंट नियत हुए। उसके परचात् सन् १८४८ ई० में दो अक्नरेजी अफसर दुलतान में मार डाले गए, इस लिये अक्नरेजों में सिवलों की दूसरी लड़ाई हुई। सिवलों का लशकर फिर इक-ट्ठा हो कर बड़ी बहादुरी से लड़ा। चिलियान वाले की लड़ाई के दैदान में अंगरेजों के २४०० सिपाही और अफसर मारे गए और सन् १८४८ की तारील १३ जनवरी को अंगरेजों की ४ तोयें और ३ पल्टनों के निश्चान हाथ में जाते रहे; परंतु अंत में ' गुजरात ' के निकट अंगरेजों की विजय हुई । ता० २९ मार्च को पंजाब देश अंगरेजी राज्य में मिला लिया गया। महाराज दलीपिसंह के लिये ५८०००० हपये सालाना पेंशन नियत की गई।

सन् १८४८ में सितारा का राजा बिना पुत्त मर गया, तब सन् १८४९ में सरकार ने उसके गोद लिये हुए पुत्त को ना मंजूर कर के उसके राज्य को अ-पने रोज्य में मिला लिया; इसी प्रकार सन् १८६३ में जब नागपुर का भांसला निष्पुत्र मर गया, तब उसका राज्य भी अ'गरेज़ी राज्य में मिला लिया गया, नवही देश मध्य देश के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सन् १८५२ ई॰ में अंगरेजों से वर्मी की दूसरी छटाई हुई, अंगरेजों ने इरावती नदी की सब बादी पर रंगून से प्रोम तक अराकान और टेनासरिम के मूबों में, जिनको सन् १८२६ में छे छिया था, मिछा छिया।

अवध क नवाब वाजिद अलो शाह के राज्य में लाखों आदमी पर जुल्म होने लगा, इस लिये सन् १८५६ ई० की १३ फरवरी को अवध प्रदेश अंग-रेजो राज्य में मिला लिया गया। वाजिद अलीशाह को १२ लाख रूपया सा-लाना पेंशन नियत हुई, वह कलकत्ते में रहने लगे।

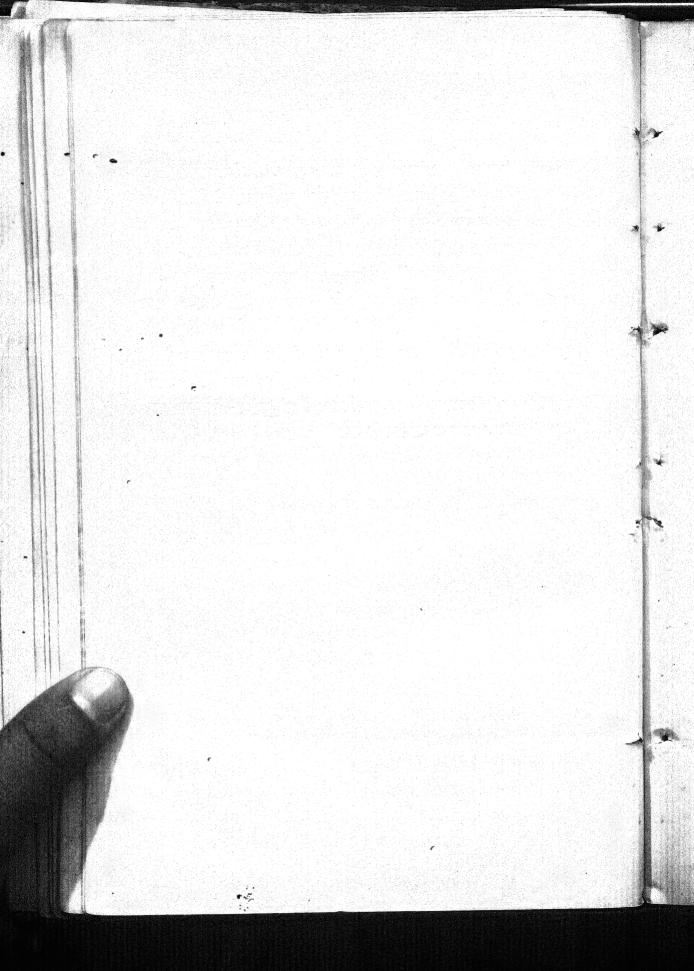
सन् १८५७ का बळवा—ऐसा अफवाइ छावनियों में उड़ी कि बंगाछ हाते के सिपाहियों के कारतूस में मूअर की चर्बी छगी है। सिपाहियों को बहुत समझाया गया पर उनको विश्वास न हुआ। सन् १८५७ की १० वी मह को मेरठ में सिपाहियों ने बगावत की (उन्हों ने बेळलाना तोड़ डाला और हो अंगरेज सामने आए उन्हें कत् किया, बाद वे छोग दिस्छी चळे गये। दूसरे दिन पुसलपानों ने दिल्ली में बलवा किया। इसके पश्चात् चारो ओर में बागी दिल्ली में पहुंचने लगे। पित्रवमोत्तर देश और अवध से बंगाले के जिलों तक बगावत फैल गई। ईशाई मत के लोग बहुत मारे गए। सिक्ख छोग बागी नहीं हुए, इजारहां सिक्ख अंगरेजी फौज में भरती होने आए। बंगाल देश के दक्षिण में बहुतेरे सिपाही बागी होकर चारो ओर छितर बि-तर हो गए। महरास और बंबई हाते की हिंदुस्तानी फौजें अंगरेजी सरकार की मित्र बनी रही। मध्य देश में बहुतेरे बड़े २ सरदारों की फीजें आगे पीछे विगड़ कर बागियों से जा मित्रों, परंतु हैदराबाद की रियासत अंगरे-नों के भित्र रही। कानगुर, लवनक और दिल्लो में वागियों का जोर रहा, वहां बहुत यूरोपियन मारे गए। यदयपि १८ महीनों तक जगह जगह बराबर लड़ाई होती रही, परंतु दिल्ली की जीत और लखनऊ के अंगरेजों के छुट-कारा होने के वाद बगावत बहुत कम तोर हो गई। अवध की बेगम, बरैंडी के नगाव और नाता साहव के उपाइन से अवध और रुहेलखंड की प्रजाओं ं ने बागी सिपाहियों का साथ दिया। नैयाल के सरजंगवहादुर ने अंगरेंजों की बड़ी सहायता की । संपूर्ण शहर क्रम से जीते गए और संपूर्ण बागी सन १८५९ ई० तक सरकारी राज्य की सीमा के पार भगा दिए गए।

सन् १८५८ में झांसी की रानी अंगरेनों से छड़ी और बड़ी बहादुरी से छड़ कर मारी गईं। उसका सहायक तांतियाटोपी भागा भागा फिरा, जो सन् १८५९ में पकड़ा गया।

सन् १८५८ में हिंदुस्तान का राज्य इष्टइंडियन कंपनी के हाथ से महा-रानी विक्टोरिया के हाथ में आया। सन् १८५८ के १ नवंबर को इलाहाबाद में द्वीर करके खबर दी गई कि अवसे हिंदुस्तान का राज्य महारानी विक्टो-रिया ने अपने हाथ में ले लिया।

सन् १८,७८ ई० में अफगानिस्तान के अमीर श्रेरअछी खां ने फिसियों का सन्मान और अंगरेनों का अनादर किया। अंगरेनी फीन ने तीन ओर में चढ़ाई कर के थोड़े पुकावले के पोछे दर्गी को ले लिया, श्रेर अलीखां भाग गया। उसके बेटे याकृत्वां के साथ अहदनामाहुआ परंतु अफगानों ने कई एक महीने के भीतरही अंगरेजी रजीडंट को कतल कर डाला, इस कारण में फिर लड़ाई को जहरत पड़ी। अंगरेजों ने याकूबलां को गद्दी में खतार कर दिंदुस्तान में भेजा और काबुल तथा कंघार को ले लिया। सन् १८८० ई० में याकूबलां के भाई अयुबलां ने कंघार और देलमंद नदी के बीच में एक अंगरेजी बिगेड को परास्त किया, तब अंगरेजी सरकार ने अ-यूबलां की फीज को परास्त किया और दोस्त महम्मद्रखां के घराने के अब-दुल रहमान लां को काबुल का अभीर बनाया। पीछे अंगरेजी फौंज लीट आई।

सन् १८८६ ई० में (छड़ाई के ऊपरांत) अंगरेजी सरकार ने वर्षा के राजा थीवो को राज्य च्युत कर दिया; वह दक्षिण हिंदुस्तान में रक्षा गया। वर्षा का भाग पहिछही से अंगरेजी अधिकार में हो चुका था; शेष वटा माग भी अंगरेजी गवर्नमेंट के आधीन हो गया।



भारतभूमण।

प्रथम खण्ड।



श्रीगणेशाय नमः

गनपतिगिरिजा श्रीरमन गिरिजापति गिरिराय। विधि बानी गुरु व्यास रबि बार बार सिर नाय॥ साधुचरनपरसादछिहि 'साधुचरनपरसाद '। आरंभत 'भारत-भ्रमन' छहन रसिक जन स्वाद॥

प्रथम अध्याय।

चरजपुरा, बलिया और भृगुक्षेत्र।

/चरजपुरा।

मेरी पथम यात्रा सन १८९१ ई० (सम्वत १९४८) के सितम्बर (आश्विन) में मेरी जन्मभूमि 'चरजपुरा ' से आरंभ हुई।

चरजपुरा पश्चिमोत्तर प्रवेश के बनारस विभाग में बलिया ज़िले के दोआबा परगने में लगभग ११०० मनुष्यों की बस्ती है। जिसके पूर्व ओर मेरे पिता बाबू विष्णुवन्द्र जी का बनवाया हुआ शिवमंदिर छशोभित है। गंगा और सरयू निदयों के मध्य में होने से इस परगने का नाम 'दोआवा' है। दोआवा परगना पिहले परगना विहिया के नाम से विहार के शाहाबाद ज़िले में था, परन्तु सन १८१८ ई० में पिश्रमोत्तर देश के ग़ाज़ीपुर ज़िले में कर दिया गया; तबसे तपा दोआवा परगना विहिया कहलाने लगा। सन १८८४ के नए बंदोबस्त से परगना दोआवा लिला जाता है। इस ग्राम से २ मील दिक्षण मंगा और ८ मील उत्तर सरयू बहती हैं। पहले गंगा और सरयू का संगम यहां से ८ मील पूर्व हरदी छपरा के पिश्रम है।

इस ग्राम से ४ मील उत्तर रानीगंज बाज़ार के पास अगहन खदी पंचमी को (जिस तिथि को जनकपुर में श्रीरामचंद्र का विवाह हुआ था) लगभग १५ वर्ष से खदिष्ट बाबा के धनुर्यंत्र का मेला होता है। खदिष्ट बाबा मधुकरीय सम्पदाय के एक दृद्ध साधु हैं, जिनके समीप विभूति और आशीर्वाद के लिये बहुत से लोग आते हैं।

चरजपुरा से १८ मील पश्चिम गंगा के बाएं किनारे पर इस ज़िले का सदर स्थान बलिया, १८ मील पूर्व-दक्षिण गंगा के दक्षिण शाहाबाद ज़िले का सदर स्थान आरा और १८ मील पूर्वोत्तर सर्यू नदी के बाएं किनारे पर सारन ज़िले का सदर स्थान लपरा है।।

🗸 बलिया और भृगुक्षेत्र।

बिल्या पश्चिमोत्तर देश के बनारस विभाग में ज़िले का सदर स्थान गंगा के बाएं किनारे पर एक छोटासा कसबा है। यह २२ अंश ४३ कला ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अंश ११ कला ५ विकला पूर्व-देशान्तर में है।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय बलिया में १६३७२ मनुष्य थे, अर्थात् १३४८१ हिन्द्, २८७९ मुसलमान, १० क्रस्तान और २ पारसी।

बिर्छिया में बालेश्वरनाथ महादेव का पुराना मन्दिर गंगा में गिर गया, तब बाबू गणपतिसहाय डिपटी ने पहिले मंदिर के स्थान से कुछ उत्तर हट कर दूसरा मंदिर अच्छे डौलका चन्दे से बनवादिया है। इस ज़िले के सेशन जज का काम ग़ाज़ीपुर के जज करते हैं। पहिले बलिया ग़ाज़ीपुर के ज़िले में थी।

बिलया के चौक को रावर्ष साहब कलक्टर ने सन १८८२ ई० में बन-वाया था। चौक मंडलाकार है और इसके हर एक ओर में एकही तरह की छतदार कोटरियों के आगे ऐंडए खंभे लगे हुए एकही तरह के दालान हैं। चौक के मध्य में कूप है, जिससे चारोओर सड़कें निकली हैं। कूप के समीप भी चारोओर मंडलाकार एकही तरह की दृकानें बनी हैं।

भृगुक्षेत्र वा भृगुआश्रम की बस्ती अब बिलया में मिल कर बसी हैं।
भृगुजी का मन्दिर कई बार स्थान स्थान पर बनता और गंगाजी में गिरता
गया, पर अब बिलया के समीप नया मन्दिर बना है। यहां कार्ति क की पूर्णिमा
को भारतवर्ष के वड़े मेलों में से एक भृगुक्षेत्र का मख्यात मेला होता है और
एक सप्ताह से अधिक रहता है। मेले में बनारस आदि शहरों से द्कानें आती
हैं। घोड़े और विशेष करके गाय बैल आदि चौपाए (मवेसियां) बहुत बिकते
हैं। मेले में २००००० से ४००००० तक मनुष्य आते हैं। सन १८८२ ई० में
६०००० चौपाये आए थे। मेले से राजकर ५८७० रुपया मिला।

बिलिया ज़िला—सन १८७९ ई० की पहली नवंबर को ग़ाज़ीपुर और आज़मगढ़ के पूर्वीय परगनों से बिलिया ज़िला नियत हुआ। इसके उत्तर और पूर्व सरयू नदी इसको गोरखपुर और बिहार के सारन ज़िलों से अलग करती है; दक्षिण गंगा इसको विहार के शाहाबाद ज़िले से अलग करती है और पिश्वम ग़ाज़ीपुर और आज़मगढ़ ज़िले हैं।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय बिलया ज़िले में ९४३००० मनुष्य थे, अर्थात् ४५२४१६ पुरुष और ४९०५८४ स्त्रियां। सन १८८१ ई० में बिलया ज़िले का क्षेत्र-फल ११२४ वर्ग मील और मनुष्य संख्या ९२४७६३ थी, अर्थात् प्रति-वर्ग-मील में औसत ८०८ मनुष्य थे। पश्चिमोत्तर देश में बनारस जिले को छोड़ कर बिलया ज़िले का औसत घनापन दुसरे जिलों से अधिक है, जिनमें ८५५४२० हिन्दू, ६९३२१ मुसलमान और ३२ दूसरी जाति के मनुष्य थे। हिन्दुओं में १३११२६ राजपूत, १०२३०० ब्राह्मण, २६०३३ भूमिहार, ८७५५४ चमार, ५८१४७ भर, जो आदि निवासी जातियों में से हैं और अब हिन्दू में गिने जाते हैं; और श्रेष दूसरी जातियों के।

इस ज़िले में बिलया, बांसडीह और रसड़ा इन तीन स्थानों में तहसीली है। इस ज़िले के १० कसबों में सन् १८८१ में ५००० से अधिक मनुष्य थे, अर्थात् बिलया में ८७९८ (सन १८९१ में १६३७२), सहतवार में ११०२४ (सन १८९१ में ११५१९), बड़ा गांव में १०८४७ (सन १८९१ में १०७२५), रसड़ा में ११२२४, रेवती में ९९३३, बांसडीह में ९६१७, बैरिया में ९१६०, मनियर में ८६००, सिकंदरपुर में ७०२७ और तुर्तीपार में ६३०७।

द्वितीय अध्याय।

ब्रह्मपुर, डुमरांव, बकत्तर, सहसराम, गाज़ीपुर और मुग्छसराय जंक्झन ।

🗸 ब्रह्मपुर् ।

चरजपुरा से १६ मील दक्षिण खबे बिहार के शाहाबाद ज़िले में आरा से २३ मील पश्चिम ईष्ट इंडियन रेलवे का स्टेशन रघुनाथपुर है। जिससे २ मील उत्तर ब्रह्मपुर में, जिसको सर्वसाधारण लोग बरमपुर कहते हैं, ब्रह्मेश्वरनाथ महादेव का शिखरदार पश्चिम-मुख का बड़ा मन्दिर है। जिसके पास पार्वती का एक छोटा मन्दिर और पका सरोवर है।

फाल्गुण और वैशास की शिवरात्रियों को ब्रह्मपुर में वड़ा मेला होता है। जिसमें घोड़े और दूसरे दूसरे चौपाए वहुत विकते हैं। मेला एक सप्ताह तक रहता है।

भं सुनी भवानी - ब्रह्मपुर से वीस बाईस मील दक्षिण है। चैत्र नवमी के समय भलुनी भवानी का मेला होता है और १० दिन से अधिक रहता है। इसमें घोड़े और मवेशियां नहीं जातों पर दूसरी बस्तुएं बहुत विकती हैं। इमली के बाग़ में सरोवर के पास भवानी का मन्दिर है।

🗸 डुमरांव।

रघुनाथपुर से १० मील (आरा से ३३ मील) पश्चिम डुमरांव का रेलवे स्टेशन है। जिससे १ ई मील दक्षिण विहार के शाहाबाद ज़िले में डुमरांव एक छोटा सा क्सवा है। यह २५ अंश ३२ कला ५९ विकला उत्तर अक्षांश और ... ८४ अंश ११ कला ४२ विकला पूर्व देशान्तर में है।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय डुमरांव में १८३८४ मनुष्य थे, अर्थात् १४९०० हिन्दु और ३४८४ मुसलमान ।

यहां के राजा भोजवंशी उज्जैन क्षत्री हैं। इनकी जमीदारी शाहाबाद और बिलिया आदि ज़िलों में फैली हुई है। इमरांव में महाराज की बड़ी फुलवाड़ी और गढ़ के भीतर की ठाकुरवाड़ी देखने योग्य है। फुलवाड़ी में एक सरोवर और कई उत्तम कोठियां बनी हुई हैं, जिनमें मेहमान लोग ठहरते हैं। इमरांव में एंट्रेंस स्कूल और अस्पताल है और चैत्र नवमी तथा जन्माष्ट्रमी के महोत्सव बड़े धूमधाम से होते हैं। बड़े समारोह से श्रीठाकुरजी की सवारी निकलती है और सैकड़ो एंडितों को नियमित दिदाई मिलती है।

डुमरांव का इतिहास ।

राजा भोजिमिंह ने भोजपुर को वसाया और इसी कारण से यह परगना और यह प्रवेश 'भोजपुर' नाम से प्रसिद्ध है। उनका दूटा हुआ गढ़ हुमरांव से ३ मील पर अब तक वर्त्तमान है।

पीछे भोजिसिंह का राज्य डुमरांव, वक्सर और जगदीशपुर इन तीन हिस्सों में वट गया। डुमरांव राज्य को स्थापित हुए ५०० वर्ष से अधिक हुए। सन १८१५ ईस्त्री में डुमरांव के राजा जयपकाश्वसिंह ने नैपाल की छड़ाई के समय अंगरेज़ी सरकार की अच्छी सहायता की थी। उसी समय उनको सरकार से महाराज वहादुर की पुश्तैनी पदवी मिली।

दृद्ध महाराज महेश्वरवस्त्रासिंह वहादुर के वेहान्त होने पर सन १८८१ इंत्री में उनके पुत्र महाराज सर राधाप्रसादसिंह वहादुर के० सी० आई० ई० को राजगढ़ी मिली, जिनकी अवस्था इस समय ५० वर्ष की है। अंगरेज़ी दरवारों में विदार के सम्पूर्ण ज़मीदार राजाओं में महाराज को प्रधान आसन मिलता है।

वक्सर के राजा की ज़मीदारी विक गई है।

जगदीशपुर के बावू कुंवरसिंह का नाम सन १८५७ के बलवे में वागियों के साथ मिलने के कारण प्रसिद्ध है। वे अपने अनुज वावू अमरसिंह के साथ सन १८५७ की जुलाई में दानापुर के वाग़ी सिपाहियों में मिलकर अंगरेज़ों के विरुद्ध खड़े हुए थे । लग भग ६ महीने तक तो जगदीशपुर मोरचा बन्दी करके रहे, परन्तु सन १८५८ की जनवरी में घवड़ा कर पश्चिम को चले गए। फरवरी के मध्य में छलनऊ से भागते हुए आज़मगढ़ ज़िले में आए। अंगरेजी सेना ने 'अतरवलिया' में उनपर आक्रमण किया, किन्तु परास्त होकर वह आज़मगढ़ में हट आई। बाबू कुंवरिसंह ने आकर अंगरेजी सेना पर घेरा हाला, जब सरकारी अफ़सर के आधीन एक सेना आई तब अपरैल के मध्य में बावू कुंवरसिंह परास्त होकर भागे। जब अंगरेजी पल्टन ने पश्चिम से उनका पीछा किया, तब वे बाग़ी सिषाहियों के साथ अपने घर की ओर छौटे। चरजपुरा से ३ मील दक्षिण-पूर्व शिवपुर घाट के पास गंगा के बाएं किनारे कुंत्रसिंह के पहुंचने पर अंगरेज़ी फौज पीछे से पहुंच गई। उस समय बहुतेरे सिपाही भागे और बहुतेरे कुंवरसिंह के साथ नावों द्वारा गंगापार हुए । बाबू कुंवर-सिंह जब हाथी पर सवार हो किनारे से चले, तब अंगरेज़ों ने इस पार से उन पर गोला मारा, जिसका दुकड़ा उनके हाथ में लगा; जिससे वे जगदीश्वपुर में जाकर मर गए। पीछे अमरिसंह भाग गए, परंतु वागियों की जमायत जगह जगह तहसीलों और थानों पर आक्रमण करती हुई इधर उधर फिरा करती थी। अक्तूबर में करनल केली के आधीन ज़िला साफ करने के लिये जब एक फौज भेजी गई, तब वे खितर बितर हो गए। अंगरेज़ी सर्कार ने कुंबरिसंह और अमरिसंह की ज़मीदारी ज़ब्त करके नीलाम करदी। जगदीशपुर का देव मन्दिर पहिलेही बाह्द से उड़ा दिया गया था।

/बक्सर।

डुमरांव से १० मील (आरा से ४३ मील) पश्चिम वक्सर का रे**लंब**ि.. स्टेशन है।

वक्सर बिहार के शाहाबाद ज़िले का सब डिवीज़न गंगा के दिहने किनारे पर एक छोटा कसवा है। लोग कहते हैं कि 'व्याघ्रसर' का अपभ्रंश वक्सर है। यह २५ अंश ३४ कला २४ विकला उत्तर अक्षांस और ८४ अंश ४६ विकला पूर्व देशान्तर में है।

यहां गुल्ले की वड़ी मंडी है और विशेष करके चीनी, रूई और लवण का न्यापार होता है।

इस वर्ष की जन-संख्या के समय वक्सर में १५५०६ मनुष्य थे, अर्थात् ११७२५ हिन्दु, १ जैन, १७ वीन्द्र, ३५९२ मुसलमान् और १७१ क्रस्तान।

गंगा के किनारे पर एक छोटा पुराना किला है, जिसके वगलों में सूखी खाई और गंगा की ओर ईंटे का पुश्ता है। भीतर के मकानों में नहर विभाग के अफ्सर रहते हैं।

कि ले से पश्चिम और दक्षिण सोन की प्रधान पश्चिमी नहर की एक शाखा है, जो डिइरी से १२ मील पर पश्चिमी नहर से निकल उत्तर आकर वक्सर के पास गंगा में मिली है। सरकारी ष्टीमर असवाव और मुसाफिरों को लेकर आते जाते हैं। नहर की चौड़ाई ४७ फीट नेव के पास और ७५ फीट पानी की ल-कीर के पास और गहराई ७ फीट है; जिसके दक्षिण वक्सर के राजा का साधारण मकान है। ये राजा, राजा भोजिसिंह के वंश में हैं, इनकी सम्पूर्ण जुमीदारी विकगई है।

चरित्रवन राजा के मकान से पश्चिम कची सड़क उत्तर्स दक्षिण को गई है, जिससे पश्चिम गंगा के किनारे तक चरित्रवन है। इसमें अब वन के बृक्ष छता आदि नहीं हैं, वरन छोटे वड़े २५ से अधिक देवमन्दिर हैं; जिनमें सोमेश्वर नाय शिव का मन्दिर पुराना और खर्च्यपुरा के दीवान और डुमरांव के महाराज की टाकुरवाड़ी उत्तम हैं। राजा के मकान से पश्चिम-दक्षिण सड़क के पश्चिम ओर एक टीले पर एक कोटरी में राम औह लक्ष्मण की मूर्तियां हैं, जिसके नीचे की तह में महर्षि विश्वामित्र हैं; जहां जाने के लिये कोटरी के दोनों और से सीढ़ियां नीचे को गई हैं। इस स्थान का नाम राम चबूतरा है। रामेश्वर का मन्दिर किलले से पूर्व गंगा के तीर रामेश्वर घाट पर रामेश्वर शिव का गुम्बजदार पूर्व मुख का मन्दिर है। जगमोहन के दिहने महाबीर और वाएं भैरव की मूर्ति है। मन्दिर के दिक्षण एक कोटरी में महाबीर की मार्चुल की छोटी मूर्ति है और उत्तर गंगा का घाट पक्का बना हुआ है। मन्दिर के आस पास इमली, पीयल और यट के बृक्षों पर वन्दरों के झुण्ड रहते हैं।

सिकरीर के एक ब्राह्मण ने इस घाट के पश्चिम एक दूसरा पका घाट और

विश्वामित्र का एक मन्दिर वनवाने का काम आरंभ किया है।

वनसर में मकर की संक्रान्ति को गंगा-स्नान का मेला होता है। बन्सर तीर्थ की परिक्रमा की यात्रा अगहन बदी ५ से आरंभ होकर ५ दिन में समाप्त होती है, इसमें विषेश कर उसके आस पास के लोग जाते हैं।

बक्सर विश्वामित्र ऋषि का सिद्धाश्रम है। लोग ऐसा कहते हैं कि श्री र मन्द्र और लक्ष्मण ने अयोध्या से आकर यहीं विश्वामित्र के यह की रक्षा की थी।

सहसराम।

साम वक्सर से लगभग ३५ मील दक्षिण, शाहाबाद ज़िले का सब

डिबीज़न बड़ो सड़क के पास एक छोटा कसवा है। यह २४ अंश ५६ कला ५९ विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अंश ३ कला ७ विकला पूर्व देशांतर में है। बक्सर से सहसराम तक नहर में आगबोट चलता है।

इस वर्ष की जन-संख्या के समय सहसराम में २२७१३ मनुष्य थे, जिनमें १३१३० हिन्द्, ९५७१ मुसलमान और १२ क्रस्तान।

कसबे के पश्चिम एक बड़े तालाव के मध्य में शेरशाह का अठपहला बड़ा मक़वरा है, जिसकी छत ४ मेहरावियों पर बनी है। इसमें जाने के लिये तालाब में एक ओर पुल बना है। मक़वरे के खर्च के लिये बड़ी जागीर हैं।

वंगाल का हाकिम शेरशाह अफ़ग़ान सन् १५४२ ई० में हुमायूं को निकाल कर दिल्ली का बादशाह बना, परन्तु सन् १५४५ में कालिंजर के बड़े कि, लेपर धावा करते समय वह मारा गया और उसका बेटा उसकी जगह गदी पर बैठा। शेरशाह के पोते के राज्य के समय सन् १५५६ ई० में हुमायं अफ़्ग़ानों को परास्त करके फिर दिल्ली का बादशाह बनगया।

सहसराम से कई मील के अन्तर पर सोन नदी के किनारे एक पहाड़ी पर इहतास (रोहिताश्व) गढ़ का किला है और कसवे के पूर्व उंची पहाड़ी पर चंदन शाहिद मसज़िद है।

्र गाज़ीपुर ।

बक्सर से २२ मील (आरा से ६५ मील) पश्चिम 'दिलदार नगर'रेलवे का जंक्शन है, जिससे १२ मील उत्तर गंगा के दहिने किनारे 'तारीघाट' को रेलवे की शाखा गई है।

पश्चिमोत्तर प्रदेश के बनारस विभाग में ़िले का सदर स्थान गंगा के बाएं किनारे पर लगभग २ मील लंबा और है मील चौड़ा गाजीपुर एक कसबा है। यह २५ अंश ३५ कला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश ३८ कला ७ विकला पूर्व देशांतर में है।

इस वर्ष की जन-संख्या के समय ग़ाज़ीपुर में ४४९७० मनुष्य थे,

(३३०७७ पुरुष और २१८९३ स्त्रियां) इनमें ३०४४९ हिन्दू, १४२३९ मुसलमान, २६१ क्रस्तान, १३ सिक्ख, ४ जैन और ४ यहूदी। मनुष्य-संख्या के अनुसार ग़ाज़ीपुर भारतवर्ष में ८८ वां और पश्चिमोत्तर प्रदेश में १६ वां नगर है।

ग़ाज़ीपुर में कोतवाली का मकान, सिविल कचहरियां और सरकारी अफ़ीम महक्में की सदर कोठी, जहां पश्चिमोत्तर वेश से संपूर्ण अफ़ीम इकट्ठी की जाती है, देखने योग्य हैं। और भी कई देवमन्दिर और बड़े बड़े मकान बने हैं। गंगा के तीर कई घाटों पर नीचे से उपर तक पत्थर की सीढ़ियां हैं। यहांका जज बल्लिया ज़िले का भी जज है।

भारतवर्ष के गवर्नर जनरल लाई कार्नवालिस सन १८०५ ई० में इसी जगह मटेथे। उनके स्मरणार्थ १००००० रुपये के खर्च से यहां एक ऊंचा समाधि-स्तम्भ बना है। अवध के राजप्रतिनिधि के आधीन केख़ अब्दुल्ला का बनवाया हुआ ४० स्तम्भों का महल अब उजड़ी पुजड़ी दशा में है और मस्द अब्दुल्ला और फज़ल अली की क़बरें शहर में हैं।

गाज़ीपुर ज़िला—ज़िले के उत्तर आज़मगढ़, पश्चिम बनारस और जौनपुर, दक्षिण बिहार के शाहाबाद और पूर्व बलिया ज़िले हैं।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय इस ज़िले में १०८४७२९ मनुष्य थे, जिनमें ५३४६०० पुरुष और ५५०१२९ क्लियां। सन १८८१ ईं० में ज़िले का सित्रफल १४७३ वर्गमील और मनुष्य-संख्या १०१४०९९ थी; अर्थात प्रतिवर्गमील में औसत ६८८ मनुष्य थे, जिनमें ९१३७६४ हिन्दू, ९९६७८ मुसलमान, ६४८ कुस्तान, ८ यहूदी और एक पारसी। हिंदुओं में १५४२४६ अहीर, १३०७१६ चमार, ९१६७५ राजपूत, ७७२६२ कछी, ६७८४० ब्राह्मण, ४७१८१ मूमिहार, ४३८४६ भर, ३५९८९ कहार, २२४७८ तेली, २१४१९ लोहार, १८६३३ नोनिया, १५४२१ कायस्थ, १४२४७ कुमार, १४०२९ मलाह, १३२३९ कलवार, १००२३ कुरमी, ८५५४ गड़ेरिया, ८५३६ नाई, ७८१३ सोनार, ७७०९ घोवी, ६२६९ तम्बोली, ४२५१ बनिया और शेष दूसरी

जातियां थीं । मुसलमानों में ९६७८७ सुन्नी और २८९१ शीया थे ।

ज़िले के ८ कसबों में सन १८८१ ई० की मनुष्य-गणना के समय ५००० से अधिक मनुष्य थे। ग़ाज़ीपुर ३२८८५, गहमर १०४४३ (सन १८९१ में १११२९), रेवतीपुर १०२९७ (सन १८९१ में १०९६१), शेरपुर ९०३० (सन १८९१ में १२१५६) नाढी ५४१५, ज़मांनियां ५११६ और वहादुर गंज में ५००७। ग़ाज़ीपुर ज़िले में गंगा से दक्षिण जमनियां, दिलदार नगर और गहमर रेलवे के तीन स्टेशन हैं। सन १७८९ में इस ज़िले की भूमि का प्रवन्ध हुआ और पीछे दायमी मुश्तहर किया गया।

गाजीपुर का इतिहास ।

वौथी शताब्दी से सातवीं तक ज़िले की भूमि मगध के गुप्त-वैश्वियों के राज्यों में थी। सन १३३० के लगभग एक सैयद प्रधान मस्द ने ग़ाज़ीपुर शहर को बसाया, जिसने इस देश के हिंदू राजा को लड़ाई में मारा था। खलतान महम्मद तुग़लक ने इस काम से प्रसन्न होकर उसको ग़ाज़ी की पदवी के साथ इस मिलकियत को देदिया, तब से इसी के नाम से शहर का नाम ग़ाज़ीपुर पड़ा। यह सन १३९४ से १४७६ तक जौनपुर के सकी वंश के राज्यों में था। इसके अनंतर उनकी घटती के पीछे यह पश्चिमी खलतानों के राज्यों में मिलगया और सन १५२६ में आस पास के देशों के सिहत बाबर ने इस को जीता। अकबर के राज्य के तीसरे वर्ष में जौनपर के गवर्नर खां ज़मां ने मुग्लों के लिये फिर गाज़ीपुर को लेलिया, जिसके नाम से ज़मांनियां कसबा का नाम निकलता है।।

मुग्लसराय जंक्शन।

दिलदार नगर स्टेशन से ३६ मील (आरा से १०१ मील और कलकत्ता से ४६९ मील) पश्चिम और बनारस से ७ मील पूर्व मुग़ल सराय रेलवे का जंक्शन है, जहांसे रेलवे लाइन ३ ओर गई है। महस्रुल पहले दर्जे का पति मील १३ आना, दूसरे दर्जे का ९ पाई, दरमियानी दर्जे का ३६ पाई और तीसरे दर्जे का २६ पाई है। मील प्रसिद्ध स्टेशन

२० चुनार

मिरजापुर

बिंध्याचल 84

९१ नयनी जंक्शन

९५ इलाहाबाद

(२) पूर्व, थोड़ा उत्तर इष्ट इण्डियन रेलवे, मील प्रसिद्ध स्टेशन

३६ दिलदार नगर ज०

वक्सर 40

८७ विहिया

१०१ आरा

१०९ कोयलवर का पुल

१२५ दानापुर

१३१ बांकीपुर जंक्शन

उत्तर पश्चिम

मील पसिद्ध स्टेशन

दीघाघाट दक्षिण

मील प्रसिद्ध स्टेशन

पुनपुन

69 गया

(१) पश्चिम ईष्ट इण्डियन रेलवे जिसका (३) पश्चिमोत्तर अवध रुहेलखण्ड रेलवे गई है, जिसके तीसरे दर्जे का महस्रुल प्रति मील २ ६ पाई है। मील प्रसिद्ध स्टेशन

७ वनारस (काशी)

१० बनारस (छावनी)

२८ फलपुर

४६ जीनपुर

१२६ अयोध्या (रानोपाली)

१३० फेजाबाद जंक्शन

१९२ वाराबंकी जंक्शन

२०९ लखनऊ जंबरान

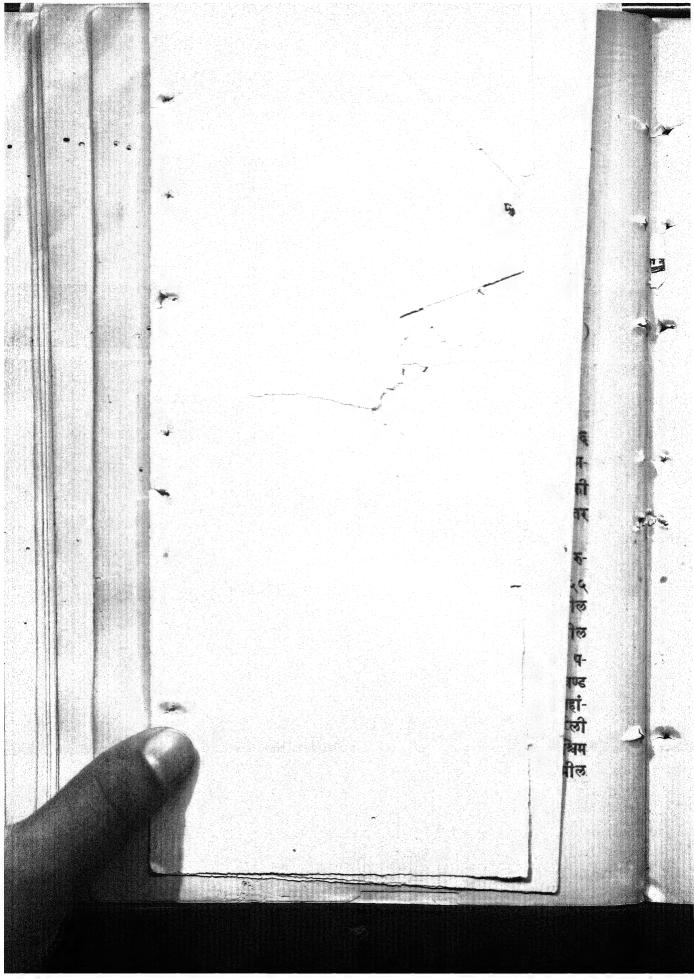
फैज़ाबाद जंक्शन से ६ मील पूर्व अयोध्या का राम-घाट स्टेशन और बाराबंकी जंक्ञन से २१ मील पूर्वीत्तर बहराम घाट है।

लखनऊ से पश्चिमोत्तर रु-हेलखण्ड कमाऊ' रेलवे पर ५५ मील सीतापुर, १६३ मील पीलीभीत और २४१ मील काठ गोदामः लखनऊ से प-श्चिमोत्तर अवध रहेलखण्ड रेलवे पर १०२ मील शाहजहां-पुर और १४६ मील बरैली ज़क्शन; और दक्षिण-पश्चिम ३४ मोल उनाव और ४६ मील कानपुर जंक्शन है।

का रेलवे
तर देश में
पश्चिमोज्ञर्
पर बसा
दफ्तरों में
गसी आदि
य में होने
है। बरुणा
तरी सीमा
क्ला ३१
तर में है।
ई-चन्द्राकार
रों के ऊपर
नीचे घाटों
पर हिंदुस्तान

गे क्रम क्रम से ए को गई है।

ति के मध्य में से राजघाट ३



तृतीय अध्याय।

बनारस, जौनपुर और आज्मगढ़।

🗸 काशी वा वनारस।

मुग़ल सराय जंक्ञन से ७ मील पश्चिमोत्तर बनारस में राजघाट का रेलवे स्टेशन हैं। बनारस २५३ फीट समुद्र के जल से ऊंचा है और पश्चिमोत्तर देश में किस्मत और ज़िले का सदर स्थान, भारतवर्ष के पुराने शहरों में से पश्चिमोत्तर पदेश में एक सब से बड़ा और प्रसिद्ध शहर गंगा के वाएं किनारे पर बसा है। यह बनारस और काशी दोनों नामों से प्रख्यात है। अंगरेज़ी दुफ्तरों में बनारस लिखा जाता है और पुराणों में काशी, अविमुक्त क्षेत्र, बाराणसी आदि इसका नाम लिखा है। बरुणा और असी इन दोनों नदियों के मध्य में होने के कारण इसका नाम 'वाराणसी' पड़ा, जिसका अपभ्रंश बनारस है। बरुणा नदी के समानांतर उत्तर पंचक्रोशी की सड़क काशी की उत्तरी सीमा कही जाती है, जिससे उत्तर सारनाथ है। यह २५ अंश १८ कला ३१ विकला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश ३ कला ४ विकला पूर्व देशान्तर में है।

गंगा के दिहने किनारे से मंदिरों और मकानों से पूर्ण, अर्छ-चन्द्राकार गंगा के वाएं किनारे ३ मील लंबी काशी देख पड़ती है। मंदिरों के ऊपर शिखर, गुंवज और कलश; और मसज़िदों के ऊपर मीनारें और नीचे घाटों पर पत्थर की सीढियां शहर की शोभा को बढ़ा रही हैं। घाटों पर डिंदुस्तान के अनेक प्रदेशों के यात्री देख पड़ते हैं।

असीयाट के पास गंगा ठीक उत्तर को बहती है और आगे क्रम क्रम से ईशान कोन की ओर लौटी है और राजघाट के पास से पूर्वोत्तर को गई है। काशी के पास गंगा की चौड़ाई ई मील है।

राजघाट के रेलवे स्टेशन से असी-संगम ३३ मील है। दोनो के मध्य में विश्वनाथ जी का सोनहला मंदिर खशोभित है। बिरुणा-संगम से राजघाट है मील, पंचरंगा घाट २ मील, मणिकर्णिका घाट २३ मील, दशाश्वमेघ घाट २३ से कुछ अधिक और असी संगम घाट ४ मील है।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय काशी और छावनी में २१९४६७ मनुष्य थे (११५०६२ पुरुष और १०४४०५ स्त्रियां) जिनमें १६८६९ हिंदू, ४९४०५ मुसलमान, १२०६ कुस्तान, १०९ जैन, ५२ सिक्ख, २ यहूदी, १ बौद्ध और १ पारसी। इनमें २५००० के लगभग ब्राह्मणथे। मनुष्य-गणना के अनुसार काशी भारतवर्ष में छठवां और पश्चिमोत्तर प्रदेश में पहला शहर है। शहर का क्षेत्रफल (छावनी छोड़ कर) ३४४८ एकड़ है।

भारतवर्ष के पुराने शहरों में बनारस सबसे छन्दर और उत्तम है। गंगा के आस पास के शहर की गिलयों में, जो पत्थर से पाटी हुई हैं, भीलों तक चले जाइए, धूप नहीं लगेगी। दोनो ओर चौमहले, पंचमहले, छ महले और सतमहले मकानों की पंक्तियां देख पड़ेंगी। इन पतली गिलयों में भायः सब लोग पैदलही चलते हैं। यहों के शिरोभाग देखने पर सिर की पगड़ी गिर जायगी। अधिकांश मकान पुरानी चाल के पत्थर के हैं। चौत्वंभे महत्ले में ग्वालियर के महाराज का पंचमहला मकान काठ से बना है, जिसके पास 'आमर्दकेश्वर' हैं। कोतवाली के समीप बनारस का चौक है, जिससे पूर्व घड़ी का टावर (मीनार) है।

राजधाट स्टेशन से विश्वेश्वर गंज वाज़ार, जिसमें सब भांति की थोक और खुदी जिनिस विकतों हैं, और चौक होती हुई एक चौड़ी सड़क अस्सीधाट पर गई। इसके बांए अथीत दक्षिण ओर शहर में कोई चौड़ी सड़क नहीं है, परंतु दहिने लंबी चौड़ी कई सड़कें निकली हैं, और दूर तक शहर फैला हुआ है; जिसमें स्थान स्थान पर अंगरेज़ी और देशी बड़े बड़े मकान बने हैं। इसी ओर अनेक स्कूल, अनेक जनाना स्कूल, अनेक अस्पताल, सिविल कचहरियां, सिकरौड़ की छावनी, जेल, अंगरेजी क़बरगाह, बहुतेरे बाग़ान, और अनेक गिजी हैं। गिजीओं में मेंटमेरी चर्च सब से बड़ा है, इसमें चार पांचसी आदमी बैठ सकते हैं। यहां घड़ी का एक टावर है। सिकरौड़ की फौजी छावनी

राजवाट स्टेशन से ३ मील पश्चिम और शहर की बस्ती से लगभग २ मील पश्चिमोत्तर है, जहां युरोपियन और देशी फौज रहती है।

ऐसा कहा जा सकता है कि काशी की पंचक्रोशी के भीतर काशी के मनुष्यों से अधिक देवमूर्तियां हैं। बहुतेरे स्थानों में मूर्तियों का बड़ा बटोर है, जिनमें अधिक शिवलिंग हैं। मंदिर अनिगनत हैं, जिनमें बहुतेरे मंदिर छोटे हैं। अत्यन्त छोटे मंदिरों को छोड़ कर इस समय १५५० मंदिर अनुमान किए जाते हैं। पुराणों में लिखे हुए कितने शिवलिंग, देव-मूर्तियां, देवमंदिर और कुंड लोप हो गए हैं, कितने नए स्थापित हुए और बने हैं और कितने। के स्थान बदल गए हैं। मुसलमानी राज्य के समय-पुराने मंदिर तोड़ दिए गए थे।

वनारस में दस्तकारी का उत्तम नमूना देखा जाता है। यह शहर कार-चोबी के काम, पीतल के वर्तन, लकड़ी के खिलीने और रेशम के काम के लिये मिसद्ध है। साटन, मखमल और रेशमो पर सोने और चांदी के खत से कारचोबी के उत्तम काम बनते हैं। यहां चांदी सोने के बहुत बारीक . ताग़े तैथ्यार होते हैं और रेशमी साड़ी, दुपहे, कमख्वाब, टोपी, सलमा इत्यादि बहुत बनते हैं।

काशी में समय समय स्थान स्थान पर वहुत से मेले होते हैं, जिनमें बुढ़वा मंगल का मेला सबसे विख्यात है। चैत्र प्रतिपदा के पीछे जो दूसरा मंगलवार आता है, उस दिन से आरंभ होकर शुक्रवार तक यह मेला रहता है। इस मेले के समय बजड़ों और सैकड़ों नावों पर चढ़कर काशी के लोग अवीर गुलाल उड़ाते हुए एक ओर से दूसरी ओर जाते हैं। किसी नाव पर नाच किसी पर गाना बजाना होता है। डोंगियों पर पूरी मिटाई और पान की दूकानें जाती हैं। इस मेले को देखने के निमित्त दूर दूर से लोग आते हैं।

काशी में ग्रहण-स्नान का वड़ा माहात्त्र्य है, इसिलिये ग्रहणों में भारत-वर्ष के सभी प्रवेशों से लाखों यात्री काशी में आते हैं। ग्रहण-स्नान के समय संपूर्ण घाट मनुष्यों से पूर्ण हो जाते हैं। बहुतेरे लोग नाव और डोंगियों पर चढ़ कर गंगा में मणिकणिका घाट पर जाते हैं। मणिकणिका के आस पास की गिलियों में आदिमियों की बड़ी भीड़ होती है। कई एक दिनें। तक 'विश्वनाथ' के मंदिर में अत्यंत भीड़ रहती है।

े बरुणा-संगम घाट (१)—यहां वरुणा नामक एक छोटी नदी पश्चिम से आकर और दक्षिण घूमकर गंगा में मिलगई है, जिसके तट में संगम से पूर्व (अर्थात बरुणा के बाएं) 'विशिष्ठेश्वर' और 'ऋत्वीश्वर' शिव हैं। यह घाट काशी के अति पवित्र ५ घाटों में से एक है। दूसरे ४ पंचगंगा, मणिकर्णिका, दशाश्वमेघ और असी-संगम घाट हैं।

• वरुणा-संगम के पास 'विष्णु-पादोदक' तीय और 'श्वेतद्वीप' तीर्थ हैं। भावों सदी १२ को वरुणा-संगम पर स्तान और दर्शन की भीड़ होती है और मझ बारुणी के समय भी यहां भीड़ होती है।

अादिकेशव, संगमेश्वर, आदि—संगम की ऊंची भूमि पर सीढ़ियां के सिरे पर 'आदिकेशव' का पत्थर का शिखरदार मंदिर और जगमोहन है। आदिकेशव की स्थाम रंग की सुंदर चतुर्भुज मूर्ति दो हाथ ऊंची खड़ी है। इनका मुकुट चांदी का है और चारों हाथों के शंख, चक्र, गदा, पद्म में चांदी जड़ी है। इनके एक ओर 'जय' और दूसरी ओर 'विजय' की मूर्ति है। आदिकेशव के बाई ओर भीत में काशी के द्वादशादित्यों में से मंदलाकार 'केशवादित्य' हैं। मंदिर के उत्तर 'हरिहरेश्वर' शिव का शिखरदार मंदिर है।

आदिकेशव के मंदिर के हाते से वाहर दक्षिण ओर एक शिखरदार मंदिर में 'बेदेश्वर' और 'नक्षत्रेश्वर' शिवलिंग हैं। वेदेश्वर के नीचे की कोठरी में 'श्वेतद्वीपेश्वर' शिवलिंग हैं।

आदिकेशव के मंदिर से आगे अर्थात् पूर्व ११ सीढ़ियों से नीचे 'संगमेश्वर' का, जो काशी के ४२ लिंगों में से एक हैं, शिखरदार मंदिर है। संगमेश्वर के पूर्व की दालान में 'ब्रह्मेश्वर' नामक चतुर्भुख शिवलिंग हैं।

सन १८५७ के बलवे के समय आदिकेशव का मंदिर बंद कर दिया गया था, परंतु सन १८६३ में फिर खोल दिया गया। आदिकेशव के मंदिर से उत्तर एक पुरानी वेमरम्मत धर्मशाला है, जिसके धेरे में 'वामन जी' का शिखरदार मंदिर है।

आदिकेशव के मंदिर से पश्चिम और किले के फाटक से दक्षिण-पश्चिम एक छोटे से मंदिर में काशी के ५६ विनायकों में से 'खर्व विनायक' हैं।

आदिकेशव से पश्चिम-दक्षिण लगभग ३०० गृज़ दुर मार्ग के समीप एक मंदिर में काशी के ५६ विनायकों में से 'राजपुत्र विनायक' हैं।

लिंगपुराण—(९२ वां अध्याय) वरुणा और गंगा निद्यों के संगम पर ब्रह्मा जी ने 'संगमेश्वर' नामक लिंग स्थापन किया।

स्कंदपुराण—(काशीखंड-५१ वां अध्याय) माघ शुक्क सप्तमी के दिन केशवी-दित्य के पूजन करने से सात जन्म का पाप छूट जाता है।

(५८ वां और १०० वां अध्याय) भाद्र शुक्क एकादशी, द्वादशी तथा पूर्णिमा को वरुण:-संगम पर स्नान करने से पिशाच का जन्म नहीं होता और वहां पिडदान करने से पितरें। की मुक्ति हो जाती है।

(६१ वां अध्याय) भाद्र शुक्त द्वादशी को विष्णु-पादोदक तीर्थ में जाकर बामन जी और आदिकेशव जी की पूजा करनी चाहिए।

शिवपुराण—(६ वां खंड-१२ वां अध्याय) शिव जी ने राजा दिवोदास को काशों से अलग करने के लिए विष्णु को मंदराचल से काशों में भेजा । विष्णु ने पहिले गंगा और दरुणा के संगम पर जाकर और हाथ पांच धोकर सचैल स्नान किया । उसी दिन से वह स्थान पादोदक तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध हुआ । विष्णु ने उस स्नान पर अपने स्वद्भप की पूजा, वही मूर्ति आदिकेशव के नाम से प्रसिद्ध है। (१३ वां अध्याय) विष्णु अपने पूर्ण श्वद्भप से केशवी द्भप धर वहां स्थित हुए और अपने एक छोटे अंश से काशी के भीतर गए; गरुड़ और लक्ष्मी उस स्थान से कुछ दूर उत्तर स्थित हुई। पादोदक तीर्थ से दक्षिण संख तीर्थ, उससे दक्षिण चक्र तीर्थ, गदा तीर्थ, पद्म तीर्थ, गरुड़ तीर्थ, नारद तीर्थ, पहाद तीर्थ, आदि हैं।

राजघाट (२) की ऊंची भूमि-वरुणा-संगम से राजघाट के रेलवे

स्टेशन के पास तक बरुणा और गंगा के बीच में शहर की भूमि से ३५ फीट फंची जीभ की शकल की तीनकोनी ज़मीन है, यहां एक समय राजा बनार का बढ़ा किला था। सन १०१८ ई० में ग़जनी का महमूद हिंदुस्तान की नवीं चढ़ाई के समय बनारस तक आया था। उसने बनारस के अंतिम राजपूत राजा बनार को जीत कर मार डाला और यहां के किले को नष्ट करडाला। सन १८५७ के बलवे के समय अंगरेजें। ने इस स्थान को बसाया था, परंतु यहां का पवन खास्थाकर न होने के कारण सन १८६५ ई० में इसको छोड़ दिया। यहां दो पुराने फाटक, कई एक पुरानी मसजिंद और सन १८६८ ई० का बना हुआ एक सिपाही लाल महम्मद लां का मकबरा है, जिसके चारों कोनें। की ओर एक एक छोटे वुर्ज हैं। किले के बीच में 'योगीबीर' का एक छोटा मन्दिर है, जिसमें योगीबीर की मूर्ति खड़ाऊं पर चढ़ी हुई खढ़ी है।

राजधाट और प्रहादघाट के बीच में किनारे पर काशी के ४२ छिंगें में से 'ब्बर्डीनेश्वर' और प्रहादघाट की सड़क के समीप काशी के ५६ विनायकें। में से 'बरद विनायक' हैं।

गंगा का पुरु बरुणा-संगम से है मील पिश्वम-दक्षिण राजघाट के स्टेशन के पास गंगा पर रेलवे पुल है। यह वड़े वड़े १५ पायों के उत्पर लोहे का बहुत मज़बूत बना है। इनमें ८ पाये ख्ली ऋतुओं में गंगा की दिहनी ओर की ख्ली मूमि पर रहते हैं। पुल के बीच वाली सड़क से रेलगाड़ी, घोड़े-गाड़ी और एके जाते हैं, जिसके दोनो ओर मुसाफिरों के जाने के लिये पांच पांच फीट चौड़ी सड़कें हैं। पुल के दोनो छोरों पर एक एक उंचे मकान बने हैं। पुल की लंबाई ३५८७फीट और गहराई १४१ फीट है। इसके बनाने में ७५००००० हपये से कुछ अधिक खर्च पड़ा है। इसका काम सन १८८० ई० में आरंभ हुआ और सन १८८० ई० में भारतवर्ष के गवर्नर जनरल लाई हफिरन ने इसको खोला, इससे इसका नाम डफिरन बिज पड़ा । पुल का महस्त्वल एक आदमी को एक पैसा लगता है।

प्रह्लादघाट (३)-राजघाट से कुछ द्र पश्चिम-दक्षिण पत्थर से

बांधा हुआ और गंगा में निकला हुआ लंबा चौड़ा और सादा महाद्घाट है। बरुणा-संगम से यहां तक कोई पका घाट नहीं है और राजघाट से यहां तक गंगा के किनारे कोई प्रसिद्ध वस्तु नहीं है।

प्रहाद्घाट के निकट 'प्रहादेश्वर' और ५६ विनायकों में से 'पिचंडील

विनायक' हैं।

नया घाट (४)—बहादघाट से आगे अर्थात दक्षिण पत्थर से बना हुआ नया घाट है, जिसको शाहाबाद जिल्हे के चैनपुर भभुआ के रहने वाले बाबू नर्रासहदयाल ने बनदाया।

नए घाट से आगे स्ता हुआ तेलिया नाला है, बरसात में जिससे झेक्र गंगा में पानी गिरता है। राजघाट से त्रिलोचन घाट तक घनी बस्ती नहीं है। तेलिया नाला और त्रिलोचन-घाट के बीच में कब गोछाघाट के

जपर 'भृगुकेशव' हैं।

त्रिलोचन-घाट (५)—तेलिया नाले से आगे पत्थर से बांधा हुआ 'त्रिविष्टप तीर्थ' है, जो त्रिलोचन-घाट के नाम से मिस हैं। यहां बैशाल मास में, विशेष कर वैशाल शुक्र ३ को स्नान की भीड़ होती हैं। सीहियों के दोनों बगलों पर नीवे दो दो और ऊपर एक एक पाया और घाट पर दोनों और दालान है। घाट से उत्तर शहर के पानी गिरने के लिए नल हैं।

घाट से उत्तर एक मढ़ी में काशी के ४२ लिंगों में से 'हिरण्यगर्भेश्वर' शिव लिंग और काशी के ५६ विनायकों में से 'प्रणविवनायक' हैं । इससे पूर्व गंगा की ओर एक मढ़ी में 'शांतनेश्वर' हैं।

त्रिलोचन द्वाव का मन्दिर निलोचनघाट से ऊपर 'त्रिलोचननाय' का शिखरदार मन्दिर है। बर्तमान मन्दिर को लगभग ५० वर्ष हुए कि पूना के नाथू वाला ने बनावाया। मन्दिर के चारो ओर ४ द्वार है। मध्य में पीतल के होज में काशी के ४२ लिंगों में से 'त्रिलोचन श्विव लिंग' हैं, जिन पर गर्मी के दिनों में फ़ब्बारे का जल गिरा करता है। होज में किनारे पर पार्वती जी की मूर्ति है। मन्दिर की दीवार में गणेश्वजी और लक्ष्मी नारायण की मूर्तियां और

पीछे की ओर महाबीर की मूर्ति है, जिसके समीप काशों के द्वादश आदित्यों में से मंडलाकार 'अरुणादित्य' हैं। मन्दिर के चारों ओर आस पास के मकानें। में लगभग ५० पुराने शिवलिंग और कई वेवमूर्तियां हैं।

मन्दिर के नैऋ त्य कोन के पास एक छोटे मन्दिर में 'वाराणसी देवी' हैं, जिनके पश्चिम एक आले में ५६ बिनायकों में से 'उदंडमुंड विनायक' हैं।

त्रिलोचन के मन्दिर के घेरे से बाहर पूर्व ओर एक मन्दिर में काशी के अष्ट महार्लिगों में से एक 'नर्भदेश्वर' और दूसरे मन्दिर में ४२ शिवर्लिगों में से 'बादि महादेव' हैं। जिनके निकट काशी के ५६ विनायकों में से 'मोदकपिय' विनायक हैं। आदि महादेव के घेरे में एक दूसरे मन्दिर में अष्ट महार्लिगों में से 'पार्वतीश्वर' हैं। त्रिलोचन महल्ले में पाठन दरवाजे के निकट अष्ट महा भैरवों में से 'महार भैरव' हैं।

ं स्कंद पुराण—(काशी खंड–६९ वां अध्याय) श्रावण शुक्र चतुर्वशी को आदि महादेव के पूजन करने से बहुत र्लिगों की पूजा का फल मिलता है।

(७५ वां अध्याय) बैशाख शुक्क तृतीया को त्रिलोचनेश्वर के पूजन करने से ममादकृत पाप निष्टत्त होता है।

(२० वां अध्याय) चैत्र शुक्त तृतीया को पार्वतीश्वर की पूजा करने से सौभाग्य मिलता है।

कामेश्वर का मन्दिर—कामेश्वर शिवलिंग काशी के ४२ लिंगों में से हैं। इनका मन्दिर मत्स्योदरी तालाव के पूर्व और तिलोचनघाट के उत्तर तिलोचन महल्ले की गली में वाजार के पास दक्षिण है। यहां छोटे छोटे २ चौक में आठ दश मन्दिर और एक वट दक्ष है। इनमें जो सब से बड़ा मन्दिर है, उसके मध्य में 'महसितेश्वर' और एक ओर पीतल के हौज में 'कामेश्वर' शिव लिंग है, और छोटे मन्दिरों में और वट दक्ष की जड़ के पास साठ सत्तर शिव लिंग, मोर पर चढ़ी हुई मत्स्योदरी देवी, दृसिंह जी, दुर्वासा ऋषि, सीताराम आदि वेवमूर्ति और काशी के द्वादश्वादित्यों में से 'स्वलोलकादित्य' हैं। स्कृत्देश्वरण—(काशीखंड ७३ वां अध्याय) वैश्वाल शुक्क चतुर्वशी को

मत्स्योदरी तीर्थ' की यात्रा से सर्व तीर्थें। की यात्रा का फल फिलता है।

(८५ वां अध्याय) चैत्र शुक्त त्रयोदशी को कामेश्वर के दर्शन पूजन करने से बहुत पुण्य होता है।

अोंकारेश्वर का मन्दिर-मत्स्योदरी से उत्तर कोयला बाजार के पास ओंकारेश्वर महल्ले में एक छोटे टीले पर २४ सीढ़ियों के ऊपर छोटे मन्दिर में काशी के ४२ लिंगों में से 'ओंकारेश्वर' शिव लिंग है। मन्दिर के चारों ओर द्वार और मन्दिर के पास नीम के कई दृक्ष हैं।

कूर्मपुराण—(ब्राह्मी मंहिता-३१ वां अध्याय) मत्स्योदरी के तट पर पवित्र और गुहा ओंकारेश्वर ज्ञिव छिंग हैं।

स्कन्दपुराण—(काशी खंड-७४ वां अध्याय) बैशाख शुक्र चतुर्दशी को प्रणवेश्वर-यात्रा से भुक्ति मुक्ति मिलती है।

अढ़ाई कंगूरा मसजिद-ओंकारेश्वर के मन्दिर से पूर्वीत्तर बुछ दूर बनारस की बड़ी मसजिदों में से एक अढ़ाई कंगूरा नामक मसजिद है। यह दो मंजिली है, इसके बड़े आंगन के दरवाजे पर बड़ा फाटक लगा है।

हिन्दू, बौद्ध और मुसल्लमान इन तीनों के मतों के मन्दिरों के सामान इस मसजिद में देख पड़ते हैं। इससे जान पड़ता है कि तीनों मजहव वाले अपनी अपनी अमलदारी में एक ही सामान को अपने अपने मन्दिर दनाने के काम में लाए होंगे।

गंज शाहिद मसाजिद—अढ़ाई कंगुरा मसजिद से पूर्व ओर यह मसजिद है। इसके छोटे किते में ४ कत्तरों में नव नव फीट ऊंचे ३२ खंभे और बड़े किते में दश दश फीट ऊंचे ४० खंभे छगे हैं।

राजा बनार के किले पर धावा करते समय जो मुसलमान सिपाही मारे गये थे, वे यहां गाड़े गए थे; उन्हीं के यादगार में यह मसजिद है।

महथाघाट (६)—त्रिलोचन घाट के आगे पत्थर से वांघा हुआ महथा घाट मिलता है, जिसके ऊपर 'नर नारायण' का मन्दिर है। यहां पौष मास की पूर्णिमा को स्नान की भीड़ होती है। ्र (काशीम्बंड-६१ वां अध्याय) पीष मास में नरनारायण के दर्शन पूजन से बदरिकाश्रम तीर्थ की यात्रा का फल होता है और गर्भवास का भय छुट जाता है।

गायघाट (७)—महथाघाट से आगे गंगा में निकली हुई भूमि पर पत्थ से बना हुआ गायघाट (गोनेश तीर्थ) है। पर पत्थर के चौखूटे कई पाये और घाट के दोनो ओर दूर तक कचा घाट है। घाट के निकट हनुमान जी के मन्दिर में काशी की ९ गौरियों में से 'मुखनिर्मालिका' गौरी हैं।

→ छालघाट (८)—यह 'गोपीगोबिंद' तीर्य लालघाट के नाम से प्रसिद्ध है। घाट पत्थर से बांघा हुआ है। अगहन की पूर्णिमा को यहां स्नान की बड़ी भीड़ होती है। घाट से ऊपर एक मन्दिर में 'गौरीशंकर' नाम के काश्ची के प्रसिद्ध ४२ लिंगों में से गोपेक्षेश्वर शिव लिंग और 'गोपीगोबिंद' की मूर्ति हैं।

र्कदपुराण—(काशीखंड-६१ वां अध्याय) गोपीगोविंद के पूजन से भगवान की माया स्पर्ध नहीं करती (८४ वां अध्याय) गोपीगोविंद तीर्थ में स्नान करने से गर्भवास छुट जाता है।

े सीतलाघाट (९)—सीतलाघाट के दक्षिण ओर 'सीतला देवीं' का मन्दिर है।

राजमन्दिरघाट (१०)—स्नान करने को यह लंबा घाट है। घाट के ऊपर एक पुस्ता और एक मकान की पीछे को दीवार है, जिसमें पहले एक राजा रहता था; इसलिये इस घाट का यह नाम पड़ा। यहां इनुमान जी के मन्दिर में 'लक्ष्मी-टुसिंह' की मूर्ति है।

्र(काशीखंड–६१ वां और ८४ वां अध्याय) लक्ष्मीनृत्तिंह के दर्शन से भय छुट जाता है और लक्ष्मीनृतिंह तीर्थ में स्तान करने से निर्वाणपद मिळता है।

मझाघाट (११)-यह बहुत पुराना घाट है। इसके सिरे पर कई हुआ

हैं। लगभग ५५ वर्ष हुए कि बाजीराव पेशवा ने इस घाट की मरम्मत करवाई थी। ब्रह्माघाट के ऊपर एक गली में 'ब्रह्मेश्वर महादेव' का मन्दिर है।

े दतात्रेय — ब्रह्माघाट से ऊपर कुछ दूर पश्चिम मुख के मन्दिर में सोनहले सिंहासन पर शुक्क वर्ण और ६ भुजा वाले दत्तात्रेय खड़े हैं। मन्दिर के आगे बहुत बड़ा दालान है। यह मन्दिर संवत १९२१ का बना हुआ है।

- दुर्गीघाट- (१२)-घाट के पास 'नृसिंह' हैं।

स्कंदपुराण—(काशीखंड-६१ वां अध्याय) बैशाख शुक्क चतुर्वश्री के। 'खर्ब दृसिंह' के दर्शन पूजन करने से संसार-भय निष्टत्त होता है।

कहाचारिणी दुर्गा—घाट से जपर एक पंच-मंजिले मकान के नीचे वाले मंजिल की एक कोटरी में श्यामवर्ण काशी की ९ दुर्गाओं में से 'ब्रह्म-चारिणी' दुर्गा हैं।

गवालियर के दीवान दिनकरराव का राममन्दिर—दुर्गाधाट और ब्रह्मचारिणी दुर्गी से उत्तर यह मन्दिर है। इस उत्तम मन्दिर में सोनहले बड़े सिंहासन पर बहु मूल्य बस्तों से सिज्जित राम, लक्ष्मण और जानकी की मूर्तियां खड़ी हैं। राम और लक्ष्मण के शिरोंपर छन्दर पिगया है। मन्दिर के चारों ओर नकाशीदार खंभे लगे हुए और शीशे टंगे हुए दालान हैं। मन्दिर के आगे दो मंजिला और आगे की ओर लंबा मंडप है। इसके मध्य में सहन और एक ओर जगमोहन और ३ ओर उत्तम खंभे लगे हुए दालान हैं। मंडप में बहुतेरे बहुमूल्य झाड़ और दीवारगीरें लगी हैं और बड़े बड़े आइने खड़े किए गए हैं, जिनमें दर्शक गण और मन्दिर के असवाव देख पड़ते हैं। इस स्थान पर पुजारी और अधिकारियों के अतिरिक्त हथियार बंद कई नौकर हैं। मन्दिर के आस पास दीवान साहब के कई मकान हैं।

र्च चंगगाघाट (१३)—यह घाट काशी के पांच अतिपवित्र घाटों में से एक है। यहां नदियां गुप्त रह कर गंगा में मिली हैं, इसीसे इस घाट का नाम 'पंचगंगा' है। पंचगंगा में 'विष्णुकांची तीर्थ' और 'विंदु तीर्थ' हैं।

लगभग ३०० वर्ष हुए आंबेर के राजा मानसिंह ने इस घाट को पत्थर से

महाराज श्री गुप्त प्रयोजस्य महाराजशी घरोत्कच योजस्य महाराजा धिराजशी चन्द्र गुप्त पुचस्य लिच्छ विदेश हि बस्य महादेखां कुमार देखा मु-त्क (त्य)कस्य महाराजा धिराजशी समुद्र गुप्तस्य सर्व पृथिवी विजय जिततोद्य बाप्त निक्तिलाव नितलाकी र्ति मित स्विद्शयति भवनगम-नावाप्तलब्धित मुखविचरणामाचक्षाण द्व भुवो बाहुरयमुच्छितः स्तम्धः यस्य प्रदान भुज विक्क -

तिति कि च में के धार्व के धार्य के धार्व के धार्य के धार्व के धार्व के धार के धार्व के धार्व के धार्व के धार्व के धार्व के धार्व के धार्य

वनवाया था। घ.ट के कोने के पास पत्थर का एक दीप-शिखर है, जिस पर लगभग १००० दीप रखने के लिए अलग अलग स्थान वने हैं, जिन पर उत्सव के समय दीप जलाए जाते हैं। घाट से ऊपर बहुत से देवमन्दिर हैं। कार्तिक भर पंचर्गगाघाट पर कार्तिकस्नान की भीड़ रहती है। त्रिलोचनंघाट से यहां तक लगातार वड़े बड़े मकान नहीं हैं।

्रसंद्पुराण—(काशीखंड-५९ वां अध्याय) प्रथम ही धर्मनद का पुण्य धूत्रापा में मिल गया था। किरणा, धूत्रपापा, सरस्वती, गंगा और यमुना इन पांचों के योग होने से पंचनद, जिसका पंचगंगा कहते हैं, विख्यात हुआ है। इसका नाम सत्युग में धर्मनद, त्रेता में धूत्रपापा, द्वापर में विंदुतीर्थ था, और किल्युग में पंचनद कहलाता है। इस अध्याय में पंचनद की उत्पत्ति की कथा है। (६० वां और ८४ वां अध्याय) कार्तिक मास भर न हा सके तो एकादशी से पूर्णिमा तक पंचगंगा स्नान और विंदुमाध्य के दर्शन करने से सब पाप द्र होते हैं। कार्तिक में एक दिन स्नान करने से १०० वर्ष तपस्या करने का फल मिलता है और हाम करने से यह करने का फल होता है।

ने बिंदुमाधव का मन्दिर—पंचगंगः याट के विना शिखर के मन्दिर में वड़े सिंहासन पर छोटी श्यामल चतुर्भुज विद्माधव की मूर्ति है। चारों भुजाओं के संख, चक्र, गदा और पद्म, और शिर का मुकुट सनहला और सिंहासन, चौकी आदि पीतल की हैं।

श्चिवपुराण—(६ वां खंड-१४ वां अध्याय) राजा दिवोदास के काशी से विरक्त होने पर विष्णु ने गरूड़ को शिव के समीप भेजा, अग्निविंदु बाह्मण को देख कर उस पर क्या किया और फिर वह पंचनद के उपर बैठ कर शिव का स्मरण करने लगे।

म स्कंदपुराण (काशीखंड ६० वां अध्याय) विष्णु ने पंचनद पर तपस्वी अग्निविंदु ब्र.ह्मण के। वरदान दिया कि मैं इस स्थान पर विंदुमाध्व के नाम से स्थित हूंगा और इस स्थान का नाम तुम्हारे नाम के अनुसार विंदुतीर्थ होगा।

्रपंचगंगेश्वर झिव-विंदुमाधव के समीपही उत्तर एक मन्दिर में

पंचांगेश्वर शिविंछिंग हैं। यहां के अर्घे, होज और चौकट पर पीतल ज़ड़ा है और नन्दी बड़ा है। कोई कोई कहते हैं कि मन्दिर के बाहर पश्चिम मसजिद से उत्तर एक मकान के बगल के नीचे गली के किनारे गहरे स्थान में पंच-गंगेश्वर शिविंछिंग हैं, जिनको कोई कोई 'दिधकल्पेश्वर' कहकर पुकारते और कहते हैं कि पंचांगेश्वर गुप्त हैं।

माधवराय घाट (१४)—यह पंचमंगा घाट का एक हिस्सा जान पड़ता है। इसकी सीढियां एक पुराने फाटक के पास ऊपर को गई हैं, जहांसे नीचे के घाट और गंगा के मनोहर हत्र्य देख पड़ते हैं।

माधवराय का धरहरा—घाट के ऊपर ऊंची भूमि पर औरंगज़ेब की बनवाई हुई एक बड़ी और छन्दर काशी की बड़ी मसिजिदों में से एक पत्थर की मसिजिद है, जो बिंदुमाधव के बड़े मंदिर की सामग्री से बनी थी। मसिजिद के आगे छन्दर ऊंचे ३ महराब हैं और आगे के दोनों वाजुओं पर मसिजिद की नेव से १४२ फीट ऊंचे तीन मंजिले दो बुर्ज अर्थात घरहरे हैं, जिनका ब्यास नीचे ८ दे फीट और ऊपर ७ दे फीट है। ऊपर चढ़ने के लिये बुर्जों के भीतर दक्काकार सीढ़ियां बनी हैं। बुर्जों पर चढ़ने से सारा शहर देख पड़ता है। मसिजिद का अधिकारी मुसलमान एक पैसा लेकर लोगों को बूर्ज पर चढ़ने वेता है। इसके बनाने वाला माधवराय नामक एक हिंदू कारीगर था, इसी से बुर्जों का नाम माधवराय का धरहरा पड़ा।

द्वारिकाधीश का मंदिर — औरंगजेव की मसजिद के पीछे एक मन्दिर में द्वारिकाधीश की और दूसरे में राधाकृष्ण की मूर्तिया हैं। दोनें। मन्दिरों की मूर्तियों का उत्तम शृङ्गार और पीतल जड़े हुए सिंहासन हैं।

े स्वध्मणबाळा घाट (१५)—गंगा के घुमाव के पास यह पक्का घाट है, जिसके सिरे पर पूना के बाजीराव पेशवा का वनवाया हुआ कालेरंग की खन्दर अनेक खिड़िकियों वाला एक उत्तम मकान है, जो अब महाराज सेन्धिया के अधिकार में है। के महाराज में िया का बनवाया हुआ लक्ष्मणवाला घाट के सिरे पर ग्वालियर के महाराज में िया का बनवाया हुआ लक्ष्मणवाला जी अर्थात् व्यंकटेश भगवान का खन्दर मन्दिर है। जिसमें श्यामल चतुर्भुज उत्तम शृङ्कार से से सिज़ित खन्दर सिंहासन में लक्ष्मणवाला जी की मूर्ति है। जिनके दोनों ओर छोटी छोटी एक एक मूर्तियां खड़ी हैं और एक ओर सोने का खर्च्य और दूसरी ओर चांदी का चंद्रमा है। मन्दिर के आगे जगमाहन के स्थान पर एकही छत के नीचे चारों वगलों पर ३२ उत्तम खंभों का दालान और मध्य में आंगन है। रास अथवा कथा आंगन में होती है और चारो ओर के दालान में दर्शक वा श्रोता लोग बैठते हैं। मन्दिर के चारों ओर आंगन के बगलों में मकान हैं।

ेत्रता का राम-लक्ष्मणवाला के मन्दिर के पूर्व ओर धरहरे के पश्चिम एक बड़े भारी मकान के दालान में राम, लक्ष्मण और जानकी की मूर्तियां हैं। इनका शृङ्गार खन्दर है।

अभिमस्तीश्वर—लक्ष्मणवाला के उत्तर एक छोटे मन्दिर में काशी के अष्ट महालिंगों में से 'गभस्तीश्वर' शिवलिंग हैं।

→ मंगळागौरी—गभस्तीश्वर के मन्दिर के पास एक कोठरी में काशी की
९ गौरियों में से 'मंगला गौरी' की मूर्ति है।

यहां द्वादश आदित्यों में से 'मयूखादित्य' और ५६ विनायकों में से 'मित्र विनायक' हैं।

्र स्कंदपुराण—(काशीग्वंड-४९ वां अध्याय) अर्कवार को गभस्तीश्वर और मंगलागौरी के दर्शन करने से फिर जन्म नहीं होता और चैत्र शुक्क रुतीया के दिन मंगलागौरी के पूजन करने से सौभाग्य मिलता है।

्राहते की सीढ़ियों से उतर कर लक्ष्मणवाला घाट पर इस मन्दिर के पास पहुंचना होता है। इस उत्तम मन्दिर में बहुमूल्य वस्त्रों से स्रशोभित शुक्क वर्ण लक्ष्मीनारायण की मूर्ति है। मन्दिर के आगे की दीवार और खंभें पर जड़ाव का काम है और दीवार के पास द्वार के दोनों ओर आदमी से अधिक वड़े एक एक सिपाही खड़े हैं, जिन पर उत्तम काम किया हुआ है। खंभों और सिपाहियों पर ओसारे हैं और आसपास मकान वने हैं।

रामघाट (१६)—२०० वर्ष से अधिक हुए इस बड़े घाट को जयपुर के महाराज ने बनवाया था। यहां रामतीर्थ है, रामनवमी के दिन यहां स्नान की बड़ी भीड़ होती है। घाट के शिरे पर जयपुर के महाराज के बनवाए हुए एक मन्दिर में राम और जानकी की धातु विग्रह बहुत छन्दर मूर्ति है। मन्दिर के आगे जगमाहन के स्थान पर छंबा और छन्दर दालान है।

रामघाट पर काशी के ५६ बिनायकों में से 'कालविनायक' हैं और घाट से थोड़ीदुर पर नीचे के मंजिल में 'आनंदभैरव' हैं।

्र स्कंदपुराण—(काशीखंड-८४ वां अध्याय) चैत्र शुक्क नवमी को राम-तीर्थ-यात्रा से सर्व धर्म का फल होता है।

अग्नीश्वर घाट (१७)—यह घाट साधारण है। इसके दोनें। वगलों में एक एक दालान हैं। पूना के अंतिम पेशवा वाजीराव ने इसको बनवाया था।

घाट से ऊपर एक मन्दिर में 'अग्नीश्वर शिव' और दूसरे मन्दिर में काशी के ४२ लिंगों में से 'उपशांत शिव' हैं।

→ भोंसला घाट (१८) – लगभग १०० वर्ष हुए, नागपुर के राजा ने, जिनकी भोंसला की पदवी है, इस घाट को बनवाया था; जो गंगा के किनारे के उत्तम घाटों में से एक है। घाट के ऊपर खुन्दर पत्थर के खंभे लगे हुए दालान हैं, जिनके भीतर दोहरी मेहराब लगा हुआ दरवाजा है। इस जगह से ऊपर लक्ष्मीनारायण के मन्दिर तक सीढ़िया लगी हैं और दालान के आगे दोनो ओर एक एक पाया बना है।

भोंसला घाट के पास 'नागेश्वर' और ५६ विनायकों में 'से 'नागेश्व बिनायक' एकही मन्दिर में हैं। भोंसला का मन्दिर—भांसला घाट के सिरे पर भांसला का बनवाया हुआ सिखरदार एक बड़ा मन्दिर है, जिस पर बाहर चारें। ओर नीचे से उत्पर खोदकर छोटी छोटी बहुत सी मूर्तियां बनी हैं। मन्दिर में बहुमुल्य बस्त्र भूषणों से युक्त लक्ष्मीनारायण की मुन्दर मूर्ति है मन्दिर के आगे जगमोहन के स्थान पर ३० खंभे लगे हुए लक्ष्मणवाला के मन्दिर के दालान के समान छंबा दालान है और मन्दिर के चारे। ओर आंगन के बगलों में मकान और ओसारे हैं।

मंगामहळ घाट (१९)—भांसलाघाट से दक्षिण गंगामहल घाट है। घाट के बीच में गेालाकार एक पाया है, जिसके दोनें। ओर आठ पहला एक एक पाया है। तीनें। पर जाने की सीढ़ियां लगी हैं। घाट के सिरे पर महाबीर की २ मूर्तियां और गंगा जी का एक मन्दिर है।

न संकटाघाट (२०) चह पत्थर से बांधा हुआ घाट 'यमतीर्थ' है। घाट पर एक मन्दिर में 'यमेश्वर' और एक मन्दिर में काशी के १२ आदित्यों में से 'यमादित्य' हैं। कार्तिक शुक्र दितीया को यहां स्नान की भीड़ होती है।

्रस्कंदपुराण—(काशीम्बंड-५१ वां अध्याय) भरणी, मंगल और चतुर्वशी के योग होने पर यहां तर्पण श्राद्ध करने से पितरें। के ऋण से मुक्ति होती है।

पाट से ऊपर महाराष्ट्रीय स्त्री गहना वाई का वनवाया हुआ 'संकटा देवी' का मन्दिर है। एक आंगन के चारें ओर दो मंजिले मकान हैं। एक ओर के मकान में चांदी जड़े हुए बड़े सिंहासन में आदमी के समान बड़ी 'संकटा देवी' की मूर्ति है, जो काशी की ९ दुर्गाओं में से 'महागौरी' दुर्गा हैं। दालान में पत्थर का बड़ा सिंह है। संकटा जी के मन्दिर के बाहर फाटक के दक्षिण उसी मन्दिर में 'कुष्णेश्वर' और 'याज्ञवल्क्येश्वर' शिवलिंग हैं, जिनके सामने एक मन्दिर में वड़े अर्थे पर मोटा और बड़ा 'हरिश्वन्द्रेश्वर' शिवलिंग है। थोड़ी दुर जाने पर एक मन्दिर में 'विशिष्टेश्वर', 'बामदेवेश्वर' और 'अहंधती देवी' हैं। इस मन्दिर के द्वार पर 'चितामणि-विनायक' हैं, जिससे पश्चिमोत्तर 'सेना-

विनायक' और 'सीमाविनायक' हैं। संकटा जी के मन्दिर के वाहर पूर्व ओर कोने में 'विंध्यवासिनी' देवी का मन्दिर है।

विशिध वामदेव से थोड़ी ही दूर संधियाघाट (वीर तीर्थ) पर काशी के ४२ लिंगों में से 'आत्मावीरेश्वर' का मन्दिर हैं। इसी मन्दिर में काशी की ९ दुर्गाओं में से 'कात्यायनी दुर्गा' हैं। इनके पास के दालान में 'मंगलेश्वर' और 'वुधेश्वर' शिवलिंग और ५६ विनायकों में से 'मंगलविनायक' और बहुत से दुसरे देवता हैं। गली की दूसरी ओर के मन्दिर में 'वृहस्पतीश्वर' आदि कई शिवलिंग और कई देवमूर्तियां हैं। इनमें से कई शिवलिंग ह, जिनके सामने फाटक के दगल में 'पार्वतीश्वर' शिवलिंग हैं।

्रसंदपुराण—(काशीखंड-१५ वें अध्याय से १७ वें अध्याय तक) वृधाष्ट्रमी के योग में वृधेश्वर के पूजन करने से छबुछि प्राप्त होती है गुरुपुष्य योग में दृहस्पतीश्वर के पूजन करने से महा पातक निष्टत्त होता है और भौम-युक्त चतुर्थी होने पर मंगळेश्वर के पूजन करने से ग्रहवाधा की निष्टत्त होती है।

सिद्धेश्वरी देवी-एक मन्दिर में 'सिद्धेश्वरी देवी' हैं जिसके पास • 'सिद्धेश्वर', 'कलियुगेश्वर', और काशी के ४२ लिंगों में से 'चंद्रेश्वर' तीन शिवलिंग हैं। दुसरे आंगन में 'चंद्रकूप' नामक एक पक्का कूंआ और कई देवता हैं इस कूप पर सोमवती अमावास्या के दिन पिंडदान की भीड़ होती है।

'विद्ये स्वर' शिव लिंग नीमवाली ब्रह्मपुरी में हैं।

्स्कंदपुराण—(काशीखंड-१४ अध्याय) प्रतिमास की अमाव स्या को चंद्रकूपयात्रा से भुक्ति मुक्ति मिलती है और सोमवती अमावास्या को चंद्रकूप पर श्राद्ध करने से गयाश्राद्ध का फल होता है।

े सेंधियाघाट (२१)—सङ्कटाघाट से दक्षिण मणिकणिका-घाट से लगा हुआ उत्तर की ओर हीन दशा में मेंधियाघाट है। देखने से जान पड़ता है कि यह बहुत उत्तम बना था। खोदाव का काम बहुत जगह पूरा नहीं हुआ है। घाट के ऊपर के भागों की नेव हट गई है और सारी बनावट पीछे की ओर गिर गई है। सन १८३० ई० के लगभग ग्वालियर की महारानी बैजावाई

ने इसको बनवाया था। घाट की सीढ़ियों पर एक वड़ा मन्दिर है, जिसके नीचे का भाग वर्षाकाल में पानी में डूव जाता है। यह घाट 'वीरतीर्थ' है।

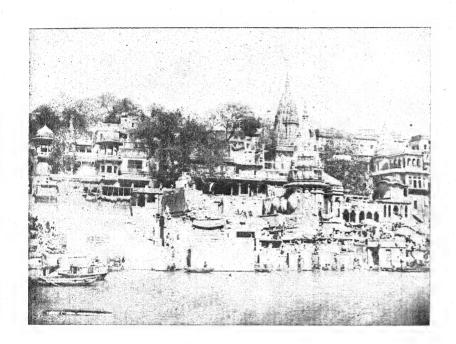
स्कन्दपुराण-(काशीखण्ड-८४ वां अध्याय) बीरतीर्थ में स्नान कर के बीरेश्वर के पूजन करने से सन्तान-प्राप्ति होती है।

मणिकणिका-घाट (२२)—यह घाट काशी के अति पवित्र पांच घाटों में से एक और दूसरे चारों से भी अधिक पवित्र और विख्यात है। इसके ऊपर 'मणिकणिका-कुण्ड' है, इससे इस घाट का यह नाम पड़ा है। इन्दौर की महारानी अहिल्या बाई ने, जिसने सन १७६५ ई० से सन १७९५ तक राज्य किया, सन ई० के १८ वें शतक के अन्त में इस घाट को बनवाया था। गङ्का और मणिकणिका के बीच में विष्णु के चरण चिन्ह हैं, जिसके पास मरे हुए राजा लोग और दूसरे मान्यगण जलाए जाते हैं। इसके पास एक कोटरी में अहिल्या बाई की खण्डित मूर्ति है। कुण्ड से दक्षिण-पश्चिम अहिल्या बाई का बनवाया हुआ विशाल मन्दिर हैं, जिसके मध्य में एक शिवलिंग और एक ओर 'तारकेश्वर' शिवलिंग हैं। गङ्का के किनारे नकाशो दार कई मन्दिर हैं।

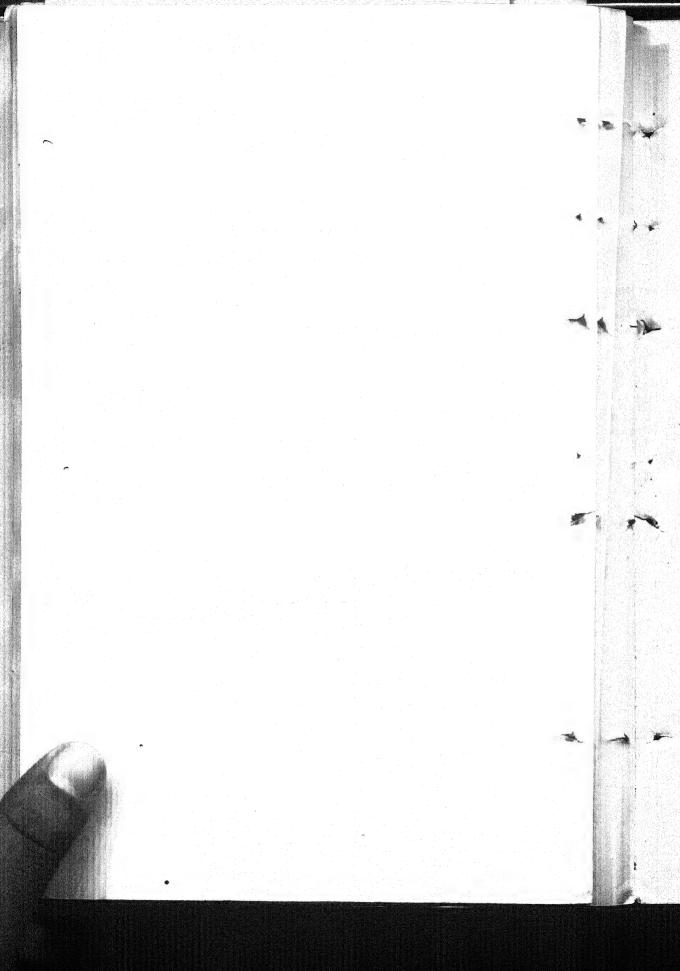
काश्ची के ४२ लिंगों में से 'महेश्वर' नामक बहुत बड़ा फटा हुआ लिंग एक मड़ी में हैं।

मणिकणिका-कुण्ड-नीचे के मन्दिर की सतह से २० सीढ़ियों के जपर मणिकणिका कुण्ड के जपर का फरस है। कुण्ड में चारों ओर नीचे तक पत्थर की २१ सीढ़ियां और जपर चारों बगलों पर लोहे के जङ्गले का घेरा है। कुण्ड सिरे पर लग भग ६० फीट लम्बा और नीचे लग भग २० फीट लम्बा और २ फीट चौड़ा है, गङ्गा से कुण्ड के पेन्दी तक गङ्गा से पानी आने के लिये एक नाला है। कभी कभी कुण्ड में केवल दो तीन फीट जंचा पानी र-इता है।

यहां नित्य स्नान करने वाले यात्रियों की भीड़ रहती है और सैंकड़ों आदमी जप पूजा करते हुए बेंटे बेख पड़ते हैं।



मणिकणिका घाट, काशी



काशी के यात्री प्रथम मणिकणिका-कुण्ड और गङ्गा में स्नान कर के वि-श्वनाथ का दर्शन करते हैं

शिवपुराण—(८ वां खण्ड-३२ वां अध्याय) शिव जी ने अपनी वाई भुजा से विष्णु को प्रकट किया, विष्णु ने शिव की आज्ञा से तप करने के निम्मित्त काशी में पुष्करिणी को खोदा और अपने पसीने से उसे भर कर वह तप करने छगे। बहुत दिनों के उपरान्त उमा सहित सदाशिव जी वहां प्रकट हुए शिव जी ने अपना सिर हिलाया और विष्णु की स्तुति कर अपनी प्रसन्नता प्रकट की। उसी दशा म शिव जी के कान से मणि उस स्थान पर गिर पड़ी, जिससे वह स्थान मणिकणिका नाम से प्रसिद्ध हुआ।

स्कन्दपुराण—(काशीखण्ड के २६ वें अध्याय में भी यह कथा है और लिखा है कि विष्णु ने अपने चक्र से पुष्करिणी को खोदा, इसलिए इसका नाम चक्रपुष्करिणी भी हुआ) (काशीखण्ड-२१ वां और ८४ वां अध्याय) इसमें स्नान करने से गर्भ बास छुट जाता है।

अमेठी के राजा का मन्दिर—मणिकणिका कुण्ड के पश्चिम पासही अलवर के महाराज का उत्तम शिवमन्दिर बन रहा है; जिससे पश्चिम अमेठी के राजा का पश्चायतन मन्दिर है। बीच वाले मन्दिर में दुर्गा जी की मूर्ति और चारों कोनों के मन्दिरों में पीतल जड़े हुए होजों में एक एक शिवलिंग हैं। बीच वाले मन्दिर के चारों दिशाओं में महराव वाले नकाशीदार चार चार खन्मों का दालान है। चारोंओर घोड़मुहां के स्थानों पर अच्छी सङ्गतराशी की पचास साठ पुतलियां हैं। पांचों मन्दिरों के शिखरें। पर ऊचे सुनहले एक एक कलश और बहुतेरी छनहरी कलशियां लगी हैं। मन्दिर से पूर्व ओसारे में पीतल का परदार सिंह और पीतल का नन्दी खड़ा है। मन्दिर के चारों ओर आंगन के बगलों में मकान हैं।

्रिचिबिनायक-अमेठी के मन्दिर के पासहीं पश्चिमोत्तर एक कोठरी में काशी के ५६ विनायकों में से 'सिद्धिविनायक' हैं। से विख्यात एक कूप है। सन ई० की १७ वीं सदी में बादशाह औरंगजेब ने जब विश्वनाथ के पुराने मन्दिर को तोड़ दिया, लोग कहते हैं कि तब विश्वनाथ शिवलिंग इसीमें चले गए। कूप पत्थर की ट्टी से घरा हुआ है। इसके मुख पर लोहे की चादर दी गई है। यात्रीगण कूप में जल अक्षत आदि गिराते हैं। कूप के निकट एक पुजारी बैठा रहता है, जो यात्रियों के हाथ में पवित्र जल देता है।

का निवापी के पूर्वोत्तर मदान में पुराने नंदी के स्थान पर नैपाल के महाराज का दिया हुआ ७ फीट उंचा एक वड़ा 'नंदी' (बैल) है, जिसके पास एक च्यूतरे पर बहुत छीटे मन्दिर में 'गौरीशंकर' की मूर्ति है । शिव के बाम जंधे पर गणेश को गोद में लिए हुई पार्वती बैठी है। इस मन्दिर के मीचे 'तारकेश्वर' शिव का स्थान है, जो काशी के ४२ लिंगों में से और ११ महारुद्रों में से हैं। स्कंदपुराण—(काशीखंड—३३ वां अध्याय) 'ज्ञानोदय' तीर्थ के स्पर्श मात्र से सर्व पाप छुट जाता है और अश्वमेध का फल मिलता है। फल्गुतीर्थ में स्नान करके पितरों के तर्पण करने से जो फल मिलता है, ज्ञानोदय तीर्थ में श्राद्ध कर्म करने से वही फल होता है। कृष्ण अष्टमी गुरु पुष्य व्यतीपात योग में ज्ञानवापी के निकट पिंडदान करने से के।टि गया के श्राद्ध का फल मिलता है। शिवतीर्थ,

विश्वनाथ का मन्दिर—ज्ञानवापी से दक्षिण काशी के मन्दिरों में सबसे अधिक प्रख्यात विश्वनाथ शिव का मन्दिर है। और संपूर्ण शिवर्लिगों में विश्वनाथ अर्थात विश्वेश्वर शिव प्रधान हैं।

ज्ञानवापी, ज्ञानतीर्थ, तारकाख्य तीर्थ और मोक्षतीर्थ इसी का नाम है।

विश्वनाथ का शिखरदार मन्दिर ५१ फीट ऊंचा पत्थर का छन्दर बना हुआ है। मन्दिर के चारों ओर पीतल के किवाड़ लगे हुए एक एक द्वार हैं। मन्दिर के पश्चिम गुंबजदार जगमोइन और जगमोइन के पश्चिम इससे मिला हुआ 'दंडपाणीश्वर' का पूर्व मुख का शिखरदार मन्दिर हैं। इन मन्दिरों को सन ईं० की १८ वीं सदी में इंदौर की महारानी अहिल्या बाई ने बनवाया के पत्तर पर सोना का मुलम्मा है, जिसको लाहोर के महाराज रणजीतिसह ने अपनी अंत की बीमारी (सन १८३९) में दिलवाया। जगमोहन में कई देवमूर्तियां और ५ बड़े घंटे हैं।

मन्दिर के आंगन के पश्चिमोत्तर कोन के पास पार्वती अर्थात् नवगौरियों में से 'सौभाग्यगौरी' और गणेश का, पूर्वोत्तर कोन के पास भोग-अन्नपूर्णा अर्थात् नवगौरियों में से 'शृङ्गारगौरी' का, पूर्व दक्षिण 'अविसक्तेश्वर' का, और दक्षिण पश्चिम कोन के पास 'सत्यनारायण' (विष्णु) का मन्दिर हैं। उत्तर और दक्षिण के दालानों में वहुतेरे शिवलिंग और वेवमूर्तियां हैं। वंड-पाणीश्वर के मन्दिर के पश्चिम-दक्षिण पासही मैदान में 'श्वनेश्वरेश्वर' शिवलिंग हैं। आंगन का दरवाजा दक्षिण है, जिसके ऊपर गणेश की पीतल की मूर्ति और एक ओर चन्द्रमा और दूसरी ओर सूर्य्य हैं।

शिवपुराण—(८ वां खंड-१ ला अध्याय) शिव के १२ ज्योतिर्लिंग पूर्ण अंश्व से इन देशों में विराजमान हैं । (१) सौष्ट्र देश में सोमनाथ, (२) श्री शैल पर मिल्लिकार्जुन, (३) उज्जैन में महाकाल, (४) अमरेश, (५) हिमालय पर केदारेश, (६) डािकनी तीर्थ में भीमशंकर, (७) काशी में विश्वनाथ, (८) गौतमी के तट पर ज्यंवक, (९) चिता भूमि में वैद्यनाथ, (१०) दारुक बन में नागेश, (११) सेतुबंध पर रामेश्वर, और (१२) शिवग्रह में धुसुणेश ।

(काशीखंड के ९९ वें अध्याय में विश्वेश्वर की पूजा का विधान और माहात्स्य विस्तार से लिखा है) एक दिन शिवजी ने संसार के लाभ के निमित्त यह समझा कि ब्रह्मा ने हमारी आज्ञा से सृष्टि उपजाई तो सब ब्रह्मांड के जीव अपने अपने कमी में बंध रहेंगे वे हमारे रूप को क्यों कर जान सकेगें; ऐसा विचार शिव जी ने पांच कोश तक काशी को, जो अपने त्रिश्चल में उठा रक्ता था, धरती में छोड दिया और अपने लिंग अविमुक्त अर्थात् विश्वनाथ को भी काशी में स्थापित कर दिया और कहा कि काशी मलय में भी नष्ट न होगी। (छठवां खंड पांचवां अध्याय का द्वतांत पाचीन कथा में देखों)

(३८ वां अध्याय) विश्वनाथ के समान दूसरा छिंग नहीं है । इनके

'हरेश्वर' मंत्री, 'ब्रह्मेश्वर' बेद पुराण खनाने वाले, 'भैरव' कोतवाल, 'तारकेश्वर' धनाध्यक्ष, 'दंडपाणि' चोबदार, 'वीरेश्वर' भंडारी, 'दुंदिराज' अधिकारी और दुसरे सब लिंग विश्वनाथ के प्रजापालक हैं।

स्कंदपुराण—(काशीखंड-२१वां अध्याय)कार्तिक शुक्क १४ को विश्वेश्वर-यात्रा से भुक्ति मुक्ति फल मिलता है। (३९ वां अध्याय) माघकुष्ण १४ को अविमुक्तेश्वर-यात्रा से काशी वास का फल मिलता है।

्शिव की कचहरी—विश्वनाथ के मन्दिर से पश्चिमोत्तर शिव की कचहरी है। विश्वनाथ के आंगन के पश्चिम की खिड़की से जाना होता है, यहां एक मंडप में और इससे बाहर कई पंक्तियों में लगभग १५० शिवलिंग हैं। जिनमें 'धर्मराज' शिवलिंग प्रधान हैं। यहां के लिंगों में बहुतेरे लिंग बहुत पुराने हैं। इसी कचहरी में ५६ विनायकों में से 'मोदविनाक' 'प्रमोदविनायक' 'खुमुखविनायक' और 'गणनाथ विनायक' हैं।

अक्षयवट — विश्वनाथ के मन्दिर के फाटक से पश्चिम एक गली ढुंढिराज तक गईं है। पहले वाए' ओर 'शनिश्वर' का दर्शन होता है, जिनका मुखमंडल चांदी का है। नीचे शरीर नहीं है, कपड़ा पहनाया गया है। शनिश्चर से पश्चिम दाहिनी ओर एक आंगन के वगल के एक मकान में 'महाबीर जी' और कोने के मकान में 'अक्षयवट' नामक एक बट दृक्ष है, जिसको यात्री लोग अंकमाल करते हैं।

यहां काशी के १२ आदित्यों में से 'द्रपदादित्य' और एकादश महारुद्रों में से 'नकुळेश्वर' हैं।

अञ्चर्णा—अक्षयवट से पश्चिम गली के बाएं 'अञ्चर्णा' का मन्दिर है। पूना के पहले वाजीराव पेशवा ने सन १७२५ ई० में वर्त्तमान मन्दिर को बनवाया था। आंगन के मध्य में एक उत्तम मन्दिर है, जिसमें चांदी के सिंहासन पर अञ्चर्णा की पीतलमयी मूर्त्ति पश्चिम मुख से बैटी है। मन्दिर के पश्चिम मुन्दर जगमोहन है। आंगन के चारों बगलों पर दो मंजिले दालान और जगह

जगह मन्दिर हैं। पूर्वोत्तर लिंग स्वरूप 'कुवेर', पूर्व-दक्षिण 'सूर्य्य', दक्षिण-पश्चिम 'गणेश', पश्चिम 'विष्णु', पश्चिमोत्तर 'महावीर' और एक वड़े मन्दिर में 'यंत्र-मंत्रेश्वर' शिवलिंग हैं।

शिवपुराण—(६ वां खंड-१ ला अध्याय) शिवजी विश्वनाथ के समीप पहुंचे और उन्होंने मणिकर्णिका में स्नान करके विश्वनाथ जी का दर्शन किया। गिरिजापित काशी में स्थित हुए और उन्होंने काशी को अपनी राजधानी बनवाया। गिरिजा भी काशी में रह गई, जो 'अन्नपूर्णेश्वरी' देवी के नाम से प्रसिद्ध हुई।

रकंदपुराण—(काशीखंड-६१ वां अध्याय) चैत्र शुक्त ८ और आश्विन शुक्त ८ के दिन अन्नपूर्णा के दर्शन पूजन करके १०८ परिक्रमा करने से पृथ्वी-परिक्रमा का फल मिलता है।

दुंढिराज गणेश—अन्नपूर्ण के मन्दिर से पश्चिम गली के वाएं बगल पर कोटिरियों में बहुत शिवलिंग और देवमूर्तियां हैं। जिससे थोड़ाही पश्चिम गली के मोड़ पर दाहने ओर एक छोटी कोटरी में काशी के मिसद्ध देवताओं में से एक 'दुंढिराज' गणेश हैं। इनके चरण, सुड, ललाट और चारों भुजाओं पर चांदी लगी है।

ंगणेशपुराण—(उत्तर त्वंड-४८ वां अध्याय) राजा दिवोदास के काशी छोड़ने पर शिव जी ने काशी में आकर छन्दर बने हुए मन्दिर में गंडकी के पाषाण से बनी हुई ढुंढिराज जी की मूर्ति की स्थापना की ।

स्कंदपुराण—ं(काशीखंड ५७ वां अध्याय) व्याकरण शास्त्र में 'ढुढि अन्वेषणे' धातु कही हैं; अतएव समस्त अर्थें। के अन्वेषण करने के कारण 'ढुंढिराज' यह नाम हुआ।

माय ग्रुक्त ४ को ढुँढिराज के पूजन से आवर्ष विवृ की निष्टत्ति होती है और काशीबास का फल मिलता है।

+ दंडपाणि-हुंदिराज के पास से उत्तर जो गली गई है, उसके वाएं एक

कोठरी में 'दंडपाणि' खड़े हैं, जिनके दाहने बाएं 'शुभ्रम' 'विश्रम' दो गण खड़े हैं और आगे कई लिंग हैं।

शिवपुराण—(६ वां खंड २ रा अध्याय) शिव जी ने आनंद बन में हिरिकेश नामक तपस्त्री को वरदान दिया कि काशीपुरी की तम रक्षा करो और शत्रुओं को दंड दो। तम दंडपाणि के नाम से प्रसिद्ध होगे। उस दिन से दंडपाणि काशी में स्थित रहते हैं। बीरभद्र ने दंडपाणि का अनादर किया, इससे उनको काशी का बास न मिला। वे दूसरे स्थान पर जा रहे। अगस्त स्रुनि को भी दंडपाणि की सेवा न करने से काशी छोड़ देनी पड़ी।

√ स्कंदपुराण—(काशी खंड–३२ वां अध्याय) यह अन्न, मोक्ष और ज्ञान
का दाता है। (वंडपाणि के प्रादुर्भाव की कथा शिवपुराण की कथा के समान
यहां भी है)

े पुराने विश्वेश्वर—इनको 'आदि विश्वेश्वर' भी कहते हैं। ज्ञानवापी के पास के औरंगजेब वाली मसजिद से पश्चिम की ओर कारमाइकल लाइब्रेरी से पश्चिमोत्तर सड़क के पास पुराने विश्वेश्वर का बड़ा मन्दिर है। मन्दिर में मार्बुल का फरस है। पीतल जड़े हुए हौज में ऊंचे अर्घे पर छोटा शिवलिंग है।

कोतवाली टोला में 'ईशानेश्वर' और काशी के ५६ विनायकों में से 'गजकण विनायक' हैं।

औरंगजेब मसजिद—ज्ञानवापी से थोड़ी दूर उत्तर यह मसजिद है। बादशाह औरंगजेब ने विश्वनाथ का बड़ा मन्दिर तोड़ कर उसके सामान से यह मसजिद बनवाई, विश्वनाथ के पुराने मन्दिर का एक हिस्सा मसजिद में लगा हुआ इसके पीछ देख पड़ता है। मसजिद के आगे नकाशीदार खंभे जो लगे है, वे मन्दिरही में पहले लगे थे। एक बगल से मसजिद में जाने का रास्ता है।

े **लांगलीश्वर**—औरंजेव मसजिद से उत्तर खोवा बाजार में 'प्रचपांडव' के आगे मन्दिर में काशी के ४२ लिंगों में से 'लांगलीश्वर' नामक मोटा और ऊंचा शिवलिंग है। ने काशी करवट—एक गली के किनारे पर एक आंगन में स्रवे कूप में शिविलिंग है। लिंग के पास जाने के लिये एक मार्ग है, जो नियत समय पर खुलता है। यात्री लोग ऊपरही से शिविलिंग पर जल अक्षत आदि गिराते हैं। कूप के पास बहुतेरे लोग करवट देते हैं और भीत पर फूल से अपना नाम लिखते हैं। यहां का पुजाड़ी दक्षिणा लेकर यात्रियों को सफल बोलता है।

काशी करवट से दक्षिण कुछ दूर जाने पर विश्वनाथ जी के दक्षिण कालिका गली के सामने काशी के ११ महारुद्रों में से 'मदालतेश्वर' एक मकान के छोटे मन्दिर में हैं। आगे कालिका गली में 'चंडी चंडीश्वर' एक छोटे मन्दिर में हैं। उसी गली में आगे जाने पर एक मन्दिर में ९ दुर्गाओं में से 'कालरात्री' दुर्गी कालिका जी के नाम से प्रसिद्ध हैं। यहांसे कुछ दूर आगे पश्चिम 'शुक्रकूप' और काशी के ४२ लिंगों में से 'शुक्रश्वर' हैं। काशी खंड के १६ वें अध्याय में लिखा है कि शुक्रवार को शुक्रेश्वर के पूजन से ख्रमंतान मिलती है। शुक्रेश्वर से पश्चिम थोड़ी दूर पर 'भवानी शंकर' शिवलिंग और काशी की ९ गौरियों में से 'भवानी' गौरी हैं। भवानी शंकर से पश्चिम एक मकान में काशी के ५६ विनायकों में से 'ग्रीतिकेश्वर' हैं। यहांसे पश्चिमोत्तर ढुंढिराज से पश्चिम एक मकान में 'पंचमुली गणेश' हैं। ढुंढिराज के पश्चिम फाटक के पास एक बड़े शिवाले के एक कोटरी में काशी के ५६ विनायकों में से 'यद्वविनायक' हैं, जिससे पश्चिम ओर सड़क पर एक छोटे मन्दिर में 'समुद्रेश्वर' और इनसे उत्तर सड़क की गली में 'इंशानेश्वर' हैं।

ईशानेश्वर से पूर्वोत्तर और कारमाइकल लाइब्रेरी से पश्चिमोत्तर सड़क के निकट 'पुराने विश्वेश्वर' का मन्दिर जयपुर के राजा मानसिंह का बनवाया हुआ है। मन्दिर में मार्बुल का फर्स है। पोतल जड़े हुए हौज में ऊंचे अर्धे पर छोटा शिव्वर्लिंग है।

आदि विश्वेश्वर से उत्तर चांदनी चौक में काशी के ५६ विनायकों में से 'चित्रबंट विनायक' हैं। यहांसे उत्तर चंद् नाऊ की गली में काशी की ९ दुर्गाओं में से 'चित्रघंटा' दुर्गा हैं। यहां चैत्र शुक्क तृतीया और आश्विन शुक्क तृतीया को दर्शन पूजन का मेला होता है। काशीखंड के ७० वें अध्याय में लिखा है, कि जो चित्रघंटा देवी का दर्शन करता है, उस मनुष्य के पातक को चित्रगृप्त नहीं लिखते हैं।

गली के बाहर पूर्व कुछ दक्षिण दुर जाने पर एक छोटे मन्दिर में काशी के अष्ट महालिंगों में से अनगढ चिपटा 'पशुपतीश्वर' शिवलिंग है। मन्दिर में मार्बुछ का फर्म लगा है, बाहर चारों ओर बहुत देवता हैं।

्रस्कंदपुराण—(काशीखंड-६१ वां अध्याय) चैत्र शुक्क चतुर्वशी को पशुपतीश्वर के दर्शन पूजन करने से यमराज का भय छुट जाता है।

पशुपतीश्वर से पूर्व-दक्षिण कश्मीरी मल की हवेली के सामने सीतला गली में एक अंधियारे गड़हे में 'पितामहेश्वर' हैं । इनका दर्शन वर्ष भर में केवल एक दिन शिवरात्रि को होता है। इस स्थान से थोड़ी दूर पूर्व कलग्रेश्वरी की ब्रह्मपुरी में 'कलग्रेश्वर' और 'कलग्रेश्वरी' के मन्दिर हैं। यहां एक कूप 'कलग्रकूप' करके प्रसिद्ध है। कलग्रेश्वर से पश्चिमोत्तर नंदनशाह के महल्ले में 'परशुरामेश्वर' महादेव जी का मन्दिर है। पांच सात सीढ़ी के नीचे पीतल के हौज में परशुरामेश्वर शिवलिंग हैं। परशुरामेश्वर से उत्तर ठठेरी बाजार के कोने पर गड़हे में 'सत्यकालेश्वर' महादेव हैं।

गोपालमंदिर—सत्यकालेश्वर से पूर्व चौखंभा महल्ले में बल्लभ संप-दाय वालों का गोपालमन्दिर काशी में प्रसिद्ध है। मन्दिर लंबा चौड़ा राजसी मकान के समान पूर्व मुख का है। पत्थर की लंबी सीढ़ियों से मन्दिर में जाना होता है।

श्री गोपाललाल जी के चौक के उत्तर एक दूसरे चोक में श्री मुक्दुंदराय जी विराजते हैं। इन मन्दिरों के पूर्व समीपही में मन्दिर के मालिक गोस्वामी श्री जीवनलाल बाबा विराजते हैं। मन्दिर का पट नियत समय में ख़ुलता है। दर्शक गण द्वार से बाहर एकत्र होते हैं। श्रीगोपाललाल की झांकी मनोहर होती है। श्रावण में झूलनोत्सव बड़े धूम धाम से होता है। बल्लभ संप्रदाय के

लोग बाल गोपाल की आराधना करते हैं। उत्सवों के समय में बालकों के प्रिय बहुत प्रकार के खन्दर बहुमूल्य खिलौने रक्तवे जाते हैं। सबसे बड़ा उत्सव जन्माष्ट्रमी को होता है, जिसके दूसरे दिन वड़े धूमधाम से दिधकांदो होता है। कार्तिक शुक्त प्रतिपदा को अलकूट होता है। संध्या समय गोवर्धन पर्वत बना कर पूजा जाता है और रात्रि में बहुत प्रकार की वस्तु भाग लगाई जाती हैं।

काशी में गोपालमन्दिर के अतिरिक्त बल्लभ संप्रदाय वालों के निम्न लिखित मन्दिर उत्तम हैं (१) गोपालमन्दिर के सामने पूर्व रणिलार जी का मन्दिर (२) बड़े महाराज जी का मन्दिर (३) बड़े महाराज जी के मन्दिर से उत्तर बलदेव जी का मन्दिर (४) बलदेव जी से पूर्व भाट के महल्ले में दाजजी का मन्दिर।

गोपालमन्दिर के पश्चिमात्तर सिद्धिमाता की गली में काशी की ९ दुर्गाओं में से 'सिद्धिदा दुर्गा' सिद्धिमाता के नाम से प्रसिद्ध हैं। दाऊजी के मन्दिर से पूर्व कुछ दूर एक गुजराती के मकान में 'आदि विंदुमाधव' जी की मूर्ति है, जिससे पूर्वोत्तर थे। इी दुर पर एकही मन्दिर में 'आमर्वकेश्वर' और 'कालमाधव' जी हैं। जिनसे उत्तर 'पापभक्षेश्वर' महादेव हैं।

मधुवनदास द्वारिकादास की धर्मशाला—भैरववाजार में माधा-दास सामिया की गली के वगल पर काठ की हवेली के पास ही यह धर्मशाला संवत १९४१ की बनवाई हुई है। नीचे के मंजिल में ६ कमरे और दा बगल दालान, दुसरे मंजिल में ७ कमरे और २ दालान, तीसरे मंजिल में ७ कमरे और चौथे मंजिल में सिरिफ एक बंगला है।

कालभैरव-इनको 'भैरवनाथ' भी लोग कहते हैं। भैरवनाथ महल्ले में शिखरदार मन्दिर में सिंहासन के ऊपर 'कालभैरव' की पाषाण-प्रतिमा है। इनके मुख्मंडल और चारों हाथों पर चांदी लगी है। मन्दिर के द्वार तीन ओर हैं। मन्दिर और जगमाहन दोनों में श्वेतऔर नील माबुल का फरस है। दरवाने के बाएं ओर पत्थर का एक वड़ा कुत्ता और दोनों ओर सोटे लिए हुए दे। द्वारपाल खड़े हैं। आंगन के चारों बगलों पर पक्के दालान हैं। आगे बड़ा महाबीर, दाहने दालान में योगेश्वरी, जो काली करके प्रसिद्ध है और महाबीर की बड़ी बड़ी पूर्तियां हैं। आंगन का एक दरवाजा मन्दिर के आगे दूसरा मन्दिर के पीछे हैं। पीछे वाले दरवाजे से बाहर एक छोटे मन्दिर में क्षेत्रपाल भरव की पूर्ति है। कालभैरव के वर्तमान मन्दिर को सन १८२५ ई० में पूना के बाजीराव पेशवा ने बनवाया था। यहां के पुजाड़ी मोरपंख के सोटे से बहुतेरे यात्रियों की पीठ ठोकते हैं। कालभैरव को कोई कोई मद्य भी चढ़ाता है। इनकी सवारी कुत्ता है। ये पापी लोगों को दंड देने वाले काशी के कोतवाल हैं। अगहन कुष्णाष्टमी को भैरव के दर्शन की बड़ी भीड़ होती है।

शिवपुराण—(७ वां खंड-१५ वां अध्याय) ब्रह्मा और विष्णु के प्रस्पर झगड़े के समय दोनों के मध्य में एक ज्योति नकट हुई। जिसको देख ब्रह्मा ने अपने पांचवें मुख से कहा कि है विष्णु इस ज्योति में किसी मनुष्य का स्वरूप दिखाई देता है। इतने में एक मनुष्य नील लोहित बरण चंद्रभाल त्रिशूल हाथ में लिए सपेंं का भूषण बनाए देख पड़ा। ब्रह्मा ने कहा कि तुम तो हमारे श्रूमध्य से उपजे हुए रुद्र हो, हमारी शरण में आओ, हम तुम्हारी रक्षा करेंगे। ब्रह्मा का ऐसा गर्व देख कर शिवजी ने महाकोप करके भैरव को उत्पन्न किया और कालराज, कालभैरव, पापलक्षण आदि नाम उसका रक्खा। भैरव ने अपनी बाई उंगली के नख से ब्रह्मा का पांचवां शिर काट लिया (१६ वां अध्याय) ब्रह्महत्या शिव से पकट होकर भैरव के पीछे पीछे दौड़ने लगी (१७ वां अध्याय) भैरव ब्रह्मा का सिर हाथ में लेकर सब देशों की परिक्रमा कर जब काशी में आए तब ब्रह्महत्या पृथ्वी के नीचे चली गई। भैरव के हाथ से ब्रह्मा का सिर धरती में गिर पड़ा, उसी स्थान का नाम कपालमोचन तीर्थ हुआ।

† मार्गशीर्ष कुष्णाष्ट्रमी को भैरव का जन्म हुआ। उसी तिथि को भैरव का बत होता है। अष्टमी, चतुर्वशी और रविवार को भैरव के दर्शन पूजन से बड़ा फल मिलता है। स्कंदपुराण—(काशी खंड-३१ वां अध्याय) (शिवपुराण की उर्ध लि-खित मैशव के जन्म की कथा यहां भी हैं) मागशीर्ष कृष्णाष्ट्रमी कालभैरव के जन्म का दिन है। उस दिन कालभैरव के दर्शन, पूजन और वहां जागरण और दीप दान करने से सब पाप छुट जाता है और वर्ष पर्यन्त किसी काम में विघू नहीं होता। और इस तिथि में कालकूप और कालभैरव यात्रा से कलि-काल का भय छुट जाता है।

(३० वां अध्याय) रविवार, मंगलवार और शिवरात्रि को कालभैरव के दर्भन पूजन तथा ८ परिक्रमा करने से सब पाप छुट जाता है।

(६१ वां अध्याय) मार्गशीर्ष शुक्त ११ को कालमाधव के पूजन करने से कालिकाल का भय निष्टत्त होता है।

(८४ वां अध्याय) भौमाष्टमी को भैरवतीर्थ में स्मान और भैरव के पूजन करने से कलिकाल का भय निष्टत्त होता है।

कालदंड—कालभैरव के मन्दिर से पूर्व एक गली में 'नवग्रहेश्वर' और 'व्यतीपातेश्वर' हैं। यहां से पूर्वोत्तर एक मन्दिर में 'कालेश्वर' शिवलिंग और है हाथ ऊंचा 'कालदंड' हैं। कालदंड का मुखमंडल धातुमय है। दीवार के पास 'काली' की मूर्ति है, जिसके निकट 'कालकूप' नामक एक कूप है, जिसमें दीवार के छेद से प्रकाश रहता है।

चिताघाट (२३)—मणिकणिका घाट से दक्षिण-पश्चिम 'चिताघाट' है। इस घाट पर मुर्दे जलाए जाते हैं। आग डोम के घर से लाई जाती है। डोम बड़ा धनी है, क्योंकि कोई कोई उसको सैकड़ों रुपये फीस दे देता है। यहां सती ख्रियां और उनके पितयों के यादगार में (स्मरणार्थ) हाथ पकड़े हुए पुरुष और ख्रियों की पत्थर की अनेक मूर्तियां हैं। घाट से ऊपर 'राजा बल्लभ शिवाला' नामक एक पुराना सुंदर बड़ा मन्दिर है, जिसके चारो ओर ४ बुर्ज हैं मन्दिर के पश्चिम अधवना उजड़ा हुआ उमराविगरि का पुस्ता है।

पास की इमास्त गोसाई भवानी गिरि की बनवाई हुई है। यहां 'राजराजेश्वरी जी' का मन्दिर है।

ळाळिता घाट (२४)—लिलतातीर्थ पर साधारण लिलताघाट हैं। घाट से ऊपर काशी की ९ दुर्गाओं में से 'लिलता देवी' का मन्दिर हैं। जहां आश्विन कृष्ण दितीया को दर्शन पूजन का मेला होता है। इस मन्दिर में पूर्व ओर 'काशी देवी' हैं। मन्दिर के बाहर सीढी से ऊपर जाकर आगे नीचे उतरने पर 'गंगाकेशव' का मन्दिर मिलता है, जिसके बाहर एक चबूतरे पर काशी के १२ आदित्यों में से 'गंगादित्य' हैं। घाट से ऊपर गली में 'त्रिसंधेश्वर' का मन्दिर हैं, जिससे पूर्वोत्तर एक दालान की कोठरियों में 'मोक्षेश्वर' और काशी के ४२ लिंगों में से 'करणेश्वर' शिवलिंग हैं। इस मन्दिर से पश्चिम लाहीरी टोले में काशी के ४२ लिंगों में से 'इतनेश्वर' शिवलिंग एक स्वत्री के मकान में हैं।

स्कंदपुराण—(काशीखंड-७० वां अध्याय) आश्विन कृष्ण दितीया को लिलता देवी के दर्शन पूजन करने से सौभाग्यफल मिलता है (९४ वां अ-ध्याय) प्रतिमास के सोमवार को करुणेश्वर की यात्रा करने से काशीबास का फल मिलता है।

नैपाली मन्दिर—लिलताघाट से ऊपर नैपाली शिवमन्दिर दर्शनीय है। इसकी शकल चीन के मन्दिरों के ढंग की है। मन्दिर के शिरोभाग पर दोहरा चौर्यूटा और ऊपर मुलम्मेदार कलस है। छाजे के किनारों पर तोरण के समान घंटियां लटकाई गई हैं, जो हवा से बजती हैं। मन्दिर के आगे बड़ा नंदी है। मन्दिर के निकट नैपाली यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्म-शाला है। इस ढाचे का मन्दिर काशी में दुसरा नहीं है।

मीरघाट (२६)—यहां 'विशाल तीर्थ' है। इस घाट की पत्थर की सी-दियां सादी हैं जो ऊपर और इसके पास वाले मन्दिरों तक गई हैं। घाट की नेव के पास पूर्व समय की सितयों के स्मारक विन्द हैं। घाट के उत्तर मीर अली नत्वाब का पुस्ता है, जिसके निकट की कोटरियां टूट फूट गई हैं। धर्मकूप-पीरघाट से ऊपर छोटे छौटे पन्दिरों और दीवार से घेरा हुआ काशी के पवित्र कूपों में से 'धर्मकूप' है। घेरे के बाहर कूप से पश्चिम 'विश्वबाहुका' देवी का पन्दिर हैं। इसी पन्दिर में 'दिमोदासेश्वर' शिवर्लिंग हैं। धर्मकूप से दक्षिण काशी के ४२ लिंगों में 'धर्मेश्वर' का मन्दिर है। धर्मकूप से दक्षिण-पश्चिम काशी की नव गौरियों में से 'विशालाक्षी गौरी' का मन्दिर है। यहां भादों की कृष्ण ३ को दर्शन की भीड़ होती है।

धर्मेश्वर के दर्शन का मेला कार्तिक शुक्त ८ को होता है। घाट के निकट ऊपर एक मन्दिर में काशी के ५६ विनायकों में से 'आशाविनायक' हैं। इस मन्दिर में महाबीर जी की विशाल मूर्ति और दूसरी बहुतेरी देवमूर्तियां हैं। सामने एक मकान में काशी के १२ आदित्यों में से 'दृखादित्य' हैं। गली में 'आनंद भैरव' का मन्दिर है।

रकदंपुराण—(काशीखंड-७० वां अध्याय) भाद्र कृष्ण तृतीया को 'बिशाल तीर्थ' की यात्रा और 'विशालाक्षी' के पूजन करने से काशीवास का फल होता है। आश्विन के नवरात्र में नवों दिन 'विश्ववाहुका' देवी के दर्शन पूजन करने से सकल मनोरथ सिद्ध होते हैं।

(७८ वां अध्याय) कार्तिक शुक्त ८ को धर्मकूप में स्नान और धर्मेश्वर के दर्शन करने से सर्व धर्म करने का फल मिलता है।

(८० वां अध्याय) चैत्र शुक्क ३ को धर्मकूप में स्तान और धर्मेश्वर, आशा विनायक, और 'विश्वबाहुका' देवी के दर्शन पूजन और व्रत करने से मनोरथ सिद्ध होता है।

े मानमन्दिर घाट (२७)—अनुमान ३०० वर्ष से कम हुए, आंबेर के राजा मानसिंह ने इस घाट को बनवाया था।

घाट से ऊपर एक बड़े पीपल के पेड़ के दक्षिण ३ छोटे मन्दिर हैं। और उत्तर एक बड़े मन्दिर में 'दालभ्येश्वर' शिवलिंग हैं। निवर्षण के समय वर्षा होने के लिए इनका हौज पानी से भरा जाता है। मन्दिर के उत्तर एक मन्दिर में 'सोमेश्वर' इससे उत्तर के मन्दिर में 'सेतुबन्ध रामेश्वर' शिवलिंग है। घाट से ऊपर 'लक्ष्मीनारायण', काशी की ६४ योगिनियों में से 'बाराही' और सोमेश्वर के द्वार पर काशी के ५६ विनायकों में से 'स्थूलदन्तिविनायक' हैं। स्कंदपुराण—(काशी खंड-६९ वां अध्याय) प्रतिमास की नवमी तिथि को काशी के सेतुबंध रामेश्वर का दर्शन और पूजन करना चाहिए।

ेमानमन्दिर—यह मकान आंबेर के राजा मानसिंह का बनवाया हुआ गङ्गा के किनारे के मकानों में सबसे पुराना है। गङ्गा की ओर से यह मकान बहुत अच्छा देख पड़ता है। आंगन के चारों ओर कमरे हैं। गङ्गा की ओर का कमरा बहुत खन्दर है। इसमें पूर्व और पश्चिम पांच पांच और उत्तर और दक्षिण दो दो दार हैं। छत पर जाने के छिए पश्चिम-दक्षिण के कोने में सीढ़ियां हैं।

छत के जपर आंबेर के राजा मान सिंह के कुछ के सवाई जयसिंह के बनवाए हुए आकाश के ग्रह और नक्षत्रों के बेधने के छिए यंत्र बने हैं। दिछी के महम्मदशाह ने, जिसने सन १७१९ से १७४८ ई० तक राज्य किया, सवाई जयसिंह को, जिसने सन१७२८ ई० में जयपुर शहर की बसाया, ज्योतिष विद्या की उन्नति के छिए उत्साहित किया था। सवाई जयसिंह ज्योतिष विद्या में बड़े प्रसिद्ध थे, उन्होंने बनारस, दिछी, मथुरा, उज्जैन और जयपुर में 'अब-जरबेटरी, बनाया था।

१ याम्योत्तर भित्ति-यंत्र अर्थात मध्यान्ह में उन्नतांश नापने के लिए भितिस्थ दो तुरीय यंत्र—छत के ऊपर जाने पर पहला यंत्र, जो दर्शकों को मिलेगा, यह याम्योत्तर भित्ति-यंत्र है। यह ईंट चूना और पत्थर से बनी एक
दीवाल है, जो ज्यामोत्तर दृत्त के धरातल में उठाई गई है (याम्योत्तर रेखा
उस भूमध्य रेखा का नाम है, जो किसी स्थान विशेष से होकर उत्तर-दक्षिण
ध्रुवों से होती हुई गई हो।) इस दीवाल की जंवाई ११ फीट, छंबाई ९ फीट
१५ इंच और चौड़ाई (अथवा भीत की मोटाई) १ फूट ; इंच है। इसका पू
धीय भाग अति उत्तम चूने के पलस्तर से बहुत विकना बनायां गया है।
इसके ऊपरी भाग में लोहे की दो खंटियां दोनों तुर्थ दृत्तों के केंद्र में दीवाल के

धरातल पर लंब रूप गड़ी हैं। ये भूमि से १० फीट ४। इंच और आपस में (एक दूसरी से) ७ फीट ९। इंच की दूरी पर हैं। बिंदुओं के परस्पर अन्तर को व्यासार्क्ड अर्थात जिज्या मान कर एक दूसरे को मध्य में काटते हुए, वे दोनो चतुर्थांश दृत्त खोंचे हैं; फिर उन्ही विंदुओं के। केंद्र मान, इन चतुर्थांश दृत्तों के बाहर, एक हीं केंद्र पर, तीन और चतुर्थांश दृत्त ऐसे बनाए हैं, और इस रीति से समान भागों में विभक्त हैं कि पहिले दृत्त-खंड का एक भाग दूसरे के ६ भागों के तुल्य है; और दूसरे दृत्त-खंड का एक अंश, तीसरे के ६ भागों के बराबर है।

जब सूर्य याम्योत्तर द्वत पर आता है, तब द्वत-खंड का वह भाग, जिस पर खूंटी की छाया पड़ती है, नीचे से गणना करने से जितने अंश हों, वह मध्यान्ह के समय, सूर्य का मध्य जनतांश, और उत्पर से गणना करने से मध्यनतांश अर्थात स्वस्तिक से सूर्य के अंशात्मक का मान होता है। (जनतांश, और नतांश आपस में, एक दूसरे की कोटि होते हैं, अत एव एक को नब्बे अंश में घटा देने से दूसरा सहजहीं ज्ञात हो जाता है) काशी में सूर्य स्वस्तिक के के उत्तर कभी नहीं आता, इसिलए सूर्य का मध्य जनतांश और नतांश जानने के अर्थ केवल वही दृत्त-खंड जपयोगी होगा, जिसका केंद्र दक्षिण की ओर है। और यही दृत्त-खंड जन प्रहों और नक्षत्रों का मध्य जनतांश भी बतादेगा, जो स्वस्वस्तिक के दक्षिण की ओर हो कर जाम्योत्तर दृत्त पर आते हैं। और इस का दृत्त-खंड, जिसका केंद्र जत्तर की ओर है, स्वस्वस्तिक के उत्तर की ओर हो कर याम्योत्तर दृत्त से जाने वाले ग्रह और नक्षत्रों का जनतांश पूर्व युक्ति से विदित करावेगा। और जहां आकाश परमा क्रांति से अल्प हो, वहां जब सूर्य मध्यान्ह में स्वस्वस्तिक से उत्तर होगा, वहां रिव का मध्य नतोन्नतांश वतावेगा।

इस यंत्र द्वारा सूर्य की सबसे बड़ी क्रांति अर्थात परमाक्रांति (झुकाव) और किसी स्थान बिशेप के निरक्ष (नाड़ी मंडल) से अक्षांश नीचे लिखे री-त्यनुसार जाने जाते हैं। याम्योत्तर मितिसंज्ञक यंत्र से प्रत्यह वेध कर मध्यान्ह में सूर्य का सबसे अधिक और सबसे न्यून नतांश का ज्ञान करो। अब इस सर्वाधिक और सर्व न्यून नतांश के अंतर का आधा करो, वहीं सूर्य की परमा क्रांति होती है। इस आधे को सूर्य के सर्वाधिक नतांश में घटा दो, अथवा सर्व न्यून नतांश में जोड़ दो तो, वहीं उस स्थानविशेष का अक्षांश होगा। जब जत्तरायण और सर्व न्यून नतांश स्वस्वस्तिक से उत्तर हो तो पूर्व युक्ति से जो परमा क्रांति निकले, उसे अक्षांश और अक्षांश को परमा क्रांति आती है। महाराज जयसिंह ने इस यंत्र-द्वारा सूर्य की सबसे बड़ी क्रांति २३ अंश और २८ कला निकाली थी।

किसी स्थान के अक्षांश और मध्य नतांश विदित हो जाने पर सूर्य की कांति वड़ी सरछता से इस भांति जानी जाती है। मध्यान्ह के समय स्व-स्वस्तिक से दक्षिश नतांश और स्थानविशेष के अक्षांश का अंतर निकालो। यही अंतर उस मध्यान्ह के समय सूर्य की क्रांति होगी। यदि दक्षिण नतांश के अंश अक्षांश के अंश से कम हों तो उत्तरा क्रांति, और यदि दक्षिण नतांश के अंश अक्षांश से अधिक हों तो दक्षिणा क्रांति होगी। और यदि म-ध्यान्ह का उत्तर नतांश है। तो अक्षांश और नतांश के येग के समान उत्तरा क्रांति होगी। इस भंति क्रान्ति विदित होने पर क्रान्ति और परमा क्रान्ति के वश्व से चापीय त्रिकोण मिति से उस स्थान का भुजांश भी सहजहीं ज्ञात है। सकता है।

इसीके पूर्व उसके समीपहीं एक वर्त चिकना स्थान था, जो अब थोड़ा बहुत खुदबुदहा हो गया है। इसकी चौड़ाई दीवाल की चौड़ाई के समान और लंगाई १० फीट ३ इंच है। दीवाल वाली प्रति खूंटियों के ठीक ठीक पूर्व इस खुदबुदहे स्थान के पूर्व वाले प्रतिकोण में एक एक खूंटी थीं, जिनके शिरों पर एक एक छेद था, इनमें से दक्षिण वाली खूंटी निकल गई है, परंतु उत्तर वाली अभी ज्यें की त्यें। वर्तमान है। इन खूंटियें। के बल से दिक्शोधन कर रिव का दिगंश ज्ञान होता था।

इसी स्थान के निकट एक चूने का द्वत्त बना है, जिसका व्यास २ फीट ८ इंच है; और एक पत्थर का द्वत्त भी है, जिसका व्यास ३ फीट ५ इंच है। और उसीके समीप एक पत्थर का वर्गक्षेत्र वना है, जिसके प्रति भुज २ फीट २ इंच के बरावर हैं। ये देाना हत्त और बर्गक्षेत्र पलभा और दिगंश कोटि (अस्मिंमत्) के अंश जानने के अर्थ बनाए हुए हैं; परंतु अब सब चिन्ह, जो इन पर बनाए गए थे, मिट गए हैं।

(दिगंशकोटि दिगमंडल और याम्योत्तर मंडल से उत्पन्न कोण को कहते हैं। यह कोण क्षितिज में नापा जाता है। खब्बस्तिक और अधःस्वस्तिक में लगा हुआ, ग्रह के केन्द्र पर जाने वाले महद्बृत्त को दिग्मंडल कहते हैं।)

२ इस यंत्र से कुछ पूर्व का भाग लिए उत्तर की ओर एक बहुत बड़ा यंत्र है, जिसका यंत्रसम्राट अर्थात यंत्रों का राजा कहते हैं। इसमें चूने और ईंट के बने २ दीवाल हैं, जो यामात्तर दृत्त के धरातल में उत्तर ध्रुव की उंचाई अर्थात काशी की अक्षांश तुल्य उंचाई पर उठाए गए हैं। और इनके बीच में ऊपर तक जाने के अर्थ पत्थर की सीढ़ियां बनी हैं। इन दोना दीवालों की चौड़ाई (सीढ़ी का भी मिलाकर) ४ फीट ६ इंच और लम्बाई ३६ फीट है। इन दीवालों का ऊपरी भाग चिकना पत्थर का ढालुआं फर्ज किया हुआ है और उत्तर ध्रुव उसके धरातल में देखा जाता है। अक्षांश तुल्य उंचाई करने के लिए इस दीवाल का दक्षिणी किनारा ६ फीट ४ ई इंच और उत्तरी किनारा २२ फीट ३३ इंच जंचा है। इन दोना दीवालों की धूपघटी की सई अर्थात शंकु कहते हैं। इस शंकु के दोने। ओर अर्थात पूर्व और पश्चिम दोने। किनारे नाड़ी मंडल के धरातल में एक एक दृत्त खंड हैं, जा चतुर्थाश दृत्त से कुछ बड़े काश्री के परम दिनमानार्द्ध के तुल्य हैं। इनकी चौड़ाई ५ फीट ११ इंच और मुटाई ७६ इंच है। प्रति वृत्त-खंड के देनों किना में पर इस भाति चिन्ह किए हैं कि पति घटी ६ अंश के समान है और ६ तुल्य तुल्य भागें। में विभक्त है। इस छठवें खंड की चौड़ाई २ इंच है। इन वृत्तखंड़ों के केन्द्र शंकु के ऊपरी किनारे उत्तर ध्रुव पर हैं और केन्द्र का ठीक ठीक स्थान जानने के अर्थ उस स्थान में एक एक छोहे की कड़ी लगी हुई है। मत्येक दत्तवंड के नीचे वाले किनारे की त्रिज्या वा व्यासार्छ ९ फीट ८ ईच है।

इस यंत्र में पश्चिम वृत्तखंड के वह भाग, जहां शंकु की छाया पड़ती है, 'पूर्वनतघटी' अर्थात मध्यान्ह होने में कितना बाकी है, उस समय को; और पूर्व वृत्तखंड के वह भाग, जहां शंकु की छाया पड़ती है, 'पश्चिम नतघटी' अर्थात मध्यान्ह हो जाने पर जो समय है, उसको बताते हैं। शंकु-छाया ठीक ठीक वेखने के अर्थ प्रति दृत्तखंड के दोनो किनारों में पत्थर की सीढ़ियां बनी हैं। परंतु अब दृत्तखंडों के ऊपरी भाग के प्रायः एक इंच नीचे की ओर झुक जाने के कारण शंकु की छाया से जाना हुआ समय ठीक ठीक नहीं होता।

शंकु की छाया चंद्रमा से उतनी स्पष्ट नहीं पड़ती, जितनी कि सूर्य से पड़ती है। और दूसरे ग्रह और नक्षत्रों की छाया जान नहीं पड़ती। अतएव चंद्रमा, ग्रह और नक्षत्रों की 'नतघटी' (मध्यान्ह से समय की दूरी) नीचे स्किबे रीत्यनुसार जानी जाती है।

लोहे के किसी तार वा एक सुधी निलका को इस भांति यंत्र पर लगाओं कि उसका एक सिरा इत्तखंड के किनारे पर हो और दूसरा धूपघटी की सुई अर्थात शंकु पर। अब तार या नली के उस किनारे से, जो इत्तखंड पर है, उन अह वा नक्षत्रों को जिनकी 'नतघटी' निकालना है, अवलोकन करो; और इस भांति तार वा नली को खसकाते जाओ कि वह ग्रह वा नक्षत्र नली के भीतर दिखाई पड़ने लगे; और इसी रीति से इत्तखंडों पर के वे संकेत, जहां कि इत्तखंड के नीचे का किनारा नली से कटता है, मध्यान्ह के समय से उस ग्रह अथवा नक्षत्र विशेष की नतघटी बतलावेगा।

शंकु के किनारे का वह स्थान जो इत्तवंड के केंद्र और नली के बीच में पड़ता है, उस ग्रह वा नक्षत्र की कांति की स्पर्श ेखा के बरावर है। इसी भांति किसी ग्रह, तारे अथवा सूर्य्य की याम्योत्तर इत्त से दूरी और कांति इस यंत्र द्वारा द्वात होती है। और किसी नक्षत्र का 'विषुवांश' इस यंत्र द्वारा नीचे लिखी रीति से जाना जाता है—

(विषुवांश नाडीमंडल में संवात से उन अंशों को कहते हैं, जो किसी नक्षत्र वा दूसरी आकाशीय वस्तु के साथ संवात अर्थात् हरूय मेच स्मन के आरंभ से गोकाधार में उठकर गिने जाते हैं। अथवा विषुव दृत्त के उस दृत्ताबंद को, जो मेव छान के बिंदु और विषुव दृत्त के उस बिंदु के बीच में पड़ता है, जो किसी नक्षत्र के ध्रुवशीत के साथ याम्योत्तर दृत्त पर आता है। यह अंकों अथवा समय में गिना जाता है)

याम्योत्तर से सूर्य का, जब वे अस्त होने के निकट हों, नतकाल निकालो। और इस समय से किसी नाक्षत्री घटी द्वारा काल की गणना उस समय तक करो, जब वह नक्षत्र, जिसका विषुवांश जानना है, स्पष्ट इप से दिखाई पड़ने हमें। इस रीति से जाने हुए समय में सूर्य की नतघटी, जो उसी समय गणना करके जानी गई हो, जोड़ दो; इस रीति से अंक में सूर्य का विषुवांश, जो उसी समय के लिये गणना करके आया हो, जोड़ दो; यही अंक खमध्य का विषुवांश होगा। अब इसी यंत्रद्वारा उस नक्षत्र की नतघटी निकालो और इसी घटी को खमध्य विषुवांश में, यदि वह नक्षत्र उस समय पूर्वीय गोलाई में हो तो जोड़ दो, और यदि पश्चिमीय गोलाई में होतो, घटा दो; जो शेष अंश प्रात हो, वही उस नक्षत्र का विषुवांश होगा।

इसी यंत्र में शंकु के पूर्व याम्योत्तर भीति यंत्र की भांति दो दोहरे दीवाल में बने बैसेही चतुर्थाश दृत्त हैं, जिनको बनावट पूर्ण रीति से याम्योत्तर भित्ति यंत्र कीसी है; केवल भेद इतनाहीं है, कि दोनो खूंटियों के बीच की दूरी इस यंत्र में १० फीट ४ ई इंच है।

३ इस यंत्र के पूर्व पत्थर का बना एक यंत्र है, जिसको 'नाड़ी यंत्र' कहते हैं। यह संवात के धरातल में बनाया गया है, जसके उत्तर ओर एक पूरा इत्त बना है; जिसका ब्यास ४ फीट ७ इंच है। इस इत्त में दो ब्यास एक दूसरे के। लंब रूप काटते हुए खींचे हैं; जिसके कारण इत्त ४ समान भागों में विभक्त है। विभक्त है। या है और पत्येक भाग ९० तल्य तल्य लंडों में विभक्त है। इत्त के केंद्र में लोहे की एक खूंटी गड़ी है, जो उत्तर ध्रुव को बताती है; उसकी छाया से स्र्य और दूसरे नक्षत्रों की नतघटी, जब वे उत्तरी गोलार्ध में रहते हैं, जानी जाती है। और जब वे दक्षिणी गोलार्ध में रहते हैं, तो याम्योत्तर

द्यत से नतघटी जानने के अर्थ इसी यंत्र के उत्तर भाग में (पहिले इस के ठीक पीछे) एक दूसरा छोटा द्यत बना है, जिसका ज्यास २ फीट ३ ई इंच है। यह द्यत भी पहले की भांति दोना एक दूसरे को काटते हुए ज्यासों के खींचे रहने से ४ समान भागों में विभक्त हैं। और पत्येक चतुर्थाश दृश ९० तल्य तल्य खंडों में बंटे हुए हैं।

४ नाडीयंत्र के पूर्व ठीक शंम्राट यंत्र की नाई एक दूसरा यंत्र उससे छोटे आकार का है। इस यंत्र में धूपघटी के शंकु की लंशाई १० फीट १ इंच है और चौड़ाई १ फुट २ इंच। शंकु के दक्षिण भाग की उंचाई ३ फीट ६ इंच इंच और उत्तर भाग की ८ फीट ३ इंच है। और पितृहत्तखंड की चौड़ाई १ फुट ९ इंच की और मोटाई केवल ३ इंच की है। और वृत्तखंड के नीचे के किनारे का ज्यास ३ फीट ५ इंच है।

4 इस यंत्र के पासहीं दो भीतों के मध्य में बना हुआ एक दूसरा यंत्र है, जिसको चक्र यंत्र कहते हैं। यह धुरी पर घूमने वाला लोहे का १ इंच मोटा हत्त है। जिसके उपरी भाग में ई इंच की मुटाई का पीतल का पत्र जड़ा है। इस यंत्र का धुरा दो दीवालों के मध्य में गड़ा है और उत्तर ध्रुव को बताता है। इस हत्ताकार यंत्र के किनारे की चौड़ाई २ फीट है और इसकी परिधि ३६० तुल्य अंशों में विभक्त है। इसके प्रतिखंड की चौड़ाई १ इंच है। इस यंत्र के केंद्र में लोहे की १ खूंटी है, जिसमें पीतल की एक सई लगी है। इस सई की चौड़ाई २ इंच है और उसके किनारे ऊपर वाली आकृति के समान है। उसमें एक धातुनिर्मित ब्यास परिधि के दोनों सिरों को मिलाता है। उसी में धुरे का आकार बना है)

इस यंत्र से किसी ग्रह वा नक्षत्र के विषुवांश को जानके के अर्थ इस और खई को इस तरह से घुमाओ कि वह ग्रह वा नक्षत्र खई के बीच वाली रेखा के सीध में आजाय। उस समय इस के वे अंश, जो इस के उस ब्यास से, जो धुरी के साथ समकोण बनाता है, कटते हैं, उस ग्रह वा नक्षत्र विशेष को विषुवांश विदित कराते हैं।

ऐसा अनुमान होता है कि यह यंत्र और कई एक आधार हत्तों से घिरा था, जिनसे कि किसी ग्रह अथवा नक्षत्र की याम्योत्तर हत्त से नतघटी जानी जाती थी। परंतु अब सब टूट फूट गए हैं और इस यंत्र के बीच की सई भी टेड़ी हो गई है। अतएव ऊपर लिखे रित्यनुसार अब इस यंत्र द्वारा किसी ग्रह बा नक्षत्र का बिषुबांश नहीं निकल सकता।

(इसी यंत्र के पास चूने का बना एक वर्गक्षेत्र है; जिसके किनारे नाली बनी है; उसमें जल भर कर देखने से सम घरातल की परीक्षा की जाती थी कि घरातल देढ़ा तो नहीं हो गया है)

द इस यंत्र के पूर्व चूने का बना एक बहुत बड़ा यंत्र है, जिसको दिगंश चैत्र कहते हैं। इसके बीचो बीच में एक गोल खंभा है, जिसकी उंचाई ४ फीट २ इंच और ब्यास ३ फीट ७ ई इंच है। इस खंभे के केंद्र में लोहे की एक खूँटी गड़ी है, जिसके सिरे पर छेद है । यह खंभा (इंट और चूने से बने) एक गोल दीवाल से घिरा है, जो इस से ७ फीट ३३ इंच की दूरी पर ठीक खंभे के बराबर ऊंची बनी है; और उसकी चौड़ाई १ फुट ६ इंच है । इस दीवाल के चारा ओर एक दूसरी गालाकार दीवाल पहली दीवाल की दूनी चॅचाई की, उससे ३ फीट २ ई इंच की दूरी पर वनी है, जिसकी चौड़ाई २ फौट 🖁 इंच है। इन दीवालों के ऊपरी भाग पत्थर से पाटे हुए 🍍 और इन पर दिशाओं (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, ईशान, नैऋत्य, इत्यादि) के चिन्ह बने हैं और दोनें। दीवालें। के ऊपरी भाग ३६० तुल्य अंग्रें। में विभक्त हैं। (बाहरी दीवाल के भीतर वायव्य और ईशान कीण में दे। छोटे छोटे पर्वताकार चिन्ह बने हैं)। बाहरी दीवाल में ४ खूँटियां (लोहे की बनी) उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम दिशाओं को निश्चित करोती हुई गड़ी हैं। यह बड़ा यंत्र केवल किसी ग्रह वा नक्षत्र के दिगंश को जानने के लिये बनाया गया है, जे। नीचे लिखे रित्यनुसार जाना जाता है।

बाहरी दीवाल में की खूंटियों में से एक धागा उत्तर वाली खूंटी से दक्षिण बाली खूंटी तक, और दूसरा धागा पूर्व वाली से पश्चिम वाली खंटी तक, जो एक दूसरे की खंभे के केंद्र के ठीक ऊपर काटेंगे, बांधा; और एक तीसरा धागा लेकर उसके एक शिरे की खंभे के केंद्र में पृष्टता से बांधो और दूसरे सिरे की बाहरी दीवाल के ऊपरी भाग पर ले जाओा । अब अपनी आंख की विचली दीवाल की गोलाई पर जमा कर जिस ग्रह अथवा नक्षत्र की दिगंश कीटि जानना हो, उस ग्रह अथवा नक्षत्र की देखना आरंभ करे। और अपनी आंख और उस धागे की, जो खम्भे के केंद्र में बंधा हुआ बाहरी दीवाल के ऊपर गया है, इस भांति खसकाते जाओ कि वह ग्रह वा नक्षत्र इस घूमते हुए धागे पर आ जाय। इस भांति उस ग्रह वा तारे की दिगंशकोटि का अंश बाहरी दीवाल पर इस घूमते हुए धागे पर आ जाय। इस भांति उस ग्रह वा तारे की दिगंशकोटि का अंश बाहरी दीवाल पर इस घूमते हुए धागे और उत्तर अथवा दक्षिण की खूटी के बीच में मिल जायगा। यदि देखने के समय वह ग्रह वा नक्षत्र उत्तर गोलाई में हो तो उत्तर, और यदि दक्षिण गोलाई में हा तो दक्षिण वाली खंटी से अंशों को देखना चाहिए।

७ इस यंत्र के दक्षिण एक दूसरा नाड़ीयंत्र हैं, जो ठीक ठीक पहले की नाई बना है। परंतु इसका ब्यास ६ फीट ३ इंच हैं और इसके बीच की खूंटी भी गिर गई है और इस पर के चिन्ह और अंशों के भाग तो विलकुल मिट गए हैं।

इस समय प्रायः सभी यंत्रें। पर के चिन्ह मिट गए हैं (वा मिटते जाते हैं) और स्वयं यंत्र भी टूटते फूटते जाते हैं। इसके अतिरिक्त अपने निर्मित स्थान से झुक जाने के कारण सभी यंत्रें। में देाष हो गए हैं, जिनसे गणना करने में अत्यन्त अशुद्धता होती है।

मंदिर के बाहर एक चूने का बहुत बड़ा चबूतरा है, जिसके चारे। ओर नाली बनी है। इस समय उसके सामने छहां के बन जाने के कारण अब उस पर धूप नहीं आती और वह बेमरम्मत भी हा गई है। इस कारण उसका पूरा पूरा समाचार बिदित नहीं होता। परंतु इससे समधरातल और दिगंश इत्यादि का ज्ञान होता होगा, इसमें संशय नहीं।

🕂 दशाश्वमेध घाट(२८)-यह घाट शहर के घाटों के मध्य में और

काशी के पांच अति पवित्र घाटों में से एक है। यहां प्रयाग तीर्थ है, माघ मास में यहां स्नान की भीड़ होती है। यहां जल के भीतर 'छद्र सरोवर' तीर्थ है। मिणकिणिका घाट को छोड़ कर काशी के सब घाटों से यहां अधिक लोग देख पड़ते हैं। इस घाट पर तिजारती चीजें, बहुत से असवाव और यात्री नाव से उत्तरते हैं। इक घाट पर तिजारती चीजें, बहुत से असवाव और यात्री नाव से उत्तरते हैं। इक घाट पर नाव बहुत रहती हैं। बहुतेरे लोग घाटों को देखने के लिए यहांसे नाव में वैट कर गङ्गा के सिरे की ओर अस्सी-सङ्गम घाट तक जाकर यहां लौट आते हैं और फिर यहांसे नीचे की ओर बरुणा-सङ्गम घाट तक जाते हैं। मानमन्दिर और दशाश्वमेध इन दोनों घाटों के मध्य में गङ्गा के तीर मैदान है। दशाश्वमेध घाट से ऊपर एक मकान में काशी के छिविख्यात पंडित श्वामी विशुद्धानन्दजी रहते हैं।

→ दशाश्वमधेश्वर शिव—एक खुळे हुए मंडप में एक स्थान पर 'दशाश्वमधेश्वर' शिवलिङ्ग और दूसरे स्थान पर पीतल के सिंहासन में एक छोटी
मूर्ति है, जिसको लोग 'सीतला देवी' कहते हैं। शहर में सीतला रोग फैलने के
समय इस देवी की विशेष पूजा होती है। सीतला देवी के वगल में 'विन्द
बेवी' का (जो अब गुप्त हैं) स्थान है।

मंडप के दक्षिण-पश्चिम दो शिखरदार मन्दिर की दीवारों के आलों में आदमी के समान ऊंची गङ्गा, सरस्वती, यसुना, विष्णु, त्रिदेव और वृसिंह की मूर्तियां हैं।

घाट के उत्तर पोितया (जो बङ्गाल में रामपुर बौलिया के पास है) के राजा का बनवाया हुआ विशाल शिवमन्दिर है, जिसके उत्तर छोटे मन्दिर में 'शूलटक्केश्वर' शिवलिङ्ग हैं। इस मन्दिर में काशी के ५६ विनायकों में से 'अभयद बिनायक' हैं। घाट के ऊपर बड़े मन्दिर से उत्तर 'प्रयागेश्वर' 'प्रयाग माधव', 'कद्रसरोवर', और 'आदि बाराहेश्वर' शिवलिङ्ग का मन्दिर है। मन्दिर के बाहर एक मढ़ी में किसी भक्त की स्थापित 'प्रयागमाधव' की मूर्ति है। काशीलंद के अनुसार मानमन्दिर घाट के ऊपर एक मन्दिर में 'प्रयागमाधव'

की मूर्ति है, जो 'लक्ष्मीनारायण' के नाम से प्रसिद्ध है। आदिबाराह के पश्चिम गळी में एक मन्दिर में 'प्रयागेश्वर' को लोग पूजते है, परन्तु काश्चीखंड के टीकाकार ने 'शूलटक्केश्वर' को प्रयागेश्वर कह कर लिखा है।

श्चितपुराण—(६ वां खंड-९ वां अध्याय) शिवजी ने राजा दिवोदास को काशी से विरक्त करने के लिये ब्रह्मा को काशी में भेजा। ब्रह्मा ने काशी में जा कर राजा दिवोदास की सहायता से १० अश्वमेध यह किए। वही स्थान दशाश्वमेध नाम से प्रसिद्ध है। ब्रह्मा भी उस स्थान पर ब्रह्मेश्वर शिवलिङ्ग स्थापित कर के रह गए। (काशीखंड के ५२ वें अध्याय में भी यह कथा है।)

बामनपुराण—(३ रा अध्याय) विष्णु ने कहा कावी में जो दशाश्वमेध तीर्थ है, वहां मेरे अंश वाळे केशव भगवान बसे हैं।

स्कंदपुराण—(काशी खंड-५२ वां अध्याय) ज्येष्ट शुक्क दशमी पर्यंत दश्च दिन दशाश्वमेथ में स्नान करने से सर्व फक्ष प्राप्त होता है। ज्येष्ट शुक्क दशमी को दशाश्वमेधेश्वर के दर्शन पूजन करने से १० जन्म का पाप निवृत्त होता है।

(६१ वां अध्याय) माघ मास में प्रयागतीर्थ, प्रयागमाभव, और प्रयागेश्वर यात्रा से प्रयाग स्नान करने से दशगुणा फल मिस्रता है।

बाज मुकुंद के चौहहा के निकट काशी के ४२ लिक्कों में से 'ब्रह्मेश्वर' शिवलिक्क और ५६ विनायकों में से 'सिंहतुंद विनायक' हैं। अगस्तकुंदा के निकट 'अगस्तिश्वर' और 'लोपामुद्रा' एकही मन्दिर में हैं। इनके दक्षिण 'कइय-पेश्वर' शिवलिंग और पश्चिमोत्तर जंगमवादी महल्ले में 'अिक्करेश्वर' शिवलिंग और पश्चिमोत्तर जंगमवादी महल्ले में 'अिक्करेश्वर' शिवलिंग और काशी के १२ आदित्यों में से 'विमलादित्य' हैं। इसी स्थान पर यक्षराज के पुत्र हरिकेश ने तप किया था, जिसके प्रभाव से उसको दंदपाणि का पद मिला, जिसके स्थापित यहां 'हरिकेशेश्वर' शिवलिंग हैं।

मिश्रपोखरा के उत्तर एक मन्दिर में 'ध्रुवेश्वर' और काशी के ५६ विनायकों में से 'चतुर्दत विनायक' हैं। कोदईकी चौकी के निकट 'वेंदचनाथ', 'गीकर्णेश्वर' और 'गोकर्ण कूप' हैं, (जिसके पश्चिम 'अत्रीश्वर' गुप्त हैं) गोकर्णेश्वर में पूर्व- दक्षिण कोदई की चौकी से आगे फाटक के भीतर 'ज्यंम्बकेश्वर' शिविलंग हैं। (जो जिलोकनाथ के नाम से प्रसिद्ध हैं) काशीखंड के ६९ वें अध्याय में लिखा है कि सिंहराशि के ट्रहस्पति होने पर काशी के ज्यंबकेश्वर की यात्रा से गोदावरी यात्रा का फल होता है। ज्यंबकेश्वर से पूर्व-दक्षिण 'गौतमेश्वर' का मन्दिर है, जिस जगह 'गोदावरी तीर्थ' गृप्त है। यहां पर काशीनरेश महाराज का बनवाया बड़ा भारी मन्दिर है।इस स्थान से पूर्व कुछ दूर शाक्षी बिनायक मइल्ले में 'शाक्षी विनायक' का मन्दिर है। बहुतरे यात्री यहां अपनी यात्रा की शाक्षी कराते हैं। इस मन्दिर को सन १७७० ई० में एक मरहटा ने बनवाया था। गणेश की विशाल मूर्ति लाल रङ्ग की है। समीपही में काशी के ११ महा कट्रों में से 'मनःप्रकामेश्वर ' शिविलिंग का मन्दिर है। इस मन्दिर में काशी के ५६ बिनायकों में से 'किलिपिय विनायक' हैं। इस मन्दिर से दक्षिण गली के पूर्व किनारे 'कोटिलिंगेश्वर' शिविलिंग हैं जिससे पूर्व शकरकन्द की गली में 'बाह्मीश्वर महादेव' हैं, जिनके पूर्व 'चतुर्वकेश्वर' शिविलिंग हैं।

→ अहिल्याबाई घाट(२९)-यह उत्तम घाट इंदौर की महारानी अहिल्याबाई का बनवाया हुआ है।

मुन्झी घाट (३०) —यह घाट बहुत छन्दर है। इसको नागपुर के दीवान श्रीधरनारायणदास ने वनवाया था। इससे ऊपर की कोठरियों में पत्थर खोद कर सुंदर काम वना है, और बहुत बड़े बड़े मकान हैं; जैसे गङ्गा के किनारे दुसरे घाटों पर नहीं हैं।

† राणामहळ घाट(३१)-यह पुराना घाट उदयपुर के महाराणा का बनवाया हुआ है। घाट से ऊपर काशी के ५६ विनायकों में से 'वक-तुंड विनायक 'सरस्वती विनायक के नाम से प्रसिद्ध हैं।

मचौसठ देवी का मन्दिर—वाट से ऊपर आंगन के बगलों में मकान

हैं। पूर्व मुल के ३ द्वार वाले मकान में सवींग में पीतल जड़ी हुई काशी की हु४ योगिनियों में से मिस गानना 'चौषष्ठी वेवी' के नाम से मिस हैं। आगे सिंह है। पूर्व वगल के मकान में ऐसीही सवींग में पीतल जड़ी हुई 'भद्रकाली' की मूर्ति है। चैत्र मितपदा के दिन चौषष्ठी वेवी की पूजा का बड़ा मेला होता है।

शिवपुराण—(६ वां खंड-७ वां अध्याय) शिवजी ने दिवोदास राजा से काशी छोड़ाने के निमित्त ६४ योगिनियों को भेजा। जब काशी में योगि-नियों की युक्ति न चली तब वे मणिकर्णिका के आगे स्थित हो गईं।

रकन्दपुराण—(काशीखंड-४५ वां अध्याय) आश्विन की नवरात्र में ९ दिन पर्यंत, प्रतिमास के कृष्णपक्ष की १४ के। और चैत्र प्रतिपदा के दिनः ६४ योगिनियों के दर्शन पूजन करने से वर्ष पर्यंत विघ्न नहीं होता।

घाट से ऊपर ६४ देवी के मन्दिर से पश्चिम देवनाथपुरा के पास 'पुष्प-दंतेश्वर', 'गरुड़ेश्वर', और 'पातालेश्वर' शिवलिंग हैं, पुष्पदंतेश्वर के मन्दिर में काशी के ५६ विनायकों में से 'एकदंत विनायक' हैं।

्पांडेघाट (३३) और सर्वेश्वर-घाट (३४)—यहां खन सान रहता है। सर्वेश्वर घाट के ऊपर सर्वेश्वर शिवर्लिंग हैं।

राजा-घाट (३५)—इस घाट को और इस घाट के जपर वाछे मन्दिर तथा मकान को पेशवा के नायव राजा विनायक राव ने, जो चित्रकूट के पास करवी में रहते थे, बनवाया था। मकान में ब्राह्मण लोग रहते हैं। मकान की मरम्मत और ब्राह्मणों के खर्च के निमित्त राजा ने सहकार में रुपया जमा करा कर वसीयत नामा लिख दिया है। घाट से उत्तर शहर के बड़े बड़े मकान देख पड़ते हैं।

नारदघाट (३६)—सिरे की ओर सीढ़ियां दहिने घूमी हैं। घाट से ऊपर एक गली में 'नारवेश्वर' शिव का छोटा मन्दिर है।

न मानसरोवर घाट (३७)-यह घाट आंवेर के राजा मानसिंह का

बनवाया हुआ है। नीचे से ऊपर तक थोड़ी चौड़ी सीढ़ियां हैं। घाट से ऊपर एक गली में 'मानसरोवर' नामक बुंड है, जिसके निकट एक मन्दिर में 'हंसे श्वर' शिविंग हैं। जिनसे दक्षिण बुछ दूर चल कर एक मकान में कई सीढ़ियों के ऊपर एक मन्दिर में 'रुक्मांगदेश्वर' शिविंग और 'चित्रग्रीवा' देवी हैं। आस पास कई देवस्थान हैं, मानसरोवर के पूर्व एक गली में बालकृष्ण और चतुर्भुज विष्णु की मूर्ति है। जिसके पास मानसिंह का बनवाया हुआ एक शिवमन्दिर है।

- न क्षेमेश्वरघाट (३८)-घाट से ऊपर 'क्षेमेश्वर' का मन्दिर है।
- े चौकीघाट (३९)-घाट के ऊपर एक पीपल के दक्ष के नीचे चबूतरे पर जड़ के चारो ओर बहुत वेवमूर्तियां हैं।
- → केदारघाट (४०)--यह घाट काशी के उत्तम घाटों में से एक है।
 घाट पर कई शिवलिंग हैं। २५ सीढ़ियों के ऊपर 'गौरीकुंड' नामक एक
 चौखूटा छोटा बुंड है।
- केदारेश्वर का मन्दिर--गौरी कुंड से ४७ सीढ़ियों के उपर 'केदारेश्वर' शिव का मन्दिर हैं। केदारेश्वर शिव काशी के १२ ज्योतिलिंगों में से और ४२ प्रधान लिंगों में से मन्दिर में तीन देवड़ी के भीतर अनगढ़ और चिपटे केदारेश्वर लिंग हैं। वहां अंधेरा रहने केकारण दिन में भी दीप जलते हैं। मन्दिर के किवाड़ों पर पीतल जड़ा है। दरवाजे के दोनों बगलों में चतुर्भुंज छः छः फीट उँचे एक एक द्वारपाल लड़े हैं। मन्दिर के आगे वांई ओर गौरी, स्यामकार्तिक, गणेश, वंडपाणि भैरव, और दिहने धातुनिर्मित शिव पार्वती इत्यादि भोगमूर्तियां और आगे नन्दी वैल हैं। मन्दिर के बगलों में परिक्रमा का मार्ग है, जिसके बाद मन्दिर के आगे वड़ा जगमोहन और तीन ओर दालानों में कई छोटे देवमन्दिर और बहुत देवता हैं। पश्चिम ओर एकही तरह के दो मन्दिर हैं, जिनमें से दक्षिण वाले में लक्ष्मीनारायण और उत्तर वाले में भीनाक्षी देवी की मूर्ति है। मन्दिर के दक्षिण भाग की कोटरी में दक्षिणा की

मूर्ति है। जगमोहन के उत्तर भाग में गौरी, स्यामकार्तिक, गणेश और वंडपाणि भैरव की धातुनिर्मित भोगमूर्तियां हैं। स्यामकार्तिक के निकट धातुनिर्मित दो स्त्री हैं और स्थान स्थान पर उत्सव-मूर्तियों के चढ़ने के लिये पीतल के बैल और इंस, काष्ट्र के मोर इत्यादि बाहन रक्के हुए हैं। मन्दिर के चौक के घेरे के पूर्व और पश्चिम एक एक बड़े फाटक हैं, जिनके भीतर जूता पहन कर कोई नहीं जाता।

शिव की मूर्ति पीतल के नंदी बैल पर चढ़ाकर प्रतिमहीन के दोना प्रदोषों की मन्दिर की एक परिक्रमा कराई जाती है। उस दिन मूर्तियों का शृङ्कार है। है और भोग की तैय्यारी अधिक होती है। गौरी की भोगमूर्ति प्रतिश्वक्रवार को पीतल के इंस पर चढ़ कर और स्यामकार्तिक प्रतिषष्टी को काष्ट्रके मयूर पर चढ़ कर घूमते हैं। कार्तिक शुक्ल षष्टी को स्यामकार्तिक काष्ट्र के तारकाद्धर का बध करते हैं। उस दिन यहां मेला होता है। प्रतिचत्रीं को काष्ट्र के मूर्य पर गणेश जी और एकादशी के दिन लक्ष्मीनारायण की भोग मूर्तियां घुमाई जाती हैं। नवरात्र में कुमार स्वामी के मठ से दुर्गी की मूर्ति लाकर जगमोहन में रक्खी जाती है और दशमी को काष्ट्र के सिंह पर चढ़ा कर फिराई जाती है।

केदार जी के मन्दिर के घेरे से बाहर दक्षिण 'नीलकंटेश्वर' का मन्दिर और आगे एक कोठरी में लगभग दे। हाथ ऊंचा 'सगरेश्वर' शिवलिङ्ग है।

रकंदपुराण—(काशीखंड—७७ वां अध्याय) मंगलवार को अमावास्या है। तो केदार घाट पर और गौरी कुंड में स्नान करके पिंडदान करने से १०१ कुल का उद्धार होता है। चैत्र कृष्ण १४ का त्रत करके तीन चिल्लू केदारोद्क पीने से मनुष्य शिवक्षप होता है। और जो केवल पूजनहीं करते हैं, उनके ७ जन्म का पाप छुट जाता है।

+ तिल्लभांडेश्वर—बंगाली टोले में हाई स्कूल के पास की गली के एक मन्दिर में ४३ फीट ऊंचा और १५ फीट के घेरे में 'तिलभांडेश्वर' शिवलिङ्ग है। मन्दिर के पास बहुत देवमूर्तियां और एक पीपल के दक्ष के नीचे बहुत शिवलिङ्ग और देवमूर्तियां हैं।

→ छछीघाट (४१)—यह घाट ललीदास का बनवाया हुआ है। इसकी सीढ़ियां थोड़ी चौड़ी हैं। घाट से ऊपर सड़क के निकट काशी के ५६ विना-यकों में से 'लम्बोदर विनायक' अब चिंतामणि गणेश के नाम से प्रसिद्ध हैं।

इमशान घाट (४२)—यहां 'श्मशानेश्वर' शिवलिंग हैं और कभी कभी मुदें जलाए जाते हैं। लोग कहते हैं कि मुदें जलाने के लिये पहले यही घाट था।

सनुमान-घाट (४२)—इस घाट की सीढ़ियां छन्दर हैं, जिनसे अपर 'हनुमान जी' का मन्दिर है।

है। स्थान स्थान पर आढ पहले पाये वने हैं; बीच के भाग में गुम्बजदार २ पाये हैं। घाट से ऊपर बहुत बड़ा मकान है, जिसको बनारस के राजा चेत-सिंह किले के काम में लाते थे; अब इसमें सरकार से पिंशिन पाने वाले मुगल बादशाह के खांनदान के लोग रहते हैं। इस मकान से लगे हुए उत्तर ओर गोसाई लोगों का उत्तम मठ हैं। जिनमें बहुत साधु रहते हैं। मठ के समीप एक 'महाबीर जी' का मन्दिर है, जिसमें 'स्वप्नेश्वर' शिवलिंग और 'स्वप्नेश्वरी' देवी हैं, जिनके दक्षिण 'हयग्रीव' भगवान और 'हयग्रीव' कुंड है। ये सब स्थान भवैनी महल्ले के नाम से प्रसिद्ध हैं।

्रवक्षराजघाट (४६)—इसका बनाने वाला वक्षराज नामक एक मनुष्य था, जिस ने इसको जैन लोगों ने खरीद लिया। घाट का उत्तरीय भाग छग भग १०० वर्ष का बना हुआ है। घाट से ऊपर ३ जैन मन्दिर हैं। कानकीघाट (४७)—लग भग ८ वर्ष हुए, खरसरि की रानी ने इस घाट को बनवाया है। इससे ऊपर रानी का बड़ा मकान और खनहले कलश वाले ४ वड़े मन्दिर हैं।

इस घाट के पास वनारस वाटर वक्से के 'पंप स्टेशन' का काम जारी है। यहांसे गंगाजल नलों द्वारा सारे शहर में जायगा।

ेतुळसीघाट (४८)—इस घाट की शकल पुरानी है। यहां 'गंगासागर' तीर्थ है। काशीखंड के ६९ वें अध्याय में लिखा है कि गंगासागर में स्नान करने से सर्व तीर्थ में स्नान करने का फल मिलता है।

मन्दिर है। मकान के घुमाव रास्ते से तलसीघाट से ऊपर तलसीदास का मन्दिर है। मकान के घुमाव रास्ते से तलसीदास की गदी के पास पहुंचना होता है, जिसके पास तलसीदास की खड़ाऊं और एक हाथ से छोटा एक नाव का दुकड़ा रक्खा हुआ है। बहुत प्राचीन होने से खड़ाउओं की लकड़ी गली जाती है, इससे इन पर कपड़े लपेटे गए हैं। यहां के अधिकारी कहते हैं कि खड़ाऊं तलसीदास की हैं और जिस नाव पर वह पार उतरते थे उसी नाव का यह दुकड़ा है।

इसी स्थान पर तुलसीदास रहते थे। संवत १६८० (सन १६२३ ई०) में यहांहीं तुलसीदास का वेहांत हुआ।

तुलसीदास पद्य में भाषा की पुस्तकों को बनाकर भाषा के किवयों में शिरोमणि और उत्तरी भारत में प्रख्यात है। गए हैं । इन्होंने संवत १६३१ में मानस रामायण को रचा, जिसका प्रचार भाषा की संपूर्ण पुस्तकों से अधिक है। इसके अतिरिक्त इनके बनाए हुए विनयपित्रका, गीतावली, वाहावली, किवित्तरामायण, छप्पय रामायण, बरवा रामायण, वैराइसंदीपिनी, पार्वती-मंगल, जानकीमंगल, रामलला नहलू, कृष्णगीतावली, रामाझा प्रश्न, किल-धर्मीधर्म किष्टपण, हनुमानवाहुक, हनुमानवालीसा, अंकटमोचन इत्यादि बहुतेरे छोटे बड़े ग्रंथ हैं।

तुल्रसीदास के मन्दिर के पश्चिमोत्तर एक कोटरी में कपिल मुनि की मूर्ति है, जिस मन्दिर में एक सिंहासन पर राम, लक्ष्मण और जानकी जी विराज-मान हैं। इसी मन्दिर में 'त्रिविक्रम भगवान' और 'असीमाधव' की मूर्तियां ह।

े छोछार्क कुंड — यह भवैनी महल्ले में तुलसीघाट से थोड़ी ही दूर पर पर एक प्रसिद्ध कूंआ है, जिसको महारानी अहिल्यावाई, अमृतराव और कूचिवहार के राजा ने बनवाया था। कूंए का ब्यास १५ फीट है, जिसके एक ओर बिना पानी का चौखूटा बड़ा हौज है; जिसके ३ ओर ऊपर से नीचे तक पत्थर की चालिस सीढ़ियां और एक ओर ऊंचा महराव है। जिस से होकर नीचे सीढ़ियां द्वारा कूंआ में पैठना होता है। यहां भाद्र पिश को मेला होता है। सब लोग लोलार्क तीर्थ में स्नान करते हैं। लोलार्क कुंड की सीढी पर काशी के १२ आदित्यां में से 'लोलार्कादित्य' हैं। कुंड के ऊपर दक्षिण 'लोलार्केश्वर' शिवलिंग हैं। जिनके मन्दिर से पूर्व एक मन्दिर में 'अमरेश्वर' और दूसरे मन्दिर में 'परासरेश्वर' शिवलिंग हैं। जिनसे पूर्व दक्षिण एक मन्दिर में काशी के ५६ विनायकों में से 'अर्क विनायक हैं।

स्कन्दपुराण—(काशीखंड ४६ वां अध्याय) शिव जी ने राजा दिवोदास को काशी से विरक्त करने के लिए सर्च्य को काशी में भेजा। आने पर (शिव जी के कार्य के लिए) सर्च्य का मन लोल (चंचल) हुआ, इस करके उनका नाम लोलाक पड़ा। कार्य सिद्ध न होने पर वह दक्षिण दिशा में अस्सी संगम के निकट स्थित हो गए। मार्गशीर्ष की सप्तमी, षष्टी वा रविवार को वहां वार्षिकी यात्रा करने से मनुष्य पाप से छूट जाते हैं। लेलार्क के दर्शन करने से वर्ष भर का पाप निष्टत्त होता है। सर्च्यंग्रहण में वहां स्नान दान करने से कुरु-क्षेत्र से अधिक फल पाप्त होता है। माघ शुक्त सप्तमी के। अस्सी संगम पर स्नान करने से सप्त जन्म का पाप छूट जाता है। मत्येक रविवार को लोलार्क की यात्रा करने से कुष्टादि रोग नहीं रहते।

्रवामनपुराण—(१५ वां अध्याय) शिव जी ने अपने भक्त सुकेशी वैत्य को सूर्यद्वारा पृथ्वी में गिराया हुआ वेख कर काप किया । सूर्य महावेच के नेत्रों की अग्नि से तापित होकर वरुणा और अस्सी निर्दियों के बीच में गिर गए। पीछे वह दग्ध होते हुए बारंबार कभी अस्सी में कभी बरणा में अलातवक्र की भांति गाता मार मार श्वमने लगे। तब ब्रह्मा जी मंदरावल में जाकर खर्य के लिए शिव को काशी में लाए। महादेव ने खर्य को हाथ में ब्रहण कर उनका लोल नाम धर कर उनका फिर रथ में अरापित किया।

राममन्दिर—भदैनी महल्ले में लोलार्क कुंड से उत्तर राममन्दिर है। आंगन के चारों बगलों पर मकान हैं, जिनमें से दक्षिण वाले मन्दिर में राम, लक्ष्मण और जानकी की मूर्तियां हैं। राममन्दिर के चारों ओर बनारस के बाटर वक्स की चिमनी और कारखाने का काम जारी है।

राममिन्दंर के लिये काशी का दंगा--इसी वर्ष (सन १८९१ ई०) के आरंभ में भदैनी महल्ले में गङ्गा के पास जल-कल के लिये अंजन इत्यादि खड़े करने के निमित्त भूमि नापी गई, उसके भीतर यह राममिन्दर भी आग्या। हिंदुओं की ओर से मन्दिर बचाने के लिए अरज़ी पड़ी। अंत में म्युनिसिपल बोर्ड से यह निश्चित हुआ कि अभी मन्दिर छोड़ कर आस पास के मकानात गिराए जावें। कुछ दिनों के पश्चात २० फीट गहरा गढ़ा चारों ओर से मन्दिर से ऐसा सट कर खोदा गया कि दीवारों के गिर जाने का पूरा भय था। हिंदुओं की ओर से एक अर्जी दी गई कि हमें ३ फीट ज़मीन मन्दिर के आस पास पुश्ता बनाने को और ४ फीट सड़क के वास्ते दी जाय और उसका उचित मूल्य लेलिया जाय। इस अर्जी पर कुछ आज्ञा नहीं हुई, तब तक इंजिनियर साहेव चाहते थे कि सड़क वाला मार्ग बन्द कर दिया जावे, जिसमें कोई मन्दिर के पास न जा सके। ता० ८ अप्रैल को वह सीढ़ी भी खोद दी गई, जिससे मन्दिर में जाने का मार्ग था; परन्तु लोगों ने मन्दिर में जाने के अर्थ किसी भांति ईट पत्थर डाल कर चढ़ने का रास्ता रातहीं रात में तैय्यार कर डाला।

ता० १५ अप्रैल के ११ ई बजे दिनको यह व्यर्थ कोलाहल हुआ कि भदैनी में श्रीरामजी का मन्दिर खोदा जाता है। बस थोड़ीही देर में सारे शहर में इरताल होगया, वाजार बंद होगये, हजारों आदमी मन्दिर की ओर जाते हुए दिखाई देने लगे, कई हज़ार मनुष्यों की भीड़ इस मैदान में जमा हो गई। अनेक बदमाशों ने पम्पिक्न एंजिन को, जो गक्ना के किना लिखा था, टुकड़े टुकड़े कर डाला और छोटे वड़े नल, जितने पड़े थे उनमें से कितनोही को तोड़ दिया और कितनेही को गंगा में डाल दिया। हुलड़ यहां तक विगड़ा कि म्युनि-सिपल किमश्चर वाबू सीताराम के मकान और अस्तवल में बदमाश और लूटेरों ने युस कर और उनका कई हजार का माल लूट लिया। बदमाशों के कई दलों ने सड़क और गलियों की सरकारी लालटेनों को तोड़ दिया। वंगा करने वालों ने तारघर लूट लिया और तार को काट डाला। इन लोगों ने राजघाट के स्टेशन और पारसल गोदाम के पारसल और असवाब को लूट लिया। तीन चार घंटे तक शहर में बड़ी हलचल थी, अनेक मलेमानुष रईसों की हानि हुई।

मिनसस्ट्रेट साहेव ने इन्तिजाम आरंभ किया और वे जिला सुपिरन्टेंडेंट पुलिस और अंगरेजी पलटन को साथ छे कर पहुच गए। १२ वी वङ्गाल पैदल भी उसी दंग भेजी गई। दो कम्पनी गोरों की डफिरङ्ग पुल की रक्षा के लिए गई। तीन दिन तक तो कुछ दुकानें खुलीं और कुछ बन्द ही रहीं, परन्त पीछे सब खुल गई और नगर में शान्ति-स्थापन हो गया।

जिन छोगों ने हुछड़ मचाया और छूट मार की, वे पकड़े जाने छगे। लगभग १००० आदमी पकड़े गए, इनमें अनेक राह चलने वाले निरापराधी भी थे। ता० १८ अमेल से अपराध सबूत न होने से बहुतेरे आदमी छुटने लगे, कितने लोग केंद्र हुए और कई आदमी कालेपानी भेजे गए।

ता० १० जून को राममन्दिर के मालिक वाबू गोवर्द्धनदास गुजराती, एक धनी वाबू गोपालदास, बड़हर की रानी के कारिन्वे मुन्शी गिरिजा मसाद, बाबू लक्ष्मणदास, पण्डित रामेश्वरदत्त, पण्डित सुखनन्दन और रघुनायदास इनको तीन तीन वर्ष का सपरिश्रम काराबास और कम से २५०००, १०००, ३०००, ५०००, १०००, जूर्मीने की सजा हुई। अमियुक्तों की ओर से हाईकोर्ट में अपील हुई जिस पर तारीख़ ४ अगस्त को

हाईकोर्ट ने गिरिजामसाद के अतिरिक्त ६ आदिमयों का जुर्माना माफ कर दिया और उनकी सजा घटा कर अठारह अठारह महीने की कर दी।

्र बाजीराव-घाट (४९)--यह घाट तुल्लसीघाट से लगा हुआ दक्षिण ओर बेमरम्मत पड़ा है। पूना के अंतिम पेशवा बाजीराव ने इसको बनवाया था। घाट से ऊपर के मकानें। में साधु लोग रहते हैं।

+रालामिश्र-घाट (५०)--यह घाट काशी के सब पक्के घाटों के अंत में दक्षिण ओर है। इसके दोनों बाजुओं। पर गोलाकार पाये हैं। घाट को रालामिश्र नामक एक धनी बाह्मण ने बनबाया था।

अस्तीसंगम घाट (५१)—रालामिश्र-घाट से दक्षिण मैदान में काशी के पांच अतिपवित्र घाटों में से सबसे दक्षिण का अस्सी नामक कचा घाट है, यह हरिद्वार तीर्थ है। दक्षिण ओर एक नाला के समान लगभग ४० फीट चौड़ी अस्सी नामक नदी गङ्गा में मिलीहै। वर्षा काल में इस नदी से गङ्गा में पानी गिरता है।

अस्सीघाट से ऊपर एक छोटे मन्दिर में 'संगमेश्वर' ज्ञिवलिङ्ग हैं।

्रजगन्नाथजी का मन्दिर-अस्सीमाट से ऊपर एक मन्दिर में कई ड्योड़ी के भीतर जगन्नाथ, बलभद्र, और छभद्रा की मूर्तियां हैं।

आषाढ़ शुक्क २ को विजया-नगर के महाराज के वड़े रथ पर चढ़ कर जगन्नाथजी यात्रा करते हैं और उत्तर की ओर दाऊजी के मन्दिर के पास सिकड़ा तक जाते हैं। उस समय रथयात्रा की वड़ी तैय्यारी और दर्शकों की भीड़ होती है।

्रस्कन्दपुराण—(काशीखंड-४६ वां अध्याय) मार्गशीर्ष में कृष्ण पक्ष की ६ को अस्सी-संगम पर स्नान और पिंडदान करने से पितर तप्त होते हैं।

भृपुष्कर-तीर्थ-अस्सी-संगम से पश्चिम-दक्षिण पुष्कर-तीर्थ नामक सरोवर है।

🕂 दुर्गाकुंड-अस्सी घाट से 🗧 मील पश्चिम दुर्गाकुंड महल्ले में 'दुर्गाकुंड

नामक बड़ा सरोवर है, जिसके पास पत्थर से बना हुआ काशी की ९ दुर्गाओं में से 'कूप्मांडाख्या' दुर्गी का उत्तम मन्दिर है। सरोवर और मन्दिर दोनों को पिछले शतक में रानी भवानी ने बनवाया था। मन्दिर में नकाशी का छन्दर काम है। मन्दिर के आगे के मण्डप को लगभग २५ वर्ष हुए, एक फौजी अफसर ने वनवाया था, जिसमें मिर्ज़ापुर के मजिष्ट्रेट का दिया हुआ एक बड़ा घण्टा लटका है। मण्डप का फर्श नील और स्वेत मार्बुल के दुकड़ों से बना है। मण्डप के पास २ सिंह की मूर्ति और मन्दिर के चारो ओर छोटे छोटे कई मन्दिर हैं, जिनमें शिव, गणेश आदि वेबताओं की मूर्तियां हैं। मन्दिर के आंगन के चारों बगलों पर दालान हैं, जिनमें साधु और यात्री रहते हैं। पश्चिम ओर प्रधान फाटक पर नौबतलाना हैं। घेरे के भीतर सदर दर्वाजे के पास काशी के ५६ विनायकों में से 'दुर्गविनायक' पश्चिम-दक्षिण और कोलीजी के मन्दिर में अष्ट महाभैरवों में से ' चण्डं भैरव ' हैं। घेरे के बाहर दक्षिण दर्वाजे के पास एक मन्दिर में 'कुक्कुटेश्वर' शिवलिङ्ग हैं। इस मन्दिर के पूर्वे कर किसी भक्त ने दुर्गविनायक के नाम से एक मन्दिर में मणेश की मृत्ति स्थापित की है, जिसको कोई कोई 'दुर्गविनायक' कहते हैं। यहां बहुत बन्दर रहते हैं। द्वारेश्वर ओर पायावेबी गुप्त हैं।

दुर्गाकुंड के पास एक बाग में छित्रख्यात राजगुरू भास्करानन्द स्थामी दिगंबर वेष से रहते हैं, और कुंड से थोड़ी दूर विजया नगर के महाराज का महल है; जिससे पश्चिम कई जैन मन्दिर हैं। नवरात्रों में और श्रावण के मङ्गल और शुक्रवार को दुर्गाकुंड पर स्नान और दर्शन की भीड़ होती है।

देवीभागवत—(३रा स्कन्ध-२४ वां अध्याय) देवीजी खवाहु राजा पर प्रसन्न हुईं। राजा ने कहा कि हेदेवी जबतक काश्रीपुरी रहे, तब तक आप इसकी रक्षा के निमित्त दुर्गी न म से प्रसिद्ध हो कर निवास करें। देवीजी ने कहा कि जब तक पृथ्वी रहेगी तब तक हम काशीबासिनी होंगी।

्रस्तन्दपुराण—(काशीखंड-७२वां अध्याय) अष्टमी चतुर्वशी और मङ्गल और को काशी की दुर्गी का सर्वदा पूजन करना चाहिए। नवरात्रों में यह से दुर्गों की पूजा करने से विघ्न नाश होता है आश्विन के नवरात्र में दुर्गी-कुंड में स्नान करने से दुर्गीत नाश होती है और दुर्गों की पूजा करने से ९ जन्म का पाप छूट जाता है।

क्रुह्मेत्र-तीर्थ-दुर्गाकुंड से पूर्व कुछ उत्तर थोड़ी दुर पर 'क्रुह्मेत्र' नामक एक पका सरोवर है। स्वयंग्रहण के समय यहां स्नान की भीड़ होती है।

्कृमिकुंड—कुरुक्षेत्र से दूर उत्तर सिद्धकुंड छनहिट्या है, जिसके उत्तर किनाराम सम्प्रदाय वालों का एक बाग किनाराम का स्थल के नाम से प्रसिद्ध है। इस बाग में 'कृमिकुड' और 'किनाराम की समाधि' है। जिनके पास काशी के ५६ विनायकों में से 'कूटदंत-विनायक ' है।

ने हैवती-तिथे किम्रुंड से दूर पश्चिमोत्तर 'रेवतीतीर्थ' रेवड़ी तालाब के नाम से प्रसिद्ध है।

े इंग्लोन्हार-तीर्थ-रेवड़ी तालाव से दूर पश्चिम कुछ दक्षिण 'संख्रुधारा तीर्थ', 'द्वारका तीर्थ', 'दुर्वीसा ऋषि', और 'कृष्ण रुक्मिणी' हैं । प्रतिवर्ष कर्क की संक्रांति भर हर सोमवार को यहां स्नान दर्शन की भीड़ होती है।

+ कामाक्षाकुंड चयह संख्धारा से दूर उत्तर है। यहां 'कामाक्षा देवी', 'बैजनाथ', काशी के अष्ट महाभैरवों में से 'कोधभैरव' और ६४ योगिनियों में से 'कामाक्षा योगिनी' हैं।

→ रामकुंड कामाक्षा-कुंड से दूर उत्तर कुछ पूर्व रामकुंड के पास 'छवेश्वर'
और 'कुशेश्वर' हैं।

† शिवगिरि का तालाव-रामकुंड से दूर पश्चिमोत्तर शिव गिरि के तालाव के पास (जो सिंगिरा कर के मिसद्ध हैं) काशी के ५६ विनायकों में से ' त्रिमुखविनायक ' और ११ महारुद्रों में से 'त्रिपुरांतक' हैं।

🕂 झाळकंटक विनायक—सिगिरा के टीलासे लग भग २ मील पश्चिम

महुआडीह में एक पक्के सरोवर के पश्चिम तट के ऊपर काशी के ५६ विना-यकों में से 'शालकण्टक विनायक' हैं।

मातृकुंड — सिगिरा के टीला से पूर्व दूर लालापुरा में 'मातृकुण्ड' तीर्थ है। काशी खंड के ९७ वें अध्याय में लिखा है कि इस बुण्ड में स्नान करने से मातृदेवी की कुपा से मनोवांखित फल मिलता है और मनुष्य माता के ऋण से छुटकारा पाता है। मातृकुण्ड से पूर्व एक मन्दिर में 'पितृश्वर' शिवलिङ्ग और काशी के ५६ विनायकों में से 'शिपपसाद विनायक' हैं; जिसके पीछे एक छोटी अंदी में 'मातृदेवी हैं। पितृश्वर के सामने 'पितृकुण्ड' एक वड़ा भारी सरोवर है।

कातमान-मात्कुंड से पश्चिमोत्तर एक नई पोखरी है, जिससे पश्चिम ओर पिशाचमोचन कुंड से थोड़ी दूर दक्षिण-पश्चिम मुसलमानों के बनारस के कबरगाहों में मशहूर एक घेरे हुए बाग में यह फातमान है। कबरों का घेरा नकाशीदार पत्थर से बना है। सबसे उत्तम नकली कबर महम्मद की पृत्री और अली की स्त्री फातमां की है, जिसको एक परसियन किव शेख़ अली हाजिर ने बनवाया था, जो बादशाह घराने का था, और पिछले शतक में भाग कर महां आया था।

खुगल बादशाह के खान्दान के लोग जो, पेन्शन पाकर शिवाला घाट के पास रहते थे, वे इस बाग़ में गाड़े गए हैं।

शीया मुसलमान लोग मुहर्रम के दसवें दिन यहां ताजिये के। दफन करते हैं।

पहम्मद साहेब सन ५७० ई० में अरब में पैदा हुए थे, जिन्होंने मुसलमानी

मजहब को क़ायम किया। सन ६२२ ई० की १६ जुलाई को शुक्र के दिन

महम्मद साहेब ने पक्के से मदीने के लिए यात्रा की। ख़लीफा जमर की
आज्ञा से मुसलमान लोग उसी दिन से अपना हिजरी सन गिनने लगे। सूर्य
के वर्ष से मुसलमानों का चन्द्रवर्ष ११ दिन छोटा है। महम्मद साहेब सन ६३२ ई०

में मर गए। फातमा महम्मद साहेब की पुत्री थी। मुहर्रम सन हिजरी का पहला

मास है। इसी महीने की १० वीं तारिक्ष को अरब में फुर्रांत नदी के किनारे

करवला के स्पक्षेत्र में फातमां के पुत्र इमाम हुसेन अपने शत्रु मुसलमानों के

हाथ से अपने कुटुम्बों के साथ शहीद हुए थे। शत्रुओं ने इमाम साहेब को जल तक म पीने दिया। इमाम का शिशु पुत्र प्यास के मारे तड़पता मर गया। मुसलमान लोग इमाम हुसेन के मरने के यादगार में मरसिया पढ़ते हैं और ताजियों को दफन करते हैं।

लक्ष्मीकुंड—फातमान से दक्षिण-पूर्व दूर दशाश्वमेध घाट से पश्चिम जाने वाली सड़क के पास लक्ष्मीकुंड महत्ले में 'लक्ष्मीकुंड' (लक्ष्मी तीर्थ) एक पका सरोवर है, जिसके निकट काशी की ९ गौरियों में से 'महालक्ष्मी' गौरी का मन्दिर है। इस मन्दिर में काशी की ६४ योगिनियों में से 'मयूरी ये गिनी' हैं। एक आंगन के एक वगल की कोटरी में महालक्ष्मी जी की मूर्ति और दूसरे बगल एक शिवमन्दिर है। लक्ष्मीकुंड से पूर्व कालीमट में काली की मूर्ति है। यहां भाद शुक्त अष्टमी से अश्वन कृष्णाष्टमी तक १६ दिन पर्यंत स्नान दर्शन का मेला होता है, जो सोरहिया का मेला कहा जाता है।

छक्ष्मीकुंड के निकट काशी के ५६ विनायकों में से 'कुंडिताक्ष विनायक' हैं।

्र सूर्य्यकुंड — लक्ष्मीकुंड से दूर पूर्वीत्तर 'खर्य्य कुंड' नामक सरोवर है, जिसके ऊपर एक छोटे मन्दिर में काशी के १२ आदित्यों में से 'सांवादित्य' हैं। मन्दिर के वाहर पश्चिम के दालान में काशी के ५६ विनायकों में से 'द्विमुख विनाय' हैं।

बहुतेरे लोग प्रतिरविवार को स्नान दर्शन को यहां आते हैं । स्वर्यकुंड कै पास नित्य पान का बाज़ार लगता है।

→ ताराचन्द की धर्मशाला—टाउनहाल से दक्षिण नीवीबाग के पूर्वोत्तर सड़क के बगल पर चौमोहानी के पास एक धर्मशाला है जिसकों ५० वर्ष से अधिक हुए, लाहौर के महाराज रणजीत सिंह के दीवान ताराचन्द नै बनवाया। नीचे बगलों में दालान और कोनों के पास कोटिरियां, और चौक के पूर्व बगल में दो छोटे मन्दिर और उपर ६ कोटिरियां हैं।

बूलानाला में काशी की ९ दुर्गाओं में से 'सिव्दिरा हुर्गा' (सिद्धमाता) हैं।

राउनहाळ-कालमेख के मन्दिर से पश्चिम ओर कम्पनीवाग से दक्षिण काशी की सबसे उत्तम इमारतों में से एक टाउनहाल है, जो हिन्दी और मूरिश ढाचे से मिलाहुआ बना है। यह ईंटे से बना है। इसका प्रधान कमरा ७३ फीट लाबा और ३२ फीट चौड़ा है, जिसमें ३०० से ४०० तक आदमी बैठ सकते हैं। इसके फाटक के ऊपर मार्चुल के तस्ते पर जिलालेख है, जिससे जान पड़ता है कि टाउनहाल को हिज हाईनेस महाराज विजयानगरम् के० सी० एस० आई० ने बनवाया। इसका काम सन १८७३ ई० में आएंभ और सन १८७६ में समाप्त हुआ । सन १८७६ ई० में एच० आर० एच० मिस आफ बेल्स ने इसको खोला था।

जैन मन्दिर—बनारस में दस बारह जैन मन्दिर हैं, जिनमें से एक कंपनी बाग़ के पास एक बाग़ में हैं, जिसमें जैन संतों की वहुत मूर्तियां हैं।

ं कंपनीबाग्—टाउनहाल के आगे सड़क से उत्तर बनारस के उत्तम बाग़ीं में से एक लोहे के जंगलों से घेरा हुआ 'कंपनीबाग़' है, जिसमें 'मंदा-किनी' तालाब है, जहां संध्या के समय बहुतेरे लोग हवा खाने जाते हैं। इसमें स्थान स्थान पर बैंटनें के लिये बेंच रक्खे गए हैं।

मंदाकिनी तालाब—कंपनीवाग में 'मंदाकिनी तीर्थ' तालाब है, जिस में बहुत मछलियां हैं; जो किसी से डरती नहीं । बहुत लोग इनका अस खिलाते हैं। तालाब से पूर्वोत्तर कंपनी बाग़ में 'मंदाकिनी देवी' एक बहुत छोटे मन्दिर में हैं।

→ मध्यमेश्वर शिवल्डिंग

—कंपनीबाग से उत्तर राजा शिवमसाद सी॰

प्रस॰ आई॰ की वारहदरी के निकट एक मन्दिर में काशी के ४२ लिंगों में

के 'मध्यमेश्वर' शिवलिंग हैं।

√ खिंगपुराण—(९२ वां अध्याय) शिवजी ने कहा कि काशी में मध्यमेश्वर नामक लिंग आपही मकट हुआ है।

स्वद्युराण—(कामीखंड-९७ वां अध्याय) चैत्र मुक्त अष्टमी को पध्य-

मैश्वर के दर्शन और मंदाकिनी में स्नान करने से २१ कुछ का उद्धार होता है।

न ऋणहरेश्वर—विश्वेश्वर गंज वाजार से उत्तर एक सड़क वृद्धकाल को गई है। सड़क से वाएं ओर की गली पर गणेशगंज के वाड़े के कोने पर एक छोटे मन्दिर में 'ऋणहरेश्वर' हैं, जिनसे उत्तर सड़क के किनारे एक मन्दिर में 'हवीकेश' विष्णु की मूर्ति है।

रहेश्वर—इद्धकाल नाने वाली संडक पर इद्धकाल महले के एक छोटे मन्दिर में काशी के ४२ लिगों में से 'रत्नेश्वर' शिवलिंग हैं, जिनके समीपही में पूर्व-दक्षिण काशी के अष्ट महालिंगों में से 'सतीश्वर' शिवलिंग का एक मन्दिर है, जिसमें 'अवंतिका' देवी भी हैं। यह लिंग और देवी दोनो श्रीमान पंडित रामकृष्ण दीक्षित के उद्योग से स्थापित की गईं। सतीश्वर के मन्दिर के पास एक प्राचीन कूप है, जो काशीखंड के अनुसार 'रक्तचूड़ामणि' कूप होता है।

शिवपुराण—(६ वां खंड-२१ वां अध्याय) राजा दिवोदास के काशी छोड़ने पर जब शिवजी काशी में पहुंचे, तब हिमाचल गिरिजा को देखने और उसको धन देने के निमित्त बहुत मुक्ता, मूंगा, हीरा, आदि धन अपने साथ लेकर काशी में आए। परंतु उन्होंने काशी का ऐश्वर्य देख अति लिजत हा शिव से भेंट नहीं की और रात भर में एक शिवालय बनाकर चंद्रकांतिमणि का शिवलिंग उसमें स्थापित किया। जो कुछ धन द्रव्य शिवालय बनाने से शेष रह गया था, वह इधर उधर फेंक कर अपने घर चले गए। हिमाचल ने रतन फेंक दिया था, वह अपने आप इकट्ठा होकर एक शिवलिंग बन गया। (२२ वां अध्याय) शिवजी के दो मणों ने जाकर उनसे कहा कि किसी मक्क ने आपका शिवालय बरुणा के तट पर बनाया है। शिवजी ने बरुणा नदी के तट पर पहुंच शिवालय देखा। गिरिजा ने उस लिंग का नाम 'मिरिश्वर' रक्खा शिव और गिरिजा वहांसे जब कालराज भैरव के सभीप पहुंची तो उन्होंने उससे उत्तर एक उत्तम शिवलिंग देखा। शिवजी ने उसका नाम रत्नेश्वर रक्खा। (काशीलंड के ६६ वें और ६७ वें अध्याय में यह कथा है)

्रस्कंदपुराण—(काशीखंड-६७ वां अध्याय) फाल्गुण कृष्ण १४ कौं रत्नेश्वर की यात्रा से स्त्री रत्नादि और झान प्राप्त होते हैं।

> → हरतीर्थ (हंसतीर्थ)—आलमगीरी मसजिद से पूर्व-दक्षिण 'हर-तीर्थ' नाम से प्रसिद्ध एक वड़ा सरोवर है, जिसका नाम काशीखंड में 'रुद्र-कुण्ड' लिखा है और लिखा है कि कौआ इस सरोवर में गिरने से हंस हो गया इस लिये इस सरोवर का नाम हंस तीर्थ पड़ा। सरोवर के पश्चिम घाट के ऊपर एक छोटे मन्दिर में 'हंसेश्वर' और 'रुद्रेश्वर' शिवलिंग।हैं। इस मंदिर में काशीखंड में लिखे हुए कई देवता हैं।

> स्कन्दपुराण—(काशीर्वंड-६८ वां अध्याय) चैत्र शुक्त पूर्णिमा को इंस-तीर्थ (इरतीर्थ) और कृत्तवासेश्वर की यात्रा से काशीवास का फल पाप्त होता है और फाल्गुण कृष्ण १४ की यात्रा से सर्व धर्म का फल पाप्त होता है।

> ्रस्कन्दपुराण—(काश्चीखंड-९७ वां अध्याय) आर्द्री चतुर्वश्ची के योग होने पर इंसतीर्थ में स्नान और इंसेश्वर और रूद्रेश्वर के पूजन करने से मनुष्य रुद्रलोक पाता है।

> → क्रत्तबासेश्वर—हद्धकाल की गली की दाहिनी ओर हरितीर्थ महल्ले में आलमगीरी मसजिद है। औरंगजेब के समय में 'क्रत्तवासेश्वर' के ३०० वर्ष के पुराने मन्दिर को तोड़ कर उसके सरंजाम से यह मसजिद बनी और औरंगजेब के दूसरे नाम (आलमगीर) से इसका नाम आलमगीरी मसजिद पड़ा। पत्थर के ८ खंभों की ३ पंक्तियों पर मसजिद की छत है। मसजिद की पिछलो दीवार में सन १०७७ हिजरी (सन १६६५ ई०) लिखा है। मसजिद के आगे मैदान में एक छोटे हौज में २ ६ फीट छंचा अठपहला फव्वारें का स्तम्भ है, जो काशी के ४२ लिंगों में से 'क्रत्तवासेश्वर' शिवलिंग माना जाता है। फाल्गुण की शिवरात्रि के दिन इस लिंग की पूजा की भीड़ होती है। इस स्थान से पूर्व-दक्षिण हरतीर्थ तालाब के पश्चिम काशीवासी राय ललनजी के परदादा राजा पटनीमल साहेब बहादुर के बनवाए हुए एक

/ दक्षि और

कमर

90

भाद है, i

आः एव

नगर

बार

वा

कि है।

में खि

छो

एर से

ना

विशाल मन्दिर में एक बहुत बड़ा शिवलिंग है, जिसको कोई 'कृत्तवासेश्वर' कहते हैं।

शिवपुराण—(५वां खंड-५५ वां अध्याय) महिषाखर के पुत्र गजाछर ने ब्रह्माजी से वरदान प्राप्त करके पृथ्वी को जीत लिया, परन्त जब काशी में आकर उसने उपद्रव किया तब शिवजी ने गजाछर के शिर को त्रिशूल से छेद लिया। उस समय वह पवित्र होकर शिव से विनय करने लगा। शिवजी ने गजाछर को वरदान दिया कि तेरा यह शरीर हमारा लिंग होकर कृतवासे अर के नाम से विख्यात हो, जिसके केवल दर्शन ही से मोक्ष प्राप्त होगी। यह कह कर शिवजी ने गजाछर को परम गति दी। (काशीखंड के ६८ वें अध्याय में भी यह कथा है)।

ने बुद्धकालेश्वर—विश्वेश्वर गंज बाजार से जो उत्तर सड़क गई है, उसकें मोड़ के पास एद्धकाल महला है। रक्तचूड़ामणि कूप से एद्धकाल पर्यंत के स्थान को काशीखंड में 'अवंतिका पुरी' लिखा है। काशी के ४२ लिंगों में से 'रुद्धकालेश्वर' का मन्दिर है। यह मन्दिर काशी के पुराने मन्दिरों में से हैं। पश्चिम के चौक के उत्तर किनारे पर एद्धकालेश्वर का मन्दिर हैं, जिसमें २ कोटिरयां हैं। पूर्व वाली में 'रुद्धकालेश्वर' शिवलिंग और दूसरी पश्चिमवाली में 'महाकालेश्वर' शिवलिंग हैं। मन्दिर के पास बहुत पुराना नन्दी (बैल) और छत के ऊपर आगे के दोनों कोनों के पास पत्थर के २ दीप शिखर हैं, जिन पर हजारों दीप रखने के अलग अलग स्थान हैं, जिन पर किसी उत्सव के समय दीप जलाए जाते हैं। आंगन के ३ बगलों में दालान हैं।

द्रख्य कालेश्वर के मन्दिर के पूर्व वाले चौक में उत्तर ओर 'द्रख्य काल कूप' नामक एक वड़ा कूप है, जिसके पासहीं दक्षिण 'अमृतकुंड' नामक छोटा अठ-पहला कुंड है। स्नान आदि कमें। से जो कूप का जल बाहर गिरता है, वह इसी हौज में जमा रहता है। लोग कहते हैं कि इस जल से कुछ आदि रोग छुटवें हैं और आयु बढ़ती है। बहुत रोगी इस हौज में स्नान करते हैं। श्रावण के मित रिववार को इसमें स्नान की भीड़ होती है। कूप के उत्तर एक बड़े मन्दिर

80

र्म दक्षि और कमर आद है, ! नगा

90

बा

प्च

वा कि

में खि

東京

में काशी के अष्ट महालिंगों में से 'दक्षेश्वर' शिवलिंग हैं। इस आंगन में कई शिवलिंग और देवमूर्तियां हैं। कूप के दक्षिण कुछ पश्चिम एक मन्दिर में 'हनुमान जी' की बड़ी मूर्ति है, जिसके आसपास कई पुराने मन्दिरों में बहुतेरे शिवलिंग और देवमूर्तियां हैं। अमृतकुंड के पूर्व एक कोठरी में काशी के अष्ट महाभैरवों में से ' असितांग भैरव ' हैं। हनुमान जी से पश्चिम एक लम्बे चौड़े मन्दिर में 'मालतीश्वर' शिवलिंग हैं, जिनके दर्शन पूजन का महात्स्य काशीखंड में अगहन छड़ी ६ को अधिक लिखा है।

मृत्युं जय इनका नाम काशीखंड में 'अल्पमृत्यु-हरेश्वर' लिखा है। दृद्ध-कालेश्वर के मन्दिर से कई गज़ दक्षिण पश्चिम एक गली के वगल पर मृत्युंजय का छोटा मन्दिर है, जिसके चारों ओर दरवाजे हैं। पीतल के हीज में मृत्युंजय विवर्लिंग हैं। यहां पूजा जप और दर्शन की भीड़ रहती है।

निश्वकर्माश्वर—ग्रद्धकाल से पूर्वोत्तर दुली गड़ही के निकट एक छोटे मन्दिर में 'मणिमदीपेश्वर' शिवलिंग हैं, जिनसे उत्तर धनेसरा नामक स्थान में 'धनेश्वर' शिवलिंग और 'ग्रिसंह भगवान ' हैं। यहांसे कुछ दूर पूर्वोत्तर एक बहुत बड़े मन्दिर में 'खमन्तेश्वर' शिवलिंग और 'हनुमान जी' हैं। यहां हनुमान जी के होने से इस महल्ले का नाम हन्मान फटका हुआ है। मन्दिर के उत्तर 'ऋणमोचन' और 'पापमोचन' दो सरोवर हैं, जहां भाद्र कृष्ण अमावास्या को स्त्रान का मेला होता हैं। ऋणमोचन के पिश्वम ग्वालगड्डा नामक तालाव पर एक मन्दिर में काशी के ४२ लिंगों में से ' विश्वकर्मेश्वर ' शिवलिंग हैं।

ने गोरखनाथ का मन्दिर—मन्दािकनी महल्ले में ऊंची भूमि पर, जिसको गोरख-टीला कहते हैं, एक आंगन के बीच में एक जिखरदार बड़ा मन्दिर हैं; जिसमें ऊंची गदी पर गोरखनाथ का चरण-चिन्ह है। मन्दिर के जगमोहन से आगे ३ छोटे मन्दिरों में जिबलिंग और एक में चरण-चिन्ह है। मन्दिर के बाएं कोने के पास गर्रे होज में काजी के ४२ लिंगों में से 'ष्टवेश्वर' जिबलिंग हैं। आंगन के चारों वगलों पर मकान हैं। यहां गोरख संप्रदाय के सांधु लोग रहते हैं। नृसिंह-चबूतरा—गोरख-टीले के पश्चिम कुछ दूर पर चिंसह-चबूतरा है, जहां वैशाख शुक्क १४ को संध्या के समय चिंसह-लीला होती है। इस चबूतरे से पूर्व और उत्तर रामानुज संपदाय के दो मन्दिर हैं। द्रसिंह-चबूतरे के दक्षिण एक वगीचे में 'कल्याणी देवी' का मन्दिर है।

कल्याणी देवी से दक्षिण कुछ दूर एक वगीचे में 'र्लुमान जी' की मूर्ति है, जहांसे पूर्व काशी के ४२ लिंगों में से ' जम्बुकेश्वर शिवलिंग हैं।

बेड़ेगणेश—कल्याणी देवी से दक्षिण कुछ दूर माधवदास के बाग की ओर सदर सड़क से थोड़ी दूर पर बड़े मणेश का दिन्दर है, जिनको लोग भाराज विनायक और 'वक्रनुंड विनम्यक' भी कहते हैं। मन्दिर में शिखर पर खनहला कलश और पत्राका लगी है। मन्दिर में शओर श्दार हैं। गणेश की विश्वाल मूर्ति के हाथ, पांक सूंड और सिंहासन पर चांदी लगी है और छत्र मुक्तियां हैं गणेश के बगलों में उनकी क्लियां सिद्धि और बुद्धि की मूर्तियां हैं, जिनके मुखमंडल चांदी के हैं। (गणेणपुराण के १२५ वें अध्याख में लिखा है कि ब्रह्मा जी ने अपनी पुत्री सिद्धि और बुद्धि से गणेश जी का विवाह कर दिया) मन्दिरही में गणेश जी के समीपही बांप ओर 'सिध्यष्टके वर' शिवलिंग हैं। वेरे के भीतर खास मन्दिरके बाहर दक्षिण-पूर्व काशी के ५६ विनायकों में से 'हस्तवंत विनायक ' हैं। द्वार से बाहर मूसे की बड़ी मूर्ति और दोनों ओर दीवारों में गणेश की पुरानी २ मूर्तियां हैं। आंगन के चारों ओर दालान और दो बगलों में एक एक फाटक है। फाटक के पास दीवार में मूसों के बहुत चित्र बने हैं। मन्दिर के निकट गणेश पर चढ़ाने के लिए दूब बिकती है। बड़ेगणेश का वर्तिमान मन्दिर लगभग ५० वर्ष का बना हुआ है।

मायकृष्ण ४ को यहां दर्शन की बड़ी भीड़ होती है।

रकन्दपुराण—(काशीखंड-१०० वां अध्याय)माघकृष्ण ४ को वऋतुण्ड की यात्रा से वर्षपर्यंत विध्न नहीं होता।

ेवड़े गणेश से दक्षिण-पश्चिम इसी महल्ले में एक कोठरी में जगनाथ, बल-भद्र और सौभद्रा की मूर्तियां हैं, जिनसे दक्षिण कुछ दूर राजा बेतिया का वि- √ दक्षि और

90

कमर भाद

है, नगाः

भाः एच

बाः

वा वि

ii Fe

छो

₹

शाल मन्दिर है, जिसमें काशी के ११ महा रुद्रों में से ' आषाड़ीश्वर ' शिवलिंग हैं; जिससे दक्षिण दूर तक महाराज के कई मकान चले गए हैं।

भूतभैरत—काशीपूरा महल्ले में एक कोठरी के भीतर आदमी के समान बड़ी 'भूतभैरव' दी मूर्ति है। इनकी आंख और कान ठीक है, परमुख स्पष्ट नहीं है। यह काशी के अह महाभैरवों में से 'भीषण भैरव ' हैं । जिनसे उत्तर 'कन्दुकेश्वर' शिव का मीक्षर है, जिसके दक्षिण और भूतभैरव के मन्दिर से पश्चिम काशी के ४२ लिंगों में से 'निवासेश्वर 'शिवलिंग हैं। जिसके पश्चिम-दक्षिण एक मंदिर में काशी के ४२ लिंगों में से ' क्यांग्रेश्वर 'शिवलिंग हैं। भूतभैरव से पूर्व एक बड़े मठ में 'जैगीषव्येश्वर' शिवलिंग हैं। इसी जगह जैगीषव्य गुफा गुप्त है, यहां बहुतेरे शिवलिंग और देवमूर्तियां गुप्त हैं।

जियेष्ठेश्वर—काशीपुरा महल्ले में एक वड़े मेरिर में काशी के ४२ लिंगों में से 'ज्येष्ठेश्वर' हैं। इनके दर्शन की प्रधान यात्रा ज्येष्ठ शुक्क १४ को होती है। ज्येष्ठेश्वर के निकट एक छोटे मंदिर में काशी के ५६ विनायकों में से ' ज्येष्ठ विनायक हैं। इनके दर्शन की प्रधान यात्रा ज्येष्ठ शुक्क ४ को होती है। ज्येष्ठेश्वर के मंदिर से समीपही पश्चिमोत्तर एक मंदिर में काशी की ९ गौरियों में से ' ज्येष्ठागौरी 'हैं, जिनके सामने पूर्व 'ज्येष्ठावापी' गुप्त है।

शिवपुराण—(७ वां खंड—६ वां अध्याय)शिव जी ने मंदराचल से काशी में जा कर ज्येष्ठ शुक्त १४ को जैगीषच्य की गुफा के निकट निवास किया और वहां ज्येष्ठेश्वर लिंग का स्थापित होना और ज्येष्ठा नाम देवी का प्रकट होना खना।

्रस्कंदपुराण—(काशी खंड-५७ वां अध्याय) ज्येष्ठ शुक्त ४ को ज्येष्ठ-विनायक की यात्रा से सर्व विध्न निष्टत्त होते हैं।

﴿ ६३ वां अध्याय) ज्येष्ठ शुक्क ८ को ज्येष्ठ बिनायक और ज्येष्ठा गौरी की यात्रा से सौंभाग्य फल मिलता है और ज्येष्ठ शुक्क १४ ज्येष्ठेश्वर यात्रा से शत जन्म का पाप मिद्यत्त होता है। √ (५५ वां अध्याय) आषाङ्गुक्क पूर्णिमा को आषाङ्गिश्वर की यात्रा से सर्वे
पाप निष्टत्त होता है।

काशी देवी, सप्त सागर इत्यादि—उयेष्ठेश्वर से पूर्व-दक्षिण 'काशी-वेवी' का मंदिर है। इसी जगह 'सप्तसागर' नाम से प्रसिद्ध एक कृप है, जिससे पिश्वम 'कर्णघंटा' वड़ा भारी तालाव है। इसके स्नान का मेला, आषाड़ी पूर्णिमा को होता है। यहां एक दालान में 'घंटाकर्णेश्वर' और 'व्यासेश्वर' शिवलिंग हैं। तालाव के पूर्व 'व्यासकूप 'है। यहांसे पूर्वोत्तर हरिशंकरी महल्ले में 'हरिशंकरेश्वर' नामक लिंग गुप्त है। घंटाकण तालाव से दक्षिण कुछ दूर मछरहट्टा महल्ले में 'चित्रगुप्तेश्वर' शिवलिंग हैं, जिनके पश्चिम-दक्षिण गली में काशी के ११ महा रुद्रों में से 'भारभूतेश्वर ' और ५६ विनायकों में से 'राजविनायक ' एकही मंदिर में हैं। इनसे पश्चिम-दक्षिण राजा के दरवाजे के भीतर 'किकसेश्वर' शिवलिंग का मंदिर है, जिससे पश्चिम हड़हा का तालाव है; जिसको काशीखंड में 'अस्तिक्षेप तड़ाग' के नाम से लिखा है। तालाव के निकट सराय के समीप 'हाटकेश्वर' का स्थान है, जो अब गुप्त है। इस स्थान से पूर्व एक मंदिर में किसी अक्त ने हाटकेश्वर शिवलिंग का स्थापन किया है। हड़हा तालाव से उत्तर 'भीमलोदी तीर्थ' गुप्त है। इस स्थान को भूलोटन कहते हैं। दीनानाथ के गोले के भीतर एक मकान में 'उटजेश्वर' शिवलिंग हैं।

माधवदास्त का बाग़—दीनानाथ के गोले से पूर्वोत्तर यह बाग है। बाग का दरवाजा एक गली के बगल में है। बाग के चारों ओर ऊंची दीवार और सदर सड़क की ओर बारह दरी नाम की ऊंची इमारत है। मध्य में पत्थर की एक खूबस्तत इमारत और पानी का एक होज है।

पिंस आफ वेल्स अस्पताल-दीनानाथ के गोले के उत्तर माधव दास के बाग के पश्चिम समीपही बनारस के उत्तम मकानों में से एक शिंस आफ वेल्स अस्पताल है। बड़े कमरे के ३ ओर मेहरावदार ऊंचे दालान और पीले अनेक द्वार वाले कमरे हैं। दालानों में कंगूरे के नीचे लोहे के जङ्गले लगे हैं। इसके दिहने बाएं और पीछे पक्के मकान बने हैं; जिनमें रोगियों के लिये साफ विस्तरों के साथ बहुतेरी चारपाइयां विछी हैं। यहां बिना वारिस के रोगियों को भोजन मिलता है। इसको बनारस के रईसों ने सन १८७६ ई० में जिंस आफ बेल्स के आने के स्मारक चिन्ह के लिए बनवाया।

्रे कवीरचौरा—कवीरचौरा महल्ले में वड़े २ आंगन के चारों ओर मकान और मध्य में खनहले कलस और पताका वाले गुंवजदार छोटे मंदिर में कवीर-जी का चरण-चिन्ह और एक बगल के दो मंजिले मकान में कवीर जी की गही है। गही के निकट कवीर जी की टोपी और रामानंद खामी और कवीर जी की तखीरें हैं। पैर धो कर चौगान में जाना होता है। आंगन से बाहर दीवारों से घेरा हुआ बड़ा बाग है।

यहां कबीर पंथी महंत रंगूदास साहेव हैं। यहां की गदी पर इस कम से महंत हुए (१) श्रीकवीरजों, (२) श्रुतिगोपाल साहेव, (३) ज्ञानदास साहेव (४) सामदास साहेव, (५) लालदास साहेव, (६) हरिखलदास साहेव, (७) सीतलदास साहेव, (८ खलदास साहेव, (९) हुलासदास साहेव, (१०) माधोदास साहेव, (११) कोिकलदास साहेव, (१२) रामदास साहेव, (१३) महादास साहेव, (१४) हरिदास साहेव, (१५) श्रूरणदास साहेव, (१६] पूरणदास साहेव, [१७] निर्ममदास साहेव, और [१८] वर्त्तमान रंगूदास साहेव, हैं।

क बीरजी रामानंद स्वामी के १२ चेलों में सबसे प्रसिद्ध थे। उनका मत या कि हिंदू और मुसलमान दोनों का ईश्वर एक ही है। हिंदू उनको राम और मुसलमान अली कह कर पुकारते हैं। हमको चाहिए कि सब जीवों पर दया दिख लावें और एक अद्देत को सबमें देखें। इसलिए कबीर जी हिंदू और मुसलमान दोनों को शिष्य करते थे।

कवीरपंथी संपदाय के शिष्य और वेलों में से कोई भी जीवहिंसा, महच, मांस आदि का संग्रह नहीं करता। इस संपदाय के बीजक, चौरासी अंगकी शाखी, रेखता, झुलना, अनुरागसागर, निर्भयज्ञानसागर, ज्ञानसागर, अम्बुसागर,

दक्षि और कमर

4

90

है, । सगा

भाव

एच

आ

वाः

वा कि

Ħ

ि छो

प्

विवेकसागर, स्वांसगुजार, कुरुमावली, कवीरवाणी, लक्ष्मावीध, सरोधा, मुक्तिमाल, माखोखंड, ब्रह्मनिष्ठ्यण, गुमानभंजन, इंसमुक्तावली, आदिमंगल-शब्दक्रंजी, आदि भाषा पदच में असंख्य ग्रन्थ वने हैं।

क्वीर जी की कथा — कवीरपंथियों की पुस्तक निर्भयज्ञानसागर में निम्न लिखित हत्तांत हैं — ज्येष्ठ शुक्क पूर्णिमा चंद्र वार को काशी के लैहर नामक तालाव में पुरइन के पत्र पर कवीर जी प्रकट हुए। काशी के रहने वाला अली, उपनाम बीक् जोलोहा गौना कराकर अपनी स्त्री [नीमा] के साथ अपने घर आता था। उसकी स्त्री मार्ग के लैहर तालाव में बालक क्पी कवीर जी को पा कर अपने गृह में लाई। कवीर जी लड़कपनही से ज्ञान उपने बश करने लगे।

एक समय जोलाहों ने गोवध किया, कवीर जी ने उस गऊ को जिला दिया और नीरू टोला से, जो कवीरचौरा महल्ले में है, काशी पुरा में चले गए और साधुओं से झान की वार्ता करने लगे। जब साधु लोग उनके गुरु का नाम पूछने लगे, तब कबीर जी के चित्त में आया कि मुझको गुरू बनाना चाहिए। रात्रि के समय रामानंद खामी के चरण की टोकर श्री कबीर जी के शरीर में लगी, तब उन्होंने लड़के कबीर को उठा कर कहा कि बचा राम राम कहो। कबीर जी ने उसी नाम को मंत्र मान कर रामानंद खामी को अपना गुरू समझा और अपने को उनका चेला कहाना प्रारंभ किया। रामानन्द खामी ने अपने चेलों द्वारा कबीर जी की ऐसी वात और उनके ज्ञान कथन की प्रशंसा खन कर उनको बुलाया और पर्वे की ओट में बैठा कर उनसे वार्ता लाप करने लगे। जब कबीर जी ने अपने शिख्य होने का द्वत्तांत कहा और अपूर्व ज्ञानकथन किया, तब रामानुज खामी ने प्रसन्न हो कर उनको अपने चेलों में मिला लिया। सर्वानन्द को ज्ञान की वार्ता में परास्त करने के उपरांत कबीरजी रामानंद खामी के १२ चेलों में प्रधान बनाए गए।

सिकन्दरज्ञाह [सिकंदर लोदी] जिसका राज्य सन १४८९ से १५१७ ई० तक था] के बदन में ज्वाला उठी थी, कबीर जी ने उस ज्वाला को छुडाया। 90

4

दक्षि

भौर

कपर

भाव

₹, 1

नगा

भा

एच

46

वा

Ħ

कबीर जी का मान्य देख कर सिकंदर के पीर शेख तकी को डाह हुई। उसनें कबीर जी के बध के लिये बहुतेरे उपाय किए, पर उनका कुछ नहीं हुआ। सिकंदर कबीर जी के अनेक प्रभावों को देख कर उनको अपने साथ काशी से इलाहाबाद में लेगया। एक दिन इलाहाबाद की गंगा में एक मुर्दी बहा जाता था, कबीर जी ने उसको जिला कर उसका नाम कमला रखा। यह देख कर सिकंदर और शेख तकी सबको आश्चर्य हुआ। पश्चात लोगों ने कबीर जी से कहा कि आप काशी में पर कर मुक्ति प्राप्त की जिए। कबीर जी ने कहा कि में मगह में शरीर छोड़ कर मुक्ति लूंगा। अंत में कबीर जी ने मगह में [जो गोरखपूर जिले में है] शरीर छोड़ा।

डाक्टर इंटर साहेब के बनाए हुए हिंदुस्तान के इतिहास [पहले भाग के ८ वें अध्याय] में लिखा है कि रामानुज स्वामी की गही पर बैठने वालों में रामानंद स्वामी [सन १३०० से १४०० ई० तक] ५ वें थे। उनका मठं बनारस में था, परंतु वे स्थान स्थान पर फिरते और विष्णु के नाम से एक इंश्वर का उपवेश वेते थे [रामानंद स्वामीही से बैरागी संपदाय की नेव पड़ी, जिसमें जातिभेद का बिचार कम रहता है और कमेहीं प्रधान माना जाता है] रामानंद स्वामी के १२ चेलों में कबीर साहेब जो सन १३०० से १४२० ई० तक थे, सब से प्रसिद्ध थे।

श्रीकबीरजी के जन्ममृत्यु का सन संवत भिन्न भिन्न पुस्तकों में अनेक भांति सं है। अङ्गरेजी किताब 'हिंदू इजम' में लिखा है कि कबीरजी सन ई० की १४ वीं सदी के अंत में थे। फारवेस की डिक्शनरी में है कि १५वीं सदी में थे। और सूरसाहेब की किताब में है कि १६ वीं सदी के आदि में थे।

एक शाखी में यों लिखा है कि,—

" चौदह सौ पचपन सालं गिरा चन्द्रवार एक ठाट ठए। जेठ खुदी बरसायत को पूरनमासी तिथि प्रगट भए।। बन गरज दामिनि दमके बूंदे बरचे झर लाग गए। छैहर तालाव में कमल खिले तहां कबीर भानु प्रगट भए।। इसके अनुसार सन १३९८ ई० में कबीरजी का जन्म हुआ था। दूसरी एक शास्त्री में एक दोहा यों है,—

दोहा।

सम्बत पन्द्रह सौ औ पांच मों मगहर कियो गवन।
अगहन खदी एकादशी मिले पवन सों पवन॥
इसके अनुसार कवीरजी का वेहांत १४४८ ई० में हुआ।
तीसरी शास्त्री में यह दोहा है,—

दोहा।

सम्वत पन्द्रह सौ पछतरा किया मगहर को गवन। माघ खदी एकादशी रहो पवन में पवन।

े गणिहाबाग्--वनारस के मिसद्ध धनी राय ललनजी का गणेशवाग्र नामक मनोहर बाग़ है। सड़क की ओर दो मिद्धला मकान और बाग़ के भीतर उत्तम कोठी बनी है।

पिशाचमोचन कुंड — चेतगञ्ज की सड़क के पास 'पिशाचमोचन कुंड' नामक एक बड़ो सरोवर है। दक्षिण का घाट जो टूट फूट गया है, वह ३०० वर्ष का पुराना है। पश्चिम के घाट को कहा जाता है कि लगभग १०० वर्ष हुए, कुछ वलवंत राव और कुछ मिज़ी खुर्रम शाह ने इनवाया था। उत्तर का घाट राजा मुरलीधर का बनवाया हुआ लगभग १२० वर्ष का है। अगहन शुक्र १४ को पिशाचमोचन कुंड पर मेला होता है, जो 'लोटा भण्डा' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

पूर्व के घाट से जपर छोटें छोटे कई मंदिर, 'महावीरजी ' 'कपर्रीश्वर ' शिवर्लिंग, काशी के ५६ विनायकों में से 'पश्चीस्य विनायक ' [पांच खंड़ वाले,] एक पीपल और इमिली के हक्षों के नीचे पिशाच का एक बड़ा शिर, चतुर्भुज विष्णु, 'बाल्मीकि सुनि ' और अन्य कई शिवर्लिंग और देवमूर्तियां हैं। बाट के निकट पण्डे, पुजारियों के कई छोटे २ और क्वें मकान हैं।

ु कुण्ड के उत्तर बाल्मीकि के टीले पर 'बाल्मीकेश्वर' और अवो के ५६ विनायकों में से 'हेरम्ब विनायक' हैं।

ं शिवपुराण-[६ वां खंड-१० वां अध्याय] कपदीश्वर लिंग की बहाई 4 कौन कर सकता है। उसी स्थान पर विमलोदक है। त्रेता युग में बाल्मीकि ऋषि इसी कुण्ड [विमलोदक] पर स्नान कर तप करते थे। एक दिन ऋषि ने एक बड़े भयानक पिशान को देखा और उस पर पसन हो उसको कुण्ड क भीतर शिवलिंग दिखा कर स्नान कराया और उसके सर्वाङ्ग में भस्म लगा दी, भाव जिससे वह पिशाच मुक्ति पाकर छंदर शरीर धर शिवपुरी को चला गया। षती समय से यह कुण्ड पिशाचमोचन नाम से प्रसिद्ध हुआ। [काशीखण्ड के नगः ५४ वें अध्याय में भी यह कथा है।

✓ स्कंदपुराण—[काञ्चीखण्ड—५४ वां अध्याय] मार्गशीर्ष शुक्त १४ कों पिशाचमोचन कुण्ड में स्नान, पिण्डदान और कपदी श्वर शिव के दर्शन करने से पितरों की पिशाचयोनि से मुक्ति होती है। [५८ वां अध्याय] भाद मास की गुरू ११ और १२ को पिशाचमोचन कुण्ड में स्तान करने से पिशाच का जन्म नहीं होता। [१०० वां अध्याय] पूर्णिमा को कुण्ड के निकट पिण्डदान करने से पितरों की मुक्ति होती है।

+ हथुआ के महाराज की कोठी-पिशाचमोचन के पूर्व सारन जिलें के ह्युओं के वर्तमान महाराज कृष्णपताप शाही वहादुर की वनवाई हुई दों मिक्किली बड़ी कोटी और मंदिर हैं। घरे की लंबाई पिशाचमोचन की सरकारी संडक तक लगभग ४०० गंज है. जिसके भीतर वड़ा मैदान है। महाराज बड़ें धर्मनिष्ट और भक्त हैं। इनको काशी से अधिक स्नेह है।

👉 क्वीन्स कालेज – हथुआ के महाराज की कोठी से उत्तर सड़क के बगल पुर नारमल स्कूल कालेज के अधीन है। स्कूल से पश्चिमोत्तर यह कालेज है। उत्तरी भारत में अङ्गरेजों की बनाई हुई सबसे उत्तम इमारतों में से सह एक है। जगतगंज सड़क के पास चुनार के पत्थर से इसकी मनोहर सूरत बनाई गई है। इसमें नुकाकी का काम बहुत है। चारों कोनों और चारों दिशाओं में एक एक टावर और पतले पतले अनेक टावर हैं। नीचे मध्य में वेंद्रुत बड़ा और ऊंचा हाल है, जिसके बगलों में भीतर से दो मिक्किले कमों

दक्षि और कमर

90

₹,

भा प्च

वा

वा वि

Ĥ रि छ

हैं। बाहर चारों ओर ग्रेहराव दार बहुत से द्वार हैं। जिसके खर्च से इस कालेज का जीन हिस्सा बना है, उसका नाम अङ्गरेजी और हिन्दी अक्षरों में उस हिस्से में खोदा गया है। इस इमारत में बड़े बड़े चंदों के अतिरिक्त १२६९० पाउण्ड सरकारी खर्च पड़ा है।

कालेज के आगे पत्थर के ५ वतकों के उपर पत्थर का छोटा कड़ाई, दाइने एक होज, पीछे एक होज और पत्थर की एक धूपघड़ी है; जिसमें उत्तर कालेज के हातेही में ३२ फीट उत्ता एकही पत्थर का एक स्तम्भ खड़ा है, जो सन १८५४ ई० में उस समय के पश्चिमोत्तर देश के लेफिटनेंट गवर्नर के खर्च से गाज़ीपुर के पास गक्का के किनारे से लाकर यहाँ खड़ा किया गया था। इस स्तम्भ पर गुप्त अक्षर खोदे हुए हैं, इससे यह सन ई० की चौथी सदी का जान पहता है। कालेज के चारों ओर वाग है।

यह कालेज इलाहाबाद यूनीवर्सिटी के आधीन है। यहां कानून, अङ्गरेजी और संस्कृत विद्या पढ़ाई जाती है। कालेज के आधीन इसके हाते से बाहर एक नामल स्कूल है। कालेज और स्कूल मिल कर इनमें ७०० विद्यार्थी से अधिक हैं।

+ धूपचण्डी—कालेज से पूर्व कुछ दूर 'धूपचण्डी' का तालाव है, जिससे ऊपर एक मंदिर में 'धूपचण्डी' देवी और काशों के ५६ विनायकों में से 'विकट दिज विनायक' हैं।

्चित्रकूट-धूपचण्डी से दक्षिण 'चित्रकूट तालाव' से ऊपर एक बाग़ में काशी के ५६ विनायकों में से 'विघ्नराज विनायक ' का मंदिर हैं, जिसके आस पास कई छोटे मंदिर हैं। जिनमें से एक में राम, लक्ष्मणऔर जानकी और एक में इनुमान जी हैं।

नाटो इमिली-कालेज से लौटने पर आगे सड़क के दोनों थोर बागी की इमारेंतें मिलती हैं। माथोजी के बाग और सड़क के निकट थोड़ा मैदान है, जिसमें एक ओर इमिली का एक छोटा इस है। इसी स्थानपर रामली हैं। दक्षि और कमर

90

आट है, नग

आ **ए**च

वाः

बा कि

> ii Fe

À

के समय प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ल ११ के दिन भरतिमलाए के मेले की वड़ी भीड़ होती है।यह 'नाटी इमिली' का मेला कहलाता है। उस दिन काश्वी और दिहात के असंख्य लोग और काशीनरेश भरतिमलाए देखने आते हैं।

यागेश्वर का मंदिर—ईश्वर गंगी के निकट सड़क के दूसरे ओर होरे के भीतर एक पंदिर में काशी के ५६ विनायकों में से 'चिंतामणि विनायक' और ३ हाथ अंचे और दस वारह हाथ के घेरे में गोलाकार श्यामवर्ण काशी के ११ महारुद्रों में से 'आग्नीधेश्वर' शिवलिंग हैं, जो अब यागेश्वर कर के श्रीसद्ध हैं। पंदिर के आगे काले पत्थर का एक बड़ा नंदी है। यागेश्वर से पश्चिमोत्तर 'आग्नीध्र कुंड' ईश्वर गंगी के नाम से श्रीसद्ध है, जहां भादकुष्ण ६ को स्नान का मेला होता है।

+ गुहागङ्गा—छोटे द्वार वाली एक छोटी कोठरी है, जिसमें बैठ कर प्रवेश करने पर एक अंधेरी गुफा [भुवेवरा] देख पड़ती है, जिसको 'गुहा गङ्गा' कहते हैं। एक पैसा लेने पर यहां का पुजारी ताला खोल कर कोठरी में जाने देता है। इसके पास एक वड़ा दालान है, जिसमें यात्री टिकते हैं। गुफा के उत्तर एक वड़े वाग़ में 'अर्वशी×्वर' शिवलिङ्ग का छोटा मंदिर है।

े ज्वरहरेश्वर—जैतपुरा महल्ले में एक कोठरी के भीतर 'ज्वरहरेश्वर' शिवलिंग हैं। कोठरी के निकट बहुत छोटे चार पांच मंदिरों में शिवलिङ्ग और कई देवमूर्तियां हैं। इन कोठरियों में से एकमें सिद्धेश्वर' शिवलिङ्ग हैं। 4 वागीश्वरी का मंदिर—जैतपुरा महल्ले में आंगन के बगल के मंदिर में सिहासन के उपर बैटी हुई तांचे के सिंह पर काशी की नव दुर्गीओं में से

में सिंहासन के ऊपर बेटी हुई तांचे के सिंह पर काशी की नव दुर्गाओं में से 'स्कंदमाता' दुर्गा खड़ी हैं, जिनको 'वागी श्वरी' कहते हैं। इनका मुखमण्डल और छत्र चांदी का है। इनके बाएं ओर 'श्वामकार्तिक' की छोटी मूर्ति है। यहां छोग कहते है कि वागी श्वरी के सिंहासन से नीचे एक कोटरी में आधे आध ऊंची सरस्वती की मूर्ति है। मन्दिर के आगे अमेठी के राजा का बनवाया हुआ स्वेत सिंह खड़ा है। मंदिर के आस पास गणेश, महाबीर, आदि बहुत हैवता हैं।

नागकुआं--वागी श्वरी के मंदिर से थोड़ी दूर पर शहर के पश्चिमीत्तर हिस्से में नागकुआं महल्ले में किकोंटक तीर्थ है, जो अब 'नागकुआं' कर के प्रसिद्ध है। इसके नीवे जान वाली सीढ़ियां १५० वर्ष से अधिक की नहीं हैं।

े ऊपर मुरब्बा तालाव के समान है, जिसके ऊपर चारों दगलों पर पत्थर के मुतको नीचे मध्य में गोलाकार कुआं और चारों ओर ऊपर से कुआं के निकट तक पत्थर की सीढ़ियां हैं, अर्थात दक्षिण और पिश्रम सीधे नीचे ३८ सीढ़ियां और उत्तर तथा पूर्व लहरदार सीढ़ियां हैं। कुआं में स्नान करने के लिये इसके भीतर चक्र दार सीढ़ियां बनी है। ऊपर पत्थर में दो सर्प बने हैं।

श्रावण शुक्र ५ (नागपश्चमी) को यहां मेला होता है। लोग इस[ं] कुएं में स्नान करते हैं।

ं बाराहपुराण—(२४ वां अध्याय) कश्यप की कद्रू नामक स्त्री से अनंत, बास्तकी, आदि नागगण जन्में। इनकी संततियों से संपूर्ण जगत पूर्ण हो गया । पृथ्वी के सब जीव व्याकुल हो ब्रह्मा जी के शरण में गए । तब ब्रह्मा जी ने कोध कर बाखकी आदि सर्पी को शाप दिया कि स्वायंभुव मन्बंतर में माता के शाप से तुम सभों का क्षय होगा । पश्चात सर्वें की प्रार्थना पर ब्रह्मा जी बोले कि तुम लोग वितल, खतल और पाताल में निवास करो। फिर वैवस्वत मन्वंतर में कश्यप से जन्म छे निज माता के शाप से गरुड़ के भोजन होगे। अष्ट कुल के महानागों को छोड़ तुच्छ सर्पी को गरुड़ भोजन करेंगे। ब्रह्माजी का शापानुग्रह पंचमी तिथि को हुआ, इसलिये यह तिथि नागों को बड़ी प्यारी है। जो इस तिथि में पृथ्वी में चन्दन से वा ग मय से अथवा दूसरे किसी रंग से सर्वें की मूर्ति बना दृध से स्नान करवाकर चंद-नादि से उनकी पूजा करें और अन्नत्याग व्रत करें, वे अनेक छखों से युक्त और सपें के मीतिपात्र होते हैं और उनके कुछ में सर्ववाधा नहीं होती। ्भविष्यपुराण—(३० वें अध्याय में भी यह कथा है । और • लिखा है कि) आस्तीक मुनि ने पंचमी तिथि को नागों की रक्षा की, इसलिये पंचमी नागों को अति प्यारी हुई। (३४ वां अध्याय) श्रावण शुक्क ५ को द्वार के म् दक्षि भीर कमर भाद है,

90

नगः आः एच

बा

बा बि

> ii Fe

> > छ

ð.

दोनों और गोंवर के नाग बना कर दही, दूध, अक्षत, आदि से पूजन करे। वकरिया कुंड-सिकरीर से राजधाट को जो सड़क आई है, उसके

दक्षिण नागकुआं से उत्तर 'वर्करी कुण्ड' है जिसको वकरिया कुंड कहते हैं। यह अब गड़ंड के समान एक 'पुराना कचा तालाव है, जिसमें मही खोदी जाती है और वर्षा काल में पानी रहता है। दक्षिण ओर टूटे फूटे छोटे पक्के घाट की निज्ञानी वेख पड़ती है, जिस पर काशी के १२ आदित्यों में से 'उत्तरकी' हैं। घाट के उजड़े हुए बहुतेर पत्थर के टुकड़े बौद्धों के समय के हैं। घाट से दक्षिण सुसलमानों की कृतरें और उन्हों का एक पका मकान है, जिसके खन्मे बौद्ध इमारतीं के हैं। यहां पूर्व समय में बौद्धमत वाले लोग रहते थे।

र्मकन्दपुराण—(काशीखंड-४७ वां अध्याय) में वर्करी कुंड का द्वांत और उसमें पीषमास में स्नान का माहात्म्य कहा है और लिखा है कि पौष मास के रिव बार को उत्तरार्क की यात्रा करने से काशीबास का फल ' माप्त होता है।

रेशलपुत्री—सिकरीर से राजधाट आने वाली सड़क से वरुणा नदी के पहिंचाधाट के पास एक मन्दिर में काशी की ९ दुर्गाओं में से 'शैलपुत्री' दुर्गी। ४२ लिक्कों में से 'शैलेक्टर' और 'हुंडन' और 'मुंडन' गण हैं।

न कपालमोचन - उपर लिखी हुई सड़क से उत्तर वकरिया कुण्ड से लगभग १ मील पूर्व कपालमोचन कुण्ड नामक एक बड़ा सरोवर है, जो चारों और पत्थर की सीढ़ियों से बेरा हुआ है। भाद्र शुक्त पूर्णिमा को यहां स्नान और लाउभैरव के दर्शन पूजन का मेला होता है। कपालमोचन पंच-पुष्करिणियों में से एक है, शेष ४ पुष्करिणियों के नाम ये हैं, ऋणमीचन, पापमोचन, ऐत्रणी, बैत्रणी।

शिवपुराण—(६ वां खंड-१ हां अध्याय) ब्रह्मा बोले कि भैरव ने हमारे पांचवें शिर को काट डाला, क्योंकि मैंने उस मुख से शिव की निन्दा की थी। इसेलिब भैरव की (रंगार शिर काटने से) चांडाली हत्या लगी । इससे बे संसार भर में फिर कर काशी में आप तो तुरत उनकी इत्या जाती रही। जहां पर कि भैरव ने हमारा शिर गिराया, वहां वड़ा तीर्थ हो गया और कपाल-मोचन के नाम से ख्यात हुआ।

स्कन्दपुराण—(काशींग्वंड— ३१ वें अध्याय में कमालमोचन की कथा प्रायः शिवपुराण बाली कमालमोचन की कथा के समान हैं और १०० वें अध्याय में लिखा है कि भाद कृष्ण अमावास्या को पंच पुष्करिणी यात्रा से भैरवी यातना का भय निष्ठत्त होता है)

्वासनपुराण (२ रा अध्याय) महादेव जी ने अपने नल के अग्र आग से ब्रह्मा का शिर काट दिया। वह शिर शिवजी के नायें हाथ में स्थित हो गया। तब शिवजी विष्णु के उपदेश से श्रमण करते हुए काशी गए और कुण्ड में स्नान करने से वह कपाल जनके हाथ से छुट गया, इसी भांति कपाल-मोचन तीर्थ हुआ है।

छाठभैरव — कपाछमोत्रन को उत्तर किनारे पर पत्थर का बड़ा फूर्श सुसल्लमानों का निमानमाह है। फर्श के पश्चिम किनारे पर ए सुसलमानों की लंबी मुस्तित्द हैं और उत्तर हिस्से में पूर्व के किनारे पर ९ गन लम्बे और इतनेही चौड़े घेटे के भीतर ७ फीट जंबी और ७ फीट के घेरेकी पत्थर के ऊपर मांबे से मुद्दी हुई भैरव की लाउ है, जिसकों लाउभैरव और कपालभैरव भी कहने हैं। इसका पूजा होती है। लाउ के चारों ओर बहुत छोटे छोटे चबूतरे, पूक् छोटी पूर्ति और पत्थर का एक छोटा कुत्ता है। घेरे का द्वार दक्षिण है, इसके पीछे बहुट छोटा एक कूप है।

पहले यह लाठ मंदिर क घरे में था, जो (मंदिर) औरंगजेब के हुक्म से तोड़ दिया गया। बहुत दिनों से इस स्थान का झगड़ा हिन्दू और मुसलमानों में चुका आता है। फर्झ से पूर्व मुसलमानों की क़बरें हैं।

भादों शुक्त पूर्णिमा की कपालमोचन तीर्थ (लाइभैरव के तालाव) में स्नान और लाउभैरव के दर्शन की बड़ी भीड़ होती है।

्र स्कृत्दपुराण—(काशीखंद=१५५ वां अध्याय) भाद्र शुक्क पूर्णिमा को कुलस्तम्भ की यात्रा से भैरवी यातना का भय निवृत्त होता है। दोनो

ሪ**ቒ**)

दक्षि यह जार्त घाट १ छ

> हैं। जिल रहते

रूव वीव मार

मर्गि ४वं

से चा

हा पुष पा

4

ेक्ष्मांड विनायक-काशी के ५६ विनायकी में से 'कुष्मांड विनायक' फुलविंद्या गांव में हैं।

सारनाथ—बरुणा नदी पर पहिले पक्का पुल मिलता है, जिससे पश्चिम इमिलिया घाट के पास 'चण्डीश्वर' और काशी के ५६ विनायकों में से 'सुण्ड विनायक' हैं; और पंचकोसी की सड़क से उत्तर शहर से ३ मील धामक से थोड़ेही आगे मैदान में एक छोटे टीले पर सारनाथ शिव का छोटा मंदिर है, 1 जिसमें 'सारनाथ' और 'सोमनाथ' २ शिवलिङ्क हैं । मंदिर के पास नंदी की २ पुरानी मूर्तियां, टूटी फूटी पांच सात बौद्ध मूर्तियां, एक साधु की समाधि, एक छोटी पक्की कोटरी और एक कूप ओर मंदिर के सामने सारग तालाव नामक एक छोटा कच्चा सरोवर है।

यहां श्रावण मास में प्रति सोमवार को दर्शन पूजन का मेला होता है।

धामक (स्तूप) सारनाथ के मन्दिर से कई सौ गज की दूरी पर एक वौद्ध स्तूप है, जो धामक करके प्रसिद्ध है। धार्मिक का अपभंश धामक है। यह स्तूप नीचे से ऊपर तक ठास है। इसको नीचे का भाग चुनार के पत्थर से बना हुआ अठपहला ४३ फीट ऊंचा है। इसका ज्यास ९३ फीट और घेरा २९० फीट है। स्तूप बिना मारा का बना है हर एक पत्थर के दुकड़े ४ लोहे को कांटे से एक दूसरे में बांधे गए हैं। स्तूप के ऊपर का भाग ईंट का है। पहले इस पर गच की होगी। ऊपर के कलस पर मुलम्मे दार छत्र लगा हुआ था, नीचे के भाग के पहलों में ताक़ों के चिन्ह हैं। यह धामक यहां के मैदान से १२८ फीट ऊंचा है।

सन १८३५ ईं० में बहुत परिश्रम के सहित एक स्तम्भ स्तूप की नेव तक हुवाया गया, परंतु इससे कोई मिसद्ध बात जानी नहीं गई। परंतु साधारण तरह से जान पड़ता है कि यह स्तूप बौद्ध मत के स्मरणार्थ बना था। इसके बनने का ठीक समय ज्ञात नहीं है परंतु इसकी शक्छ से सन ईं० के ७ वें शतक का यह जान पड़ता है। इसके चारों ओर मकाना की निशानियां और आस पास टूटी फूटी एक छोटी बावछी, एक पुराना कूप, कई एक टूटी हुई

बौद्ध-मूर्तियां और ईंटों का बड़ा हैर है। इससे जान पड़ता है कि ये सब पहले के मठ, मन्दिर और भजनालय के टूटे फूटे सरंजाम हैं। सन १८३४३५ में किनगहाम और सन १८५१ ई० में कीटा साहेब ने इस स्थान को खोदाथा, जिससे मन्दिर और मकान की नेव जाहिर हुई। आग से जली हुई काठ की सस्थीरें, पिघले हुए पीतल के वर्तन, झुलसी हुई हिडडियों के देर और भोजन की बस्तुएं खोदने पर मिलीं, इससे जान पड़ा कि अचानक आग लगने से बहुत आदिमयों के साथ मकान जल गए थे। इसी जगह एक लेख मिला था, जिसमें लिखा था कि गौड़ेश्वर राजा महीपाल ने श्रीधर्मिष (बुद्ध-वेव) के पाद पत्नों की पूजा कर के काशी में १०० ईशान और चित्रघंटा निर्मान किए। श्रीस्थिरपाल और इनके छोटे भाई बसंतपाल ने बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार कर के संवत १०८३ में यह स्तूप बनवाया।

ऊपर लिखा हुआ स्तूप धामक के पास था, जिसका चिन्ह अब नहीं है। उत्तम संगतराश्ची वाली बहुत बौद्धमूर्तियां और पत्थर की दूसरी चीजें यहांसे निकाल कर बनारस के कीन्स कालेज के पास और कलकरते के अजा-यब घर में रक्खी गई हैं। और ईंटे तथा पत्थर के बहुत से असबाब इमारत बनाने के लिए यहां से शहर में गए हैं।

बुद्ध देव ने गया से आकर और बहुत दिनों तक यहां रह कर उपदेश किया था। बौद्ध राजाओं के समय इस स्थान का नाम सारङ्गनाथ था, जिसको अब सारनाथ कहते हैं। मगध देश के बौद्ध मत वाल गुप्त राजाओं के सयय काशी का सैंदर्य घट गया था। उस समय सारनाथही बुद्धकाशी नाम से शोभा और समृद्धि से परिपूर्ण था। धामक से कई सौ गज दूर २३ वें संत पारसनाथ का मंदिर है और यहां एक धर्मशाला और एक बाग है।

+ चौकंडी टावर—धामक से ईमील दक्षिण मैदान में चौकण्डी नामक टावर है। आस पास की भूमि से ७४ फीट ऊंचे ईट और मिट्टी के बेड़ौल पोस्ते पर २३ फीट ऊंचा इंटे से बना हुआ ८ पहला टावर है, जिसका घेरा ९० फीट है। इसके चारों ओर एक एक द्वार है। इसके भीतर और सिरे पर जाने के लिए भीतर से सीढ़ियां लगी हैं। भीतर मध्य में १५ फीट गहरा विना पानी का विगड़ा हुआ कूप है, जिसमें जाने को नीचे एक बगल से राह है।

चौकण्डी के उत्तर द्वार पर अरबी छेल है, जिससे जान पड़ता है कि यह हुमायूं बादशाह के समय सन १५३१ ई० में बना था। यहां का पुराना टावर तोड़ कर उसी के इँटे से यह चौकण्डी बनी होगी, जो अब छोरिक की कुदान कहळाती है।

पुस्ते के नीचे एक बहुत पुराना छोटा सा कुआं और टूटी हुई एक पुरानी मूर्ति है।

म्पंचक्रोशी यात्रा-काशी की परिक्रमा ४७ मील की है। पश्चकोशी यात्रा मणिकणिका घाट से आरंभ होती है। जहांसे कर्वमेश्वर ६ मील, भीम चण्डी १६ मील, रामेश्वर ३० मील, शिवपुर ३८ मील, कपिलधारा ४४ मील, और मणिकर्णिका ४७ मील है, । सब स्थानों पर धर्मशाला और दकानें हैं। इनके अतिरिक्त दुसरे कई एक टिकने के स्थान हैं। अस्सी-संगम पर नरवा गांव में एक धर्मशाला, कर्दमेश्वर के पास कंदवा गांव में कई धर्मशालाएं, भीम-चण्डी में कई धर्मशालाएं, सिंधु सागर पर एक धर्मशाला, रामेश्वर गांव में कई धर्मशाळाएं, शिवपुर में कई धर्मशालाएं, (यहां युद्धिष्टिरेश्वर,अर्जुनेश्वर,भीमेश्वर, नकुलेश्वर और सहदेवेश्वर हैं, पर ये काशीरहस्य में नहीं लिखे हैं,) सारंग-तालाव पर एक धर्मशाला और कपिलधारा में कई धर्मशालाएं हैं। मणिकर्णिका से अस्सी-संगम तक गङ्का के तीर तीर अस्सी-संगम से बरणा-संगम के निकट तक सड़क द्वारा और वरणा-संगम से मणिकणिका तक गङ्का के तीर तीर चळना होता है। गंगा के बढ़ने पर पंचकोशी के यात्री गंगा के किनारे नाव पर जाते हैं। इसी पश्चक्रोशी के भीतर 'मुक्तिक्षेत्र काशी' कही जाती है। पंच-कोशी सड़क से दाहने किनारे स्थान स्थान पर देवता और सड़क के किनारों पर बड़े बड़े हुस हैं। हर मास में पश्चकोशी यात्रा की जाती है, पर यहां के छोग अगहन और फाल्गुण महीनों में विशेष कर पश्चकोशी यात्रा करते हैं। फाल्गुण मास में ठाकुरजी यात्रा के लिये जाते हैं, उस समय मार्ग में स्थान

€**6**)

दोनं

दहि यह जात

घाट १ च

हैं।

रहरे

हुन वीर

मा

र्मा भ

> से चा

स्त पु स्थान पर रामलीला और कृष्णलीला होती है। संग में गवैए लोग भी गाते बजाते अत्रीर उड़ाते जाते हैं। कंदवा, भीमचण्डी, रामेश्वर, शिवपुर, सारंग-तालाव और कपिलधारा पर टाकुरजी निवास करते हैं।

काशीरहस्य के १० वें अध्याय में लिखा है कि पूर्व दिवस में ढुंढिराज का पूजन करके इस क्रम से स्नान, देवदर्शन करते हुए पश्चक्रोशी यात्रा करनी चाहिए, जिसका संक्षिप्त द्वतांत नीचे हैं,—

(मणिकणिकाघाट पर) मणिकणिका, मणिकणिकेश्वर, सिद्धिविनायकः (छिलताघाट ४) गङ्गाकेशव, छिलता देवी; (मीरघाट) जरासंधेश्वर; (मानमंदिर) सोमेश्वर, दालभ्येश्वर; (दशाश्वमेध) शूल्रटंकेश्वर, आदि बाराह, द्शाश्वमधेश्वर, बंदिदेवी; (पांडेघाट के निकट) सर्वेश्वर; (केदारघाट) केदारेश्वरः (इनुमानघाट) इनुमदीश्वरः [इनुमानघाट से पश्चिम-दक्षिण] लोलार्क, अर्क विनायकः [अस्सी-संगम] संगमेश्वरः ' प्रथम निवास-स्थान ' [दुर्गाजी के पास] दुर्गा कुण्ड, दुर्ग विनायक, दुर्गा देवी; [मार्ग में] विष्व-क्सेनेश्वरः ' द्वितीय निवास स्थान ' [कर्वमेश्वर में] कर्वमेश्वर, कर्वमतीर्थः, कर्दमकूप, सोमनाथ; [आगे क्रम से] विरूपाक्ष नीलकण्ड, नागनाथ; (आगे सड़क में) चामुंडा; (आगे गांव में) मोक्षेश्वर, करुणेश्वर; (आगे गांव में) वीरभद्रेश्वर, विकटाक्ष दुर्गा; (आगे गांव में) (काश्ची के अष्टमहाभैरवों में से) ' जन्मत्त-भैरव, ' नीलगण, कालकूट-गण; (आगे क्रम से] विमल दुर्गी, महादेव, नंदीकेश गण; (आगे गांव में) भृङ्गि-रीटि-गण, गणियः (गौरा गांव में) विरूपाक्षः (आगे ऋम से) यजेश्वर, विमलेश्वर, मोक्षदेश्वर, ज्ञानदेश्वर, अमृतेश्वर, (भीमचंडी में) गंधर्व-सागर ' तृतीय निवासस्थान ' भीमचंडी देवी, (काशी के ५६ विनायको में से] 'भीमचंड विनायक' रविरक्ताक्ष गंधर्व, नरकार्णवतारक शिव, एकपाद-गण; (आगे तालाव पर) महाभीम; (आगे गांव में] भैरव, भैरवी; (आगे) भूतनाथ, सोमनाथ; (प्रसिद्ध) सिंधुसागर; (आगे झैं।सा गांव में] कालनाथ; (आगे क्रक से) कपर्दीश्वर, कामेश्वर, गणेश्वर; (चौखंडी गांव में) बीरभद्र, चारुमुख, गणनाथ; (मसिद्ध]

No. 68 दोनं दक्षि यह जात घाव 4 4 81 जि रहरं हर वी मा पर्f 8 से

쾨

स्त

g

प

[काशी के ५६ विनायकों में] ' देहली विनायक, ' [इनके निकट] पोडश विनायकः [भुइली गांव में] [काशी के ५६ विनायकों में से] ' उइण्ड विनायक, ' उत्कलेश्वर; [आगे क्रम से] रुद्राणी, तपोभूमि; [रामेश्वर गांव में] वरुणा तीर्थ, 'चतुर्थ निवासस्थान ' [रामेश्वर में] रामेश्वर, सोमेश्वर, भरतेश्वर, लक्ष्मणेश्वर, शत्रुध्नेश्वर, भूमीश्वर, नहुपेश्वर, [वरुणापर] असंख्यात तीर्थ, असंख्यात लिंग; [कमोरा गांव में] देवसंधेश्वर; [लैन में] [५६ विनायकों में] 'पाश्रपाणि विनायकः; [स्वजुरी गांव में] पृथ्वीश्वर, स्वर्ग भूमिः [दीनदयालपुरा में] यूपसरोवरः [कपिलधारा] दृषभध्वज तीर्थ; 'पंचम निवासस्थान, ' [काशी के ४२ लिङ्गों में से] द्रपमध्वज; [कोटवा गांव में] ज्वाला नृसिंह; [गङ्गा-वरुणा-संगम] वरुणासंगम, आदि _ केञ्चन, संगमेश्वर, खर्वविनायकः [प्रहलाद घाट] पहलादेश्वरः [त्रिलोचन घाट;] त्रिलोचनेश्वर; [पंचगंगा घाट] पंचगंगा तीर्थ, विंदुमाधव; [मंगला-गौरी में] गभस्तीश्वर, मङ्गलागौरी; [शसिद्ध] वशिष्ट, वामदेव; [प्रसिद्ध] पर्वतेश्वरः [मणिकर्णिका पर] महेश्वरः [ब्रह्मनाल] सप्तावरण विनायक, [प्रसिद्ध] सिद्धिविनायक, पणिकर्णिका, विश्वेश्वर, मुक्तिमण्डप, विष्णु, वंडपाणि, ढुंढिराज, भैरव, आदित्य, मोदादिपंचविनायक।

√ लिंगपुराण—[९२ वां अध्याय] शिवजी ने कहा कि काशी में ब्रह्मा जी ने गौओं के पवित्र दुग्ध से किपलाहूद नाम तीथ रचा है और द्वपभध्वज-रूप से हमारा स्थापन किया है।

्रिवपुराण—[६ वां खंड-१७ वां अध्याय] जिस समय शिवजी पार्वती के सहित मन्दराचल से काशी में पहुंचे, उसी समय गोलोक से खनन्दा, खमना, शिला, खरभी और किपला ये ५ गौवें आ कर उनके सन्मुख खड़ी हुईं। शिवजी ने प्रसन्नता से उनकी ओर देखा। इसमें गौवों के थनों से दृध टपक कर एक कुण्ड होगया, जो किपलाहूद, के नाम से प्रसिद्ध है। शिवजी ने कहा कि जो मनुष्य इस हुद में तर्पण, श्राद्ध, आदि कर्म करेगा, उसको गया से भी अधिक फल प्राप्त होगा।

्रस्कन्दपुराण—[काशीखंड-६२ वां अध्याय] सोमवती अमावास्या को कपिल्रधारा तीर्थ में श्राद्ध करने से गयाश्राद्ध से अष्टगुण फल होता है।

रामनगर—अस्सी-संगम से १ मील दक्षिण-पूर्व गङ्गा के दिहने तट पर महाराज काशीनरेश की राजधानी रामनगर है। नगवा घाट पर पार उतारने वाली नाव रहती हैं।

इस साल की मनुष्य-गणना के समय रामनगर में ११०९३ मनुष्य थे, जिनमें ४८९९ हिन्दू और २१९४ मुसलमान।

गङ्गा की ओर महाराज के महल की शकल बहुत सुंदर हैं। इस ओर की बालकानी पर चढ़ने से काशी केशहर की खन्दर छिंब देख पड़ती हैं। गङ्गा की ओर राजमहल के एक भाग में वेदच्यास और शुकदेवजी लिंग स्वरूप हैं। बहुतेरे यात्री इनके दर्शन के लिए यहां आते हैं।

महाराज के महल से १ मील दूर राजा चेतिसंह का वनवाया हुआ एक वड़ा तालाव और एक बड़ा मन्दिर है। तालाव के चारों वगलों में सीढ़ियां हैं। मन्दिर का काम राजा चेतिसंह के समय में आरंभ और उनके पीछे के राजा के समय में समाप्त हुआ। मंदिर पर चारों ओर अवतारों, देवताओं, साधुओं और जानवरों की सैकड़ों मूर्तियां पत्थर खोद वनाई गई हैं। हिंदुओं के हाथ की कारीगरी का यह उत्तम नमूना है।

रामनगर की रामलीका प्रख्यात है। ऐसी रामलीला भारतवर्ष के दृसरे स्थान पर नहीं होती। यह मेला आश्विन महीने में एक महीने से कुछ कम दिन तक रात्रि में होता है। विजया दशमी के दिन रावणवध की लीला होती है। महाराज के संपूर्ण उत्तम असवाव हाथी, घोड़े और सवारों के सहित महाराज काशीनरेश की सवारी मेले में आती है। सवारी निकलने के समय तोपों के शब्द होते हैं। उस दिन दर्शकों की बड़ी भीड़ होती है। रात को आतशवाजी छूटती है।

इतिहास—काशी से ५ कोस दक्षिण गङ्गापुर नामक एक ग्राम है, जिसके ज़मीदार भूमिहार ब्राह्मण बाबू मनसाराम थे, जिन्होंने सन १७३० ई० में

दिल्ली के बादशाह सहस्मद शाह से राजा की पदवी प्राप्त की और सन १७३७ में जौनपुर के ज़िले में एक किला दखल किया। राजा मनसाराम के पुत्र राजा बलवंत सिंह सन् १७४० ई० में गङ्गापुर के राजा हुए। सन् १७५२ ई० के पश्चात् उन्होंने बनारस में आकर रामनगर के किले को बनवाना प्रारम्भ किया। पश्चात उनका राज्य इलाहाबाद से बक्सर तक फैल गया। सन १७७० में राजा बलवंत सिंह का बेहांत हो गया। उन्होंने अपनी पुत्री के पुत्र को गोद लिया था, परंतु उनकी मृत्यु होने के उपरांत उनकी अविवाहिता स्ली के गर्भ से जन्म हुए राजा चेतसिंह छल, बल, कैंशिल से राजसिंहासन पर देंटे।

[चेतसिंह का इत्तांत काशी के इतिहास में है]

चेतिसह के काशी से भाग जाने पर राजा वलवंतिसह की पुत्री के पुत्र राजा महीपनारायण सिंह राजिसहासन पर चैंटे, जिनके देहांत होने के उप-रांत सन १७९५ ई० में उनके पुत्र राजा उदितनारायणिसह को राजिसहा-सन मिला। राजा उदितनारायणिसिंह की मृत्युहोने पर उनके भतीजे महाराज ईश्वरीप्रसादनारायणिसिंह सन १८३५ ई० में उत्तराधिकारी हुए। इनको सन १८७७ ई० में दिल्लीदबीर में महाराज की पदवी मिली। महाराज ईश्वरी प्रसादनारायणिसिंह वहादुर सन १८८९ ई० में ७० वर्ष की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हुए। अब उनके भतीजे ३१ वर्ष की अवस्था के महाराज प्रभुनारायण सिंह बहादुर काशीनरेश हैं।

्र व्यासपुरा—रामनगर से कई मील उत्तर ओर गङ्गा के दहिने मैदान के एक छोटे मंदिर में व्यासजी लिङ्गख्य हैं।

माघ में प्रति सोमवार और शुक्रवार को व्यासजी के दर्शन का मेला होता है।

्र मत्स्यपुराण—(१८४ वां अध्याय) व्यासजी ने भिक्षा के लिए क्रोध किया, तब महादेव जी ने कहा कि आप क्रोधी हैं इसहेतु आपको काशी। क्षेत्र में बसना न होगा। तब व्यासजी बोले कि हेदेव आप वतुर्वशी और अष्टमी इन दो दिनों को मुझे यहां आने की आज्ञा दीजिए। शिवजी ने कहा

८६°

दोनं

दहि यह

जार

घाट • घ

₹.

बि

रहा

हरू वी

मा

र्मा ४

से चा

स्त पु

प

4

कि ऐसाही होगा। तब व्यासजी ने उस क्षेत्र के गुणों को जान कर उसी क्षेत्र के समीप निवास किया। [यह कथा काशीखंड के ९६ वें अध्याय में वि-स्तार से हैं]

बनारस जिल्ला—जिले के उत्तर ग़ाज़ीपुर और जौनपुर, पश्चिम और दक्षिण मिर्जापुर और पूरव विहार के शाहाबाद जिले हैं।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय बनारस जिछे में ९२७६४७ गनुष्य अर्थात् ४९६३७ पुरुष और ४५८०१० स्त्रियां थीं। सन १८८१ ई० में जिछे का क्षेत्रफळ ९९८ वर्गमील, मनुष्य-संख्या ८९२६८४ थीं, और जिनमें ८०१५५६ हिंदू, ८९३५१ मुसलमान, १७६८ क्रस्तान,७ जैन, और २ पारसी। हिंदूओं में १०४०९२ त्राह्मण, १०१०९१ चमार, ८००८८ अहीर, ५३९३० राजपूत, ४१८३४ कछी, ३६४०७ भर, २९८४९ कुमीं, २८३७६ कँहार, २०९९४ छोहार, १९९२८ तेली, १९४२२ भूमिहार, १८३५३ बनियां, १७६९६ कळ-वार, १५५४८ कायस्थ,१५२३७कुँभार,१५१३६ नोनियां, १२५१० गंडेरिया, १०३१४ नाई, ९८७० मलाह, ७७१४ सोनार, ५५८१ तांबोली, ५१६४ पासी, और शेष दूसरी जाति के लोग थे; जिनकी संख्या ५००० से कम हैं।

बनारस शहर से १६ मील नीचे गोमती नदी गङ्गा में मिली है। जिले के दक्षिण-पूर्व की सीमा पर कर्मनाशा नदी है, जो सूखी ऋतुओं में खुख जाती है। वरुणा नदी सर्वदा बहती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा

िलिखितस्मृति—[११ वां श्लोक] काशी में प्रवेश कर के यदि कदाचित कोई उसको त्याग कर दुसरे स्थान पर जाता है, तो भूतगण ताली बजा कर उसको हँसते हैं।

शंख स्मृति—[१४ वां अध्याय] काशी का दान अनंत-फल-दायक है।
पाराश्वरस्मृति—[१२ वां अध्याय] संपूर्ण मरुत, वस्त्र, रुद्र, स्र्च्यं, और
वेवता ग्रह्य के समय चंद्रमा में लीन होते हैं, इसलिये ग्रह्य में दाह वेना
चाहिए।

W 35

66

दि

यह

जार

घाव

18

₹1

নি

रहाँ

हर वी

मा

पर्

8

से

च स्त

Ţ

प

ं संवर्त्तस्मृति—[,२११ वां श्लोक] चंद्र और स्वयं के ग्रहण में दिया हुआ दान अक्षय होता है।

महाभारत—[वनपर्व-८४ वां अध्याय] तीर्थसेवी पुरुष को काशी पुरी में जा कर वहां शिव की पूजा करनी चाहिए । किपलकुंड में स्नान करने से राजसूय यह का फल होता है। वहां से अविमुक्ते श्वर तीर्थ में जाना चाहिए। उन देवाधिदेव के दर्शन करतेही पुरुष ब्रह्महत्या से छूट जाता है। वहां पाण छोड़ने से मोक्ष होती है।

/[भीष्मपर्व-२४ वां अध्याय]काशीराज कुरुक्षेत्र के युद्ध में पांडवों की ओर थे।[कर्णपर्व-५ वां अध्याय] वसुदान के पुत्र ने काशीराज को मारा।

शिरा विकास पर्व ३० वां अध्याय] काशीराज्य में हरयश्व नामक एक राजा था, वह वीतह्व्य के वंशधरों के हाथ से गङ्गा-यमुना के बीच युद्ध में मारा गया। अनंतर हरयश्व का पुत्र सुवेच उस राज्य पर अभिषिक्त हुआ। बीतह्व्य के वंश वालों ने आकर उसे भी पराजित किया, तब सुवेच के पुत्र दिबोदास उस राज्य पर अभिषिक्त हुआ। महा तेजस्वी दिवोदास ने हैं हय विश्वयों के बल को जान कर इन्द्र के आश्वानुसार गङ्गा के उत्तर तट से निकट और गोमती के दक्षिण तट पर बाराणसी पुरी बसाई। राजा दिवोदास बाराणसी में बास करने लगा। तब है हय गणने फिर आकर उसपर आक्रमण किया। राजा दिवोदास ने बहुत दिनों तक संग्राम करने के पश्चात अनेक बाहनों के मारे जाने पर स्वयं दीनता अवलंबन की और पुरी परित्याग करके वहस्पति के ज्येष्ठ पुत्र भरद्वाज के आश्रम में जाकर उनके शरणागत हुआ। भरद्वाज ऋषि ने उसके लिए पुत्रकामना से यह किया, जिसके प्रभाव से राजा को प्रतईन नामक प्रसिद्ध पुत्र उत्पक्ष हुआ।

आदि ब्रह्मपुराण-[११ वां अध्याय] काशी के राजा धन्वंतिर का पुत्र केतुमान, केतुमान का पुत्र भीमरथ और भीमरथ का पुत्र दिवोदास हुआ। दिवोदास के राज्य के समय काशी शून्य हो गई थी, क्योंकि निकुंभ ने काशी को शाप दिया था कि १००० वर्ष तक यह शून्य रहेगी। शाप हो जाने के

उपरांत राजा दिवोदास ने गोमती नदी के तट पर काशीवासियों को बसा कर पुरी रच छी, जिस पुरी में पहले भद्रश्रेण्य राजा का राज्य था। दिवोदास भद्रश्रेण्य के पुत्रों को मार कर उस पुरी में अपना राज्य करने लगा।

जब दिवोदास काशी में राज्य करता था, उस समय शिव जी पार्वती की मीति के निमित्त हिमालय के समीप बसने लगे। पार्वती की माता मैना ने कहा कि है पुत्री तेरे पति महादेव सब काल में दरिद्री बने रहते हैं, इनमें कुछ शीलता नहीं है। यह बचन छन पार्वती कोध कर शिव से बोली कि मैं इस जगह नहीं बस्ंगी; जहां आप का स्थान है, वहां मुझको ले चलिए। तब महा-देवजी ने तीनों लोक में सिद्धक्षेत्र काशी पुरी को इसने थोग्य विचारा, परंतु उस समय राजा दिवोदास काशी में राज्य करता था। शिवजी निकुंभ पार्षद से बोळे कि हे राक्षस तू अभी जा कर कोमळ उपाय से काशी पुरी को शून्य बना दे। निकुंभ ने काशी पुरी में कुण्ड नाम नापित से खप्न में कहा कि तू मेरा स्थान बना दे, मैं तेरा कल्याण करूंगा। तब नापित राजा के द्वार पर निकुंभ की मूर्ति स्थापित कर नित्य पूजा करने लगा। निकुम्भ पार्षद पूजा को पाकर काशी वासियों को पुत्र, द्रव्य, आयु, इत्यादि वर देने लगा, परंतु राजा की रानी को एक पुत्र मांगने पर उसने बरद।न नहीं दिया। इससे राजा ने क्रोध कर निकुम्भ के स्थान का नाश कर दिया। तब निकुम्भ ने राजा को शाप दिया कि बिना अपराध तूने मेरा स्थान गिरा दिया है, इसिछिये तेरी पुरी आपही आप शून्य हो जायगी। उसी शाप सेकाशी शून्य हो गई [राजा गोमती के तीर जा वसा] तब महादेवजी पार्वती के सहित काशी में अपना स्थान बना कर बसने लगे।

शिवपुराण—[१ ला खंड-४ था अध्याय] सदाशिव ने उमा के साथ बिहार करने के लिये एक लोक बनाया, उस स्थान को किसी समय वे नहीं छोड़ते थे। इसी कारण उसको अविम्रक्त क्षेत्र कहते हैं। वह स्थान संपूर्ण सृष्टि के जीवों को आनन्द देने वाला है, इसलिये उसका नाम आनन्दबन है। और वह स्थान सिद्ध हप, तेज स्वरूप, ओर अद्वितीय है, इसीसे उसका नाम काशी रक्ता गया। [२ रा खंड-१७ वां अध्याय] संपूर्ण तीर्थी में से ७ पुरियों को बहुत बड़ा कहा गया है, उनमें से काशी की वड़ाई सर्वीपरि है।

(६ वां खंड-५ वां अध्याय) स्वायंभुव मन्वंतर में मनु के कुल में राजा रिपुंजय (दिवोदास) हुआ, उसने काशी में तप कर के ब्रह्मा से यह वरदान मांग लिया कि देवता आकाश में स्थित हों और नागादि पाताल में रह कर फिर पृथ्वी में न आवें। इस हत्तांत को छन कर शिवजी भी अपना लिङ्ग काशी में स्थित करके अपने गणों समेत मन्दरादल पर गए। उसी लिंग का नाम अविम्रक्त हुआ, जो काशी में वर्तमान है। (यही कथा काशीखंड के ३९ वें अध्याय में हैं) सब देवताओं के पृथ्वी छोड़ कर चले जाने पर दिवोदास काशी में राज्य करने लगा। ७ वां अध्याय) शिवजी को काशी विना नहीं रहा गया, इसलिये कुछ दिनों के पश्चात उन्होंने पहले ६४ योगिनियों को दिवोदास से काशी छुड़ाने के लिये भेजा। जब काशी में योगिनियों को दिवोदास से काशी छुड़ाने के लिये भेजा। जब काशी में योगिनियों की युक्ति न चली, तब वे मणिकणिका के आगे स्थित हो गई। (८ वां अध्याय) फिर शिवजी ने सर्व्यं को काशी में भेजा, एक वर्ष बीत गया, सर्व्यं की भी कुछ न चली; तब वे अपने १२ शरीर धर कर काशी में स्थित हुए। जिनका नाम यह है,—

१ लोलार्क, २ उत्तरार्क, ३ सांवादित्य, ४ द्रौपदादित्य, ५ मयूष दित्य, ६ खखोलकादित्य, ७ अक्षादित्य, ८ दृद्धादित्य, ९ केशवादित्य, १० विमलादित्य, ११ कनकादित्य, और १२ यमादित्य।

शिवजी ने फिर ब्रह्मा को काशी में भेजा, ब्रह्मा १० अश्वमेध यज्ञ करके काशी में रहगए। (११ वां अध्याय) शिवजी की आज्ञा से गणपित काशी में गए। (१२ वां अध्याय) गणपित का विलंव देख शिवजी ने विष्णु को काशी में भेजा। (१४ वां अध्याय) गणपित के कहने के अनुसार १८ वें दिन विष्णु ने ब्राह्मण का रूप धर, राजा दिवोदास के गृह पर जाकर उसे ज्ञान का उपदेश देकर राज्य से विमुख कर दिया और गरुड़ को शिव के समीप भेजा। (१५ वां अध्याय) राजा दिवोदास ने एक बहुत सुन्दर शिवमन्दिर बनवा

दह यह

66,

दोनं

जार घाट 4 ह

हैं। जि रहां

हर यो

HII

र्मा ४१

से चा

E U

Q Q

कर नरेश्वर के नाम से शिविछिङ्ग स्थापित किया और विमान पर चढ़ कर शिवपुरी को प्रस्थान किया। जिस स्थान से राजा शिवपुरी को गया था, वह स्थान भूपाछश्रो के नाम से बड़ा तीर्थ हुआ। जो छिङ्ग दिवोदासेश्वर नाम से प्रसिद्ध है, उसकी पूजा करने से फिर आवागमन का भय नहीं रहता (२० वां अध्याय) शिवजी मन्दराचछ से काशी में आए, उनके आने पर इन स्थानों के ब्राह्मण दर्शन के छिये आए। दण्डाघाट, मन्दािकनीतीर्थ, हंसक्षेत्र, ऋण-मोचनतीर्थ, दुवीसातीर्थ, कपाछमोचन, ऐरावतहद, भैनकुंड, वैतरणी, ध्रुवतीर्थ, पित्रकुंड, उर्वशीहद, पृथूदकतीर्थ, यक्षिणीहद, पिशाचमोचन-कुंड, मानसर, बाखकीहद, सीताहद, गौतमहद, दुर्गतिहर।

[८ वां खंड-३२ वां अध्याय] पछय के उपरांत शिवजी सब सृष्टि को अपने में छीन करके अकेछे थे, तब उनका कोई वर्ण और रूप न था। उसी निर्मुण ब्रह्म ने सगुण रूप धरने का विचार किया और तुरंत पांचमौतिक शरीर धर सगुण रूप हो कर शिव 'हर' के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनके गंमु, महेश, आदि बहुत से नाम हुए, फिर सगुण ब्रह्म ने अपने शरीर से शक्ति को उपजाया और एक रूप से दो खरूप हुए। वही शिव और शक्ति ने अपनी छीछा के निमित्त ५ कोस का एक क्षेत्र निर्माण किया, जिसको आनन्दबन, काशी, बाराणसी, अबिमुक्तक्षेत्र, रुद्रक्षेत्र, और महाश्मशान आदि बहुत नामों से मनुष्य जानते हैं। शिव और शक्ति ने उस स्थान में बहुत विहार किया [३३ वां अध्याय) अनंतर शिव ने अपने छिङ्क अविमुक्त अर्थात विश्वनाथ को उसी काशी में स्थापित कर दिया।

(३८ वां अध्याय) काशी में भिसद्ध लिङ्ग ये हैं,—

१ विश्वेश्वर, २ केशदेश्वर, ३ लोलाकेंश्वर, ४ महेश्वर, ५ कृतवासेश्वर, ६ दृद्धकालेश्वर, ७ कालेश्वर, ८ कल्पेश्वर, ९ पर्वतेश्वर, १० पशुपतीश्वर, ११ केदारेश्वर, १२ कामेश्वर, १३ त्रिलोचन, १४ चंडेश्वर, १५.गरुडेश्वर, १६ गोकर्णेश्वर, १७ नन्दिकेश्वर, १८ प्रीतिकेश्वर, १९ भारभूतेश्वर, २० प्रणिकणिकेश्वर, २१ रत्नेश्वर, २२ नर्भवेश्वर, २३ लांगलीश्वर, २४ घरणे- म्बर, २५ शनैश्वरेश्वर, २६ सोमेश्वर, २७ वृहस्पतीश्वर, २८ रवीश्वर, २९ संगमेश्वर, ३० हरीश्वर, ३१ हरकेशेश्वर, ३२ शैलपतीश्वर, ३३ कुँड-केश्वर, ३४ यबेश्वर, ३५ सरेश्वर, ३६ शकेश्वर, ३७ मोक्षेश्वर, ३८ रमे-श्वर, ३५ तिलभांडेश्वर, ४० गुप्तेश्वर, ४१ मध्यमेश्वर ४२ भौमेश्वर, ४३ बुधेश्वर, ४४ शुक्रेश्वर, ४५ तारकेश्वर, ४६ धनेश्वर, ४७ ऋषीश्वर, ४८ धुवेश्वर. ४९ महादेवेश्वर, ५० त्रिसंधेश्वर, ५१ कपद्दीश्वर, ५२ नीलेश्वर, ५३ सरेश्वर, ५४ ललितेश्र्र. ५५ त्रिपुरेश्वर, ५६ हरेश्वर, ५७ वाणेश्वर, २८ श्रीश्वर, और ५९ रामेश्वर,।

[९ वां खंड-५ वां अध्याय] भक्त जन ओंकार और पंचाक्षरी इन दोनों में भिन्नता नहीं समझते, क्योंकि दोनों में ५ अक्षर हैं, केवल स्वर और व्यंजन का भेद है। जब कि कोई मनुष्य काशी में मरता है, तब श्विवजी यही पंचा-सरी मंत्र उस मृतक के कान में फूंक वेते हैं, जिससे वह मुक्त हो जाता है।

लिङ्गपुराण-[पूर्वार्छ ९१ वां अध्याय) अविमुक्त क्षेत्र अर्थात काशी में जा कर किसी प्रकार से देह छोड़ने वाला पुरुष निःसंदेह शिवसायुज्य को माप्त होता है।

[९२ वां अध्याय] पूर्व काल में शिवजी विवाह करने के उपरांत पार्वती जी तथा नंदी आदि गणों को साथ ले हिमालय के शिखर से चले और अवि-मुक्त क्षेत्र में आकर अविमुक्तेश्वर लिङ्ग को देख वहांही उन्होंने निवास किया। शिवजी बीछे कि है पार्वती देखो यह हमारा आनंदवन शोभित हो रहा है। यह वौराणसी नामक हमारा गुप्त क्षेत्र सव जीवों को मोक्ष वेने वाला है। हमने कभी इस क्षेत्र का त्यांग नहीं किया और न करेंगे, इसीसे इसका नाम अविसुक्त क्षेत्र है। यहां किसी समय जीव शरीर को त्यागे, परंतु मोक्षही पाता है। हमारा भक्त जैगीषच्य सुनि इसी क्षेत्र के माहात्म्य से परम सिद्धि को माप्त हुआ । जैगीषव्य की गुफा योगियों के लिये उत्तम स्थान है। गुफा में बैंड हमारा ध्यान करने से योग की अग्नि अत्यंत दीप्त होती है। काशी चारों और ४ कोस का क्षेत्र है, इसके भीतर मृत्यु होने से अवश्य मुक्ति होती है ।

दोनं

68,

दि यह जात

घाव 4 4

₹1 बि

रहां

हुन् वी मा

से च स्त पु

अविमुक्तेश्वर अर्थात् विश्वेश्वर लिङ्ग के दर्शन करने से मनुष्य पशुपाश से विमुक्त होता है।

प्रति महीने की अष्टमी, चतुर्वशी, चंद्र और सूर्य्य के प्रहण, विषुवत और अयन संक्रांति और कार्तिकी पूर्णिमा आदि सब पर्वे में विशेष करके इस क्षेत्र का सब सेवन करते हैं। वाराणसी की उत्तर-वाहिनी गङ्का में कुरुक्षेत्र, पुष्कर, नैमिष, प्रयाग, पृथूदक, आदि अनेक तीर्थ पर्व के दिन आकर निवास करते हैं।

मत्स्यपुराण—(१८३ वां अध्याय) विद्वान लोग काश्वी में भूमि का संस्कार भी नहीं करते। यह तीर्थ पूर्व से पश्चिम २ ई योजन लंबा और उत्तर से दक्षिण ई योजन चौड़ा हैं (१७८ अध्याय से १८५ अध्याय तक काशी की कथा है)।

पद्मपुराण—(सृष्टिखंड-१४ वां अध्याय) बरुणा और अस्सी निदयों के मध्य में अविमुक्त नामक स्थान है। काशी पुरी के निकट गङ्गा उत्तर-वाहिनी और सरस्वती पश्चिम-वाहिनी हैं। पुरी के निकट २ योजन उत्तर-बाहिनी गङ्गा हैं। जो उजले रंग को छोड़ कर अन्य किसी रङ्ग का एक दृषभ और प्क गाय वहां छोड़ वेता है, वह परम पद को जाता है।

(स्वर्गतवंड—५७ वां अध्याय) विराट पुरूष के ७ धातु ७ पुरियां हैं, जिसमें अस्सी बरुणा के बीच में काशी है; जिसमें योग दृष्टि वाले ज्ञानी लोग रहते हैं।

(पातालखंड—९१ वां अध्याय) चंद्रग्रहण में बाराणसी का स्नान मोक्ष-दायक होता है।

गरुड़पुराण—(मेतकल्प-२७ वां अध्याय) अयोध्या, मथुरा, माया, काञ्ची, कांची, अवंतिका और द्वारावती यह ७ पुरी मोक्ष देने वाली हैं।

कूमेपुराण—(ब्राह्मी संहिता-३० वां अध्याय] शिवजी ने कहा कि हमारी पुरी बाराणसी सब तीथों में उत्तम है। हम कालक्ष्य धर कर यहां रह सब जगत का संहार करते हैं। चारो वरण के मनुष्य, वर्णसंकर, स्त्री, म्लेक्ष, कीट, मृग, पक्षी और अन्य सकल जंतु, जिनकी मृत्यु काशी में होती है, वे ष्ट्रपभ पर चढ़ कर शिवपुरी में जाते हैं। काशी में मृत्यु होने पर किसी पापी को नरक में जाना नहीं होता।

[३१ वां अध्याय] कत्तवासेश्वर, मध्यमेश्वर, विश्वेश्वर, ओंकारेश्वर, और कपर्दीञ्चर, बाराणसी में गुहच लिङ्ग हैं।

मार्कण्डेयपुराण-[७ वां अध्याय] त्रेता युग में हरिश्रन्द्रनामक राजा हुआ। विम्बामित्र ने राजा से उसके शरीर, स्त्री और लड़के के अतिरिक्त सम्पूर्ण राज्य, सेवक, भण्डार, आदि दान मांग लिया और उसके उपरांत उससे कहा कि जब राज्य और पृथ्वी हमारी हो चुकी तब तुम यहांसे निकल जाओ। जब राजा वहां से चला तब विम्बामित्र ने कहा कि दक्षिणा मुझे देदो। राजा बोला कि एक महीने में मैं आप की दक्षिणा दुंगा (८ वां अध्याय) राजा इरिश्चन्द्र इसलिये काशी गया कि काशी मनुष्यलोक में नहीं है। राजा वहां अपनी रानी और पुत्र को एक वृढ़े बाह्मण के हाथ बेंच कर उससे बहुत धन छे बिखामित्र को देने लगा, तव विखामित्र क्रोध कर बोले कि यह थोड़ा धन है। राजा ने और धन देने को कहा। उस समय धर्म चांडाल का रूप धारण कर वहां पहुंचा। तब विम्बामित्र बोले कि हे राजा तुम इस चंडाल की सेवा में जाओ, मैंने अर्बुद द्रव्य इससे लेकर तुमको इसके आधीन किया। चंडाल ने बहुत ताड़ना करते हुए आ, राजा को अपने गृह छे जा कर आज्ञा दी कि तुम क्मज्ञान में रात दिन रह कर जो मृतक आवें उसको देखते रहो । राजा काशी-पुरी के दक्षिण दिशा में जहां स्मशान था, वहां गया और हाथ में लकुट लिए इधर उधर घूमने और कहने लगा कि इस मृतक का इतना दाम हुआ और इतना बाक़ी है। राजा इस दाम में अपना, चांडाल का और राजा का हिस्सा लगाताथा। अनन्तर राजा हरिश्रन्द्र की स्त्री अपने पुत को, जो सर्प के काटने से मरा था, जलाने के लिये उसी इमशान में ले आई। राजा ने अपनी स्त्री को पहचाना, पीछे रानी ने भी राजा को पहचान लिया। राजा ने चिता बना कर अपने पुत्र के मृतक देह को रक्खा, तब राजा और रानी ने परमेखर का

दोनं

£6,

दहि यह

जात घाव

+ 4 ₹1

बि रहां

हर की मा

से च

स g

ध्यान किया । उस समय संपूर्ण देवता इन्द्र के सहित धर्म को आगे कर के राजा के निकट पहुंचे । इन्द्र ने हरिश्वन्द्र के पुत्र के शव पर अमृत छिड़क दिया, जिससे वह उठ बैठा । राजा हरिश्वन्द्र अपने पुत्र रोहिताम्ब को अयोध्या का राज दे कर अपनी प्रजा सहित विमान में बैठ स्वर्ग को गया।

अग्निपुराण—[११२ वां अध्याय) महादेवजी ने पार्वती से कहा है कि वाराणसी महातीर्थ है, जो यहांके बसने वालों को भुक्ति मुक्ति मदान करती है। यहां स्नान, जप, होम, श्राद्ध, दान, निवास और मरण इन सभोंही से मुक्ति माप्त होती है।

स्कन्दपुराण—(काशीखंड-४६ वां अध्याय) जब काशी में योगिनियों की युक्ति न चली, तब मन्दराचल से शिवजी ने स्वर्यं को काशी में भेंजा। स्वर्यं के अनेक रूप धर कर अनेक युक्ति करने पर भी जब शिवजी का कार्यं सिद्ध न हुआ, तब वह द्वादश रूप धर कर काशी में रह गए जिनके नाम ये हैं—

्(१) लोलार्क, (२) उत्तरार्क, (३) सांवादित्य, (४) द्रुपदादित्य, (५) मयूखादित्य, (६) खखोलकादित्य, (७) अरुणादित्य, (८) वृद्धादित्य, (९) केशवादित्य, (१०) विमलादित्य, (११) गङ्गादित्य, और (१२) यमादित्य, ।

(५७ वां अध्याय) प्रतिमास में मङ्गल बार को चतुर्थी वा चतुर्वशी होने पर ५६ बिनायक की यात्रा करनी चाहिए, जिनके नाम ये हैं,—

(१) अर्कविनायक, (२) दुर्गविनायक, (३) भीमचण्डविनायक, (४) देहलीविनायक, (५) उद्दंडविनायक, (६) पाश्रपाणिविनायक, (७) खर्वविनायग, (८) सिद्धिविनायक, (९) लम्बोदरविनायक, (१०) कृटदन्तिवनायक, (११) शालकण्टकिवनायक, (१२) कृष्पांड-विनायक, (१३) मुण्डविनायक, (१५) विकटद्विजविनायक, (१५) राजपुत्रविनायक, (१६) प्रणविवनायक, (१०) वक्रतुंडविनायक, (१८) एकदन्तिवनायक, (१९) त्रिमुखविनायक, (२०) पश्चाख्यविनायक, (२१) हेरम्बविनायक, (२२) विद्यराजिवनायक, (२३) वरदिवनायक,

68 दिह यह जात घाव 4 4 हैं। बि रहा हर वी मा च स्ट पु

(२४) मोदकपियविनायक, (२५) अभयदिवनायक. (२६) सिंहतुंडविनायक, (२७) कुंडिताक्षविनायक, (२८) क्षिप्रमसादिबनायक,
(२९) चिंतामणिविनायक, (३०) दन्तहस्तविनायक, (३१) पिचण्डिल
विनायक, (३२) उदण्डमण्डिवनायक, (३३) स्थूलदन्तिवनायक, (३४)
किलिप्रयिवनायक, (३५) चतुर्वतिनायक, (३६) द्विमुखविनायक,
(३७) ज्येष्ठविनायक, (३८) राजिवनायक, (३९) कालविनायक,
(४०) नागेशविनायक, (४१) मणिकर्णविनायक, (४२) आशाविनायक, (४३) सृष्टिविनायक, (४४) यक्षविनायक, (४५) गजकर्णविनायक, (४६) चित्रघंटिवनायक, (४७) मित्रविनायक, (४८) मङ्गल विनायक, (४९) मोदिवनायक, (५०) प्रमोदिवनायक, (५१) स्रमुख विनायक, (५२) दुर्मुखविनायक, (५३) गणनायविनायक, (५४) इान
विनायक, (५२) दुर्मुखविनायक, (५३) गणनायविनायक, (५४) इान

(७२ वां अध्याय] प्रति मास की अष्टमी, चतुर्वश्री, रवि और मङ्गस्र को अष्ट महाभैरवों की यात्रा करने से पाप निष्टत्त होता है, जिनके नाम ये हैं,—

(१) इ.इ.भैरव, (२) चण्डभैरव, (३) असितांगभैरव, (४) कपा-स्रीभैरव, (५) क्रोधभैरव, (६) उन्मत्तमरव, (७) संहारभैरव, और (८) भीषणभैरव, ।

अष्टमी, चतुर्दशी और मङ्गल वार को काशी में दुर्गति-नाशिनी दुर्गी की पूजा करनी चाहिए और चैत्र शुक्त १ से ९ पर्यंतनव दुर्गी की यात्रा और दुर्गी-कुण्ड में स्त्रान करने से ९ जन्म का पाप छुट जाता है। नव दुर्गीओं के ये नाम हैं,—

(१) श्रैलपुत्री दुर्गा, (२) ब्रह्मचारिणी दुर्गा, (३) चित्रघंटा दुर्गा, (४) कूष्मांडाख्या दुर्गा, (५) स्कन्दमाता दुर्गा, (६) काल्यायनी दुर्गा, (७) काल्रप्रात्री दुर्गा, [८] महागौरी दुर्गा, और [९] सिद्धिदा दुर्गा, । [१३ वां अध्याय] (काश्री के ४२ शिवलिङ्ग ३ भागों में) मितमास की चतुर्वश्री को ऑकारेखरादि चतुर्वश्र महालिङ्गों की यात्रा करने से शिव-

लोक पाप्त होता है। उनके नाम ये हैं,—

ा(१) औंकारेखर, (२) त्रिलोचनेखर, (३) महादेव, (४) कृत्तिवासे-खर, (५) रत्नेखर, (६) चन्द्रेखर, (७) केदारेखर, (८) धर्मेखर, (९) वीरेखर, (१०) कामेखर, (११) विक्कमें खर, (१२) मणिकणिकेखर, (१३) अविमुक्तेखर, (१४) वीखेखर।

मितमास की १४ को अमृतेष्वरादि चतुर्वश महालिङ्गों की यात्रा करने से मोक्ष की माप्ति होती है। उनके नाम ये हैं,—

(१) अमृतेष्वर, (२) तारकेष्वर. (३) ज्ञानेष्वर, (४) करुणेष्वर, (५) मोक्षद्वारेष्वर, (६) स्वर्गद्वारेष्वर, (७) ब्रह्मेष्वर, (८) लांगलीष्वर, (९) ब्रह्मेष्वर, (१०) चण्डीष्वर. (११) ब्र्षेथ्वर, (१२) नन्दिकेष्वर,

(१३) महेच्बर, (१४) ज्योतिरूपेम्बर।

शैलेखरादि चतुर्दश महालिङ्गों की यात्रा करने से सायुज्य मोक्ष की पासि होती है। जनके नाम ये हैं,—

(१) शैलेखर, (२) संगमेखर, (३ शिवलीनेखर, (४) मध्यमेखर, (५) हिरण्यगर्भेखर, (६) ईशानेखर, (७) गोपेक्षेखर. (८) हपभव्यज, (९) उपशांत शिव, (१०) ज्येष्ठेखर. (११) निवासेखर. (१२) शुक्रेखर, (१३) व्याधेखर और (१४) जम्बुकेखर।

(१०० वां अध्याय) प्रतिप्तास के शुक्क पक्ष की तृतीया को नव गौरियों की यात्रा करने से सौभाग्य मिलता है। उनके नाम ये हैं,—

(१) मुखनिर्मालिका गौरी, (२) ज्येष्ठा गौरी, (३) सौभाग्य गौरी, (४) झुगांरगौरी, (५) विश्वालाक्षी गौरी, (६) लिलता गौरी, (७) भवानी गौरी, (९) मङ्गला गौरी और (९) महालक्ष्मी गौरी।

एकादश महारुद्रों की यात्रा करने से क्षेत्रोचाटन का भय निष्टत्त होता है। उनके नाम ये हैं,—

(१) अभीभ्रेष्वर (२) उर्वशीम्बर, (३) नकुलेम्बर, (४) आषाड़ी-म्बर, (५) भारभूतेम्बर, (६) लांगलीम्बर, (७) त्रिपुरांतक, (८) मनः १४ देशें देशें यह जात घाट १ ड

ঢ়국

वी

मा

₹

प्रकामेखर, (९) प्रीतिकेखर, (१०) मदालसेखर और (११) तिल्परणेखर, ।

+ (१०० वां अध्याय) नित्य यात्रा। प्रथम सर्चेल चक्र-पुष्करको में स्नान कर
के यात्रा करे। विष्णु (सत्यनारायक,) दण्डपाकि, महेखर, हुंहिराज, ज्ञान-वापी, नन्दिकेखर, तारकेखर, महाकालेखर, पुनः दण्डपाकि, विश्वेखर, अन्नपूर्णी।

ा (१०० वां अध्याय) अष्ट महालिङ्गों की यात्रा करने से सहस्र अपराध का दोष निष्टत्त होता है। उनके नाम ये हैं,—

(१) दक्षेखर, (२) पार्वतीखर (३) पशुपतीखर (४) गंगेखर, (५) नर्भवेखर, (६) गभस्तीखर, (७) सतीखर, और (८) तारकेखर। अपितदिन अन्तर्श्ही यात्रा करनी चाहिए यथा,—

मातः स्नान कर के पंच विनायक और विखेखर को नमस्कार कर के निर्वाण मण्डप में स्थित हो, वहां से नियमयुक्त हो कर मणिकर्णिका जाय। स्नान कर के मौन हो मणिकर्णिके खर का पूजन करके नीचे लिखे हुए प्रकार से यात्रा करे,—

कमला-खतर, बाखकीखर, पर्वतेखर. गंगाकेशव, लिलता देवी, जरा-संघेखर, सोमनाथ, बाराहेखर, ब्रह्मेखर, अगस्तीखर, कश्यपेखर, हरिकेशव, बैदचनाथ, ध्रुवेखर, गोकर्णेखर, हाटकेखर, अस्तिक्षेप तड़ाग, कीकसेखर, भारभृतेखर, चित्रगृप्ते खर, चित्रघंटा दुर्गा, पशुपतीखर, पितामहेखर,कलशेखर चन्द्रेखर, बीरेखर, विद्येखर, अग्नीखर, नागेखर. हरिश्रन्द्रेखर, चिन्तामणि-विनायक; सेना-विनायक, विशिष्ट, वामदेव, त्रिसंधेखर, विश्वालाक्षी गौरी, धर्मेखर, विखवाहुका, आशा विनायक, दुद्धादित्य, चतुर्वकेखर, ब्रह्मीखर, मनः प्रकामेखर, इंशानेखर, चण्डी, चण्डीखर, भवानीशक्कर, ढुंढिराज, राज-राजेखर, लांगलीखर. नकुलीखर, परान्नेखर, परद्रव्येखर, प्रतिग्रहेखर, निकलंकेखर, मारकण्डेयेखर, अप्सरेखर, गंगेखर ज्ञानवापी, नन्दिकेश्वर, तारकेखर, महाकालेखर, दंडपाणि, महेखर, मोक्षेखर, वीरमदेखर, अविमुक्ते-खर, पंचविनायक, (मोदिवनायक, प्रमोदिवनायक, समुखविनायक, दुर्मुख- विनायक और गणनाथविनायक,) विष्णेष्णर । वहां मौन को त्याग कर मुक्ति-मण्डप में यात्रा का विसर्जन करे ।

(ऊपर लिखे हुए लिङ्गों में से पराश्रेष्कर, परद्रव्येष्कर, मित्रहेश्वर, निष्कलंकेश्वर, मारकण्डेश्वर, अप्सरेश्वर, गंगेश्वर, निन्दकेश्वर, तारकेश्वर, महाकालेश्वर, महेश्वर, मोक्षेश्वर, बीरभद्रेश्वर, और अविमुक्तेश्वर। (यह गुप्त हैं, परन्तु किसी भक्त ने दण्डपाणि के सामने छोटे मन्दिरों में पराम्नेश्वर, परद्रव्येश्वर, प्रतिग्रहेश्वर, निष्कलंकेश्वर और मारकण्डेश्वर, को स्थापन किया है।)

नेशिवलिङ्ग की प्राचीन कथा

लिंगपुराण—(पूर्वीर्छ-१७ वां अध्याय) जब १००० चौयुगी के अन्त में चिष्ठ न होने के कार स्थावर, जक्कम सब शुष्क हो गए और पश्च, पक्षी, मनुष्य, दृक्ष, आदि सब सूर्य्य के किरणों से दग्ध हो गए; पीछे समुद्र ने सब को अपने जल में डुवा दिया और अन्धकार सब ओर फैल गया; तब रजोगुण से ब्रह्मा, तमोगुण से कृद्र, सत्वगुण से विष्णु और सर्वगुणों से महेश्वर मकट हुए। ब्रह्मा ने विष्णु से अपने की बड़ा और विष्णु ने ब्रह्मा से अपने को बड़ा कहा। इसलिये बहुत काल तक दोनों में घोर युद्ध होता रहा। तब उनको झान देने के अर्थ एक लिंग प्रगट हुआ, जिसने दोनों को युद्ध से निष्ट्रच किया। उसी दिन से जगत में शिवलिंग की पूजा का प्रचार हुआ। लिंग की बेदी, पार्वती और लिंग साक्षात शिव का रूप है। सब जगत का उसीमें लिय होता है, इसलिये उसका नाम लिंग है।

(७४ वां अध्याय) शिवलिंग ६ मकार के होते हैं। शिला, रत, धातु, काष्ट्र, मृत्तिका और रंग के, जिनके ४४ भेद हैं। बेदो (अर्था) युक्त शिवलिंग के पूजन करने से शिवपार्वती दोनों की पूजा हो जाती है। लिंग के मूल गें बंह्या, मध्य में विष्णु, और अग्र भाग में प्रणव रूप सदा शिव स्थित हैं।

(देवीभागवत, पांचवां स्कंध ३३ वें अध्याय, और श्विवपुराण नवम स्वेड १५ वें अध्याय में लिंगोत्पत्ति की कथा प्रायः लिंगपुराण की कथा के समान है। श्विवपुराण के १७ वें अध्याय में लिखा है कि जिस तिथि में लिंग पकट हुआ। उसी तिथि का नाम शिवरात्रि है; और जिस स्थान पर लिंग स्वरूप होकर शिव प्रकट हुए, उस स्थान का नाम शिवालय हुआ)

शिवपुराण—(३ रा खंड-५ वां अध्याय) सती के मरने पर एक दिन शिवजी नग्न शरीर हा दारुक वन में गए। वहां मुनियों की स्लियां महा कामिनी होकर शिव से लिपट गईं। यह देख कर सब मुनीश्वरों ने शिव को शाप दिया, जिससे शिव का लिंग पृथ्वी पर गिर पड़ा और पृथ्वी के भीतर पाताल में चला गया। तब शिवजी ने अपने रूप को मलय काल के रूप के समान महा भयानक वनाया, जिससे बड़े बड़े उपद्रव होने लगे। उस समय ब्रह्मा, विष्णु, आदि सब देवताओं ने आकर शिव की स्तुति की। शिवजी ने कहा कि जो तुम लोग हमारे लिंग की पूजा करों, तो फिर हम लिंगधारण करें। जब यह बात देवताओं ने स्वीकार की, तब महादेवजी ने अपने लिंग को धारण कर लियां (वामनपुराण, छठवें अध्याय में भी यह कथा है; शिवपुराण आठवें खंड के १६ वें अध्याय में ब्रह्माजी ने कहा है कि लिंग की पूजा सनातन से हैं। कल्पभेद के अनुसार यह कथा है)

(नवां खंड-१५ वां अध्याय) लिंग और बीर अर्थात मूर्ति दोनों में शिवजी सबकी पूजा के योग्य हैं।

िलगपुराण—(पूर्वार्छ-७६ वां अध्याय) द्वष के ऊपर आरूढ़ और चन्द-कला से विभूषित शिवमूर्ति को स्थापन करने वाला पुरुष १०००० अश्वमेध के फल को पाकर शिवलोक को जाता है।

महाभारत—(अनुशासन पर्व-१६१ वां अध्याय) शिव के त्रिग्रह अथवा लिङ्क की पूजा करने से महती समृद्धि होती है।

+गणेशजी की प्राचीन कथा

शांतातप-स्पृति—(२ रा अध्याय) हाथी का वध करने वाला मनुष्य सब कामी में असिद्धार्थ होता है, इसलिये उसे चाहिए कि वह मन्दिर बनवा कर गणेश्रजी की प्रतिमा पधरावे और मन्त्रों का ज्ञाता उस मन्दिर में गणेश्रजी का छित मन्त्र जपे, कुल्थों के शांक और फलों से गणेश्रश्चांति (होम) करे।

दोन

6

दहिं यह जार

+ 5 **2**•

घाट

हैं। जि रहा

रू पी

मा

भा

से च

₽ U मत्स्यपुराण—(१५३ वां अध्याय) एक समय पार्वतीजी ने गंधयुक्त तेल का मईन और चून का उबटना लगा के अपने मैल को उतारा और मैलयुक्त उबटने का हाथी के मुख वाला एक पुरुष बनाया। फिर खेलती हुई पार्वतीजी ने उस पुत्र की गङ्गाजी में डाल दिया। वहां उसका शरीर बहुत बड़ा हो गया, तब पार्वती ने उसको पुत्र कह कर पुकारा। उसके उपरांत देवताओं ने उसका पूजन किया और ब्रह्माजी ने उसका नाम विनायक रख कर उसको सब गणों का अधिपति बनाया।

पद्मपुराण—(र्व्चर्गतंड-१३ वां अध्याय) (इसमें भी मत्स्यपुराण वाली कथा है अधिक यह है कि) जब पार्वती ने गणेश की मूर्ति को गङ्गा में डाल दिया, तब उनसे कहा कि तुम इस जल में अब डूब जाओ। परन्तु गङ्गा ने कहा कि यह हमारा पुत्र है। तब फिर देवताओं ने आकर गङ्गा से उत्पन्न होने के कारण गांगेय कह कर उनकी पूजा की, हाथी के समान मुख होने के कारण उनका नाम गजानन हुआ।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(गणेशखंढ-१ ले अध्याय से ४६ वें अध्याय तक)
पार्वती ने पुत्र के लिये बड़ा ब्रंत किया। कृष्ण के बरदान से कृष्णिहीं के अंश से
गणेश का जन्म हुआ। शिव का बीर्य विस्तर पर गिर गया, जिससे बाल्रूप् गणेश प्रकट होगए। शनिश्वर के आने पर उनकी दृष्टि से गणेश का शिर उड़ गया। विष्णु ने हाथी का शिर लाकर गणेश के धड़ में जोड़ दिया। जब गणेश ने परशुरामजी को शिव के समीप जाने से रोका, तब परशुरामजी ने गणेश का एक दांत अपने परशु से काट डाला।

शिवपुराण—(४ था खंड-१७ वां अध्याय) गिरिजा ने एक वर्ष तक प्रति-मास गणेश का व्रत किया। तब विस्तर पर शिव के बीर्य गिरने से गणेशजी बालक्ष्प से प्रकट हो गए।

(१९ वां अध्याय) पुत्रोत्सव में स्टब्बं के पुत्र शनिश्वर आए और भीतर जाकर गिरिजा की स्तुति करने लगे। गिरिजा बोली कि क्या कारण है कि तुम आधा शिर झुका कर देखते हो, तुम क्यों नहीं अच्छे प्रकार से लड़के को दोन दहि

56,

यह जात

घाट • इ

है। जि

रह

हुन वी मा

पर्

स च

g q

वेखते। क्या तुमको यह हमारा आनन्द भला नहीं लगता। शनिश्वर ने कहा कि मुझको ऐसा शाप हुआ है, कि जिसको तुम आंखों से भली भांति वेखोगे, वह जल जायगा। यह छन पार्वती अपनी सिखयों समेत बंहुत हँसी, और बोली कि हे शनिश्वर तुम हमारे पुत्र को वेखो। तब शनिश्वर ने बहुत धीरे दहिने नेत्र के कोने से बालक की ओर वेखा, जिससे तुरन्त गिरिजानन्दन का शिर जड़ गया।

(२० वां अध्याय) तब विष्णु ने हाथी का श्विर लाकर गणेश के धड़ में जोड़ दिया।

(२२ वां अध्याय) एक कल्प में गिरिजा ने अपने शरीर के मैल से एक मूर्ति बंगाई और गणपति नाम लेकर उसको जिला दिया।

(२५ वां अध्याय) गणपित ने ज्ञिय को भीतर जाने से रोका जस समय भयक्कर युद्ध हुआ। संग्राम में विष्णु ने त्रिशूल से गणपित का शिरकाटडाला और उसके पीछे हाथी का शिर लाकर गणपित के धड़ में जोड़ा गया।

(२७ वां अध्याय) ब्रह्मा आदि तीनों देवताओं ने गणेशजी से कहा कि तुम्हारी पूजा हम तीनों देवताओं के समान होगी। पहले तुम्हारी पूजा हुए विना पूजा का फल व्यर्थ होगा। तुम भाद्र कृष्ण चतुर्थी को उपने हो, इससे तुम्हारा बत चौथ को होगा।

(२८ वां अध्याय) विश्वरूप की सिद्धि और वृद्धि नामक कन्याओं से गणेश का विवाह हुआ। कितने समय के पश्चात् क्षेम और लाभ दो पुत्र जन्मे ।

वाराहपुराण—(२३ वां अध्याय) मणेश की उत्पत्ति और अभिषेक वतुर्थी के दिन हुआ, इससे चतुर्थी तिथि गणेशजी को अत्यन्त प्यारी है। जो चतुर्थी-व्रत करके गणेशजी की पूजा करता है, वह सब दुःखों से छूट जाता है।

गणेशपुराण—(उपासना खेंड-१३ वां अध्याय) ब्रह्मा, विष्णु और शिव ने गणेश का तप किया, तब गणेश ने ब्रह्मा को सृष्टि, विष्णु को पालन और शिव को नाश करने की आज्ञा दी।

काशी का इतिहास

बनारस भारतवर्ष के सबसे पुराने शहरों में से एक हैं। वृद्धदैव, जिनका जन्म सन् ई० से ६२३ वर्ष पहले और मृत्यु ५४३ वर्ष पहले हुई थी, गया से काशी में आए और वर्तमान शहर से ३ मील उत्तर सारनाथ में बहुत दिनों तक रह कर अपने मत का उपदेश करते रहे। कई एक शतकों तक बनारस वौद्धों का प्रधान स्थान था। स्वामी शक्कराचार्य ने, जो सन् ई० के नवें शतक में थे, और भारतवर्ष भर में उपदेश देते फिरे, वौद्ध मत वालों से विवाद कर के अपने उपदेश द्वारा बनारस में शिवपूजा की बड़ी उन्नति की।

सन् १०१८ ई० में ग़ज़नी के सहमूद ने बनारस में आकर यहां के राजा बनार को जीत के मार डाला और शहर को बरबाद कर दिया। सन् ११९५ ई० में महम्मद ग़ोरी ने बनारस को, जो फिह पूरा आवाद हो गया था, लूटकर शहर को उजाड़ कर डाला। इसके पिश्रात ४०० वर्ष तक काशी में कोई विश्र उपस्थित नहीं हुआ। बादशाह अक़वर के समय इसमें बहुत देवमंदिर बने। शाहजहां का पुत्र दारा, जो कि बनारस का खेदार था और जिसने उपनिषद का अनुवाद किया था, जिस जगह काशी में रहता था, उस महल्ले को दारानगर कहते हैं। दारा के दुष्ट भाई औरक्षजेब ने, जो सन् १६५८ ई० से १७०७ तक दिल्ली का वादशाह था, महम्मदगोरी के समान बनारस को उजाड़ किया। उसने अगणित मंदिरों को तोडवा डाला और कई एक मुख्य मुख्य मंदिरों के स्थानों पर मंदिरों के असवाबों से मसजिदें बनवाई। औरक्षजब के मरने पर मुसलमान बादशाह हिंदू एजेंटों द्वारा बनारस का प्रबंध करते थे।

मरहटों की बढ़ती के समय के बने हुए बहुत मंदिर और घाट बनारस में हैं।

१८ वें शतक के मध्य भाग में दिल्ली के वादशाह की ओर से राजा बलवंत सिंह दन,रस के हाकिम हुए। सन् १७७५ ई० में अवध के नवाब खुजाउदौला के मरने पर उसके पुत्र आसिफुदौला से ईष्ट इण्डियन कम्पनी को बनारस का इलाका मिला। कम्पनी ने राजा बलवंतसिंह के पुत्र (जो विवाहिता स्त्री से 68

दोनं

दहि

यह

जार

घाट

ै हैं जि रह

हर पौ मा

प

社里

न थे) राजा चेतर्सिह]को २२ लाख रुपयेसालाना कर नियत कर के बनारस के इलाक़े की बहाली का अहदनामा लिख दिया।

सन् १७७९ ई० में हिंदुस्तान के गवर्नर जनरल वारन हेष्टिंग्ज ने राजा चेतसिंह से रुष्ट हो कर फांस की लड़ाई के खर्च के लिए २२ लाख के अति-रिक्त ५ लाख रुपये सालाना जवरदस्ती मुक्रेर किया। फिर सन् १७८१ में १००० सवार भी तलव किया। राजा ने सवार देने से इनकार किया, तब गवर्नर जनरल साहेब ने राजा से ५ लाख पाउण्ड तलब किया और जल के पथ से स्वयं वनारस में आकर माधोदास के बाग़ में डेरा डाला। जब राजा चेतसिंह उसके बुलाने पर डर कर नहीं आए। तब हेल्जिन ने सन् १७८१ई० की तारीख १६ अगस्त को तिलङ्गों की २ कम्पनी ३ अङ्गरजी लेफ्टिनेंट के साथ शिवाला याट के पास वाले किले पर, जहां राजा रहते थे, पहरा भेज दिया। उस समय अङ्गरेजी सिपाहियों से राजा के मोलान्लिं की बात की बात में तकरार बढ़ गई। बलगा पारम्भ हो गया, तिलङ्गों के पास कार्तूस न थे २०५ अङ्गरेजी सिपाही अपने अप्सरों के साथ मारे गए। राजा चेतसिंह खिड़की की राह से उत्तर कर नाव पर सवार हो, गङ्गा पार रामनगर के किले में चले गए और कुछ दिनों तक अपने किले में ठहर वहां से ग्वालियर को भाग गए। वारन हेर्ष्टिग्ज बलबे के समय तो चुनार के किले में चला गया था, परंतु पीछे बनारस में आकर राजा बलवंतसिंह को लड़को के पुत्र राजा महीपनारायण सिंह को चेतिसिंह के स्थान पर बनारस का राजा बनवाया। रामनगर के वर्तमान महा-राज उन्हीं के वंशधर हैं।

सन् १७९७ ई० में अवध के नवाब आसिफुदौला के मरने पर अङ्गरेजी सरकार ने वजीर अली को अवध का नवाब बनाया। परंतु सन् १७९८ में जब जान पड़ा कि बज़ीर अली आसिफुदौला का असली पुत्र नहीं है, तब सरकार ने खजाउदौला के छोटे पुत्र सआदत अली खां को लखनऊ की गदी पर बैठा कर बज़ीर अली को पेशन नियत करके बनारस में रक्खा। जब जान पड़ा कि बज़ीरअली क़ाबुल के जमाशाह से पत्र व्यवहार करता है और फसाद उठाया चाहता है, तब सरकार ने उसको कलकत्ते जाने की आज्ञा दी। उसने इस बात से जल कर तारीख २४ जनवरी सन् १७९९ ई० को चेरी साहब एजेंट की कोठी पर आक्रमण करके उसको काट डाला और दूसरे दो अङ्गरेजों को भी मार डाला। जब अङ्गरेजी घोड़सवार पल्टन आई, तब बजीरअली बनारस से भाग गया, जो कुछ दिनों के पीछे पकड़ कर कलकत्ते भेजा गया।

सन १८५७ ई० की तारील १० मई को मेरट में बलवा आरंभ हुआ और दिल्ली, कानपुर, ललनऊ, बरैली और इलाहाबाद में फैल गया। पांच या ६ दिन में बलवे का समाचार बनारस पहुंचा। उस समय बनारस में ३ देशी रेजीमेंट और एक यूरोपियन आर्टिलरी की कम्पनी थी। युरोपियन फ़ौज में २०० आदमी से कमहीं थे, जिनको अपने से दसगुने अधिक सिपाहियों की खबरगीरी करनी पड़ी। तारील ४ जून को आजमगढ़ की देशी रेजिमेंट (पल्टन) के बाग़ी होने का समाचार आया (आज़मगढ़ बनारस से ६० मील उत्तर है) और ऐसा भी ग़ौगा छन पड़ा कि आज़मगढ़ के बागी बनारस की देशी पल्टम में मिलने के लिये कूच कर रहे हैं। उसी दिन बनारस में परेट पर देशी पल्टन को बलाकर हथियार रख देने की आज़ा हुई। उस समय पल्टन बाग़ी हो गई। दो एक अंगरेजी अफ़सर मारा गया। बलवाइयों ने कई बार बलवा किया, पर कोई आदमी मारा नहीं गया। जब सितंबर में बाग़ियों से दिली छीन ली गई और लखनऊ से बाग़ियों को भगाया गया, तब बनारस में भी अमन चैन हो गया।

जौनपुर ।

वनारस के राजघाट स्टेशन से ३९ मील (मुग़लसराय जंगशन से ४६ मील) पश्चिमोत्तर, पश्चिमोत्तर देश के बनारस विभाग में ज़िले का सदर स्थान गोमती नदी के बाएं या उत्तर किनारे पर सई नदी के संगम से लगभग १५ मील जपर एक छोटा शहर जौनपूर है। यह २५ अंश ४१ कला ३१ विकला उत्तर अक्षांश और ८२ अंश ४३ कला ३८ विकला पूर्व देशान्तर में स्थित है। CE,

दि

यह

जात

घाट

₹ ·

बि

रह

हुन पी जौनपूर के स्टेशन पर पहुंचने से ३ मील पहिले गोमती नदी पर कोहे का रेलवे पुल मिलता है।

इस साल की मनुष्य-गणना के समय जौनपुर में ४२८१९ मनुष्य थे, (२१४९४ पुरुष और २१३२५ स्त्रियां) जिनमें २५९७८ हिन्दू, १६७७१ मुसलमान और ७० क्रस्तान । मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ९४ वां और पश्चिमोत्तर देश में १७ वां शहर है।

यहां सवारी के लिये इक्के बहुत मिलते हैं और भैंसे बहुत लादे जाते हैं। यहां का तेल और अतर अच्छा होता है। रेलवे स्टेशन के पास खुली हुई सरकारी धर्मशाला है, जिसमें महराबदार खंभे लगे हैं।

गोमती का पुल-एक सीधी सड़क रेलवे स्टेशन से शहर और गोमती के पुल होकर दक्षिण ओर गई है। स्टेशन से । मील शहर और १ मील गोमती के ऊपर वादशाह अकबर का बनवाया हुआ पत्थर का प्रसिद्ध पुल है, जिसका काम सन १५६४ ई० में आरंभ होकर सन १५६८ में समाप्त हुआ था। पहले दोनो ओर बहुत दुकानें थीं, जो सन १७७४ ई० में नदी की बाढ़ से नए हो गई। कहा जाता है कि ३ लाख पाउंड पुल के बनाने में खर्च पड़ा था।

पुल के नीचे पानी में १० पाए हैं। पुल पानी से २७ फीट ऊपर है।
पुल के ऊपर की सड़क ३६० फीट लंबी और ३० फीट चौड़ी है। जिसके दोनो
बगलों पर दशों पायों के ऊपर बाहर से पहलदार झंझरीदार २० कोटिरयां हैं,
जिनमें सड़क की ओर चार चार खंभे लगे हैं। इन कोटिरयों में अनेक प्रकार
की वस्तुओं की द्काने हैं। पानी से बाहर पुल से दक्षिण इसी सड़क के
किनारों पर ऊपर लिखी हुई कोटिरियों के समान पांच पांच कोटिरयां और
उनमें दूकाने हैं। पुल के उत्तर के छोर के पास कपड़े, बरतन, और मिनहारी
की दूकानें और दक्षिण के छोर से ५०० गज आगे तक सड़क के दोनो ओर
दूकानें हैं। गोमती के दोनों किनारों पर पांच सात देव-मन्दिर बने हैं। पुल
के दक्षिण अखीर के बाजार के पास एक पत्थर का बड़ा सिंह है, जो किले
में मिला था। इस के नीचे एक युवा हाथी है।

किला—सन १३६० ई० के लगभग बना हुआ जौनपूर के सबसे पहिले की इमारत फ़िरोज का किला है। इसके दरवाजे का फाटक ४७ फीट ऊंचा है। भीतरी के फाटक से २०० फीट दूर पर १३० फीट लंबी और २२ फीट चौड़ी एक मसजिद है, जिसका मीनार (लाट) १५० फीट ऊंचा है, उसके आगे एक होज है। किले के नदी की ओर का चेहरा लाट के ३०० फीट बाद है।

अटल मसजिद—पुल से २०० गज उत्तर पोष्ट आफिस और टाउन-हाल से थोड़ी दूर पर अटल मसजिद का उत्तर दरवाजा है। मसजिद का अगला भाग ७५ फीट ऊंचा है। चौक के दक्षिण-पश्चिम के कोने के पास एक बड़ा कमरा है।

जुमा मसजिद — एक सकरी गली के छोर के पास २० फीट ऊंचे चबूतरे पर जुमा मसजिद है, जिसका काम सन १४३८ ई० में आएं भ होकर सन १४७८ में समाप्त हुआ था। दक्षिण फाटक से घुसने पर एक मेहराव के पास ८ वीं सदी का संस्कृत लेख मिलता है। मध्य मेहराव के जपर तोगरा अक्षरों में और तीसरा लेख मेहराव के वाहरी हाशिए के चारों ओर अरबी अक्षरों में है। उत्तर और दक्षिण के दरवाजों के गुंवजदार फाटक फिर बनाए गए हैं। खास मसजिद २३५ फीट लंबी और ५९ फीट चौड़ी ५६२ की है। पूर्व ८० फीट जंबी एक इमारत है। इनके अतिरिक्त जौनपुर में दूसरी ६ पुरानी मसजिवें हैं।

जौनपुर जिला—जिले के पश्चिमोत्तर और उत्तर अवध के मतापगढ़ और खल्तानपुर ज़िले, पूर्वोत्तर आज़मगढ़, पूर्व ग़ाज़ीपुर, और दक्षिण-पश्चिम बनारस, मिर्ज़ापुर और इलाहाबाद ज़िले हैं। यह ज़िला गोमती नदी से दो भागो में बट गया है, जो ज़िले में ९० मील बहती है। दुसरी बहणा नदी ज़िले में बहती है।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय जौनपुर ज़िले में १२६७१४३ मनुष्य थे, जिनमें ६३४९८० पुरुष और ६३२१६३ स्लियां। सन् १८८१ ई० में ज़िले का 68

दोनं

दहि

यह

जार

घाट

4 6

7

जि

रह

हा पी क्षेत्रफल १५५४ वर्ग मील और मनुष्य-संख्या १२०९६६३ थी जिनमें १०९५९८६ हिंदू, ११३५५३ मुसलमान और शेष १२४ दृसरे मत वाले मनुष्य थे। हिंदू मत पर चलने वालों में १८४०१९ अहीर, १७२५४३ चमार, १४९४४१ ब्राह्मण, ११५१३३ राजपूत, ४७६६६ कुमीं, २६२८७ वनिया, १५०२० कायस्थ और शेष दृसरी जातियां थीं। मुसलमानों में ९९८४९ मुझी और १३७०४ शीयाथे।

जौनपुर ज़िले के ४ कसवों में सन् १८८१ में ५००० से अधिक मनुष्य थे। इनमेंसे में ४२८४५, मछली शहर में ९२००, वादशाहपुर में ६४२३ और शाहगञ्ज में ६३१७।

जौनपुर ज़िले के मरियाह में आश्विन मास में. और करचूली में चैत्र महीने में येला लगता है, जिसमें २० हजार से २५ हजार तक यात्री और सीदागर आते हैं।

इतिहास

पूर्व समय में जौनपुर भरों के आधीन था, जो प्राचीन निवासी की एक जाति हैं। सन् १३९७ ई० से १४७८ तक सरकी खांदान के स्वाधीन मुसलमान बादशाहों की जौनपुर राजधानी था। इसके पीछे से अकवर के जीतने के समय तक यह पूरा स्वाधीन नहीं था।

्आज़मगद् ।

जौनपुर कसबे से ३० मील से अधिक पूर्वोत्तर बनारस विभाग में ज़िलेका सदर स्थान टोंस नदी के पास आज़मगढ़ १एक कसबा है, जहां अब तक रेल नहीं है।

यह २६ अंश ३ कला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश १३ कला २० विकला पूर्व वेशान्तर में स्थित है।

इस वर्ष को मनुष्य-गणना के समय इसमें १९५४२ मनुष्य थे, जिनमें १२५५९ हिन्दू, ६८३९ मुसलमान, ४३ क्रस्तान और १ पारसी।

यहां सरकारी आफ़िसें, जेल, पोष्ट आफिस और अस्पताल हैं।

आज़मगढ़ जिला—जिले के उत्तर फ़ैजाबाद और गोरखपुर, पूव बलिया, दक्षिण ग़ाज़ीपुर, और पश्चिम जौनपुर और खलतांपुर जिले हैं। जिले की मधान नदी सरयू हैं।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय आजमगढ़ जिले में १७३३५०९ मनुष्य थे; जिनमें ८६८६८६ पुरुष और ८३४८२३ स्त्रियां। सन १८८१ ई० में जिले का क्षेत्रफल २१४७ वर्गमील और मनुष्य-संख्या १६०४६५४ थीं। हिन्दू मत पर चलने वालों में २५९८१६ चमार, २५३२२९ अहीर १२४८६७ राजपूत वा ठाकुर, १०८७६९ ब्राह्मण, ७७९४२ भर, ६५२०४ कोइरी, ५६५६६ नोनियां, ५२९४७ मूमिहार, ४६१४७ कंहार, ३५५४२ कुमीं, ३०९२६ मलाह, २९३७७ कुमार, २७१७४ लोहार, २६९२४ तेली, २०६२७ पासी, १८५९२ कलवार, १५८१७ कायस्थ, १४२४४ घोवी, १३०२५ नाई, १०३७१ तांवोली, ९९६० वढ़ई, ८३५३ गड़ेरिया, ७७९० सोनार, ५६७४ बनियां, और १३४९ डोम।

जिले के ८ कसवों में इस भांति ५००० से अधिक मनुष्य थे। आज़मगढ़ में १८५२८ (सन १८९१ में १९४४२), मऊ में १४९४५ (सन १८९१ में १५५४७), मवारकपुर में १३१५७ (सन १८९१ में १४३७२), महमदाबाद में ९१५४, दुआरी में ७५०२, कोपागंज में ६३०१, पलिदपुर में ५३४३ और सरायमीरा में ५२३८

इतिहास

१४ वीं सदी के अंत में जौनपुर स्वाधीन हुआ। उस शहर के सरकी वाद-शाह ने आजमगढ़ पर अधिकार करिलया। उस खान्दान की घटती होने पर जिला दिल्ली में फिर मिलाया गया। सिकन्दर लोदी ने सिकन्दरपुर के किले को बनाया, जिसके नाम से कसबे का नाम सिकन्दरपुर पड़ा। सन १६६५ के लगभग पड़ोस के बलवान जिमीदार आजम खां ने आजमगढ़ को बसाया।

सन १८५७ की ३ री जून को देशी पैदल का १७ वां रेज़ीमेंट आजमगढ़ में बाग़ी हुआ। बागी लोग अपने अफसरों में से कई एक को मारने के उपरांत 68

दोन

दिह

यह

जार

घाव

। ह हैं जि

रा वी

म

सरकारी खजाने को फैजाबाद में छेगए। युरोपियन छोग ग्राजीपूर को भाग गए, परंतु १६ वीं जून को सरकारी सैनिक अफसर आज़मगढ़ को फिरे और सेना ग़ाज़ीपुर से भेजी गई। आज़मगढ़ कसवे पर फिर अधिकार कर लिया गया। १८ वीं जुलाई को सैनिकों ने दागियों पर आक्रमण किया, परंतु उनको पीछे हटना पड़ा। दानापुर में बलवा होने के पश्चात २८ वीं जुलाई को संपूर्ण युरोपियन लोग ग़ाज़ीपुर को चले गए। पलवारों ने तारीख ९ वीं अगस्त से २५ वीं तक आज़मगढ़ कसवे पर अपना अधिकार रक्ला, परंतु २६ वीं को गोरखों ने उनको निकाल बाहर किया। ३ री सितंबर को अंगर्जी सैनिक फिरआए । २० वीं को बेनीमाधव और पलवार लोभ परास्त हुए और सरकारी अधिकार फिरं हो गया। नवम्बर में वागी सब अतरविलया से बाहर खदेरे गए। सन १८५८ की जनवरी में नैपाल के जंगवहाहुर के आधीन गोरखों ने बाग़ियों को खदेरते हुए गोरखपूर से फैज़ाबाद की ओर कुच किया। फरवरी के मध्य में लखनऊ से आते दुए वावू कुंअरसिंह ने जिले में पवेश किया। सरकारी सैनिकों ने अतरबलिया में उन पर आक्रमण किया, परंतु वे परास्त होकर आजमगढ़ में लौट आए। कुंवरसिंह ने उन पर घेरा डाला। अपैल के मध्य में जब सरकारी सेना पहुंची, तव कुंवरसिंह घेरा उठा कर जिले से भाग गए, जो शिवउर के पास गंगा से पार होते समय गोले से मारे गए, और अपने घर को जाकर मर गए।

चौथा अध्याय।

चुनार, मिर्जापुर, और विंध्याचल ।

√ चुनार्।

सुग्रलसराय जंगशन से २० मील पश्चिम, पश्चिमोत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में तहसीली का सदर स्थान गंगा के दहिने चुनार एक छोटा कसवा है, जिस को चरणारगढ़ भी कहते हैं। इसका शुद्ध नाम चरणादि है। यह २५ अंश ७ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ८२ अंश ५५ कला १ विकला पूर्व देशांतर में 'स्थित है। चुनार क़सवा उन्नति करता हुआ देशी विद्या-विषयक समुदाय का बैठक है। इसमें टेलीग्राफ आफ़िस और अस्पताल है। चुनार में मही के बरतन बहुत खन्दर और हलके बनते हैं।

इस साल की मनुष्य-गणना के समय चुनार में ११४२३ मनुष्य थे, जिनमें ८४५३ हिन्दू, २७५७ मुसलमान, २१२ कुस्तान, और १ सिक्ख।

चुनार के पहाड़ से मकान बनाने योग्य बहुत पत्थर निकलता है।

चरणारगढ़ का किला उत्तर से दक्षिण तक लगभग ८०० गज लंबा और १३३ गज से ३०० गज तक चौड़ा और आस पास के देश से ८० फीट से १७५ फीट तक ऊंचा है। इसकी दीवारों का घरा लगभग २४०० गज है। किला अब क़ैदखाने के काम में लाया जाता है। इसमें किले की रक्षक लोटी सेना रहती है और मेग़ज़ीन तथा अनेक तोप हैं। बारक से थोड़ी दूर पर शेख छलेमान का मकवरा है, जिसके चारों ओर दूसरे बहुत मकवरे हैं। हिन्दू और मुसलमान दोनो यहां मानता करते हैं और चावल चढ़ाते हैं। भर्तहरि के योग करने का स्थान अब भी मेगजीन के भीतर किल में बना हुआ है।

गंगेश्वरनाथ महादेव, दुर्गाखोह, आचार्य कूप, भैरव जी, चक्रदेवी के स्थान इत्यादि वस्तुयें देखने योग हैं।

इतिहास

उज्जैन के राजा विक्रमादित्य के श्राता भर्तहरि राज्य से विरक्त होने के उपरांत गंगा को निकटवर्ती जान कर यहां रहेथे । कहा जाता है कि बड़ा पृथ्वी राज इस किले में रहा था। सन १०२९ ई० में राजा सहदेव ने इस किले को अपनी राजधानी वनाकर पहाड़ की कन्दरा में 'नैनी योगनी' की मूर्ति स्थापित की, इसिलये लोग चुनार को नैनीगढ़ भी कहते हैं। बर्तमान इमार्तें पिछले मुसलमान जीतने वालों की बनाई हुई हैं। बहुतेरे मालिकों के आधीन रहने के पश्चात किला पटान और मुग़ल खांदानों के आधीन हुआ। लगभग १७५० ई०

68°

दोनं

दिश

यह

जात

घाव

्ष हैं। जि

हा वी में बनारस के राजा बलवंतर्सिंह ने इसको छेलिया। सन १७६४ में यह अंगरेज़ीं के हाथ में आया।

मिर्जापुर

चुनार से २० मील (मुग़लसराय से ४० मील पश्चिम) पश्चिमोत्तर प्रवेश के बनारस विभाग में गङ्गा के दहिने किनारे पर जिले का सदर स्थान मिर्जी-पुर एक शहर है। यह २५ अंश ९ कला ४३ विकला उत्तर अक्षांश और ८२ अंश ३८ कला १० विकला पूर्व देशांतर में है।

्रइस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय मित्रीपुर में ८४१३० मनुष्य थे। (४१९२१ पुरुष और ४२२०९ स्त्रियां) जिनमें ७११७६ हिंदू, १२५६२ मुसलमान, २२८ जैन, १४७, क्रस्तान और १७ सिरुख। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ३४ वां और पश्चिमोत्तर प्रदेश में ७ वां शहर है।

शहर गङ्गा और रेलवे लाइन के वीच में है। गङ्गा के तीर पत्यर के संदर घाट बने हैं। जिनका दृश्य मनोइर है। शहर में वहुतेरे देवमन्दिर, कई एक सरोवर और वहुतेरे बड़े मकान पत्थर से बने हैं। स्टेशन से थोड़ी दूर जेलखाने से दक्षिण एक उत्तमधर्मशाला है, जिसको संवत् १९४३ में भारामल ने बनवाया। आंगन के चारों बगलों पर सुड़ेरेदार १८ कोटरियां हैं, जिनके आगे ओसारे लगे हैं; इसी में मैं टिका था। धर्मशाला से थोड़ीही दूर पर गङ्गावाई की पक्की सराय है। शहर के पूर्वोत्तर सिविल कचहरियां हैं।

मिर्जीपुर पहले रहें और ग़ल्ले की तिजारत के लिये प्रसिद्ध था, अब भी अनेक दूसरी तिजारतें होती हैं। पीतल के वर्तन बहुत दनते हैं। दूसरी जगहों से लाह लाकर चपरा तयार किया जाता है। पहाड़ी से मकान बनाने योग्य पत्थर निकलता है, सवारी के लिये बग्गी, तांगा और एक्के मिलते हैं।

्रशहर से ४मील पश्चिम विन्ध्याचल तक पक्षी सड़क के किनारे पर मील के पत्थर लगे हैं। १६ मील के पास सड़क के किनारे मिर्जापुर के मृत मड़न्त जय-रामिंगर का बड़ा शिवमन्दिर है, जिसके भीतर एकही हौज में ५ शिवलिङ्ग स्थापित हैं। मन्दिर के चारों ओर मकान और समीप की बाटिका में एक

बङ्गला है। २ ६ मील के पास इसी महन्त का दूसरा एक वड़ा शिवमन्दिर हैं, जिसके आगे दोनों बगलों पर एक एक छोटे मन्दिर और पीछे की बाटिका में एक बङ्गला है। मन्दिर से पिश्रम इसी महन्त का बनवाया हुआ उज्वला नदी पर छन्दर पुल है, जिससे होकर विन्ध्याचल की सड़क गई है। पुल के दोनों छोरों के नीचे सीढ़ियों के साथ कई कोठरियां हैं और ऊपर अठपहले तीन मिल्लिले पत्थर के छन्दर दो दो बुर्ज हैं। छोरों के बाहर सड़क के बगलों पर ओसारे के साथ कोठरियां हैं। पुल से दिक्षण इसी नदी पर रेलवे लाइन का पुल है।

महन्त के मन्दिर से ई मील उत्तर बामनजी का छोटा और पुराना मन्दिर है। दाहने हाथ में कमण्डल और बाम हाथ में छत्र लिये बामनजी खड़े हैं, आगे गरुड़ की मूर्ति है। भादों खदी १२ बामनजी का जन्म दिन है, उस दिन यहां बामनजी के दर्शन का मेला होता है। बामनजी के मन्दिर से कुछ दूर पश्चिम (दुग्धेश्वर) महादेव का छोटा मन्दिर है।

मिर्ज़ीपुर से उज्बला के पुल तक सड़क के दोनों किनारों पर इमारतों के साथ उदचान और स्थान स्थान पर मन्दिर और सरोवर वने हैं बांई ओर रेलवे लाइन देख पड़ती है, और दिहनी ओर कुछ दूर पर गङ्गा है। पुल से आगे विन्ध्याचल तक सड़क के पास कोई प्रसिद्ध वस्तु नहीं है।

मिर्ज़ापुर जिला—इसके उत्तर जीनपुर और वनारस जिले, पूर्व बिहार के शाहाबाद और छोटे नागपुर के लोहार डांगा जिले, दक्षिण छरगुज़ा का करद राज्य और पश्चिम इलाहाबाद जिला और रीवां राज्य हैं।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय इस जिले का क्षेत्रफल ५२२३ वर्ग-मील और इसमें ११५६२०५ मनुष्य थे, अर्थात् ५७४५६७पुरुष और ५८१६३८ स्त्रियां।

मिर्ज़ापुर जिले के ३ कसबों में इस वर्ष की मनुष्य गणना के समय १०००० से अधिक मनुष्य थे, जिनमें से मिर्ज़ापुर में ८४१३०, अहरौरा में ११६३१ और वुनार में ११४२३। जिले में ब्राह्मण, चमार, अहीर और मलाह अधिक हैं।

बिन्ध्याचल

विन्ध्यावल का रेलवे स्टेशन मिर्ज़ापुर के स्टेशन से ५ मील पश्चिम (सुग़लसराय से ४५ मील) है। स्टेशन से १ मील दूर मिर्ज़ापुर जिले में गङ्गा के दिहने किनारे पर विन्ध्यावल एक वड़ी वस्ती है। इसमें पण्डे लोगों हों के अधिक मकान हैं। वाजार में यात्रियों के काम के सब सामान तैयार रहते हैं। पत्थर के सिल, चकी, कुण्डी, मकान बनाने के सरंजाम और भगवती का प्रसाद छोटी चुनरी, गले और बांह में बांधने के लिये सत के रक्षा-बन्धन और खाइचीदाने विकते हैं। पहाड़ियों से पत्थर काट कर मकान के कामों के लिये दूसरे स्थानों में भेजे जाते हैं। विन्ध्यावल में बनारस के महाराज और अमेटी के राजा के उदचान हैं। स्टेशन के पूर्व एक पक्की धर्मशाला और पश्चिम नरहन के बाबू की बनवाई हुई एक दूसरी धर्मशाला है, जिसमें बहुत यात्री टिकते हैं।

भगवती, जिसका नाम पुराणों में कौशिकी और कात्यायनी लिखा है, यहां की प्रधान देवी हैं। इनका मन्दिर विन्ध्यावल बस्ती के भीतर पश्चिममुख का है। मन्दिर का दक्षिण हिस्सा काठ के जङ्गले से घरा हुआ है, जिसमें सिंह पर खड़ी रहे हाथ ऊंची भगवती की व्यामल मूर्ति है; निज मन्दिर में ७ घण्टे हैं। मन्दिर से लग हुए चारों ओर के दालानों में पण्डित लोग पाठ कहते हैं। पश्चिम के दालान में ४ बड़े घण्टे लटके हैं, इनमें जो सब से बड़ा है, उसको नैपाल के महाराज ने दिया था। (भिवष्यपुराण के उत्तरार्द्ध के ११७ वं अध्याय में लिखा है कि जो पुरुष देवालय में घण्टा, वितान, छत्र, चामर आदि चढ़ाता है, वह चक्रवतीं होता है।)

पश्चिम दालान के आगे बलिदान का प्रांगन है, जिसके पश्चिम बगल पर एक मन्दिर में १२ भुजी देवी और दूसरे में खोपड़ेश्वर महादेव, दक्षिण एक मन्दिर में महाकाली और उत्तर धर्मध्वजा हैं। भगवती के मन्दिर से दक्षिण खुला हुआ मण्डप है।

८६[.] दोन

> दहि यह

जीत घाट

を

्। रह

र वै

Ħ

मन्दिर से थोड़ा उत्तर विन्ध्येश्वर महादेव का मन्दिर है, इसके समीपहनू-मान की मूर्ति के पास पण्डे लोग यात्रियों से यात्रा सफल कराते हैं।

भगवती के पुजारी १६ हिस्सों में बटे हैं, हरएक हिस्से की फेरी १६ दिन पर आती है और जो कुछ पूजा चढ़ाई जाती है, उसमें से यहां के नियम के अनुसार पूजा चढ़ाने वाले का पण्डा भी लेता है। बस्ती में ५०० से अधिक ब्राह्मण हैं।

विन्ध्याचल से उत्तर गङ्गा की ग्ती में जमीन के बराबर के छोटे चट्टान पर बिना अर्धे के विन्ध्येश्वर नामक शिवलिङ्ग हैं। चट्टान पर एक लेख है, जिसमें से '' काशीनरेश सम्बत् १७३३ वैशाल कृष्ण ५ "पढ़ा जाता है। इसके पास दूसरे चट्टान पर घिसा हुआ दूसरा लेख है। गङ्गा के बढ़ने पर यह स्थान पानी में रहता है।

भगवती, काली और अष्टभुजी इन तीनों के दर्शन को 'त्रिकोण-यात्रा ' कहते हैं। भगवती पार्वती के शरीर से निकली थीं, इनका नाम कौशिकी, कात्यायनी, चिण्डका आदि पुराणों में लिखा है। काली चण्ड और मुण्ड से कौशिकी के युद्ध के समय कौशिकी के ललाट से निकलीं, इनका नामचामुण्डा आदि हैं; और अष्टभुजी गोकुल में नन्द के घर जन्मी, जिसको कंस ने पटका और वह आकाश को चली गई।

विन्ध्याचल से २ मील दक्षिण-पश्चिम पहाड़ी की जड़ के पास 'काली खोह' नामक स्थान में काली का एक मन्दिर हैं। काली के छोटे शरीर में बहुत बड़ा मुल हैं। यहां कोई कोई काली के लिये मुर्गी छोड़ता है, जो मन्दिर के पास रहते हैं। वहां पहाड़ी पर चढ़ने के निमित्त १०८ सीढ़ियां हैं। समत्तल और सूली पहाड़ी पर कालीखोह से पश्चिमोत्तर २ मील चलने के उपरांत हिरत जङ्गल से भरा हुआ पहाड़ी के बगल पर अष्टभुजी देवी का मन्दिर मिलता है। वहां से विन्ध्याचल तक २ मील पूर्व की ओर कची सड़क है। आधे रास्ते में रामेश्वर किव का मन्दिर है, जिससे उत्तर गङ्गा के तीर राम-गया में पिण्डदान होता है।

6

दोनं

दिध

यह

जार

घाव

14

7

वि

रह

र वी

संक्षिप्त प्राचीन कथा

महाभारत—(विराट पर्व्व-६ वां अध्याय) राजा युद्धिष्ठिर ने दुर्गा देवी की स्तुति करते समय कहा कि हे देवी विन्ध्य नामक पर्वत तुम्हारा सनातन स्थान है।

मत्स्यपुराण—(१५४ से १५६ वें अध्याय तक) शिवजी ने पार्वतीजी को काली स्वरूप वाली कहा, इससे वह कोध युक्त हो हिमालय पर्वत पर अपने पिता के उदचान में जाकर कठोर तपकरने लगी। ब्रह्माजी ने मकट होकर पार्वती से वर मांगने को कहा।गिरिजा वोली कि मेरा शरीर कांचन-वर्ण होजाय।तब ब्रह्मा ने कहा ऐसाही होगा। इसके अनन्तर पार्वती तत्कालही कांचन-वर्ण तुल्य हो गई और नीली त्वचा राजि का स्वरूप होकर अलग होगई। तब ब्रह्मा जी उस राजि से बोले कि पार्वती के क्रोध से जो सिंह निकला है, वही तेरा बाहन होगा और तेरी ध्वजा में भी यही रहेगा, तू विनध्याचल में चली जा, वहां जाकर तू वेवताओं के कार्यों को करेगी। तब कौशिकी वेवी विनध्याचल पर्वत में चली गई और पार्वती अपने मनोर्थ सिद्ध कर के शिव के समीप आई।

बामनपुराण—(५४ से ५६ वें अध्याय तक) पार्वती का नाम पहले काली था। और रूप भी काला था एक समय महादेव जी ने पावती से 'हे काली' ऐसा उग्र बचन कहा। तब काली ने हिमालय पर्वत पर जाकर ब्रह्मा के मंत्र को जपती हुई १०० वर्ष पर्यन्त तप किया। ब्रह्मा जी प्रकट हुए। काली बोली कि खबणं के समान मेरा बर्ण हो जाय। यह बरदान वे ब्रह्मा चले गए पार्वती कुष्ण कोश्र को त्याग कर कमल के केसर के समान कान्ति वाली हुई। उसी कोश्र से कात्यानी नाम से विख्यात देवी उत्पन्न हुई, जिसका नाम कौशको भी है। गिरिजा ने कोशिकी को इन्द्र को वे दिया। इन्द्र कौशिकी को ले बिन्ध पर्वत में गया और बोला कि हे कौशिकी तू यहां स्थिर रह। तू विन्ध बासिनी नाम से विख्यात होगी। इन्द्र ने सिंह रूपी बाहन उसको अर्पण किया। पार्वती ब्रह्मा से बरदान पाकर मन्दराचल में शिव के समीप गई। कात्यायनी देवी ने बड़ा युद्ध करके शुम्भ और निशुम्भ वैत्यों को मारा और वेवताओं से

कहा कि मैं फिर नन्द के सकाश से यशोदा में उत्पन्न होकर कंस का निरादर कहंगी।

पद्मपुराण—(स्वर्गखण्ड— १४ वां अध्याय) महादेवजी पार्वती से बोले कि तुम हमारे गौर शरीर में स्वेत चन्दन के द्रक्ष में काली सप्पिणी के समान शोभती हो। यह छन पार्वतीजी क्रोध युक्त हो मन्दराचल पर्वत से अपने पिता के उद्यान में जाकर तप करने लगीं। ब्रह्माजी पकट हुए। पार्वती बोली कि अब हम कांचन के रंग की अत्यन्त गोरी होकर अपने पित के समीप जाऊं और हमारा नाम गौरी हो। ब्रह्माजी बोले कि ऐसा ही होगा और तुम्हारी यह नील त्वचा निकल जायगी। ब्रह्मा के ऐसा कहतेहीं पार्वतीजी ने अपनी नीली दीप्ति को छोड़ दिया। वह त्वचा अति भीम रूपिणी ३ नेत्रकी मूर्ति होगई। ब्रह्मा बोले कि यह सिंह, जो पार्वती के कोध से उत्पन्न हुआ है, तुम्हारा बाहन और पताका होगा। अब तुम्मविन्ध्याचल पर जाकर देवताओं का कार्च्य करो। यह छन कर वह कोशिको देवी के नाम से प्रसिद्ध होकर विन्ध्याचल कोचली गई। पार्वती जी महादेव जी के पास आई।

मार्कण्डेयपुराण—(८५ से ९१ वें अध्याय तक) पूर्व काल में शुंभ और निशुंभ अखरों ने अपने वल से इन्द्र का राज्य और सम्पूर्ण देवतों का यज्ञ-भाग हरण कर लिया। तब देवता लोग हिमवान पर्वत पर जाकर विष्णु की माया भगवती की स्तुति करने लगे। श्रीपार्वती जी उनकी स्तुति से भसन्न होकर गंगा-स्नान के बहाने से देवताओं के सामने आई। उनके पीछे उनके शरीर-कोश से शिवा प्रकट हुई। शरीर-कोश से प्रकट होने से वह कौशिकी कहलाती है। वह उसी हिमाचल पर्वत पर बसने लगी।

वैवयोग से चण्ड और मुण्ड ने अम्बिका देवी के मनोहर रूप को देखा और अपने स्वामी शुंभ और निशुंभ के पास जाकर उसके रूप का वर्णन किया। शुंभ ने सुग्रीव नामक दृत को देवी के छाने को भेजा। उसने जाकर, देवी से सम्पूर्ण हाल कह सुनाया। देवी बोली कि मेरी यह प्रतिज्ञा है कि जो कोई समर में मुझको जीत लेगा, वह मेरा पित होगा। वह दूत देवी की बातें सुन इर्षा-संयुक्त

64

दिश यह

> 4 8 8

जि

हा वी

जार घाव

रह

हो शुंभ के पास गया और देवी की सब बातें उसने विस्तार-पूर्वक कह खनाई ।

शूंभ ने घुष्रलोचन कैत्य को ६०००० सेना के साथ देवी को पकड़ लाने के निमित्त भंजा। वह हिमाचल पर्वत पर जाकर क्रोध कर देवी पर दौड़ा। तब अम्बिका देवी ने हुंकार शब्द करके उसको भस्म कर दिया। अखर की सेना को देवी के बाहन सिंह ने क्षणमात्र में संहार कर डाला।

इसके अनन्तर भुंभ की आज्ञा पाकर चण्ड और मुण्ड इत्यादि कैत्य चतुरंगिनी सेना छेकर हिमाचल पर्वत पर गए। जब राक्षस अपना धनुष चढ़ाकर देवी को पकड़ने पर नियुक्त हुआ, तब देवों ने शत्रुओं पर ऐसा कोध किया कि उस समय भगवती का शरीर कज्जल के सदृश काला होगया। उस क्रोध से उनके छछाट से हाथों में खड़ और पाश धारण किए हुई भयानक मुख-बाली काली पकट हुई, जो खद्वांग धारण किए हुई, मुण्डमाला पहिने हुई और बाघ की खाल ओड़े हुई थी। उसका शरीर विना मांस का अत्यन्त भयानक था। उसके मुख में वड़ी भारी जीभ और कुएं के समान गहरे ३ नेत्र थे। काली ने बड़े बेग से अखर-दल में पहुंच सम्पूर्ण दल को भक्षण कर डाला, हाथी, घोड़े, स्थ, प्यादे सबको मुख में डाल कर दांतों से चवा डाला और बड़े बड़े अखरों को हथियारों से मार डाला। तब चण्ड और मुण्ड काली की ओर दौड़े, जिनको उसने तुरन्त मार डाला। अछर-सेना जहां तहां भाग गई चण्ड और सुण्ड को मारने से काली का नाम वामुण्डा पड़ा।

शुंभ इजारों फौज अपने साथ लेकर हिमालय पर चण्डिका के पास पहुंचा। अछरों की भयानक सेना देख कर चिंडका देवी ने अपने धनुष को चढ़ाया और देवी का बाइन सिंह गर्जा। देखों की सेना ने काली और सिंह को चारो और से घेर लिया। उस समय देवताओं के कल्यान के लिये वड़े वड़े बीरों को साथ लेकर ब्रह्मा को शक्ति ब्रह्माणी, महेश्वर की शक्ति माहेश्वरी, कुमार की शक्ति कौमारी, विष्णु की शक्ति वैष्णवी, वाराह की शक्ति बाराही, नर्सिंह की शक्ति नारसिंही और इन्द्र की शक्ति इन्द्राणी अखरों से युद्ध

करने के लिये वहां आई। जिन देवताओं का जैसा इप, जैसी सवारी और जैसी पौशाक थीं, वैसीही उन देवताओं की शक्तियां भी धारण कर के चिष्डका देवी के पास पहुंची। शक्तियों के साथ महादेवजी भी आए। शक्तियां देत्थों का नाश करने लगीं। उस समय रक्तवीज अखर लड़ने को आया। रणभूमि में जितने रक्तविन्दु उसके शरीर से निकलते थे, रक्तवीज के समान पराक्रमी उतनेही अखर उत्यन्न होते थे। देवी ने रक्तवीज को शूल से मारा, जो कथिर उसके शरीर से निकलादेवी की आज्ञानुसार काली ने उसको अपने मुख में लेलिया, पृथ्वी के उपर गिरने न दिया। जो अखर कथिर से उत्पन्न हुए थे वे सब समाप्त होगए, तब भगवती ने असल रक्तवीज को अनेक अस्त्र शस्त्रों से मारा, जिससे वह मर कर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

इसके अनंतर चण्डिका ने निशुंभ को शूल से मार डाला। शुम्भ ने भगवती से कहा कि हे दुर्गे तुम अपनी शक्तियों के बल से लड़ती हो और अपने को महाबली समझती हो, तुम अपने बल का घमण्ड मत करो। यह छन देवी ने ब्रह्माणी आदि शक्तियों को अपने शरीर में मिला लिया। देवी और शुम्भ से बड़ा युद्ध होने लगा। घोर युद्ध के अनंतर देवी ने शुम्भ को त्रिशूल से मार डाला। उसके मरने से सम्पूर्ण जगत स्थिर होगया।

देवी ने देवताओं से कहा कि २८ वीं चतुर्युगी में बैवस्वत मन्वंतर पकट होने पर जब दूसरे शुम्भ और निशुम्भ होंगे, उस समय में नन्दगोप के घर में यशोदा के गर्भ से उत्पन्न होकर उनका नाश करूंगी और विन्ध्याचल पर्वत पर निवास करूंगी; फिर पृथ्वी-तल में भयंकर रूप धारण करके विमित्ती-संतान के दैत्यों को मारूंगी।

श्रीमद्भागवत—(दशमस्कन्ध-चौथा अध्याय) जब बंस नंद की पुत्री का चरण पकड़ कर पत्थर पर पटकने लगा, तब वह उसके हाथ से छूट कर आकाश में चली गई। वहां प्रत्यक्ष देवी का दिव्य स्वरूप देखने में आया। उनकी ८ भुजाओं में धनुष, त्रिशूल, ढाल, कृपाण, गदा, पद्म, संख और चक्र थे। वह योगमाया बहुत स्थानों में दुर्गा, भद्रकाली, भगवती, भवानी, महामाया इत्यादि नामों से संसार में विख्यात हुई।

(देवीभागवत के तीसरे स्कन्ध के २३ वें अध्याय से ३१ वें तक श्रृंभ और निशुंभ के युद्ध में कौशिकी, काली और शक्तियों की उत्पत्ति की कथा मार्क-ण्डेयपुराण की कथा के समान है।)

वाराहपुराण—(२७ वां अध्याय) अन्धकास्त्र के युद्ध के समय योगेश्वरी, माहेश्वरी, वैष्णवी, ब्रह्माणी, कौमारी, इन्द्राणी, शिवदूती और वाराही इन माहगणों की उत्पत्ति अष्टमी तिथि में हुई, इसलिये यह तिथि माहगणों की वड़ी प्यारी है। इस तिथि में इनकी अवश्य पूजा करनी चाहिए।

(२८ वां अध्याय) सम्पूर्ण देवता लोग दृत्राखर से पीड़ित हो, शिवजी के साथ ब्रह्मलोक में गए। उस समय ब्रह्माजी गंगा के भीतर हुव्वी लगा कर बंदे गायत्री मन्त्र जप रहे थे। देवताओं की दीन वाणी छन ब्रह्माजी ध्यान छोड़ विचार करने लगे कि इस समय क्या उचित है। इसी समय गायत्री कन्याक्प धारण कर आठों भुजाओं में शंख, चक्र, गदा, पाश, खङ्क, घंटा, धनुष, बाण, लिये सिंह पर बेटी हुई प्रकट हुई; और बहुत दिनों तक युद्ध करके उसने देत्यों सहित दृत्राछर को मारा। ब्रह्मा ने कहा यह देवी हिमाचल में जाकर बास करें, हे देवता तुम सब प्रतिमास की नौमी तिथि को इसका पूजन नियम से करो। नौमी तिथि को भगवती ने जन्म लिया, इसी से नौमी तिथि देवी को प्यारी हुई।

भविष्यपुराण—(उतरार्छ-५४ वां अध्याय) देवगण महिषासुर के पुत्र रक्तासुर से पराजित होकर कटच्छत्रा पुरी में गए, जहां कुमारी-रूप भगवती चामुण्डा और नव दुर्गा सहित निवास करती थी। भगवती ने रक्तासुर सहित सब देखों को मार कर देवताओं को अभय किया। नौमी तिथि को भगवती का विजय हुआ, इसिछिये वह तिथि उनको अति प्रिय है।

(५५ वां अध्याय) आश्विन शुक्क नौमी को गंध, पुण्प, धूप, दीप, नैबेश

८६: दोनं

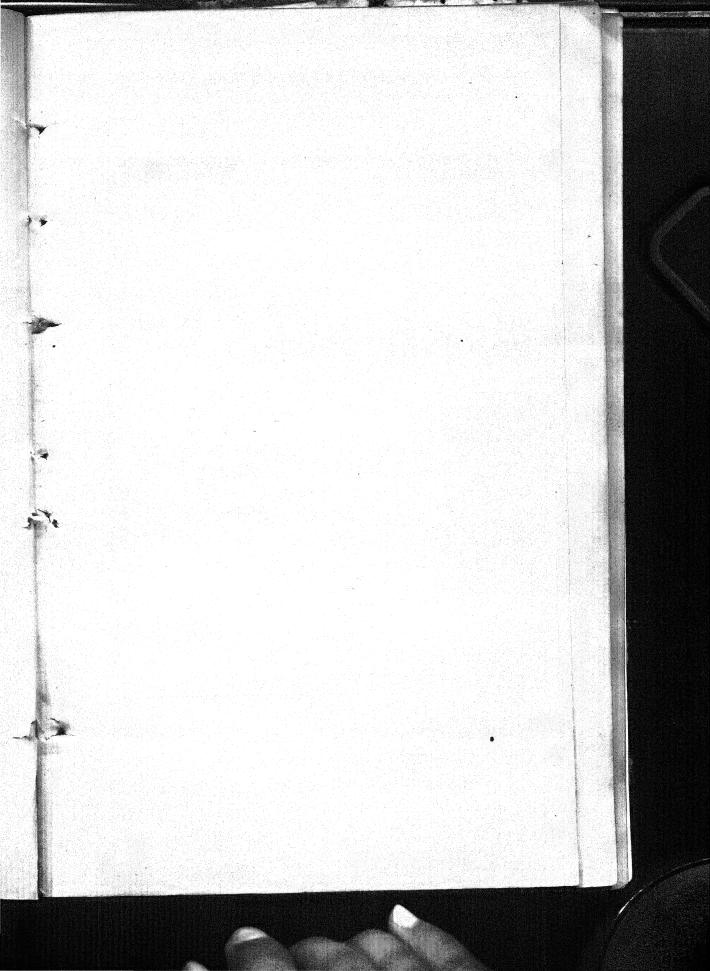
> दहि यह

जात घाट

जि रह

ਰਾ

4



८६³ रक शा गहाबार दिहि यह जीत धार १९ हैं। जि THE न्य भी पुलाविश्ती -कृप भगवत विती_टे

आदि से चामुण्डा का पूजन करे, पीछे सात, पांच अथवा एक कुमारी को भोजन करावे।

(ववीभागवत, तीसरा स्कन्ध २७ वां अध्याय) रोगरहित रूपवती और अपनेही माता पिता से उत्पन्न हो, ऐसी कन्या सर्वथा पूजनीय है। अपने से नीच वर्ण की कन्या की रूजा न करे।

विष्णुपुराण—(५ वां अंश-१ छा अध्याय) भगवान भगवती माया योगनिद्रा से बोले कि ब्राह्मण तुमको भक्ष्य, भोज्य और अनेक पक्कवान चढ़ावेंगे और शूद्रादिक छरा मांस आदि तुमको वेंगे।

वेवीभागवत—(तीसरा स्कन्ध-२६ वां अध्याय) शरद और वसंत ऋतु में विशेष करके नवरात्र में पूजन करना चाहिए। इन्हीं में बहुधा लोगों को रोग होता है, इसलिये आश्विन और चैत्र में चण्डिका का पूजन अवश्य करना चाहिए।

(५ वां स्कंध-२४ वां अध्याय) आश्विन और चैत्र के शुक्रपक्ष में नवरात्र होता है।

शिवपुराण—(६ वां खण्ड-५ वां अध्याय) गिरिजा ने विन्ध्यवासिनी होकर दुर्ग वैत्य को मार डाला, तबसे उनका नाम दुर्गा प्रकट हुआ।

पांचवां अध्याय।

/इलाहाबाद

प्रयाग वा इलाहाबाद।

े विंध्याचल से ४६ मील पश्चिम (मुग़लसराय जंगशन स्टेंशन से ९१ मील) नयनी जंगशन स्टेशन और नयनी से ४ मील इलाहाबाद का स्टेशन है। इला-हाबाद से ५६४ मील पूर्व कलकत्ता, ३९० मील पश्चिमोत्तर दिल्ली और ८४४ मील पश्चिम-दक्षिण वम्बई है। इलाहाबाद २५ अंश २६ कला उत्तर अक्षांश और £8"

दि

यह

जार

घा

1000

८१ अंश ५५ कला १५। विकला पूर्व देशांतर में है। प्रयाग के यात्री नयनी में रेल से उतर कर स्टेशन से ३ मील दूर संगम पर जाते हैं और दूसरे इलाहाबाद के स्टेशन पर उतरते हैं। नयनी में एक जेल और स्टेशन के पास एक बड़ी धर्मशाला है। इलाहाबाद के स्टेशन के पास एक उत्तम दो मंजिली नई धर्मशाला बनी है, जिसमें में टिका था। इसमें यात्रियों के आराम के लिये अच्छा प्रवंध किया गया है।

्नयनी और इलाहाबाद स्टेशनों के बीच में ३२३५ फीट लम्बा यमुना पर पुल है, इसमें १६ दरवाजे हैं। यह पुल पानी और भूमि के नीचे ४२ फीट और पानी के ऊपर ६० फीट है। नीचे आदमी और गाड़ी, और ऊपर रेलगाड़ी चलती है। यह पुल ४४४६३०० रुपयों के खर्च से तय्यार होकर सन १८६५ ई० के १५ अगस्त को खुला।

्र इलाहाबाद पश्चिमोत्तर देश की राजधानी गङ्गा और यमुना के सङ्गम पर एक प्रसिद्ध शहर है, और भारतवर्ष के अति प्राचीन तीर्थ 'प्रयाग ' नाम से विख्यात है।

ईस साल की जन-संख्या के समय इलाहाबाद में १७५२४६ मनुष्यं थे, जिनमें ९४७८४ पुरुष और ८०४६२ स्त्रियां थीं। इनमें ११८८१९ हिन्दू, ५०१७४ सुसलमान, ५८५८ कृस्तान, २१७ जैन, १५४, सिक्ख और २४ पारसी थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में १३ वां और पश्चिमोत्तर प्रदेश में तीसरा शहर है।

किले से २ मील पश्चिम शहर, ४ मील पश्चिम थोड़ा उत्तर इलाहाबाद का रेलवे स्टेशन और एक मील से कम उत्तर दारागंज है। शहर से २ मील पूर्वीत्तर कटरा, कटरा से ई मील पूर्व-दक्षिण कर्नलगंज है।

्र इल्लाहाबाद में पुरानी और नई कोतवाली, सिविल कचहरियां, फौजी छावनी, लेफ्टिनेंट गवर्नर की कोटी, पवलिक लाइवेरी, एलफ्रेंड पार्क, अस्पताल, मेट्ल जेल, खुस्ड बाग, हाईकोर्ट, मेबोकालेज, और कई गिर्जे देखने लायक हैं। अङ्करेजी महल्ले में चौड़ी सड़कों के किनारों पर दक्ष लगेहैं। फौजी

छावनी में अङ्गरेजी, हिन्दुस्तानी और हिन्दुस्तानी सवार का एक रेजीमेंट है। रेलवे के पास हम्माम, रेलवे लाइवेरी, थियेटर, और गेंदा खेलने का मैदान है।

े इलाहाबाद समुद्र के जल से ३१६ फीट की ऊंचाई पर है। वहां का समय रेलवे और मदरास के समय से ७ मिनट अधिक, बम्बई के समय से ३७ मिनट अधिक और कलकत्ते के समय से २६ मिनट कम है।

स्वुसुरूबाग्—बादशाह जहांगीर ने अपने पुत्र सुलतान खुस्क के स्मरण के लिये सत्रहवें शतक के आरंभ में इसको बनवाया, जो रेलवेस्टेशन से थोड़ी दूर पर है। ६० फीट ऊंचे मेहराबी फाटक से बाग़ में प्रवेश करना होता है। भीतर बड़ा बाग़ है, जिसमें ३ मक़बरे हैं। पूर्व खुस्क का (यह सन१६१५ ई० में मरा) उससे पश्चिम नूरजहां का (जो लाहोर में गाड़ी गई) और उससे पश्चिम "जहांगीर की स्त्री साहिबा बेग़म का। खुस्क के मक़बरे में एक तरफ खुस्क, एक तरफ उसके भाई और मध्य में राजपूत राजकुमारी खुस्क की माता की क़बर है। खुस्क के मक़बरे में फारसी वैत के शिला लेख हैं। फूल वेड़ के चित्र उदास पड़ गए हैं। क़बर उजले मार्बुल की है।

जल-कल के हौज इसी बाग में बनते हैं, जिनमें पानी साफ होकर नल-द्वारा शहर के हर विभाग में जायगा।

हाईकोर्ट-यह पत्थर की दो मंजिली उत्तम इमारत है। ऊपर के क़मरों में जजों के इजलास हैं, जिनमें ४ युरोपियन और एक हिंदुस्तानी जज बैठते हैं। इजलासों में टोपी पहन कर जाना मना है।

र एल्फ्रेड पार्क-यह कालेज से दक्षिण-पश्चिम है, जो सन १८ं७० ई० में बना। इसमें उत्तम सड़कें बनी हैं, खन्दर तरह से फूल पौधे लगे हैं, स्थान २ पर फूल और पौधों के गमले और बेंच रखे हुए हैं, मध्य में एक खन्दर बङ्खाला है, जिसमें नियत समय पर अङ्करेजी बाजा वजता है। प्रतिदिन संध्या के समय युरोपियन और हिंदुस्तानी लोग हवा खाने के निमित्त वहां जाते हैं। दि

यह

जार

घा

でもので

ਦ ਹੈ मेओकालेज एलफेड पार्क के उत्तर और कटरे के दक्षिण यह उत्तम इमारत है। सर विलियम मेओ (जो पहले पश्चिमोत्तर देश के लेफिउनेंट गवर्नर थे) के नाम से इस कालेज का यह नाम पड़ा। इसके पास मेओ हाल नामक उत्तम इमारत है,जिसका टावर १४७ फीट ऊंचा बना है। पश्चिमोत्तर देश और अवध के प्रति-विभाग के लोग परीक्षा देने के लिए यहां आते हैं। पश्चिमोत्तर देश और अवध के कानून का इमतहान इसी जगह होता है।

भित्रवेणी-गंगा, यमुना और सरस्वती इन तीन नदियों के संगम होने से इस स्थान का नाम त्रिवेणी पड़ा है।

गंगा हिमालय में गंगोत्तरी पर्वत से निकल कर दक्षिण और पूर्व को बहती हुई हरिद्वार, फर्इखावाद, कन्नौज, कानपुर आदि नगरों को पवित्र करती हुई यहां आई है, और यहां से पूर्व-दक्षिण जाकर १५०० मील बहने के उपरांत कई धारों से समुद्र में गिरती है।

यमुना हिमालय में यमुनोत्तरी पर्वत से निकल गंगा के दहिने बराबर समानांतर रेखा में दक्षिण और दक्षिण-पूर्व ८६० मील बहने के उपरांत यहाँ गंगा में मिल गई है। दिल्ली, वृन्दावन, मथुरा, आगरा इटावा, कालपी और हमीरपुर प्रसिद्ध नगर इसके किनारे हैं। चम्बल नदी मालवा में विध्याचल में पर्वत से निकल कर ५७० मील बहने पर इंटावे के पास, और बेतबा ३६० मील बहने के उपरांत हमीरपुर के पास यमुना में मिल गई है।

सरस्वती का जल गुप्त है।

संगम के पास गंगा का जल श्वेत और यमुना का जल नील अलग अलग दंख पड़ते हैं। संगम कभी किले के पास रहता है और कभी किले से एक मील पूर्व तक चला जाता है। संगम के पास पण्डे लोग अपनी अपनी चौकी के समीप अपने पहचान के लिए भिन्न भिन्न तरह के निशान गाड़े रहते हैं। दुरहीं से सैंकड़ों निशान देख पड़ते हैं।

बहुतेरे लोग त्रिवेणी पर माघ मास में एक महीना कल्पवास करते हैं,

जिनके रहने के लिये पण्डे लोग फूस के छप्पर और टर्हियों से बाड़े बनवाते हैं।

प्रयाग में मुण्डन का बड़ा माहात्म्य है, इसिलिये सम्पूर्ण यात्री त्रिहेणी पर मुण्डन कराते हैं। जो स्त्री मुण्डन नहीं कराती, वह अपने सिर की एक लट कटवा देती है। मुण्डन के लिये 'नौआ बाड़ा ' एक खास स्थान बनता है, जिसके भीतर मुण्डन कराने से प्रति मनुष्य को नाई को १ आना देना पड़ता है, परंतु ४ आने के टिकट लेने से ओदमी दूसरी जगह मुण्डन करा सकता है। नाई लोग मुण्डन करने के लिये लाइसंस लेते हैं। जमा किया हुआ बाल विकता है।

भूयाग का मेळा—सम्पूर्ण माघ मास में त्रिवेणी पर यांत्रियों की भीड़ रहती है, परंतु अमावास्या मेळा और स्नान का प्रधान दिन है। मेळे में छग भग २५०००० मनुष्य प्रति-वर्ष आते हैं। १२ वर्ष पर जब दृषर शि के दृहस्पति होते हैं, तब यहां 'कुंभयोग' का बड़ा मेळा होता है। उस योग के समय भारतवर्ष के सब प्रवेशों के सब सम्प्रदाय वाळ असंख्य यात्री प्रयाग में एकत्र होते हैं, जिनमें कितने नागा सन्यासी जो नंगे रहते हैं, वस्त पड़ते हैं। संवत १९३८ (सन १८८२ ई०) में कुंभयोग के समय माघ की अमावास्या को त्रिवेणी पर छग-भग १० छाख मनुष्य थे।

वेवाछर—संग्राम के स्थान से वेवगुरु दृहस्पति जी अमृतकुण्ड लेकर भागे।
भागीरथी, त्रिवेणी, गोदावरी और शिमा के तट पर दृहस्पति से दानवों को
हाथा वाहीं करते समय कुंभ से अमृत उछल पड़ा था, इसीलिये कुंभ के दृहस्पित होने पर हिरद्वार में, दृष के दृहस्पित होने पर प्रयाग में, सिंह के दृहस्पित
होने पर नासिक में और दृश्विक के दृहस्पित होने पर उज्जैन में कुंभयोग
मंघटित होता है।

→ झूंसी—गङ्गा के वाएं किनारे पर झूंसी है, जो पूर्व समय में प्रितिष्ठानपुर
नाम से विख्यात चंद्रवंशी राजाओं की राजधानी थी। पुराने गढ़ में अनेक
भुवेंबरे हैं। कई में साधु रहते हैं। शेख तकी का मजार झूंसी में प्रसिद्ध है।

£ 6,

दोन

दिश

यह

লাক

घा

1 6 G

र देवस्थान-निम्न लिखित देवताओं के स्थान परिक्रमा में मिलतेहैं,—

(१) अलोपी देवी, (२) दारानगर के एक मंदिर में वेणीमाधव, (३) गंगा के किनारे पर एक मंदिर में लिंगस्वरूप बाखकी जी, जहां श्रावण महीने में नागणंचमी का मेला होता है, (४) शहर के पास एक मंदिर में लिंगस्वरूप भरद्वाज मुनि और एक भुवेवरा में याज्ञवल्क्य मुनि की छोटी मूर्ति, (६) यमुना के उस पार एक मंदिर में सोमनाथ (६) और दारानगर के निकट गंगा में दशाश्रमेध तीर्थ हैं, जहां ब्रह्मेश्वर और शूलटंकेश्वर शिवलिंग हैं।

किला-गंगा और यमुना के बीच में यमुना के बाएं किनारे पर पत्थर का दृढ़ किला खड़ा है, जिसको बादशाह अक़बर ने सन १५७५ ई० में बन-बाया। इसकी दीबार २० से २५ फीट तक ऊंची है। दक्षिण यमुना और तीन तरफ चौड़ी खाई हैं, जो किसी समय पानी से भर दी जा सकती हैं। प्रधान फाटक गुम्बजदार खंदर बना है। किले के भोतर अफसरों के मकान, मैकजीन, और बारकें (फौजी मकान) हैं। मैंदान में तोपों की कतारें और तरह तरह के गोलों के देर देख पड़ते हैं। दरवार कमरे में खम्भों के ८ कतार हैं, जिसके चारों ओर दोहरे खंभों का चौड़ा दालान है। पुराने महल अब शस्त्रागार बने हैं। जो किले के संपूर्ण स्थानों को देखना चाहे, उसबो इलाहाबाद में आरडेनेंस कमीसरी से हुकुम लेना चाहिए।

किले से बाहर थोड़ी दुर पूर्व भूमि की गहराई में आदमी से बहुत बड़े महाबीरजी उतान पड़े हैं। किले के पूर्वीतर के कोने से दारागंज तक पानी के रोकाव के लिये अकबर वांध बना है।

→ अक्षयवट─यात्री लोग पूर्व फाटक से किले में प्रवेश करते हैं, उसमें
दिक्षण तरफ अक्षयवट है। वहांके पण्डे यात्रियों को दीपक के प्रकाश से भीतर
ले जाते हैं। कई सीढ़ियों से उतरने पर अन्धियारा रास्ता मिलता है। ६५
फीट पूर्व-दिक्षण ज़मीन के भीतर विना पत्तों के दो शाख वाला अक्षयवट हैं।
रास्ते में कई एक देवमूर्तियां और अक्षयवट के पास एक शिवलिङ्ग है।

अक्षयवट की पूजा, परिक्रमा और अङ्कमाल यात्री लोग करते हैं।

अशोकस्तम्म — अक्षयवट से दक्षिण एकही पत्थर का भूमि से उपर
२९ । फीट उन्ना बहुत चिकना अशोकस्तंभ है, जिस पर सन ई० के २४०
वर्ष पहले के राजा अशोक का आज्ञापत्र खोदा हुआ है और दूसरे शतक के
सम्रद्र गुप्त के विजय का लेख, सत्रहवें शतक के जहांगीर की राजगद्दी के
स्मरण का लेख और कई एक दूसरे छोटे छोटे लेख हैं। अशोकस्तंभ से उत्तर
एक आठपहला गहरा कूप है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा।

शंखरमृति—(१४ वां अध्याय) प्रयाग में पितरों के निमित्त जो कुछ दिया जाता है, उसका फल अक्षय होता है। गंगा और यमुना के तीर का दान अनन्त फल वेता है।

महाभारत—(आदि पर्व्व-५५ वां अध्याय) मयाग में सोम, बरुणा और मजापति का जन्म हुआ था।

(वनपर्व्व-८४ वां अध्यायं) जो पुरुष गंगा और यमुना के संगम में स्नान करता है, उसको १० अश्वमेध का फल होता है, और उसके कुल का उद्धार होजाता है। प्रयाग में देवताओं के साथ विष्णु निवास करते हैं।

(८५ वां अध्याय) जिस जगह गंगा और यमुना मिली हैं. वह स्थान पृथ्वी की जंघा है। प्रयाग पृथ्वी की योनि है। प्रयाग, प्रतिष्ठानपुर (झूंसी) कम्चलाश्वतर तीर्थ और भोगवती यह ब्रह्मा की वेदी हैं। यहां ऋषिगण ब्रह्मा की उपासना करते हैं। मुनि लोग तीनलोक के तीर्थी में प्रयागको अधिक कहते हैं। यहां राजा वासुकी [सर्प] का भोगवती नामक स्थान है। प्रयाग ही में गंगा के तट पर दशाश्वमेध नामक तीर्थ है।

गंगास्नान का फल कुरुक्षेत्र के फल के समान है, पर कनख़ल में विश्वेष और प्रयाग में वहुत अधिक है।

(८७ वां अध्याय) स्रोक-विख्यात गंगा और यमुना के संगम पर पूर्व

या . के वि समय में ब्रह्मा ने यज्ञ किया था, इसी से इसका नाम प्रयाग हुआ। यहां तप-स्वियों से सथित तापसवन तीर्थ है।

(उद्योगपर्ब्य-११४ वां अध्याय) गालय मुनि गरुड़ को साथ ले मितिष्ठान पुर में राजा ययाति के समीप आए। राजा ने पुत्र उत्पन्न कराने के लिये माघवी नामक अपनी कन्या मुनि को दी।

[अनुशासनपर्व-२५ वां अध्याय] माघ के महीने में ३ करोड़ १० हज़ार तीर्थ प्रयाग में एकत्र होते हैं। उस मास में सदा संशिक-त्रत होकर प्रयाग में स्नान करने से मनुष्य निष्पाप होकर स्वर्ग लोक पाता है।

गंगा यसुना के तीर्थ में एक मास स्नान करने से १० अश्वमेध का फल मिलता है।

बाल्मीकि-रामायण—[अयोध्याकाण्ड ५४ वां सर्ग] रामचंद्र छक्ष्मण और जानकी के संग वनवास के समय प्रयाग में गंगा-यमुना के संगम पर भरद्वाज मुनि के आश्रम में गए।

[उत्तर काण्ड-१०० वें सर्ग से १०३ वें सर्ग तक] कर्टम प्रजापित के पुत्र राजा इल अहेर करते समय शिव के प्रभाव से स्त्री होगया। प्रश्नात् उमा देवी के अनुप्रह से वह एक मास स्त्री और एक मास पुरुव की दशा में रहने लगा। इल को स्त्रीत्म समय में चंद्रमा के पुत्र बुध से पुद्धरवा नामक पुत्र उत्त्रन हुआ। एक वर्ष बीतने पर शिव की प्रसन्नता से जब इल का स्त्रीत्व भाव छुट गया, तब वह अपनी राजधानी वाहि की गही पर अपने पुत्र शर्शावंदु को बैटा कर मध्य देश में प्रतिष्ठानपुर नामक अति उत्तम पुर वसाय राज्य करने लगा। काल पाकर जब राजा परलोक को गया, तब उसका पुत्र पुद्धरवा, जो बुध के द्वारा उत्पन्न हुआ था, प्रतिष्ठान पुर का राजा हुआ। (६९ वां सर्ग)ययाति के पुत्र पुद्धरवा ने प्रति- ष्टानपुर में राज्य किया।

देवीभागवत—(पहला स्कंध-१२ वां अध्याय) वैवस्वत मनु का पुत्र राजा खुद्युम्न प्रतिष्टानपुर में रहता था। एक दिन वह घोड़े पर चढ़ खुमेरु पर्व्वत के निकट कुमारबन में शिकार खेलने गया। वहां पहुंचतेही राजा स्त्री होगया, और उसका घोड़ा घोड़ी होगया। राजा उसी बन के निकट फिरता रहा। स्त्री होने पर खुद्युम्न का नाम इला हुआ। एक दिन चंद्रमा के पुत्र बुध वहां प्राप्त हुए। निदानदोनों के प्रसंग से पुक्तरवा नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसके पीछे शिवजी के बरदान से राजा खुद्युम्न एक मास पुरुष और एक मास स्त्री होकर रहने लगा और अपनी राजधानी को आया। पुक्तरवा के राज्य के योग होने पर राजा खुद्युम्न उसको राज्य देकर बन को चला गया।

लिंगपुराण—(पूर्वोद्ध ६६ वां अध्याय) इल के पुत्र पुरूरवा ने यमुना के उत्तर की ओर प्रयाग के निकट अपनी राजधानी प्रतिष्ठानपुर में रह कर राज्य किया। पुरूरवा का पुत्र आयु, आयु का पुत्र नहुष और नहुष का पुत्र ययाति हुआ।

मत्स्यपुराण—[१०३ वां अध्याय] प्रयाग प्रतिष्ठान से छेकर वाखकी के हृद तक जो कम्बलाश्वतर और बहुमुलक नाम नागस्थान है, यह सब मिलकर प्रजापित क्षेत्र कहाता है।

(१०५ वां अध्याय) जो पुरुष प्रयाग में अक्षयवट के निकट जाकर अपनें प्राण को त्यागता है, वह भिवलोक में पाप्त होता है। शिव के आश्रय होकर १२ सूर्य्य सम्पूर्ण जगत को भस्म करते हैं, परन्तु अक्षयवट की जड़ को नहीं भस्म करते। जब प्रलय काल में सूर्य्य और चन्द्रमा नष्ट हो जाते हैं, तब विष्णु भगवान उस वट के समीप बारम्बार पूजन करते हुए स्थित रहते हैं।

जो मनुष्य वास्ति नाग से उत्तर की ओर भोगवती पुरी में जाकर दशा-श्वमेघ तीर्थ पर अभिषेक करता है, वह अश्वमेघ यज्ञ के फलकोमाप्त होता है।

[१०६ वां अध्याय] माघ मास में गंगा यमुना के संगम पर ६० हजार तीर्थ और ६० करोड़ नदी प्राप्त हो जाती हैं।

[११० वां अध्याय] प्रयाग के मण्डल का विस्तार २० कोस में हैं। वहां पापकमें के निवारण के लिये उत्तर की ओर प्रतिष्ठानपुर तीर्थ में ब्रह्मा स्थित हैं। विष्णु भगवान वेणीमाधव रूप होकर और शिवजी वटरूप होकर स्थित हो रहे हैं।

अग्निपुराण—[१११ वां अध्याय] प्रयाग में ब्रह्मा, विष्णु, आदि देवता, अनिगण, नदी, सागर, सिद्ध, गंधर्व, अप्सरा, ये सब निवास करते हैं। यहां की मृत्तिका लगाने से समस्त पाप दूर होते हैं। गंगा यम्रना के संगम पर दान, आद्ध और जपादिक करने से अक्षय होते हैं। यहां पर ६० करोड़ और १० सहस्र तीर्थ सिन्निहित हैं, इसलिये यहां पर मरने से मुक्ति में संदेह नहीं रहता; विश्लेष कर यहां की विश्लेषता माघ मास की है।

स्कंदपुराण—[काशी खंड-७ वां अध्याय] तीर्थराज प्रयाग में जाकर यमुना गंगा के संगम में स्नान करने से मनुष्य पाप से छुट कर ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है।

े प्रयाग के गुण को जानकर शिवशर्मी नामक ब्राह्मण ने माघ मास में निवास किया।

कूर्मपुराण—[ब्राह्मी संहिता-पूर्वार्छ-३५ वां अध्याय] जिस स्थान में ब्रह्मा रहते हैं, वही प्रयाग क्षेत्र हैं। प्रयाग का प्रमाण ६० हजार धनुष हैं।

[३६ वां अध्याय]गंगा के पूर्व तीर पर त्रिभुवन-विख्यात प्रतिष्ठान नगरी है, जहां ३ रात्रि वास करने से अश्वमेध का फल होता है।

ा [उत्तरार्छ ३४ वां अध्याय] प्रयाग नाम से विख्यात] ब्रह्मा का क्षेत्र ५ योजन में फला है।

वाराहपुराण—[१३८ वां अध्याय] प्रयाग में त्रिकण्टकेश्वर, जूलकण्टक, सोमेश्वर आदि लिंग और बेणीमाधव नाम विष्णुभगवान की मूर्ति है। त्रिबेणी-क्षेत्र पृथ्वीमण्डल के सब तीर्थों से उत्तम और प्रयाग तीथराज है।

हृहन्नारदीय पुराण—[६ वां अध्याय] तीर्थों में अति उत्तम गंगा यमुना के योग जल को ब्रह्मादि देवता सेवते हैं। गंगाजी विष्णु के चरण से और यमुना सुन्धें से उत्पन्न हुई हैं, इससे इनका योग उत्तम है। शिवपुराण—[८ वां खण्ड-पहला अध्याय] तीर्थराज प्रयाग में ब्रह्मा का स्थापित किया हुआ ब्रह्मेश्वर शिवलिंग है।

[११ वां खण्ड-१६ वां अध्याय] ब्रह्मा ने कहा जो मनुष्य माघ मास में प्रयाग जाकर स्त्रान करता है, वह हमारे लोक में आता है।

बामनपुराण—[२२ वां अध्याय] ब्रह्मा की ५ वेदी हैं, जिनमें उसने यह किया है। इनमें से मध्य वेदी प्रयाग है और दूसरी ४ वेदियों में पूर्व वेदी गया, दिक्षण वेदी विरुजा, पश्चिम वेदी पुष्कर और उत्तर वेदी स्यमन्त-पंचक [कुरू-क्षेत्र] है।

[८३ वां अध्याय] प्रहाद ने प्रयाग में जाकर निर्मल तीर्थ में स्नान करने के उपरांत लोकों में विख्यात यामुन तीर्थ में बटेश्वर रुद्र को देख योगशायी माधव का दर्शन किया।

पन्नपुराण—[सृष्टिखण्ड-१८ वां अध्याय] सरस्वती ऐसा कह कर कि अब हम कल्पटक्ष के नीचे होकर पश्चिम समुद्र को जाती हूं, प्रयाग में गुप्त हों कर नीचे नीचे पश्चिम दिशा की ओर चली और पुष्कर तीर्थ में पहुंची।

अक्षयवट अनेक शाखाओं से युक्त है। यदचिप प्रयाग का कल्परक्ष वा अक्षयवट पुष्प रहित है, तथापि पुष्पवान सा दिखाई देता है।

[स्वर्गताण्ड-५२ वां अध्याय] गंगा और यमुना इन दोनों निदयों के संगम के पास तीर्थराज है। दोनों निदयों के बीच में सरस्वती नदी कील के समान गड़ी है, जिससे दोनों निदयां कीलित हैं।

[५४ वां अध्याय] ३ करोड़ तीथीं के मुख्य राजा प्रयाग हैं। सम्पूर्ण पुरियां मकर राशि के स्र्व्यं में माघ मास में अपनी शुद्धता के लिये तीर्थराज में आती हैं।

[५७ वां अध्याय] प्रयाग में माधवजी लक्ष्मीसहित सदा निवास करते हैं और वट दक्ष शोभित है। यह क्षेत्र ५ योजन और ६ कोणों का है।

[५८ वां अध्याय] ६ किनारों से युक्त वहां का बेणीतीर्थ प्रसिद्ध है।

जो परिखा के वेष्टन के आकार का १६ योजन की लम्बाई चौड़ाई में है। ब्रह्मा ने अंतर्वेदी में अश्वमेध यज्ञ किया, जिसमें ब्रह्माण्ड के रहने वाले सब आए थे।

[६८ वां अध्याय] पयाग में जूलटंकेश्वर और सोमेश्वर को जो स्तान कराता है, उसको उत्तम फल मिलता है।

(८२ वां अध्याय) जहां ब्रह्मा जी ने १०० अश्वमेध यज्ञ किए हैं, उस स्थान को प्रयाग कहते हैं। वह ब्रह्मा का उत्तम क्षेत्र है, जहां स्थावर जंगम के नष्ट होजाने पर जब एकार्णव हो जाता है, तब वट द्वक्ष के एक पत्ते पर वाल-शरीर धारण किए हुए श्रीहरि शयन करते हैं।

भरद्वाज मुनि प्रयाग में बास कर के माधव जी की आज्ञा से कञ्चप आदि सप्त ऋषियों में होगए।

प्रयाग का मण्डल ५ योजन के विस्तार में है। वास्ति-कुण्ड केकम्बलाश्वतर नागों के और वहुमूलक नाग के बाहर प्रयाग नहीं है।

(८४ वां अध्याय) ३० धन्वा के विस्तार में प्रवेत और नील जल का संगम है। पिण्ड ब्रह्माण्ड में थिचरने वाली उसी को बेणी जानना चाहिए।

बेणी ३ पकार की है। जो अक्षयवट में मिली हुई है, वह मूल बेणी और दोनों धाराओं के समीप से सोमेश्वर तक मध्य बेणी कहाती है। इन दोनों को मिला कर वह त्रिबेणी 'बेणी' कहाती है। यहां मरे हुए पुरुष मुक्त हो जाते हैं। जो वहां मृंतक होते हैं, उनका कभी जन्म नहीं होता।

गंगा और यमुना ने सरस्वती से कहा कि आज से जो पितवता युवती यात्रा के अर्थ यहां आकर पीठ तक लम्बी गठिलाई हुई अपनी बेणी कटवा कर यहां देजायगी, वह सौभाग्य, पुत्र, पीत्र, आयु, धन और धान्य से युक्त हो कर अन्त में अपने पित के साथ वैकुण्ड में बास करेगी।

(८६ ब्रां अध्याय) तीनों लोकों में प्रयाग का स्नान और उससे अधिक वहां का मुण्डन दुर्लभ है। क्योंकि प्रयाग में एक बार मुण्डन कराने से जो फल होता है, सहस्र बार स्नान करने में वह फल नहीं होता। सब अवस्था की स्नी पुरुष आदि सभी को प्याग में मुण्डन कराना चाहिए। प्राणियों के बालों की जड़ों में सब पाप रहते हैं, इसिलये प्रयाग में मुण्डन कराने से वे सब नष्टहो कर फिर नहीं जन्मते। समय में अथवा असमय में सदा प्रयाग में क्षीर कर्म कराना चाहिए। खभगा स्त्री यदि सब मुण्डन न करावे तो दो तीन वा चार अंगुल की बेणी, अथवा दाड़ी के नीचे जितने केश आते हैं, उतने बाल कटवा डाले।

(८७ वां अध्याय) विधि से वा अविधि से, स्वभाव से वा आग्रह से, जिस तरह से हो सके, इस तीर्थ में पाणत्याग विशेषता रखता है।

(९९ वां अध्याय) चांद्र, सावन और सौर मासों के अनुसार जैसा संभव हो, एक मास माघ में स्नान करना चाहिए। अमावास्या से वा पूर्णिमासी से आरंभ करके स्नान करना चाहिए। ये दोनों पक्ष चांद्र मासही के हैं। विन्ध्या-चल के दक्षिण के निवासी अमावास्या से अमावास्या तक और उसके उत्तर वाले पूर्णिमासी से पूर्णिमासी तक चांद्र मास मानते हैं। पौष की शुक्क ११ से आरंभ करके माघ की शुक्क ११ तक सावनमास के अनुसार अथवा मकर की संक्रांति से कुंभ की संक्रांति तक सौरमास के अनुसार स्नान करना चाहिए।

(१०० वां अभ्याय) प्रयाग में तो माघी अमावास्या ही महा पुण्या है। फिर अद्धोंदय योग से युक्त हो तो क्या कहना है।

(इस पुराण के इस खण्ड में ५१ वें अध्याय से १०१ अध्याय तक प्रयाग-माहात्म्य की कथा है)

्र इलाहाबाद ज़िला─इसके उत्तर अवधका प्रतापगढ़ ज़िला, पूर्व जौन-पुर और मिर्ज़ीपुर जिले, दक्षिण रीवां का राज्य और दक्षिण-पश्चिम और पश्चिम बांदा और फतहपुर जिले हैं।

जिले का क्षेत्रफल २८३३ वर्गमील है। इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय जिले में १५४९४३६ मनुष्य थे, जिनमें ७८१९७९ पुरुष और ७६७४५७ स्नियां थीं। ब्राह्मण, चमार, अहीर, कुरमी और पासी जिले में अधिक वसते हैं।

इस जिले में १०००० से अधिक मनुष्यों की वस्ती इलाहाबाद छोड़ कर

कोई नहीं है। कड़ा, फुलपुर, मऊ, भारतगंज, करारी और सिरसा बड़ी बस्ती हैं। इसी जिले में सिंगरोर है। पूर्व समय में यह शृंगवेरपुर भी कहा जाता था। उसी जगह श्रीरामचंद्र का मित्र गुह नामक निवाद रहता था।

जिले में प्रधान नदियां गंगा, यमुना, टोंस, और वेलन हैं।

गंगा ज़िले में पश्चिमोत्तर कोन के पास प्रवेश करने के उपरांत ७८ मील दिक्षण-पूर्व बहती है। यमुना दिक्षण-पश्चिम कोने के पास प्रवेश करके कुछ उत्तर-पूर्व छेकर के ६३ मील पूर्व बहने के उपरांत किले से पूर्व गगा में मिल गई है। टोंस नदी जिले के दिक्षण कैंमूर पहाड़ियों से निकली है और उत्तर-पूर्व जाकर गंगा में गिरती है। संगम से १९ मील नीचे इसके मुहाने से २ या ३ मील उत्तर इस पर रेलवे का पुल है। वेलन भी कैंमूर पहाड़ियों से निकली है। यह दिक्षण-पूर्व से जिले में प्रवेश करके पश्चिम को बहती हुई रीवां की सीमा पर टोंस नदी में गिरती है।

मतापगढ़, वेजरिया और राजापुर की खानों से (जो यमुना के किनारे पर हैं) मकान योग्य पत्थर निकलता है।

इलाहाबाद जिले के फूलपुर तहसील के अंतर्गत सिकंदरा बस्ती है, जिस से लगभग एक मील पश्चिमोत्तर गज़नी के महमूद का प्रसिद्ध जनरल सैयद सलार मसद का मकबरा है, वहां ज्येष्ट मास में मेला होता है, जिसमें लगभग ५० हजार मुसलमान यात्री जाते हैं।

इतिहास।

प्रयाग शहर बहुतपुराना है। सन ई० के करीब ३०० वर्षपहले चीनी यात्री मेगेस्थनीज ने इसकी देखा था। सन ४१४ ई० में चीन के वौद्ध यात्री फाहियान ने इस जिले का हाल लिखा है कियह कोसलराज्य का एक हिस्सा है। उसके लगभग २०० वर्ष पीछे चीनी यात्री हुएंत्मंग लिखता है कि प्रयाग में २ बौद्धमठ और बहुतेरे हिंदूमंदिर हैं।

सन ११९४ ई० में शहाबुदीन गोरी ने प्याग को जीता था।

सन १५७५ ई० में मुगुल वादशाह अकबर ने वर्तमान शहर को यहां बसा कर इसका नाम इलाहाबाद रक्खा। अकबर के पुत्र जहांगीर ने किले में रहकर इलाहाबाद की हुकूमत की।

जहांगीर का पुत्र खुसक् उससे बागी हुआ, परंतु परास्त किया गया और अपने भाई खुर्रम (यह पीछे शाहजहां के नाम से राजगदी पर बैठा) के आधीन रक्खा गया और सन १६१५ ई० में मरने पर खुसुक् बाग में गाड़ा गया।

सन १७३६ ई० में मरहटों ने इलाहाबाद को ले लिया। सन १७५० ई० में फर्हखाबाद के पटानों ने मरहटों से इसको जीता। पीछे इलाहाबाद के साशक कई बार बदले। सन १८०१ में अंगरेजों ने लखनऊ के नवाब सआदत अली खां से इलाहाबाद को लेकर अपने राज्य में मिला लिया।

इलाहाबाद पश्चिमोत्तर पूर्वश के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर की राजधानी था, सन १८३५ ई० में आगरा राजधानी वनाया गया, परंतु सन १८५८ में फिर इलाहा-बाद पश्चिमोत्तर देश की राजधानी हुआ। सन १८७७ में अवध की चीफ-किमिश्नरी तोड़ कर इसी गवर्नमेंट के आधीन कर दी गई। अब दोनों के मुख्य हाकिम को पश्चिमोत्तर देश का लेफ्टिनेंट गवर्नर और अबध का चीफ किमश्नर कहते हैं और वे कुछ दिनों तक इलाहाबाद में और कुछ दिनों तक लखनऊ में रहते हैं।

सन १८५७ ई० के मई मास में यहां केवल सिपाहियों की छठवीं रेजीमेंट थी। ता० ९ मई को सिक्ख पल्टन के फिरोजपुर रेजीमेंट का एक हिस्सा और उसके १० दिन बाद अवध इरेंगुलर घोड़सवारों के दो रिसाल इसमें मिलाए गए। कई दिन बाद चुनार से ६० गोरे बुलाए गए, उसके पीछे एक दिन पल्टन के सिपाहियों ने बलवा किया और १५ अफसरों को मार डाला। तब सिक्ख पल्टन का कमांडर अपने आधीन के सिपाहियों को प्रधान फाटक के पास ले गया, जिनके साथ चुनार बाले गोरे सिपाही और अंगरेजी बालंटियर तोपों सहित थे। अंगरेजों ने सिपाहियों को दरवा कर उनके इथियार छीन लिए और वे किले से बाहर खदेर दिए गए।

शहर के जेलखाने के फाटक को तोड़ कर कैंदी बाहर निकले। उन्होंने जो अंगरेज मिले, उनको मार डाला। ता० ७ वीं जून के सबेरे खजाना लूटा गया। छटवीं रेजोमेंट के हर सिपाही ३ वा ४ हजार रुपये लेकर अपने यह को चले गए। उनमें से बहुतेरों को मार कर बस्ती वालों ने रुपये छीन लिए। एक मुस-लमान मौलवी इलाहाबाद का गवर्नर बनाया गया। वह खुसुरू बाग में रहने लगा।

ता० ११ जून को जनरल नील किले में पहुंचा और वारहवीं को सबेरे दारागंज पर तोप छोड़ने लगा। उसकी फौज ने जाकर गांव को जलाया और नाव के पुल पर कब्जा कर लिया। उसी दिन मेजर स्टेफेन्सन १०० सिपाहियों के साथ किले में आया, तव नील ने आस पास की वस्तियों को लूटा और शहर में बहुत दर उत्पन्न किया। मौलवी कानपुर को भाग गया।

+पश्चिमोत्तर देश ।

अंगरेजों ने पहले बंगाले को जीता और जो कई एक किले बंगाले के पश्चिमोत्तर में थे, इसलिये वे इसको पश्चिमोत्तर देश कहने लगे।

पश्चिमोत्तर देश और अवध के उत्तर तिब्बत; उत्तर-पूर्व नैपाल राज्य; पूर्व और दक्षिण-पूर्व विहार के चंपारन, सारन और शाहाबाद जिले; दक्षिण चटिया नागपुर का हजारी बाग जिला, रीवां राज्य, बुंदेलखण्ड के देशी राज्य और मध्य देश का खागर जिला; और पश्चिम ग्वालियर, धौलपुर और भरतपुर देशी राज्य, पंजाब के गुरगांव, दिल्ली करनाल और अंबाला जिले और सिरमोर और जबल राज्य हैं।

पश्चिमोत्तर देश के अंगरेजी राज्य का क्षेत्रफल (इसमें अवध नहीं है) ८३२८६ वर्गमील और जन-संख्या इस साल की मनुष्य-गणना के अनुसार ३४२५४२५४ है।

वेशी राज्यों का क्षेत्रफल ५१०९ वर्गगील और जनसंख्या ७९२४९१ है। पश्चिमोत्तर देश (अवध को छोड़ कर) में ७ किस्मत और ३७ जिले हैं।

किस्मत	जिले का नाम जोड़
मेरट—	देहरादृन, सहारनपुर, मुज़फ्फरनगर, मेरठ, बुलन्दशहर, अलीगढ़
रुहेलखंड—	बिजनौर, मुरादाबाद, बदाऊं, बरैली, पीलीभीत, शाहजहांपुर ६
	मथुरा, आगरा, एटा, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, इटावा
इलाहाबाद-	—कानपुर, फतहपुर, हमीरपुर, बान्दा, इलाहावाद
बनारस—	जौनपुर, मिरज़ापुर, बनारस, ग़ाज़ीपुर, बलिया, आज़मगढ़
	गोरलपुर बस्ती
झांसी—	जाळौन, झांसी, लिलतपुर
कमाऊं—	तराई, कमाऊं, गढ़वाल
	<u> </u>

इस साल की मनुष्य-गणना के समय पश्चिमोत्तर और अवध में १०० में हिन्दी बोलने वाले ९७, कुमावनी [कमाऊं भाषा] बोलने वाले १ ६, गढ़वाली १ ६ और दुसरी भाषा वाले ६ मनुष्य थे।

देशी राज्यों में १०० में हिन्दी बोलने वाले ६९ ई और गढ़वाली बोलने वाले ३० ई मनुष्य थे।

पश्चिमोत्तर देश के शहर कसबे इत्यादि, जिनमें इस साल की मनुष्य-गणना के समय १०००० से अधिक मनुष्य थे [इनमें अवध प्रदेश नहीं है।]

नम्बर	शहर और कसबे	जिले	जन-संख्या
?	वनारस	बनारस	२१९४६७
3	कानपुर	कानपुर	१८८७१२
ş	इलाहावाद	इलाहाबाद	१७५२४६
8	आगरा	आगरा	१६८६६२
4	बरैली	बरैली	१२१०३९.
Ę	मेरठ	मेरठ	११९३९०
૭	मिज़ीपुर	मिज़ीपुर	८४१३०

भारत-भ्रमण, प्रथम खण्ण, पांचवां अध्याया

नम्बर	शहर और कसबे	जिले	जन-संख्या
6	शाहजहांपुर	शाहजहांपुर	७८५२२
9	फर्रूखावाद	फर्रूखाबाद	७८०३२
१०	मुरादाबाद	मुरादाबाद	७२९२१
35	गोरखपुर	गोरखपुर	६३६२०
१२	सहारनपुर	सहारनपुर	६३१९४
१३	अलीगढ़	अलीगढ़	६१४८५
88	मथुरा	मथुरा	६११९५
१५	श्नांसी	झांसी	५३७७९
१६	गाजीपुर	गाजीपुर	४४९७०
१७	जौनपुर	जौनपुर	४२४१९
१८	हाथरस	अलीगढ़	३९१८१
१९	इंटावा	इंटावा	६१९७६
२०	संभ्रल :	मुरादाबाद	३७२२६
२१	बदाऊं	बदाऊं	३५२३०
२२	अमरोहा	मुरादाबाद	३५२३०
२३	पीछीभीत	पीलीभीत	३३७९९
२४	ग्रन्दावन	मथुरा	३१६११
३५	् हरिद्वा र	सहारनपुर	. २९१२५
२६	चंदौसी	मुरादाबाद	२८१११
२७	खुर्जी	बुलंदशहर	२६३४९
२८	वेहरा	देहरादुन	२५६८४
२९	बांदा	गंदा	२३०७१
्हे०	नगीना	विजनीर	२२१५०
39	फतहपुर	फतहपुर	२०१७९
33	ानरानीपुर	झांसी	१९६७५

नम्बर	शहर और कसबे	जिले	जन-संख्या
33	आजमगढ़	आजमगढ़	१९४४२
38	नजीबाबाद	विजनीर	१९४१०
३५	वेबबंद	सहारनपुर	१९२५०
३६	मैनपुरी	मैनपुरी	१८५५१
थह	कराना	मुजफ्फरनगर	१८४२०
36	मुजफ्फरनगर	गुजफ्फरनगर	१८१६६
39	कन्नोज	फर्र्स्वाबाद	३७६४८
४०	रुड़की	सहारनपुर	१७३६७
88	तिलहर	सहारनपुर	१७२६५
४२	बुलंदशदर	बुळंदशहर	१६९३१
४३	बलिया	बलिया	१६३७२
४४	विजनौर	विजनौर	१६२३६
४५	कासगंज	एटा	१६०५०
४६	सहसवान	बदाऊं	१५६०१
४७	शेरकोट	विजनौर	१५५८९
86	मऊ	आजमगढ़	१६५४७
४९	अतरवली	अलीगढ़	१६४०८
६०	फिरोजाबाद [']	आगरा	१६२७८
५१	सिकन्दराबाद	बुळंदशहर	१५२३१
५२	हापड़	मेरह	१४९६७
५३	कीरतपुर	विजनीर '	१४८२३
48	काशीपुर	तराई	१४७१७
લલ	मवारकपुर	आजमगढ़	१४३७र
५६	बस्ती	वस्ती	१३६३०
५७	अंबाला	बरैली	१३५५९
	안전하다 중요한 시간 중인을 하면하다 기술을 하는데 없었다.	선생님들이 없는 그 한 이로로 가입니다.	[전문] : 1 : 1 : 1 : 1 : 1 : 1 : 1 : 1 : 1 :

नम्बर	शहर और कर	पवे जिले	जन-संख्या
66	जलेसर	एटा	१३४२०
६९	कोंच	जालीन	१३४०८
६०	सिकन्दराराऊ		१३०२४
६१	काछपी	जालीन	१२७१३
६२	राठ	हमीरपुर	? २ ३११
Ęş	चांदपुर	विजनौर	१२२५६
६४	शेरपुर	गाजीपुर	१२१५६
ह्द •	सर्धना	मेर् ठ	१२०५९
ēē.	गंगोह	सहारनपुर	१२००७
6 0	अहरोरा	पिज़ीपुर मिज़ीपुर	११६३१
हुं हुंट	शिकारपुर	당기성으로 함께 보이는 경기도 다.	
६ ९		बुळंदशहर बळिया	११५९६
90	सहतवार		११५१९
	चुनार	मिज़ीपुर	११४२३
७१	वरहज	गोरखपुर	११४२१
७२	ललितपुर	ललितपुर	११३४९
७३	सोरों	एटा	११२६५
૭૪	गहमर	गाजोपुर	१११२९
७६	रामनगर	वनारस	११०९३
७६	महडावल	वस्ती	१०९९१
७७	रेवतीपुर	गाजीपुर	१०९६१
30	निहटोर	विजनौर	१०८११
७९	चितिफरोजपुर	वलिया	१०७२६
60	खेकरा ँ	मे रठ	१०३१६
દેશ	सोलासराय	स् रादाबाद	१०३०४
63	गाजियाबाद	मेरठ	१०१९३
6 5	मङ्ग लीर	सहारनपुर	\$00\$\text{\text{\$\sigma}}
AND THE RESERVE OF THE PARTY OF	an personal aware representation of the Color State St		

पश्चिमोत्तर देश के देशी राज्य के कसबे, जिनमें इस सन की मनुष्य-गणना के समय ५००० से अधिक मनुष्य थे।

	रामपुर	रामपुर	EEO;
	तांडा शाहाबाद	रामपुर रामपुर	०७२ ५९६

छठवां अध्याय।

नयनी जंक्ञान, रीवां, नागौड़, मइहर, करबी, चित्रकूट, काळिंजर, अजयगढ़, छत्तरपुर, विजावर, और पन्ना ।

⊹नयनी जंक्शन।

नयनी जंक्शन इलाहाबाद से ४ मील पूर्व है, जहांसे रेलवे लाइन तीन ओर गई है।

(१) पश्चिम-दक्षिण जबलपुर तक
'इष्टइंडियन रेलवे उससे आगे
'ग्रेटइंडियन पेनिनगुला रेलवे'
मील-प्रसिद्ध स्टेशन
५८ मानिकपुर जंक्शन
१०६ सतना
१२८ माइहर
१६७ कटनी जंक्शन
२२४ जबलपुर
२७६ नरसिंहपुर
३०४ गाडरवारा जंक्शन
३७७ इटारसी जंक्शन

३९८ सिजनी
४२४ हरदा
४८७ खंडवा जंक्शन
५१८ चांदनी
५३० बुरहानपुर
५६४ भुसावल जंक्शन
६०८ पचौरा
६३६ चालीसगांव
६६२ नन्दगांव
६७८ मनमार जंक्शन
७२४ नासिक
७२७ देवलाली

७इ५ कसारा ८०७ कल्यान जंक्शन ८१९ थाना ८३४ दादर ८४० बंबई विक्टोरिया स्टेशन मानिकपुर जंक्शन से पश्चिम कुछ उत्तर ' इंडि-यन मिडलेंड रेलवे,' जिस का महस्रुल पति मील २ ई पाई है। मील-प्रसिद्ध स्टेशन १९ करवी २९ तमोलिया ६२ बांदा ८५ कवराई ९५ महोबा १०९ कुल पहाड़ ११४ जयतपुर १४१ मजरानीपुर १४८ रानीपुर रोड १७४ उरछा १८१ झांसी जंक्शन कटनी से पूर्व-दक्षिण 'बंगाल नागपुर रेलवे ' पर जिसके तीसरे दर्जे का महस्रुल पति मील २ पाईहै।

मील-प्रसिद्ध स्टेशन १३४ पेड्रारोड १९८ विलासपुर जंक्शन इटारसी जंक्शन से उत्तर ओर 'इंडियन मिडलेंड रेलवे ' मील-प्रसिद्ध स्टेशन ११ हुशंगाबाद ५७ भोपाल जंक्शन ८५ सांची ९० भिलसा १४३ बीना जंक्शन (सागर के लिये) १८२ छछितपुर २३८ झांसी जंक्शन खंडवा जंक्शन से अधिक उत्तर कम पश्चिम 'राजपुताना मालवा रेलवे जिस के तीसरे दर्जे का महस्रल मित मील २ पाई है। मील-प्रसिद्ध स्टेशन ३७ मोरतका (ओंकार नाथ के पास) ७३ मऊ छावनी ८६ इन्दौर

१११ फतेहाबाद जंक्शन (उज्जैन के पास) १६० रतलाम जंक्शन (डाकौर के लिये) १८१ जावरा २४३ नीमच २७७ चित्तौरगढ़ जंक्शन (उदयपुर के लिये) जहां से लाइन उतर गई है। ३७८ नसीराबाद छावनी ३९३ अजमेर जंक्शन भुसोवल जंक्शन से पूर्व ग्रेट इंडियन पेनिन शूला रेलवे '। मील-प्रसिद्ध स्टेशन ५६ जलंब जंक्शन ६४ सेगांव ८७ अकोला १३६ वडनेरा जंक्शन (अमरावती के लिये) १९५ बरदाजंक्शन २४४ नागपुर मनमार जंक्शन

से दक्षिण मनमार धोंद

ब्रेंच पर

मील-प्रसिद्ध स्टेशन ९५ अहमदनगर १४६ धोंदजंक्शन कल्यान जंक्शन से दक्षिण-पूर्व पूनालाइन मील-प्रसिद्ध स्टेशन २० नेरल ८३ किकी ८६ पूना जंक्शन (२) नैनी जंक्ञन से अधिक पश्चिम कम उत्तर ' इष्ट इंडियन रेखवे ' मील-प्रसिद्ध स्टेशन ४ इलाहाबाद ७७ फतहपुर १२४ कानपुर जंक्शन १७५ फफुण्ड २१० इटावा २२० यशवंतनगर २४५ शिकोहाबाद २५७ फिरोजावाद २६७ तुण्डला जंक्शन जिस से १६ मील पश्चिम आगरा है। २९७ हाथरस जंक्शन ३१५ अलीगढ़ जंक्शन

३४२ खुर्जी 🛎

३५१ बुलंदशहर रोडं
३६९ सिकन्दराबाद
३८१ गाजियाबाद जंक्शन
३९४ दिल्ली जंक्शन
(३) नैनी जंक्शन से पूर्व
'इष्ट इंडियन रेलवे'।
गील-प्रसिद्ध स्टेशन
४६ विंध्याचल
५१ मिजीपुर
७१ चुनार
९१ मुगलसराय जंक्शन

१२७ दिलदारनगर जंक्शन
१४९ वक्सर
१७८ आरा
२०० कोयलवर
२१६ दानापुर
२२२ वांकीपुर से ६ मील
पश्चिमोत्तर दिघाघाट है।
बांकीपुर से दक्षिण ८
मील पुनपुन और ५७
मील गया है।

रीवां।

नयनी से ५८ मील पश्चिम-दिशण जवलपुर की लाइन पर पश्चिमोत्तर देश के बान्दा जिले में मानिकपुर रेलवे का जंक्शन है।

मानिकपुर से चालिस पर्चास मील दक्षिण-पूर्व मध्यभारत के बघेलखण्ड में प्रधान देशी राज्य की राजधानी रीवां एक कसवा है, जहां रेल नहीं गई है। मानिकपुर से ७० मील दक्षिण माइहर रेलवे का स्टेशन है, जिससे ४० मील पूर्वोत्तर रीवां राजधानी तक उत्तम सड़क गई है।

यह २४ अंश ३१ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश २० कला पूर्व देशांतर में स्थित है। सन १८९१ की जन-संख्या के समय रीवां में २३६२६ मनुष्य थे, जिनमें १८३२० हिन्दू, ४९१७ मुसलमान, ५२ जैन, ३८ सिक्ख, २९६ एनिमिष्टिक, और ३ क्रस्तान।

रीवां ३ दीवारों से घेरा हुआ है। भीतरी की दीवार महाराज के महल को घेरती है। महाराज का राघवमहल देखने योग्य उत्तम है।

रीवां राज्य—राज्य के उत्तर में पश्चिमोत्तर देश के बांदा, इलाहाबाद और मिर्ज़ीपुर जिले; पूर्व मिर्ज़ीपुर जिले का भाग और छोटा नागपुर के देशी राज्य; दक्षिण मध्यदेश में छत्तीसगढ़, मण्डला और जञ्बलपुर जिले और पश्चिम बघेलखंड के माइहर, नागौड़, सोहाबल और कोटी राज्य हैं।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय राज्य का क्षेत्रफल लंगभग १०००० बर्गमील और मनुष्य-संख्या १३०५१२४ थीं। जिनमें ९७१७८८ हिंदू, ३०२१०७ आदिनिवासी, ३११०७ मुसलमान, ८६ जैन, २८ क्रुस्तान और ८ सिक्ख थे। हिंदुओं में ब्राह्मण, कुमीं, अहीर, राजपूत, अधिक हैं। आदि निवासियों में कोल और गोंड़ दो जाति हैं। ब्राह्मण और राजपूत जमींदार और कुमीं और गोंड़ जमींदार और खेतिहर हैं।

राज्य की मालगुजारी सन १८८३-८४ ई० में १११२५८० रूपया था, जिस-में से ७०६०९० रूपया जमीन से आया था। देश के जंगल और कोयले की खानों से बहुत आमदनी है। काली भूमि में गेहूँ इत्यादि की अच्छी फिसल होती है। लाह, करायल और गोंद राज्य से दूसरे देशों में जाते हैं। और बांधवगढ़ का किला प्रसिद्ध है।

सन १८८३-८४ ई० में ३७१ घोड़ सवार ५६४ पदल, ६ मैदान की तोणें और ७७ गोछंदाज थे।

सोन नदी राज्य की दक्षिण सीमा से निकल कर राज्य में उत्तर और पूर्वीत्तर बहने के उपरांत मिर्ज़ीपुर जिले में गई है। टंस नदी भी राज्य में हो कर गई है। राज्य की पश्चिमी सीमा होकर रेलवे निकली है। सतना और दभौरा राज्य में स्टेशन हैं। डेकान की बड़ी सड़क रीवां और माइहर होकर गई है।

मानिकपुर रेखंबे जंगशन से ४८ मील दक्षिण रीवां राज्य में सतना का रेखंबे स्टेशन है। सतना में वधेलखंड के पोलिटिकल एजेंट का सदर स्थान है। वहां वेशी रिसाले का एक हिस्सा रहता है और रीवां के महाराज की खंदर कोठी बनी है। सतना से पूर्व रीवां को उत्तम सड़क गई है।

इतिहास।

सन ५८० ई० में वाघदेव गुजरात से आकर मोरफा के किले का मालिक दना और पीढ़ावान के राजा की पुत्री से उसने विवाह किया। उसका पुत्र कुरून देव सन ६१५ में राजा हुआ। उसने राज्य को बढ़ाया और उसका नाम बघेलखंड रक्खा। कुरुन देव ने मंडला के राजा की पुत्री से बिवाह कर के बांधवगढ़ के किले को दहेज में पाया और अपनी कचहरी को वहां लेगया। १९ वां राजा बीरभानुराव सन १६०१ में राजा हुए, जिनके राज्य के समय हुमार्युंबाह के परिवार के छोगों ने घेरञ्चाह के डर से भाग कर रीवां राज्य में पन्नाह लिया था। सन १६१८ में विक्रमादित्य ने रीवां को बसा कर अपनी राजधानी बनाया। २७ वां राजा अवधूतसिंह अपने पिता के मरने के समय केवल ६ महीने का था, उस समय डुंदेलों के प्रधान हरदीशाह ने रीवां राज्य पर चढ़ाई करके उस पर अधिकार कर लिया। अवधूतसिंह और उसकी माता मतापगढ़ में भाग गईं। कुछ दिनों के उपरांत दिल्ली के वादशाह की सहायता से हरदी शाह राज्य से निकाल दिया गया। अवधृतसिंह के पीछे अजितसिंह और अजितसिंह के पश्चात सन १८०९ में जयसिंह राजा हुए। सन १८१२ ई० में अंगरेजी सरकार और जयसिंह के साथ प्रथम संधि हुई और अंगरेजी प-भाव बुंदेलखंड में हुआ। जयसिंह देव के पश्चात उनके पुत्र महाराज विश्वनाथ सिंह राजा हुए, जिनकी मृत्यु होने पर सन १८३४ में महाराज रघुराजसिंह के० जी० सी० एस० आई० रीवां नरेश हुए, जो बड़े विष्णुभक्त और कवि थे। सन १८४७ में महाराज ने अपने राज्य से सती होने की रीति को उठा दिया। सन १८५७ के बलबे के समय के अच्छे कामों के बदले में अंगरेजी सरकार ने म-हाराज को सोहागपुर और अमर-कंटक का अधिकार और के० जी० एस० आई० की पदवी दी और उनको १९ तोपों की सलामी मिलने का अधिकार प्राप्त हुआ। सन १८८० में महाराज रघुराज सिंह का देहांत हो गया। रीवां राज्य पोलिटिकल एजेंट और सुपरिटेन्डेंट के प्रबंध के आधीन हुआ। राजपरिवार के १० सरदारों की कौसिल की सहायता से राज्यकार्य चलने लगा। महाराज रघुराजसिंह के पुत्र महाराज व्यंकटेशरमण रामानुजनसादसिंह जी १५ वर्ष की अवस्था के हैं।

+ नागौड़।

नागौड़ मध्य भारत में नधेलावंड के आधीन एक छोटा राज्य है, ाजसके पूर्वोत्तर सोहावल और रीवां राज्य; पूर्व रीवां राज्य, दक्षिण-पूर्व माइहर राज्य और पश्चिम पन्ना राज्य है। सन १८८१ में रोज्य का क्षेत्रफल ४५० वर्गमील और जन-संख्या ७९६२९ थीं। जिनमें ६८०७० हिंदू, २९०२ मुसलमान, ६७९ जैन, ११ क्रस्तान, २ सिक्ख और ७९६५ आदि निवासी थे। आदि निवासियों में २१२९ गोंड़ और ५८३६ कोल।

राज्य की मालगुजारी लगभग १५०००० रूपया है, जिसमें से ७०००० रूपया जागीरों और परमार्थ तथा पुण्य में खरच पड़ता है। राज्य होकर रेल गई है। मानिकपुर से ४८ मील दक्षिण सतना का स्टेशन है जिससे १७ मील दूर नागौड़ कसवा है, जिसमें पहले एक अंगरेजी छावनी थी और राजा रहते थे। वहां एक किला है। सन १८७६ के लगभग नागौड़ के राजा ने कसके को छोड़ दिया और वे उचहरा में रहने लगे। नागौड़ की जन-संख्या घट कर सन १८८१ ईं० में ४८२६ रह गई।

इतिहास।

सन १८१८ ई० में लालशिवराज सिंह की मृत्यु होने पर उसके पुत्र बल-भद्रसिंह उत्तराधिकारी हुए, जो सन १८३१ में अपने भाई को मार डालने के अपराध से पदच्युत कर दिए गए, उनका पुत्र रघुविंदु सिंह लड़का थां, इसलिये राज्य थोड़े दिनों के लिये अंगरेजी राजकाज के आधीन रहा। सन १८३८ में रघुविंदुसिंह राज के अधिकारी हुए। सन १८५७ के बळवे के समय के अच्छे कामों के बदले में राजा को जब्त किया हुआ विजय राघवगढ़ का राज्य मिला और ९ तोपों की सलामी मिलती है। सन १८७४ में रघुविंदु सिंह की मृत्य होने पर उनके पुत्र वर्तमान राजा जदुविंदुसिंह उत्तराधिकारी हुए, जो परिहार राजपूत हैं। राजा को २ तोप और ११६ पैदल और पुलिस हैं।

माइहर।

मानिकपूर जंगशन से ७० मील और सतना से २२ मील दक्षिण माइहर का रेलवे स्टेशन है। मध्य भारत के बुंदेलखंड एजेंसी के आधीन देशी राज्य की राजधानी डेकान की वड़ी सड़क के पास माइहर छोटा कसवा है। यह २४ अंश १६ कला उत्तर अक्षांश और ८० अंश ४८ कला पूर्व देशांतर में है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना केसमय माइहर में ६४८७ मनुष्य थे, जिनमें ५३४७ हिंदु, ११२९ मुसलमान और ११ दूसरे।

माइहर में १६ वीं सदी का बना हुआ एक किला है, जिसमें अब राजा रहते हैं। एक झील कसबे के पश्चिमोत्तर और दूसरी दक्षिण-पश्चिम है। यहांकी प्रधान सौदागरी गल्ला, मकान बनाने योग्य लकड़ी, और जंगल की वैदाबार की है। यहांसे बड़ी सड़क द्वारा ४० मील पूर्वोत्तर रीवां राजधानी है।

माइहर राज्य-राज्य के उत्तर नागौड़ राज्य, पूर्व रीवां राज्य, दक्षिण जवलपूर का अंगरेजी जिला और पश्चिम अजयगढ़ राज्य हैं।

सन १८८१ ई० में राज्य का क्षेत्रफल लगभग ४०० वर्गनील और माल-गुजारीं ७०९६० रुपया थी। राज्य में १ कसवा और १८२ गांव थे। मनुष्य-संख्या ७१७०९ थी, जिसमें ५९०९० हिंदू, १०५७७ आदि निवासी, २०२९ मुसलमान, ६ जैन, ५ क्रस्तान, और २ सिक्ख थे, हिंदुओं में कुनवी और ब्राह्मण अधिक हैं। आदि निवासियों में कोल और गोंड़ दो जाति हैं।

इतिहास ।

पहिले यह राज्य रोवां के आधीन था, परंतु बुंदेलखण्ड में अंगरेजी पराक्रम

नियत होने के बहुतरे वर्ष पहिले पन्ना के बुंदेला राजा के हाथ में आया था, जिसने इस राज्य को ठाकुर दुर्जनिसिंह के पिता को दे दिया। सन १८२६ में दुर्जनिसिंह के देहांत होने पर उसके पुत्रों ने राज्य के लिये झगड़ा किया, तब अंगरेजी सरकार ने राज्य को विभक्त करके विश्वनिसिंह को माइहर और प्रयाग दास को विजयगढ़ का राजा बनाया। सन १८५८ में बगावत करने के अपराध में अंगरेजी सरकार ने विजयगढ़ के राज्य को छीन लिया। विश्वनिसिंह का पोता माइहर के वर्तमान नरेश योगीजाति राजा रघुवीर सिंह हैं, जिनको सन १८७७ के दिल्ली दरबार में राजा की पदवी मिल्ली और तबसे तोपों की सल्लामी मिल्लने की आज्ञा हुई। राजा का मैनिक बल ७ तोपें और ८८ पैदल और पुलिस है।

🗸 करवी।

मानिकपुर जंगरान से १९ मील पश्चिमोत्तर करवी का स्टेशन है। करवी देश के बांदा जिले का सब डिबीजन पयिस्विनी नदी के पास एक कसवा है, जिसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ४१६७ मनुष्य थे। यह २५ अंश १२ कला १० विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश ५६ कला ५० विकला पूर्व देशांतर में है।

यहां ५ मन्दिर, ५ मसजिद और स्टेशन से १ई मील के अन्तर पर एक सराय है। एक वड़े मकान में प्रसिद्ध नारायणराव के परिवार के लोग रहते हैं। करवी में गणेशवाग मख्यात है, जिसमें विनायक राव के (सन १८३७ ई०) बनवाए हुए एक तालाव, एक छन्दर मन्दिर और एक कूप हैं।

इतिहास।

सन १८०५ ई० में करवी में अंगरेजी फौज की छावनी बनी। सन १८२९ में यह पेशवा के नायब विनायक राव के रहने का स्थान हुई, जो प्रायः शाही हालत में रहता था। बलबे के समय बांदा के ज्वाइंट मजिस्ट्रेट के मारे जाने पर नारायण राव ८ महीने तक इस इलाके का स्वतंत्र मालिक रहा। बलबे के पीछे धीरे धीरे करवी की घटती होने लगी। राजापुर—करवी से १८ मील पूर्वोत्तर बांदा जिले में यमुना नदी के दाहिने किनारे पर राजापुर तिजारती कसवा है, जिसको हिन्दी के प्रसिद्ध किन तुलसी दास ने पटा जिले के सोरों से आकर नियत किया; जिनका देहान्त सम्बत १६८० (सन १६२३ ई०) में काशी के अस्सी घाट पर हुआ। राजापुर के एक मन्दिर में तुलसीदास का चौरा है, जिस पर तुलसीकृत रामायण रक्ली है। सन १८८१ की जन-संख्या के समय राजापुर में ७३२९ मनुष्य थे, जिनमें ६९४६ हिन्दू, ३७७ मुसलमान और ६ जैन। राजापुर में कई एक देवमन्दिर और पुलिस का स्टेशन है। वर्ष में ४ मेला होता है।

/चित्रकूट।

सीतापुर-करवी से ५ मील मन्दोकिनी अर्थात पयि कि नदी के बायें तट पर बान्दा जिले में चित्रकूट की बस्ती सीतापुर है करवी में सवारी के लिये बैलगाड़ी और टट्टू मिलते हैं।

सीतापुर वड़ी वस्ती है, जिसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय १९७७ मनुष्य थे। इसमें पण्डा लोगही के अधिक मकान हैं। यहां वन्दर वहुत हैं, इनके डरसे यहां के प्रायः सम्पूर्ण मकानों के छप्परों पर वैर आदि कांटेदार हुओं के झांख विछाए गए हैं। कोटितीय, अनुस्या आदि स्थानों पर जाने के लिये सीतापुर में पालकी टट्टू और कूली मिलते हैं।

मन्दाकिनी के किनारे सड़क के दूसरे बगल पर बहुतेरे देवमन्दिर हैं। स्नान का प्रधान स्थान सीतापुर के पास रामघाट है, जिसके समीप एक छोटे और एक बड़े मन्दिर में राम लक्ष्मण आदि देवताओं का दर्शन होता है।

चैत्र की रामनौमी और कार्तिफ की दिवाली को बड़े मेले और अमावास्या और ग्रहण में छोटे मेले होते हैं। दोनों बड़े मेलों में प्रथम ३०००० से ४५००० तक मनुष्य आते थे, परन्तु अब १५००० से अधिक नहीं आते। चारो ओर की पहाड़ियों पर, मन्दाकिनी के किनारों पर और मैदानों में देवताओं के ३३ स्थान हैं, जिन में कोटितीर्थ, देवांगना, हनुमानधारा, स्फटिकशिला, अनुस्रआ, गुप्त गोदाबरी और भरतकृप ७ प्रधान हैं। कामदानाथ (पहाड़ी)—सीतापुर से १ मील पर कामदानाथ पहाड़ी सुन्दर पौधे और बड़े द्वक्षों से दपी हुई है। पहाड़ी के चारो ओर ५ मील परिक्रमा की पक्की सड़क है, जिसको लगभग १५० वर्ष हुए कि पन्ना के राजा ने बनवाया। पहाड़ी के चारो ओर परिक्रमा के पास बहुतेरे देवस्थान और मन्दिर हैं, जिनमें रामचबूतरा, मुखारबिन्द, चरणपादुका आदि स्थान मुख्य हैं। पहाड़ी पर बहुत बन्दर हैं। जिनको यात्री चने खिलाते हैं। कामदानाथ चित्रकूट में प्रधान देवता हैं। सीतापुर से कामदानाथ तक छोटे बड़े सैकड़ों मन्दिर हैं, जिनमें अधिकांश पन्ना राज्य की ओर से बने हुए हैं।

कामदानाथ के पास छक्ष्ण जी का मन्दिर है, जहां जाने के छिये २०० से अधिक सीढ़ियां बनी हैं।

कोटि तीर्थ-एक पहाड़ी पर बहुत सीढ़ियों द्वारा चढ़ने पर एक कुण्ड मिलता है, जिसमें यात्री स्नान करते हैं। लोग कहते हैं कि एक समय इस स्थान पर कोटि ऋषियों ने यज्ञ किया था, इसलिये इसका नाम कोटि तीर्थ पड़ा। यात्री स्नान दर्शन करके दो पहर के अन्दर सीतापुर लौट आते हैं।

्हनुमानधारा—एक पहाड़ी पर हनुमानजी की एक विशाल मूर्ति है, जिसकी भुजा पर ऊपर से गिरती हुई जल की धार पड़ रही है। यहां और भी कई स्थान हैं। यात्री हनुमानधारा से भी दो पहर के अन्दर सीतापुर लौट आते हैं।

े स्फिटिकिशिला और अनुसूया—ि चत्रकूट से १ मील दक्षिण म-न्दािकनी के किनारे प्रमोदवन में रीवां के महाराज का वनवाया हुआ लक्ष्मी-नारायण का छन्दर मन्दिर और वड़ा मकान हैं। उन दोनो के चारो ओर ऊंची दीवार वाले किले के समान वड़ा घेरा है। दीवार के पास पल्टन रहने के लिये मकान वने हैं। घेरे के भीतर जंगल लग गया है।

प्रमोदवन से १ मील दक्षिण मन्दािकनी के बाएं किनारे पर स्फेटिकिशिला नामक पत्थर का बड़ा ढोका है, जिस पर चिन्ह देख पड़ता है। यात्री मन्दािकनी में स्नान करके चरण-चिन्ह का दर्शन करते हैं। इन्द्र के पुत्र जयन्त ने काक बन कर इसी स्थान पर सीता जी को चोंच से मारा था।

स्फटिकशिला से २ मील आगे एक नाला, ४ मील आगे दूसरा नाला और ६ मील आगे अर्थात् सीतापुर से ८ मील पर अनुस्या नामक स्थान है। यहां मन्दािकनी के बाएं किनारे पहाड़ी के पादमूल पर एक मन्दिर में अनुस्या और दूसरे मन्दिर में अनुस्या के पित अत्रि मिन हैं, जिसके पास यात्रियों के रहने के लिये एक छोटा मकान है। यहां लंगूर बन्दर बहुत हैं। मेले के दिनों में मोदी रहता है। समतल भूमि नहीं है।

२०० सीढ़ियों के ऊपर सिद्ध बाबा की कुटी है। सिद्ध बाबा के देहान्त हुए ३ वर्ष हुए, अब उनका चेला है। सिद्ध बाबा का सदावर्ष यहां अब भी जारी है।

+ गुप्त गोदावरी—अनुस्या स्थान से २ मील उत्तर उसी रास्ते से लौट कर २ मील पश्चिम जाने पर एक वस्ती मिलती है, जिसमें एक ज़मीदार का मकान, बनिये की द्कान और टिकने की जगह हैं। वहां से २ मील और आगे अर्थात् अनुस्या से ६ मील पर गृप्त गोदावरी है।

एक अंधेरी गुफा में १५ वा १६ गज भीतर सीताकुण्ड है, जिसमें झरने का पानी गिरता है और बैठ कर स्नान करने योग्य पानी रहता है। दूसरी जगह गुफा मन्दिर के आकार का एक स्थान है। गुफा के भीतर बहुत चमगादुर रहते हैं। दीप के प्रकाश से भीतर जाना होता है।

जल की धारें पहाड़ी से गुफा के बाहर निकल कर पत्थर से बांधे हुए २ छोटे पोखरों में होती हुई बाहर गिरती हैं और कुछ दूर आगे जाकर पृथ्वी में गुप्त हो जाती हैं, इसीसे इसका नाम गुप्त गोदावरी पड़ा है। पोखरों के पास २ छोटे मन्दिर है और दिन में एक साधु रहता है, जो दीप जला कर यात्रियों को गुफा में ले जाता है।

🖟 भरतकूप-गुप्त गोदावरी से १ ई मील दुर चौबेपुर एक बस्ती है, जिसमें

कार्लिजर के राजाओं में से एक चौबे राधाचरण टाकुर रहते हैं। कार्लिजर के चौबे लोगों को अब १ ई लाल रुपये के लगभग की आमदनी का राज्य है। एजेन्ट के आधीन ७ राजे हैं, जो चित्रकूट में और इसके आस पास बसे हैं। चित्रकूट के जंगल इन्हीं के राज्य में हैं। चौबेपुर में पक्के सरोवर के ऊपर एक पंक्ति से ११ शिव मन्दिर बने हैं, जिनके नीचे पोखरे की ओर धर्मशाला है। पोखरे की दुसरी ओर टाकुरबाड़ी है। चौबे के पूर्वज ने इस स्थान को बनवा कर इसका नाम कैलाश रक्खा। इनकी ओर से सदावर्त जारी है।

चौबेपुर से ६ ई मील और गुप्त गोदावरी से ८ मील खेत के मैदान में भरतकूप है, जिससे जलभर कर स्नान किया जाता है। इसके पास एक वड़े मन्दिर में राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघः और छोटे मन्दिर में केवळ भरत की मूर्ति है।

तुलसीकृत मानस-रामायण संवत १६३१ (सन १५७४ ई०) का बना हुआ भाषा पद्य में एक प्रन्थ है, जिसमें लिखा है कि चित्रकृट पर्वत के निकट एक अनादिसिद्ध स्थल गुप्त था, जिसमें अत्रि सुनि के सेवकों ने जल के लिए कूप खोदा था। जब रामचन्द्र जी ने भरत के विशेष आग्रह करने पर भी राज्या-भिषेक स्वीकार नहीं किया, तब उनके अभिषेक के अर्थ जो तीथों का जल लाया गया था, वह सब उसी कूप में डाल दिया गया। तीथों के जलयोग से वह कूप अति पवित्र हो गया और तबसे उसका नाम भरतकृप हुआ।

चित्रकूट का जंगलि—चित्रकृट का जंगल विख्यात है। जगह जगह घने लता दक्षों की हरियाली मनोहर है। जगह जगह सिंघाड़े का जंगल बना है, जगह जगह बन जन्तुओं के झुण्ड देख पड़ते हैं, जगह जगह पर्वत से झरने निकले हैं और जगह जगह बस्ती हैं।

तमोलिया—भरतकूप से एक ओर ६ मील सीतापुर और दूसरी ओर १ मील तमोलिया का रेलवे स्टेशन है, जिससे १० मील करवी है। दोनो के बीच में चित्रकूट स्टेशन है, जिससे १० मील करवी है। दोनो केबीच में चित्रकृट स्टेशन भी है, परन्तु वहां यात्री नहीं उतरते; क्योंकि रास्ता जंगल का है और कोई सवारी नहीं मिलती, तमोलिया बड़ी बस्ती है, वहां से घी और रूई दुसरी जगहों में जाती हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा।

महाभारत—(बनपर्वि—८५ वां अध्याय) चित्रकूट में सब पापों की नाश करने वाली मन्दाकिनी नदी है, जिसमें स्नान करके पितर और देवताओं की पूजा करने से अश्वमेध यह का फल होता है और मोक्ष मिलती है। वहां से अत्यन्त उत्तम भर्तृहरि के स्थान को जाना चाहिए, जहां देवताओं के सेनापित स्थामि कार्तिक सदा निवास करते हैं। आगे कोटितीर्थ है, जिसमें स्नान करने से सहस्र गोदान का फल होता है। वहांसे जेष्ठतीर्थ में जाना चाहिए, जहां महादेव की पूजा करने से पुरुष चन्द्रमा के समान प्रकाशित हो जाता है। उस कुएं में चारो समुद्र बसते हैं। नियमधारी पुरुष वहां स्नान करने से पित्रत्र होकर मोक्ष को प्राप्त करता है।

(अनुशासनपर्व्य-२५ वां अध्याय) चित्रकूट की मन्दािकनी के जल में निराहार होकर स्नान करने से मनुष्य को राज्यलक्ष्मी मिलती है।

वाल्मीिक-रामायण—(अयोध्याकाण्ड-५६ वां सर्ग) वनवास के समय लक्ष्मण ने श्री रामचन्द्र जी की आज्ञा से अनेक प्रकार के द्वक्षों को काट काष्ट लाकर चित्रकूट पर्वत पर पर्णशाला बनाई और अच्छी तरह से उसको अच्छादन कर किवाड़ लगाया। राम और लक्ष्मण ने अयोध्या से चलने पर पाँचवें दिन पर्णशाले में निवास किया।

(९२ वां सर्ग) चित्रकूट पर्वत से उत्तर ओर मन्दािकनी नदी बहती थी। पर्वत के ऊपर पर्णकुटी में राम लक्ष्मण निवास करते थे। (९९ वां सर्ग) भरत जी अयोध्या बासियों सहित चित्रकूट में आकर रामचंद्र से मिल्ले।

(११६ वें सर्ग से ११९ वें सर्ग तक) भरत जी जब अयोध्या को छौट गए, उसके पश्चात् चित्रकूट के ऋषिगण खर आदि राक्षसों के उपद्रव से डिंद्रम हो उस बन को छोड़ महीं अश्व के आश्रम में चले गए। कई ऋषीश्वर रामचन्द्र के आश्रय से रह गए, तब रामचन्द्र ने सोचा कि मैंने यहां पर भरत, मातृगण और पुरवासियों को देखा है, इसलिये सर्व काल में मेरी चित्तृष्टित्त उन्हीं की ओर लगी रहती हैं और इस स्थान में भरत की सेना के घोड़ों और हाथियों की लीद से यहां की भूमि अत्यन्त अशुद्ध हो गई हैं; ऐसा विचार कर श्री रामचन्द्र सीता और लक्ष्मण सिहत वहां से चल निकले और अत्रिम्रिन के आश्रम में आकर उनको प्रणाम किया। मिन ने तीनो जनों का विधिपूर्वक अतिथि-सत्कार किया और कहा कि हे रामचन्द्र यह धर्मचारिणी तापसी अनुस्या ने उम्र तप और नियमों के बल से १० वर्ष की अनाष्टिष्ट में ऋषियों के भोजन के लिए फल मूल उत्पन्न किए और स्नान के निमित्तगंगा (मन्दाकिनी) नदी को यहां बहाया। इसी अनुसूया ने सहस्र वर्ष पर्व्यन्त बड़ी तपस्या की, इसीके व्रतों से ऋषियों के तप के विद्य नष्ट हुए। इसके अनन्तर अनुसूया ने सीता को पतिव्रत धर्म के उपवेश और दिच्य अलंकार दिए। राम चन्द्र ने उस रात्रि में वहां निवास कर मातःकाल लक्ष्मण और सीता सहित अत्रि मुनि के आश्रम से चल कर दुर्गम बन में प्रवेश किया।

(सुन्दरकाण्ड-३८ वां सर्ग) हनुमान ने लंका में जानकी जी से कहा कि मुझ को कुछ चिन्हानी दो। जानकी बोली कि हे किपवर तुम रामचन्द्र से यह चिन्हानी कहना कि चित्रकूट पर्वत के पास उपवनों में जलकीडा करके तुम मेरे गोद में सो गए थे, उस समय एक कौआ मुझे चोंच मारने लगा, तब मैं उसको ढेलों से मारती भी थी तौ भी वह मुझे नोच कर उसी स्थान में किसी जगह खिप जाता था। जब कौआ से विदीर्ण की गई मैं थक गई और आंखओं से मेरा मुख भर गया, तब कौआ रूपधारी इन्द्र के पुत्र (जयन्त) की ओर तुम्हारी हिष्ट जा पड़ी। तब तुमने बड़ा कोध कर चटाई में से एक कुश ले उसको ब्रह्मास्त्र से अभिमंत्रित कर उस पर चलाया। कुश कालांग्रि के समान पज्वलित हो उस पक्षी के समीप दौड़ा, तब वह अपनी रक्षा के लिये भूमण्डल में घूम कर अपने पिता इन्द्र के पास गया। इन्द्र ने उसको निकाल दिया, तब बह तीनों लोकों में

भ्रमण कर फिर तुम्हारेही शरण में आया। ब्रह्मास्त्र निष्फल नहीं होता, इसलिये तुमने ससकी दिहनी आंख फोड़ कर उसको छोड़ दिया; और वह अपने गृह चला गया।

शिवपुराण—(८ वां खंड, दूसरा अध्याय) विष्णु ने ब्रह्मा से कहा कि चित्रकूट जो मिसद्ध पर्वत है, जिसके दर्शनमात्र से पापी निष्पाप हो जाता है, जहां मंदािकनी नदी वह रही है, जिसमें स्नान करने से कोई पाप शेष नहीं रहता, और जहां नदी और पर्वत के बीच धनुषाकार एक नदी है, वह स्थान मुझे बहुत मिय है। तुम वहां जाकर एक पुरी वसाओ। तब ब्रह्मा ने चित्रकूट में ज्याकर मत्तगयन्द नामक शिविछिंग स्थापित किया। जो मनुष्य वहां जाकर मत्तगयन्द शिवं का दर्शन नहीं करता, उसकी यात्रा का फल चला जाता है।

संक्रिषण पर्वत के पूर्व कोटितीर्थ में कोटेश्वर शिवलिंग हैं। चित्रकूट के दक्षिण ओर से आगे पश्चिम ओर को तुगारण्य पर्वत है, जहां गोदावरी नदी वह रही है। वहां पशुपति शिवलिंग हैं।

(तीसरा अध्याय) नीलकंठ से दक्षिण अत्रीश्वर शिवलिंग हैं। अत्रि ने अपनी स्त्री अनुसूया के सिहत चित्रकूट पर्वत के निकट अति श्रम से तप किया है। अकाल और निर्वषण के समध अनुसूया के तप के प्रभाव से चित्रकट में गंगा स्थित होगई, जिनका नाम मंदाकिनी प्रसिद्ध हुआ।

√काछिंजर ।

तमोलिया के स्टेशन से ८ मील पश्चिमोत्तर (मानिकपुर से ३७ मील) बदौसा का रेलवे स्टेशन है। बदौसा बगई नदी के किनारे पर पश्चिमोत्तर देश बुंदेलखंड के बांदा जिले में तहसीली का सदर स्थान है, जहां से घी, इई और ग़रले दुसरे स्थानों में जाते हैं।

बदौसा से १८ मील और बांदा कसने से ३३ मील दक्षिण बदौसा तह-सीलो में समुद्र से १२३० फीट ऊपर कालिजर का कसना और प्रसिद्ध पहाड़ी किला है। यह २५ अंश १ कला उत्तरअक्षांश और ८० अंश ३१ कला ३५ विकला पूर्व वेशान्तर में स्थित है। कालिजर क़सवा, जो उस देश में तरहटी कहलाता है, पहाड़ी के पादमूल के निकट है; जिसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ३७०६ मनुष्य थे। निवासी खास करके ब्राह्मण और काली हैं, परंतु मेलों और तिहवारों के समय विनये और अनेक भांति के काम करने वाले और भारतवर्ष के दूर दूर से यात्री यहां आते हैं। क़सबे में कई एक धनी महाजन हैं। कसबे के पूर्व दरवाजे के पास युरोपियन मोसाफिरों के रहने के लिये बंगला बना है। क़सबे में बाजार, एंगलोवरनेकुलर स्कूल और एक छोटा अस्पताल है। पहाड़ी के पादमूल के निकट पूर्वोत्तर चट्टान में काट करके बना हुआ और पत्थर की सीढ़ियों से घेरा हुआ खरसिर गंगा नामक तालाब है। क़सबा पहले दीवार से घेरा हुआ खा, अब तक ३ फाटक खड़े हैं, जिनके नाम कामदा फाटक, रीवां फाटक और पन्ना फाटक हैं।

क़िले में देवस्थान और देव मूर्तियां।

किला—यह बुंदेलखंड के बहुत पुराने किलों में से एक है। इसकी नेव २५ फीट मोटी है। छरिर गंगा तालाब के पूर्वोत्तर पहाड़ी के आधे रास्ते में टाल पर बलखंडेश्वर महादेव का स्थान है। पहाड़ी काटकर चक्करदार मार्ग ऊपर को बना है। उत्तर से ७ फाटकों से होकर किले में जाना होता है। (१) आल्रम दरवाजा। (२) गणेश दरवाजा, (३) चंडी दरवाजा, (४) बलभद्र दरवाजा। आगे चहान में काटा हुआ ४५ गज लंबा और १० गज चौड़ा भैरवकुण्ड नामक तालाब है, जिससे ३० फीट ऊपर भैरव की बड़ी प्रतिमा चहान में बनवाई हुई है। इसके नीचे चट्टान काट कर बनी हुई एक गुफा है, जिसके आगे चौकोने खंभे बने हैं। बर्षाकाल और जाड़े की ऋतुओं में गुफा की सतह पर पानी रहता है। गुफा के बाहर शिला लेख है, जिसमें वारिवर्मा देव, छरहिर देव का पुत्र श्री रामदेव, महिला और जाड़ल का भाई और लाखन का पुत्र जस धवल के नाम हैं। अंतवाले का समम संवत ११९३ है। लाखन और महिला का नाम चौहान और चंटेलों की लड़ाइयों का स्मरण कराता है।आगे (५ वां) हनुमान फाटक है, जिसके निकट

हनुमान कुंड और किले के इस हिस्से में बहुतेरी बनावट और लेख हैं। लेखों में से एक में चंदेल राजपूत कीर्तिवर्मा मदनवर्मी का नाम पढ़ा जाता है। (६ वां) लाल दरवाजा और (७ वां) फाटक सदर दरवाजा कहा जाता है।

कोट के भीतर पत्थर काटकर बनी हुई कोटरी में पत्थर का सीता सेज है, जिसको सज्जा भी कहते हैं। दरवाजे के ऊपर चौथी सदी के अक्षर का शिला छेख है। लिला है कि इस गुफा को पहाड़ के मालिक हारा ने अपने नाम के स्मरणार्थ बनवाया। इसके पश्चात पाताल गंगा का रास्ता मिलता है। उत्तराई खड़ी और किटन है। पाताल गंगा लगभग ४० फीट लंबी और इससे आधी चौड़ी पहाड़ में एक गुफा है। इससे आगे पांडु कुंड है, जिससे आगे एक मार्ग कोट की भीत के साथ बुद्धि तालाव को गया है। इसके बाद भगवान सेज और पानी की अमन है। मृगधारा एक प्रसिद्ध स्थान है, जहां दो चट्टानी कोटरी एक पानी का कुण्ड और चट्टानों में ७ हरिन बने हैं। पुराण में लिखा है कि ७ ऋषि थे, जो अपने गुफ्त के शाप से जन्मान्तर में कालिजर में हरिन हुए। यात्रीगण हरिण की प्रतिमाओं की पूजा करते हैं। कोटितीर्थ से मृगधारा में जल आता है। किले के मध्य भाग में पत्थर में कोटितीर्थ एक बड़ा तालाब है। तंग सीढ़ियों से पानी के निकट जाना होता है। किनारे पर पत्थर महल और दूसरी पुरानी इमारते हैं, जिनमें बहुतेरे लेख हैं।

कोटितीर्थ से आगे जाने पर परिमाल का बैठक और अमनसिंह का महल मिलता है।

उतरते हुए दूसरा फाटक मिलता है, जिसके निकट दीवार में लगी हुई जैन तीर्थंकरों की छन्दर प्रतिमा हैं। इसके वाएं मुसलमानों की एक छोटी इमारत है। इससे आगे नीलकंठ के पास पहुंचने से प्रथम जटाशंकर, क्षीरसागर, तुंगभैरव और कई एक गुफा मिलती हैं। यहां बहुत शिला लेख हैं। एक गुफा के लेख में है कि चैत्र छदी नौमी सोमवार संवत ११९२ रलहन के पुत्र नरसिंह ने बामदेव की प्रतिमा स्थापित की। दूसरे लेख में ज्येष्ट छदी नौमी संवत ११९२ और उसके दादा दीक्षित पृथ्वीधर का नाम है। तीसरे लेख में है कि श्री कीर्तिवर्मी देव और सोमेश्वर (पृथ्वीराज का पिता) देव दर्शन के लिये आए। तुंगभैरव के पास लिखा है कि कार्तिक छुदी ६ शनिवार संवत ११८८ में महाश्राणिक का पुत्र सोधन का पोता और मदनवर्मी का नौकर बचराज ने लक्ष्मी की मूर्ति को स्थापित किया।

इस स्थान के चारों ओर वैष्णव और शैव दोनों की बहुतेरी देवप्रतिमा हैं। नीलकंठ महादेव का मन्दिर एक समय सात मंजिला था, परंतु अब केवल खंभो पर एक मंजिल का है; जिसमें नीलकंठ बड़ा शिवलिंग हैं। मन्दिर के दरवाजे के पास लेखों से लिपे हुए दो बड़े पत्थर हैं। खंभों के बीच की जगहों में बहुतेरे यात्रियों ने अपने नाम खोदवाए हैं।

मन्दिर से ऊपर चट्टान में काटा हुआ एक छोटा तालाव है, इससे बाद लगभग ३० फीट ऊंची कालभैरव की प्रतिमा मिलती है।

किले में मुसलमानों के वहुतेरे मकबरे हैं, परन्तु कोई छन्दर नहीं हैं।

इतिहास।

देशी कहावत के अनुसार चंदेल वंश के कायम करने वाले चंद्रवर्मा ने रूप अथवा ६ वों सदी में कालिंजर के किले को वनवाया। किलाबंदी कुछ स्वाभाविक और कुछ बनवाई हुई है। किले बनने से पहिले हिन्दू मन्दिरों से अवश्य पहाड़ी छिपी होगी, क्योंकि पवित्र स्थानों पर लेखों की तारीखें किले के फाटक के लेखों से पहिले की हैं। फिरिस्ता कहता है कि ७ वीं सदी में महम्मद साहेब के सयय के रहने वाले केदारनाथ ने इसको बनवाया। मुसल-मान इतिहास वेताओं ने बयान किया है कि कालिंजर का राजा ९७८ ई० के आक्रमण में लाहीर के राजा जयपाल का एक मित्र था। सन १००८ में आनंद पाल ने ग़जनी के महमूद के ४ थे आक्रमण को रोकने के लिये उससे पेशावर में युद्ध किया, तब कालिंजर का राजा भी वहां वर्त्तमान था। सन १०२२ में कालिंजर के राजा नंदा ने कन्नीज के राजा को परास्त किया। सन १०२२ में ग़जनी के महमूद ने किले पर घेरा डाला था, परंतु राजा के साथ मेल होगया। चंदेल राजा दिल्ली के पृथ्वीराज से परास्त होने के पश्चात लगभग सन ११९२

ईं॰ में अपने राज्यशासन के बैठक को कार्लिजर में हटा ले गया। सन १२०३ में महम्मद ग़ोरी के राजप्रतिनिधि कुतुबुद्दीन ने कार्लिजर को लेलिया और कई मन्दिरों के स्थानां पर मसज़िन्दें बनाई, परंतु मुसलमानों का अधिकार वहां बहुत दिनों तक नहीं रह सका। पीछे कई वार मुसलमानों ने कार्लिजर पर चढ़ाई की।

सन १५३० से १२ वर्ष तक समय समय पर मोगल वादशाह हुमायूं कालिजर के किले पर आक्रमण करता रहा। सन १२४५ में अफगान शेरशाह ने
कालिंजर पर आक्रमण किया, जो किले पर धावा करते समय मारा गया; परंतु
किले को मुसलमानो ने ले लिया और शेरशाह के पुत्र जलाल के सिर पर छत्र
रक्ता गया। सन १५७० में मजनूखां ने किले पर आक्रकण किया। अंत में किला
अकवर को मिला। कालिंजर अकवर के आधीन राजा वीरवल का जागीर
बना। पीछे यह बुंदेलों के हाथ में गया और छत्रभाल के मरने पर पन्ना के
हस्वेवशाह के अधिकार में आया। पीछे ४ पुस्त तक उसी घराने में रहा,
जिसके पीछे कालिंजर कायम जी को मिला। उसके पथात कायम जी के प्रतिनिधि दरियाव सिंह के अधिकार में आया। पहले अंगरेजी सरकार ने दरियाव
सिंह के अधिकार को हद किया था, परंतु सन १८१२ में उस के काम से
अपसन्न होकर एक फौज कालिंजर को मेज दी। ८ दिन के पीछे दरियावसिंह
ने देश के आधे हिस्से को और किले को देकर मेल कर लिया। सन १८५७
के बलवे के समय किले की थोड़ी अंगरेजी सैना ने किले पर अधिकार क़ायम
रक्ता। सन १८६६ में तोड़ कर किला वे काम कर दिया गया

संक्षिप्त प्राचीन कथा।

महाभारत—(वन पर्व्व-८५ वां अध्याय) मेधाविक तीर्थ के पास कालिजर नामक पर्वत है, जहां देवहूद तीर्थ में स्नान करने से सहस्र गोदान का फल होता है।

िलंगपुराण—(पूर्वाद्ध-२४ वां अध्याय) शिवजी बोले २३ वें द्वापर में स्वेत नामक हमारा अवतार होगा, तब हम जिस पर्वत पर काल को जीर्ण (विनष्ट) करेंगे, वह कालिजर कहलावेगा। कूर्मपुराण—(ब्राह्मी संहिता—उत्तरार्छ, ३५ वां अध्याय) जगत में कालजिर नामक एक महातीर्थ है, वहां संहारकर्ता भगवान महेश्वर ने काल को जीर्ण करके फिर जिला दिया था।

शिवपुराण—(८ वां खण्ड—दूसरा अध्याय) चित्रकूट से दक्षिण तीनो छोकों में प्रसिद्ध कार्लिजर पर्वत है, जहां बहुतों ने तप करके सिद्धि पाई है।

,अजयगढ़।

कालिंजर से १६ मील पश्चिम खुंदेलखंड के एक छोटे देशी-राज्य ''अजयगढं'' का किला है। राज्य के उत्तर चरलारी राज्य और बांदा जिला; दक्षिण और पूर्व पन्ना राज्य औरपश्चिम छत्तरपुर राज्य है। सन १८८१ में राज्य का क्षेत्रफल ८०२ वर्गमील था। और ३२१ वस्तियों में ८१४५४ मनुष्य बसे थे। जिनमें ७८४२७ हिंदू, २७६८ मुसलमान, २१४ जैन और ४५ दूसरे थे। पहाड़ी पर १७४४ फीट समुद्र के जल से ऊपर पत्थर का ९ वीं सदी का बना हुआ पुराना किला है, जिसके चारो ओर का चेहरा करीब ५० फीट ऊंचा है। पहाड़ी के उत्तरी पादमूल पर नव शहर में राजा रहते हैं। राज्य की मालगुजारी २२५००० रुपया और सैनिक बल १५० सवार, १००० पैदल, १६ तोष और ५० गोळंदाज हैं।

इतिहास।

राजा छत्रशाल की सत्यु होने के परवात लगभग सन १७३४ ई० में बुंदे छाउंड के बटने पर उसके लड़के जगत राय के हिस्से में अजयगढ़ के चारो ओर का देश शामिल था, परंतु सन १८७० में महाराष्ट्रों ने इसको छीन लिया। सन १८०३ में जब बुन्देललंड का हिस्सा अंगरेजों को मिला, तब अंगरेजी फौज अजयगढ़ को भेजी गई; परंतु किले के गवर्नर ने घूंस लेकर लक्ष्मण दावा को किला दे दिया, जिसका कबजा अंगरेजों ने हढ़ किया। पीछे सन १८०९ में अंगरेजों ने किले को जीत कर पहला बुन्देला हुकूमत करने वाला बर्स्तांसह को किले और राज्य को देदिया। उसके प्रतिनिधि अब तक सवाई महाराज

की पदवी के साथ राज्य करते हैं और ७०१० रुपया खिराज देते हैं। सन्मान के छित्रे यहां के राजाओं को ११ तोपों की सलामी मिलती है।

🗸 छत्तरपुर ।

अजयगढ़ से दक्षिण ओर बांदा से सागर जाने वाळे मार्ग पर बांदा से ७० मील दक्षिण पश्चिम बुन्देललंड में छोटे देशी राज्य की राजधानी छत्तरपुर है, जहां रेलवे नहीं है। यह २४ अंश ५४ कला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ३८ कला पूर्व देशान्तर में स्थित है।

इस साल की जन संख्या के समय छत्तरपुर में १२९५७ मनुष्य थे, जिनमें १०३४४ हिन्दू, २०९५ मुसलमान, २८६ जैन, और २२८ एनिमिष्टिक।

बुन्देखखण्ड की (थोड़े दिन रहने वाली) स्वाधीनता को कायम करने वाला प्रसिद्ध राजा छत्रशाल था, जिसके नाम से इस कसवे का नाम छत्तरपुर पड़ा; जिसका ५ गुंबज वाला खन्दर समाधि-मंदिर यहां है और फैले हुए छत्रशाल के महल की निशानियां हैं

राज्य न्राज्य हमीरपुर जिले के दक्षिण है। ढासन और केन नदी सीमा पर हैं। राज्य का क्षेत्रफल ११६९ वर्गमील और माल गुजारी २५०००० रूपये हैं। जनसंख्या सन १८८१ ई० में १६४३७६ थी, जिनमें १५८१०८ हिन्दू, ५५ १० मुसलमान, ७४५ जैन और ९ क्रस्तान, ३१५ गांवों में दसते थे।

राजवंश पवार राजपूत हैं। राजा विश्वनाथ सिंह वहादुर (२४ वष वय के) वर्तमान नरेश हैं। इनके पूर्व पुरुषों ने महाराष्ट्रों के छूट पाट के समय राजा छत्रशाल के वंशघरों से इस राज्य को छीन लिया सन १८२७ में छत्तरपुर के मधान को राजा की पदवी मिली। यहां के राजा का सैनिक वल ६२ सवार, ११७८ पैदल और पुलिस, ३२ तोपें और ३८ गोलंदाज हैं। ११ तोपों की सलामी मिलती है।

इस राज्य में नवगंग छावनी (जन-संख्या १०९०२) बड़ी बस्ती है।

🗡 विजावर ।

उरछा राज्य से उत्तर वृंदेलखंड में विजावर एक छोटा देशी राज्य है,

जिसका क्षेत्रफल २७३ वर्गमील है। सन १८८१ ई० में २९८ गातों में ११३२८६ मनुष्य थे, अर्थात १०८२४६ हिन्दू, २५०६ जैन, २४०५ मुसलमान १२३ आदि निवासी और ५ क्रस्तान। राज्य की मालगुजारी २२५००० रूपया थी। देश पहाड़ी है। लोहा वाले पत्थर बहुत होते हैं। प्रधान कसवा विजावर छत्तरपुर से दक्षिण ओर है।

इतिहास।

सन १८११ में अंगरेजी सरकार ने विजावर के राजा रतनसिंह के अधिकार को इड़ किया। सन १८५७ के बलवे की खैरखाहों के समय से विजावर के राजाओं को सन्मान ख्वकर ११ तोपों की सलामी मिलती है। इनको सन १८६६ में महाराज की पदवी मिली। राजा छत्रकाल के पुत्र जगत-राज; जगत राज के पुत्र वीरसिंह देव थे। जिनके वंशधर वर्तमान विजावर नरेश सवाई महाराज भानुप्रतापसिंह बुंदेला राजपूत हैं। इनका सैनिक बल १०० सवार, ८०० पेंदल, ४ तोप और ३२ गोलंदाज हैं।

पन्ना।

बांदा से जब्बलपुर जो सड़क गई है, उसके निकट (कालिंजर से दक्षिण) बांदा कसबे से ६२ मील दक्षिण बुंदेलखंड में देशी राज्य की राजधानी पना एक कसबा है। यह २४ अंश ४३ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश १३ कला ५५ विकला पूर्व देशान्तर में स्थित है।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय पन्ना में १४७०५ मनुष्य थे । अर्थात ११७४१ हिन्द्, २१८० मुसलमान, ५७२ एनिमिष्टिक, १५८ जैन ४२ सिक्ख और १२ कस्तान ।

पन्ना समुद्र से ११४७ फीट ऊपर प्रायः पूरे तरह से पत्थर से बना हुआ सुंदर कसवा है, जिसमें एक नया राजहमल और नवीन बना हुआ बलदेव जी का मन्दिर और कई एकं बड़े देवमन्दिर हैं।

पन्ना राज्य-यह मध्य भारत-बुन्वेलखंड एजेंसी के पोलिटिकल छप-

रिंटेंडेंस के आधीन देशी राज्य है। इसके उत्तर अंगरेजी बांदा ज़िला और चरखारी राज्य के डिविजनों में से एक; पूर्व कोठी, छहावल, नागौड़ और अजयगढ़ राज्य; दक्षिण मध्य प्रदेश में दमोह और जवलपुर जिले और पश्चिम छत्तरपूर और अजयगढ़ राज्य हैं।

राज्य का क्षेत्रफल २५६८ वर्ग मील है। विन्ध्यघाट के ऊपर ऊंची भूमि पर राज्य का अधिक भाग है। अधिक भूमि पहाड़ी और जंगली है। मालगुजारी ४५०००० रुपया है।

यह राज्य हीरे की लान के लिये प्रसिद्ध है। चट्टानों के पायः पंदरह बीस फीट नीचे बहुमुल्य पत्थर मिछता है, जिसके लिये कई एक महीनों के परि-श्रम की आवशक्यता है। पहिछे के समान अब हीरे नहीं निकलते हैं, तौभी प्रतिवर्ष लगभग १००००० रुपये का हीरा निकाला जाता है।

सन १८८१ में राज्य में एक कसवा, ८६७ गांव और २२७३०६ मनुष्य थे, जिनमें २०३४२५ हिन्दू १६६०९ आदि निवासी, ५९८९ मुसलमान, १२७१ जैन, ९ कुस्तान, और ३ पारसी थे। आदि निवासी में गोंड और कोल दो जाति हैं।

इतिहास।

पन्ना के राजा का आदि पुरुषा प्रसिद्ध राजा छत्रशाल के पुत्रों में से एक हरदीशाह है। जब अंगरेजों ने बुन्देलखंड में प्रवेश किया, तब राज के प्रधान राजा किश्तोरसिंह थे। उस समय राज्य पूरे हलचल में था। अंगरेजी सरकार ने सनदों द्वारा राजा के अधिकार को हड़ किया। सनदें सन १८०७ और १८११ में मिलीं। सन १८५७ के बलवे की खैरखाही में राजा को २०००० रुपये के इज्जत की पोशाक मिली और १३ तोपों की सलामी मिलने की आज्ञा हुई। सन १८७० ई० में वर्तमान पन्नानरेश महाराज सर रुद्र प्रतापसिंह बहादुर के० सी० एस० आई० राजा हुए। और १८७६ में निस आफ बेल्स ने इनको के० सी० एस० आई० की पदवी दी। महाराज ४२ वर्षकी अवस्था के बुन्देला राजपूत हैं। इनका सैनिक बल २५० सवार, २४४० पैदल, १९ तोषें और ६० मोळंदान हैं।

सातवां अध्याय।

बान्दा, महोबा, चरखारी, जयतपुर; मऊरानीपुर, उरछा, टिहरी, और झांसी ।

बान्दा।

बदौसा स्टेशन से २५ मील (मानिकपुर जंगशन से ६२ मील पश्चिमोत्तर) बान्दा का रेलवे स्टेशन है। बान्दा पश्चिमोत्तर देश के इलाहाबाद विभाग में जिले का सदर स्थान केन नदी के दाहिने किनारे से १ मील पूर्व एक कसवा है। यह २५ अंश २८ कला २० विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश २२ कला १५ विकला पूर्व देशान्तर में स्थित है।

इस साल की जन-संख्या के समय बान्दा में २३०७१ मनुष्य थे; अर्थात् १६५२२ हिन्दू, ६२६४ मुसलमान, २११ जैन, ५५ क्रस्तान, १६ सिक्ख, २ बौद्ध, और १ दूसरे।

बान्दा का नवाब सन १८५८ ई० में बलवे के अपराध से निकाल दिया गया, तबसे इस शहर की घटती होती जाती है। बान्दा में १६१ देवर्मान्दर, ६६ मसजिद और ५ जैनमन्दिर (जिन में कई उत्तम हैं) हैं। जिले की कचहरियां, जेलखाना, अस्पताल, गिरजा और स्कूल हैं।

शहर से १ मील फतहपुर रोड पर छावनी है। नदी के बाएं किनारे रेलवे-पुल के पास भूरागढ़ नामक पुराना किला उजाड़ पड़ा है, जिसको सन १७८४ में गुमानसिंह ने बनवाया था।

बान्दा जिला-इसके पूर्वोत्तर और उत्तर यम्रना नदी; पश्चिम केन नदी, हमीरपूर जिला और गौरिहर का देशी राज्य; दक्षिण और दक्षिण-पूर्व पन्ना, चरखारी और रोवां देशी राज्य और पूर्व इलाहाबाद जिला है।

जिले का क्षेत्रफल ३०६१ वर्ग मील है। इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय जिले में ७०५९०७ मनुष्य थे, जिनमें ३५७०८५ पुरुष और ३४८८२२ स्त्रियां थीं। जिले में चमार, ब्राह्मण, राजपूत और अहीर अधिक हैं (चमार की संख्या सब जातियों से अधिक है इससे वह प्रथम लिखा गया)

बान्दा जिले के ३ कसवों में सन १८८१ में ५००० से अधिक मनुष्य थे। बान्दा में २८९७४, राजापुर में ७३२९ और मताउंध में ६२५८।

महोबा।

बांदा से २० मील (मानिकपुर से ८२ मील) पश्चिम कवराई का स्टेशन है, जहां चन्देल राजा वजाहम का बनवाया हुआ ब्रह्मताल नामक तालाब है। अब यह थोड़ा गहरा है। इसके किनारे बहुतेरे पुराने मन्दिर और मकानों की निशानियां देख पड़ती हैं

कवराई से १३ मील और वांदा से ३३ मील (मानिकपुर से ९५ मील) पश्चिम महोवा का स्टेशन है। महोवा हमीरपुर जिले में तहसीली मुकाम और पुराना कसवा है। यह २५ अंश १७ कला ४० विकला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश ५४ कला ४० विकला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश ५४ कला ४० विकला पूर्व देशान्तर में है। बांदा से सागर को और हमीरपुर से नवगंग को महोवा होकर सड़कें गई हैं। महोवा से ५४ मील उत्तर हमीरपुर कसवा है। महोवा में सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ७५७७ मनुष्य थे।

चन्देल राजपूत राजा चन्द्रवर्मा ने सन इस्त्री के ८ वें शतक में इसको वसाया और यहां महोत्सव यज्ञ किया, इससे इसका नाम महोवा पड़ा। चन्देल राजाओं की बनवाई हुई मदनसागर नामक झील के किनारे पर यह बसा है। इसके ३ हिस्से हैं; एक मध्य पहाड़ी के उत्तर पुराना किला, दूसरा पहाड़ी के शिर पर भीतरी का किला, और तीसरा दक्षिण ओर दरीवा।

चन्देलों के समय की कारीगरी को दिखलाती हुई आस पास में बहुत पुरानी इमारतें हैं। चन्द्रवर्मा जिस स्थान पर मरा, वहां राम कुण्ड है। किले उजाड़ पड़े हैं। मदनवर्मी का वनवाया हुआ मुम्बा देवी का मन्दिर है, जिसके दरवाजे के आगे पत्थर के स्तम्भ पर मदनवर्मी का लेख है। बनवाई हुई झीलों में से दो भर गई हैं, परन्तु ११ और बारह शतकों के वने हुए कीर्ति-सागर और मदन-सागर अभी तक गहरे और स्वच्छ पानी वाछे हैं। किनारों पर और टापुओं में उजड़े पुजड़े मन्दिर, चट्टान काट कर बनी हुई बड़ी बड़ी मित-माएं और बहुतेरे पुराने मन्दिरों की निशानियां देख पड़ती हैं। पहाड़ियों पर पूर्व समय के राजपूतों के गमीं के दिनों में रहने के मकान और देवस्थान हैं। मुसलमानी अमलदारी का बना हुआ,जालन खां का मकवरा और मसजिद है।

नई बस्ती में तहसीली, पुलिस स्टेशन, पोष्ट आफिस, अस्पताल और स्कूल हैं।

इतिहास।

चंदेलों की प्रधानता के समय ९ वीं सदी से १४ वीं तक महोबा उस कुल की राजधानी था। चंदेलों ने कसबे को और इसके पड़ोस को उत्तम मकानों से संवारा जिनकी बहुत निशानियां अब तक हैं। २० वां प्रधान पिछला राजा परमाल सन ११८३ ई० में दिल्ली के राजा पृथ्वीराज से परास्त हुआ। इसके पश्चात चंदेल राजकुमारों ने महोबा को छोड़ कर कार्लिजर के पहाड़ी किले में अपनी राजधानी बनाई। लगभग १२ वर्ष पीछे शहाबुद्दीन ग़ोरी के जनरल कुतुबुद्दीन ने महोबा को जीत लिया और ५०० वर्ष मुसलमानों के हाथ में रहा। सन १६८० में जिला छत्रशाल के आधीन हुआ। उसके मरने पर लगभग सन १७३४ में एक तिहाई राज्य पेशबा को मिला, जिसका एक हिस्सा महोबा बना।

प्रसिद्ध किव चन्द बरदाई कृत पृथ्वीराज रायसा में लिखा है कि (बार-हवें शतक में) दिल्ली के महाराज पृथ्वीराज की सेना मार्ग भूल कर महोबे में पहुंची। वहां ऊदल से घोर युद्ध हुआ। पृथ्वीराज की सेना परास्त हुई, तब पृथ्वीराज स्वयं लड़ने को आए। उन्हों ने जयचन्द राठौर की ५० हजार सेना, लाखन, ऊदल, ब्रह्मादित्य और चन्देलों को परास्त करके बहुतेरों को कालिजर के किले में कैद किया और अपने सामन्त पज्जू को महोबें में छोड़ कर बहुत द्रव्य ले दिल्ली में आए।

🗸 चरखारी ।

बान्दा से ग्वालियर जाने वाली सड़क के पास रेलवे सड़क से कई एक मील दिक्षण बुन्देलतंड में एक छोटी देशी राजधानी चरलारी है। यह २५ अंश २४ कला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश ४७ कला पूर्व देशान्तर में स्थित है। कसबे के निकट एक बड़ी भ्रील है। एक तलाब आस पास के मैदान को पटाता है। पहाड़ी पर छोटा किला है, जिसमें जाने के लिये चट्टान में काटकर बनी हुई सीढियों द्वारा मार्ग है। चरलारी में १० वर्ष से प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्त प्रतिपदा से पूर्णमां तक गोबर्द्धननाथ जी का मेला होता है।

चरखारी राज्य—अजयगढ़ राज्य के उत्तर बुदेलखंड में चरखारी राज्य है। सन १८८१ में राज्य का क्षेत्रफल ७८७ वर्गमील और मनुष्य-संख्या १४३०१५ थीं; जिनमें, १३५६३५ हिन्दू, ६२७३ मुसलमान, ९४५ आदि निवासी, १०० जैन और ६२ दूसरे थे। राज्य की वार्षिक मालगुजारी ५००००० रुपया है।

इतिहास।

राजा बीजी बहादुर को अंगरेजी सरकार की अधीनता स्वीकार करने के पश्चात सन १८०४ इं० में सनद मिली और सन १८११ में वह दृढ़ की गईं बलवे की खैरखाही में उस समय के राजा को २०००० रुपया वार्षिक आय की भूमि और सन्मान के लिये ११ तोपों की सलामी मिलने की आज्ञा मिली। चरखारी के वर्तमान नरेश ३८ वर्ष की अवस्था के महाराजाधिराज जयसिंह देव हैं।

/जयतपुर्।

महोबा से १४ मील पश्चिम (मानिकपुर जंगशन से १०९ मील) कुल पहाड़ का स्टेशन है, जहां तहसीली, थाना, सराय, स्कूलें, कई मन्दिर, मस-जिंद और तालाब और एक टूटा हुआ किला है।

कुल पहाड़ से ५ मील और महोवा से १९ मील पश्चिम (मानिकपुर से

११४ मील) हमीरपुर जिले में जैतपुर का स्टेशन है जिससे १ मील पर वेला ताल के किनारे २ मील की लम्बाई में कई टुकड़ों में जैतपुर बस्ती है, जिसको सन ई० के अटारहवीं शताब्दी के आरम्भ में मिस इ बुन्वेलाराजा छत्रशाल के पुत्र जगतराज ने बसाया। राजा छत्रशाल ने बड़े किले को बनवाया एक चन्वेल राजा ने सन ई० की ९ वीं शताब्दी में बेला ताल को बनवाया था यह ५ मील के घेरे में अब बहुत कम गहरा है। इसका बान्य सन १८६९ ई० में फट गया।

जैतपुर में एक छुन्दर मन्दिर और एक छोटा और एक बड़ा दो पुराने किले हैं।

- मऊ रानीपुर।

जैतपुर के स्टेशन से २७ मील (मानिकपुर जंक्शन से १४१ मील)
पश्चिम मऊ रानीपुर का रेलवे स्टेशन है। मऊ रानीपुर झांसी जिले के दक्षिणपूर्व की तहसील का सदर और व्यापार का स्थान एक म्युनिस्पल क्सवा है।
इस साल की जन-संख्या के समय इसमें १९६७६ मनुष्य थे, जिनमें

१७४१८ हिन्दू, १८१३ मुसलमान, ४४३ जैन और १ क्रस्तान थे।

मकानों में बहुतेरे खूबस्रात मकान हैं। एक अस्पताल, एक सराय और कई धर्मशाला हैं। वाजार के पास पुराने किले में सरकारी आफिस हैं।

यह पहले एक गांव था जो सन १७८५ ई० से बढ़ा है। हाल में इसकी तिजारत की बड़ी तरक्क़ी हुई है। खडुआ कपड़ा यहां बन कर भारत के सब प्रवेशों में जाता है। रानीपुर कसबा मऊ रानीपूर से ४ मील दूर है जिसके साथ यह एक म्युनिसिपलिटी बनता है।

्र उरछा।

मऊ रानीपुर से २७ मील (मानिकपुर से १६८ मील) वड़वा सागर का स्टेशन है। उरछा के राजा उदितसिंह ने सन १७०५ और १७२३ ई० के बीच में बड़वासागर झील को बनवाया, जिसका बान्ध है पील लम्बा है। नीचे ४ मील फैली हुई भूमि पर आम और दूसरे दृक्ष लगे हैं, जिनमें बहुतरे बहुत पुरान और बहुत वड़े हैं। भ्रील के किनारे पर बड़वासागर नामक बड़ी बस्ती ३ टुकड़े होकर बसी है, जिसके पश्चिमोत्तर उदितर्सिंह का बनवाया हुआ पुराना किला है; जिसमें अब डांक बंगला है। सन १८८१ की जन-संख्या के समय बडवा-सागर में ६३१५ मनुष्य बसे थे।

बड़वासागर से ६ मील आगे उरछा का स्टेशन है। उरछा मध्य भारत के बुन्देलखण्ड में टिहरी की पुरानी राजधानी वेतवा (वेत्रवती) नदी के दोनो किनारों पर बसा है; जो पायः अब छोड़ दिया गया है। यह २५ अंश २१ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ४२ कला पूर्व वेशान्तर में स्थित है।

सन १५३१ ई० में राजा रुद्रमताप ने अपनी राजधानी कोरड़ को छोड़ उरछा को बसाकर उसको राजधानी बनवाई। नदी के तीर राजमहल, एक किला और राजाओं की छतरी (समाधिमन्दिर) हैं। दिल्ली का बादशाह जहांगीर जब उरछा देखने को आया, उस समय यहां के राजा बीरसिंह देव ने उसके रहने को एक उत्तम महल बनवाया, जो अब तक स्थित है।

टिहरी वा टीकमगढ।

उरछा के रेलवे स्टेशन से ४० मील दुर उरछा राज्य के दक्षिण-पश्चिम कोन में इस की वर्तमान राजधानी टिहरी वा टीकमगढ़ है, जहां रेलवे नहीं गई है। उरछा से ढिहरी तक सड़क है।

इस साल की जन-संख्या के समय इसमें १७६१० मनुष्य थे, अर्थात १२३६३ हिन्दू, ३६६५ मुसलमान, ९३० जैन, ६४९ एनिमिधिक और ३ क्रस्तान।

टीकमगढ़ में राजा के महल के अतिरिक्त कोई अच्छा मकान नहीं है टीकमगढ़ का किला कसबे के भीतर है।

उरछा राज्य—राज्य के पश्चिम झांसी और ललितपुर जिले; दक्षिण लिलितपुर जिला और पन्ना और विजावर देशी राज्य; पूर्व विजावर, चरखारी और गरबली राज्य हैं। सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय राज्य में ३११५१४ मनुष्य थे। जिनमें २९४७१४ हिन्दू, ९५६० मुसलमान, ७२३३ जैन, और ७ दूसरे। यह राज्य बुन्देललण्ड के देशी राज्यों में सबसे पुराना और नितिष्ठा में बड़ा है। बुन्देललण्ड में केवल उरला राज्य में टकसाल है। बग़ावत के समय उरला ख़ैरख़ाह रहा, इससे इसका खिराज माफ कर दिया गया।

राज्य का क्षेत्र फल १९३४ वर्गमील और मालगुजारी ९ लाख रूपये हैं। देश के अधिक हिस्ते पहाड़ी, जंगली, कम उपजाऊ और कम आवादी हैं। महाराज के पूर्वजों के बनवाए हुए कई बड़े तालाब हैं।

इतिहास।

सन १८१२ ई० में उरछा की हुकूमत करने वाछे राजा विक्रमादित्य से अंगरेजी सरकार की संधि हुई। सन १८३४ में राजा के मरने पर दत्तक पुत्र छजनिंसह राजा हुए। जो तुरतहीं मर गए; तब उनकी विधवा ने हमीरिंसह को गोद लिया। राजा हमीरिंसह के मरने के उपरांत सन १८७४ में उनके छोटे भाई वर्तमान उरछा नरेज्ञ महाराज महीन्द्र सवाई प्रतापिंसह वहादुर उत्तराधिकारी हुए। इनको सन १८६५ में महाराज की और सन १८८२ में सवाई की पुत्रतहानी पदवी मिछी। महाराज ३२ वर्ष अवस्था के बुन्देला राजपूत हैं उरछा के राजाओं को १५ तोपों की सलामी मिलती है। सैनिक वल २०० घोड़ सवार, ४४०० पैदल, ९० तोप और १०० गोळंदाज हैं। (झांसी के इतिहास में देखों)

+ बुन्देलखण्ड दाज्य-यमुना नदी और मध्य प्रदेश के मध्य में बुन्देल-खण्ड है। इसकी पश्चिमी सीमा चम्बल नदी और पूर्वी सीमा रीवां राज्य है। इसमें कई अंगरेजी जिले और ३० के लग भग देशी राज्य हैं।

सबसे पहिले के निवासी गोंड खयाल किए जाते हैं। उनके बाद के चन्देल राजपूत इस्बी सन की चौदहवीं शताब्दी के अन्त में गढ़वा राजपूत आकर वसे, जो बुन्देला कहलाते थे। इसी कारण से इस देश का नाम बुन्देलखण्ड पड़ा। सन १८८१ ई० में बुन्वेलखण्ड के देशी राज्यों का क्षेत्रफल १०२२७ वर्गमील और जनसंख्या १४१६५८० थी।

बुन्देलखण्ड के राज्यों में उरछा की आय ९०००००, दितया की ९०००००, चर्लारी की ५०००००, पन्ना की ४५००००, छत्तरपुर की २५००००, अजयगढ़ की २५०००० और विजावर की आय २२५००० रुपये हैं। दूसरे राज्य बहुत छोटे हैं।

्र झांसी ।

चरछा से ७ मील (मानिकपुर से १८१ मील पश्चिम कुछ उत्तर) झांसी जंबर्शन स्टेशन है।

झांसी पश्चिमोत्तर प्रदेश में किस्मत और जिले का सदर स्थान बेतवा नदी से कई मील पश्चिम पहाड़ी किले के नीचे एक छोटा शहर है, जिसका टूटा हुआ घेरा ४ ई मील का है। दीवार की मोटाई ६ फीट से १२ फीट तक और ऊंचाई १८ से ३० फीट तक है। जिसमें ९ दरवाने हैं। झांसी २५ अंश २७ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ३७ कला पूर्व देशान्तर में स्थित है।

इस साल की जन-संख्या के समय झांसी में ५३७७९ मनुष्य थे, अर्थात ३०९८६ पुरुष और २२७९३ स्त्रियां, जिनमें ४०७१२ हिन्दू, १०२०७ मुसल-मान, १५७५ क्रस्तान, ९२१ वौद्ध, ३१० जैन, और ५४ पारसी थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ७३ वां और पश्चिमोत्तर देश में १५ वां शहर है।

शहर में हल्दीगंज नामक नया चौंक समचतुर्भुज बना है, जिसके चारो बगलों में एकही समान ८८ दुकानें और चारो दिशाओं में ४ फाटक हैं। शहर में एक ओर एकही जगह मीटे पानी के ५ कूप हैं, जिससे उस स्थान का नाम पश्च कूंआ पड़ा है। इसके पास एक मन्दिर है, जहां मैं टिका था।

झोंसी में फौज की बड़ी छावनी है, जिसमें ४ कम्पनी गोरी सेना और हिन्दुस्तानी रेजीमेंट है। किला—शहर के पास मैदान में एक पहाड़ी पर किला है, जहांसे शहर और चारो तरफ के देश देख पड़ते हैं। किले के नीचे पूर्व और उत्तर वगल में शहर बसा है। किले की पत्थर की दीवार की मोटाई १६ फीट से २० फीट तक है। दक्षिण बगल को गोलों से बचाने के लिये एक पुस्ता बना है, जिसके पास १२ फीट गहरी और १५ फीट चौड़ी खाई है।

झांसी जिला—म्नांसी पश्चिमोत्तर देश में एक कमिश्नर के आधीन एक डिबीज़न है, जिसमें जालौन, लिलतपुर और झांसी ३ जिले हैं।

झांसी जिले के उत्तर ग्वालियर और समथर राज्य और जालीन अंगरेजी जिला; पूर्व ढासन नदी, जो झांसी को हमीरषुर जिले से अलग करती हैं; दिक्षण लिलतपुर जिला और उरला राज्य और पश्चिम दितया ग्वालियर और खिनया धाना देशी राज्य हैं। बेतवा ढासन और पाहुज ३ प्रधान नदी हैं। एक सड़क झांसी से काल्पी होकर कानपूर को गई है।

जिले का क्षेत्रफल १५६७ वर्गमील है। इस जिले के ४ कसवों में से (झांसी के अतिरिक्त) मऊ रानीपुर में १९६७६, और गुरसराय, बड़वा सागर और भांडेर में १०००० से कम मनुष्य हैं। इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय झांसी जिले में ४०९७०९ मनुष्य थे जिनमें २१४६४६ पुरुष और १९५०६३ स्बियां थीं।

इतिहास।

ई० सन की १७ वीं शताब्दी के आरम्भ में वीरसिंह देव उरछा राज्य का शासन करता था। उसने अपनी राजधानी से ८ मील पर झांसी का किला वनवाया। वीरसिंह देवने जहांगीर के कहने से बादशाह अकवर के प्रिय मंत्री को मारडाला, इसलिये वादशाह ने सन १६०२ ई० में सेना भेज कर देश को पैमाल और उजाड़ किया। बीरसिंह देव भाग गया, परन्तु सन १६०५ ई० में जब जहांगीर गही पर बैठा, तब बीरसिंह देव का अपराध क्षमा हुआ। वह बादशाह जहांगीर का प्रिय बना रहा। सन १६२७ ई० में जहांगीर के पुत्र शाहजहां के बादशाह होने पर बीरसिंह देव बाग़ी हुआ। यद्यपि उसको अपने पहले राज्य पर अधिकार रखने की आज्ञा मिली, पर वह अपनी पहली स्वाधी-नता को फिर नहीं माप्त कर सका। पीछे उरछा राज्य कभी मुसलमानों के हाथ में और कभी बुन्देला प्रधानों के आधीन रहा।

सन १७३२ ई० में छत्रशाल ने महाराष्ट्रों की सहायता चाही, जो उस समय पहला पेशवा बाजीराव के आधीन मध्य देश पर चढ़ाई कर रहे थे, वे उसकी सहायता के लिये आए सन १७३४ ई० में राजा छत्रशाल के मरने पर सहायता के बदले में राज्य का ह भाग महाराष्ट्रों को दिया गया दिए हुए राज्य में बर्तमान झांसी शामिल थी सन १७४२ में महाराष्ट्रों ने उरछा राज्य पर चढ़ाई करंके उसको अपनी दूसरी मिलकियतों में मिला लिया।

पेशवा के जनरल नारू शंकर ने सन १७४४ ई० में यहां के किले को हढ़ किया और श्लांसी शहर को नियतकरके उरछा के निवासियों को यहां बसाया।

पेशवा ने सन १८१७ ई० में अपने हक को ईष्ट इण्डियन कम्पनी को देदिया देशी राजाओं ने अंगरेजी रक्षा के आधीन सन १८५३ ई० तक राज्य किया। उसी सन में उनकी मिलकियतें अंगरेजी गवर्नमेन्ट के पास चली गईं। झांसी राज्य जालोन और चन्देरी जिलों के साथ एक छपिरटेंडेन्सी के आधीन हुआ। राजा राव की विधवा रानी लक्ष्मी बाई को पेशन नियत हुई। रानी अपसन्न रही क्योंकि उसको गोद लेने की आज्ञा न मिली। और पशुओं की हिंसा की रुकावट न हुई, इससे हिन्दुओं में मजहबी जोश फैला।

सन १८५७ ई० के वलबे के समय ता० ५ वीं जून को १२ वीं देशी पैदल सेना के कुछ सिपाहियों ने किछे को अधिकार में कर लिया, जिसमें ख़जाने और मेग़जीन भी थे। बहुतेरे युरोपियन अफसर उसी दिन मारे गये। शेष आदिमयों ने जो अपने परिवार के साथ कुल ६६ मनुष्य थे किले में पनाह लिया था, कई रोज बाद सबके सब छल से मारे गए। रानी ने सर्वोपिर अपना अख़ितयार प्राप्त करने को चाहा परन्तु बाग़ियों में झगड़ाउटा उरछा के मुखियों ने झांसी पर महासरा करके निर्वयता के साथ देश को लूटा। सन १८५८ ई० के मार्च महीने में अंगरेजों ने झांसी पर आक्रमण किया।
२१ मार्च से ता० ४ थी अपरैल तक ३४३ अंगरेजी सैनिक मरे और घायल
हुए, जिनमें ३६ अफ़सर थे। शहर और किले की रक्षा के लिये रानी के आधीन
११००० सिपाही, बाग़ी इत्यादि थे। ५ वीं अपरैल को अंगरेज़ी अफसर
सररोज़ ने किले और शहर को फिर लेलिया, परंतु किले की रक्षा के योग्य
उसके पास सेना न थी इसलिए वह काल्पी को चला गया। उसके जाने पर
फिर बग़ावत हुई। कुछ दिनों के उपरांत फिर संग्राम आरंभ हुआ। रानी पुरुष
वेष से घोड़े पर सवार हो बड़ी दिलेरी के साथ लड़ती थी। ता० १७ वा १८ जून
को उसका घोड़ा ग्वालियर के किले के समीप एक नाला पार होते समय ठोकर
खाकर गिर पड़ा। एक सवार ने जो उसको स्त्री वा रानी नहीं जानता था, रानी
को काट डाला उसी रात को रानी के सम्बन्धियों ने उसकी वेह को जला दिया।

सन १८६१ ई० में अंगरेजों ने झांसी और यहांके किले को ग्वालियर के महाराज को देदिया, परन्तु सन १८८६ ई० में इनको महाराज से लेकर बदले में ग्वालियर का क़िला लौटा दिया।

रेलवे।

भ्रांसी रेलवे का वड़ा केन्द्र है। यहां से इण्डियन मिडलेंड रेलवे की लाइन ४ ओर गई है, जिसके तीसरे दर्जे का महस्रल प्रति मील २६ पाई है।

बीना से पूर्व (१) पूर्वोत्तर मील प्रसिद्ध स्टेशन मील प्रसिद्ध स्टेशन ७१ उराई ४६ सागर १४८ भिलसा ९२ काल्पी १५३ सांची १३७ कानपुर जंक्शन (२) दक्षिण थोड़ा पश्चिम १८१ भोपाल जंक्शन भोपाल से पश्चिम मील प्रसिद्ध स्टेशन ५६ ललितपुर मील पसिद्ध स्टेशन ९५ बीना जंक्शन २४ सिहोर छावनी

११४ उज्जैन २२७ हुजंगाबाद २३८ इटारसी जंक्शन

(३) उत्तर थोड़ा पश्चिम मील प्रसिद्ध स्टेशन १५ दतिया ६० ग्वालियर १०१ धौलपुर १३५ आगरा छावनी १३७ आगरा किला

(४) पूर्व कुछ दक्षिण मील प्रसिद्ध स्टेशन ७ उरछा ३३ रानीपुर रोड ४० मऊ रानीपुर
७२ कुल पहाड़
८६ महोवा
९६ कवराई
११९ बान्दा
१५२ तमोलिया
१६२ करवी
१८१ मानिकपुर जंक्शन
झांसी इलाहाबाद से
मानिकपुर और बान्दा
होकर २४३ मील और
कानपुर और काल्पी होकर
२५७ मील है

आठवा अध्याय।

जालौन, काल्पी, हमीरपुर, तालवेहट, लिलतपुर, चंदेरी, सागर, दमोह, राजगढ़, नरसिंहगढ़, भिलसा, सांची, भूपाल, हुशंगाबाद, और इटारसी जंकशन।

⊹जास्रोन ।

झांसी से ७१ मील पूर्वोत्तर कानपुर झांसी सेक्सन पर जराई का रेलवे

स्टेशन है। उराई झांसी विभाग के जालौन ज़िले का सदर स्थान एक कसवा है। पहले यह छोटा गांव था। अब इस में ८००० से अधिक मनुष्य हैं। यहां मामूली सरकारी आफिसों के अतिरिक्त कई एक मकवरे हैं।

उराई से लगभग २० मील उत्तर जालीन एक कसवा है। यह २६ अंश ८ कला ३२ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश २२ कला ४२ विकला पूर्व देशांतर में स्थित है। जहां अभी रेल नहीं गई है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस में १००५७ मनुष्य थे, जिन में ८६०४ हिन्दू और १४५३ मुसलमान। इसमें बहुत अच्छे मकानं, उज़ड़ा हुआ किला जो सन १८६० में नाकाम कर दिया गया, तहसीली, पुलिस स्टेशन, अस्पताल और स्कूल हैं। पुराने किले के स्थान पर ५०००० रुपये के खरच से एक नया बाजार बना है। यहां थोड़ी तिजारत होती है। प्रधान निवासी महाराष्ट्र ब्राह्मण हैं, जो दक्षिणी पंडित कहे जाते हैं। इनके पुरुषे पेशवा के दिपोटी के आधीन अफसर थे।

जाळोन जिला—यह झांसी डिवीज़न का उत्तरी जिला है। इसके उत्तर यमुना नदीं, पश्चिम ग्वालियर और दितया राज्य, दक्षिण समयर राज्य और बेतवा नदी और पूर्व वाओनी राज्य है। जिले की कवहरियां उराई में हैं।

जिले का क्षेत्रफल १४६९ वर्ग मील है। इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में ३९६४९१ मनुष्य थे, जिनमें २०४३०१ पुरुष और १९२१९० स्त्रियां जिले के कोंच कसवे में १३४०८, काल्पी में १२७१३ और जालीन और उराई में दश दश हजार से कम मनुष्य थे। जिले में चमार, ब्राह्मण और राजपूत अधिक हैं।

🗸 काल्पी ।

उराई से २१ मील (झांसी से ९२ मील पूर्वोत्तर) काल्पी का रेलवे स्टेशन है। काल्पी जालौन जिले में यमुना के दिहने एक पुराना कसवा है। यह २६ अंग्र ७ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंग्र ४७ कला १५ विकला पूर्व देशान्तर में स्थित है। इस साल की जन-संख्या के समय काल्पी में १२७१३ मनुष्य थे, जिनमें ९०८७ हिन्दू, ३५७६ मुसलमान, ३९ जैन और ११ क्रस्तान।

नदी के बगल में वर्तमान काल्पी की पश्चिमी सींमा पर बहुत तवाहियां हैं। जिनमें ८४ गुम्बज वाला मकत्ररा और १२ बड़े मकत्ररे प्रसिद्ध हैं। काल्पी प्रथम तबाहियों के समीप थी, परंतु धीरे धीरे दक्षिण-पूर्व को हटी है। यमुना के तीर दूटा हुआ पुराना किला है।

यमुना पर रेलवे का पुल 'इण्डियन मिडलेंड रेलवे ' के सम्पूर्ण पुलों से बड़ा और मुन्दर हैं। इसमें १० दरवाजे हैं, जिनमें प्रत्येक २५० फीट लम्बा है। इसके पाए ६० फीट पानी के ऊपर और १०० फीट नीचे हैं। गर्मी के दिनों में यमुना पर नाब का भी पुल बनता है।

काल्पी का कागज और मिश्री प्रसिद्ध है।

इतिहास-संवत १८७४ का बना हुआ पद्य में 'तुलसी शब्दाथ प्रकाश' नामक एक भाषा ग्रन्थ है, जिसके द्वितीय भेद में लिखा है कि काल्पी में न्यास जी का अवतार हुआ।

काल्पी को वाखदेव ने वसाया, जिसने सन ३३० ई० से सन ४०० तक कम्बा में शासन किया था।

अकबर के राज्य के समय सन ईं० की १६ वीं शताब्दी में काल्पी में ताम्बे के सिक्के की टकसाल थी।महाराष्ट्रों के बुंदेलखंड पर हाथ डालने के उपरान्त उनकी गवर्नमेन्ट का सदर स्थान काल्पी थी।

सन १८०३ ई० में जब बुन्देल खण्ड अंगरेजों के हाथ में था, नाना गोबिन्द राव ने काल्पी को ले लिया। उसी वर्ष के दिसम्बर मास में अंगरेजों ने महासरा किया और कई धन्टों की रोकावट के बाद शहर उनके आधीन हुआ; तब काल्पी उस सलक में मिला दी गई जो राजा हिम्मत खां को दिया गया था। उसके मरने पर सन १८०४ ई० में यह फिर अंगरेजों के पास आई। अंगरेजों ने इसको गोबिन्द सिंह को देदिया। जिसने सन १८०६ ई० में चन्द बस्तियों के बदले में काल्पी को अंगरेजों को दिया। सन १८५८ ई० की २२ वों मई को अंगरेजी अफसर सररोज़ ने झांसी की रानी, वान्दा के नवाब और राव साहेब के आधीन १२००० आदमी की फ़ोज को परास्त किया। रानी, नवाव और राव साहेब ग्वालियर को भाग गए।

🗸 हमीरपुर ।

काल्पी से २८ मील दक्षिण-पूर्व और वांदा से ३९ मील दक्षिण यमुना और वतवा के संगम के पास इलाहाबाद विभाग में जिले का सदर स्थान हमीरपुर लोटा कसबा है। यह २५ अंश ५८ कला उत्तर अक्षांश और ८० अंश ११ कला ५० विकला पूर्व देशान्तर में है। लोग कहते आते हैं कि करचली राजपूत हमीर देव ने इसको वसाया, जिसको मुसलमानों ने अलवर से खदेर दिया था। यह अकबर के समय एक जिले की राजधानी था। हमीर का उजड़ा पुजड़ा किला और मुसलमानी कवर पुराने समय की निशानियां हैं। यहां मामूली सरकारी इमारतों के अतिरिक्त २ सराय और १ वंगला है और गलले की थोड़ी तिजारत होती है। बलवे के समय यहां बहुत युरोपियन मारे गए थे।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय हमीरपुर में ७१२५ मनुष्य थे, जिनमें ५५४६ हिन्दू, १५९४ मुसलमान, और १५ क्रस्तान थे।

हमीपुर जिला-जिले के उत्तर यमुना नदी पश्चिमोत्तर वाओनी के देशी राज्य और वेतवा नदी, पश्चिम ढासन नदी दक्षिण अलीपुर, छत्तरपुर और चरखारी राज्य और पूर्व बांदा जिला है। हमीरपुर जिले का सदर स्थान है, परन्तु इस जिले में राट सबसे बड़ा कसवा है।

जिले का क्षेत्रफल २२८८ वर्ग मील है। इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में ५१४१०४ मनुष्य थे। अर्थात् २६०८३५ पुरुष और २५३२६९ क्लियां। जिले में ८ कसवे हैं, जिनमें से राठ में १२३११ और खरेला, महोबा, हमारपुर, मौधा, कुल पहाड़, जैतपुर और खमेरपुर में दशदश हजार से कम मनुष्य थे। जिले में चमार, लोधी और ब्राह्मण अधिक हैं (चमार की संख्या

अधिक है, इससे वह पथम लिखा गया) बीजानगर में ५ मील के घेरे में एक श्लील है। गढ़ीली में जो हमीरपुर कसबे से ३५ मील है, वर्ष भर में दो मेला होता है।

इतिहास-सन १६८० में महोवा का जिला राजा क्षत्रशाल के आधीन हुआ। उसके मरने के उपरान्त लगभग १७३४ में राज्य का तिहाई भाग पेशवा को मिला, जिसका एक हिस्सा महोवा बना। हमीरपुर के वर्तमान ज़िले का बड़ा हिस्सा राजा छत्रशाल के पुत्र जगतराज को मिला, जो ७० वर्ष तक उसकी मंतानों के आधीन रहा। सन १८०३ में जब अंगरेजों ने हमीरपुर का अधिकार किया, तब बंदेलखंड के दूसरे भागों के समान इस जिले की भी बुरी अवस्था थी। सन १८४२ में जमीन की मालगुजारी घटा करके नया बंदोवस्त हुआ।

+ तालवेहट ।

झांसी से ३१ मील दक्षिण 'झांसी इटारसी' सेक्सन पर तालवेहट का रेलवे स्टेशन है। तालवेहट लिलतपुर जिले में एक खुबख्रत कसवा है। इसमें उत्तम हथियार बनते हैं। सन १८८१ की जन-संख्या के समय तालवेहट में ५२९३ मनुष्य थे।

इसके पास एक वर्गमील से अधिक भूमि पर बनाई हुई एक झील है। चट्टानी सरहद होकर जो पानी की धारा बहती है, उसको एक बान्ध से रोक दिया गया है।

खरछा के राजा बीरसिंह देव का बनवाया हुआ एक किला है, जिसको सन १८५८ ई० में अंगरेजी अफसर सररोज़ ने नाकाम कर दिया।

+लिलतपुर्।

तालवेहट से २५ मील (झांसी से ५६ मील दक्षिण) पश्चिमोत्तर प्रवेश के झांसी विभाग में जिले का सदर स्थान शहजाद नदी के पश्चिम किनारे के निकट लिलतपुर एक कसवा है। यह २४ अंश ४१ कला ३० विकला उत्तर अक्षांस और ७८ अंश २७ कला ५० विकला पूर्व देशान्तर में है। इस साल की जन-संख्या के समय इसमें ११३४ मनुष्य थे, जिनमें ८६५३ हिन्दू, १६१९

मुसलगान, १०३० जैन, २६ क्रस्तान, १९ सिख और १ दूसरे।

प्रधान सड़कों पर पक्के मकान हैं। कुसवे के प्रध्य में एक नया वाजार बना है और यहां जेल और खैराती अस्पताल है। लिलतपुर पहले प्रसिद्ध नहीं था पर अब बढ़ती पर है।

ळितपुर जिळा—यह झांसी डिवीजन का दक्षिणी जिला है। इसके उत्तर और पश्चिम बेतवा नदी, दक्षिण-पश्चिम नारायणी नदी, दक्षिणविन्ध्यावल घाट और मध्यदेश में सागर जिला, दक्षिण-पूर्व और पूर्व उरछा राज्य और ढासन नदी और पूर्वोत्तर याम्रनि नदी है।

जिले का क्षेत्रफल १९४७ वर्ग मील है। इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में २७४०२९ मनुष्य थे। अर्थात् १४१३५४ पुरुष और १३२६७५ कियां। जिले में चमार, लोधी, कालीं, अहीर और ब्राह्मण अधिक हैं। राज्य की प्रधान नदी बेतवा है। इस देश के प्रति विभाग में हीन दशा में पुराने किले मिलते हैं। जिले के दक्षिणी भाग में गोंड़ों के बनाए हुए टूटे फूटे पुराने मन्दिर जितराए हुए हैं। जिले के जंगल में कई प्रकार के बाघ, सांभर, स्वअर, हरिन, भेड़िया आदि का शिकार होता है।

√चन्देरी।

छितपुर से १८ मीछ पश्चिम मध्य भारत के ग्वाछियर राज्य में जिले का सदर स्थान चन्देरी कसवा है। इसको पूर्व समय में चेदी और चन्देली कहते थे। यहां का सेछा और पगड़ी उत्तम होती हैं। इस समय यह प्रसिद्ध नहीं है, परन्तु एक समय बहुत प्रसिद्ध और किछाबंदी किया हुआ छन्दर शहर था। आईन अक़बरी में छिखा है कि चंदेरी में १४००० पत्थर के मकान, ३८४ बाजार, ३६० कारेवान सराय, और १२००० मसजिद हैं। एक ऊंची पहाड़ी पर किछा है, जिसने एक समय ८ महीने के महासरे को बर्दाश्त किया था। जबाहियों से जान पड़ता है कि पुराने शहर की इमारतों में से कई एक उत्तम और बड़े विस्तार की थीं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(द्रोणपर्व्व-२२ वां अध्याय) चेदीराज शिशुपाल के पुत्र धृष्टकेतु कुरुक्षेत्र के संग्राम में पांडवों की ओर से लड़ा था। (१२३ वां अध्याय) धृष्टकेतु को द्रोणाचार्य्य ने मारा।

श्रीमद्भागवत—(दशम स्कन्ध-५३ वां अध्याय) चन्देली के राजा दमघोष का पुत्र शिशुपाल था, जो रुक्मिणी से विवाह करने के लिये कुण्डिनपुर में गया। वहां से वह कुष्णचन्द्र से पराजित होकर अपने घर लौट गया और रुक्मिणी को हरण करके श्री कृष्णचन्द्र द्वारिका में ले आए।

सागर।

छितपुर से १० मील दक्षिण जाखलोन का स्टेशन और ३९ मील दक्षिण बीना जंगशन है। जाखलौन स्टेशन से २ मील दक्षिण जुहाजपुर में हिन्दुओं और जैनों के पुराने मन्दिरों का झुंड है और बीना स्टेशन से कई मील दक्षिण बीना नदी पर पुल है।

बीना जंकशन से ४६ मील पूर्व सागर सेक्सन पर सागर का स्टेशन है। सागर मध्य प्रदेश के जबलपुर विभाग में जिले का सदर स्थान समुद्र के जल से १९४० फीट उपर सागर नामक उत्तम भ्रील के किनारे एक छोटा शहर है। यह २३ अंश ४९ कला ५० विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ४८ कला ४५ विकला पूर्व देशान्तर में स्थित है।

इस साल की जन-संख्या के समय सागर में ४४६७४ ननुष्य थे। अर्थात् २३७२५ पुरुष और २०९४९ स्त्रियां। जिनमें ३३५६२ हिन्दू ९००७ मुसलमान, १२०४ जैन, ८०४ क्रस्तान, ५३ एनिमिष्टिक, २७ पारसी, और १७ बौद्ध। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ९० वां और मध्य प्रदेश में तीसरा शहर है।

सागर झील १ मील चौड़ी है, जिसके किनारों पर स्नान के बड़े बड़े घाट हैं, जिन पर बहुतेरे देव मन्दिर बने हैं। शहर में चौड़ी सड़कें बनी हैं। झील से ६ मील पूर्व बड़ा जेलखाना है, जिसमें ५०० कैंदी रह सकते हैं डिपटी कमिश्नर की कचहरी एक पहाड़ी पर है। सेशन कचहरीथोड़ी उत्तर है। किले की पश्चिम दीवार के नीचे शहर की कोतवाली है। झील स करांव १ मील पूर्व टकशाल घर है, जिससे एक मील उत्तर फौजी छावनी तक सिविल स्टशन है, जिसके दरवाजे के पास गिर्जा है। छावनी में एक यूरोपियन रजीमेंट और देशी सवार और पैदल रहते हैं।

किला—ज्ञील के पिश्रमोत्तर एक ऊंचाई पर ६ एकड़ भूमि पर किला है।
मोटी दीवारों में २० फीट से ४० फीट तक ऊंचे २० टावर हैं। अधिक हिस्से
में महाराष्ट्रों की पुरानी दो मंजिली इमारत हैं। अंगरेजी गवर्नमेंट ने एक
मेग़ज़ीन (शक्लागार) एक वड़ी इमारत जो इस समय दवा सम्बन्धी चीजों
के काम में लाई जाती है और एक यूरोपियन गार्ड के लिये वारक (सैनिकग्रह)
बनवाए हैं। केवल पूर्व ओर एक फाटक है।

इसमें अब तहसीली और इंजिनियर का आफिस हैं। इस किले को सन १७८० ई० के लगभग महराष्ट्रों ने बनवाया।

सागर जिला—मध्य देश के अंतिम पश्चिमोत्तर में सागर जिला है। जिसके उत्तर लिलतपुर जिला और विजावर, पन्ना, चरखारी देशी राज्य, पूर्व पन्ना राज्य और दमोह जिला, दक्षिण नरसिंहपुर जिला और भोपाल राज्य और पश्चिम भोपाल और ग्वालियर राज्य हैं।

जिले का क्षेत्रफल ४००५ वर्ग मील है। सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में ५६४९५० मनुष्य थे। जिले में ५ कसवे थे, जिनमें से सागर को छोड़ कर गढ़कोटा देउरी लोराई और रेहली में दश दश हजार से कम मनुष्य हैं। जिले में चमार, ब्राह्मण, लोधी, काछी, अधिक हैं। आदि निवासियों में गोंड और सौरा हैं।

सागर शहर से २२ मील दक्षिण-पूर्व सागर जिले में रानीर्गिरि एक पुराना गांव है, जहां चैत्रमांस में मेला होता है। मेले में लगभग ७० हजार मनुष्य आते हैं। इतिहास—कहा जाता है कि बहुत पूर्व समय में एक बनजारे ने सागर का झील को बनवाया, परन्तु वर्तमान शहर ई० सन के १७ वो शतक के अंत का है। इसकी दृष्टि एक बुंदेला राजपूत से हुई, जिसने सन १६६० ई० में एक छोटा किला बनवाया और पारकोटा नामक एक गांव बसाया जो अब नए शहर का एक महल्ला है। पश्चात सागर राजा छत्रशाल के आधीन था, जिसको वह अपनी दृसरी मिल्लिक्यतों के साथ अपने मित्र पेशवा के हाथ में छोड़ कर मर गया। पेशवा ने गोविंद पण्डित को देश का प्रवंधकर्ता नियत किया, जिसके बंशवाले अंत तक इन्तजाम करते रहे। सन १८१८ में अंगरेजों ने बाजीराव पेशवा से इस को लेखिया इसके अंतर पिंडारी प्रधान अमीर खां ने और सन १८०४ ई० में सिंधिया ने दो बार सागर को लूटा।

्रदमोह ।

सागर से जवलपुर जाने वाली सड़क पर सागर से लगभग ५० मील पूर्व जवलपुर विभाग में जिले का सदर स्थान दमोह एक कसवा है। यह २३ अंश ५० कला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश २९ कला ३० विकला पूर्व देशान्तर में स्थित है।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय दमोह में ११७५३ मनुष्य थे। अर्थात ९४१८ हिन्दू, १६९९ मुसलमान, ५७९ जैन, ३९ एनिमिष्टक और १८ क्रस्तान। दमोह में मामूली सरकारी इमारतों के अतिरिक्त कोई दर्शनीय चीज नहीं है। पुराने देव मन्दिरों को मुसलमानों ने नष्ट कर दिया था।

दमोह जिला—जिले के उत्तर बुन्देलखंड, पूर्व जवलपुर, दक्षिण नर-सिंहपुर और पश्चिम सागर जिले हैं।

सन १८८१ में जिले का क्षेत्रफल २७९९ वर्गमील और मनुष्य-संख्या ३१२९५७ थीं, जिनमें ५४२१ आदि निवासी, २४२३ कबीरपंथी और १३७ सतनामी थे। जिले में लोधी, चमार और गोंड़ अधिक हैं। जिले में दमोह के अतिरिक्त हहा एक कसवा है। दमोह जिले के कुण्डलपुर और बांडकपुर में मेले होते हैं, जिन में बहुत. बस्तुओं की खरीद विकी होती है।

कुण्डलपुर—कुण्डलपुर में जैनों के देवता नेमीनाथ का मन्दिर है। होली के पश्चात यहां मेला होता है और १५ दिन तक रहता है। आस पास के जैन नेमीनाथ के दर्शन के लिये आते हैं।

बांडकपुर—सन १७८१ ई० में दमोह के महाराष्ट्र पण्डित नागोजी बलाल के पिता ने स्वम देखने के उपरांत यहां यागेश्वर महादेव का मन्दिर बनवाया। यहां वसंतपंचमी और फाल्गुन की शिवरात्रि को मेला होता है। यात्रीगण मन्नत करके नर्मदा का पवित्र जल महादेव पर चढ़ाते हैं। लगभग १२००० रुपया भेंट में चढ़ता है जिसमें से ६ पंडे लोग और ६ मन्दिर का स्वामी बेता है। सन १८८१ में ७०००० आदमी मेले में आए थे।

इतिहास—महोबा के चंदेल राजपूत सागर और दमोह के वर्तमान जिलों पर अपने कर्मचारियों द्वाराराज करते थे। ११ वीं सदी के अन्त में चंदेल राज्य की घटती के समय दमोह का बड़ा भाग गोंड़ों के दखल में हुआ, जिसका सदर स्थान बुदेलखंड के खटोला में था। सन १६०० ई० के लगभग बुन्देला प्रधान राजा बीरसिंह देव ने उनके पराक्रम को नष्ट किया। अंत में अंगरेजों ने सन १८१८ में महाराष्ट्रों से इसको ले लिया।

- राजगढ़।

मध्य भारत के भोपाल एजेंसी के पोलिटिकल छपरिंटेंडेंस के आधीन मालवा में राजगढ़ एक छोटा राज्य है। मुग़लों के राज्य की घटती के समय ऊमत राजपूतों ने उमतवार जिले को जीता। सन १४४८ ई० में उमतवार के सरदार ने रावत की पदवी पाई। सन १६८१ में वहां के प्रधान के पुत्र ने, जो मन्त्री भी था, अपने पिता से राज्य को बांटलिया। जो राज्य का भाग मन्त्री को मिला, वह नरसिंह गढ़ कहलाता है और जो प्रधान को रहगया, वह राज-गढ़ है। अंत में नरसिंह गढ़ हुलकर के और राजगढ़ सिंधिया के आधीन हुआ। राज्य क मालगुजारी लगभग ५००००० रुपया है, जिसमें से ८५१७० रुपया सिंधिया को और लगभग १००० रुपया झालावार को दिया जाता है। सन १८७१ में रावत मोतीसिंह मुसलयान होगया और महम्मद अवदुल वासिद खां अपना नाम रक्खा। उसने सन १८७२ में अंगरेजी गवर्नमेंट से नवाव की खिताव पाई। उसके मरने पर सन १८८० में उसका पुत्र वच्लावर सिंह रावत हुआ। सन १८८२ में उसके मरने पर उसके पुत्र वर्तमान रावत वलवहादुर सिंह, जिन की अवस्था ३३ वर्ष की है, उत्तराधिकारी हुए। यहांके रावत को ११ तोपों की सलामी मिलती है और सैनिक वल २४० सवार, ३६० पैदल, ४ मैदान की और ८ दुसरी तोपें और १२ गोलंदाज हैं।

सन १८८१ में इस राज्य का क्षेत्रफल ६५५ वर्गमील और मनुष्य-संख्या ११७५३३ थी। जिनमें १०४१६६ हिन्दू, ५८३० मुसलमान, ३५२ जैन, ६ कृस्तान, ४ सिक्ख, और ७१७५ आदि निवासी थे। आदि निवासियों में ३५६८ भील, ३२०९ मीना, और ३९८ मोगिया थे।

राजगढ़ राजधानी २४ अंश ० कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश ४६ कला ३८ विकला पूर्व देशान्तर में स्थित है। जन-संख्या सन १८८१ में ६८८१ थी। अर्थात ५६१७ हिन्दू, ११३४ मुसलमान और १३० दूसरे थे।

नरसिंहगद् ।

मध्य भारत भोपाछ एजेंसी के आधीन नरसिंहगढ़ एक छोटा वेशी राज्य है। सन १६६७ ईं० में परोसा राम अपने वाप राजगढ़ के रावत का मन्त्री हुआ, जिसने नरसिंहगढ़ को नियत किया। और सन १६८१ में रावत से राज्य की बांट लिया वही नरसिंहगढ़ का राज्य हुआ। राज्य की मालगुजारी ५०००० हमया है, जिसमें से ५८००० रुपया हुलकर को दिया जाता है। सन १८७२ में नरसिंहगढ़ के रावत को राजा की पदवी मिली। नरसिंहगढ़ का वर्तमान नरेश ५ वर्ष की अवस्था का जमत राजपूत राजा महताव सिंह है। यहां के राजाओं को ११ तोपों की सलामी मिलती है और सैनिक बल ९८ सवार, ६२५ पैदल, १० तोप और २४ गोलंदाज हैं। सन १८८१ ई० में राज्य का क्षेत्रफल ६२३ वर्गमील और मनुष्य-संख्या ११२४३७ थी, जिन में १००९५२ हिन्दू, ४९५८ सुसलमान, ३१८ जैन, १ सिक्ख और ६१९८ आदि निवासी थे। आदि निवासियों में ३१०४ मीना, २८२८ भील, २५२ वेशवाली और १४ मोगिया। और राज्य में १ कसबा और ४१६ गांव थे।

भोपाल शहर से ४० मील से अधिक पश्चिमोत्तर नरसिंहगढ़ राजधानी है। यह २३ अंश ४२ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश ५ कला ५० विकला पूर्व देशान्तर में स्थित है। नरसिंहगढ़ उंची भूमि पर झील के किनारे है। कसबे से ऊपर पहाड़ी पर किला खड़ा है, जिसको सन १७८० में अवलिस ने बनवाया। राजमहल किले में है। सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कसबे में ११४०० मनुष्य थे, जिनमें १०३९८ हिन्दु, ८८६ मुसलमान, और ११६ दुसरे।

भिल्सा।

बीना जंगशन से २८ मील दक्षिण (झांसी से १२३ मील) बसोदा का स्टेशन है, जिससे करीब १५ मील पश्चिम टोंक राज्य में सिरोंज तिजारती कसवा है; जहां मांच फागुन में एक प्रसिद्ध मेला होता है और एक महीने तक रहता है।

वीना से भिल्रसा तक देशों मेंव हुत हरिन हैं।

वसोदा से २५ मील (झांसी से १४८ मील) दक्षिण भिलसा का स्टेशन
है। भिलसा ग्वालियर राज्य में बेतवा नदी के दिहने अर्थात् पूर्व समुद्र के
जल से १५४६ फीट ऊपर एक चट्टान पर छोटा कसबा है। जिसमें ७००० के
लगभग मनुष्य वसते हैं। वाहरी चौड़ी सड़क पर अच्छे मकान बने हैं। आसपास
के स्थानों में बहुत उत्तम तम्बाकू होती है। भिलसा हिन्दू मन्दिरों की यात्रा
और बौद्ध स्तूपों के लिथे प्रसिद्ध है। देवताओं के मन्दिर बेतवा नदी के मैदान
में हैं।

किला-किले की दीवार पत्थर की है। वारो बगलों में खाई है। किले में १९६ फीट लम्बी, जिसका खराख १० इ व का है, एक पुरानी तोप है। कहा जाता है कि दिल्ली के बादशाह जहांगीर की आज्ञा से यह बनवाई गई। वादशाह अकबर ने सन १५७० ई० में दिल्ली के राज्य में भिलसा को मिला लिया था।

वौद्धस्तूप-अधिक फैले हुए और कदाचित हिन्दृस्तान में सबसे उत्तम बौद्ध स्तूपों के झुंड भिलसा के पड़ोस और सांची में हैं। एक जिले में उत्तर से दक्षिण ६ मील और पूर्व से पश्चिम करीव १० मील के मीतर स्तूपों के पांच वा छः. झुंडों में २५ से अधिक और ३० से कम स्तूप हैं।

सांची।

भिल्लसा के स्टेशन से ५ मील सांची का स्टेशन है। सांची में ११ बौद्ध स्तूपों का एक झुंड है, जिनमें वड़ा स्तूप प्रधान है।

वड़ा स्तूप गुम्बज के आकार का है, जिसका व्यास १०६ फीट और ऊंचाई ४२ फीट है। सिरे पर ३४ फीट व्यास का एक विपटा स्थान है। १४ फीट ऊंचे और १२० फीट व्यास के ढालुएं पुक्ते पर गुम्बज है। स्तूप में भीतरी ईंटे और वाहरी पत्थर लगे हैं। स्तूप के वगलों में गोलाकार दीवार है, जिसमें चारो ओर ४ फाटक वा तोरन हैं। सांची के स्तूप सन ई० के २५० वर्ष पहले से पहली सदी तक के बने हुए होंगे।

सांची के स्तूपों के अतिरिक्त इससे ५ मील दूर सोनारी के पास ८ स्तूपों का झुंड है, जिनमें से २ सम चतुर्भुज चौगान में हैं, ३ मील अधिक अन्तर पर सथारा के पास १०१ फीट व्यास का एक स्तूप है, एक स्तूप के भीतर से, जिसका व्यास २४ फीट है दो डिब्बों में सारिपुत्र और महा मोगलान की हिंडुयां निकली हैं। यह दोनों बुद्ध के शिष्य थे। सारिपुत्र का देहांत बुद्ध की वर्त-मानता में हो गया और मोगलायन का बुद्ध के निर्वाण के पीछे।

सांची से ७ मील भोजपुर के पास ३७ स्तूप हैं। सबसे बड़े स्तूप का

च्यास ६६ फीट है। भोजपुर से ५ मील पश्चिम अंधोर के पास ३ छोटे उत्तम स्तूपों का एक झुंड है, जो सन ई० के २२० वर्ष पहले और पहली सदी के बीच के बने हुए हैं।

सन १८८३ ई० में हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट की आज्ञा से स्तूपों के प्रधान झुंडों पर अधिक ध्यान दिया गया। गिरे हुए फाटक खड़े किए गए, घेरे मरम्मत हुए और जहां गिरे थे वहां फिर वनाए गए और स्तूप असली शकल में खुधारे गए।

√भोपाल ।

भिलसा से ३३ मील (झांसी से १८१ मील) दक्षिण कुछ पश्चिम भोपाल का स्टेशन है। मध्य भारत के मालवा प्रदेश में एक मिसद्ध झील के उत्तर किनारे पर देशी राज्य की राजधानी समुद्र के सतह से १६७० फीट ऊपर भोपाल एक छोटा शहर है। यह २३ अंश १५ कला ३५ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश २५ कला ५६ विकला पूर्व देशांतर में स्थित है।

इस साल की जन-संख्या के समय भोपाल में ७०३३८ मनुष्य थे। अर्थात ३६८९१ पुरूष और ३३४४७ स्त्रियां। जिनमें ३५७८८ मुलमान, ३२४८७ हिन्दू, ८५६ एनिमिष्टिक, ८०३ जैन, १९३ सिक्ख, १८८ क्रस्तान और २३ पारसी थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ४७ वां और मध्य भारत में तीसरा शहर है।

भोपाल की झील ४ ई मील लम्बी और १ ई मील चौड़ी हैं। शहर २ मील की दीवार से घेरा हुआ है। घेरे के भीतर किला है। शहर के वाहर एक ति-जारती बस्ती है और दक्षिण पश्चिम एक वड़े चट्टान पर फ़तहगढ़ नामक किला है, जिसमें भोपाल की बेगम रहती है। बेगम के महल में कारीगरी के बहुत काम नहीं है, तिस पर भी यह विशाल भवन देखने योग्य है। मृत खुदसिया बेगम की बनवाई हुई जुमा मसजिद, मृत सिकन्दर बेगम की मोती मसजिद और टकशाल और तोपखामा, खुदसिया बेगम और सिकन्दर बेगम की बार्टिका भोपाल में देखने की प्रधान बस्तु हैं। भोपाल शहर साफ़ है। सड़कों पर रोशनी होती है। खास शहर में सब जगह कल का पानी है। शहर के पूर्व नवाब हयातमहम्मद खां के मन्त्री छोटे खां की बनवाई हुई २ मील लम्बी झील है। इसका बांघ पका है। भोपाल में एक जनाना अस्पताल और एक जनाना स्कूल हैं।

भोपाल राज्य में सिहोर (जन-संख्या १६२३२) प्रसिद्ध स्थान है। भो-पाल से पश्चिम ओर ११४ मील की नई रेलवे की शाला उज्जैन को गई है।

भोपाल राज्य-मध्य भारत-मालवा के भोपाल पोलिटिकल एजेंसी में यह एक देशी राज्य है। सन १८८१ में इसका क्षेत्रफल ६८७३ वर्गमील और मनुष्य-संख्या ९५४९०१ थी। अर्थात् ७४७००४ हिन्द्, ८२१६४ मुसलमान, ११९४१८ आदि निवासी, ६०२२ जैन, १५५ कुस्तान, १३६ सिक्स और २ पारसी।

इसके उत्तर और पश्चिम सिंधियाराज्य और कई छोट राज्य, पूर्व मध्य वेश में सागर जिला और दक्षिण नम्मदा नदी है। वेगम के ६९४ घोड़ सवार, १२०० पैदल, १४ मैदान की तोणें और ४३ दूसरी तोणें २९१ गोलंदाजों के साथ हैं। भोपाल राज्य की मालगुजारी ४० लाख रूपया है। राज्य अंगरेजी सरकार को ३० हजार पाउंड वेता है। भोपाल में अंगरेजी फौज रहती है।

सिद्धोर—भोपाल से २४ मील दक्षिण-पश्चिम एक नदी के दिहने किनारे पर सिहोर एक कसवा है। यहां भोपाल के पोलिटिकल एजेंट रहते हैं और यह फौजी स्टेशन है।

इस साल को जन-संख्या के समय सिहोर में ११२३७ हिन्दू, ४३७१ मुसलमान, २४९ सिक्ख २४१ जैन, ६९ कृस्तान, ५४ एनिमिष्टिक और ११ पारसी; कुल १६२३२ मनुष्य थे।

इतिहास—राजा भोज ने भोपाल को वसाया, इसलिये पहले इसका नाम भोजपुल था। उज्जैन का खपिसद्ध राजा भोज करीब १२०० वर्ष पहले था।

भोपाल के नवाब खान्दान के नियत करने वाला अफ़ग़ानिस्तान का दोस्त महम्मद है, जो औरंगजेब के आधीन कर्मवारी था; और सन ई० के १८ वें शतक के आरंभ में उसके मरने पर स्वाधीन वनगया। उसके वंशवाले सदा अङ्गरेजी सरकार के मित्र रहे।

सन १८१७ ई० में भोपाछ के नवाब और अङ्गरेजों के बीज जो संधि हुई, उसके अनुसार नवाब ६०० घोड़ सबार और ४०० पैदल के खरच देने लगे। थोड़ेही दिनों के उपरान्त नवाब इत्तफाकन एक लड़के की बन्दूक से मारा गया उसका बालक भतीजा उसका कायमसुकाम सुस्तहर किया गया और नवाब की छड़की सिकन्दर बेगम से उसके विवाह का निश्रय हुआ। लेकिन नवाब की विधवा खुदिसिया बेगम ने राज्य को अपने हाथ में रखना चाहा। इसलिये उस लड़के ने गदी लेने और नवाब की कड़की से विवाह करने से इनकार किया। बड़े झगड़े के पीछे सन १८३७ ई० में नवाच का दूसरा भतीजा जहांगीर महम्मद भोपाल का नवाव वनाया गया। सन १८४४ ई० में वह मर गया। उसकी विधवा सिकन्दर बेगम ने सन १८६८ ई० तक भोपल का राज्य किया। वह एक लड़की शाहजहां बेगम को छोड़ गई, जो गदी पर बैठी। इस बेगम साहिव का पहला पित सन १८६७ ई० में खलताना जहांवेगम नामक लड़की को छोड़ कर मरगया था।पति के मरने पर इसने अपनी माता की तरह पर्दा में रहना छोड़ दिया था। वेगम साहिव ने सन १८७१ ई० में अपना दूसरा विवाह किया। तबसे राज्य के काम करने पर भी यह पर्दें में रहने लगी। यह फिर विधवा होगई। इसकी छड़की (भविष्य वेगम) छछताना जहांवेगम का विवाह सन १८७४ ई० में हुआ, जिसके दो लड़के और एक लड़की है।

भोपाल की वर्तमान वेगम का नाम नवाब शाहजहां वेगम जी० सी० एस० आई० सी० आई० और अवस्था ५१ वर्ष की है। वेगम को सरकार से १९ तोपों की सलामी मिलती है।

🗸 हुशंगाबाद ।

भोपाल से ४६ मील (झांसी से २२७ मील दक्षिण कुछ पश्चिम) हुजंगा-बाद का स्टेशन हैं। मध्य प्रदेश के नर्म्मदा विभाग में जिले का सदर स्थान नर्मदा नदी के बाएं अर्थात दक्षिण हुशंगाबाद एक कसवा है, जिसको गुजरात के वादशाह हुशंग शाह ने वसाया । यह २० अंश ४५ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश ४६ कला पूर्व देशान्तर में स्थित है ।

इस साल की जन-संख्या के समय यहां १३४९५ मनुष्य थे अर्थात ९९०९ हिन्दू, २९७२ मुसलमान, ३४७ जैन, १९७ क्रस्तान, ५१ एनिमिष्टिक, और १९ पारसी।

हुशंगाबाद पहुंचने से पहले नर्मदा पर रेलवे का पुल मिलता है। नर्मदा विभाग के कमिश्वर हुशंगाबाद में रहते हैं और देशी पैदल सेना का एक हिस्सा भी रहता है।

नर्मीदा और वर्रातवा निदयों के संगम के समीप विन्द्रभानु स्थान पर कार्तिकी पूर्णमासी को बड़ा मेला होता है, जिसके पास महादेव का मन्दिर है।

हुसंगावाद जिला—मध्य देश के नम्मंदा विभाग में हुशंगावाद जिला है। जिसके उत्तर नम्मंदा नदी जो भोपाल, सिंधिया और हुलकर राज्यों से इसको अलग करती है; पूर्व दूधी नदी नर्रांसह पुर जिले से इसको अलग करती है; दक्षिण पश्चिमी वरार, वेतूल और चिंदवाड़ा जिलें और पश्चिम निमार जिला है।

सन १८८१ में जिले का क्षेत्रफल ४४३७ वर्गमील और मनुष्य-संख्या ४८८७८७ थी; जिनमें ९७५३७ आदि निवासी, ३३७२ कवीरपंथी और ९ सतनामी थे। आदि निवासियों में ६१००९ गोंड, २८५५८ कुरकू, ६६०४ भील, ८९४ सवर, ३७५ कोल और ९७ कवार थे। हिन्दुओं में राजपूत और ब्राह्मण अधिक हैं। जिले में ४ कुसवे हैं। इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय हुआंगाबाद में १३४९५, हरदा में १३५५६ और सोहागपुर और सिउनी में दश दश हजार से कम मनुष्य थे।

इतिहास-जिबे के पूर्वी भाग में ४ गोंड़ राजा है। जिबे का मध्य भाग देवगढ़ के गोंड़ के आधीन था और अखीर पश्चिम भाग में मकराई का गोंड़ राजा स्वाधीन था। अकवर के समय में इंडिया एक जिबे का सदर स्थान थी। सन १७२० में भोपाल खांदान के नियत करने वाबे दोस्त महम्मद ने हुशंगाबाद

कसबे को लेलिया और इसके साथ बहुत देश सिउनी से तावा तक या . सोहागपुर तक भी मिल्ला दिया । सन १७९५ के पश्चात नागपुर के राघवजी भोंसले के सूवेदार बेनीसिंह ने हुशंगाबाद कसबे और उसके किले को छीन लिया। उसके मीछे भोसने और भोपाल से कई बार लड़ाई हुई। सन १८६० में संपूर्ण जिले पर अंगरेजों का अधिकार हुआ।

+ इटार्सी जंकशन।

झांसी से २३८ मील दक्षिण कुछ पश्चिम 'इटारसी जंक्ज्ञन ' है, जहांसे रेखवे लाइन ३ ओर गई है।

पेनिनसुला रेलवे' मील प्रसिद्ध स्टेशन २१ सिउनी ४७ हरदा ११० खंडवा जंकशन १५३ बुरहानपुर १८७ भुसावल जंक्शन ३०१ मनमार जंक्शन ३४७ नासिक ४३० कल्यान जंक्शन ४६३ बम्बई विक्टोरिया स्टेशन खंडवा जंक्शन

से पश्चिमोत्तर 'राज्-पुताना मालवा रेलवे' मील प्रसिद्ध स्टेशन ३७ मोरतका (ओंकार नाथ के लिये) ७३ मऊ छावनी ८६ इन्दौर १११ फतेहाबाद जंक्शन (उजैन के निकट) १६० रतलाम जंक्शम २७७ वित्तीरगढ़ जंक्शन

(१) पश्चिम-दक्षिण 'ग्रेट इंडियन (२) पूर्वोत्तर जवलपुर तक 'ग्रेट इंडियन पेनिनस्रला रेलवे ' उससे आगे 'इष्ट इंडियन रेलवे ' . मील प्रसिद्ध स्टेशन ७३ गाडरबारा जंकञ्चन १०१ नरसिंहपुर १५३ जबलपुर २१० कटनी जंक्शन २७१ सतना ३१९ मानिकपुर जंक्शन ३७७ नयनी जंक्ञन

> ३८१ इलाहाबाद (३) उत्तर कुछ पूर्व 'इंडियन पिडलेंड रेलवे ' मील पसिद्ध स्टेशन ११ हुशंगाबाद ५७ भोपाल जंक्ज्ञन ८५ सांची ९० भिलसा १४३ वीना जंक्शन १८२ लिखतपुर २३८ झांसी जंक्जन ३७५ कानपुर जेक्शन

नवां अध्याय।

दतिया, ग्वालियर, और घौलपुर।

उ दतिया।

श्लांसी से १५ मील उत्तर दितया का स्टेशन है। दितया बुन्देलाबंड में देशी राज्य की राजधानी चट्टानी उंचाई पर करीब ३० फीट ऊंची पत्थर की दीवार के भीतर रेलवे स्टेशन से २ मील दूर एक कसवा है। यह २५ अंश ४० कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ३० कला पूर्व देशान्तर में स्थित है।

इस साल की जन-संख्या के समय दितया में २७५६६ मनुष्य थे, अर्थात १४२१३ पुरुष और १३३५३ स्त्रियां जिनमें २१९२४ हिन्दू, ४७९९ मुसलमान, ८३२ एनिमिष्टिक, १० जैन, और १ क्रस्तान थे।

राजमहल, जिसमें महाराज रहते हैं, उत्तम बाटिका के भीतर है। बाटिका की दीवार में एक उत्तम फाटक और मत्येक कोने पर एक एक बुर्ज है। बाटिका के हौज में ४ हाथी बनाए गए हैं, जिनके सुंडों से पानी के फीआरे निकलते हैं। नगर के भीतर दूसरा राजमहल है और तीसरा महल जो दृढ़ और छन्दर है, नगर की पश्चिम दीवार के बाहर स्थित है।

दितया कसबे में बहुतेरे छुन्दर मकान बने हैं। एक सड़क आगरा से दितया होकर सागर को गई है।

राज्य—दितया का राज्य ग्वालियर राज्य से प्रायः घिरा हुआ है, केवल पूर्व झांसी जिला है। इसका क्षेत्रफल ८३७ वर्ग-मील और मालगुजारी ९ लाख रूपया है। और जन-संख्या सन १८८१ ई० में १८२५९८ थी, जिनमें १७४२०२ हिन्दु, ८३८१ मुसलमान और १५ जैन थे।

दतिया से ४ मील दूर जैन मन्दिरों का झुंड है।

सोनागिरि—द्तिया से ७ मील उत्तर (झांसी से २२ मील) सोना-गिरि स्टेशन हैं, जिसके पास पहाड़ी पर जैन संतो की बहुतेरी समाधियां हैं; जिनका जन लोग वड़ा आदर करते हैं और वहां दर्शन को जाते हैं।

इतिहास—दितया राज्य को सन १८०२ की वेसिन की संधि में पेशवा ने अंगरेजों की प्रधानता के आधीन कर दिया। उस समय राजा परीक्षित दितया की हुकूमत करने वाले थे, जिनके साथ सन १८०४ में संधि हुई। सन १८१७ में पेशवा के पदच्युत होने के पश्चात राजा परीक्षित के साथ अंगरेजों की एक नई संधि हुई। राजा परीक्षित की मृत्यु होने पर उनके गोद लिए हुए पुत्र विजय बहादुर राजा हुए जो सन १८५७ में मर गए; और उनके दत्तक पुत्र वर्तमान दितया नरेश महाराज लोकेन्द्र भवानी सिंह बहादुर बुन्वेला राजपूत जिनका जन्म सन १८४५ में हुआ था, राजा हुए। दितया के राजाओं को अंगरेजी सरकार से १५ तोपों की सलामी मिलती है और फौजी बल ७०० सवार, ३०४० पैदल, ९७ तोप और १६० गोलंदाज हैं।

🗸 ग्वालियर ।

दितया से ४५ मील (झांसी से ६० मील उत्तर) ग्वालियर का स्टेशन हैं। ग्वालियर मध्य भारत में सबसे वड़ा देशी राज्य की राजधानी एक छन्दर शहर है। नए शहर को लश्कर और पुराने को पुराना ग्वालियर कहते हैं। यह २६ अंश १३ कला उत्तर अक्षांस और ७८ अंश १२ कला पूर्व देशान्तर में स्थित है।

इस साल की जन-संख्या के समय ग्वालियर में १०४०८३ मनुष्य थे, अर्थात ५४५५३ पुरुष और ४९५३० स्त्रियां। जिनमें ७६८६७ हिन्दू, २३०३८ मुसलमान, २१५३ एनिमिष्टिक, १९२३ जैन, ९९ क्रस्तान, और ३ बौद्ध थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में २८ वां और मध्य भारत में पहिला शहर है।

लडकर शहर—रेलवे स्टेशन से २ मील पहाड़ी किले के पासही नीचे लड़कर नामक नया शहर है। सन १७९४-१७९५ ई० में दौलत राव सिधिया ने जब म्वालियर का कब्जा हासिल किया, तब उसने किले के दक्षिण मैदाक में अपना लश्करगाह बनाया; उसी जगह एक नया शहर बस गया, जिसकी उन्मति बहुत जल्दी हुई, उसीका नाम लश्कर हो गया । नया शहर होने से पुराना शहर धीरे धीरे घटता जाता है।

स्टेशन से थोड़ा आगे लशकर की सड़क के किनारे हिन्दुओं के ठहरने योग्य महाराज की बनवाई हुई पत्थर की खन्दर नई सराय है। शहर में भी एक बड़ी सराय है, परन्तु उसमे सफाई नहीं रहती।

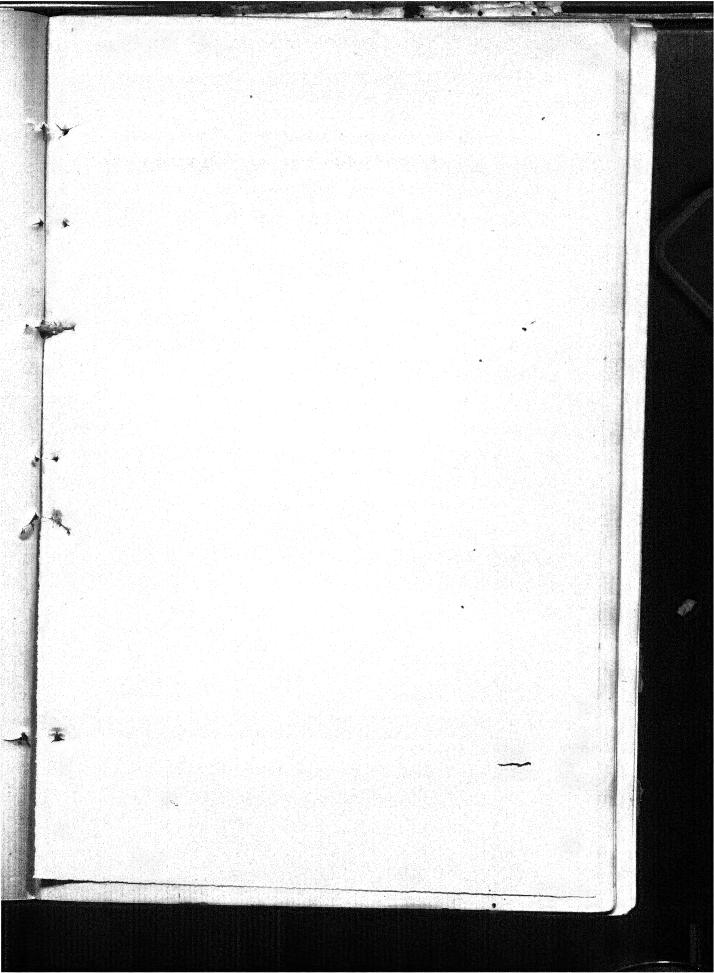
छशकर का सराफा बाजार प्रधान सड़क पर है। शहर के मध्य में बाड़ा वा पुराना राजमहल है, जिसके आस पास प्रधान सरदार और शरीफों के मकान हैं। विकटोरिया कालेज, जयाजी राव का अस्पताल और सिंधिया के माता का बनवाया हुआ नया मन्दिर उत्तम इमारत हैं। शहर के अधिकांश मकान दो मंजिले और मुड़ेरेदार हैं।

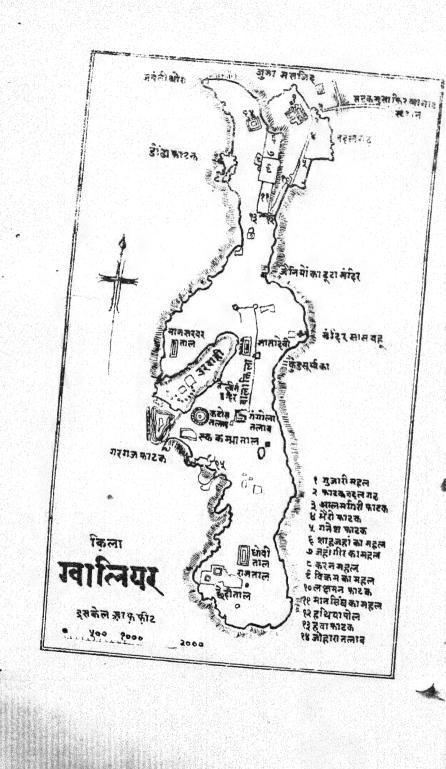
गाड़ी में बड़े बड़े बैळ जोते जाते हैं, जिस पर बहुतेरे सरदार सवारी करते हैं।

शहर के पासही फूळवाग में महाराज सिंधिया का नया महल है। मैं महा-राज के एक अफ़सर पुरुषोत्तम राव से आज्ञा लेकर जयन्द्र भवन देखने गया। महल के एक भाग का नाम जयन्द्र भवन है, जिसको महाराज जयाजी राव ने बनवाया है। यह हिन्दुस्तान के बहुत उत्तम मकानों में से एक है। जयन्द्र भवन दो मंजिला है, सीढ़ियों के बगल पर कांच का कठघरा, ऊपर के महल की दीवारों में छनहला काम और बहुत बड़े आइने, छत में बेश क़ीमती बड़े बड़े बाइ और गालीचे के फरस पर सोना चांदी जड़ी हुई कुर्सियां और दूसरे बहुत उत्तम राजसी सामान देखने में आए।

महल के पास महाराज की कवहरी है। बाग में एक जगह जल का छुन्द्र होज बना है।

पुराना ग्वालियर—िकले की पहाड़ी की पूर्वी नेव के पास ग्वालियर का पुराना शहर है, जो घटते घटते लशकर के । रहगया है। इसके फाटक के बाहर दो ऊंची मीनारों के साथ साथ एक पुरानी जुमा मसजिद है।





मुरार छावनी—िक से मुरार तक २ मील की सायादार सड़क है। जो नदी अब मुरार नाम से प्रसिद्ध है, उसके पास मुरार नामक एक छोटा गांव था, इस लिये इसका नाम मुरार पड़ा है। पहले बहुत बड़ी अंगरेजी सेना यहां रहती थी। अंगरेजों ने सन १८८६ ई० में महाराज से झांसी लेकर उसके बदले में ग्वालियर और मुरार उनको देदिया। ग्ज़ीडेंट और ग्वालियर राज्य सम्बन्धी अङ्करेजी अफसर यहां रहते हैं।

मुरार की जन-संख्या ग्वालियर से अलग है। इस साल की मनुष्य-गणना के समय मुरार में २४५१८ मनुष्य थे। अर्थात १७६८२ हिन्दू, ६४१६ मुसल-मान, ६१ क्रस्तान, १०२ जैन, १ पारसी और २५६ एनिमिष्टिक।

किला—ग्वालियर का किला हिन्दुस्तान के अधिक पुराने, प्रसिद्ध और दुर्गम किलों में से एक है। यह एक बहुत खड़ी पहाड़ी पर, जिसका सिर चि-पटा है, स्थित है। (मत्स्यपुराण के २७६ वें अध्याय में है, कि धनुषदुर्ग महिद्धर्ग नरदुर्ग बृक्षदुर्ग, जलदुर्ग और गिरिदुर्ग जो ६ मकार के किले हैं, इन में गिरिदुर्ग सबसे उत्तम है। खाई कोटयुक्त शतब्री सैकड़ों मोर्चे बाला और ऊंचे द्वार वाला दुर्ग होना चाहिये) पहाड़ी शहर के उत्तर अखीर से ३०० फीट परन्तु दरवाजे के मधान फाटक से २७५ फीट ऊंची है। इसकी लंबाई उत्तर से दक्षिण तक १३ मील और चौड़ाई केवल ६०० फीट से २८०० फीट तक हैं। किले की दीवार ३० फीट से ३५ फीट तक ऊंची हैं।

किले का प्रधान दरवाजा उत्तर पूर्व है, जिसमें उत्तर से आरंभ होकर दक्षिण तक आगे पीछे क्रम से ६ फाटक हैं। (१) आलमगीर फाटक, इसको ग्वालियर के गवर्नर महम्मद शाह ने सन १६६० ई० में बनवाया। दिल्ली के बादशाह औरंगजेब के दूसरे नाम (आलमगीर) से इसका यह नाम पड़ा। (२) बादलगढ़ या हिंडोला फाटक, इसको मानसिंह के चाचा बादलसिंद ने बनवाया। इसके बाहर हिंडोला रहता था, इससे इसका नाम हिंडोला फाटक भी है। एक लोहे के तख्ते पर लिखा है कि सैयद आलम ने सन १६४८ ई० में इसको स्थारा इसके पासही दिहने ३०० फीट खंबा और २३० फीट चौड़ा

उज़ड़ा पुज़ड़ा दो मंजिला गुज़ारी महल है, जो मानसिंह की रानी के रहने के लिये बना था। (३) भैरव फाटक, सबसे पहले के कछवा राजाओं में से एक के नाम से इसका भैरव नाम पड़ा। इसके समीप एक स्थान पर छेख है, जिसमें सन १४८५ ई० मानसिंह के गही होने के एक वर्ष पहले की तारीख है। (४) गणेश फाटक, इसको डुंगरेली ने बनवाया, जिसने १४२४ ई० से १४५४ तक राज्य किया। बाहरी ६० फीट छंवा ३९ फीट चौड़ा और २५ फीट गहरा नुर-सागर नामक सवोवर है। यहां ग्वालिया साधु का, जिसके नाम से शहर का ग्वालियर नाम पड़ा, केवल ४ पायों पर गुंबजदार छोटा मंदिर है; जिसके पास एक छोटी मसनिद हैं। (५) लक्ष्मण फाटक फाटक के पास पहुंचने से पहले चट्टान काट कर बना हुआ १२ फीट लंबा और इतनाहीं चौड़ा ४ स्तंभो के जगमोहन के साथ विष्णु का मंदिर मिलता है, जो चतुर्भुज का मंदिर कहलाता है। बाए एक लंबे शिलालेख में संबत ९३३ लिखा है। यहां एक सरोवर के सामने ताज निजाम की कृतर है, जो इब्राहिम लोदी की कचहरी का एक शरीफ आदमी था और इस फाटक के आक्रमण करते समय सन १५१८ ई० में मारागया । फाटकों के वीच में शिव पार्वती और करीव ५० शिवर्लिंग चट्टान काटकर बनाए गए हैं। और स्कर भगवान की घिसी हुई १५ ई फीट अंची बहुत पुरानी मूर्त्ति है। (६) हथिया पवंर, यह मानसिंह के महल का एक हिस्सा है उन्ही का बनावाया हुआ है। यहां पत्थर का हाथी था, इससे इसका यह नाम पड़ा।

किले के पश्चिमोत्तर धोंदा पंवर (फाटक) है। धोंदा नामक कच्छवा राजा के नाम से इसका यह नाम पड़ा है। इसमें आगे पीछे ३ फाटक हैं।

दक्षिण पश्चिम का दरवाजा गरगज पंवर कहलाताा है। इसमें आगे पीछे / ५ फाटक थे, जिनमें से ३ को जनरल हाइट ने तोड़ दिया।

किले के तालावों, कूंओं और होजों में पानी कभी नहीं चुकता। सूर्यंकुंड जो सास बहू के मंदिर से ५०० फीट पश्चिमोत्तर है, सन २७५ और सन ३०० इं० के बीच में बना; जो किले में सबसे पुराना है। यह ३५० फीट लंबा और १८० फोट चौड़ा है। इसकी गहराई सर्वत्र बराबर नहीं है। किले के उत्तर बगल के समीप जयंती थोड़ा के पास तिकोनिया तालाव है। जहां २ शिलालेख हैं, जिनमें से एक सन १४०८ ई० का और दूसरा उससे कुछ पहले का है। किले के उत्तर भाग में शाहजहां के महल के आगे जौहर तालाव है। राजपूत स्त्रियों की जबह होने के कारण इसका जौहर नाम पड़ा। पद्मनाथ के मंदिर के समीप २५० फीट लंबा १५० फीट चौड़ा और १५ फीट से १८ फीट तक गहरा, जो कभी कभी खल जाता है, सास बहू तालाव है। किले के मध्य में २०० फीट लंबा और इतनाहीं चौड़ा, जिस के दक्षिण बगल के पास सर्वदा गहरा पानी रहता है, गंगोला तालाव है। किले के दक्षिण अस्तर के पास किले के सब तालाओं से बड़ा अर्थात ४०० फीट लंबा और २०० फीट चौड़ा, जो कम गहरा है, धोवी तालाव है।

किले में ६ महल हैं, (१) गुजारी महल, जिसका बृत्तांत वादलगढ़ फाटक के साथ लिला है, (२) मानसिंह महल (सन १४८६-१५१६ ई० मरम्मत सन १८८१ ई० में) किले में प्रवेश करने पर यह महल दिहने मिलता है। इसके दो मंजिल भूमि के नीचे और दो मंजिल ऊपर हैं। चमगादुरों के कारण यह रहने योग्य नहीं है। महल के पूर्व का चेहरा ३०० फीट लंबा और १०० फीट लंबा है, जिसमें ५ गोलाकार टावर हैं। दक्षिण का चेहरा १६० कीट लंबा और ६० फीट जंबा ३ गोलाकार टावरों के साथ है। महल के उत्तर और पश्चिम के बगल बहुत उजड़ पुजड़ गए हैं, (३) विकम का महल, यह मानसिंह महल और कर्ण महल के बीच में है, (४) कर्ण महल, यह लंबा तंग और दो मंजिला है। इसका एक कमरा ४३ फीट सम्बा और २८ फीट चौड़ा है। पासहीं दक्षिण ओर ३६ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा गुम्बजदार दूसरा कमरा (सन १५१६ ई०) है,

फाट लम्बा और इतनाही चौड़ा गुम्बजदार दृसरा कमरा (सन १५१६ ई०) है, (५) जहांगीर महल, और (६) शाहजहां महल, ये दोनों किले के उत्तर अखीर में हैं। ये सादे हैं, इनमें कारीगरी का काम नहीं है।

किले के भीतर हिन्दू मन्दिर—(१) ग्वालिया मन्दिर (२) चतुर्भुज मन्दिर (ये दोनो लिखे गए हैं) (३) जयंती थोड़ा—इसका अलतमस ने सन १२३२ ई० में विनाश किया (४) तेली का मन्दिर—इसको एक धनवान तेली ने सन ई० के १० वें वा ११ वें शतक में बनवाया। इसका छधार सन १८८१-१८८३ ई० में हुआ। यह किले के मध्य में ६० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा और ग्वालियर की सब इमारतों से ऊंचा है। जगमोहन ११ फीट पूर्व निकला है। फाटक ३५ फीट ऊंचा है। इसके ऊपर मध्य में गरुड की मूर्ति है। यह पहले वैध्याव का मन्दिर था, परन्तु सन ई० के १५ वें शतक में शैव का हुआ। यह बहुत हुइ मन्दिर संगतराशी काम से छिपा हुआ है। इन मन्दिरों के अतिरिक्त कम मिस्छ दूसरे ४ मन्दिर हैं। खर्ब्यंदेव मन्दिर, मालदेव मन्दिर, धोंदादेव मन्दिर और महादेव मन्दिर।

किले में जैन मन्दिर—(१) किले के पूर्व दीवार के मध्य के पास सास बहू मन्दिर है। मन्दिर का पेशगाह बचा है, जो १०० फीट लंबा ६३ फीट चौड़ा और ५०० फीट जंचा तीन मंजिला है। पहले यह १०० फीट जंचा होगा। इसका शिखर दूद गया है, दरवाजा उत्तर ओर है। बाहर दीवार में मनुष्य, जानवर, फूल की संगतराश्ची भरी है। मध्य का हाल ३० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा ४ पायों पर है। शेष इमारत की केवल जड़ रह गई है। यह मन्दिर जैनों के छठें संत पद्मनाभ का है। कहा जाता है कि इसको राजा महिपाल ने बनवाया। इसका संस्कार सन १०९२ ई० में हुआ। पेशगाह के भीतर एक लंबा शिलाबेख है, जिस की तारीख सन १०९३ ई० के बराबर होती है। (२) छोटा सासवहू मन्दिर पह २३ फीट लम्बा और इतनाहीं चौड़ा गोलाकार १२ पायों पर चारो ओर से खुला हुआ है। (३) किले के पूर्व दीवार के सामने हस्ती पंवर और सास बहू मन्दिर के बीच में एक छोटी इमारत है। जो सन ११०८ ई० के लगभग बनी।

जैन मूर्तियां और गुफाएं-गिनती में इतनी और इनके समान बड़ी जैन मूर्तियां उत्तरी हिन्दुस्तान के दूसरे किसी स्थान में नहीं हैं। वे किले की दीवारों के कुछही नीचे खड़ी पहाड़ी में चद्दान काट कर बनी हैं। बहुतिरों के समीम खगमता से आदमी जा सकता है जहां जहां विकना और खड़ा चट्टान है पाय: सर्वत्र छोटी गुफाए और ताक हैं परंतु अधिक जाहिस बनावट ५ मधान झुंडों में वांटी जा सकती है। पहला उरवाही झुंड दूसर दिक्षण पिश्वम झुंड, तीसरा पिश्वमोत्तर झुंड, चौथा पूर्वोत्तर झुंड और पांचवां दिक्षण पिश्वम का झुंड; इनमें से पिहले और पांचवें झुंडों की मूर्तितयां गिनती में अधिक और कद में वड़ी सुसाफ़िरों के देखने योग्य हैं। वे संपूर्ण सन १४४१ ई० से १४७४ तक की बनी हुई हैं। कुल मूर्तियां नंगी हैं। सन १५२७ ई० में दिल्ली के वादशाह वावर की आज्ञा से वहुतेरों का अंग भंग कर दिया गया। जैन लोगों ने कई मूर्तियों को स्थरवाया है।

उरवाही झुण्ड—यह उरवाही घाटी के दक्षिण बगल की खड़ी पहाड़ी में है। इसमें २२ प्रधान मूर्तियां हैं जिनमें एक ५७ फीट ऊंची है। इनके पास तोमर राजाओं के समय के ६ शिलालेख हैं, जिनमें संवत १४९७ (सन १४४० ई०) और संवत १५१० (सन १४५३ ई०) लिखे हुए हैं। इस झुंड के अखीर पश्चिम जैनों के २२ वें संत नेमीनाथ की ३० फीट ऊंची मूर्ति है। सीढ़ियों के टूट जाने के कारण अब वहां जाना कठिन है।

दक्षिण-पश्चिम वाला झुण्ड—यह एक तालाव के पास ही नीचे खड़ी पहाड़ी में उरवाही दीवार के ठीक वाहरी ओर है। यहां ५ मधान मूर्तियां हैं, जिनमें नम्बर २ आठ फीट लंबी सोती हुई एक स्त्री और नम्बर ३ जैनों के २४ वें संत महावीर की बालमूर्ति उसके पिता मोता के साथ है।

पिश्रमोत्तर झुण्ड—यह किले के पिश्चिम धोंदा फाटक के थोड़े ही ऊत्तर खड़ी पहाड़ी में है। यहां की मूर्तियां प्रसिद्ध नहीं हैं। आदिनाथ के पास एक छेख में संवत १५२७ (सन १४७० ई०) छिखा है।

पूर्वोत्तर झुण्ड—यह पूर्व दरवाजे के वीच फाटकों के ऊपर खड़ी पहाड़ी में है। यहां संगतराशी का काम कम है और कोई लेख नहीं है। गुफाओं में से एक या दो बड़ी हैं, परंतु अब उनमें जाना वहुत कठिन है।

दक्षिण-पूर्व का झुण्ड—यह लंबी, खड़ी पहाड़ी में गंगोला तालाब के ठीक नीचे हैं। यह झुंड सबसे अधिक वड़ा और सबसे अधिक मिस्स्ट्रिहै। क्योंकि यहां १८ मूर्तियां २० फीट से ३० फीट तक और बहुतेरी ८ फीट से १५ फीट तक ऊंची हैं। ई मील से अधिक पहाड़ी के वगल में यहां की मूर्तियां हैं कई गुफाओं में वैरागी रहते हैं।

ग्वालियर का राज्य-राज्य के प्रधान हिस्से के पूर्वीत्तर और पश्चि-मोत्तर चंबल नदी, जो आगरे और इटावे के अंगरेजी जिलों से और राज-पुताने के घौलपुर, करौली और जयपुर (देशी राज्यों) से इसको अलग करती हैं; पूर्व जालौन, झांसी, ललितपुर और सागर अंगरेजी जिने; दक्षिण भोपाल, टोंक, किलचीपुर और राजगढ़ देशी राज्य; और पश्चिम राजपुताने के झाळावर, टोंक और कोटा राज्य। पान हिस्से के अतिरिक्त ग्वालियर राज्य के दुसरे कई टुकड़े हैं। मध्य भारत के पश्चिमी मालवा एजेंसी के आधीन आगरा, शाहजंहांपुर, उजैन, मंडेसर और नीमच परगने और भोपावर एजेंसी के आधीन अपझेरा, मनावर, किकथन, सागोर, बाग, वीकानेर और पिपलिया । राज्य की सीमा पर चंबल नदी और राज्य में सिंघ नामक नदी, कुआरी, आसन और संख नदी वहती हैं। सन १८८१ में राज्य का क्षेत्रफल खनिया, धाना और मकखदनगढ़ के साथ २९०४६ वर्गमील और जन-संख्या ३११५८५७ थीः जिनमें २७६८३८५ हिन्दु, १६७३२० मुसलमान, १६७५१६ आदि निवासी, १२२३० जैन, २०८ क्रस्तान और १७८ सिक्ख थे। हिन्दृ आदि में ३८०१९३ ब्राह्मण, ४२२२६७ राजपूत थे । ग्वालियर राज्य की मालगुजारी लगभग १२५००००० रूपए हैं। यह राज्य भारतवर्ष के सबसे बड़े देशी राज्यों में से एक है।

संपूर्ण राज्य के बड़े और ऊंचे ३ हिस्से हैं, जिनमें दक्षिणी भाग सबसे ऊंचा है। पूर्वोत्तर के हिस्से साधारण रूप से समतल हैं। ऊंचे देशों में अलग अलग छोटी छोटी पहाड़ियां हैं। कई भागों में थोड़े थोड़े और दूसरों में जगह जगह जंगल हैं। गल्ला, रुई, तेलहन, ऊख, नील प्रधान फिसल हैं। दक्षिणी विभाग पोस्ते के उपज के लिये प्रसिद्ध है। यहांसे पोस्ता और रूई विशेष करके दूसरे देशों में जाती हैं।

ग्वालियर राज्य में उज्जैन (जन-संख्या ३४६९१) मंडेशर (२५७८५),

सुरार छावनी (२४५१८) नीमच छावनी (२१६००) साजापुर (११०४३), बार नगर (१०२६१), नरवर जिसको छोग दमयन्ती के पित राजा नल की राजधानी कहते हैं, भिलसा और चन्देरी प्रसिद्ध बस्ती हैं। ग्वालियर राजधानी से १३५ मील दक्षिण-पश्चिम ग्वालियर राज्य में एक जिले का सदर गूना एक कसवा है, जिसमें कार्तिक पूर्णिमा को एक मेला होता है।

इतिहास—सूर्यंसेन नामक एक कच्छवा प्रधान कोड़ी था, उसने शिकार खेलते समय गोपिंगिरि पहाड़ी के पास, जिसपर अब किला है, ग्वालिया साधु से पानी लेकर पीया, जिससे वह आरोग्य होगया। उसकी कृतज्ञता में उसने उस पहाड़ी पर एक किला बनवाया और उसका नाम ग्वालियर रक्ला। स्र्यंसेन ने सन २७५ ई० में स्र्यं का मंदिर बनवाया और स्र्यंकुंड स्रोदवाया। ग्वालिया साधु ने स्र्यंसेन का नाम सोहन पाल रक्ला तबसे उस कुल के ८३ राजाओं की पाल पदवी रही।

कच्छवा कुल के बाद ७ परिहार राजा हुए, जिन्होंने सन ११२९ से १२३२ ई० तक राज्य किया। सन १२३२ ई० में अलतमस ने सारंगदेव से राज्य छीन लिया। सन १३९८ ई० की तैमूर की चढ़ाई तक दिल्ली के बादशाह इसको राज्य के कैंद्खाने के काम में लाते थे। सन १३७५ में तोमर प्रधान बीरिसंह देव ने स्वाधीन हो ग्वालियर में तोमर बंश कायम किया। सन १४९६ और १४२१ ई० में ग्वालियर के प्रधानों ने दिल्ली के खिजर खां को कर दिया और सन १४२४ ई० में मालवा के हुशंगशाह के ग्वालियर पर महासरा करने पर दिल्ली के मुवारकशाह ने मालवा को स्वतंत्र किया। सन १४२६-१४२७-१४२९ और १४३२ ई० में दिल्ली के बादशाह ने ग्वालियर में जाकर बलात्कार से कर लिया। सन १४६५ ई० में दिल्ली के बादशाह ने ग्वालियर में जाकर बलात्कार से कर लिया। सन १४६५ ई० में जीनपुर के वादशाह हुसेन सार्की ने ग्वालियर पर घरा डाल के कर देने के लिये इसको मजबूर किया। मानसिंह ने वहलेल लोदी और सिकंदर लोदी की हुकूमत मान ली, परन्तु सिकंदर लोदी ने सन १५०५ ई० में जब ग्वालियर के विरुद्ध कूंच किया, तब बहुत नुकसानी सह कर उसको भागना पड़ा; तिसपर भी उसने सन १५०६ ई० में हिम्मत-

गढ़ के किले को ले लिया। परंतु ग्वालियर पर चढ़ाई नहीं की सन। १५१७ में सिकंदर लोदों ने ग्वालियर जीतने के लिये आगरे में बड़ी तैयारी की परंतु वीमारी से वह मरगया। इब्राहिम लोदी ने ३०००० सवार ३००० हाथी और दूसरी सेनाओं को भेजा, जिनके पहुंचने के कई दिन पश्चात् मानसिंह मरगया।

मानसिंह ग्वालियर के तोमर राजाओं में सबसे बड़ा राजा था और परमार्थ के बहुतेरे काम इसने किए थे; जिनमें से एक ग्वालियर के पश्चिमोत्तर मोती झील नामक बड़ा तालाव है। उत्तरी भारत में हिन्दुओं के घराउ कारी-गरी का उत्तम उदाहरण उसका महल है। मानसिंह के देहान्त के उपरान्त उसके पुत्र विक्रमादित्य ने मुसलमानों के महासरे को एक वर्ष तक वरदाश्त किया, परन्तु अंत में परास्त होने पर आगरे को भेजा गया।

बाबर ने रहीमदाद को सेना के साथ ग्वालियर भेजा, जिसको उसने छल से लेलिया। सन १५४२ ई० में शेरशाह ने ग्वालियर के गवर्नर आवुल कासिम से किले को छीन लिया। सन १५४५ में शेरशाह के पुत्र सलीम अपने खजाने को चुनार से ग्वालियर में लाया और सन १५५३ में ग्वालियर में मरगया। विक्रमादित्य के पुत्र राणा शाह ने ग्वालियर छीन लेने का उद्योग किया और ३ दिन तक अकवर की सेना से वड़ा संग्राम किया, परन्तु अंत मे परास्त हो चित्तीर में चलागया।

सन १७६१ ई० में गोहद के जाठ राणा भीमसिंह ने ग्वालियर को लेिल्या। भीमसिंह से महाराष्ट्रों ने लिया। सन १७७९ ई० में अंग्रेज़ी अफ़सर
मेजर पोफम ने ग्वालियर को महाराष्ट्रों से छीन कर गोहद के राणा को लौटा
दिया। सन १७८४ में महादा जी सिंधिया ने ग्वालियर को लेलिया, परन्तु
सन १८०३ में अंगरेजी जनरल हाइट ने फिर इसको छीन लिया। सन १८०५
के खलहनामे के अनुसार ग्वालियर सिंधिया को मिला। सिंधिया ने आगरा
और यसना के उत्तर का देश अंगरेजों को छोड़ दिया और दिल्ली के बादशाह
शाह-आलम को, जो उसके आधीन था, अंगरेजों की रक्षा में कर दिया।

सन १८४३ ई० में झुनुकू जी राव की मृत्यु होने पर राज्य में बळवा हुआ।

अंगरेजी सरकार को सेना भेजनी पड़ी। तारीख २९ दिसंबर को एकही दिन महाराजपुर और पनियार में २ लड़ाइयां हुई। राजद्रोही परास्त हुए। लड़के महाराज को फिर राज्य का अधिकार दिया गया। म्वालियर की सेना घटा कर ५००० सवार, ३००० पैदल, ३२ तोपें करदी गई।

सन १८५७ के वलने के समय महाराज जयाजी राव सिंधिया २३ वर्ष के नव युवक थे, उनके पास भारी सेना थी। महाराज के खुयोग्य दीवान दिन-कर राव ने अपनी सेना को बागी होने से बहुत रोका, परन्तु अंगरेजी अफ-सरों को मारने से नहीं रोक सका। अंगरेजी ७ अफसर, कई स्त्री और कई एक बालक भागकर रेजीडेंसी वा सिंधिया के महल में जा पहुंचे, जो हिफाजत के साथ धौलपुर होकर आगरे को भेजे गए।

कई महीनों तक ग्वालियर में कोई वावेड़ा नहीं था यद्यपि देशों में चारो ओर बलवा फैलगया था। सन १८५८ ई० की तारीख २२ वीं मई को काल्पी में एक मिसद्ध लड़ाई हुई, जिसमें वागी सब अच्छी तरह परास्त हुए। वे उसी रात को ग्वालियर की ओर चले और तारीख ३० मई की रात को मुरार के पड़ोस में पहुंच गए।

तारीख १ जून को महाराज जिया जी ६००० पैदल, १५०० के लगभग सवार, ६०० अंग रक्षक और ८ तोषों के साथ बागियों से लड़ने को निकले। मुरार से २ मील पूर्व मुद्र भेड़ हुई। करीब ७ वर्ज सबेरे बागी आगे बढ़े ज्योंहों वे लोग पहुंचे, महाराज सिंधिया की आठों तोषें खुलों। फैर होने से पहलेही बागी लोग सेना के बगल में समीप आ गए। २००० सवारों ने बहुत तेजी के साथ पहुंच कर आठों तोषें लेलीं। उसी समय सिंधिया की अंग रक्षक सेना छोड़कर सम्पूर्ण पैदल और घोड़ सवार या तो बागियों में मिल गए, या लड़ने से अलग होगए। तब बागियों ने अंगरक्षक सेना पर आक्रमण किया उन्होंने बड़ी बीरता के साथ आत्मरक्षा की, महाराज सिंधिया थोड़े लोगों सहित फिरे और भागकर आगरे पहुंच गए।

तारीख १६ जून को अंगरेजी सेना मुरार से ५ मील पूर्व वहादुरपुर

पहुंची उसने एका एक दुश्मनों पर आक्रमण कर के उनको भगाया। तारीख १६ और १७ जून को अंगरेजी सेना से वागियों की कई लड़ाइयां हुई, जिनमें बागियों की बहुत हानि हुई। अंत में वे लोग तितर वितर हो गए। तारीख १९ जून को अंगरेजी अफसरों ने लक्कर और मुरार को लेलिया। तारीख २० जून को अंगरेजी सेना चुपचाप किले में घुस पड़ी। वहां मुठभेड़ के होने पर सख्त लड़ाई उपरान्त किला अंगरेजों के कब्जे में आया और सन १८८६ ई० तक उन्हों के हाथ में रहा बलवे के पीछे महाराज जया जी राव नए सिर से म्वालियर के राजा बनाए गए।

सिन्धिया राजवंश-सिंधिया जाति का महाराष्ट्र रानो जी ग्वा-छियर राज्य के स्थापन करने वाला है, जो सन इस्बी के अठारहवें शतक के आरंभ में वाला जो पेशवा का पादुका वाहक था। उसका पिता विंध्याचल से दक्षिण एक गांव का मुखिया था। रानो जी तुरतही तरकी कर के पेशवा की अंगरक्षक सेना का सरदार हो गया। मरने के समय ग्वालियर के एक हिस्से की भृमि उसके इस्तगत हुई। रानो जी, की मृत्यु होने पर उसके पुत्र महादा जी सिंधिया राजा हुआ। यह बड़ा लड़ाका था, इसके समय में ग्वालियर राज्य का विस्तार हुआ। इसीने सन १७८४ ई० में न्वालियर के किले को फिर दखल किया। महादा जी के बाद महाराज दौलत राव सिंधिया राजगदी पर बेटे। इन के राज्य के समय वहुत लड़ाइयां हुईं। इन्ही ने सन १८१० ई० में उज्जैन को छोड़ कर खालियर को अपनी राजधानी बनाया । सन १८२७ ई० में दौलत राव पुत्रहीन मर गए बैजा बाई राज्य करने लगी और उसने भुगत राव को पाल कर राजगदी दी। भुगत राव का नाम अनकू जी हुआ, जो सन १८४३ ई० में निः संतान पर गए। उनकी स्त्री तारा वाई ने भगीरथ राव नामक ८ वर्ष के बालक को गोद लिया। अर्थात दत्तक पुत्र बनाया (याज्ञवल्क्य स्पृति-के दूसरे अध्याय में है कि जिस पुत्र को माता और पिता देदेवे, वह दत्तक होता है) यही भगीरथ राव महाराज जया जी राव नाम से विख्यात हुए। सन १८८६ ई० की तारीख २० वीं जून को महाराज जया जी का वेहान्त होगया ।

इनके पुत्र महाराज माधो जी राव १६ वर्ष की अवस्था वाले पर्वमानः वालियर-नरेश हैं। महारज नावालिंग हैं, इससे राज्यशासन कौंसिल द्वारा होता है। अंगरेजी सरकार से ग्वालियर के राजाओं को २१ तोपों की सलामी मिलती है। मध्य भारत—मध्य भारत का क्षेत्रफल ७७८०८ वर्गमील है। जन-संख्या इस साल की मनुष्य-गणना के समय १०३१८८१२ थी। मध्य भारत के राजा और ठाकुर गण गवर्नर जनरल के एजेंट की निगहवानी के आधीन हैं, जो इन्दौर में रहते हैं भोपावर, पश्चिमी मालवा, भोपाल, ग्वालियर, बुन्वेल-खंड और वधेलखंड मातहत एजेंसी हैं, जिनमें ग्वालियर बहुत प्रसिद्ध राज्य है।

मध्य भारत के वेशी राज्यों के शहर और कसबे, जिनकी ज़न-संख्या इस साल की मनुष्य-गणना के समय १०००० से अधिक थी।

नम्बर शहर कसवे राज्य जन-संख्या नम्बर शहर कसबे राज्य जन-संख्या ग्वालियर १०४०८३ ग्वालियर १३ धाड धाड ०६४७१ इन्दौर इन्दौर ९२३२९ १४ टीकमगढ़ उरछा १७६१० 3 १५ सिहोर भोपाल भोपाल भोपाल 35500 १६२३२ उजैन ग्वालियर ३४६९१ १६ देवास देवास १५०६८ इन्दौर १४७०६ १७ पना पन्ना मऊ इश्लाइ १८ महाराजनगर चर्लारी १३०६८ रतलाम २९८२२ रतलाम दतिया दतिया १९ छत्तरपुर छत्तरपुर १२९५७ २७५६६ 0 २० रामषुर इन्दौर मंडेशर ग्वालियर २५७८५ 98636 २१ सिरोज टोंक ग्वालियर २४५१८ 22030 सुरार २२ साजापुर ग्वालियर ११०४३ रीवां रीवां २३६२६ 90 २३ नवगंग छत्तरपुर १०९०२ २१८४४ जावरा 35 जावरा २४ बारनगर ग्वालियर १०२६१ म्वालियर २१६०० नीमच 83

/धौलपुर।

ग्वालियर से ४१ मील (झांसी से १०१ मील उत्तर कुछ पश्चिम) घौलपुर का स्टेशन है। हेतमपुर और घौलपुर स्टेशनों के वीच में घौलपुर सेल गभग ५ मील चम्बल नदी पर रेलवे पुल है, जिसकी लम्बाई २७१४ फीट और गहराई ७५ फीट है। इसके बनवाने में कम्पनी का ३२७१०३५ रूपया खर्च पड़ा है। चम्बल नदी म्वालियर और धौलपुर राज्यों की सीमा है, जो मालवा में विध्याचल से निकल ५७० मील वहने के उपरांत इटावे के पास यमुना में मिलगई है। पुराणों में इसका नाम चर्मण्वती लिखा है।

धौलपुर राजपूताने में चम्बल नदी के पास देशी राज्य की राजधानी एक कसवा है, जिसमें महाराज का खन्दर महल बना है। सन १८८१ की मनुष्य-गणना, के समय धौलपुर में १५८३३ मनुष्य थे, अर्थात १०५८७ हिंदू, ५२१५ मुसलमान और ३१ दूसरे।

धौलपुर से २ मील के अंतर पर । मील लम्बा मुचकुंद तालाव है जिसमें कई छोटे टापू हैं। जिनपर मकान बने हैं। तालाव के किनारों पर ११४ मन्दिर बने हैं, परन्तु उनमें कोई पुराना वा बहुत मिस्छ नहीं है। तालाव में बहुत घडियाल रहते हैं। कार्तिक में अर्व पूर्णिमा नामक मेला १५ दिन रहता है, जिसमें घोड़े मबेसी इत्यांकि वस्तु विकती हैं।

भौलपुर से ४ मील दूर लाल पत्थर का उत्तम पुल है। एक सड़क आगरे से भौलपुर होकर बम्बई गई है।

घोलपुर राज्य—मध्य भारत राजपुताने में घोलपुर एजेंसी के पोलिटिकल खपरिंटेंडेंस के आधीन घोलपुर देशी राज्य है। राज्य के उत्तर आगरा
जिला; दक्षिण चंवल नदी, जो ग्वालियर राज्य से इसको अलग करती है;
पश्चिम करोली और भरतपुर राज्य हैं। राज्य का क्षेत्रफल १२०० वर्गमील इसकी
लग्वाई पूर्वोत्तर से दक्षिण-पश्चिम तक ७२ मील और औसत चौड़ाई १६ मील
है। राज्य से ९ लाख २५ हजार रुपये की आय है। पहाड़ियों का एक सिल्लसिला राज्य में होकर गया है, जो समुद्र के जल से ५६० फीट से १०७४ फीट
तक उत्ता ६० मील तक चला गया है। राज्य की भूमि उपजाऊ है। चंवल नदी
दक्षिण-पश्चिम से पूर्वीत्तर को राज्य में १०० मील बहती है। जो ग्रीष्म ऋतु से
वर्षा ऋतु में ७० फीट अधिक उटती है। बानगंगा जयपुर में बैरत के निकट

से निकली है और घोलपुर की उत्तरी सीमा पर, और आगरे जिले के मध्य में करीब ४० मील दौड़ती है। पार्वती नदी करौली में निकल कर पूर्वोत्तर दिशा में घोलपुर राज्य को लांघती हुई बानगंगा में गिरती है, जो स्त्वी ऋतुओं में स्त्व जाती है। इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय घोलपुर राज्य में २७९८८० मनुष्य थे। सन १८८१ में २४९६५७ मनुष्य थे, अर्थात २२९०५० हिंदू, १८०९७ मुसलमान, २४८३ जैन और २७ क्रस्तान। राज्य में ४ क्रसवे थे। घौ-लपुर (जन-संख्या १५८३३), बारी (जन-संख्या ११५४७-सन १८९१ में १२०९२), राजत्वेरा (जन-संख्या ६२४७) और पुरानी चाजनी (जन-संख्या ५२४६)। राज्य में ब्राह्मण और चमार अधिक हैं।

एक सड़क आगरे से घौलपुर कसवा होकर वम्बे को; दूसरी धौलपुर से राज्य खेरा होकर आगरे को; तीसरी घौलपुर से बारी को; और वारी से एक ओर भरतपुर को और दूसरी ओर करौली को, और चौथी सड़क घौलपुर से कोलारी और वासरी तक; और वहा से करौली तक गई है।

इतिहास—राजा धौलन देव तोनवार ने सन ई० के ११ वें शतक के आरम्भ में धौलपुर को वसाया। सन १५२६ में यह वावर के हाथ में गया। हुमायूं
ने चंवल नदी की ढाह से बचाने के लिये धौलपुर को उत्तर बढ़ाया। अकबर
के समय यहां एक पक्की सराय बनी। सन १६५८ में धौलपुर से ३ मील पूर्व
औरङ्गजेब ने अपने बड़े भाई दारा को परास्त किया। सन १७०७ में घौलपुर
केपास औरङ्गजेब के पुत्र आज़म और मुअ़ज़िम लड़े। आज़म मारागया, मुअ़ज़िम
बहादुर शाह के नाम से दिल्ली का बादशाह हुआ। उस लड़ाई के गड़बड़ में
राजा कल्यानसिंह भद्वरिया ने धौलपुर के राज्य पर अधिकार कर लिया,
जिसका अधिकार सन १७६१ तक विना रोक टोक के रहा। इसके बाद ४६
वर्ष के बीच में कई बार इसके मालिक बदले। सन १७०५ में मिरजा नज़ाफ खां
ने इसको छीन लिया। उसके मरने पर सन १७८२ में घौलपुर सिंधिया के हाथ
में गया। सन १८०३ में महाराष्ट्ररों की लड़ाई टूटने पर यह अंगरेजों के अधिकार में था। उस वर्ष के अंत में संधि के अनुसार यह सिंधिया को दिया गया।

१८०५ में दौलत राव सिंधिया के साथ नई व्यवस्था होने पर अंगरेजों ने फिर इसको लिया, जिन्होंने १८०६ में वर्तमान महाराणा के परदादा राणा कीर्ति-सिंह को सरमधुरा के साथ धौलपुर, बारी और राजाखंड़ा के राज्यों को दिया; और बदले में उनसे गोदह का राज्य लेकर सिंधिया को देदिया। कीर्ति-सिंह ने घौलपुर कसबे के नये भाग को बनवाया। उनके उत्तराधिकारी राणा भगवतिंह ने सन १८५७ के बलवे के समय अंगरेजी गवर्नमंट को राजभिक्त दिखलाई, इसलिए उनको के० सी० एस० आई० की पदबी मिली। सन १८७३ में रामा भगवतिंह की मृत्यु होने पर उनके पोते धौलपुर के बर्तमान नरेश महाराज राणा निहालिंह, जो सन १८६३ में जन्मे थे, राजसिंहांसन पर बैंटे। इनकी माता पटियाले के महाराज की बहिन हैं। धौलपुर का राजवंश जाट हैं। इनकी माता पटियाले के महाराज की बहिन हैं। धौलपुर का राजवंश जाट हैं। इनको अंगरेजी सरकार से १५ तोपों की सलामी किलती है। इनका फौजी बल ६०० सवार, ३६५० पैदल, ३२ मैदान की तोपें और १०० गोलंदाज हैं।

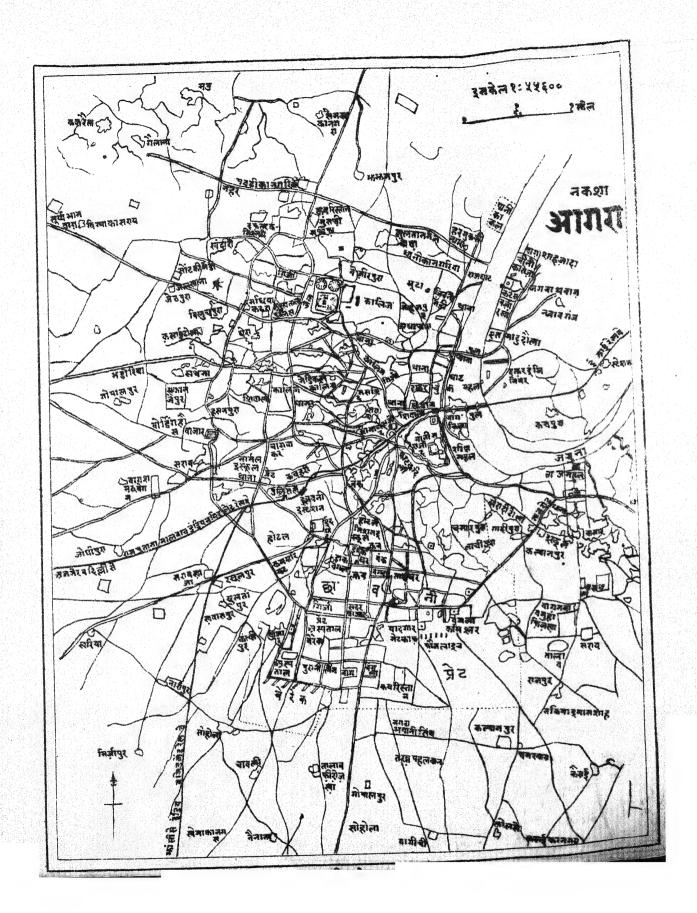
दसवां अध्याय।

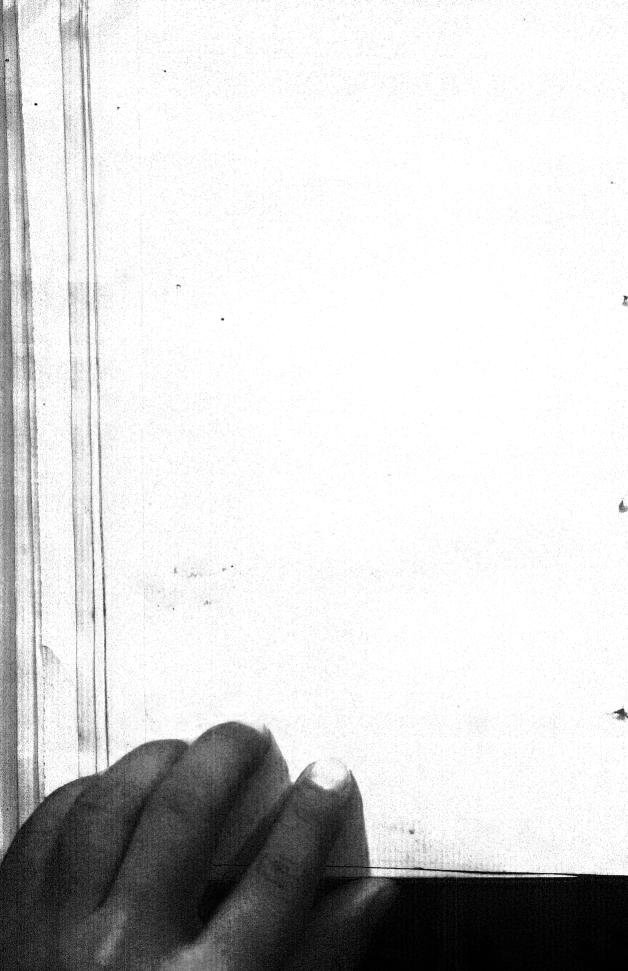
आगरा।

आगरा।

धौलपुर से इह मील (झांसी से १३७ मील उत्तर कुछ पश्चिम) आगरे में किले का रेलबे स्टेशन है। आगरा पश्चिमोत्तर देश में आगरा विभाग और जिले का सदर स्थान; यमुना के दिहने अर्थात पश्चिम (२७ अंश १० कला ६ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ५ कला ४ विकला पूर्व देशान्तर में) एक प्रसिद्ध शहर है।

†इस साल की जन-संख्या के समय आगरे में १६८६६२ मनुष्य थे; अर्थात ९०९२३ पुरुष और ७७७३९ स्त्रियां। जिनमें १११२९५ हिन्दू, ४९३६९ मुस-लमान, ४०१५ क्रस्तान, ३२११ जैन, ४८५ सिक्ख, २५४ बौद्ध और ३३





पारसी थे। जन-संख्या के अनुसार यह भारत में १४ वां और पश्चिमोत्तर देश में नौथा शहर है।

पुराना देशी शहर करीब ११ वर्ग-मील में था, जिसके आधे क्षेत्र-फल में अवतक आदमी बसे हैं। शहर के प्रायः सब मकान पत्थर के हैं। शहर में जलकल सर्वत्र लगी हैं। उत्तम सड़कें बनी हैं। उमदे बाग लगे हैं। एक क्रव घर, एक बहुत बड़ी रेलवे लाइब्रेरी, और कई बड़े होटल बने हैं। लावनी में गोरों की एक रेजीमेंट और दो हिन्दुस्तानी पल्टन रहती हैं। किले के स्टेशन से थोड़े अंतर पर मारवाड़ी घर्मशाला है, जिसमें मारवाड़ियों के अतिरिक्त दूसरा नहीं टिकनेपाता। टिकने के लिये किराए के मकान मिलते हैं।

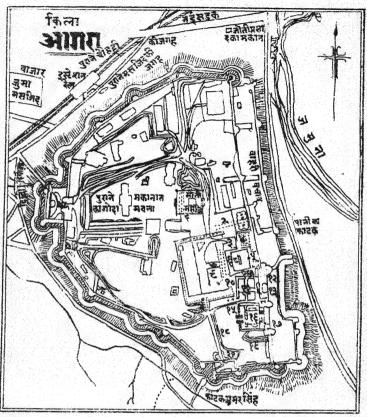
किले से दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम फौजी छावनी और सिविल स्टेशने हैं, जिनके पूर्व ताजमहल स्थित है। किले से पश्चिमोत्तर हिन्दुस्तान के सब से बड़े जेलों में से एक सेंद्रल जेल है जिसकी दस्तकारी उत्तम होती है। किले से उत्तर यम्रना नदी का पक्का घाट है, जहां घाटिया ब्राह्मण रहते हैं। यम्रना में कछुए बहुत हैं। घाट से दक्षिण यम्रना पर रेलवे का दो मंजिला पुल है। नीचे के मंजिल में रेलगाड़ी और ऊपर एक्के, बग्गी और आदमी चलते हैं। पुल के नीचे पत्थर की १७ कोठियां और लोहे के ३ पाये हैं। घाट से आधी मील उत्तर यम्रना पर नावों का पुल है। यम्रना के दोनों किनारों तक ६१ नावों पर तखते विछे हैं।

न आगरे में सोने और चांदी के काम, कारचोपी के काम, पत्थत के काम, जड़ाई के काम सुंदर होते हैं। दरी, नइचे, बालूशाही मिठाई, अत्युत्तम बनती हैं? और रूई, चीनी, तम्बाकू, निमक, इमारत के काम की लकड़ी, गल्ले, तेलहन, नील इत्यादि की तिजारत होती है।

आसफ वाग में प्रति बुध बार को अंगरेजी वाजा वजता है। आगरा कालेज सन १८३५ ई० में खुला जिसके शामिल एक हाई स्कूल है। इसमें करीब ७०० विद्यार्थी और २७ माष्ट्र में। खास कालेज में २५० के लगभग विद्यार्थी और ११ पोफेसर हैं। किला—िकले के देखने के लिये बिगेडियर जनरल से पास लेना होता है, जो अंगरेजी में दरखास्त करने पर सहज में मिल जाता है। यमुना के दिहने किनारे पर किला खड़ा है। शहर यमुना के झुकाव पर है। धारा पूर्व को दौड़ती है। किला यमुना के किनारे पर कोने के पास है, जिसको बादशाह अकवर ने सन १५६६ ई० में बनवाया। इसका घरा १ मिल लम्बा और करीब ७० फीट ऊंचा लाल पत्थर का है। और खाई ३० फीट चौड़ी और ३५ फीट गहरी है। दक्षिण अमर सिंह फाटक है। जोधपुर के राजा जैसिंह का पुत्र अमर सिंह था, जो बड़े साहस और पुरुषार्थ करने के उपरान्त इस जगह मर गया, इसलिये इस फाटक का नाम उसके नाम से पड़ा। पश्चिम दिल्ली फाटक है, जिसके भीतर हथिया दरवाजा या भीतरी का दिल्ली फाटक है, जिसमें दो टावर खड़े हैं।

किछे के भीतर—(१) मोती मसजिद (२) दीवान आम (३) मच्छी भवन (४) दीवान खास (५) समन वुर्ज (६) छनहरा सायवान (७) अंगूरी वाग (८) शीशमहल (९) खास महल और (१०) जहांगीर महल मुगल बादशाहों की उत्तम इमारतें हैं।

√ (१) मोती मसजिद—बारक होकर मोती मसजिद में पहुंचना होता है।
यह मसजिद बादशाह शाहजहां की बनवाई हुई भारतवर्ष में सबसे उत्तम
मसजिदों में से एक हैं। इसका काम सन १०५६ हिजरी (१६४६ ई०) में
आरंभ और सन १०६३ हिजरी (१६५३ ई०) में समाप्त हुआ। इसके बाहर
छाल पत्थर के तक्ते और भीतर उजले, नीले, और भूरे मार्बुल लगे हैं। इसकी
छम्बाई १४२ फीट, और ऊंचाई ५६ फीट है। पश्चिम के अतिरिक्त आंगन के ३
बगलों पर मार्बुल के मेहराबदार ओसारे और तीनों ओर महराबी फाटक हैं,
जिनमें से उत्तर और दक्षिण वाले बन्द रहते हैं। आंगन के मध्य में ३७ फीट
छम्बा और इतनाहीं चौड़ा मार्बुल का होज है। खास मसजिद के ऊपर ३ गुम्बज
और आगे ३ दरवाजे हैं। चेहरे की तमाम लम्बाई में उजले मार्बुल पर नीले
पत्थर के अक्षर जड़कर लख बना है। फरस पर निमाज पढने के लिये जानिमाज



१ उत्तरी बुजे २ फाट्टके पर जानेकी सीदी ५ फाट्टके पर जानेकी सीदी ५ फाट्टके पर जानेक ५ फाट्टके कड़रा ६ जे स्टाम ह ७ दीवान जाने १ मक्दी शहरा ६ किस्ट्रेग कालंबन का तहर ११ अंदर्श यान

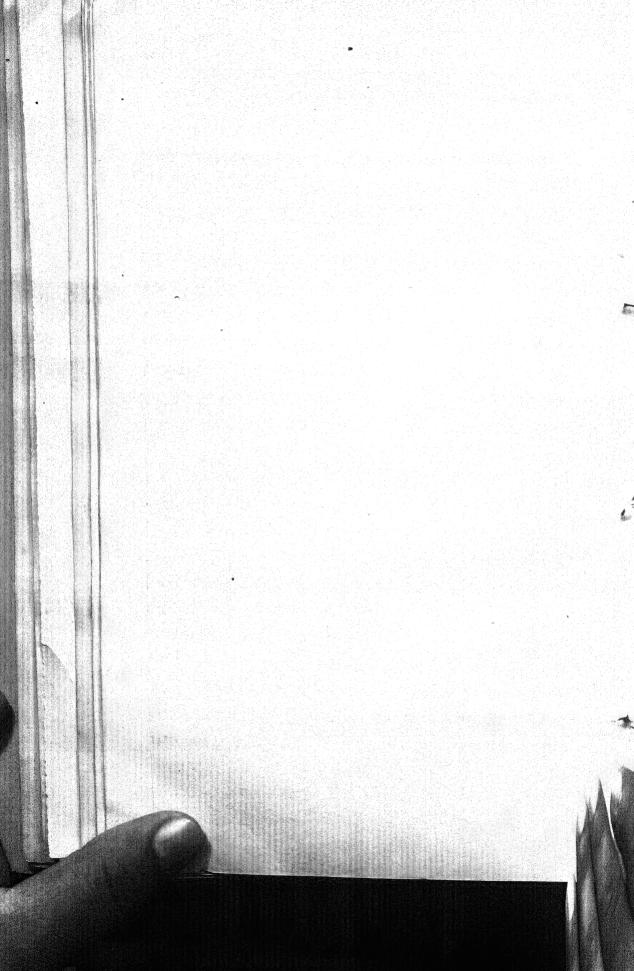
१२ समन वर्ज १२ सात महत्त १४ सीशा महत्त १४ केशा १६ केशा १६ केश्व १ 5

T

市下

IT

न



(क्यारियां) बनी हैं। फाटक के ऊपर और मसजिद की छतपर चढने के लिये तंग सीढ़ियां हैं। वलवे के समय इस मसजिद में अस्पताल का काम होता था।

मोती मसजिद से दिहने फिरने पर हथियार खाना का चौक मिलता है जहां तोपों की कतार हैं। यहां करीव ५ फीट ऊंचा और भीतरी से ४ फीट गहरा और ८ कीट व्यास का जहांगीर का हौज है, जो पूर्व समय में जहांगीर के महल में था।

- (२) दीवान आम—अर्थात साधारण सभासदों की कचहरी, जिसको सन १६८५ ई० में औरंगजेव ने बनवाया। यह उत्तर से दक्षिण को २००, फीट छम्बा और करीव ७० फीट चौड़ा तीन तरफ से खुला हुआ एक उत्तम साय बान है। इसकी छत के नीचे लाल पत्थर के उत्तम दशस्तंभो की तीन पांती हैं। दीवार के पास मध्य में एक मार्बुल की बड़ी चौकी है, जिस पर बादशाह का तख्त रहता था।
- (३) मच्छी भवन—दीवान आम के पीछे सीड़ियों द्वारा ऊपर शाहजहां के महल में जाना होता है, जहां मच्छी भवन है। उत्तर बगल में र फाटक हैं, जिनको वादशाह अकवर वित्तीर के महल से लाया था। पश्चिमोत्तर कोने के पास ३ गुम्बज वाली मार्बुल की नगीना मसजिद है, जिसको शाहजहां ने शाही औरतों के लिये बनवाया था। इसी के पास औरंगजेब ने शाहजहां को नजर बंद करके रक्खा था। नीचे एक छोटे चौक में वाजार था। जहां सौदागर लोग महल की शरीफ क्लियों को अपना माल दिखलाते थे। मच्छी भवन के तीन ओर दो मंजिले दालान हैं। यसना की ओर खुला हुआ दालान और एक काले पत्थर का तख्त हैं और सामने एक उजला बँटक है, जिस पर कचहरी का मसल्वरा बैठता था। तख्त पर लम्बा दरज है। चारों ओर के लेख में जहांगीर का व्याख्यान है, जिसमें सन १०११ हिजरी (१६०३ ई०) लिखी हुई है। दालान के दक्षिण-पश्चिम के कोने के समीप मीनामसजिद है। उत्तर उजड़ा पुजड़ा सब्ज मार्बुल के कमरे का स्थान और इम्माम और दक्षिण दीवान खास है।

(४) दीवान खास—अर्थात स्वकीय सभासदों की कचहरी। बादशाह इस दालान के तख्त पर बैठ कर यमुना के उस पार के उत्तम बाग और इमारतों को देखता था। इसकी नकाशी नफीस है। उजले मार्बुल पर बहुरंग बहु मुल्य पत्थर के टुकड़ों की पच्चीकारी करके फूल और लता बनी हैं, जिसकी मरम्मत हाल में हुई है। यह इमारत सन १०४६ हिजरी (१६३६ ई०) की बनी हुई है।

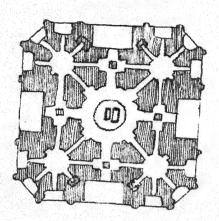
(५) समन बुंज—दीवान खास से समन बुर्जु को सीड़ी गई हैं, जहां खास वादशाह रहता था। मार्बुल के फर्श में खेलने के लिये पत्थर के दुकड़ों से पचीसी बनी है। एक कमरा, एक दालान और एक होज यहां की प्रधान चीज हैं। (६) खुनहंरा सायवान—इसकी छत में सोना के खुलम्मे किए हुए तांबे के पत्तर लगे हैं, इसलिये इसका यह नाम पड़ा है। यह एक सायवान समन बुर्ज से लगा हुआ है, जिसका अगला भाग यमुना की ओर है यहां औरतों के विस्तर के कमरे हैं। खास महल के दक्षिण वगल में एक ऐसीही दुसरी इमारब है।

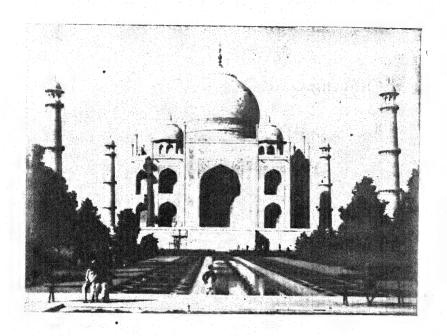
- √(७) अंगूरी बाग—खनहरे सायधान के पीछे २८० फीट का एक उत्तम चौक है, जिसमें फूल और झाड़ बृटे लगे हैं।
- /(८) शीशमहल अंगूरी बाग के पूर्वोत्तर के कोने के समीप हौजों के साथ दो अंधेरे कमरे हैं, जिनके भीतर की छत और दीवारों में असंख्य छोटे दर्पण जड़े हुए हैं। ये सन १८७५ ई० में मरम्मत हुए।
- (९) खास महल—चौक के अंत में पूर्व ओर खास महल नामक एक सन्दर कमरा है, जिसके हिस्से का मुलम्मा और रंग सन १८७५ ई० में मरम्मत किया गया। आगे छोटे हौजों में फव्वारे हैं। दक्षिण ओर आगे बढ़ने पर ३ सन्दर कमरे मिलते हैं, जो शाहजहां के खानगी कमरे थे। दहिने एक घेरे में २५ फीट ऊंचा देवदारू लकड़ी का बना हुआ उत्तम नकाशी किया हुआ सोमनाथ का फाटक है, जिसको महमूद गजनवी सन १०२४ ई० में सोमनाथ पट्टन से ले गया था, और सन १८४२ ई० में अंगरेजी गवर्नमेंट ने गजनी से लाकर यहां रक्खा।



नकशा

ताजमहल





ताजमहल, आगरा

यमुना के समीप मुन्दर आठ पहला एक दालान है, जिसमें शाहजहां का देहांत हुआ।

(१०) जहांगीर महल्ल किले के दक्षिण-पूर्व भाग में, शाहजहां के महल और बंगाली बुर्ज के बीच में लाल पत्थर से बना हुआ जहांगीर महल है, जि-सको जहांगीर ने अकवर के मरने के थोड़ेही पीछे बनवाया। महल के कई हिस्से दो मंजिले हैं। नीचे के दरवाजें के रास्ते से सीधे महल में जाना होता है नीचे के हौजों में पानी पहुंचाने को २१ नल हैं । दरवाजे से एक देवढ़ी होकर १८ फीट लंबे और इतनेही चौड़े गुंबजदार कमरे में जाना होता है। एक रास्ते से ७२ फीट लंबे और इतनेही चौड़े आगन में पहुंचते हैं, जिसके उत्तर ६२ फीट लम्बा और ३७ फीट चौड़ा खुला हुआ बड़ा कमरा है। आंगन के दक्षिण बगल में भी इसीके समान खंभों पर बना हुआ इससे छोटा कमरा है। आंगन के पूर्व के एक बड़े कमरे में होकर जाने से चौकोने स्थान के मध्य में एक मेहराबदार राह मिल्रती है, जो ४ स्तंभो पर है। कई कमरों मेंरंगा हुआ गच का काम है। यमुना की ओर महल्र की दीवार और कोनो के पास अनेक गुम्बजदार टावर हैं। महल्र के नीचे मेहराबदार वहुत कमरे हैं, जिनमें हवा बहुत कम जाती है और सर्प बहुत रहते हैं, इसलिये इसको कमलोग देखते हैं। जहांगीर के महल और शाहजहां के महल के मध्य में स्नान के हौज और नलों का एक सि-लसिला है।

्र ताजमहळ─ताजमहल मकमवरे को ताजबीबी का रौजा भी कहते हैं। यह किले से १ मील से कुछ अधिक पूर्व यमुना के दिहने किनारे पर हैं। एक अच्छी सड़क उसके पास गई है, जो सन १८३८ ई० के अकाल में बनी।

√ताजमहल के समान खूबस्रत कोई दूसरी इमारत नहीं है। यह पूर्व समय की हिन्दुस्तानी कारीगरी की लज्जत और हुनर की उत्तमता या ऊंचे खयाल को दिखलाती है। नफीस संगतराशी इसके संपूर्ण भागों में पाई जाती है। इसमें लाल मणि, व क्रांति, हीरे, जईद पन्ना, मूंगा, फिरोजा, संग खलेमानी, लाजवर्द, एशव, और अकीक आदि हजारों मन जवाहिरात लगे हैं। बादशाह बाहजहां ने सन १०४० हिजरी (१६३० ई०) में अपनी त्रिय स्त्री ममताज महस्र बान् बेगम की कार के लिय इसका काम आगंभ किया । १७ वर्ष से अधिक इसके वनने में लगे। चन्द हिसाबों से ताजमहरू में १८४६५१८६ रूपये और दूसरे हिसाबों से ३१७४८०२६ रूपये खर्च पड़े। बहुत से असबाबों का और बहुत सी मेइनत का दाम नहीं दिया गया। शाहजहां के याददाश्त के अनुसार संगतराश के खर्च ३०००००० रूपय पड़े थे। इस में चांदी के दो किवाड़ थे, जिन को भरतपुर के राजा सूर्य मल ने लेकर गलवा डाला।

्रम्मताज महल प्रसिद्ध नूर जहां के भाई आसफ खां की लड़की थी। नूरजहां का पिता मिर्जा गयास एक परिसयन था। वह जीविका के लिये वेहरान से हिन्दुस्तान में आया, जो पीछे इतमादुदौला के नाम से विख्यात हुआ। सन १६१५ ई० में ममताज महल के साथ शाहजहां का विवाह हुआ, जिससे ७ संतान हुई। ८ वीं संतान होने के समय सन १६२९ ई० में ममताज महल मध्य भारत के बुरहानपुर में मर गई। उसकी लास आगरे में लाकर ताजमहल के स्थान पर गाड़ी गई।

ताजगंज फाटक से ताजमहल के वाहरी के घेरे में, (जिसमें बाग़ के घेरे का निशान अर्थात वड़ा फाटक है) प्रषेश करना होता है। इस घरे के भीतर ८८० फीट लंबी और ४४० फीट चौड़ी भूमि है। बड़ा फाटक लाल पत्थर की आलीशान दो मंजिली इमारत है। इस में उजले मार्बुल में बहुमूल्य काले पत्थर जड़कर कोरान की एवारत बनाई गई है और इसके ऊपर उजले मार्बुल के २६ गुंबज हैं। फाटक के बाहरी एक बगल में उत्तम कारवान सराय और दूसरे बगल में इसी के समान उत्तम इमारत देख पड़ती हैं।

त्व के भीतर बहुत बड़ा उत्तम बाग है, जिसमें ताजमहल आदि इमारतें खड़े हैं और विविध प्रकार के उत्तम द्वस, मोलायम झाड़ बूंटें लगे हैं। बाग की मरम्मत के लिये युरोपियन माली रहता है। बड़े फाटक से उत्तर ताजमहल के समीप तक करीब ३०० गज लंबी पत्थर से बनी हुई ४ सड़कों हैं, जिनके बीच की भूमि पर पत्थेक रंग के फूल लगे हैं और स्थान स्थान पर विगड़े हुए बहुतेरे फव्वारे हैं। मध्य में पानी के होज में लाल रंग की बहुत मछलियां हैं।

ताजमहल ३१२ फीट लंबे और इतने हीं चौड़े और १८ फीट ऊंचे चबूतरे पर खड़ा है, जिसके पासही उत्तर यमुना नदी और दक्षिण वड़ा बाग है। चबूतरे पर मार्बुल का फर्ज है और इसके पत्येक कोने के पास १३३ फीट ऊंचे तीन मंजिले मार्बुल के मिनार हैं, जिनके ऊपर चढ़ने के लिये भीतर सिढ़ियां बनी हैं।

चवृतरे के मध्य में बाहर से १८६ फीट लंबा और इतनाहीं चौड़ा दक्षिण रख का उजला मार्चुल का ताजमहल है, जिसके चारों कोने तेंतीस तेंतीस फीट कटे हैं। इसके प्रधान गुंबज का ज्यास ५८ फीट और ऊंचाई ८० फीट है, जिसके चारों ओर ४ गुंबज और १६ स्तंभ बने हैं। बाहर चारो तरफ की खड़ी दीवारों के मध्य में एक एक बहुत ऊंचे महराव हैं, जिनके दोनों बगलों में और कटे हुए कोनों में एक एक छोटे महराव हैं। सब महरावों में मार्चुल की जालीदार टिह्यां हैं, जिनसे भीतर के कमरों में रोशनी जाती है। महरावों में बहुमूल्य नीले रंग के पत्थर के अरबी अक्षर जड़ कर बड़ी एवारत बनी हैं। ताजमहल बाहर से एकही जान पड़ता है, परन्तु इसके भीतर पहलदार ९ कमरे हैं। अर्थात मध्य में एक प्रधान कमरा और चारो दिशाओं में ४ और चारो कोनों में ४। दक्षिण वाले कमरे से प्रधान कमरे में, तथा दूसरे सातों

वारो कोनों में ४ । दक्षिण वाले कमरे से प्रधान कमरे म, तथा दूसर साता कमरों में जाना होता है । प्रधान कमरे के दरवाजे के ऊपर काले मार्बुल के अरबी अक्षर बैठा कर एवारत बनी हैं। जूते को वाहर छोड़कर भीतर प्रवेश करना होता है।

प्रधान कमरे के मध्य स्थान में उजले मार्च छ की जालीदार टिट्टयों के भीतर ममताज महल और वादशाह शाहजहां की नकली कबर हैं। कबरों पर और उनको घेरने वाली टिट्टयों पर प्रत्येक रंग के वहुमूल्य पत्थर के दुकड़ों की पच्चीकारी करके फूल और लत्तर वनी हैं। जैसे वहुमूल्य पत्थर जड़े गए हैं, वेसेही पत्थरों के मुनासिव जगहों पर के वैठाव भी अच्छी तरह के हैं। टिट्टयों

के भीतर पूर्व ममताज महल की और पश्चिम शाहजहां की क़वरें हैं, जिन पर मूल्यवान पत्थर बैठाकर अरबी की एवारत बनी हैं। ममताज महल की कवर की एवारत में सन १०४० हिजरी (१६३० ई०) और शाहजहां की कवर पर सन १०७६ हिजरी (१६६६ ई०) है। चारो दिशाओं के चारो कमरों में मध्य बाले प्रधान कमरे की तरफ और बाहरी की तरफ उजने मार्चुल की जालीदार टिट्ट्यां हैं, जिनसे मध्य वाले कमरे में रौशमी जाती है।

श्रान कमरे के ठीक नीचे तहलाने में जमीन की सतह पर ममताज महल और शाहजहां की असली कवरें हैं। नीचे वाला कमरा और दोनो कवरें सादी हैं।

्रताजमहल के दिहने और वांप लाल पत्थर की दो इमारत हैं, जो किसी दूसरे स्थान पर होतीं तो उत्तम इमारत ख्याल की जातीं। यहां ३ शिलालेख हैं, जिनमें सन १०४६ हिजरी (१६३६ ई०) सन १०४८ हिजरी (सन १६३८ ई०) और सन १०५७ हिजरी (१६४७ ई०) लिखा है। पश्चिम की इमारत मसजिद है, जिसमें कई रंग के पत्थर के टुकड़े वैठा कर निमाज पढ़ने के लिये ५०० से अधिक जा निमाज (क्यारियां) बनी हैं।

्राप्तमादुद्दीला का मकवरा—यह किले से करीब १ईमील यसना के बाएं किनारे पर इष्ट इंडियन रेलबे के माल स्टेशन के पास है। नाव का पुल लांघ कर बाएं फिरना होता है, जहांसे करीब २०० गज के अंतर पर मकवरे का बाग है।

गयास बेग नामक एक परिसयन, जो नूरजहां और आसफ खां का पिता और वादशाह जहांगीर का ख़जानची था और पीछे एतमादुदौला करके प्र-सिद्ध हुआ, उसीका यह मकवरा है।

मकवरे में हिन्दुस्तानी शिल्पविद्या का बहुत अधिक कि। मकवरा बाहर से करीब ९० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है, जिसके बाहर तमाम और भीतरी हिस्सों में मार्बुल लगा है। उसके स्थान स्थान पर बहुर्रग और बहुमूल्य पत्थर के टुकड़ों के जड़ाय का काम है। मकबरे के चारो कोनों पर अठपक्ले ४ वुर्ज हैं, जिनके चेहरे और वालकानियां मार्बुल की हैं। पर्यंक वुर्ज पर चढ़ने के लिये वारहदरी के पास से १३ सीढ़ियां हैं और मध्य के प्रधान कमरे के चारो ओर जालीदार टिट्टियों के ४ कमरे और चारो कोनों के पास ४ कोर्ठिरयां हैं। वाहर के कमरोंऔर कोर्ठिरयों में प्रधान कमरे के चारो ओर घूमने के द्वार हैं। मध्य के कमरे में तीन ओर पार्बुल की जालीदार टिट्टियां और दक्षिण दरवाजा है। मध्य कमरे में चारो वगलों की मार्बुल की दोर्टियां और दक्षिण दरवाजा है। मध्य कमरे में चारो वगलों की मार्बुल की दोर्टियां और दक्षिण दरवाजा है। मध्य कमरे में चारो वगलों की मार्बुल की दोर्टियां और उसकी स्त्री वड़ी टिट्टियों से पूरा प्रकाश रहता है। इसमें एतमादुद्दील और उसकी स्त्री की पीले मार्बुल से बनी हुई २ कवरें हैं। दीवार बहुमूल्य पत्थर की जड़ाई से संवारी हुई हैं। वगल के कमरों की दीवरों के नीचे के भाग मार्बुल के और उपर के गच के हैं। कोनों की कोर्टियों में से ३ में ३ और एक में दो कवरे हैं, जिनमें एक आसफ खां की, एक एतमादुद्दीला की कन्या को और तीन दूसरों की।

्दक्षिण कमरे की बाहरी दीवारों की मोटाई में दो जगह सोलह सोलह सीहियां दो मंजिले को गई हैं। ऊपर छत के मध्य में मार्बुल की उत्तम बारह-दरी मकान है, जिसकी छत चौड़ी ढालुआं औरियानियों के साथ कार्बुल के तख्तों से बनी है और बगलों में उत्तम मार्बुल की जालीदार टिह्यां हैं। बा-रहदरी के भीतर एवमादुदौला और उसकी स्त्री की नकली दो कबरें हैं।

मकवरे के चरो तरफ वड़ा बाग है, जिसके चारो किनारों पर मकवरे के सामने ४ फाटक है। बड़ा फाटक उजला मार्बुल जड़ा दुआ लाल पत्थर से बना है।

रामबाग-एतमादुद्दौला के मकवरे से उत्तर यमुना के तीर रामबाग है, जो बादशाही समय में देखने योग्य था; पर इस समय साधारण वागों के स-मान है। यहां पृथ्वी के भीतर यमुना-स्नान के लिये एक मार्ग है।

जुमा मसजिद-यह रेलवे स्टेशन के पास ऊंचे चबूतरे पर खड़ी है। दक्षिण और पूर्व बगल में सीढ़ियां हैं। प्रधान मेहराबी के ऊपर शिलालेख है, जिससे ज्ञात होता है कि शाहजहां ने सन १६४४ ई० में अपनी लड़की जहा- नआरा के स्मरणार्थ इसको वनवाया। इसके ३ गुम्बज लाल पत्थर के है, जिन मैं मार्बुल की पट्टी लगी हैं। मसजिद के वड़े फाटक को अंगरेजों ने बलवे के समय गिरादिया।

सिकंदरा—आगरे की छावनी से ५ ई मील पिश्रमोत्तर सिकंरे के एक बड़े बाग में दिल्ली के वादशाह अकवर का चौ मंजिला मकवरा है। सिकंदर लोदी के नाम से, जिसने सन १४८९ ई० से १५१७ तक राज्य किया था, इस स्थान का नाम सिकंदरा हुआ।

्रवाग का वड़ा फाटक उजले मार्चुल जड़े हुए लाल पत्थर का है, जिसकी महरावी में नीले मार्चुल के अरवी अक्षर वैटा कर एवारत बनी है। फाटक के ऊपर चारो कोनों पर दो मंजिले ४ वुर्ज हैं। १०० वर्ष से सधिक हुए कि वुर्जों के ऊपरी भाग टूट गए।

्रपत्थर की चौड़ो सड़क फाटक से मकवरे तक गई है। करीव ५०० फीट छम्बे और इतनेहीं चौड़े चवूतरे के मध्य में मकवरा खड़ा है, जिसकी ३ मं-जिलें लाल पत्थर की और ऊपर की चौथी उजले मार्चुल की हैं। अकवर के राज्य में १४ खबे थे, इसके स्मरणार्थ मकवरे के ऊपर १४ गुम्बज बने हैं।

बीचे की मंजिल के चारो ओर मेहराबदार दालान हैं। दक्षिण दरवाजा है। वेबढ़ी की महराबी छत में छनहरा और नीला रंग रंगा हुआ है, जिसका एक हिस्सा मरम्मत किया गया है। वहां का अधिकारी मुसलमान देवड़ी से महराबदार कमरे में मसाल के साथ मुझको ले गया, जहां अंधेरे में अकबर की कबर है। मीतर की दावारें अब मैली हो गई हैं। बाएं छक उन्निसा की कबर पर छन्दर अरबी लेख है। दूसरी कबर दिल्ली के पिछले बादशाह बहा- दुर शाह के चचा की है। बाद उसके औरङ्गजेब की लड़की जेब उन्निसा की कबर है और दरवाजे के पूर्व आराम वानू की कबर है।

्र उस स्थान के ठीक ऊपर, जहां नीचे अंधेरे कमरे में अकबर गाड़े गए थे चौथी मंजिल में चमकीले उजले माबुंल से बनी हुई उनकी नकली कबर है। कबर पर कई एक रंग के यहुमूल्य पत्थरों के टुकड़े जड़ कर फूल बूटे आदि वने हैं। कबर के पास ४ फीट ऊंचा उजले मार्बुल का खन्दर स्तंभ है, जो एक समय सोने से छिपा हुआ था और उसपर कोहनूर हीरा जड़ा था। कबर के चारो ओर मेहरावी इमारत है, जिसके बाहर की दीवारों की मार्बुल की टिट्टियों में उत्तम जालीदार कोम है।

्वादशाह अकवर सन १६०५ ई० में आगरे में मरा और यहां गाड़ा गया।
केळाशा—शहर से ६ मील यमुना के तट पर कैलाश नामक मनोहर स्थान वना हुआ है। वहां शिवमन्दिर, वड़े दालान, घाट, वुर्ज, वाग इत्यादि बने है। स्थान के चारो ओर झाड़ी, जंगल और नाले उपस्थित हैं। मार्ग में रईसों के सन्दर वाग हैं। श्रावण मास के अन्त में जो सोमवार पड़ता है, उससे पहिले के सोमवार के दिन कैलाश का मेला होता है। दूर दूर के मनुष्य मेले की शोभा देखने आते हैं और शिव का दर्शन करते हैं।

फतहपुर सिकरी—आगरे से २२ मील, अछनेरा रेलवे स्टेशन से १२ मील और भरतपुर से ११ मील फतहपुर सिकरी है, जिसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणया के समय ६२४३ मनुष्य थे। आगरे से सायेदार अच्छी सड़क गई है।

नीची पहाड़ियों के सिल्लिसले पर फतहपुर सिकरी है। अकबर ने गुजरात के फतह के स्मरण के निमित्त सिकरी बस्ती के नाम के पहिले फतहपुर जोड़ दिया। यहां का काम अकबर के राज्य के समय आरंभ और समाप्त हुआ।

आगरा नामक फाटक से प्रवेश करने पर एक पुरानी इमारंत की निशानी देख पड़ती है, जिसमें सौदागर रहते थे। सड़क होकर आगे जाने पर नौवत खाना मिळता है, जिस पर अकवर के आने पर वाजा बजता था। आगे वाएं तरफ खजाने की इमारत की निशानी देख पड़ती है, जिसके सामने चौकोनी एक बड़ी इमारत है, जो टकसाल घर थी। इसके ठीक आगे दीवान आम है।

्डत्तर से दक्षिण करीब ३६६ फीट लंबा और पूर्व से पश्चिम १८१ फीट चौड़ा मेहराव दार ओसारों से घेरा हुआ दीवान आम है, जिसके आगे चौड़ा बरंडा है। बादशाह अकवर प्रधान कमरे में बैठ कर न्याय करते थे। सड़क आंगन से होकर दफ्तर खाने को गई है, जो अब डांक बंगले के काम में आता है। पीछे से सीढ़ियां छत को गई हैं, जहां से फतहपुर सिकरी का उत्तम हश्य वेखने में आता है। आगे उत्तर रुख का अकबर का ख्वावगाह (शयन का कमरा) हैं। नीचे एक कमरा है। पिश्रम एक दरवाजा है, जिससे दफ्तर खाने में जाना होता था और इससे अफ़सर लोग और दूसरे लोग ख्वावगाह में प्रवेश कर सकते थे। उत्तर का स्थान ख्वावगहल बनता था।

आंगन के पूर्वोत्तर कोने के पास तुर्की रानी का मकान है, जिसको बहुत लोग-सबसे दिल चस्प बतलाते हैं। यह अब १५ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है। इसके प्रत्येक मुख्वा इंच जगहों पर नकाशी हुई है। बरंडे के सतून और छत बहुत उत्तम हैं।

्पश्चिम लड़िकयों का स्कूल सादी इमारत है। आगे एक खुला हुआ चौक है, जिसके पत्थर के तख्ते पर अकवर की पचीसी है, जिसके पासही चौक के मध्य में अकवर का पत्थर का बैठक है।

चौक के समीप ही उत्तर दीवान खास है, जो वाहरी तरफ से दो मंजिला जान पड़ता है, पर भीतर एक मंजिला है। इसमें वादशाह के बैठने का उत्तम स्थान बना है। पूर्व और पश्चिम के मकानों की छतों पर चढ़ने के लिये सीढियां हैं। कई एक फीट पश्चिम है कमरे हैं, जिनमें ट्टीदार खिड़िकियां बनी हैं। इसके बाद पांच मंजिल वाला पंचमहला मिलता है, जिसमें स्तंभो का कत्तार ऊपर एक दूसरे से छोटा होता गया है प्रथम पांचो मंजिलों के बगलों में पत्थर की टिट्टियां थीं; जो हाल की मरम्मत के समय हटा कर उनकी जगह पत्थर के कंगूरे बनाए गए हैं। सबसे नीचे की मंजिल में ५६ स्तंभ लगे हैं।

पंचमहले के दक्षिण थोड़ा पश्चिम अकबर की एक स्त्री मिरियम का गृह है, जो एक समय भीतर और वाहर सर्वत्र रंगा हुआ था। इसकी दीवारों में बहुत जगह सोने का मुलम्मा किया हुआ था, इसलिये इसको छनहरा मकान कहते थे। पश्चिमोत्तर मिरियम का बाग और पश्चिमोत्तर के कोने के समीप उसका

स्तान-गृह था। पश्चिम बगल नगीना वा जनाना मसजिद है। वाग के दक्षिण अंत में एक छोटा तालाव हैं।

एक सड़क पश्चिमोत्तर अर्थात फतहपुर सिकरी के उत्तर हाथी पोछ (हाथी फाटक) कों गई है, जहां जीवित हाथी के समान टूटे हुए २ वड़े हाथी हैं । वांए संगीन वुर्ज है। नीचे पत्थर की सड़क वांए कारवान सराय को गई है, जिसका चौक २७२ फीट छंवा और २४६ फीट चौड़ा है। इसके चारो तरफ के मकानों में सौदागर टिकते थे। पहिछे दक्षिण और पूर्व वगलों के मकान तीन मंजिछे थे। उत्तर अखीर के पास सराय के बाद गोलाकार ७० फीट झंचा हिरन मीनार खड़ा है, जिसके ऊपर की लालटेन के मकाश से वादशाह हरिन आदि शिकार को मारते थे।

हाथी पोल की ओर लौटने के समय सड़क के बांए पत्थर का एक उत्तम कुंआ मिलता है, जिसके चारो ओर सीढियां और कमरे हैं।

मिरियम के बाग के दक्षिण-पश्चिम बीरवल का महल है, । यह फतहपुर सिकरी में सबसे उत्तम रहने की जगह है । इसको राजा बीरवल ने अपनी पुत्री के लिये बनवाया, जो ऊंचे चवृतरे पर लाल पत्थर का दो मंजिला बना है। इसमें पंदरह फीट लंबे और इतनेही चौड़े ४ कमरे हैं। दरवाजे के दो पेशगाह जमीन की सतह पर हैं। नीचे के महल में भीतरी और बाहरी नकाशी का बहुत काम है। राजा बीरवल अपनी बुद्धि और विद्धा के लिये प्रसिद्ध था। उसने अकबर के नवीन मत को ग्रहण किया। वह उसकां प्रिय मुसाहिब था, जो सन १५८६ ई० में पेशावर के पूर्वोत्तर अपनी सेना के सहित मारा गया। बीरवल के महल के दक्षिण १०२ घोड़े और उतनेहीं ऊंट रहने योग्य अस्तबल है।

्र अस्तवलों से लगा हुआ दफ्तरखाने के आगे पूर्वमुख का २३२ फीट लम्बा और २१५ फीट चौड़ा जोधबाई का महल है। पूर्व के अतिरिक्त आंगन के तीनों बगलों में सायवानों के साथ कमरे हैं। उत्तर और दक्षिण के कमरे दो मंजिले हैं। कोनों के पास कमरों के ऊपर गुम्बज हैं। मिरियम बाग की ओर मुख किए हुए एक छोटा कमरा है, जिसकी संपूर्ण दीवारों में पत्थर के सुंदर जालीदार काम हैं।

दफ्तर खाने के दक्षिण-पश्चिम दरगाह और मसजिद हैं। पूर्व फाटक-बाद-श्वाही फाटक कड़लाता है, जिससे चौक में जाना होता है। दिहने उजले मार्चुल की जालीदार टिट्टयों से घेरा हुआ शेख सलीम चिस्ती की दरगाह है। दरवाजे में पीतल का काम है। भीतरी इमारत में केवल ४ फीट मार्चुल लगा है। कवर की चांदनी में सीप जड़ी हुई हैं। कवर पर चिस्ती के मरने की और दरगाह की तय्यारी की तारीख है, जो सन १५८० ई० के मुताबिक होती है। हिन्दू और मुसलमान दोनों की स्वियां लड़का पाने के लिये दरगाह में आकर अरज करती हैं। चौक के उत्तर इसलाम खां का गुम्बजदार मकवरा है। यह चिस्ती का पोता और वंगाल का गवर्नर था।

पश्चिम करीत्र ७० फीट उर्ज्यी खास मसजिद हैं। कहा जाता है कि यह मक्के की मसजिद की नकल की बनी है। इसके भीतर उर्ज्ये स्तंभों से घेरे हुए ३ मोरब्वे कमरे हैं। उत्तर और दक्षिण अखीर के पास जनाने कमरे हैं।

्यीक के दक्षिण १३० फीट ऊंचा, जो नीचे से देखने पर बहुत सुंदर है, विजय फाटक वा बुलंद दरवाजा हैं। इसके नीचे से सिरे तक बाहर सीढियां हैं। मेहरावी के शिलालेख में लिखा है कि शाहनशाह ईंश्वर का साया जलालुदीन महम्मद अकवर दक्षिण की बादशाहत और खान देश को जीत कर अपने राज्य के ४६ वें वर्ष (सन १६०१ ई०) फतहपुर सिकरी में आया और यहां से आगरा गया।

सीढ़ी के आगे कई एक स्नान घर हैं। दरगाह के उत्तर और मसजिद के बाहर अकबर के पिय आवुल फजल और फैजी दोनों भाइयों के मकान हैं। अब इनमें लड़कों के स्कूल हैं। एक में हिंदी और उर्दू, दुसरे में अंगरेज़ी और तीसरे में फारसी और अरबी विद्या पढ़ाई जाती हैं।

्रे बुलंद दरवाजे के पश्चिम एक वड़ा कूप है, जिसमें लड़के और सयाने ३० फीट से ८० फीट तक ऊंची दीवारों से कूदते हैं। तारीख २० रमजान को,

जो चिस्ती के मरने की तिथि है, एक मेला आरंभ होता है और ८ दिन तक रहता है।

्दफ्तर खाने के कुछ पूर्वोत्तर हकीम का मकान और एक बड़ा हम्माम हैं। हम्माम की दीवारों और भीतर की छत में गच का काम है।

्रजान पड़ता है कि पानी की कमी के बायस फतहपुर सिकरी उजड़ गई । सन १८५० ई० तक यहां एक तहसीछी थी । सन १८५७ ई० के बछवे के समय जुलाई और अकतूबर के बीच में नीमच और नसीरावाद के बागी यहां दो बार रहे थे।

अगरा जिला-पश्चिमोत्तर वेश के आगरा डिवीजन में.६ जिले हैं,-मैनपुरी, इंटावा, एटा, फर्रुखावाद, मथुरा और आगरा।

आगरा जिले के उत्तर मथुरा और एटा जिले; पूर्व मैनपुरी और इंटावा जिले; दक्षिण धोलपुर और ग्वालियर राज्य; और पश्चिम भरतपुर राज्य हैं। जिले का क्षेत्र फल १८५० वर्गमील हैं।

जिले के करीब मध्य में यमुना के पश्चिम किनारे पर आगरा शहर है। जिले के दक्षिण-पश्चिम की खानों से बहुत पत्यर निकलता है। आगरे में उस्सका असवाव बनाकर यमुना द्वारा दूसरे देशों में भेजा जाता है। आगरे से सुन्दर सड़कें मथुरा, अलीगढ़, कानपुर, इंटावा; ग्वालियर, करौली, फतहपुर-सिकरी और भरतपुर को गई हैं। आगरे जिले में एक नहर है, जिसमें नाव चलती है।

ग्रामीन लोग मही के मकानों में रहते हैं। जिले के दक्षिण-पश्चिम भाग में पत्थर की खानों के पास साधारण तरह से पत्थर के मकान हैं। ग़रीब लोग भी नादुरूस्त पत्थर के झोंपड़ों में रहते हैं।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय आगरा जिले में ९९८३२८ **मनुष्य थे** अर्थात ५३७१९२ पुरुष और ४६११३६ स्त्रियां । निवासी हिंदू हैं । मनुष्य-संख्या में दसवां भाग सुसलमान और १० हजार से अधिक जैन हैं। सब जातियों से चमार अधिक हैं। इनके पश्चात ब्राह्मण, राजपूत; तब जाट, बनियां, काछी इत्यादि जातियों के कम से नंबर हैं। आगरा जिले में ४ कसवे हैं। आगरा शहर (जन-संख्या सन १८९१ में १६८६६२) फिरोजाबाद (१५२७८), फतहपुर सिकरी और पिनाहट।

बटेश्वर—आगरा शहर से ३५ मील दक्षिण-पूर्व आगरा जिले में यमुना के दिहने किनारे पर कार्तिक पूर्णिमा को वटेश्वर का प्रसिद्ध मेलां होता है और दो सप्ताह के लगभग रहता है। भदावर के राजा वदनसिंह ने वहां १०० से अधिक शिवमंदिर बनवाए, तभी से वहां मेला लगता है।

कार्तिक पूर्णिमा को यमुना में स्नान और द्वितीया को शिव का शृंगार होता है। मेळे में लगभग १५०००० मनुष्य, ४००० से ७००० तक घोड़े, लग-भग ३००० ऊंट और १०००० दुसरे चौपाए आते हैं। घोड़े खासकर पंजाब और अपर दोआवे से लाए जाते हैं।

इतिहास—छोदी खांदान हिंदुस्तान के मुसलमानों का पहला खांदान है। उस खांदान के लोग कभी कभी आगरे में रहते थे। उससे पहले आगरा वियना का एक जिला था। सिकंदर विन वहलोल लोदी सन १५१७ ई० में आगरे में मरा, परंतु दिल्ली में दफन किया गया। सिकंदर लोदी ने सिकंदरा के पास बारहदरी महल बनवाया, इसी से उस शहरतली का नाम सिकंदरा पड़ा। लोदी खांदान के टीले पर नए मकान बने हैं। लोग कहते हैं कि लो-दियों के बादलगढ़ नामक महल की वह जगह है।

यम्रना के पूर्व किनारे ताजमहल के सामने वावर के वाग का महल था; उसके पास एक मसजिद में लेख है, जिससे जान पड़ता है कि बावर के छ-ड़के हुमायूँ ने सन १५३० ई० में उसको बनवाया।

बारक के पास कमाल खां के स्थान के पीछे २२० फीट घेरे का १६ पहल बाला एक कुंआ है, जिसमें से एकही समय में ५२ आदमी पानी खींच स-कते हैं। ऐसे कामों से जान पड़ता है कि वाबर और हुमायूं के समय आगरा गवर्नमेंट का सदर स्थान था। यद्यपि हुमायूं दुसरी वार हिंदुस्तान में लौट ने के पश्चात दिल्ली मे रहता था, और उसी जगह मरा; शायद आगरा शहर तब यमुना के किनारे पर था।

अकवर ने आगरे का नाम अकवरावाद रक्खा था। उसने सन १५६६ ई० में आगरे का किला वनवाया और सन १५६८ ई० में किए सिकरी से आगरे में आया। किले की दीवारें और पानी के फाटक के दक्षिण का मेगजीन, जो एक समय अकवर का दवीर गृह था, केवल यही चीजें अकवर की बनवाई हुई हैं। अकवर सन १६०५ में आगरे में मरा। जहांगीर ने सन १६१८ में आगरे को परित्याग किया और फिर नहीं लौटा। शाह जहां सन १६३२ से १६३० तक आगरे में रहा। उसने मोती मसजिद, जुमा मसजिद और ताज महल को आगरे में बनवाया। औरंगजेव ने सन १६५८ ई० में शाहजहां को गदी से उतार दिया और उसको ७ वर्ष राजकैदीं के समान आगरे में रक्खा। वह सर्वदा के लिये गवर्नमेंट के सदर को दिल्ली में लेगया।

भरतपुर के राजा स्व्यंपल ने सन १७६० ई० में जाठों की सेना के साथ आकर आगरे को लेलिया और इसकी वड़ी नुकसानी की । सन १७७० में महाराष्ट्रों ने आगरे को लिया, परन्तु सन १७७४ में निजाफ़ खां ने उनक्रोह निकाल दिया। सन १७८४ में जब महम्मद बेग आगरे का गवनर था, तब ग्वालियर के महादाजी सिंधिया ने आगरे पर कब्जा कर लिया।

सन १८०३ ई० की तारीख १७ वीं अकतूबर को अंगरेजों ने महाराष्ट्ररों से आगरे को लेलिया। सन १८३५ ई० में पश्चिमोत्तर देश की गवर्नमेंट का सदर मुकाम इलाहाबाद से आगरे में आया, जो सन १८५८ की जनवरी तक रहा।

सन १८५७ ई० की ३० वीं पई को दो कम्पनी, जो आगरे से खजाना लाने के लिये मथुरा भेजी गई थों, बागी होकर, दिल्ली को चलीं। दूसरे दिन उनके साथियों के हथियार लेलिए गए। उनमें से बहुतेरे अपने घर चले गए। तारीख चौथी को कोटा कंटिंजेंट बागी हुई और नीमच के बागियों में मिलने के लिये गई। आगरा छावनी से २ मील उनका खीमा था। ता० ५ वीं कुलाई को अगरेजी अफसर ने ८१६ सिपाहियों के साथ उन पर आक्रमण किया। लड़ाई आरंभ हुई, संध्या के ४ वजे युद्ध का सरंजाम चुक जाने से अगरेजी सेना पीछे की। बागियों ने उनका पीछा किया। २० अंगरेज मारे गए। छावनी जला कि दफतर नाश किया गया। वहां ६००० पुरुष स्त्री और बालक थे; जिनमें केवल १५०० हिन्दू और मुसलमान किले में बंद थे, उनमें यूरोप के कई मदेशों के कई आदमी शामिल थे। किला अच्छी तरह से हिफाजत में रक्खा गया। अगरेजी सेना ता० २० अगस्त को आगरे से चली और २४ को अलीगढ़ में बागियों को परास्त कर उस जगह को ले लिया। तारीख ९ सितम्बर को पश्चिमोत्तर देश के लेफिनेंट गवर्नर मिष्टर कालविन मर गए। बागी लोग दिली को चले, परन्तु सितम्बर में दिली के टूटने पर बागियों ने मध्य भारत के बागियों के साथ तारीख ६ वीं अकतूबर को आगरे के विरुद्ध गमन किया, परन्तु उसी समय एक अंगरेजी पल्टन आगरे में पहुंच गई, जिसको बागी लोग नहीं जानते थे। उन लोगों ने आगरे पर आक्रमण किया, लेकिन भगाए गए।

रेळवे—रेळवे ळाइन आगरे से ३ ओर गई है। किले के स्टेशन से प्रसिद्ध स्टेशनों के फासिले नीचे हैं—

१५१ जयपुर ।

१८६ फलेरा जंक्शन।

(१) पश्चिम 'बंबे, बड़ोदा और सेन्ट्रल इंडियन रेलवे 'का राजपुताना मालवा ब्रेंच; जिसके तीसरे दर्जें का महस्रल प्रति मील २ पाई है। मील प्रसिद्ध स्टेशन— २ आगरा छावनी। १७ अछनेरा जंक्शन। ३४ भरतपुर। ७५ हिन्डजन रोड।

अछनेरा से उत्तर थोड़ा पश्रिम २३ मील मथुरा छावनी।
मथुरा छावनी स्टेशन से
पूर्व कुछ उत्तर २९ मील
हाथरस जंक्शन, और उत्तर
वृन्दाबन शाखा लाइन पर २
मील मथुरा शहर का स्टेशन
और ८ मील वृन्दाबन है।

(२) पूर्व 'ईष्ट इंडियन गेलवे,' जिसके तीसरे दर्जे का महस्रल की मील २ ई पाई हैं।

मील मिस्छ स्टेशन।

१६ तुण्डला जंक्शन।

तुण्डला से पूर्व-दक्षिण।

मील पिस्छ स्टेशन।

१० फिरोजाबाद।

१७ इटावा।

१४३ कानपुर जंक्शन।

१९० फतहपुर।

२६३ इलाहाबाद।

२६७ नयनी जंक्शन।

तुन्डला से पश्चिमोत्तर।

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

३० हाथरस जंक्शन।

४८ अलीगढ़ जंक्शन।

४८ वुर्जा।

८४ वुर्जन्दशहर रोड।

१२४ गाजियाबाद जंक्शन।

१२७ दिल्ली जंक्शन।

१३० दिल्ली जंक्शन।

भिडलेंड रेलंबे'

मील-प्रसिद्धस्टेशन।

३६ घौलपुर।

१२२ दितया।

१३० झांसी जंक्शन।

ग्यारहवां अध्याय।

मथुरा, वृन्दाबन, नन्दगांव, बरसाना, गोवर्द्धन, और गोकुल ।

/मथुरा।

आगरे से १७ मील पश्चिम, अछनेरा जंक्शन स्टेशन है, जहांसे सीधे रास्ते से १० मील और केरावली और आगरा सड़क होकर १२ मील फतहपुर सिकरी है। अछनेरा से २३ मील उत्तर, कुछ पूर्व, मथुरा में छावनी का स्टेशन है। मथुरा आगरे से रेलवे सड़क से ४० मील है, परन्तु सीधे रास्ते से केवल ३० मील है। मयुरा पश्चिमोत्तर प्रवेश के आगरा विभाग में जिले का सदर स्थान यसना के दहिने किनारे पर अर्थात पश्चिम एक छोटा शहर और प्रसिद्ध तीर्थ है।शहर १३ मोल फेला है। यह २७ अंश ३० कला १३ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अश ४३ कला ४५ विकला पूर्व वेशान्तर में स्थित है।

इस साल को जन-संख्या के समय मथुरा में ६११९५ मनुष्य थे; अर्थात ३३२८४ पुरुष और २७९११ स्त्रियां। जिनमें ४८७९५ हिन्दू, १०६२२ मुसल-मान, ८०६ क्रस्तान, ७३७ सिक्ख, २३४ जैन, ओर १ पारसा थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारत वर्ष में ६० वां और पश्चिमोत्तर देश में १४ वां शहर है।

शहर में प्रवेश करने के समय हार्डिंग फाटक मिलता है। शहर में प्रधान सड़कें पत्थर से पाटी हुई हैं। बहुतेरे मंदिर और मकान पत्थर से बने हैं। कई एक मन्दिरों में पत्थरों पर नकाशी का उत्तम काम है। प्रायः सब मकान पक्के और मुझेरेदार हैं।

+ मथुरा में वड़ी वड़ी दुकानें, छापेखाने, कई स्कूल, और सफाखाने हैं। यहांके पेड़े प्रसिद्ध हैं, और ख़ब्बादु होते हैं।

शहर के बाद १: मील दक्षिण जललाना और कलक्टर का आफिस है। जिल्लान से थोड़ीही दुर पवलिक गार्डन है।

े मथुरा के पंडे चीव हैं, जो वड़े वर्वर और चतुर होते हैं। इनका मुख्य काम दंड कुश्ती करना, भांग पीना और अच्छे पदार्थ भोजन करना है। ये छोग भोजन के खल के समान दूसरा खल नहीं समझते। यहां की स्त्रियां पर्वे में नहीं रहतों। वे घांघरा और चोली पहिन कर ऊपर से चादर ओड़ती हैं।

मथुरा का प्रधान मेला कार्तिक शुक्त द्वितीया को होता है। कार्तिक शुक्त अष्टमी को गोचारण का एक छोटा मेला, दशमी को कंसवध की लीला, और अक्षय नवमी तथा प्रबोधिनी एकादशी को परिक्रमा होती है।

ं अन्नकूट-मथुरा का अन्नकूट मिस्द है। कार्तिक छदी पडिवा के सबेरे मथुरा के मंदिरों में अन्नकूट के दर्शन की वड़ी भीड़ होती है। मंदिरों में नाना मकार की मिठाई, पकवान, कची रसोई, व्यंजन, चटनी, आदि भोजन की सामग्री जगमोहन में पृथक पृथक पात्रों में रख कर भगवान को भोग लगाई जाती हैं। पश्चात यात्रीगण उसकी झांकी करते हैं और वहां वैसा रेजकी चढाते हैं। गोविंदवेव जी, विहारी जी, गोपीनाथ, मथुरानाथ, ब्रजगोविंद, और राधाकृष्ण के मंदिरों में करीब १०० पात्रों में; गीवर्द्धननाथ के मंदिर में २०० के लगभग पात्रों में और द्वारकाधीश के मंदिर में ३०० से अधिक पात्रों में भोग की सामग्री रहती है। जितने पात्र तितने प्रकार की वस्तु नहीं होती। एक वस्तु दो दो चार चार पात्रों में भी रक्खी जाती हैं।

शहर के भीतर के देवमंदिर और स्थान (१) यमुनाजी— विश्रामघाट पर एक छोटे मंदिर में यमुना जी की मूर्ति है, जिसके बाए यम-राज हैं।

- (२) गतश्रम नारायण—एक मंदिर में कृष्ण के वाएं राधा और दिहने कुब्जा की मूर्ति हैं। मंदिर के पास फूलों की क्यारियां बनी हैं। वर्तमान मंदिर सन १८०० ई० में बना।
- ें (३) द्वारिकाधीश—द्वारिकाधीश का मंदिर मथुरा के सब मंदिरों से विस्तार में बड़ा है। मंदिर के घेरे की लम्बाई करीब १८० फीट और चौड़ाई १२० फीट है। पूर्व के बड़े फाटक से सीढियों द्वारा मंदिर के आंगन में जाना होता है। बड़े चौगान के मध्य में मंदिर है, जिसके आगे लम्बा चौड़ा छन्दर जगमोहन बना है। चौगान के बगलों पर दोहरे तेहरे दो मंजिले मकान हैं। जगमोहन से द्वारिकाधीश की मनोहर मूर्ति का दर्शन होता है, जिसके समीप कई दूसरी देव मूर्तियां हैं। बल्लभ संपदाय के रीत्यनुसार समय समय पर मंदिर का कपाट खुलता है। पट खुलने पर दर्शकों की भीड़ होती है। भोग, राग, आरती, दर्शन की बड़ी धूम रहती है। भोग लगजाने के उपसंत प्रसाद विकता है। उत्सवों के दिनों में मंदिर की बड़ी शोभा होती है। इस मंदिर को मथुरा के धनी सेठ पारिख जी ने बनवाया, जो ग्वालियर राज्य के खजानची थे। उन्होंने असंख्य धन उपार्जन किया था। जयपुर के सेठ मणिराम से पारिखजी

की बड़ी मित्रता थी, उसने मणिराम के वड़े पुत्र सेठ लक्ष्मीचन्द्र की गोदिलिया था। सन १८२५ ई० में यह मन्दिर वनकर तय्यार हुआ। पारिख जी वछम संप्रदाय के शिष्य थे, इसलिये आरंभही से मंदिर वछम संप्रदाय वालों के हाथ में है। मंदिर का खर्च मथुरा के सेठ घराने के जिम्मे था, क्योंकि सेठ लक्ष्मीचंद पारिखजी के दत्तक पुत्र थे और पारिखजी की सपात्त के वही मालिक हुए थे। उस वर्च के लिये २५००० रुपये सालाना आमदनी की जायदाद इस मंदिर के साथ लगाई गई थी, वह सब सेठजी की ओर से मंदिर के आचार्य्य गोस्वामी नहाराज वाल कृष्ण लालजी के हाथ में है। मंदिर के पासही पूर्व सड़क के दूसरे वगल पर मथुरा के सेठ का दो मंजिला मकान है, जिसके दिहने अर्थात उत्तर भरतपुर के महाराज का एक मकान है।

+ (४) वाराइजी का मंदिर—द्वारिकाधीश के मंदिर के पीछे की ओर वा-राइजी का मंदिर है, जिसकी परिक्रमा मंदिर के भीतरही हैं । वाराइ जी के मुख पर पृथ्वी का आकार बना है और आगे की ओर गरुड़ की मूर्ति है।

(4) गोविंददेवजी का मंदिर—वाराह-मंदिर से कुछ दूर आगे जाने पर पत्थर से वना हुआ गोविंददेवजी का सुंदर मंदिर मिलहा है। आंगन के एक बगल पर ऊंचा मुझेरेदार मंदिर और तीन बगलों पर दो मंजिले मकान हैं। मंदिर में नकाशी का उत्तम काम है। मंदिर की ओर से सदावर्त लगा है।

+ (६) विहारी जी का मन्दिर—यह मन्दिर और इसके मकान गोन्दिवेवजी के मन्दिर के समान हैं। यहां मार्बुल की दो वा तीन छन्दर मूर्तियां हैं।

+ (७) गोबर्छननाथ का मन्दिर—यह द्वारिकाधीश के मन्दिर के बाद मथुरा के संपूर्ण मन्दिरों से अधिक लम्बा चौड़ा है। इसमें दो आंगन हैं, दोनों के बगलों पर दो मंजिले मकान बने हैं। मन्दिर को एक गुजराती धनी ने बनवाया।

+(८) गोपीनाथ का मन्दिर—यह मन्दिर गोविन्ददेव जी के मन्दिर और विहारी जी के मन्दिर के समान खन्दर और इन्ही के नक्के का है।



- (९) मथुरानाथ का मन्दिर—यह मन्दिर द्वारिकाधीश के मन्दिर से दक्षिण सड़क के बगल पर है। यह भी गोविन्ददेव जी के मन्दिर के नकुशे का है।
- (१०) दाऊ जी का मन्दिर—मथुरानाथ के मन्दिर के सामने सड़क के दुसरे बगल पर एक मन्दिर में दाऊ जी (बलदेव जी) और उनकी स्त्रीरेवती की मूर्ति हैं।
- (११) व्रजगोविन्द का मन्दिर—(१२) गोवर्द्धननाथ का दूसरा मन्दिर— (१३) राधाकुष्ण का मन्दिर—ये तीनो मन्दिर गोविन्ददेव जी और विहारी जी के मन्दिरों के ढांचे के हैं। व्रजगोविन्द जी का मन्दिर सन १८६७ में और राधाकुष्ण जी का १८७३ में बना।
- (१४) मगनी माता—सड़क के वगल में बहुत छोटे मन्दिर में मगनी माता की मूर्ति है।

मथुरा की परिक्रमा में देवमन्दिर और स्थान—मथुरा नगर के ५ कोस की परिक्रमा विश्रामघाट से आरम्भ होकर करीब ६ घंटे में फिर उसी जगह समाप्त होती है। निम्नलिखित स्थान इस कम से मिलते हैं,—

- (१) विश्रामघाट वा विश्रांतघाट—श्री कृष्णचन्द्र ने कंस को मार कर यहां विश्राम किया, इसलियं इस घाट का नाम विश्रामघाट हुआ । कार्तिक शुक्र दितीया के दिन इसी घाट पर यम्रना स्नान के निमित्त प्रतिवर्ष भारत के सब प्रदेशों से लाखों यात्री मथुरा में आते हैं। यम्रनास्नान का माहात्म्य सब स्थानों से मथुरा में अधिक है। इस घाट पर ऊपर से नीचे तक पत्थर की सीड़ियां हैं और ऊपर पत्थर का फरस है। घाट पर ३ या ४ घंटे हैं, जिनमें से एक को नैपाल के महाराज ने दिया था। यहां प्रतिदिन संध्या समय यमुना जी की आरती होती है। घाट के निकट यमुना में कछुए बहुत हैं, ज आदमी से नहीं हरते।
 - (२) बलभद्रघाट ।
 - "(३) भोगघाट—यहां पीपछेश्वर महादेव हैं।

- ÷(४) प्रयागघाट—यहां बेनीमाधव की मूर्ति है।
- +(६) रामघाट-यहां रामेश्वर महादेव हैं।
- (६) श्यामघाट—यहां कनखलक्षेत्र, तिंदुक नामक तीर्थ, दाऊजी का मन्दिर और गोकुली गोस्वामी गोपाललाल जी का मकान है।
- (७) बंगालीघाट—यहां यमुना पर रलवे का पुल, भरतपुर के महाराज का पड़ाव अर्थात मकान, जिसमें किराए पर लोग टिकते हैं और बाग; गोकुली गोस्वामी का बाग और मकान और एक राजा की धर्मज्ञाला है।

ं (८) स्र्यांघाट-यहां स्र्यं की मूर्ति है।

(९) ध्रुवघाट—यहां पिंडदान होता है। घाट के पुस एक टीले पर छोटे मन्दिर में ध्रुवजी की शुक्त मूर्ति है। इसी स्थान पर उन्होंने तप किया था।

- ्रिश्ण मोक्षतीर्थ और सप्त ऋषियों का टीला—मोक्षतीर्थ से यमुना जी छुट जाती हैं। दिहने घूमना होता है। यहां सप्त ऋषियों का टीला है, जहां सफेद मद्दी मिलती है; जिसको लोग यज्ञ की विभूति कहते हैं। टीले पर साधुओं का मठ हैं। पूर्व काल में सप्त ऋषियों ने यहां तप किया था।
- (११) राजा बिल का टीला—इस टीले में से काले देले निकलते हैं, जिसको लोग विभूति कहते हैं। राजा बिल ने यहां यह किया था। यहां एक कोठरी में बामम जी, शुक्राचार्च्य और गोपाल जी के सहित राजा बिल की मूर्ति है, और दूसरी कोठरी में खड़ाऊं पर चढ़े हुए बाम हाथ में बंड और दिहने में कमंडल लिये हुए बामन जी खड़े हैं। बिल के टीले से आगे जाने पर स्कूल से आगे टाउन हाल मिलती है।

+(१२) रावण का टीछा—कहते हैं कि रावण ने यहां तप किया था।

्र (१३) कुण्ण और कुब्जा—रेलवे सड़क के पास छोटे टीले पर एक मन्दिर में कुष्ण और कुब्जा की धातुप्रतिमा हैं।

(१४) रंगभूमि—यहां एक मन्दिर में रंगेश्वर महावेव हैं। बड़े शिव-लिंग के ऊपर महावेव का मुखमंडल धातु का बना है। एक टीले पर राजा जग्रसेन, कंस, ऋष्ण और बलराम की मूर्तियां हैं। इससे आगे सप्त- समुद्र नामक कूप है। जिससे आगे सफाखाना और मुन्सिफ़ी कचहरी मिलती हैं। थोड़े आगे शहर छूट जाता है। बहुत आगे जाने पर रेलवे की वृन्दावन वाली शाखा मिलती है।

(१५) गोपाल जी का मन्दिर—गोपाल जी के मन्दिर के पास राय पटनी मल का बनवाया हुआ पत्थर का बड़ा सरोवर है। इससे आगे जाने पर दिल्ली वाली पकी सड़क मिलती है।

(१६) भूतेश्वर महावेव-सड़क के निकट एक मन्दिर के एकही होज में भंगसेश्वर शिवर्लिंग और मार्बुळ के भूतेश्वर शिवर्लिंग हैं। यहां बलभद्र-कुण्ड

नामक एक कुण्ड है।

- (१७) पोतरा-कुण्ड—भूतेश्वर से बहुत आगे जाने पर जन्मभूमि के पास पोतरा-कुण्ड नामक पत्थर का उत्तम सरोवर मिलता है। कृष्णचन्द्र के जन्म के समय के पोतरा अर्थात विछोना इसमें घोए गए, इससे इसका नाम पोतरा कुण्ड पड़ा। इसको ग्वालियर के महाराज ने पत्थर से बनवाया। इसके नीचे बहुत कोठरियां, तीन बगलों पर पत्थर की सीढियां, एक ओर गौघाट और जपर ऊंची दीवार हैं। सरोवर के समीप एक कोठरी में कृष्ण, बखदेव और बेवकी की मूर्तियां हैं।
- (१८) केशवदेव जी का मन्दिर—पोतरा-कुण्ड के पास केशवदेव का बड़ा मन्दिर है। यहां कुष्ण जी का जन्म हुआ था। यह स्थान बहुत पुराना और मथुरा के सब देव स्थानों में माननीय है। इस मन्दिर में कुष्ण आदि की मुर्तियां हैं। मन्दिर के पास कुष्णकूप और कुष्णकूप से आगे जाने पर कुष्णा-कूप मिलता है।
- े (१९) महाविद्या देवी का मन्दिर—जन्मभूमि से बहुत दूर एक टीले पर शिलरदार मन्दिर में महाविद्या, महामाया और महामेघा की मूर्तियां हैं। टीले के एक ओर की ५० सीढ़ियों से मन्दिर के पास जाकर दुसरी और २५ सीढ़ियों से उतरना होता है। टीले के पास कुछ झाड़ियां और बहुत बन्दर हैं।

- ॳ (२०) सरस्वती-कुण्ड—महाविद्या के मन्दिर से बहुत दूर सरस्वती-कुण्ड नामक एक प्रका सरोवर है, जिसके पास मन्दिर में सरस्वती की धातुमूर्ति है। आगे जाने पर कोटितीर्थ मिलता है।
- (२१) चंडी देवी—सरस्वती-कृष्ड से दूर एक टीले पर छोटे मन्दिर में चंडी की मूर्ति है। आगे जाने पर रेलवे की दृन्दावन शाखा, उससे आगे दृन्दावन जाने वाली पकी सड़क मिलती है।
- (२२) गोकर्णेश्वर महादेव—पक्की सड़क के पास एक लंबा टीला है, जिसके ऊपर के मन्दिर में ३ हाथ ऊंचे, बहुत मोटे गोकर्णेश्वर महादेव बैठ हैं; जिसकें पास गौतम ऋषि की समाधि है।
- (२३) अंव ऋषि का टीला—गोकर्णेश्वर से थोड़ी दूर अंव ऋषि का ऊंचा टीला है, जिस पर अब महाबीर की मूर्ति है; इससे आगे सरस्वती-संगम मिलता है।
- ४ (२४) दशाश्वमेघ घाट—एक ओर थोड़ा घाट वांघा हुआ है। वर्षाकाल में यमुना यहां आती हैं।
- ्र (२५) चक्रतीर्थ—यहां आने पर शहर और यमुना मिल जाती हैं। घाट पत्थर से बना है।
- (२६) कुष्णगंगा घाट—पत्थर का घाट बना है। पानी में निकले हुए ३ पुस्ते हैं। ऊपर कुष्णेश्वर महादेव और कालिंद्रनाथ, और एक मन्दिर में दाऊ जी और रेवती की मूर्तियां हैं।
 - ू(२७) धारापतन घाट-पत्थर का घाट वना है।
- (२८) सोमघाट—यहां सोमतीर्थ और पत्थर के घाट के ऊपर सोमेश्वर महादेव हैं।
- (२९) कंस का किला—यह किला अकवर के समय में फिर से बना।
 पूर्व और उत्तर कई पुस्ते और ईटे की खड़ी दीवार हैं। पूर्व की दीवार करीव
 २२५ फीट लम्बी और ५० फीट से कम ऊंची है; और उत्तर अर्थात यमना
 के ओर की दीवार ७५ फीट ऊंची होगी। पूर्व बंद किआ हुआ एक फाटक

और एक गुफा का द्वार है। नेव के पास ईटे का एक पुराना कूप है। पश्चिम और दक्षिण की ओर दीवार नहीं हैं। दोनों तरफ यह किला टीले के समान थोड़ा ऊंचा है। ऊपर चढ़ने पर दो चार घर की निशानी, जिनकी छत फूटी हुई हैं, और लाल पत्थर के पांच सात पुराने मेहराव और पत्थर ईटो के बहुत टुकड़े वहां देख पड़ते हैं। हाल में पश्चिम ओर छोटे मन्दिर में कालेश्वर महादेव और काल भैरव की मूर्तियां स्थापित हुई हैं। किले से पूर्व एक स्कूल है। यमुना नदी यहांसे पूर्व-दक्षिण को फिरी हैं।

+(३०) बखदेवघाट—यह किले के पास है।

+ (३१) बैकुण्डघाट—यह पत्धर का घाट है, जिस पर पानी में निकंछे हुए पांच वा छः छन्दर पुस्ते हैं।

(३२) गौघाट।

(३६) असिकुण्डा-घाट—यह पत्थर का घाट है, जिस पर पानी में निकले हुए कई पुस्ते हैं। इस स्थान को बाराह क्षेत्र कहते हैं। यहां एक मन्दिर में बाराह जी और गणेश जी की मूर्ति और शिवताल कुण्ड हैं। असिकुण्डा घाट से आगे जाने पर सेठ जी के मकान के पीछे जनाना घाट मिलता है, जिससे आगे विश्राम घाट है।

सतीवुर्ज—विश्राम-घाट से थोड़ा दक्षिण ५५ फीट ऊंचा सतीवुर्ज है, जिसको आंवेर के राजा भरमल की स्त्री और भगवानदास की माता ने सन

१५७० ई० में बनवाया।

जामा मसजिद-यह शहर के भीतर है। इसका आंगन सड़क से १४ फीट ऊपर है। मसजिद के ४ मीनार १३२ फीट ऊंचे हैं। फाटक के दोनों बगलों में सन १६६०-१६६१ ई० का पारसी लेख है।

कटरा—यह केशवदेव के मन्दिर के समीप सराय के समान एक घेरा है।
८०४ फीट लम्बे और ६५३ फीट चौड़े चबूतरे पर लाल पत्थर की बड़ी मसजिद है। एक जगह नागरी अक्षर में संवत १७१३-१७२० खुदा हुआ है।
कटरा टीले में बौद्ध निशानियां हैं। एक पत्थर पर गुप्त बंश के नियत

करने वाले श्रीगुप्त से समुद्रगुप्त तक गुप्तकुल की वंशावली लिखी हुई है, और शाक्य की प्रतिमा के नीचे संवत २८१ खुदा हुआ है।

ब्रजमंडल पयुरा के आस पास ८४ कोस का घरा ब्रजमंडल कहलाता है। ब्रज की परिक्रमा भादों बदी ११ से आरंभ होती हैं। ब्रज में १२ वन, २४ उपवन, ५ पर्वत, ४ सरोवर, ११ कूप, ८४ कुण्ड, २ ताल, २ राधाजी का स्थान, ७ वलदेव जी, ९ देवी और १० महादेव कहे जाते हैं, जिनमें बहुतेरे अब लुप्त होगए हैं। सावन मांस में ब्रज के मन्दिरों में ब्रूलन की बड़ी तय्यारी होती है। उस समय कृष्ण आदि देवमूर्तियों के अपूर्व हांगार और उत्सव देखने के लिये दूर दूर से दर्शक गण आते हैं। और यहां के बहुतेरे पुरूष स्थी छोटे बड़े सब अपने ब्रूलने के लिये हांगों में वा घरों में ब्रूलन लगाते हैं। ब्रज के फाग भी विख्यात है। लोग वरसाने में धूम धाम से फाग खेलने जाते हैं।

इस देश के सर्व साधारण में मलाह धीमर आदि नीच जातियों के अति-रिक्त हिन्दू मात्र मद्यमांस नहीं खाते । काली और चंडी के स्थानों में भी जीव बलिदान नहीं होता। मिठाई, दूध आदि पवित्र वस्तुओं से इनकी पूजा होती है। धोवी वैलों पर कपड़े लादते हैं। गदहे लादने का काम कुम्भार का है।

यहां की भाषा भारत के सब खंडों की भाषाओं से अधिक मीठी है। यहां के छोग पाय २ मील भूमि को १६ कोस कहते हैं। पुराण में चार हाथ का धनुष और एक सहस्र धनुष का कोस लिखा है। इस देश का कोस इसी प्रमाण का है। एक एक्के पर एक्के वाले के अतिरिक्त ४ आदमी चढ़ते हैं। पूरी सस्ती विकती है। फरांस, करील, बबूल, इमली, और पीपल के बहुत पेड़ हैं। बंदर बहुत रहते हैं।

मथुरा जिला-आगरा डिवीजन के पश्चिमोत्तर मथुरा जिला है। इसके उत्तर पंजाब में गुरगांव जिला और पश्चिमोत्तर में अलीगढ़ जिला; पूर्व अलीगढ़ और एटा जिले; दक्षिण आगरा जिला और पश्चिम भरतपुर राज्य और पंजाब का गुरगांव जिला है। जिले का क्षेत्रफल १४५२ वर्गमील है। मथुरा जिला यमुना के दोनों ओर है। दक्षिण-पश्चिम कोन में पहाड़ियां हैं,

जिनमें से कोई २०० फीट से अधिक ऊंची नहीं हैं। जिले की साधारण उंचाई समुद्र के जल से ६२० फीट से ५६६ फीट तक है। जिले के आधे पूर्वी भाग में माठ, महाबन और मैदाबाद तहसीलियां और पिश्चमी भाग में, जिसमें यमुना है, कोसी, छाता और मथुरा तहसीलियां हैं। हाल के समय तक संपूर्ण मथुरा जिले में जंगल और घास लगे हुए थे। बहुतेरे गांव अब तक उपवन और कुन्नों से घरे हुए हैं। सन १८३७-३८ ई० के अकाल में सड़कों जवन से देश के बहुतेरे बड़े हिस्से अब साफ हो गए हैं। जिले के पायः संपूर्ण जंगल में जलावन योग्य लकड़ी है। जिले के धत्रफल के बीसवें भाग में अब उपवन है। जिले की पिश्चमी सीमा के भीतर बरसाने और नन्दगांव के पास पत्थर की खानियां हैं, जहां से पत्थर पुल और नहरों के काम के लिये जाता है।

की अपन निर्मा के निर्मा के निर्मा के पित्र के पित्र मोत्तर में किसी औसत ५० फीट ज़मीन में नीचे पानी है। जिले के पित्र मोत्तर में किसी जगहों में ५० फीट से ६२ फीट तक नीचे पानी है। कूप बनाने में अधिक खर्च पड़ता है। आगरा नहर से पानी की सिंचाई होती है। जिले की प्रधान फिसल तम्बाक, ऊख, चना, कपास, बाजरा, ज्वार और गेहूं हैं।

इस वर्ष की मनुष्यगणना के समय मथुरा जिले में ७१३१२९ मनुष्य थे अर्थात ३८२७७७ पुरुष और ३३०३५२ स्लियां। निवासी हिन्दु हैं। संपूर्ण मनुष्य-संख्या में लगभग १६०० जैन और वारहवें भाग मुसलमान हैं। ब्राह्मण, जाट और चमार तीन जातियां बहुत हैं। इनके पश्चात राजपूत और बनियों के नंबर हैं।

मथुरा जिले के छाता तहसीली में तरौली एक बस्ती है, जिसमें प्रति-सप्ताह बाजार लगता है और राधागोविंद का बड़ा मन्दिर है। वहां कार्तिक पूर्णिमा को मेला होता है। मथुरा जिले में ७ कसबे हैं। मथुरा (जन-संख्या सन १८९१ में ६११९५), द्वन्दाबन (जन-संख्या ३१६११), कोसी, महाबन, कुरसंदा, छाता और शरीर।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-बाल्मीकि रामायण-(उत्तरकांड, ७३ वां

सर्ग) एक दिन यमुनातीर-निवासी ऋषिगण रामचन्द्र की सभा में आए।
(७४ सर्ग) भागव मुनि कहने लगे कि है राजन सत्युग में मधु नामक कैत्य बड़ा वीयवान और धर्मनिष्ठ था। भगवान रह ने अपने भूलों में से एक भूल उत्पन्न कर उसको दिया और कहा कि जब तक तुम देवताओं और विभों से बैर न करोगे, तय तक यह तुम्हारे पास रहेगा। जो तुम से संग्राम करने को उद्यत होगा, उसको यह भस्म कर फिर तुम्हारे हाथ में चला आवेगा। तुम्हारे वंश में एक तुम्हारे पुत्र के लिये यह भूल रहेगा। जब तक यह उसके हाथ में रहेगा, तब तक वह सब प्राणियों से अवध्य होगा। ऐसा वर पाकर मधु ने अपना गृह बनवाया। मधु का पुत्र लवण हुआ, जो लड़कपन से पापकर्मही करता आया। मंधु कैत्य अपने पुत्र का दुराचार देख शोक को मास हो इस लोक को छोड़ समुद्र में घुस गया; परंतु अपने पुत्र को यूल देकर वर का सब हतांत मुना दिया था। है रामचन्द्र अब लवण अपने दुराचार से तीनों लोकों, को विशेष कर तपस्थियों को संताप दे रहा है। (७५ सर्ग) वह प्राणीमात्र को और विशेष कर तपस्थियों को संताप दे रहा है। उसका निवास मधुवन में है।

रामचन्द्र ने यह वृत्तांत सन लवण के वध की प्रतिज्ञा की । और शत्रुघ्न को युद्धयात्रा में तत्पर देख उनसे कहा कि मैं मधु के नगर का राजा तुम को बनाऊंगा, तुम वहां जाकर यमुना के तीर नगर और सुन्दर देशों को बसाओ। (७६ सर्ग) रामचन्द्र की आज्ञा से शत्रुघ्न का अभिषेक हुआ।

(७८ सर्ग) शत्रुघ्न सेना की यात्रा करवा कर एक मास आयोध्या में रहें; तदनंतर वह अकेले चले। शत्रुघ्न ने बीच में दो रात्रि टिक कर तीसरे दिन बाल्मीिक के आश्रम में निवास किया। (७९ सर्ग) उसी रात्रि में सीता को दो पुत्र उत्पन्न हुए। शत्रुघ्न पातःकाल पश्चिमाभिमुख चल निकले, और सप्तरात्रि मार्ग में निवास कर यमुना के तीर पहुंच मुनियों के आश्रम में टिके।

(८१ सर्ग) प्रातःकाल होने पर लवण राक्षस अपने आहार के लिये नगर से बाहर निकला; इतने में शत्रुघ्न यमुना पार हो, हाथ में धनुष ले मधुपुर के फाटक पर जाकर खड़े हो गए। मध्याह काल में लवण आ पहुंचा और श्रचुटन से बोला कि तुम मुहूर्त मात्र ठहरो, मैं अपना शस्त्र लाता हूं। श्रचुटन ने कहा जो शत्रु को अवकाश देते हैं, वे मंदबुद्धि हैं। (८२ सर्ग) तब लवण कोध कर शत्रुटन से लड़ने लगा और अंत में शत्रुटन के बाण से मारा गया। उसी क्षण लवण का शूल शिव के पास चला गया।

(८३ सर्ग) शत्रुघ्न अपनी सेना को, जिनको दूर छोड़ दिया था, वहाँ छे आए। उन्होंने सावन मास में उस पुरी के बसाने का काम आरंभ किया। १२ वें वर्ष में अच्छी भांति से यमुना के तीर पर अर्द्ध चन्द्राकार पुरी बस गई। जिस भवन को छवण ने श्वेत रंग से रंगा था, उसको शत्रुघ्न ने अनेक रंगों से रंगवा दिया।

(१२१ सर्ग) रामचन्द्र की परमधाम यात्रा के समय उनकी आज्ञा से दूत मधुरा नगरी को (जिसको मथुरा कहते हैं) चला और मार्ग में किसी स्थान पर न टिक कर तीन रात्रि दिन में उस नगरी में जा पहुंचा। उसने रामचन्द्र के स्वर्ग जाने के लिये उद्योग करने का द्यांत शत्रुघ्न से कह छनाया। शत्रुघ्न ने अपने पुत्र छवाहु को मथुरा में और शत्रुघाती को वैदिश नगर में स्थापित करके सेना और धन को दो विभाग करके दोनों को बांट दिया और अयोध्या में आकर रामचन्द्र का दर्शन किया। (१२२ सर्ग) रामचन्द्र ने भरत और शत्रुघ्न के सहित सशरीर वैष्णव तेज में प्रवेश किया।

देवीभागवत — (चौथा स्कंन्ध-२० वां अध्याय) यमुना नदी के किनारे पर मधुवन में मधुदैत्य का पुत्र छवण रहता था। शत्रुघ्न जी ने उसको मार कर वहां मधुरा नामक पुरी बसाई; और पीछे वहां का राज्य अपने पुत्रों को देकर आप निज धाम को चले गए। जब सूर्य्य वंश का नाश हुआ, तब उस पुरी के राजा यदुवंशी हुए; जिनमें शूरसेन का पुत्र वस्त्रदेव था।

विष्णुपुराण — (पिंहला अंश, १२ वां अध्यास) जिस बन में मधु वैत्य रहता था, उस बन का नाम मधुवन हुआ। मधु के पुत्र का नाम लवण था, जिसको शञ्जुज्न जी ने मार कर उसी बन में मथुरा नाम पुरी बसाई।

बाराहपुराण - (१४६ वां अध्याय) स्वयं की पुत्री यमुना मुक्ति देने बाली है। मयुरा में विश्रांति नामक तीर्थ तीनों लोक में प्रसिद्ध है (देखो परिक्रमा का नंबर १)। सब तीथों के स्नान में जो फल है, वह कृष्ण जी की गतअम मूर्ति के दर्शन मात्र से होता है (देखो शहर के भीतर के मन्दिरों का नंबर २)। प्रयाग तीर्थ में स्नान करने से विष्णुलोक दिलता है (परिक्रमा का नं० ४)। कनखल तीर्थ के स्नान से स्वर्गलोक, और तिंदुक तीर्थ के स्नान से विष्णुलोक मिलता है। यहां तिंदुक नामक नापित पर कर ब्राह्मण हुआ और विष्णुलोक में गया, इसलिये इस स्थान का तिंदुक नाम पड़ा (नं ६) सूर्य्यतीर्थ में राजा बलि ने सूर्यं की आराधना की और सूर्य से एक यणि पायां। इस तीर्थ में स्नान का वड़ा माहात्म्य है (नं०८)। जहां भुव जी ने तप किया था, वह भ्रुव तीर्थ है; वहां स्नान और पिंडदान का बड़ा माहात्म्य है (नं० ९)। ऋषितीर्थ ध्रुवतीर्थ के दक्षिण है; जिसमें स्नान का बड़ा माहात्म्य है। मोक्षतीर्थ ऋषितीर्थ के दक्षिण है, जिसमें स्नान करने से मोक्ष होता है (नं० १०)। मोक्षतीर्थ में कोटितीर्थ है, जिसके स्नान से ब्रह्मलोक मिलता है। और कोटितीर्थ के समीप वायुतीर्थ है; यहां पिंडदान का बड़ा फल है। ज्येष्ठ मास में यहां पिंडदान करने से गया के समान पितरों की तृप्ति होती है। इस प्रकार बाराह जी ने १२ तीथें। का वर्णन किया।

(१४७ वां अध्याय) मथुरा में १२ बन हैं। पहला मधुबन, जहां भाद्र शुक्त ११ के स्नान का भाहात्म्य है। दूसरा तालबन, जहां धेनुकाखर मारा गया। ३ रा कुमुदबन—भाद्र शुक्त ११ को इस स्थान के दर्शन से मनुष्य रुद्रलोक को जाता है। ४ था बहुलाबन—इस के दर्शन से अग्निलोक मिलता है। ५ वां काम्यकबन—इसमें विमलकुण्ड तीर्थ है। ६ वां (यमुना के पार) भद्र बन—इसके दर्शन से नागलोक मिलता है। ७ वां खिदरबन—जिसके दर्शन से विष्णुलोक मिलता है। ८ वां महाबन—इसके दर्शन से इंद्रलोक मिलता है। ९ वां लोहजंघवन— यह सब पापों के हरने वाला है। १० वां बिलबबन—इसके दर्शन से ब्रह्मलोक मिलता है। ११ वां भांडीरवन—यहां बाखदेव जी के द-

र्शन करने से गर्भगास नहीं होता। १२ दृन्दाबन—यह विष्णु का सदा प्यारा है। (१४८ वां अध्याय) धारापतन तीर्थ में शरीर छोड़ने से स्वर्ग मिलता है (परिक्रमा नं०२७)। यमुनेश्वर के दर्शन करने से, और वहां शरीर छोडने से विष्णु लोक मिलता है। नागतीर्थ के स्नान से स्वर्गलोक, और वहां प्राण त्यागने से विष्णुलोक मिलता है। कंठाभरण तीर्थ में स्नान करने से स्व्यंलोक मिलता है। उसी भूमि में ब्रह्मलोक नामक तीर्थ है, जिसके स्नान से विष्णुलोक मिलता है । सोमतीर्थ यमुना के मध्य में है, वहां सोम. को विष्णुका दर्शन हुआ था (न०२८)। सरस्वतीपतनः क्षेत्र के जला स्पर्स से मूर्व भी योगीराज हो जाता है (नं०२०)। दशाश्वमेघ तीर्थ के स्नान से अश्वमेध का फल होता है (नं०२४)। मथुरा के पश्चिम ब्रह्मा का निर्मीण किया हुआ मानस तीर्थ है, जिसके स्नान से विष्णुलोक मिलता है। उसी के समीप विव्रराज तीर्थ है, जिसके स्नान से विव्र नहीं होता ? कोटितीथं के स्नान से कोटि गोदान का फल होता है (नं०२०)। कोटि-तीर्थ से आध कोस पर शिवक्षेत्र है, जहां बैठ कर शिव जी मथुरा की रक्षा करते हैं। वहां स्नान कर शिव के दर्शन करने से मथुरा-मंडल के सब तीथें। का फल होता है (नं० १६)।

(१५१ वां अध्याय) मथुरा में आकर यमुना में स्नान करके गोविंदवेव जी की पूजा करने से पितरों की उत्तम गित होती है। मथुरा के पश्चिम आधे योजन पर धेनुकाखर की भूमि में तालबन तीर्थ है। मथुरा की पश्चिम दिशा में आधे योजन पर सर्व्यंतीर्थ है।

(१५२ वां अध्याय) मथुरामंडल का प्रमाण २० योजन हैं। पृथ्वी में जितने तीर्थ और पृण्य भूमि हैं, वे हरिशयन के समय मथुरामंडल में आते हैं। जो मनुष्य मथुरा में जाकर केशव का दर्शन और यमुना में स्नान करता हैं वह अवश्य विश्व लोक में जाता है। कार्तिक मास की शुक्रा अष्टमी को यमुना में स्नान कर नौमी को मथुरा की प्रदक्षिणा करने से उत्तम गति मिलती है। (१५४ वां अध्याय) मथुरा की परिक्रमा कार्तिक शुक्र ८ से इस क्रम से

करे,-पयम विश्रांतितीर्थ में स्नान, तब दक्षिण कोटितीर्थ में स्नान कर-इनुमानजी, पद्मनाभ, वस्तमती देवी, कंसवासनिका देवी, औग्रसेनी देवी, चर्चिका देवी, आदि का दर्शन करे। फिर क्षेत्रपाल का दर्शन कर, वहां से जाकर भूतेश्वर महादेव का दर्शन करे; (नं० १६) तव मथुरा की परिक्रमा सफल होती है। आगे कृष्ण करके पूजित कुब्जीका, और वाभनी दो बाह्मणियों के दर्भन करे। उससे आगे गरतेश्वर श्विव हैं आगे महाविद्ये श्वरी वेवी है, जिसने कुष्ण की रशा की थी (नं० १९)। आगे गोकर्णेश्वर कुण्ड में स्तान करके शिव जी का दर्शन करे (नं० २२)। फिर सरस्वती नदी में स्नान सर्पण करे (नं० २०)। विघ्रराज गणेश का दर्शन करके यमुना में आकर स्नान करे, और सोमेश्वर तीर्थ में स्नान कर सोमेश्वर का दर्शन करे (नं० २८)। आगे सरस्वती संगम तीर्थ में स्नान करे। वहां से चल घंटाभरण तीर्थ, गरुड़ के सब तीर्थ, धारा लोपक तीर्थ, बैंकुण्ड तीर्थ (नं० ३१), खंड वेलक तीर्थ, मंदाकिनी-संयमन तीर्थ, असिकुण्ड तीर्थ (नं० ३३), गोपीतीर्थ, मुक्तिकेशव तीर्थ और बैलक्ष-गरुड़ तीर्थ; इन तीर्थें। में कम से स्नान, तर्पण दान, आदि करके अविमुक्तेश की, जो सप्त ऋषियों करके स्थापित हैं, पार्थना कर विश्रांति तीर्थ में स्नान तर्पण कर गतश्रम भगवान (देखो शहर के मन्दिरों का नं० २) और सुमंगला देवी को दर्शन कर निज यात्रा सुफल की पार्थना करे।

(१५७ वां अध्याय) मथुरामण्डल का प्रमाण २० योजन है। इस मंडल को कमल का स्वरूप जानना चाहिये; जिसके कर्णिकाम्स्थान में केशव भगवान (नं०१८) स्थित हैं। मथुरा रूपी कमल के पश्चिम दल में गोवर्द्धन निवासी भगवान (नं०७), उत्तर दल में श्री गोविन्द भगवान (नं०५), पूर्व दल में विश्रांति नामक ईश्वर और दक्षिण दिशा के दल में शूकर भगवान (शहर के मन्दिर का नं०४) हैं।

कपिल ऋषि ने अपने तप के प्रभाव से बाराह जी की मूर्ति का निर्माण किया। कपिल जी से इन्द्र ने इसको लिया। इन्द्रपुरी से रावण लंका को ले गया। रामवन्द्र रावण को जीतने पर कपिल बाराह को लंका से अयोध्या में लाये। शत्रुघ्न ने लवणा छर के वध करने पर उस मूर्ति को अयोध्या से लाकर मथुरा में दक्षिण दिशा में स्थापित किया।

(१६० वां अध्याय) बाराह जी ने कहा, हम मधुरा में ४ मूर्ति होकर सदा निवास करते हैं। १ वाराह (नं० ४), २ नारायण, ३ वामन (नं० ११), और ४ वलभद्र। जो मनुष्य असिकुण्ड (नं० ३३) में स्नान करके चारो मूर्ति-यों का दर्शन करता है, वह चारो समुद्रों सहित पृथ्वी-परिक्रमा का फल पाता है।

(१६२ वां अध्याय) मथुरापुरी का प्रमाण चारो दिशाओं में बीस योजन है। सब तीथों में प्रधान विश्रांति तीर्थ है। मथुरा के क्षेत्रपाल भूत पित महादेव (नं०१६) हैं, जिनके नहीं दर्शन करने से तीर्थ यात्रा का फल निष्फल होता है।

(१७० वां अध्याय) मथुरा में विश्रांतितीर्थ (नं०१), सरस्वतीसंगम (नं०२०), असिकुण्ड (नं०३३), कालंजर और कृष्णगंगा (नं०२६), इन पांचों तीर्थों में स्नान करने से मनुष्य को कैसा ही पाप हो, निष्टत्त हो जाता है। मथुरा के सब तीर्थों से इनका अधिक माहात्म्य है।

(१७१ वां अध्याय) कृष्ण का पुत्र सांव कृष्ण गंगा पर स्वर्ध की आराध्मा करके कुष्ट रोग से मुक्त हुआ। एक समय नारद जी द्वारका में आकर कृष्ण से बोले कि सांव के स्नन्दंर रूप से आप के अंतःपुर की स्नियां मोहित हो रही हैं, इससे आप की विमल कीर्ति में कलंक लगता है। यह स्न कृष्ण ने १६ सहस्र रानियों को बुलाकर उनके मध्य में साव को बैठाया। उस समय सांव का मनोहर रूप देख सब स्नियां मोह बश काम से विद्वल हो गई। तब कृष्ण ने सांव से कहा कि हे दुष्ट तू आज से कुरूप होजा। तब साव कृष्ट रोग से युक्त हो गया। सांव नारद के उपदेश से मथुरा के बटस्वर्थ नामक स्थान में जाकर कृष्णगंगा में स्नान कर स्वर्थ की आराधन करने लगा। थोड़ेही दिनों में कृष्णगंगा के तट पर स्वर्थ भगवान ने प्रगट हो अपने हाथ से सांव का शरीर स्पर्श किया, उसी समय सांव दिन्य शरीर हो गया।

गरुडपुराण—(पेतकल्प-२७ वां अध्याय) अयोध्या, मथुरा, माया, काञी, कांची, अवंतिका और द्वारिका ये सातों पुरी मोक्ष देने वाली हैं।

पश्चपुराण—(पातालखंड-६९ वां अध्याय) मथुरा देश, जिसका नाम
मधुनन है, विष्णु को अधिक पिय है। माथुर मंडल सहस्रदल कमल के आकार
का है। इश देश में १२ वन प्रधान हैं। भद्रवन, श्रीवन, लोहवन, भांडीरवन,
महावन, तालवन, खिद्रवन, वकुलवन, कुमुद्रवन, काम्यवन, मधुवन और
हन्दावन। उनमें ७ यमुना जी के पश्चिम तट पर और ५ पूर्व ओर हैं। उनमें
भी ३ वन अत्यंत उत्तम हैं। गोकुल में महावन, मथुरा में मधुवन और हन्दावन।
इन बारहों को छोड़ कर और भी वहुत उपवन हैं।

(७३ वं अध्याय) भगवान ने कहा, मथुरा वासी नीच छोग भी देवताओं से धन्य हैं। भूतेश्वर देव हमारे पिय हैं।

(९१ वां अध्याय) कार्तिक मास में तुला के सूर्व्य में मथुरापुरी का यम्रना स्नान मुक्ति दायक होता है।

श्रीमद्भागवत—(चौथा स्कंध-८ वां अध्याय) ध्रुव जी नारद की आज्ञा-नुसार मथुरा में आकर एकांत चित हो भगवान का ध्यान करने छगे। जब उनके तप से संपूर्ण विश्व का श्वास रुक गया, तब भगवान ने मधुबन (नं०९) में आकर ध्रुव को वरदान दिया, कि तुमको अटल ध्रुवस्थान मिलेगा। ध्रुव भगवान की आज्ञा से अपने घर गए।

(९ वां स्कंच-४ था अध्यायं) भगवान वाख्यव ने राजा अंवरीष के भिक्तभाव से प्रसन्न हो, उसको छदर्शन चक वे दिया था। राजा ने एक वर्ष तक अवंड एकादशी व्रत करने का संकल्प किया और व्रत के अंत में कार्तिक महीने में मथुरापुरी में जाकर व्रत किया। वह ब्राह्मणों को भोजन कराकर व्रत पारण करने को तत्पर हुआ, उसी समय में दुर्वाशा ऋषि आए और भोजन करना स्वीकार करके नित्य कर्म करने को यमुना तट पर गए। जब ऋषि के आने में बिलंब हुआ, द्वादशी का केवल अर्द्ध मुहूर्त शेष रह गया, तब राजा ने ब्राह्मणों की आज्ञा से चरणामृत पीकर व्रत समाप्त किया।

ऋषि ने वहां आने पर जब ध्यान करके राजा के आचरण को जान लिया, तब कोध कर मस्तक से एक जटा उखाड़ एक कृत्या बनाई। वह खड़ हाथ में ले राजा की ओर दौड़ी। विष्णु की आज्ञा से चक्र अपने तेज से कृत्या को भस्म करने लगा। जब दुर्वाशा ऋषि ने देखा कि चक्र हमारीही ओर चला आता है, तब वह सब दिशाओं में भागने लगे। जहां वह जाते थे, चक्र भी उनके पीछे लगा चला जाता था। (५ वां अध्याय) विष्णु भगवान की आज्ञा से दुर्वासा ऋषि राजा अंबरीष के पास गए। जब राजा ने चक्र की स्तुति की, तब खदर्शन चक्र शांत हो गया (नं० २३)।

शिवपुराण—(८ वां खंड-११ वां अध्याय) मथुरा में रंगेश्वर शिवलिंग हैं (देखो नं०१४)।(११ वां खण्ड-१८ वां अध्याय) स्वर्थं की संज्ञा नाम्नी स्त्री से श्राद्धदेव और यम दो पुत्र और यमुना नामक कन्या उपजी। संज्ञा की छाया से सावणि मनु और शनिश्वर दो पुत्र और तपती नामक कन्या हुई।

भविष्यपुराण—(पूर्वोद्ध-४२ वां अध्याय) सूर्य्यं की पत्नी संज्ञा से यम और यमुना; और छाया से साविण मनु शनिश्वर और तपती नामक कन्या उत्पन हुई। एक दिन यमुना और तपती का विवाद हुआ और परस्पर के शाप से दोनों नदी हो गई। सूर्य्यं भगवान ने कहा कि यमुना का जल गंगाजल के समान और तपती का जल नर्मदा के जल के तुल्य माना जायगा।

(उत्तरार्छ-१३ वां अध्याय) कार्तिक शुक्क २ के दिन यमुना ने यमराज को भोजन कराया, उसी दिन नरक के जीव बंधन से छुटे थे, और यमराज के नगर में बड़ा उत्सव हुआ था; इसिलिये इसका नाम यमिद्दितीया हुआ। उस दिन बहिन के गृह जाकर प्रीति से भोजन करे और वस्त्र भूषण आदि देकर भगिनी को प्रसन्न करे।

(५६ वां अध्याय) विष्णु ने वेवताओं के हित के लिये भृगु मुनि की स्त्री को मारडाला। भृगु ऋषि ने विष्णु को शाप दिया कि तुम १० वार भूमि पर जन्म लोगे; इसी शाप से मत्स्य, कूमें, बाराह, बामन, नृसिंह, रामचन्द्र, बल-राम, परशुराम, बौद्ध और कल्कि ये विष्णु के १० अवतार हुए। (बाराह-

पुराण के ४ थे अध्याय में भी विष्णु के १० अवतार का यही नाम है)।

र्छिगपुराण—(पूर्वीर्द्ध २९ वां अध्याय) भृगु के शाप से विष्णु को १० अवतार लेने पड़े। (६९ वां अध्याय) भृगु के शाप के छल से श्री कृष्ण ने मनुष्य शरीर धारण किया।

मत्स्यपुराण—(४७ वां अध्याय) विष्णु भगवान ने शुक्र की माता का सिर काट दिया। शुक्र ने विष्णु को शाप दिया कि तुम इस संसार में ७ बार मनुष्य शरीर धारण करोगे। तभी से विष्णु वार बार जन्म छेते हैं। (मत्स्य, कूम और बाराह के साथ १० अवतार होता है; ये तीनों मनुष्य नहीं हैं)।

े पद्मपुराण—(सृष्टिखंड, चौथा अध्याय) भृगु जी ने विष्णु को शाप दिया कि तुम को मृत्यु छोक में १० बार जन्म छेना पड़ेगा। (१३ वां अध्याय) भृगु जी ने विष्णु को शाप दिया कि तुम ७ जन्म तक मनुष्यों में जन्म छोगे। (मत्स्य, कूर्म्म और बाराह मनुष्य नहीं हैं)।

(पातालखंड, ६८ वां अध्याय) मत्स्य अवतार चैत्र शुक्क १५, कूर्म अवतार ज्येष्ट शुक्क १२, वाराह चैत्र कृष्ण ९, वृसिंह वैशाख शुक्क १४, वामन भाद्र शुक्क १२, परश्चराम वैशाख श्रुक्क ३, रामचन्द्र चैत्रश्चक ९, कृष्ण भाद्र कृष्ण ८, वौद्ध ज्येष्ट शुक्क २, कल्कि अवतार ज्येष्ट शुक्क २ और वलराम का जन्म भाद्र कृष्ण २ को हुआ।

महाभारत—(आदिपर्व्व, ६७ वां अध्याय) कृष्ण जी ने नारायण के अंश से और वलदेव जी ने घेषनाग़ के अंश को जन्म लिया है।

(१९८ वां अध्याय) भगवान हिर ने अपनी शक्ति रूपी कृष्ण और श्रुक्त दो वर्णों के दो केश उखाड़ दिए, जो केश यदु वंश में रोहिणी और देवकी के गर्भ में जाकर प्रविष्ट हुए। नारायण के श्रुक्त केश से वलराम और काले वर्ण वाले दुसरे केश से कृष्णवन्द्र उपने।

(यह कथा देवी भागवत के ४ थे स्कंघ के २२ वें अध्याय में और विष्णु पुराण के ५ वें अंश के पहले अध्याय में तथा आदिब्रह्मपुराण के ७४ वें अ-ध्याय में भी हैं)।

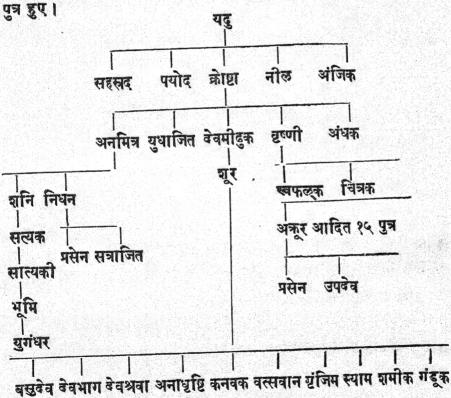
(२२५ वां अध्याय) ब्रह्मा ने कहा कि नर नारायण नामक दो सनातन

विवताओं ने वेवकार्य्य के छिये मृत्युलोक में अवतार लिया है, उनको लोग अर्जुन और बाखदेव करके जानते हैं।

(उद्योगपर्व्व, ४९ वां अध्याय) नर और नारायण ने अर्जुन और बाख-देव रूप से अवतार स्त्रिया है। अर्जुन नरदेव और कृष्ण नारायण हैं।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराण—(कृष्ण-जन्म-खंड, छठवां अध्याय) कामवेव मद्युम्न, रित मायावती, ब्रह्मा अनिरूद्ध, भारती ऊखा, शेष वलराम, गंगा कालिन्दी, तुलसी लक्ष्मणा, सावित्री नाग्नजिती, पृथ्वी सत्यभामा, सरस्वती शैन्या, रोहिणी मित्रविंदा, सर्यप्राती रत्नमाला, स्वाहा स्त्रीला, दुर्गा जाम्बवती, लक्ष्मी रुक्मिणी और पार्वती यशोदा की पुत्री होंगी।

आदिश्रह्मपुराण—(९ वें अध्याय से १६ वें अध्याय तक) ब्रह्मा का पुत्र अत्रि, अत्रि का चन्द्रमा, चन्द्रमा का बुध, बुध का पुरुरवा, पुरुरवा का आयु, आयु का पुत्र नहुष, और नहुष का पुत्र ययाति हुआ; जिसके यदु आदि ५

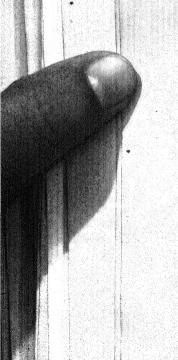


श्रूर की ५ पुत्री थीं; यथा, — पृथुकीर्ति १ पृथा २ श्रुतवेवा ३ श्रुतश्रवा ४ और राजाधिदेवी ५ । श्रूर ने पृथा को उसके मातामह राजा कुन्तिभोज को दे दिया । श्रुतश्रवा का पुत्र शिशुपाल हुआ । पृथुकीर्ति रानी का पुत्र दंतवक्त हुआ । श्रूर के अनाधृष्टि नामक पुत्र का निनर्तशत्रु पुत्र हुआ और देवश्रवा का शत्रुद्ध नामक पुत्र हुआ ।

बसुदेव की पौरवी, रोहिणी, मिदरा, घारा, बैशाखी, भद्रा, सनात्री, सहदेवा, श्वांतिदेवा, सुदेवा, देवरिक्षता, हकदेवी, उपदेवी, और देवकी यह १४ भाय्यों थीं; जिनमें अंत वाली २ भोगपत्नी, और पौरवी और रोहिणी बड़ी पटरानी हुई। शांतिदेवा से २ पुत्र, सुदेवा से २ पुत्र और हकदेवी से १ पुत्र हुए। रोहिण से बलराम, सारण, दुर्वम, दमन श्वान्न, पिंडारक और उशीनर ८ पुत्र, और चित्रा और सभद्रा २ पुत्री हुई। देवकी रानी से श्री कुल्ण जी जन्म। बलदेव की रेवती स्त्री से निश्चठ नामक पुत्र हुआ।

आदि ब्रह्मपुराण—(७४ वां अध्याय) ब्रह्मा आदि सब देवताओं ने शीरसागर के उत्तर तट पर जाकर पृथ्वी के भार उतारने के लिये गरुड़ध्वज भगवान की स्तुति की । भगवान ने श्वेत और कृष्ण २ केशों को अपने शरीर से उखाड़ दिया और देवताओं से कहा कि यह मेरे केश पृथ्वी में अवतार लेकर पृथ्वी का भार उतारेगें।

जय नारद मुनि ने कंस से कहा कि देवकी के आठवें गर्भ में भगवान जन्म लेगें, तब कंस ने देवकी और बखदेव को अपने गृह में रोक रक्ला। (७५ वां अध्याय) जब बलदेव रोहिणी के गर्भ में प्राप्त हो चुके, तब भगवान ने देवकी के गर्भ में प्रवेश किया। जिस दिन भगवान ने जन्म लिया, उसी दिन गोकुल में नन्द की पत्नी यशोदा के गर्भ से योगनिन्द्रा भी उत्पन्न हुई। जब बखदेव कुष्ण को लेकर अर्द्ध रात्रि में चले, तब योम माया के प्रभाव से मथुरा के द्वार पाल निन्द्रा से मोहित हो गए। अति गंभीर यम्रना जी थाह हो गई। बखदेव पार उत्तर कर गोकुल में गए, जहां योगनिन्द्रा से मोहित नन्द गोप की स्त्रीदा को कन्या हुई थी। बखदेव अपने बालक को यशोदा की शस्या



पर खला और उसकी कन्या को छे शीघ्र ही छौट आए । यशोदा जागी तो पुत्र उत्पन्न हुआ देख अति प्रसन्न हुई।

जब बखदेव लड़की को अपने भवन में लाकर देवकी की शय्या पर स्थित हो चुपके हो रहे, तब रक्षा करने वालों ने वालक उत्पन्न होने का हाल कर्स को जा खनाया । कंस ने शीघ्र ही आकर कन्या को छीन शिला पर पटक दिया। कन्या कंस के हाथ से छूट अष्टभुजी होकर कंस से बोली कि मेरें फेंकने से क्या हुआ ? तेरे मारने वाला तो जन्य ले चुका है। ऐसा कह देवी आकाश में चली गई।

(७६ वां अध्याय) कंस ने पृथ्वी के सम्पूर्ण वालकों को मारने के लियें मलंब आदि देलों को आज्ञा दी और बखदेव देवकी को केंद्र से छोड़ दिया। (७७ वां अध्याय) पूतना राक्षसी गोकुल में जाने पर कृष्ण द्वारा मारी गई। जब यमलार्जुन हक्षों के गिरने से कृष्ण बच गए, तब नन्द आदि सब गोप जल्पातों से डर कर गोकुल को छोड़ हन्दाबन में जा बसे।

(७८ वां अध्याय) कृष्ण ने कालिय नाग का दमन किया। (७९ वां अध्याय) वलदेव जी ने धनुक और प्रलंग अखर को मारा । कृष्ण के उपवेश से ब्रजवासियों ने इन्द्र को छोड़कर गोवर्द्धन पर्वत का पूजन किया। (८० वां अध्याय) इन्द्र ने क्रुद्ध हो संवर्तक मेघों को भेजा। मेघ गौओं के नाश के लिये भयानक वर्षा करने लगे। कृष्ण ने गोवर्द्धन पर्वत को उखाड़ एक हाथ पर धारण कर लिया। गोप गोपियों ने गौओं सहित पर्वत के नीचे निवास किया। मेघों ने ७ रात्रि तक गोपों के नाश करने वाली वर्षा की, पर जब श्री कृष्ण ने पर्वत धारण करके संपूर्ण गोकुल की रक्षा की; तब इन्द्र ने मेघों को निवारण किया। इन्द्र ऐरावत हस्ती पर चढ़ कृष्ण के समीप आया और बोला कि हे भगवान आपने अच्छे विधान से गोत्रज की रक्षा की, इसलिये गौओं का प्रेरा हुआ मैं आया हूं। मैं आप का अभिषेक कहंगा और आप उपेंद्र और गोबिन्द नामों को प्राप्त होंगे। निदान इन्द्र ने खन्दर जल और ऐरावत हस्ती का घंटा लेकर पूर्ण जल की धारा से भगवान का अभिषेक किया और वहु व वातें करके वह स्वर्ण को वला गया।

(८२ वां अध्याय) जब धेनुक प्रसंव मारे गए, कुष्ण ने गोबर्द्धन पर्वत को उठा लिया, कालिय नाग को दमन किया, यमलार्जुन द्वक्ष को उखाइ हाला, पूतना को मार डाला, और गाड़ा उलट दिया, तब नारद ने कंस के समीप जाकर संपूर्ण द्वतांत कहा और यह भी कहा कि यशोदा और देवकी का गर्भ बदल दिया गया है। कंस ने विचार किया कि बलवान होने से पहिले ही बलराम और कुष्ण को मार डालना चाहिए।

कंस ने अक्रूर से कहा कि वखदेव के पुत्र विष्णु के अंश से उत्पन्न हुए हैं और मेरे नाश के लिये वढ़े हैं; तुम उन्हें यहां बुला लाओ। चतुर्वशी के दिन मेरे धनुष यह में चांडूर और मुष्टिक के संग उन दोनों का मल्ल युद्ध होगा। कुबल्लया पीड हस्ती वखदेव के दोनों पुत्रों को मारेगा।

कंस का भेजा हुआ केशी वैत्य वृन्दावन में आया और कृष्ण के पीछे मुख फाड़ कर दौड़ा । कृष्ण ने अपनी वांह को उसके मुख में डाल दिया, जिससे वह मर गया।

(८३ वां अध्याय) अक्रूर शीघ्रगामी रथ में बैठ ब्रज को चले और मार्ग में चिंतवन करने लगे कि मैं धन्य हूं कि भगवान का दर्शन करूंगा। (८४ वां अध्याय) अक्रूर ने ब्रज में पहुंच केसव से संपूर्ण द्वतांत विस्तारपूर्वक कहा। कृष्ण चन्द्र वोले कि मैं ३ रात्रि के भीतर अनुचरों समेत कंस को मारूंगा।

प्रभात होते ही वल्लदेव और कृष्ण जब अक्रूर के संग मथुरा जाने को ज्ञात हुए, तब गोपी विलाप करने लगीं। बल्लदेव और कृष्ण ब्रज भू भाग को त्याग मध्याह समय यमुना के किनारे पहुंचे और संध्या समय अक्रूर के सहि-त मथुरा में प्राप्त हुए।

वलवेव और कृष्ण ने मथुरा में प्रवेश किया। दोनों भाइयों ने एक धोवी को देख उससे यनोहर बस्लों को मांगा, जब वह रजक प्रमाद से निंदित बचन कहने लगा, तब कृष्ण ने अपने हाथ के प्रहार से उसका सिर पृथ्वी में गिरा दिया। दोनों भाई बस्लों को पहन प्रसन्न हो माला कार के गृह गए। माली ने प्रसन्न हो इच्छापूर्वक बिचित्र विचित्र पुष्प उन्हें दिए। (८५ वां अध्याय) कृष्ण ने अनुलेपन लिए हुए राज मार्ग में नवयौवना कुष्ण को देखा, और उससे पूछा कि यह अनुलेपन किसका है। वह बोली कि हे कांत में नैकवका नाम से विख्यात कंस के अनुलेपन कर्म करने में नियुक्त हूं। यह सुंदर अनुलेपन आप की प्रसन्नता के लिये है। जब कुष्णा ने आदर-पूर्वक कृष्ण को अनुलेपन दिया, तब कृष्ण ने कुष्णा वों जों पकड़ उपर को उता कर और नीचे से पैरों को खींच उस को उत्तम स्नी बना दिया और उससे कहा कि मैं फिर तेरे घर आउंगा।

वलराम और कुण धनुषशाला में गए। कुण ने रक्षकों से विना पूछे ही धनुष को उटा कर तोड़ दिया। इसके उपरांत वे लोग धनुषशाला से निकल गए। इधर कंस ने अकूर के आगमन और धनुष के टूटने का हाल छन कर चांडूर और मुष्टिक आदि मल्लों को और कुवलयापीड हाथी को भेजा। साधारण मंचों पर नगर के साधारण मनुष्य, राजमंचो पर राजा गण और रंग मध्य के समीप ऊंचे मंच पर कंस बैटा। स्त्रियों के लिये जुवे जुवे मंच विल्लाए गए। जब बाजे वजने लगे, चांडूर और मुष्टिक ने खड़े होकर अपनी भुजा बजाई, तब बलवेव और कृष्ण ने कुबलयापीड हस्ती को मार दोनों हाथों में हस्ती के दांतों को लिए हुए रंगशाला में प्रवेश किया। कृष्ण चांडूर के संग और बलराम मुष्टिक के सहित युद्ध करने लगे। अंत में जब दोनों कैत्य मारे गए, तब कृष्ण कूद कर मंच पर चढ़ गए। उन्होंने कंस के सिर के वालों को पकद उसको नीचे पटक दिया। जब वह मर गया, तब कृष्ण उसके बालों को पकद रंगसमा में खींच लाए।

निदान बलदेव और कृषा बसुदेव और देवकी के समीप गए। कृषा ने कंस के पिता उग्रसेन को बंधन से छुड़ाया और उसको राजिसहासन पर बैठाया। बलदेव और कृषा अवंतीपुरवासी सांदीपिन आचार्य्य के पास शास्त्र पढ़ने के लिए गए। उन्होंने ६४ दिनों के भीतर संपूर्ण रहस्य और धनुर्वेद आदि पढ़ लिए। आचार्य्य ने अपने मृतक पुत्र को मांगा, जिसको उन्होंने यम-रीपु से लाकर गुरु को देदिया।

अस्ति और प्राप्ति नामक कंस की दो स्त्रियों ने अपने पिता पगध्वेश के राजा जरासन्थ के समीप जाकर कंस की मृत्यु का दृतांत कह छनाया। जरा-सन्ध ने २३ अक्षोहिणी सेना छेकर प्रथुरा पुरी को घर लिया, (८७ वां अध्याय) परंतु अंत में बलदव और कृष्ण से वह परास्त हुआ। फिर जरासन्य युद्ध करने आया और फिर कृष्ण और बलराम ने उसको जीता। ऐसे ही जब वह १७ बार जीता गया, तब अटारहवों बार भी यादवों के संग युद्ध करने को उद्यत हुआ। जब यादवों ने उसे फिर युद्ध में परास्त किया, तब वह थोड़ी सेना लिए हुए कृष्ण के संग युद्ध करने लगा। उसी समय कालयवन कोटि सहस्त म्लेक्षों और चतुरंगिनी सेनाओं से युक्त हो मथुरा के पास पहुंचा। कृष्ण ने बिचार किया कि एक ऐसा दुर्गम दुर्ग बनाउरंगा, जहां स्त्री भी युद्ध कर छेगी।

कुषा ने १२ योजन पृथ्वी द्वारिका रचने के लिये समुद्र से मांगी, और उस पर किले से युक्त इन्द्र की अमरावती के समान पुरी बनाई। निदान वह मथुरावासियों को वहां वसा कर मथुरा में आए।

मथुरा के पास सेना एकत्र होने के समय श्री कृष्ण विना शक्ष के मथुरा के बाहर निकले । कालयवन उनके पीछे दौड़ा । दोनों चलते चलते एक महान गृहा में पहुंचे, जहां राजा मुचकुंद सो रहा था । काल यवन ने उसको कृष्ण जानकर एक लात मारी, जिससे राजा जाग उठा । उसके देखने ही से काल-यवन जलकर भस्म हो गया । क्योंकि देवताओं ने राजा को ऐसा बरदान दिया था कि तुमको सोते हुए जो उठावेगा, वह भस्म हो जायगा । राजा मुवकुंद नरनारायण के स्थान में गंधमादन पर्वत पर चला गया । श्री कृष्ण ने कालयवन को मार मथुरा से हस्ती, अश्व, रथ, सब लेकर द्वारिका पुरी में उग्रसेन को अर्पण किया ।

बलदेव जी द्वारिका से गोकुल में आए। वरुण ने द्वन्दावन में विचरते हुए बलदेव जी के जपभोग के लिये बारूणी को भेजा। (८८ वां अध्याय) बल-देव जी ने मदिरापान कर गोप गोपियों के संग आनन्द से सुंदर गीत गाते तथा बाद्य बजाते हुए यमुना नदी को अपने समीप बुछाया। जब यमुना नहीं आई, तब उन्होंने मद से बिह्नल हो, हल को ग्रहण कर यमुना को खीचा। यमुना मार्ग को त्याग जहां बलदेव जी थे, वहां बहने लगी और जब श्वसीर धारण कर कहने लगी कि मुझको छोड़ दो, तब बलदेव ने पृथ्वी में छोड़ कर उसको फैला दिया। बलदेव जी ब्रज में दो मास रहकर द्वारिका में लौट आए उन्होंने रेवत राजा की रेवती नामक पुत्री से ज्याह किया।

(८९ वां अध्याय) विदर्भ देश के कुंडिनपुर के राजा भीष्मक का रुक्मी नामक पुत्र और रुक्मिणी पुत्री थी। रुक्मिणी ने श्री कृष्ण से विवाह की इच्छा की, पर रुक्मी की अनुनित न होने से राजा ने उसका संबंध कृष्ण के साथ ब्लीकार नहीं किया। जरासंध की पेरणा से शिशुपाल से उसके विवाह की वात ठहरी। शिश्यपाल के साथ जरासंध आदि राजा आए। कृष्ण भी वलदेव आदि यादवों के साथ वहां आगए। विवाह से एक दिन पहले श्री कृष्ण भगवान उस कन्या को हर कर बलदेव आदि वंधुओं में आ मिले। पौंड्रक, वंतवक, विद्रथ, शिश्यपाल, जरासंध, शाल्व आदि राजागण कृष्ण को मारने दौड़े। कृष्ण ने चतुरंगिनी सेना को मार रुक्मिणी से विवाह किया।

रुक्मिणी से कामदेव के अंश से पद्मन्न जन्मा, जिसको शम्बर दैत्य हर छे गया था। (९० वां अध्याय) पद्मन्न का पुत्र अनिरूद्ध हुआ, जिसका बिवाह रुक्मी की पोती से हुआ। उस समय बलदेव आदि यादव कृष्ण के संग रुक्मी के नगर में गए। वहां बलदेव और रुक्मी जुआ खेलने लगे। जब जुआ में रुक्मी ने छल किया, तब बलदेव ने उसको मार डाला।

(९१ वां अध्याय) कृषा गरुड़ पर सत्यभामा के संग प्रागण्योत्तिवपुर में गए। उन्होंने वहां वड़ा युद्ध करके भीमाखर और नरकाखर को चक्र से मारा तथा नरकाखर के भवन में सोलह सहस्र एक सौ कन्याओं को देख उनको द्वारि-का में भेज दिया। (९२ वां अध्याय) नरकाखर के यह से लाई हुई स्लियों से द्वारिका में कृषा का विवाह हुआ।

(९३ वां अध्याय) रुक्मिणी के प्रद्युन्न आदि, सत्यभामा के भानु आदि,

रोहिणी के दीप्तिमंत इत्यादि, भद्रविंदा के सांव आदि, नाम्नजिती के कई पुत्र, शैन्या के संग्रामजित आदि पुत्र हुए और लक्ष्मणा और कालिंदी को भी अनेक पुत्र हुए। इसी प्रकार आठों रानियों में हजारों पुत्र जन्मे। सबसे वड़ा हिन्मणी का पुत्र प्रद्युच्न था। पद्युच्च का पुत्र अनिरुद्ध और अनिरुद्ध का पुत्र बज्ज हुआ। अनिरुद्ध ने बल्लि की पोती बाणाखर की पुत्री उत्ता से व्याह किया। उस समय कृष्ण और शिव का घोर युद्ध हुआ इत्यादि।

(९६ वां अध्याय) जब स्वयंवर में सांव ने राजा दुर्योधन की पुत्री को हर लिया; तब कर्ण, दुर्योधन, भीम, द्रोण, आदि ने युद्ध में जीतकर सांव को बांध लिया। बलवेब जी ने हस्तिनापुर में आकर कौरवों से कहा कि जग्मेन राजा की आज्ञा ऐसी है कि सांव को तुम लोग जल्द छोड़ दो। भीम, द्रोण, कर्ण, दुर्योधन आदि बोले कि ऐसा कौन यादव है, जो कुरुबंशी को आज्ञा देगा। जग्रसेन की आज्ञा से हम सांव को नहीं छोड़ेगें। उस समय बलवेब जी ने क्रोध करके मौपल ग्रहण कर हस्तिनापुर को खेंचा। जब सब कौरव दुलित हो कहने लगे कि हे राम आप क्षमा की जिए, तब बलवेब जी शांत हुए। अब भी हस्तिनापुर का पूर्णित आकार देल पड़ता है। अनंतर कौरवों ने सांव को धन और भार्य्या सहित बलवेब को वेदिया।

(९८ वां अध्याय) यादवों के कुमारों ने पिंडारक तीर्थ में स्थित विश्वामित्र, कराव, नारद, आदि ऋषियों के आगे जाम्बवती के पुत्र को स्त्री का
वेष बनाकर कहां कि यह स्त्री पुत्र जनेगी या कन्या। ऐसा कपट बचन छन
मुनिगण बोले कि यह स्त्री मूचल जनेगी। हे राज कुमारो! जैसा होगा, वैसा
तुम देखोगे। इसके पीछे सांव को मूचल पैदा हुआ। राजा उग्रसेन ने मौंचल
को चूर्ण कर समुद्र में फेंकवा दिया। वह चूर्ण समुद्र की लहरों से किनारे पर
लगा और उसके ग्रेष भाग कील को एक मछली निगल गई। मछली को लुज्यक
पकड़ ले गया।

श्री कृषा ने रात दिन पृथ्वी आकाश में उत्पात देख यादवों से कहा कि उत्पातों की शांति के छिये समुद्र पर चलो। सब यादव कृषा और राम सहित प्रभास क्षेत्र में गए। निदान जब कुकुर और अंधक वंशी यादव प्रसन्न हो आनंद से मदपान करने लगे, तब नाश करने वाली कलहरूपी अग्नि उत्पन्न हुई। बज्रभूत लकड़ी को ग्रहण कर सब परस्पर लड़ मरे। प्रद्युम्न, सांव, कृतवम्मी, सात्यकी, अनिरुद्ध, अकूर, आदि सब वज्ररूपी सरों से परस्पर युद्ध करके हत हुए। कुष्ण ने भी कुपित हो उनको बहुत मुक्के मारे। बलदेव जी ने बोष यादवों को मूषल से मारा।

जब बलदेव जी ने द्रक्ष के नीचे आसन प्रहण किया और उनके मुख से एक महासर्प निकल समुद्र में प्रवेश कर गया। तब कुष्ण ने दारुक सारथी से कहा कि मैं भी इस शरीर को त्यागूंगा और संपूर्ण नगर समुद्र में डूवेगा, इसलिये द्वारिका में रहना उचित नहीं है। तुम जाकर अर्जुन से कहो कि अपनी शक्ति भर जनों का पालन करे। जब दारुक ने जाकर कुष्ण का संवेशा कहा, तब द्वारिका वासियों ने अर्जुन और यादवों सहित आकर कुष्ण को नमस्कार किया और जैसा कुष्ण ने कहा, वैसाही उन्होंने किया।

श्री कृष्ण पैरों को पैरों से मोड़ कर योग में युक्त हुए, उस समय जरा नामक लुच्यक मूपलावशेष लोहे की कील सहित वहां आया। उसने मृग के आकार वाले पैरों को देख उसको तोमर से बेधा; पीछे भगवान को देख उसने कहा कि है प्रभो पैंने हरिण की शंका करके विना जाने ,यह काम किया है, आप क्षमा कीजिए। जब भगवान प्रसन्न हुए, तब आकास मार्ग से एक बिमान आया; लुब्धक उस में बैठ स्कर्ण को गया। कृष्ण भगवान ने मनुष्य श्वरीर को त्याग दिया। (९९ वां अध्याय) कृष्ण बलदेव तथा अन्यों के श्वरीर को त्याग दिया। (९९ वां अध्याय) कृष्ण बलदेव तथा अन्यों के श्वरीर के साथ अग्नि में प्रवेश किया। रेवती बलराम की देह सहित सती हुई। उग्रसेन, बखदेव, देवकी और रोहिणी भी ऑग्न में जल गई। अर्जुन ने यथा विधि से सब का मेत कर्म किया। जिस दिन कृष्ण भगवान स्वर्ग को गए, उसी दिन कल्युग उत्पन्न हुआ। समुद्र ने उग्रसेन के गृह को छोड़ कर समस्त द्वारिका को हुवा दिया।

अर्जुन ने समुद्र के पास बहुत से धान्य सहित सब जनों का बास कराया। आभी रों ने सलाह की कि यह धनुष बाण वाला अर्जुन ईश्वर को मार कर स्त्रियों को ले जाता है; सहस्रों आभीर अर्जुन के पीछे दौड़े। अर्जुन कष्ट से धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने लगे, पर चढ़ाने से उनका मन सिथिल हो गया। फिर अर्जुन ने शरों को छोड़ा, पर वे भेदन न कर सके। निदान अर्जुन के वेखते देखते प्रमदोत्तमा स्त्रियें आभी रों के साथ चली गई। अर्जुन रोदन करने लगे। उसी समय अर्जुन के धनुष, अस्त्र, रथ, और घोड़े चले गए।

अर्जुन ने इदंगस्थ में अनिरुद्ध को राजतिलक दे, हस्तिनापुर में जाकर युधि-ष्टिर आदि पांडवों से सब द्वतांत कह छनाया । पांडव लोग हस्तिनापुर का राजित्लक परीक्षित को देकर बन को चले गए।

ब्रह्मबैवर्त्त पुराण—(कृष्णजन्मखंड, ५४ वां अध्याय) श्री कृष्ण ने ब्रह्मबैवर्त्त पुराण—(कृष्णजन्मखंड, ५४ वां अध्याय) श्री कृष्ण ने बर्स्चिव के प्रभास के यह में राधिका का दर्शन किया । उस समय राधिका का वियोग १०० वर्ष पूर्ण होने पर श्रीदामा का शाप मोचन हुआ । फिर कृष्णचन्द्र राधिका सहित वृन्दाबन में गए और वहां १४ वर्ष राधिका सहित रास मंडल में रहे । कृष्ण भगवान ११ वर्ष बाल अवस्था में नन्द के गृह, १०० वर्ष मथुरा और द्वारिका में और १४ वर्ष अंत के रास मंडल में रहे । इस तरह से १२५ वर्ष पृथ्वी में रह कर कृष्ण भगवान गोलोक में चले गए।

श्रीमद्भागवत—(११ वां स्कन्ध-६ वां अध्याय) कृष्ण जी १२५ वर्ष मृत्युलोक में रहे।

इतिहास—मथुरा बहुत पुराना शहर है। चीन का रहने वाला यात्री फाहियान सन ४०० ई० में मथुरा आया था। उसने कहा है कि मथुरा बौद्धों का मधान स्थान है। हुएंत्संग यात्री उससे २५० वर्ष बाद आया था, वह कहता है कि मथुरा में २० बौद्धमठ और ५ देवमन्दिर हैं।

सन १०१७ ई० में गजनी का महमूद मथुरा में आया । उसने यहां २० दिन रह कर शहर को जलाया और मन्दिरों के बहुत असबाब लूट छे गया। सन १५०० में खलतान सिकंदर लोदी ने पूरी तरह से मथुरा को लूटा। सन १६३६ में शाहजहां ने मधुरा की वेवपूजा उठा वेने के लिये एक वर्गनर नियत किया। सन १६६९-१६७० में औरंगजेब ने शहर के बहुतेरे मन्दिर और स्थानों को नष्ट किया। सन १७५६ में अहमदशाह के आधीन २५००० अफगान घोड़सवार एक तिहवार पर मथुरा में आए, उन्होंने सब यात्रियों को बड़ी निर्वयता से मारा और बहुतेरों को कैंदी बना लिया।

/ वृन्दावन ।

+ मथुरा से ६ मील उत्तर यमुना नदी के दिहने किनारे पर वृन्दावन एक स्युनिस्पिल कसवा और प्रख्यात तीर्थ-स्थान है। मथुरा के छावनी-स्टेंशन से ८ मील की रेलवे शाखा वृन्दावन को गई है, जिस पर छावनी स्टेशन से २ मील उत्तर मथुरा शहर का स्टेशन है; जहां वृन्दावन के जाने वाले यात्री रेल-गाड़ी में बैठते हैं।

् इस साल की जन-संख्या के समय वृन्दाबन में ३१६११ ममुख्य थे; अर्थात १६३६९ पुरुष औ १५२४२ स्त्रियां। जिन में ३०५२१ हिन्द्, ९७६ मुसल-मान, ६५ जैन, २७ सिक्ख और २२ क्रस्तान थे।

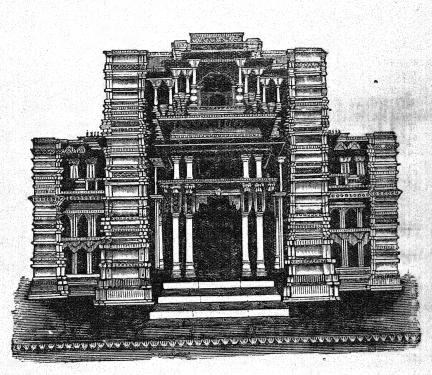
्कालीदह को यमुना ने छोड़ दिया है। नीचे लिखे हुए मन्दिरों के अति-रिक्त वृन्दावन में शाहजहांपुर वाले का बनवाया हुआ राधागोपाल का मन्दिर, दिकारी की रानी का बनवाया हुआ इन्द्रिकशोर का मन्दिर और दूसरे छोटे बड़े बहुत मन्दि हैं। जो मनुष्य ब्रज में वास करना, था उसी में जन्म विताना चाहते हैं, वे वृन्दावनहीं में निवास करते हैं। यहां कई सदावर्त लगे हैं बहुतेरे पत्थर के मकान बने हैं। वृन्दाववन के पड़ोस में महारानी अहिल्याबाई की बनवाई हुई लाल पत्थर की एक बावली है, जिसमें ५७ सीदियां बनी हैं।

†श्रावण मास के शुक्क पक्ष के आरंभ से पूर्णिमातक मन्दिरों में झूळन का बड़ा उत्सव होता है। उस समय हजारों यात्री दर्शन के लिये दृन्दावन में आते हैं। कार्तिक, फाल्गुन और चैत्र में भी यात्रियों की भीड़ होती हैं। ✓ दृन्दावन में जिस स्थान पर वड़े बड़े मन्दिर और मकान बने हैं, वहां ५०० वर्ष पहले जंगल था। सन इस्बी की सोलहवीं और सत्रहवीं सदी के बने हुए ४ बड़े मन्दिर हैं। गोविंदवेव जी, गोपीनाथ, युगलिकशोर और मदन मोहन का। नए मन्दिरों में रंगजी का मन्दिर, लाला बावू का बनवाया हुआ मन्दिर, ग्वालियर के महाराज वाला मन्दिर और शाह विहारीलाल का मन्दिर अत्युतम दर्शनीय हैं। गोपी श्वर महादेव बहुत पुराने समय के हैं।

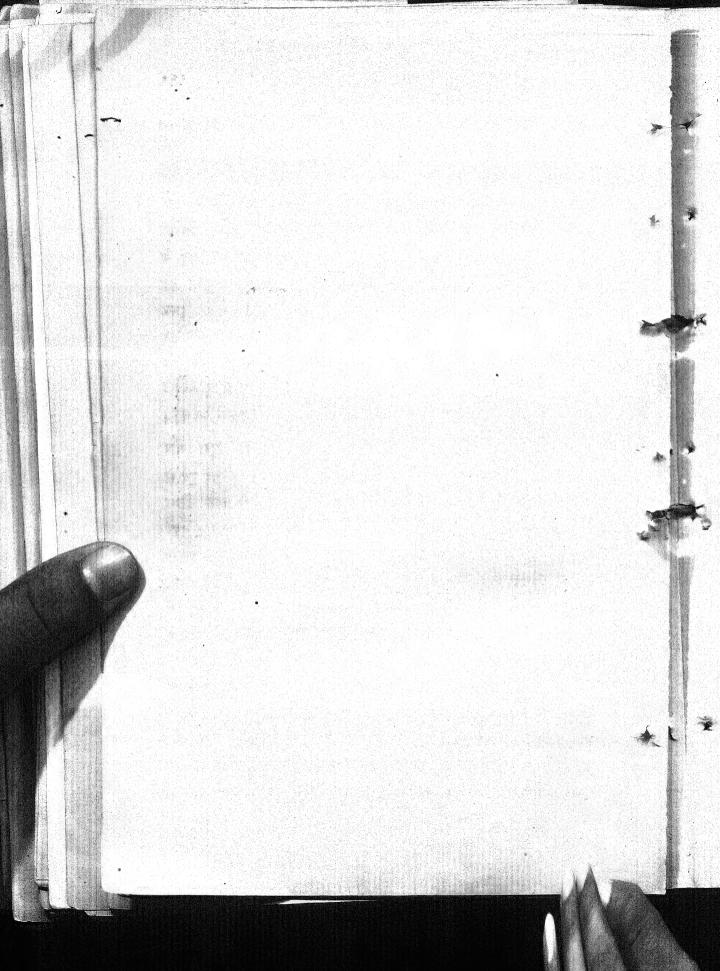
गोविंदिवजी का मंदिर—वृन्दावन कसवे में प्रवेश करने पर बांई ओर लाल पन्थर से बना हुआ गोविंदवेबजी का विचित्र मन्दिर वेख पड़ता है। यह मन्दिर अपने ढब का एकही है, जिसकी शिल्पविद्या और बनावट को देख यूरोपियन लोग चिकत हो जाते हैं। यद्यपि यह बहुत बड़ा नहीं हैं, तथापि इस का मेकदार प्रतिष्ठा के लायक है। वाहरी ओर से ठीक नहीं जान पड़ता कि किस तरह से इसके पूरे करने का इरादा किया गया था। इसके ऊपर ५ टावर थे, जो नष्ट हो गए हैं।

जगमोहन के पश्चिम बगल पर पूर्वमुख का निज मन्दिर है, जिसे में गो-विंददेवजी की मूर्ति थी और अब विना प्राणप्रतिष्ठा की देवमूर्तियों का पूजन एक बंगाली ब्राह्मण की ओर से होता है। मन्दिर के पीछे के दोनों कोनो के समीप शिखर टूटे हुए २ मन्दिर है।

जगमोहन लगभग १७५ फीट लंबा और इतनाहीं चौड़ा तीन तरफ खुला हुआ अपूर्व बनावट को है। इसका मध्यभाग पिश्रम से पूर्व तक, ११७ फीट और दक्षिण से उंतर तक १०५ फीट लम्बा है। जगमोहन ४ भागों में विभक्त है। मन्दिर के समीप के हिस्से में छत के नीचे उत्तर और दक्षिण वालाखाने हैं। इसके पूर्व का भाग बहुत ऊंचा उत्तर और दक्षिण को निकला हुआ है, जिसमें छत के नीचे वालाखाने हैं। इससे पूर्व वाले भाग में छत के नीचे दो मंजिले वालाखाने हैं, और इससे भी पूर्व अंत वाले भाग में पश्चिम के अतिरिक्त ३ ओर वालाखाने हैं। छत के नीचे के संपूर्ण वालाखाने इस दब से बने हैं कि उनमें बैठ कर बहुत आदमी जगमोहन के भीतर का उत्सव वा नाच उपर से देख सकें। अङ्गरेजी सकीर ने ३८००० रुपया लगा कर, जिसमें



ब्रन्टावनमें गोबिन्टदेवजीका मन्दिर।



जयपुर के महाराज ने ५००० रूपया दिया, हाल में इस मन्दिर को दुरुस्त करवाया है।

्र प्रस्वामी नामक एक बैंष्णव जब नन्द गांव में गौओं के लिये खिड़क बनवा रहे थे, उस समय खोदने पर एक मूर्ति मिली, जिसका नाम गोन्दि-वेवजी कहा गया। वह मूर्ति पीछे हृन्दावन में लाई गई। रूप स्वामी और सनांतन स्वामी दोनों बैंष्णवों के प्रवन्ध से आंवेर के राजा मानसिंह ने सन १५९० ईस्वी में इस मन्दिर को बनवाया और इसमें गोविन्दवेवजी की मूर्ति की स्थापना की। पीछे दुष्ट औरक्षजेव ने इस मन्दिर के तोड़ने का हुक्म दिया, मन्दिर के उपर का हिस्सा तोड़ दिया गया। उस समय राजा मानसिंह के बंश के लोग गोविन्दवेवजी को आंवेर में ले गए सवाई जयसिंह ने जब आंवेर को छोड़ कर अपनी राजधानी जयपुर बनाई, तब जयपुर में राजमहल के सामने एक उत्तम मन्दिर बनाकर उसमें गोन्दिवेवजी की मूर्ति स्थापित की।

रङ्गा का मन्दिर—यह मन्दिर द्रविड़ियन ढाचे का मधुरा और प्रत्यावन के संपूर्ण मन्दिरों से विस्तार में बड़ा और मिस है। यह पूर्व से पश्चिम को लगभग ७७५ फीट लम्बा और उत्तर से दक्षिण ४४० फीट चौड़ा पत्थर से बना है। गोपुरों में चारो ओर मूर्तियां बनी हैं। मन्दिर से पूर्व एक बड़ा घेरा है, जिस में बैरागी लोगों के रहने के मकान हैं। और पश्चिम एक दूसरा घेरा है, जिसमें भोजन वा सदावर्त्त के समय कंगले एकत्र होते हैं, तथा, गाड़ी और एक्के खड़े होते हैं। मितिदिन लगभग १०० आदमी मन्दिर में खिलाए जाते हैं। अनार्य लोग और नीच जाति के हिन्दू मन्दिर के कोट के भीतर नहीं जाने पाते हैं।

्रें (नं०१) रंग जी का निज मन्दिर पत्थर की ३ दीवारों से घेरा हुआ है। सबसे भीतर के घेरे के आंगन में पूर्व मुख का छतदार मन्दिर है, जिसमें तीन देवड़ी के भीतर रंग जी की मनोहर मूर्ति है। जिसके समीप धातु विग्रह कई एक चल मूर्तियां हैं, जो उत्सवों के समय फिराई जाती हैं। मन्दिर से आगे उत्तम जगमोइन है, जिसके स्तंभों में पुतलियां बनाई हुई हैं और फर्श में

मार्बुछ के उनले और नीले तखते लगे हैं। समय समय पर मन्दिर का पट खुलता है। जगमोहन से रंगजी की झांकी होती है। आंगन के चारो वगलों पर मन्दिर और मकान वने हैं, जिनके आगे दालान हैं। पूर्व और पश्चिम के दालानों में आठ आठ और उत्तर और दक्षिण के दालानों में चौबीस चोबीस खंभे लगे हैं। पत्येक खंभो में आठ पुतली बनी हैं। निज मन्दिर की परिक्रमा करते हुए इस कम से देवता मिलते हैं। दक्षिण शिखरदार छोटे मन्दिर में दाऊजी; एक मकान में हसिंह जी और खदर्शन चक्र हैं, उत्तर के मकानों में वेणुगोपाल, सत्यनारायण, सनकादिक, राम लखन और जानकी, बदरी नारायण; शिखरदार छोटे मन्दिर में रामानुज स्वामी और सेठ जी के गुरु रंगाचार्य स्वामी हैं। जगमोहन के आगे ६० फीट ऊंचा ध्वजास्तंभ है, जिस पर तांबे का पत्तर जड़कर सोने का मुलम्बा किया हुआ है। घेरे के पूर्व और तीन मंजिला गोपुर है।

्रांवर २) दृसरे घेरे में चारो बगलो पर अनेक मकान और मकानों के आगे ओसारे हैं। पश्चिम-दक्षिण के कोने के पास शिखरदार मन्दिर में राम और लक्ष्मण और पश्चिमोत्तर के कोने के पास शिखर वाले मन्दिर में सयन रंगजी वा पौढ़ानाथ हैं। द्राविड़ के श्री रंगजी के मन्दिर की रीति से इसमें मूर्तियां हैं। रंगजी शेषशायी भगवान शयन करते हैं। इनके पायताबे और मुकुट सोनहरे हैं। पास में लक्ष्मी और ब्रह्मा हैं। आगे ३ उत्सव मूर्तियां हैं। मंदिर से पूर्व ४८ स्तंभो का दालान है। इस घेरे के पश्चिम बगल पर ९० फीट ऊंचा ७ खन का गोपुर और पूर्व बगल पर ८० फीट ऊंचा ५ खन का गोपुर है।

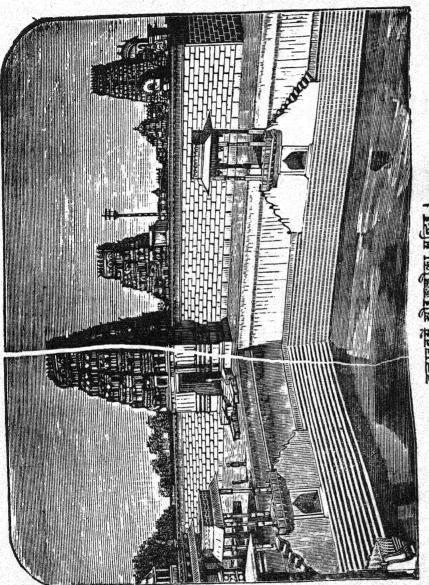
(३) बाहर वाले तीसरे घेरे में चारो बगलों पर कोटरियां और कोटरियों के आगे ओसारे हैं। पूर्व ओर मन्दिर के बांप सरोवर, दिहने छोटा उद्यान, और दोनों के मध्य में गोपुर के सामने १६ स्वंभो पर मुख्बा मंडप है। घेरे के पूर्व बगल पर एक खन का गोपुर, पश्चिम बगल के मध्य भाग में ९३ फीट ऊंचा मधान फाटक और दोनों कोनों के पास मकान है।

मथुरा के मणिराम के पुत्र (पारिख जी के दत्तकपुत्र) छपसिद्ध सेट छक्ष्मी

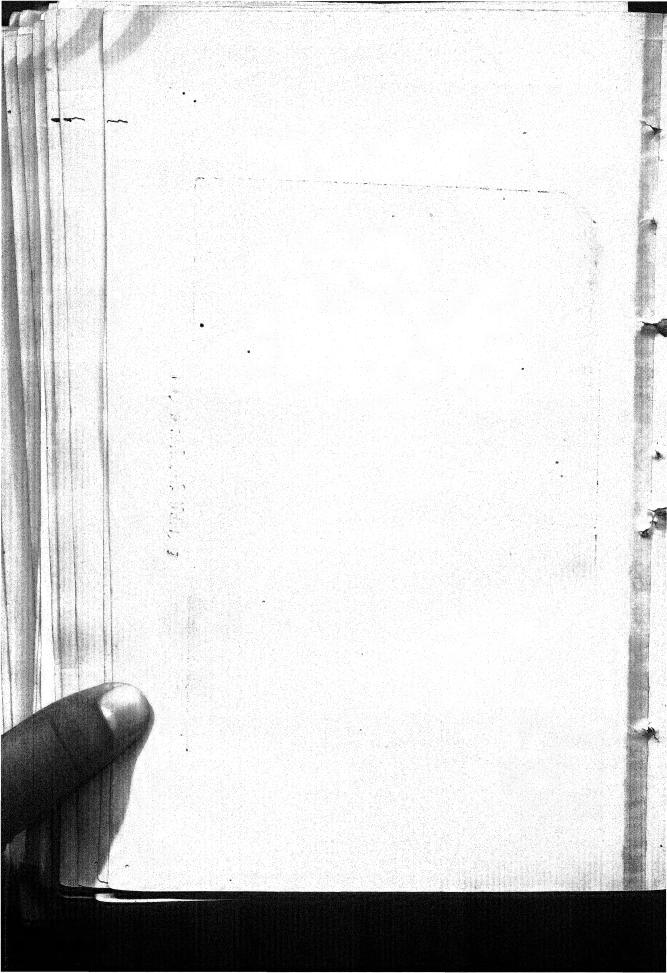
चन्द् थे, जिनके अनुज सेठ राधाकुण्ण और सेठ गोविंददास ने ४५००००० हिएए के खर्च से इस मन्दिर को बनवाया; जिसका काम सन १८४५ ईस्बी में आरंभ और सन १८५१ में समाप्त हुआ। सेठों ने भोग राग, उत्सव, मेला, आदि मन्दिर संबंधी खर्च के लिये ५३ हजार रुपये बचत का प्रबंध जो ३३ गांवों से आता है, कर दिया। पश्चात् इन्होंने मन्दिर की संपत्ति को अपने गुरु रंगाचार्यं को दानपत्र द्वारा वे दिया। स्वामी रंगाचार्य्य ने एक वसीयतनामा लिख कर मन्दिर के प्रबंध के लिये एक कमीटी नियत कर दी। कमीटी द्वारा मन्दिर का प्रबंध होता है। कमीटी के प्रधान सेठ राधाकुष्ण के पुत्र सेठ लक्ष्मण दास सी० आई० ई० हैं।

निर्वाव चैत्र में मन्दिर के पास ब्रह्मोत्सव नामक मेला होता है, जिसको रथ का मेला भी कहते हैं। चैत्र बदी २ से १२ तक रंग जी की चल प्रतिमा प्रतिदिन भिन्न भिन्न सवारियों पर निकलती हैं और विश्राम-बाटिका तक जाती है। सोने का सिंह, सोने की स्व्यंप्रभा, चांदी का हंस, सोने का गरुड़, सोने का हनुमान, चांदी का शेष, कल्पह्रक्ष, पालकी, शार्टूल, रथ, घोड़ा, चंद्रप्रभा, पुष्पक विमान आदि नाना रंग, नाना भांति की सवारी निकलिती हैं। काष्ट्र का खन्दर रथ बुर्ज सा उंचा बना है। पौष खदी ११ से माघ बदी ५ तक रंग जी के मन्दिर में बैंकुण्डोत्सव की बड़ी धूम धाम रहती है।

200



द्वत्वनमें शैरङ्गीका मन्दि।



्र लाला बाबू का मन्दिर—रङ्गजी के मन्दिर के उत्तर बङ्गाली का-यस्थ लाला बाबू का बनवाया हुआ एक उत्तम मन्दिर है, जो सन १८१० ई० में बना। मन्दिर और जगमोहन पत्थर के हैं। इन के शिखर उजले मार्बुल के और फर्श उजले और नीले मार्बुल के हैं। मन्दिर में कृष्ण चन्द्र की श्यामल मृति जामा और पगड़ी पहने हुई है, जिसके बाएं लहंगा पहने हुई राधा और दिहने लिलता खड़ी हैं। मन्दिर के आगे छोटी फुलवाड़ी और चारो तरफ दीवार है। यहां राग भोग की बड़ी तथ्यारी रहती है। बहुत लोग भोजन पाते हैं।

गवालियर के महाराज का मन्दिर—लाला बाबू के मन्दिर से थोड़ा उत्तर २२५ फीट लम्बे और १६० फीट चौंड़े घेरे में ग्वालियर के महाराज का उत्तम मन्दिर है, जिसको ब्रह्मचारी जी का मन्दिर भी कहते हैं। कोई कोई राधागोपाल का मन्दिर कहते हैं। निज मन्दिर के ह द्वार हैं। बीच के द्वार से राधागोपाल की दहिने के द्वार से इंसगोपाल, नारद और सनकादिक की; और मन्दिर के वाएं के द्वार से हत्यगोपाल और राधाकृष्ण की मनोहर मूर्तियों की झांकी होती है। मन्दिर के आगे लम्बा चौड़ा दो मंजिला उत्तम जगमोहन है, जिसमें ३६ जगह स्तंभ लगे हैं। किसी किसी जगह दो दो और किसी किसी जगह चार चार खंभे लगे हैं। कंपूर्ण खंभों में महराब हैं। जगमोहन का फर्श उजले और नीले मार्चुल के टुकड़ों से बना है, जिस पर रात्रि में रासलील होती है। उपर छत के नीचे चारो तरफ बालाखाने हैं। घेरे के चारो वगलों पर मक्कान और उनके आगे दालान हैं।

्रिग्वालियर के मृत महाराज जयाजी राव ने सन १८६० ई० में ४००००० रुपये के खर्च से ब्रह्मवारीजी द्वारा इस मन्दिर को बनवा कर मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा करवाई। मन्दिर के आगे ब्रह्मचारी जी की शिलामूर्ति है।

+ गोपेश्वर महादेव-ग्वालियर के मन्दिर से उत्तर एक मंदिर में लिंग-स्वरुप गोपेश्वर महादेव हैं, जिनकी पूजा जल, पुष्य, बेलपत्र, आदि से यात्री लोग करते हैं। वंशीवट—गोपेश्वर से आगे जाने पर एक छोटा पुराना वटहक्ष पिछता है, जिसके समीप एक कोटरी में कृष्ण की मूर्ति और रासछीछा के चित्र हैं।

राम लखन का मन्दिर—आगे जाने पर यह मन्दिर मिलता है। मन्दिर का फर्च उजले और नीले मार्बुल का है आंगन के तीनो बगलों पर दो मंजिले मकान हैं। मथुरा के सेठ ने रङ्गजी के मन्दिर से पहिले इस मन्दिर को बनवाया

गोपीनाथ का मंदिर—आगे जाने पर गोपीनाथ का पुराना मंदिर मिलता है, जिसकों कच्छ वाले राय सीतल जी ने (जो बादशाह अकबर के
आधीन एक अफसर थे) सन १५८० ई० में बनवाया। मन्दिर सुंदर है, परन्तु
पुराना होने से इसके कंगूरे और जगह जगह के पत्थर गिरते जाते हैं। गोपीनाथ के दहिनी ओर राधा और वाई ओर लिलता की मूर्ति हैं।

्रइसके समीप गोपीनाथ का नया मन्दिर है, जिसको सन १८२१ ई० के एक बङ्गाली नन्दकुमार बोस ने बनवाया। मन्दिर सुंदर है। पूर्वोक्त पुराने मन्दिर के समान इसमें भी तीनों मूर्तियां हैं। दोनों मन्दिरों में बङ्गाली पुजारी और अधिकारी हैं।

शाह विहारी छाल का मन्दिर—वीरहरन घाट से पूर्व लिलतिकुंज नामक अति मनोहर राधारमण का मन्दिर है, जिसको लखनऊ के शाह विहारी-लाल के पौत्र शाह कुंदनलाल ने १०००००० रुपये के खर्च से बनवाया।

पन्दिर दक्षिण से उत्तर को १०५ फीट लम्बा पूर्व मुख का है, जिसमें ४ कमरे वने हैं। दक्षिण के कमरे में भगवान का सिंहासन और बैठकी इत्यादि शीशे की सामग्री हैं। इससे उत्तर के कमरे में राधारमण की सुंदर मूर्ति है, जिसके उत्तर मुख्या जगमोहन बना है। जिसके चारो ओर तीन तीन दरवाजे हैं, जिनके वीच की दीवारों में कई एक रंग के बहुमूल्य पत्थर के टुकड़ों की पची कारी कर के मूर्तियां बनाई गई हैं। मन्दिर की तरफ के तीनों द्वारों के

किवाड़ों में छनहरे चित्र और छनहरी ६ मूर्तियां और उत्तर वाळे तीनों द्वारों के किवाड़ों में छनहरे काम और छनहरे ६ मोर बनाए गए हैं। भीतर की दीवार और फर्ज मार्बुळ के हैं। दीवार के ऊपर छत के नीचे १२ पुतळी बनी हैं। इससे उत्तर का चौथा कमरा तीनों कमरो से छम्वा है, जिसको वसंत कमरा कहते हैं। उत्सवों के समय भगवान की उत्सव मूर्तियां अर्थात चल मूर्तियां इसमें बैठाई जाती हैं। इसमें कांच जीन्नों के उत्तम सामान भरे हैं। वड़े वड़े २१ झाड़, २० दीवालगीर, १३ बैठकी, दीवार के पास ५ वहुत बड़े और ४ इनसे छोटे आइने हैं, इनके अतिरिक्त छोटे बहुत दीवालगीर और बैठकी हैं। इसके पूर्व ५ दरवाजे हैं। सम्पूर्ण दरवाजे वन्द रहते हैं। सर्वसाधारण इसको नहीं देख सकते।

चारो कमरों के पूर्व बगल पर वड़ा दालान है, जिसमें श्वेत मार्चुल के बड़े और मोटे १२ गोलाकार और १२ ऐटुएं नकाशी के उत्तम स्तंभ लगे हैं। दालानकी दीवार और फर्श भी श्वेत मार्चुल से बने हैं। दालान के उत्तर भाग के फर्श पर श्वेत और नीले मार्चुल की पचीकारी कर के शाह विहारी लाल के घराने की ९ मूर्तियां बनाई हुई हैं। (१) शाह विहारीलाल (२) इनके पुत्र गोविंदलाल (३) इनकी ब्ली (४) इस मन्दिर के बनाने वाले गोविंदलाल के बड़े पुत्र शाह कुंदनलाल (५) कुंदनलाल की ब्ली (६) कुंदनलाल के छोटे भाई फुंदनलाल (७) कुंदनलाल की ब्ली (८) फुंदनलाल के पुत्र माधवीशरण और (९ वीं) कुन्दनलाल की पुत्री। शाह विहारीलाल की संतानों में से अब कोई नहीं है। माधवीशरण की पत्री वर्तमान है, जो बहुधा यहांही के मकान में रहा करती हैं। दालान के उपर १७ पुतलियां और दोनों बालुओं पर मार्चुल के बड़े बड़े २ सिंह हैं। दालान के दक्षिण भाग में ९ हाथ लम्बी और ४ हाथ चौड़ी मार्चुल की चौकी है।

त्रांखान से पूर्व मार्बुल का फर्ज लगा है, जिसके दोनो ओर अथीत मंदिर के दिहने और वाएं फव्वारे की कल है। जिनके उत्तर और दिक्षण मार्बुल के छोटे छोटे एक एक मंडप हैं, जिनके पूर्व पत्थर के बनेहुए आठ पहले दो मंजिले एक एक मंडप हैं। जिनके उपर आठ आठ पुतली बनी हैं। चारों कमरों के पश्चिम बगल पर पत्थर के उत्तम स्तंभ लगे हुए दोहरे दा-लान हैं, जिससे पश्चिम पत्थर के सड़के बाना हुआ छोटा उद्यान है। उधान से पश्चिम यमुना के किनारे तक बड़ा मकान है।

ेचीरहरण घाट─शाहजी के भिन्दर के पीछे यसना के किनारे पत्थर से बांधा हुआ चीरहरण घाट है, जिस पर यात्री गण स्नान करते हैं । घाट पर पाकर के द्वक्ष के समीप एक दूसरी तरह के कवंब का पुराना बृक्ष है, जिस की शाखों पर कपड़े के कई एक टुकड़े छटकाए गए हैं ।

मैदनमे। हन जी का मन्दिर — यह मन्दिर एक घाट के समीप दो वृक्षों के नीचे ६५ फीट ऊंचा है। मन्दिर पर बहुतेरे सपीं के सिर बने हैं। मन्दिर, में अब एक शालग्राम और दो चरणचिन्ह हैं। मदनमोहन जी की मूर्ति को सनातन-स्वामी लाए थे, जो अब मेवाड़ प्रवेश के कांकरौली में है।

+ युगलिकशोर का मन्दिर—केशीघाट के समीप युगलिकशोर का मन्दिर है, जिसको सन १६२७ ई० में नंदकरण चौहान ने बनवाया।

सेवाकुंज — बड़े घेरे ने भीतर बहुत प्रकार की छताओं का जंगछ और तमाछ आदि के बहुतेरे पुराने वृक्ष हैं। घेरे के भीतर एक छोटे मन्दिर में श्रीकृरण आदि की मूर्तियां हैं। समय समय पर मन्दिर का पट खुछता है। एक पुजारी बही छिये वैठा रहता है, जो यात्री दो चार आने देता है, उसका नाम वह अपनी बही में छिख छेताहै। दूसरे स्थान पर छिछताकुंड नामक बावछी है, जिसमे एक ओर पानी तक सीदियां हैं। इस कुंज में सैकड़ों बन्दर रहते हैं, जिनको यात्रीगण चने वा मिठाई खिछाते हैं।

सेवाकुंज के दरवाजे से बाहर एक मन्दिर में बनविहारी जी की मूर्ति हैं। आगे जाने पर एक मन्दिर में दानविहारी जी का दर्शन होता है।

√ जयपुर के महाराज का मन्दिर—मधुरा से वृन्दावन जाने वाली पकी सड़क के बाएं बगल पर वृन्दावन कसवे के बाहर यह वृहद मन्दिर बनरहा है, जो तय्यार होने पर भारत के उत्तम मन्दिरों में से एक होगा। इसका नाम जयपुर के वर्तमान महाराज सवाई माधवसिंह के नाम से माधवविलास पड़ा है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—ब्रह्मवैवर्त पुराण—(कृष्णजन्मखंड, ११ वां अध्याय) सत्ययुग में केदार नामक राजा था, जो जैगीषव्य ऋषि के उपदेश से अपने पुत्र को राज्य दे बन में गया और बहुत काल पर्यंत तपस्या कर के गोलोक में चला गया। केदार की वृन्दा नामक पुत्री कमला के अंश से थी। उसने किसी से विवाह नहीं किया और ग्रह को छोड़ बन में जाकर तपस्या करने लगी। सहस्र वर्ष तपस्या करने के उपरांत कृष्ण भगवान प्रकट हुए। वृन्दा ने यही वर मांगा कि मेरे पित आप होइए। इस पर कृष्ण ने कहा अच्छा। तब वृन्दा ऐसा बर दान ले कृष्ण के सहित गोलोक में गई। जिस स्थान पर वृन्दा ने तप किया, वही स्थान वृन्दावन नाम से प्रसिद्ध हो गया।

पद्मपुराण—(पातालखंड, ६९ वां अध्याय) ब्रह्मांड के ऊपर अत्यन्त दुर्छभ नित्य रहने वाला विष्णु भगवान का वृन्दावन नामक स्थान है। बैंकुंठ आदिक स्थान उसके अंश के अंश हैं। वही अपने अंश से भूतल पर भी वृन्दा वनहीं के नाम से प्रसिद्ध है। वृन्दावन यम्रुना के दक्षिण ओर है। इसमें गो-पेश्वर नामक शिवलिंग स्थापित है। वृन्दावन नाशरहित गोविंद्वेव जी का परम पिय स्थान है।

(७० वां अध्याय) १६ मक्कतियां कृष्णचन्द्र जी को अति पिय हैं।
१ राधा २ लिलता ३ भ्यामला ४ धन्या ५ हरिपिया ६ विशाला ७ शैन्या
८ पद्मा ९ क्रमणिका १० चारुचंद्रावती ११ चंद्रावली १२ चित्ररेला १३ चंद्रा
१४ मदन स्नुन्दरी १५ पिया और १६ वीं चंद्ररेला। इन सवों में वृद्रावन की
स्वामिनी राधाजी और चंद्रावली गुण, संदरता और रूप में समान है।

(७५ वां अध्याय) भगवान ने कहा, वृदावन में रहने वाले पशु पक्षी कीटादि सब देवता हैं। जो कोई इसमें वसते हैं, सब मरने पर हमारे समीप जाते हैं। ५ योजन वर्गीत्मक में संपूर्ण वृदावन हमारा इप है।

श्चित्रपुराण—(८ वां खंड-११ वां अध्याय) मथुरा (देश) में गोपेश्वर

शिवर्लिंग है, जिसकी पूजा से गोपों को अति छख माप्त हुआ।

बाराहपुराण—(१४७ वां अध्याय) वृन्दावन विष्णु का सदा प्यास है। जो मनुष्य वृन्दावन और गोविंद का दर्शन करते हैं, उनकी उत्तम गति होती है।

(१५० वां अध्याय) वाराहजी ने कहा, जहां हम (अर्थात कृष्ण) ने गौओं और गोप वालकों के साथ अनेक भांति की कीड़ा की है, वह दृन्दावन क्षेत्र है। जो दृन्दावन में प्राण त्यागता है, वह विष्णुलोक में जाता है। दृन्दा-वन में जहां केशी अछर मारा गया, वहां केशीतीर्थ है; उसमें स्नान करने से शत्वार गंगास्नान करने का फल होता है। और वहां पिंडदान देने से गया के समान पितरों की तृष्ति होती है। दृन्दावन में द्वादशादित्य तीर्थ है। वहांही हमने कालीय सर्प का दमन किया था और स्वर्थ को स्थापित किया।

श्रीमद्भागवत—(दशमस्कंन्ध-११ वां अध्याय) जब गोकुल में बड़े उत्पात होने लगे, तब गोकुलवासी वृन्दावन में आ बसे ।

(१६ वां अध्याय) दृन्दावन के कालीदह में कालीनाग के रहने से उसका जल खीलता था। वहां कोई दृक्ष नहीं उहर सकता, केवल एक कदम का अविनाशी दृक्ष वहां था। एक समय गरुड़ अपने मुखमें अमृत लिए हुए उस दृक्ष पर आ बैठा, उसकी चोंच से अमृत का एक बूंद दृक्ष पर गिर पड़ा था; इसिलिये उस पर कालीनाग का विष प्रवेश नहीं करता। एक दिन कुष्ण जी कदम के दृक्ष पर चढ़ कालीदह में कूद पड़े। कालीनाग कोध करके दौड़ा। कुष्ण ने उसके सिर का मर्चन करके काली सर्प को कालीदह से निकाल दिया। उसी दिन से वहां का यमुनाजल अमृत के समान हो गया (आदि ब्रह्मपुराण के ७८ वें अध्याय में भी यह कथा है)।

(२२ वां अध्याय) कृष्ण जी वंशीवट जाकर ग्वाल बालों के साथ गौ चराने लगे।

व्रह्म वैवर्त्तपुराण—(कृष्णजनमत्वंड-२७ वां अध्याय) व्रज की मोपियों ने एक मास दुर्गा के स्तव पढ़ कर व्रत किया और व्रत समाप्त के दिन नाना विधि और नाना रंग के वस्तों को यमुना तट में रख कर स्नान के लिये जल में नंगी पैठीं, और जल कीड़ा करने लगीं। कृष्ण के सखाओं ने उन वस्तों को लेकर दूर स्थान पर रख दिया। श्री कृष्ण कुछ वस्त्र ग्रहण करके कदम्ब के दक्ष पर चढ़ गए। गोपीगण बिनय पूर्वक कृष्ण से बोलीं कि वस्त्र देदों। उस समय जब श्रीदामागोप वस्तों को दिखाकर फिर भाग गया, तब राधा की आज्ञा से गोपियां जल से बाहर हो गोपों के पीछे धावती हुई वस्त्रों के समीप पहुंची। जब गोपों ने डर कर कृष्ण के हाथ में वस्त्रों को वे दिया, तब कृष्ण ने संपूर्ण वस्त्रों को कदम्ब के बृक्ष की शाखों पर रख दिया। जब राधा ने कृष्ण की स्तुति की, तब गोपियों के वस्त्र मिल गए। वे बत समाप्त करके अपने अपने गृह चली गई। (श्रीमद्धागवत-१० वें स्कंध के २२ वें अध्याय में भी चीर- हरण की कथा है)।

√नन्दगांव।

मथुरा से २४ मील नंदगांव एक छोटी वस्ती है। मथुरा से छातागांव तक १८ मील पक्षी सड़क है। छाता मथुरा जिले में एक तहसीली का सदर स्थान हैं, जिसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ६०१४ मनुष्य थे। इसके वाजार में पूरी मिटाई मिलती हैं। उससे आगे खिदरवन होती हुई ६ मील कच्ची सड़क है। एका सर्वत्र जाते हैं। नंदगांव एक छोटे टीले पर वसा है। मकानों की छत मही से पाटी हुई हैं। यहां के मन्दिर में कृष्ण वलवेव और नंद यशोदा की मूर्तियां हैं। टीले के नीचे पत्थर से बना हुआ पामरी कुण्ड नामक पक्का सरोवर है। बस्ती के आस पास करील का जंगल लगा है।

⁄ बरसाने।

नंदगांव से वरसाने तक ४ मील लम्बी कची सड़क हैं। वरसाने एक अच्छी वस्ती लंबी पहाड़ी के छोर के नीचे बसी है, जिसके पासही ऊपर लाड़िली (राधा) जी का बड़ा मन्दिर है; जिसमें राधा और कृष्ण की मूर्तियां

हैं। उससे नीचे एक मन्दिर में नन्दजी, उससे नीचे एक मन्दिर में वृषभान के पिता महाभान और महानुभान की पत्नी, और उससे भी नीचे भूमितल पर एक मन्दिर में राधा के पिता वृषभान और माता की तिदा और कई भ्राताओं की मूर्तियां हैं। बरसाने में कई पक्के मकान हैं। बस्ती से बाहर वृषभान कुण्ड नामक पक्का सरोवर है, जिसके समीप के मकान उजड़ रहे हैं। बरसाने और गोबर्झन में देशी छोग कृष्ण के नाम छोड़कर केवल राधा की जय पुकारते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—ब्रह्मांडपुराण—(उत्तरवंड, राघाहृदय दूसरा अध्याय) श्री राघा सृष्टि करने की इच्छा से साकार होकर नारीक्ष्प से प्रकट हुई। पीछे उसने अपने हृदय से सर्वातर्गीमि एक पुरुष को उत्पन्न किया, जो अंगुल के एक पोर के बराबर कोटिस्ट्यं के तुल्य प्रकाशवान था। बालक ने एकार्णव जल में पीपल के एक पत्ते को बहता हुआ वेख उस पर निवास किया। मार्केंडेय मुनि ने उस वालक के मुख में प्रवेश कर भीतर ब्रह्माण्ड को देखा। उस पुरुष की नाभि से कमल उत्पन्न हुआ, जिसमें अनंत कोटि ब्रह्मा उपने और सब अपने अपने ब्रह्मांड के सृष्टिकर्त्ती हुए।

(४ था अध्याय) उस पुरुष ने जब राधा से कहा कि है ईश्वरी तुम हमारे साथ कुलाचार (प्रसंग) करो, तब देवी वोली कि रे दुराचार। तुमने हमारे अंग से जन्म लेकर हमसे पुंअली के समान वाक्य कहा; अतएव मनुष्य-जन्म लेने पर पुंअलीभाव से तुद्धारा मनोरथ सिद्ध होगा। बाख्यदेव ने भी राधा को शाप दिया कि हे अधमे! पाकृत मनुष्य को तुम प्राप्त होगी अर्थात प्राकृत मनुष्य तुम्हारा पाणिग्रहण करेगा (५ वां अध्याय) प्रलय के अंत होने पर भगवान अपने परम धाम गोलोक को गए और सहस्लों रमणीगणो सहित रम्यमान होकर असंख्य वत्सर विताए हुए।

(६ वां अध्याय) यमुना के पास गोवर्द्धन पर्वत के निकट, जहां ब्रह्मा करके स्थापित राधा की अष्टभुजी प्रतिमा थी, उसके समीप गोकुल नगर में लिलता आदि स्त्रियों ने जन्मग्रहण किया। गोकुल का राजा गोपों का स्वामी महाभानु नामक गोप था, जिसके वृषभानु, रत्नभानु, स्वभानु, और शितभानु ४ पुत्र थे। ज्येष्ट पुत्र वृष्णानु राजा हुआ, जिसने कीर्तिदा नाम्नी स्त्री से अपना विवाह किया। जब बहुत काल बीतने पर भी वृष्णानु को कोई पुत्र नहीं हुआ, तब उसने क्रतु मुनि से मंत्र ग्रहण कर यमुनातीर काल्यायनी के निकट जाकर जप का अनुष्ठान किया। कात्यायनी प्रकट हुई और वृष्णानु के हाथ में एक डिंब देकर अंतर्छीन हो गई। राजा उस डिंब को ले अपने यह में आया। (७ वां अध्याय) जब वृष्णानु ने कीर्तिदा के हाथ में उस डिंब को देदिया, तब वह दो खंड हो गया; जिससे चैत्र शुक्र नौमी को अयोनि-संभवा राधा प्रकट हुई। परमाराध्या देवी उग्र तपस्या द्वारा राधिता होकर वाध्य हुई थी, इस कारण वृष्णानु ने उस कन्या का नाम राधा रक्खा।

(८ वां अध्याय) एक समय सनत्कुमार गोलोक में कृष्णं के द्वार पर गए। द्वारपाल ने कहा कि इस समय श्री कृष्ण राधा के साथ गोप्य स्थान में हैं, थोड़ा विलंब की जिए, तब दर्शन होगा। महर्षि ने शाप दिया कि तुम अपने स्थामी और पुरवासियों सहित पृथ्वीतल में जाकर मनुष्यजन्म ग्रहण करो। कृष्ण के निर्देश से संपूर्ण गोलोक-बासियों ने पृथ्वी में जाकर कुरु, वृष्णि, यदु, अंधक, दाशाई, भाज और,वाहीक क्षत्रिय कुल में जन्म लिया। दूसरे सहस्र सहस्र गोप गोपियों ने गोकुल में जन्मग्रहण किया। गोकुल में राधा के अंश से वृन्दा और बर्व्वरी (तुलसी) जन्मी। स्वयं राधा ने की तिदा के यह जन्म लिया। कृष्ण अपने अंश से कोशल राज्य में जटिला के गर्भ से जन्म लेकर आयान नाम दे प्रसिद्ध हुए। जटिला के तिलक और दुर्मद दो पुत्र और कुटिला, प्रभाकरी तथा यशोदा ३ पुत्री हुई। यशोदा नंद के साथ ब्याही गई।

(१३ वां अध्याय) राजा वृषभानु ने राधा की यौवन अवस्था देख कर उसके विवाह के मिमित्त कोशल राज्य में माल्यवान गोप के ग्रह दूत भेजा। उस समय राधा यमुना तीर जाकर कृष्ण की आराधना करने लगी। जब माधव पकट हुए, तब राधा बोली कि है प्रभो ! मेरा पिता आयान से मेरा विवाह करना चाहता है, तुम अनुग्रह कर] के मुझसे विवाह करो। भगवान बोले कि हे राधे! हमारा मातुल आयान है, हम माता यशोदा के सहित उसके गृह जायंगे। जब मातुल आयान के अंक में बैठ वृषभानु के गृह पहुंचेंगे, तब वहां हम उसको नपुंसक करदेंगे। तुमको हम एक और वरदान केते हैं कि हमारे भक्त हमारे नाम के पिहले तुम्हारा नाम छेंगे और जो हमारे नाम से पीछे तुम्हारा नाम छेगा, उसको भ्रूण-हत्या का पाप छगेगा (१४ वां अध्याय) वृषभानु ने अपने गृह में राधा के विवाह का महोत्सव किया। (१५ वां अध्याय) नंद निमंत्रित होकर यशोदा, कृष्ण, बळराम, उपनंद आदि गोपों के सहित अपने स्वशुर माल्य के गृह गए। गोपराज माल्य अपने पुर से वारात के साथ वृषभानु के नगर में पहुंचे। आयान कृष्ण को गोद में छिए हुए रथ से उत्तरा। वृषभानु ने आयान को कन्या दान करने की इच्छा की, उस समय आयान के गोद में स्थित श्री कृष्ण ने अति रोष से उसका पुरुषत्व हर छिया, अर्थात आयान को नपुंसक कर दिया। विवाह काळ में कृष्ण ने आयान को पीछे रख अपना हाथ पसार मितग्रह-स्वक वाक्य कहा। इसके अनन्तर वृषभानु ने बहुत बस्ल, भूषन, रत्न, सेना और अनेक संख्यक गर्वभ, उद्ध और मिह्न और एक शत ग्राम अपने जामाता आयान को गौतुक में दिए। गोप- राज माल्य वर और कन्या के साथ अपने ग्राम में आया।

(१६ वां अध्वायं) कृष्णचंद्र ने वेणुध्वनि करके राधा को बुलाया और निसृत निकुंज में राधा सहित रमण करने लगे। आयान की माता जटिला ने राधा को सर्वत्र ढूंढा; जब वह न मिली, तब उसने खोजने के लिये आयान को भेजा। कृष्ण ने उस समय माया करके काली का रूप धारण किया। जब आयान ने देखा कि राधा कालिका को पूज रही है, तब अति प्रसन्न हो अपनी माता और गोपियों को लाकर राधा का छवरित्र दिखलाया।

(२४ वां अध्याय) जब सब गोकुलवासी राधा का कृष्ण सहित सर्वदा गोपन स्थान में सहवास और परस्पर लीलानुराग देखकर परस्पर काना कानी करके गुप्त भाव से राधा के कलंक की घोषणा करने लगे, तब राधा ने श्री कृष्ण से कहा कि है प्रभा ! मुझ से यह कलंक सहा नहीं जाता। मैं विष खा कर प्राण त्याग करूंगी। कृष्ण राधा को धैर्य देकर अपनी माया बिस्तार कर

कपट रोगी बन के अबेत हो गए। और दूसरे रूप से कपट वैद्य वन कर नन्द के गृह गए। वैद्यराज नन्द से बोले कि एकपति वाली स्त्रो से एक शत छिद्र वाले घड़े में नदी का जल मंगाओ। उस जल से कृष्ण चैतन्य होंगे। नन्द ने बहुत पतिव्रता स्त्रियों को शत छिद्र वाले घड़े को देकर यमुना जल छाने को भेजा। जब जल भरने पर कुंभ का जल छिद्रों द्वारा गिर गया, स्लियां छज्जा-युक्त हो बाल पर घड़े को रखकर भाग गईं। (२५ वां अध्याय) तब नन्द ने कोशल के अधिकार में राधा के श्वशुर के गृह दृत भेजा । आयान की माता जटिला राधा आदि अपनी पुत्रियों और बहुत पतिव्रता स्त्रियों को साथ छे नन्द के गृह आई । समस्त पतित्रता स्लियां कमानुसार एक एक यद्यना में जाकर कुंभ पूर्ण करके चलीं, परन्तु शत्त छिद्र वाला कुंभ जल से शून्य हो गया । जब सब स्त्रियां लज्जित हो भाग गई, तब वैद्यराज ने कहा कि है नन्द ! द्रषभानु की पुत्री राधा जो माल्य के पुत्र से व्याही गई है, एक पति की पतिवता है. वह यसना से जल लावेगी, तभी कल्याण होगा। नन्द बोले कि हे राधे ! तुम कुम्भ में जल लाकर मुझ को विपति से मुक्त करो । राधा ने यमुना में जाकर कुम्भ को जल से पूर्ण किया । कुष्ण ने कुम्भ के छिद्रों को अनेक रूप धर के आच्छादित कर दिया । राधा ने जलपूर्ण घट को नन्द के गृह लाकर वैद्यराज को देदिया। वैद्य ने इस औषिध से कृष्ण को सचेत कर दिया। संपूर्ण लोग राधा को साधु साधु कहने लगे। (२६ वां अध्याय) श्री कुष्ण राधा सहित निभृत निकुञ्ज में अनुदिन विहारासक्त हो काळ बिताने छगे।

वेवी भागवत—(नवां स्कन्ध, पहिला अध्याय) गणेश की माता दुर्गी, राधा, लक्ष्मी, सरस्वती और सावित्री ये ५ मूल प्रकृति हैं। ये पांचो प्रकृति के पूर्णावतार हैं। इनके अंश से गंगा, काली, पृथ्वी, षष्टी, मंगला, चंडिका, तुलसी, मनसा, निद्रा, स्वधा, स्वाहा, दक्षिणा आदि स्त्रियां हैं (५० वां अध्याय) विना राधा की पूजा किए कृष्ण की पूजा का अधिकारी कोई नहीं हो सकता।

ब्रह्मवैवर्त्तंपुराण - (ब्रह्मवंड, ४९ वां अध्याय) एक दिन राधानाथ गो-लोक के दृदावन में स्थित शत शूंग पर्वत के एक देश में विरजा गोपी के साथ क्रीड़ा करते थे। ४ दूती ने इस विषय को जानकर राधिका को खबर दी। राधा कोध करके उस स्थान पर गई। कृष्णचन्द्रंका सहचर खदामा राधा का आगमन जान कुष्णचन्द्र को सावधान करके गोपगणों के साथ भाग गया । कुष्ण जी राधिका के भय से विरजा को छोड़ कर अंतर्हित हो गए । विरजा राधा के भय से नदी होकर गोलोक के चारो ओर बहने लगी। कुष्ण अपने आठों सखाओं के साथ राघा के पास आए। राघा ने खदामा को शाप दिया कि तू शीघ्र ही असुर योनि पावेगा। सदामा ने भी राधा को शाप दिया कि तू गोलोक से भूलोक में जाकर गोपकन्या हो १०० वर्ष कृष्ण के विरह में विता-बेगी । छुदामा शंखचूड़ अछर हो शिव के हाथ से मरकर फिर गोलोक में गया । श्री राघा वाराहकल्प में गोकुछ के वृषभानु गोप की कन्या हुई । १२ वर्ष वीतने पर वृषभानु ने आयान गोप के साथ राधा के विवाह का संबन्ध किया । राधा अपनी छाया रखकर अंतर्द्धान हुई । छाया के साथ आयान का विवाह हुआ । आयान यशोदा का सहोदर भ्राता और गोलोक के कृष्ण का अंश था। राधा अपने कृष्ण की गोद में बास करती और छायारूप आयान के ग्रह रहती थी।

(कृष्णजन्मत्वंड, ५० वां अध्याय) पिता जिस प्रकार से कन्या को प्रदान करे, विधाता ने उसी तरह राधिका को कृष्ण के कर में समर्पण किया। राधा अपने गृह में रहती थी, किन्तु प्रतिदिन वृन्दावन के रासमंडल में हिर के सहित कीड़ा करती थी।

गोवर्द्धन ।

बरसाने से १४ मील गोवर्छन तक, और गोवर्छन से १४ मील मथुरा तक पक्की सड़क है। मथुरा तहसीली में गोवर्छन पहाड़ी के छोर के समीप गोवर्छन गांव हैं, जहां मानसी गंगा के आस पास बहुतेरे पक्के मकान और देवमन्दिर बने हैं, जिनमें हरिदेव का मन्दिर प्रधान हैं; जिसको आंवरे के राजा भगवानदास ने सोछहवीं सदी में बनवाया था।

मानसी गंगा बहुत बड़ा छंबा तलाब है, जिसके चारो वगलों पर नीचे से ऊपर तक आंवेंर के राजा मानसिंह की बनवाई हुई पत्थर की सीढियां हैं। मथुरा के यात्री कार्तिक की अमावास्या की रात्रि में मानसी गंगा पर दीपदान करते हैं। यहां के समान दीपोत्सव किसी तीर्थ में नहीं होते। तालाब के चारो ओर की सीडियां नीचे से ऊपर तक यात्रियों और दीपों से परिपूर्ण हो जाती हैं। बहुत लोग मानसी गंगा की परिक्रमा करते हैं।

गोवर्छन पहाड़ी ४ मील से अधिक लंबी है, परन्तु इसकी चौड़ाई और उंचाई बहुत कम है। औसत उंचाई चारो ओर के मैदान से लगभग १०० फीट से अधिक नहीं है। कार्तिक की अमावास्या के दिन गोवर्छन की परिक्रमा की बड़ी भीड़ रहती है। यात्रीगण गिरिराज (गोवर्छन) तथा राधे की पुकार बड़े शब्द से करते हैं। परिक्रमा की सड़क के किनारों पर सैंकड़ो कंगले बैंटते हैं। भरतपुर राज्य के जाटगण जूथ के जूथ परिक्रमा करते समय उन्मत्त होकर गाते बजाते हैं। मार्ग में कुछम-सरोवर, राधाकुण्ड आदि कई सरोवर मिलते हैं।

गोवर्द्धन के समीप भरतपुर के राजाओं की अनेक छत्तरी (समाधि-मन्दिर)
हैं, जिनमें बलदेवसिंह (सन १८२५ में मरे), खर्च्यमल और खर्च्यमल की
पत्नी की छत्तरी उत्तम हैं। इनके अतिरिक्त रणधीरसिंह (१८२३ में मरे)
आदि की छत्तरियां हैं। कई छत्तरियों में नकाशी का उत्तम काम है। खर्च्यमल के समाधि-मन्दिर को उसकी मृत्यु के तुरतही बाद सन १७६४ में उसके
पुत्र जवाहिरसिंह ने बनवाया। गोवर्द्धन से १० मील पश्चिम दीग में भरतपुर
के महाराज का किला और मकान है। यहां से दीग को पक्की सड़क गई है।

मैं मथुरा से एक्के पर गया और पहली रात्रि में वरसाने और दूसरी तथा तीसरी रात्रि में गोवर्द्धन में निवास कर मथुरा को लौट आया।

संक्षिप्त प्राचीनकथा-बाराहपुराण-(१५८ अध्याय) मथुरा के

पश्चिम भाग में २ योजन पर गोवर्द्ध न क्षेत्र है। जो पुरुष मानसीमंगा में स्नान करके गोवर्द्ध न पर्वत में हरि जी का दर्शन और अन्नकूटेश्वर का दर्शन मदक्षिणा करता है, वह फिर संसार में जन्म नहीं पाता।

श्रीमद्भागवत-(दशम स्कन्ध, २४ वां अध्याय) व्रज के गोप परंपरा नियम के अनुसार इन्द्र के यज्ञ के निमित्त तय्यारी करने छगे । कृष्णचन्द्र ने कहा कि इन्द्र को छोड़कर गोवर्द्ध न पर्वत की पूजा करो। सब त्रजवासियों ने जनका बचन स्वीकार किया। वह इन्द्र पूजा की सामग्री से गोवर्छ न पर्वत की पूजा कर अपने गृह को छौट आए (२५ वां अध्याय) इन्द्र ने अपनी पूजा का लोप देख व्रजवासियों पर कोप किया और मलय करने वाले मेघों को आज्ञा दी कि तुम शीघ्र घोर जलधारा बरसा कर गौओं सहित व्रज का संहार करदो । मेघसमूह व्रज में जाकर मूसलाधार जल वरसाने लगे । जब गोप गोपी सब कुष्ण के शरण में गई, तब कुष्णचन्द्र ने गोवर्द्ध न पर्वत को एक हाथ से उखाड़ कर ऊपर उठा लिया। जब वज के सब लोग गौओं के साथ ७ दिन पर्यंत पर्वत के नीचे रहे, तब इन्द्र ने कृष्ण का प्रभाव देख विस्पित हो मेघों को निवारण किया। सब गोप गोपी गौओं के साथ बाहर निकलीं। कृष्ण ने गोवद्ध न को जहां का तहां रख दिया (२७ वां अध्याय) इन्द्र ने एकान्त स्थान में आकर कृष्ण की स्तुति कर अपना अपराध क्षमा कराया। छरभी गौ ने अपने दुग्ध से और ऐरावत इस्ती ने आकाशगंगा के जल से श्री कृष्ण का अभिषेक किया। इन्द्र ने देवर्षियों के सहित कृष्ण का अभिषेक कर उनका नाम गोविंद रक्ला। (यह कथा आदि ब्रह्मपुराण के ७९ वें और ८० वें अध्याय में भी हैं)।

🗸 गोकुल ।

मथुरा से ६ मील दक्षिण-पूर्व यसुना के बांए या पूर्व किनारे पर मथुरा जिले में गोकुल एक बस्ती है । मथुरा से वहां अच्छी सड़क गई है। गोकुल के मन्दिर बहुत पुराने नहीं हैं। यसुना का घाट पत्थर से बना है। ३०० बर्ष के अधिक से यह बल्लभाचार्च्य संप्रदाय अर्थात गोकुली गोक्सामियों का प्रधान स्थान हुआ है। करीब सन १५२० ईस्बी में इस मत के नियत करने वाले वल्लभ स्वामी ने यहां और उत्तरी भारत में उपवेश दिया कि जीव के मोक्ष के लिये शरीर को लेश वेने की आवश्यकता नहीं है। नंगे, भूखे और एकांत में रहने से ईश्वर नहीं मिलते। छख ऐश्वर्य में रहकर पूजने से ईश्वर मिल सकते हैं। वल्लभ स्वामी कृष्ण का पूजन करते थे। इस संपदाय के लोग प्रतिदिन ८ बार कृष्ण की बालमूर्ति की पूजा करते हैं। इनका मत है कि जहां तक हो सके, छख से कृष्ण का पूजन करते हुए जन्म विताना चाहिए। इस संप्रदाय के हजारों यात्री खास कर पश्चिमी हिन्दुस्तान से यहां आते हैं। उनहोंने बहुतेरे मन्दिर बनवाये हैं।

महाबन—गोकुल से लगभग १ मील दूर महावन (पुराना गोकुल) स्थित
है। यह मथुरा जिले में एक तहसीली का सदर स्थान एक छोटा कसवा और
तीर्थस्थान है। सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय महावन में ६१८२ मनुष्य
थे, अर्थात ४४७६ हिन्दू, १७०४ मुसलमान और ३ दूसरे। पहिले यहां वड़ा
जंगल था। वादशाह शाहजहां ने सन १६३४ ईं० में यहां शिकार में ४ बाघों
को मारा था। अब चारो ओर का देश साफ है। पुराने समय में यह गोकुल
नाम से प्रसिद्ध था। यहां पुराने गढ़ की जगह करीब ३० एकड़ में देख पड़ती
है, जिस पर गोकुल की तबाही अर्थात इंटे और मट्टी का एक टीला है।

महावन में अधिक हृदयग्राही नन्द का महल है, जिसके एक भाग पर मुसलमानों ने औरंगजेव के राज्य के समय हिन्दू और वौद्धमन्दिरों के असवाबों से एक मसजिद बनवाई; जिसमें १६ स्तंभों के ५ कत्तार हैं, इस से इसका नाम अस्सी लम्भा पड़ा है। नन्द के महल में कृष्ण की बाललीला दिखाई गई है। पायेदार मकान में पालना है। दीवार के समीप चांदनी के नीचे प्र्यामलस्ब ए कृष्णचन्द्र की बालमूर्ति है। दिधमथन के लिये पत्थर का भांडा और मथानी रक्ली हैं। छत्त के ऊपर से यमुना देख पड़ती हैं। भादों बदी अष्टमी को कृष्णजन्म के उत्सव में यहां हजारों यात्री आते हैं। सन १०१७ ई० में गजनी के महमूद ने महाबन क़सवे को लूटा था। कहा

जाता है कि उस समय यहांके राजा ने अपनी स्त्री और लड़कों को मार कर अपने को भी मार डाला। (गोकुल की प्राचीन कथा मथुरा की कथा में है)

महाबन से ६ मील बलदेवा गांव में बलदेव जी का प्रसिद्ध मन्दिर है।
मन्दिर के निकट क्षीरसागर नामक सरोवर है। यहां वर्ष में दो मेला होता है।
सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय बलदेवा गांव में २८३५ मनुष्य थे।
यहां एक गवन्भेन्ट स्कूल है।

बारहवां अध्याय।

राजपूताना, भरतपुर, करौळी, बांदीकुंई जंक्इान, अळवर, जयपुर, और टोंक ।

्राजपूताना ।

मथुरा की छावनी के स्टेशन से २३ मील दक्षिण, थोड़ा पूर्व अछनेरा में रेलवे का जंक्शन है। अछनेरा से १७ मील पश्चिम भरतपुर का रेलवे स्टेशन है। अछनेरा से थोड़ाही पश्चिम जाने पर पश्चिमोत्तर प्रदेश छूट कर राजपूताना मिल जाता है।

राजपूताने के पश्चिम में सिंध देश, पश्चिमोत्तर में बहावलपुर का राज्य, पूर्वीत्तर में पंजाब और पश्चिमोत्तर देश, दक्षिण-पूर्व और दक्षिण ग्वालियर

और दूसरे देशी राज्य हैं।

अर्बली पर्वत राजपूताने को काट कर एक लाइन में करीब करीब पूर्वोत्तर और पश्चिम-दक्षिण गया है। पश्चिम-दक्षिण की सरहद पर आबू पर्वत है। देश के पश्चिमोत्तर का हिस्सा बालूदार है, जो उपजाऊ नहीं है। उसमें पानी कम होता है। बहुत पश्चिम और पश्चिमोत्तर वीरान बालूदार पहाड़ियां हैं, जिनके ऊपर के हिस्से वायु से उड़गए हैं। पूर्वोत्तर की ओर का हिस्सा उन्नति पर है। पूर्व-दक्षिण के हिस्से में फैली हुई पहाड़ियों का सिलसिला, च्हानी देश, उपजाऊ, खाड़ी और ऊंची भूमि है। पश्चिमोत्तर हिस्से में केवल एक लूनी नदी है, जो अजमर की झील से निकल कर कच्छ के रन में गिरती है। दक्षिण-पूर्व के हिस्से में चंवल, बनास, सावर्मती और मही नदी हैं। राज-पूताने में स्वाभाविक मीठे पानी की झील कोई नहीं है। बनाई हुई कई झीलें हैं। सांभर इत्यादि कई लोने पानी की झीलें हैं। पश्चिम में केवल १४ इंच वर्षी होती है। दक्षिण-पूर्व की औसत वर्षी करीब ३४ इंच है। जयपुर-राज्य में २४ इंच वर्षी बरसती है।

राजपूताने के प्राय मध्य में अजमेर और मेरवाड़ा दो अंगरेजी ज़िले हैं। और उनके चारो ओर छोटे राज्यों को छोड़ कर १८ प्रसिद्ध देशी राज्ये हैं।

राजपूताने के देशी राज्यों में (१) उदयपुर, (२) जयपुर, (३) जोधपुर, (४) बीकानेर, (५) जैसल्लेमर, (६) सिरोही, (७) डूंगरपुर, (८) बांसवाड़ा, (९) मतापगढ़, (१०) कोटा, (११) झालावार, (१२) बूंदी, (१३) किखनगढ़, (१४) टोंक, (१५) करौली, (१६) घोलपुर, (१७) भरतपुर, और (१८) अलवर हैं। उदयपुर, प्रतापगढ़, बासबाड़ा और डूंगरपुर के राजा सीसोदिया राजपूत; जोधपुर, बीकानेर और किखनगढ़ के राजा राठौर राजपूत; करौली और जैसलमर के राजा यदुवंशी राजपूत; जयपुर के राजा कुशावह राजपूत; अलवर के राजा नहका राजपूत; सिरोही के राजा चौहान राजपूत; कौटा और बूंदी के राजा हारा राजपूत; झालावाड़ के राजा झाला राजपूत; भरतपुर और धौलपुर के राजा जाट और टोंक के नवाब मुसलमान हैं।

राजपूताने के देशी राज्यों का क्षेत्रफल १३०२६८ वर्ग मील है मनुष्य-संख्या इस साल की मनुष्य-गणना के समय १२०१६१०२ थी। सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय देशी राज्यों में ९ लाख ६ हजार ब्राह्मण, ६ लाख ३४ हजार महाजन, ५ लाख ६७ हजार चमार, ४ लाख ८० हजार राजपूत, ४ लाख २८ हजार मीना, ४ लाख २६ हजार जाट, ४ लाख ३ हजार गूजर, और १ लाख ३१ हजार अहीर थे। (भारत-भ्रमण के आरंभ में देखों)

अधिक छोग खेतिहर हैं। शहरों में कोठीवाल और तिजारती महाजन हैं।

चुरुषों में पगड़ी और ब्लियों में यांघरे पहनने की वड़ी रिवाज है। गूजर और जाटों में विशेष लोग खेती करते हैं। भील जंगली और पहाड़ी देशों में बसते हैं, अपनेहीं में से प्रधान बनाकर प्रायः ब्लितंत्र रहते हैं, और गैर मामूली खिराज देते हैं। मनुष्य-गणना के समय वे अपने को गिनने नहीं देते, इसलिये केवल जनके घर गिन लिए गए थे। सन १८८१ में वे कुल करीब २७०००० थे। मीना लोगों में जो खेतिहर हैं, वे साधारण तरह से अच्छे हैं; और जो चौकीदार हैं, वे लुटेरे करके प्रसिद्ध हैं। दक्षिण-पश्चिम में अवंली पहाड़ के नोकदार हिस्सों में रहने वाले मीना जाति के लोग खेती कम और लूट का काम अधिक करते हैं।

पश्चिमोत्तरं हिस्से में वर्ष भर में केवल एकही फिसल, और अर्वली के दिशिण और पूर्व साल में दो फिसल होती हैं। मिलेट, गेहूं, जौ, हिन्दुस्तानी ग़ल्ले, पोस्ता, तेल उत्पन्न करने वाली चीजें, ऊख, कपास, राजपूताने की प्रधान फिसल हैं। पश्चिम के वीरान वेश में ऊंट, मवेसी और भेड़ बहुत होते हैं। निमक, गल्ले, अफियून, रूई, ऊन, मवेसी और भेड़ राजपूताने से दुसरे प्रवेशों में जाते हैं।

राजपुताने के भहर और कसबे, जिनकी जन-संख्या इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय १०००० से अधिक थी।

नंबर शहर वा कसवा	राज्य	मतुष्य-	नंबर शहर वा राज्य	मनुष्य-
		संख्या	कसवा	संख्या
१ जयपुर	जयपुर	१६८९०५	१० करौछी करौछी	२३१२४
२ भरतपुर	भरतपुर	६ ४०३३ ।	११ बूंदी बूंदी	२२५४४
🗦 जोधपुर	मारवाङ	68886	१२ शिकारपुर जयपुर	29899
४ बीकानेर	बीकानेर	५६२५२	१३ नागौड़ मारवाड़	१७१९१
. ५ अलवर	अलवर	५२३५८	१४ पाली मारवाड	१७१५०
६ उदयपुर	मेवाङ्	४६६९३	१५ फतहपुर जयपुर	१६५८०
७ टोंक	टोंक	४६०६९	१६ किस्रनगढ़ किस्रनगढ़	१५४६७
८ कोटा	कोटा	३८६२४	१७ दीग भरतपुर	१५१६६
९ छावनी	श्रालावार	२३३८१	१८ मतापगढ़ मतापगढ़	१४८१९

नंबर शहर वा	राज्य	मनुष्य-	नंबर शहर वा	राज्यः	मनुष्य- संख्या
कसवा		संख्या	कसबा		
१९ चूरू	बीकानेर	१४०१४	३१ विलारा	मारवाङ्	११३८४
२० माधोपुर	जयपुर	१३९७२	३२ दिदवाना	मारवाङ्	११३७६
२१ हिन्दुरी	जयपुर	१२९९६	३३ पाटन	झालावार	६७७०६
२२ कचवारा	मारवाड़	१२८१६	३४ रतनगढ़	वीकानेर	१०५३६
२३ स्रजात	मारवाड़	१२६२४	३५ जैसलमेर	जैसलमेर	१०५०९
२४ नवलगढ़	जयपुर	१२५६७	३६ फतोदी	मारवाङ्	१०४९७
२५ सांभर	जयपुर	१२३६२	३७ उदयपुर	जयपुर	१०३४३
२६ झुंझुआ	जयपुर	१२२६७	३८ भिलवाड़ा	मेवाङ् ।	६४६०९
२७ रामगढ़	जयपुर	१२१९७	३९ राजगढ़	अलवर	१०३०२
२८ बारी	धौलपुर	१२०९२	४० चितौरगढ़	मेवाङ्	१०२८६
२९ शाहपुर	शाहपुर	२१७१८	४१ खंडेला	जयपुर	१००६७
३० कामा	भरतपुर	११४१७			
		30. YOUR OLD STORY	AND COMPANY DESIGNATION AND COMPANY OF THE COMPANY		and the early in the house of

भरतपुर।

अछनेरा के रेलवे स्टेशन से १७ मील और आगरे के किले से ३४ मील पश्चिम राजपूताने में एक प्रसिद्ध देशी राज्य की राजधानी भरतपुर है। यह २७ अंश १३ कला ५ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश ३२ कला २० विकला पूर्व देशांतर में स्थित है। स्टेशन के पास एक छोटी सराय है, उसी में दिका था। महाराज का कर्मचारी मुसाफिरों का नाम और धाम राजि में लिख लेता है।

इस साल की जन-संख्या के समय भरतपुर में ६८०३३ मनुष्य थे, अर्थात ३७६९४ प्ररुष और ३०३३९ स्त्रियां। इनमें ५०२१० हिन्दू, १६६६५ सुसल-मान, ११५४ जैन और ४ क्रस्तान थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ५१ वां और राजपूताने में दूसरा शहर है।

किले के पास दीवार के भीतर नादुरुस्त शकल का लंबा शहर है, जिसमें पत्थर की सड़क, छन्दर बाजार, एक बड़ा अस्पताल, एक सेंट्रल स्कूल, एक जेल और एक बंगला है; और वर्ष में एक बड़ा मेला होता है। किले से ३ मील दक्षिण सेवर में महाराज का महल और एक सेंट्रल जेल है।

किला—बाहरी वाले किले के भीतर उत्तर-पूर्व के आधे भाग में भीतरी का किला है। बाहरी किले के चारो ओर कची परन्तु दुर्भेद्य दीवार है, जिसके बाहर छोटी खाई है। बाहरी के किले के आना फाटक और भीतरी बाले किले के चौबुर्ज फाटक के बीच में सड़क के समीप गंगा का मन्दिर, छक्ष्मण का मन्दिर, बाजार और नई मसजिद हैं।

भीतरी वाले किले की दीवार बड़े बड़े पत्थर के ढोकों से बनी है, जिसके वारो ओर पानी से भरी हुई चौड़ी और गहरी रवाई है; जिस पर दोनों फाटकों के पास २ पुल हैं। इस किले के मध्य में ३ महल हैं, पूर्व वाला राजा का महल, दूसरा बदनसिंह का बनवाया हुआ पुराना महल और तीसरा इससे पश्चिम कुमार महल है। इनमें राजा का महल चौ मंजिला दर्शनीय है। ऊपर की मंजिल राजसी सामान से सजी है। टोपी उत्तार कर उस महल में जाना होता है। किले के पश्चिमोत्तर के कोन के पास जवाहिर बुर्ज है, जिस पर चढ़ने से खन्दर हूळ्य हृष्टि गोचर होता है। कुमार महल के पश्चिम इंसाफ की कचहरी, जवाहिर आफिस और जेलखाना है।

दीग—भरतपुर से लगभग १५ मील दीग नामक कसवे में एक किला और भरतपुर के राजा स्टब्र्यमल का बनवाया हुआ उत्तम राजमहल है।

इस साल की जन-संख्या के समय दीग में १५१६६ मनुष्य थे, अर्थात १२२८८ हिन्दू, २६१४ मुसलमान और २६४ जैन।

कच्छ तालाव के पूर्व गोपालभवन खड़ा है, जिसकी छत से छन्दर हुन्य देख पड़ता है। इसके पूर्वोत्तर २० फीट ऊंचा नन्दभवन एक छन्दर कमरा, दिक्षण ८८ फीट लंबा खर्च्यभवन, पश्चिम हर्दीभवन और दक्षिण-पूर्व कृष्ण-भवन है। इसके बीच में और चारो तरफ उत्तम बाग है। बाद दूसरे बागों से लगी हुई रूपसागर नामक बड़ी झील है। गोपालभवन से ई मील दूर दीग के किले का पश्चिमी फाटक है। किले की उंची दीवार में कुल ७२ बुर्ज हैं। पश्चिमोत्तर का बुर्ज ८० फीट उंचा है, जिस पर एक बहुत लम्बी तोप रक्खी हुई है। प्रथम ५० फीट चौड़ी खाई मिलती है, इसके बाद करीब ७० फीट उंचा एक स्वाभाविक, टीला, इसके पश्चात् एक इमारत है, जो जेलखाने के काम में आती है।

सन १८०४ की तारीख १३ नवम्बर को अंगरेजी जनरल फ्रेजर ने यशवंत-राव हुलकर की सेना को परास्त किया। हुलकर की सेना के वचे हुए लोगों ने दीग के किले में पनाह ली। तारीख १ दिसम्बर को अंगरेजी अफसर लार्ड लेक सेना में आ मिले। अंगरेजों ने बहुत लड़ाई और बड़ी हानि खटाँने के उपरांत तारीख २४ दिसम्बर को दीग और इसके किले को दुश्मनों से ले लिया। वे सब भरतपुर भाग गए।

+भरतपुर राज्य—भरतपुर राजपूताने के पूर्व भाग में एक देशी राज्य, पोलिटिकल एजेंट के पोलिटिकल छपिंटेंडेंस के आधीन है । राज्य के उत्तर गुरगांव जिला; पूर्व मथुरा और आगरा जिले; दिसण-पूर्व, दिसण और दिसण-पश्चिम धौलपुर, करौली और जयपुर राज्य और पश्चिम अलवर राज्य हैं । भरतपुर राज्य की लम्बाई उत्तर से दिसण तक लगभग ७७ मील और चौड़ाई ६३ मील है। इसका क्षेत्रफल १९७४ वर्गमील है । राज्य की खानों में से मकान बनाने योग्य पत्थर निकलता है। नाव चलाने योग्य कोई नदी नहों है। प्रधान नदी बानगंगा है। एक टकसाल है, जहां चांदी और तांवे के सिक्के ढाले जाते हैं। राज्य से लगभग २७००००० रुपये माल गुजारी आती हैं। अंगरेजी सरकार को कुछ खिराज नहीं दिया जाता । सैनिक वल १४६० सवार, ८५०० पैदल और पुलिस, २५० आरटिलरी और ३८ रसम के लिये तोंप हैं। देश बज कहलाता है और यहां की भाषा ब्रजभाषा है। राज्य के ३ क़सबों में इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय १००० से अधिक मनुष्य थे। भरतपुर में ६८०३३, दीग में १५१६६ और कामा में ११४१७। भरतपुर से लगभग २४ मील दिसण-पश्चिम बेर एक कसवा है, जिसमें वर्ष में एक बड़ा मेला होता है।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय भरतपुर राज्य में ६४०६२० मनुष्य थे।
सन १८८१ में ६४५५४० मनुष्य थे, जिनमें ५३५३६७ हिन्दू १०५६६६ मुसस्थमान ४४९९ जैन और ८ दूसरे। हिन्दू और जैनों में ८८५८४ चमार,
७०९७३ ब्राह्मण, ५३९६७ जाट, ४३८६५ गूजर, ३९३०१ बनियां, १२१३९
मीना, ६१०७ राजपूत, ५७०८ धाकर, ५४०९ अहीर और शेष इनसे कम
संख्या की जातियां थीं। (चमार की संख्या सब से अधिक होने के कारण
वह मथम लिखा गया)

इतिहास—वूड़ामणि नामक जाट से भरतपुर का राजवंश नियत हुआ, जिसनें दक्षिण (डेकान) को जाती दुई वादशाह औरंगजेव की सेना को छेश दिया। उसके पीछे जयपुर के राजा सवाई जयसिंह ने मुगल राज्य की घटती के समय चूड़ामणि के भाई बदनसिंह को दीग में जाटों का सर्दार बनाया। सन १७३३ ई० में बदनसिंह ने भरतपुर के किले को बनावाया। बदनसिंह के मरने पर उसका पुत्र सर्व्यमल राजा हुआ, जिसने भरतपुर को अपनी राजधानी बनाई। सन १७६० ईस्वी में उसने आगरे से गवर्नर को निकाल दिया और आगरे को अपने खास रहने का स्थान बनाया। सन १७६३ में सर्व्यमल मारा गया, उसके ५ पुत्रों में से ३ ने हुकूमत की। सन १७६५ में जाट लोग आगरे से निकाले गए।

सन १७८२ में सिंधिया ने १४ जिलों को छोड़ कर भरतपुर और राज्य को खेलिया। जब लालकोट में सिंधिया पर कठिनता पहुंची, तब उसने राजा सर्व्यंगल के पुत्र राजा रणजीत सिंह से मेल किया। सन १७८८ में जाट लोग फतहपुर सिकरी में गुलामकादिर द्वारा शिकश्त हुए और भरतपुर भाग आए।

सन १८०३ ई० में अंगरेजों के साथ राजा रणजीतसिंह की संधि हुई, परंतु जब रणजीतिसिंह ने यशवंत राव हुलकर के साथ साजिश की, तब सन १८०५ ई० में अंगरेज सेनापित लार्ड लेक ने भरतपुर पर महासरा किया, जो ४ हमलों में ३०० सैनिकों के मारे जाने पर बहुत नुकसानी के साथ शिकस्त हुआ। परन्तु रणजीतिसिंह ने खलह का पैगाम भेजा, जो तारीख चौथी मई को मंजूर हुआ।

राजा रणजीतसिंह के निःसंतान परने पर जब उसका भाई वलदेवसिंह सन १८२३ ई० में राजसिंहासन पर बैटा; तब उसके भतीने दुर्जनसाल ने इस झूटी बात पर कि राजा रणजीतसिंह ने मुझे गोद लिया था, गदी का दावा किया। बलवेवसिंह के कहने से राजपूताने के रेजीडेंट सर डेविड अक्रुरलोनी ने बलदेव-सिंह के छड़के वलवंतसिंह को सरकार की ओर से गद्दी पर बैठा दिया। सन १८२५ बलदेवसिंह मर गया । दुर्जनसाल ने बलवंतसिंह के मामा को मार डाला और बलवतसिंह को कैंद कर राजगदी पर आप बैटा। रेजीडेंट ने लड़ाई का सामान किया, परन्तु सरकार ने उसकी यह तजनीज पसन्द नहीं की। इसी समय दुर्जनसाल का भाई माधोसिंह उससे बिगड़ कर दीग में सिपाह भरती करने छगा। सरकार ने फसाद देख कर दुर्जनसाछ को बहुत समुझाया; पर जब उसने कुछ नहीं माना, तब उन्होंने २०००० सेना के साथ कमांडर इन-चीफ को दुर्जनसाल को निकालने के लिये भेजा। तारील १० दिसम्बर को अंगरेजी सेना भरतपुर पहुंची। सन १८२६ ई० की तारीख १८ जनवरी को ६ प्रसाह के घेरे के उपरांत अंगरेजों ने खरंग से किले को तोड़ कर भरतपुर को छेलिया। अंगरेजों के १०३ सैनिक मारे गए और ४७७ घायल हुए। दुर्जन-साल पकड़ा गया। सरकार ने फिर बलवंतसिंह को भरतपुर की राजगद्दी पर बैठाया । सन १८५३ में बलवन्तर्सिंह के देहान्त होने पर उनके शिशू प्रत्र वर्त्तमान महाराज सवाई सर यशवंतिसह वहादुर उत्तराधिकारी हुए, जिनका जन्म सन १८५२ ई० में हुआ था। राज्य का काम पोलिटिकल एजेंट और ७ सरदारों के कौंसिछ से होने छगा। सन १८६९ में वर्तमान महाराज ने राज्य का भार अपने हाथ में लिया। भरतपुर के महाराज जाट हैं। इनको अंगरेजी सरकार से १७ तोपों की सलामी मिलती है।

🗸 करौछी।

भरतपुर से लगभग ५० मील दक्षिणे राजपूताने के पूर्व भाग में देशी राज्य की राजधानी करौली एक कसवा है। यह २६ अंश ३० कला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश ४ कला पूर्व देशांतर में स्थित है। करौली रेल नहीं गई है। वहां से लगभग ७५ मील बरावर दुर पर नीचे लिखे हुए शहर और कसवे हैं। ऊपर कुछ पूर्व मथुरा, पूर्वोत्तर आगरा, उत्तर कुछ पश्चिम अलवर, पश्चिमोत्तर जयपुर, पश्चिम-दक्षिण टोंक और पूर्व कुछ दक्षिण ग्वालियर।

्ड्स वर्ष की मनुष्य-गणना के समय करोली में २३१२४ मनुष्य थे, अर्थात १७४२२ हिन्दू, ५३५२ मुसलान, ३३६ जैन और १४ क्रस्तान।

लगभग १३४८ ई० में अर्जुनदेव ने करौली को बसाया, जिसने कल्यान जी का मन्दिर बनवाया। कसबे के चारों ओर २३ मील लंबी पत्थर की दीवार है, जिसके वाहर उत्तर और पूर्व नाला और दिशण और पश्चिम लाई है। दीवार में ६ फाटक और ११ खिडिकियां बनी हैं। मिस इनिवासी ब्राह्मण और महाजन हैं। सड़क तंग और नादुरुस्त है। मृत महाराज जयसिंह पाल ने मुसाफिरों के लिये बड़ी सराय बनवाई। नीचे दरजे के मकानों की ढालुवां छत्त पत्थर के दुकड़ों से बनी हैं। प्रधान बाजार पश्चिम के फाटक से पूर्व महल की ओर ६ मील लंबा फैला हुआ है। बहुतेरे छन्दर मन्दिर हैं। शहर की पूर्व दीवार से २०० गज दूर ऊंची दीवार से घेरा हुआ राजमहल है, जिसमें २ फाटक लगे हैं। महल के भीतर छन्दर रंगमहल और दीवान आम है। मदनमोहन जी का मन्दिर प्रसिद्ध है; पर बहुत छन्दर नहीं है। शिरो-मिन जी का मन्दिर लाल पत्थर से बना हुआ बहुत छन्दर है। बागों में शिकारगंज, शिकारमहल और खवासमहल के बाग प्रधान हैं। यूरोपियन मुसाफिर खवासमहल की इमारत में टिकते हैं।

ै चैत्र की नवरात्र में कैलासिनी देवी का वड़ा मेला होता है । उस समय काली शिला पर यात्रियों का अच्छा समागम होता है।

करोली राज्य-भरतपुर और करोली एजेंसी के पोलिटिकल खपरिंटेंडेंस के आधीन राजपूताने में करोली एक वेशी राज्य है, जिसके दक्षिण-पश्चिम और पश्चिम जयपुर राज्य; उत्तर भरतपुर; पूर्वोत्तर धौलपुर राज्य और दक्षिण-पूर्व चंवल नदी है, जो ग्वालियर राज्य से इसको अलग करती हैं। राज्य का क्षेत्रफल १२०८ वर्ग मील है। प्रधान पहाड़ियां उत्तरी सीमा पर हैं, परन्तु कोई अंची चोटी नहीं है। सबसे अंची चोटी समुद्र से १४०० फीट से कम अंची है। प्राय: कुल राज्य पहाड़ी है। पहाड़ियों से उत्तम पत्थर निकलता है। फतहपुर सिकरी के महल और ताजमहल के हिस्से करौली के पत्थर से बने हैं। राज्य में बहुतेरे गांवों के बहुतेरे मकान और छत पत्थर की बनी हैं। जगह जगह ज़मीन के टुकड़े हैं। जंगलों में बाघ आदि हिंसक जंतु बहुत रहते हैं। ५ धारा बाली पंचनद नामक एक छोटी नदी करौली राज्य की पहाड़ी से निकली है। इसकी पांचों धारा करौली कसबे से २ मील पर इकड़ी हो जाती हैं। खुली ऋतुओं में चार धारों में पानी रहता है। पंचनद उत्तर घूमने के पश्चात वानगंगा में जा मिला है।

सैनिक बल १६० सवार, १७७० पैदल, ४० छोटी तोपें और ३२ गोलं-दाज हैं, राज्य भर में एक सेंट्रल जेल, एक स्कूल, एक पोष्ट आफिस और एक टकशाल हैं। राज्य से लगभग ५ लाख हर्पया माल गुजारी आती है।

सन १८८१ ई० की मनुष्य-गणना के समय करौली राज्य के १ कसबे और ८६१ गांवों में १४८६७० मनुष्य थे, अर्थात १३९२३७ हिन्दू, ८८३६ मुसलमान, ५८० जैन और १७ कुस्तान। हिन्दुओं में २७८१९ मीना, २२१७४ ब्राह्मण, १८२७८ चमार, १५११२ गूजर, ९६२० बनिया और ८१८२ राजपूत थे। ब्राह्मण साधारण रीति से जानवरों को लादते हैं।

इतिहास—राजकुल यदुवंशी राजपूत है। सन १८५२ ई० में महाराज नर-सिंह पाल मरगए। उनका सीधा वारिस न होने के कारण महाराज मदनपाल उत्तराधिकारी हुए, जिनको बलबे की खैरखाही में जी० सी० एस० आई० की पदवी मिली और १५ तोपों की सलामी के स्थान पर १७ तीपें नियत हुईं। सन १८६९ में महाराज मदनपाल के मर जाने पर ३ प्रधान उत्तराधिकारी बनाए गए। सन १८८३ में रिजेंसी के कौसिल ने राज्य को ३ भागों में बांट दिया।

+ बादीकुई जक्शन।

भरतपुर से ६१ मील (आगरे से ९५ मील) पश्चिम वादीकुई रेलवे का जंक्ञन है, जहांसे 'बंबे बड़ोदा और सेंट्रल इंडिया रेलवे,' जिसकी शासा राजपूताना माळवा रेळवे ' है, ३ ओर गई है; जिसके तीसरे दर्जे का महस्र्ल प्रति मील का २ पाई लगता है।

(२) बादीकुई से पश्चिम फलेरा जंक्- (२) वादीकुई से उत्तर की ओर शन है, उससे आगे यह लाइन दक्षिण-पश्चिम गई है-मील-प्रसिद्ध स्टेशन—· ५६ जयपुर । ९१ फलेरा जंक्शन। ९७ निराना। १२२ किस्रनगढ़।

१४० अजमेर जंक्शन। फळेरा जंक्शन से अधिक पश्चिम, कम दक्षिण-मील-प्रसिद्ध स्टेशन-४ सांभर।

> १९ कुचामन रोड, जिससे आगे 'जोधपुर बीका-नेर रेलवे' हैं— ९२ मर्ची रोड़ जंक्शन। १२७ पीपरा रोड । १५५ जोधपुर महल स्टेशन। १५६ जोधपुर स्टेशन।

मत्ती रोड जंक्शन से १०३ मीछ उत्तर, कुछ पश्चिम; बीकानेर और ळूनी जंक्शन से ४४ मील पूर्व-दक्षिण मार-वाड़ जंक्शन का स्टेशन, और ६० मील पश्चिम

पऋभद्रा का स्टेशन है।

१७६ खूंनीजंक्शव।

मील-प्रसिद्ध स्टेशन-३७ अलवर । ८३ रिवाड़ी जंब्रान। ११८ चर्खी दादरी। १३५ भिवानी। १५७ हांसी। १७२ हिसार। २७० भतिंडा जंक्शन। ३२४ फिरोजपुर। ३४१ कस्र ।

३५९ रायवंद जंक्शन। रिवाड़ी जंक्शन से पूर्वोत्तर १९ मील फर्रुख-नगर, ३२ मील गुरगांवा और ५२ मील दिल्ली जंब्-शन है। और रायबंद जंक्-शन से २४ मील उत्तर लाहीर है।

(३) बादीकुई से पूर्व-मील-प्रसिद्ध स्टेशन-६१ भरतपुर। ७८ अछनेरा जंक्शन। ९३ आगरा छावनी। ९५ आगरा किला। अछनेरा से २३ मील उत्तर थोड़ा पश्चिम मथुरा छावनी का स्टेशन है।

/अलवर ।

भरतपुर से ६१ मील पश्चिम वादीकुंई जंक्शन, और वादीकुंई जंगशन से ३७ मील उत्तर अलवर का स्टेशन है, जिससे १ मील दूर शहर के मधान फाटक तक उत्तम सड़क गई है । अलवर राजपूताने में देशी राज्य की राज-धानी एक छोटा शहर है, जिसमें कई उत्तम बाग, कई सराय, ५ जैनमन्दिर और कई देवमन्दिर हैं । एक्के और ठेलागाड़ी सवारी के लिये बहुत मिलती हैं।

इस साल की जन-संख्या के समय अलवर में ५२३९८ मनुष्य थे, (२८ ४६४ पुरुष और २३९३४ स्त्रियां) जिनमें ३७१२० हिन्दू, १३९२६ मुसलमान ११८६ जैन, १५७ क्रुस्तान, ७ सिक्ख और २ पारसी थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ७५ वां और राजपूताने में ५ वां शहर है।

बाहर ऊंची भूमि पर पहाड़ी किले के पादमूल के पास बसा है, जिसमें ५ प्रधान इमारतें हैं—१ महाराज का महल, २ महाराज बख्तावर्रिसंह का समाधि मन्दिर, ३ जगन्नाथ जी का मन्दिर, ४ कवहरी का मकान और माल-गुजारी का आफिस, और ५ तरंग खलतान का पुराना मकवरा । स्टेशन से शहर में प्रवेश करने पर दिहने अर्थात पूर्व को जाती हुई १४० गज लम्बी एक चौड़ी सड़क मिलती है, जिसके दोनों वगलों पर प्रायः एकही तरह की दुकानें हैं । इनके आगे के ओसारे टीन से छाए गए हैं । सड़क के पूर्व छोर पर करीब २०० गज लम्बा और इतनाही चौड़ा एक चौंक है, जिसके चारो बगलों पर मकानों के आगे ओसारे और चारो ओर ४ फाटक हैं । यहां चावल इत्यादि अनेक प्रकार के गल्ले विकते हैं । चौंक से पूर्व महाराज की बनवाई हुई पक्की मुड़ेरेदार बड़ी सराय है ये जिसके चारो वगलों पर करीब १०० कोठरी हैं, जिनके आगे महराबदार ओसारे लगे हैं । मैं ठीकेदार से किराये पर एक कोठरी लेकर उसमें टिका था । महाराज की शहर की अञ्चशाला में मैंने विविध प्रकार के २०० घोड़े देखे।

प्रधान फाटक से सीधे उत्तर एक सड़क गई है, उससे आगे जाकर वाएं

घूमने पर प्रधान चौक का फाटक मिछता है, जिसके पास पीतल की ३ तोणें रक्खी हैं। उससे आगे चौक की ४ सड़कों का मेल है, जहां एक बहुत छोटा बंगला है। पूर्व और दक्षिण की सड़कें करीब चार चार सौ गज, और पश्चिम और उत्तर की सड़कें करीब दो दो सौ गज लम्बी हैं। संपूर्ण सड़क पत्थर के तखतों से पाटी हुई हैं। इनके बगलों पर हर तरह की बस्तुओं की दुकानें और पत्थेक छोरों पर एक एक फाटक है।

राजमहळ-पश्चिम की सड़क के पश्चिमी छोर के पास जगन्नाय जी का छन्दर मन्दिर है, जिससे आगे जाने पर चौ मंजिला पंच मंजिला राजमहल मिल जाता है, जिसके हाते में आफताबी नामक एक छन्दर इमारत है। दबीर कमरा ७० फीट लम्बा है, जिसमें मार्चुल के छन्दर स्तम्भ लगे हैं। सागर तालाब की ओर उत्तम शीशमहल बना है। महल में एक महराबदार पुस्तकालय है, जिसमें हाथ की लिखी हुई बहुत पुस्तकों और किताबें रक्खी हुई है। तोशःखाने में बहुमूल्य जवाहिरात रक्खे हुए हैं। महल का छल्य फाटक पूर्व और जनाना फाटक पश्चिम अर्थात तालाब की ओर है। महल के उत्तर और दक्षिण छन्दर वाटिका लगी है। हथियार खाने में उत्तम उत्तम रल जड़े हुए तलवारें और दृसरे हथियार एकत्र हैं। ५० तलवारों में सोने की मूठ लगी हैं। बानीसिंह के हथियारों को बड़े कद के आदमी बांध सकते हैं। उसके बखतर, बरछों के नोक, और तलवार में बड़े बड़े हीरे जड़े हैं। पारस का बना हुआ सोलहवीं सदी का एक बखतर और एक टोप है, जिसको ७ फीट ऊंचा आदमी पहन सकता है।

सागर नामक ताळाब—पहाड़ के पूर्व बगल के नीचे राजमहल के पश्चिम करीब १५० गज लम्बा और १०० गज चौड़ा पत्थर से बना हुआ सागर तालाब है। चारो तरफ़ नीचे से ऊपर तक सीढ़ियां बनी हैं। पूर्व और पश्चिम चार चार और उत्तर और दक्षिण दो दो खड़े पुश्ते हैं, जिनके नीचे ओसारे बने हैं। पहाड़ी के बगल पर तालाब के पश्चिम कई कोठरियां और कई एक देवमन्दिर हैं।

बखतावरसिंह की छत्तरी—सागर तालाब के दक्षिण के फर्श पर बहुत खुन्दर दो मंजिली छत्तरी अर्थात समाधि-मन्दिर है। इसके नीचे चारो ओर ओसारे और ऊपर की मंजिल में उत्तम मार्बुल के ९६ स्तंभ लगा हुआ मनोहर मन्दिर है। इसके भीतर बारहदरी मकान है, जिसके चारो कोनों पर चार चार, और चारो बगलों पर दो दो जगह जोड़े खंभे लगे हैं। बारहदरी के बाहरी चारो कोनों के निकट तीन तीन जगह चार चार और चारो बगलों पर दो दो जगह जोड़े खंभे हैं। बारहदरी में अलवर के महाराज बखतावरसिंह का खुन्दर समाधि-स्थान बना है।

किला—१२०० फीट ऊंचे गावदुमी चट्टान के सिरे पर किला है। बेडौल पत्थर की सीढ़ियों की खड़ी चढ़ाई है। १५० फीट की ऊंचाई पर एक झोपड़ी है, जहां से खड़ी चढ़ाई आरंभ होती है। इससे आगे गाजी मर्द नामक स्थान में दूसरा झोपड़ा है, जहांसे चलने पर ४० मिनट में किले का फाटक मिलता है। किले में १२ फीट लंबी तोप पड़ी है और छोटे छोटे दो तीन कमरे हैं। किले में देखने योग्य कोई वस्तु नहीं है, परन्तु ऊपर से घाटी और पहाड़ियों का उत्तम हूल्य देखने में आता है। ऊपर जाने के लिये झंपान मिल सकता है। कहा जाता है कि निकुम्भ राजपूतों ने किले को बनवाया था।

हाथी गाडी—शहर के एक मकान में वानीसिंह की बनवाई हुई दो मंजिली हाथी-गाडी रक्खी है, जो दशहरे के दिन काम में लाई जाती है। इस पर ५० मनुष्य बैठ सकते हैं। ४ हाथी इसको खींचते हैं।

कंपनी बाग—रेलवे स्टेशन और शहर के बीच में महाराज का कंपनी-बाग नामक उत्तम उद्यान है, जिसमें जगह जगह सड़कें बनवाई गई हैं। कई नकली पहाड़ पर फूल लगाए गए हैं।

बाग में शिमला नामक मनोहर और विचित्र बंगला है, जिसमें पौधे और फूलों की बेल लगी हैं। करीब १५० गज लम्बी और १०० गज चौड़ी सरोवर के समान गहरी भूमि है। नीचे उतरने को चारो बगलों पर मध्य में सीदियां हैं। चारों ओर पानी का एक एक पका नल है। इस गर्त के मध्य में लोहे का जाल तथा जालीदार टीन से छाया हुआ फूल पौधे का एक छन्दर बंगला है, जिसके मध्य से चारों ओर ४ सड़क निकलों हैं, जिनके छोरों पर ४ फाटक हैं। शेष जगहों पर गमलों में और पृथ्वी पर पौधे और फूलों के छोटे द्वस लगे हैं, और गमलों में पौधे जमा कर छत की कड़ियों में लटकाए गए हैं। बंगले में जगह जगह पुतलियों के शरीर से जल के फल्बारे गिरते हैं और जहां तहां ऊपर से जल टपकता है। बंगले के बाहर चारों ओर बाटिका और जगह जगह सड़कें हैं। गहरी भूमि के ऊपर चारों ओर सड़क और उत्तर एक सेखा होज है।

साधारण वृत्तान्त—अलवर से २ मील दक्षिण एक टीले पर डूंगर-महल नामक तीन महला मकान है, जिसमें समय समय पर महाराज रहते हैं। शहर से १६ मील दूर रेजीडेंसी है। एक अंगरेजी अफसर के आधीन महाराज की ८०० फौज रहती है। शहर से एक मील उत्तर जेलखाना और २ मील दक्षिण तोपखाना है। वहांसे फिरने पर एक मील के अंतरपर मतापिसंह की छत्तरी, पानी का झरना, सीताराम, शिव और कर्ण के मन्दिर और मतापिसंह की रानी की (जो सती हो गई थी) एक छोटी छत्तरी मिलती है। शहर से ९ मील दिक्षण-पश्चिम एक झील है, जिससे शहर में और इसके आस पास पानी आता है।

शहर से १४ मील तालदृक्ष का कुण्ड है। भूमि से जल निकल कर है कुण्डों में गिरने के उपरांत वाहर निकला करता है। वहां स्नान के लिये बहुत यात्री जाते हैं।

अलवर राज्य—अलवर राज्य राजपूताना एजेंसी और हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट के पोलिटिकल खपरिंटेंडेंस के आधीन है। इसके उत्तर गुरगांव जिला, नाभा राज्य का वावल परगना और जयपुर राज्य का कोट कासिम परगना; पूर्व भरतपुर राज्य और गुरगांव जिला; और दक्षिण और पश्चिम जयपुर राज्य हैं। राज्य का क्षेत्रफल २०२४ वर्गमील है। चट्टानी पहाड़ियों के समानांतर

सिलिसिले उत्तर और दक्षिण को गए हैं। पहाड़ियों में स्लेट; काला उजला औरिपंक मार्बुल; लालगेक; लोहा तांबा सीसा; सज्जी बहुत होती हैं। आधे से अधिक देश में खेती होती हैं। मुसलमानों में मेओ जाति अधिक हैं जो कहते हैं कि हम लोग पहिले राजपूत थे। इनके ग्रामदेवता वही हैं, जो हिन्दुओं के हैं। वे लोग मुसलमानों के तिहवारों के अतिरिक्त हिन्दुओं के कई तिहवार मानते हैं। लोहा, कागज, मध्यम दरजे का शीशा यहांकी प्रधान दस्तकारी हैं। राज्य में ३ अस्पताल और कई एक स्कूल हैं, जिनमें लडिकयों के ४ हैं। इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय राज्य में ७६९०८० मनुष्य थे। अलवर राज्य में राजगढ़ वड़ी वस्ती है, जिसमें इस साल की जन-संख्या के समय १०३०२ मनुष्य थे। सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय राज्य में ६८२९२६ मनुष्य थे, अर्थात ५२६११५ हिन्दु, १५१७२७ मुसलमान, ४९९४ जैन और ९० कुस्तान। हिन्दु और जैनों में ७५९६५ ब्राह्मण, ६९२०१ चमार, ५०९४२ अहीर, ४२२१२ बनिया, ३९८२६ गूजर, ३८१६४ मीना, २९७२५ जाट, २६८८९ राजपूत थे। राज्य से लगभग २६ लाख रूपया मालगुजारी आती है।

इतिहास—पहळे यहां जयपुर और भरतपुर के आधीन छोटे छोटे हुकूमत करने वाळे थे। सन १७७५ ईस्वी के लगभग प्रतापिसंह वर्तमान राज्य के दक्षिणी भाग के (जो राज्य का आधा हिस्सा है) स्वतंत्र राजा बनगए। सन १७७६ ई० में उन्होंने भरतपुर वालों से अलवर और इसके किले का लेलिया। प्रतापिसंह के पश्चात उनके गोद लिये हुए लड़के बखतावरिसंह अलवर का राजा-हुए, जिन्होंने सन १८०३–१८०६ ई० में महाराष्ट्रों की लड़ाई के समय अंगरेजों से परस्पर साहयता करने की संधि की। अङ्गरेजों की सहायता से उन्होंने वर्तमान राज्य के उत्तरी भाग को पाया, जिससे राज्य की मालगुजारी ७ लाख से १० लाख हो गई। बखतावरिसंह के पश्चात बानीसिंह और बानीसिंह के पीछे सहदवनिसंह राजा हुए। जिनके पीछे सन १८७४ ई० में वर्तमान महाराज सवाई सर मङ्गलसिंह बहादुर जी० सी० एस० आई० अलवर नरेश हुए। महाराज ३२ वर्ष अवस्था के नरूका राजपूत हैं। राजकुमार जयसिंह ९ वर्ष के बालक हैं। अङ्गरेजी सकीर की ओर से अलवर के राजाओं को १५ तोपों की सलामी मिलती है। अलवर का सैनिक बल १८०० सवार, ४७५० पैदल, १० मैदान की और २९० दूसरी तोपें और ३६९ गोलन्दाज हैं।

 जयपुर् ।

बादीकुई जंक्शन से ५६ मील पश्चिम (आगरा से १५१ मील) जयपुर का स्टेशन है। जयपुर राजपूताने में एक प्रख्यात देशी राज्य की राजधानी भारत के अत्युत्तम शहरों में से एक और राजपूताने के संपूर्ण शहरों से उत्तम शहर है। यह २६ अंश ५० कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ५२ कला पूर्व देशांतर में स्थित है। स्टेशन से थोड़ी दुर एक धर्मशाला है। उसकी कोठरियों में जंजीर न थी, इसलिये मैं उसके निकट किराये के मकान में टिका था।

इस साल की मनुष्य-गणना के समय जयपुर में १५८९०५ मनुष्य थे, अर्थात ८४०९५ पुरुष और ७४८१० स्त्रियां । जिनमें १०९८६१ हिन्दू, ३८९५३ मुसल्लमान, ९७८० जैन, २४४ क्रस्तान, ६४ सिक्ख, २ पारसी, और १ अन्य थे । मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भातवर्ष में सत्रहवां और राजपूताने में पहला शहर है।

दक्षिण के अतिरिक्त शहर के ३ ओर पहाड़ियां हैं जिन पर किले बने हैं। शहर के समीप ही पश्चिमोत्तर पहाड़ी के सिलसिले के अंत में नाहरगढ़ पहाड़ी किला हैं। सिलसिले का चेहरा दक्षिण अर्थात शहर की ओर दुर्गम और उत्तर आम्बेर की तरफ ढालुवां है।

शहर के चारो ओर औसत २० फीट ऊंचा और ९ फीट मोटा छुन्दर शहरपानाह है, जिस पर बैठ कर गोली चलाने के लिये भंवारिया बनी हैं। शहरपनाह में ७ फाटक हैं। पूर्व स्ट्यंपोल, पश्चिम चांदपोल, उत्तर आंबेर दवीजा और गंगापोल और दक्षिण किछनपोल, संगानेर दवीजा और घाट दवीजे हैं। इनके अतिरिक्त ७ खिड़िकियां भी हैं। शहर की लम्बाई पूर्व से पश्चिम तक २ मील से कुछ अधिक और चौड़ाई लगभग १६ मील है। यहांकी सड़कें चौड़ाई और दुरुस्तगी के लिये प्रसिद्ध हैं। शहर के मध्य में पश्चिम से पूर्व को एक सड़क गई है, जिसको काटती हुई मध्य के समाना-न्तर में दो जगह दो सड़कें दक्षिण से उत्तर चली गई हैं। इस प्रकार से शहर के चौकोने ६ हिस्से बन गए हैं। प्रधान शड़क दोनों बगलों के फुटपाथ के सिहत पत्थर से पाटी हुई १११ फीट चौड़ी है, दूसरे दरजे की सड़क ५५ फीट और तीसरे दरजे वाली सड़क २७॥ फीट चौड़ी है। शहर के मध्य में प्रधान सड़क पर मानिक चौक है, जिसके दक्षिण जौहरी बाजार सड़क, उत्तर हवामहल बाजार सड़क, पूर्व रामगंज बाजार की सड़क और पश्चिम त्रिपो-लिया बाजार और चांदपोल बाजार की सड़कें हैं।

सड़कों के दोनों बगलों के संपूर्ण मकान एक रूप और एकही कद के बने हैं। उन पर एकही प्रकार का चित्र रंग है। जयपुर की गवर्नमेंट के आज्ञा- नुसार मकानों के मालिकों को इसी नियम के मकान बनाने पड़ते हैं। मकान ऐसे छन्दर बने हैं, जिससे जयपुर के सौदर्य का अनुभव होता है। भारत- वर्ष में यह एकही शहर है, जिसमें एकही नकशे और एकही प्रकार के मकान बने हैं।

जयपुर प्रसिद्ध सौदागरी शहर हैं । वेशी दस्तकारियों का खास करके बहुत प्रकार के जवाहिरातों का और छापे हुए रंगदार कपड़ों का यह प्रधान है। इस में ७ बड़ी कोठियां, जेल और टकशाल है। टकशाल में सोने की महर, रुपए और तांवे के पैसे बनते हैं। सड़कों पर गैस की रौशनी होती है। शहरपनाह से बाहर पोष्ट आफिस, टेलीग्राफ आफिस, और रेजीडेंसी है। शहर से ४ मील पश्चिम एक धारा है, जो चस्बल नदी में जाकर गिरती है। उससे नल द्वारा शहर में जल पहुंचाया जाता है। पंपींग स्टेशन और हौजें चांदपोल फाटक के करीब सामने हैं।

चैत्र में रामनौमी के उत्सव का बड़ा मेळा जयपुर में होता है। उस समय जयपुर के राजसामान देखने में आते हैं । मेळे में दूर दूर से सौदागर और देखने वाळे पहुंचते हैं। राजमहळ-शहर के क्षेत्रफल के सातवें भाग में महाराज के महल, खुन्दर बाग और खुल बिलास की जमीनें शहर के भीतर फैली हैं। बड़े महल का मध्यभाग अर्थात चन्द्रमहल ७ मंजिला है। दीवानखास श्वेत मार्बुल का बना है, जो उत्तम सावेपन के लिये हिन्दुस्तान में खयाल के लायक है। बाई ओर हाल के मकान हैं, जिनमें महाराज के, उनके मुसाहिबों के और जनाने कमरे हैं। बिना महाराज की आज्ञा के महल के अंदर कोई जाने नहीं पाता।

अवजर वेटरी (प्रहादिदर्शन स्थान) चन्द्रमहल के पूर्व है। सर्वाई (दूसरे) जयसिंह ने बनारस, मथुरा, दिल्ली, उजैन और जयपुर में अवजर-वेटरियों को बनवाया। उन सबसे यह बड़ी है। खुला हुआ आंगन आश्चर्य यंत्रों से पूर्ण है। यंत्रों का खधार नहीं होता, इनमें बहुतेरे वे काम है।

नाही अस्तवल अवजर वेटरी से लगा हुआ है, उसके वाद शहर के मधान सड़कों में से एक के किनारे पर हवामहल नामक मिसद्ध इमारत है।

महल के एक आंगन में राज्य के छापेखाने का आफिस, घड़ी का चुर्ज और लड़ाई के सामान हैं। दीवान आम के पूर्व परेड की भूमि है, उसके पीछे कानून की कचहरियां हैं। प्रधान दवींजे के पास राजा ईश्वरीसिंह का बनवाया हुआ ईश्वरी मीनार स्वर्गशूल है।

देवमन्दिर—जयपुर में गोविन्दवेव जी, मदनमोहन जी, गोपीनाथ जी, गोकुलनाथ जी, राधादामोदर जी, रामचन्द्र जी, विश्वेश्वर शिव आदि देवताओं के खन्दर मन्दिर हैं। महाराज मानसिंह ने वृन्दावन में गोविन्दवेव जी का मन्दिर सन १५९० ईस्त्री में बनवाया। जब औरंगजेव ने उसके तोड़ने का हुक्म दिया, तब मानसिंह के बंश वालों ने गोविन्दवेव जी की मूर्ति को आंवेर में लाकर रक्खा। सवाई जयसिंह के समय जयपुर के राज-महल के सन्मुख उत्तम मन्दिर बना कर यह मूर्ति स्थापित की गई। गोकुलनाथ की मूर्ति को बल्लभाचार्कों ने यमुना तीर पाया था, जिसकी स्थापना गोकुल में की गई थी। यह मूर्ति जयपुर में कब आई, सो जान नहीं पड़ता है। विश्वेश्वर शिव के उत्तम मन्दिर में मार्बुल का बहुत काम है, आगे की मार्बुल की दीवार में खनहरा काम और उसके ४ बड़े ताकों में खन्दर ४ देवमूर्तियां हैं। जगमोहन के दिहने गणेश जी, बाएं कालभैरव और आगे नन्दी की मूर्ति है। तीनो विशाल मूर्तियां बहुत छोटे छोटे मन्दिरों में स्थापित हैं।

नाम निवास बाग जियपुर के महाराज रामसिंह के नाम से इसका नाम रामनिवास बाग है। यह भारत के सबसे उत्तम बागों में से एक हैं। बाग का विस्तार ७० एकड़ में है। यह ४ छाख रूपये के खर्च से बना है। इसमें प्रति वर्ष महाराज के ३०००० रूपये खर्च पड़ते हैं।

बाग में सावन भादों नामक मनोहर विचित्र बंगला है, जिसके भीतर सड़कों के बगलों में पौधे और फूलों के छोटे हुझ लगे हैं। छोटे गमलों में पौधे जमा कर जगह जगह लटकाए गए हैं, और स्तंभों पर जमाए गए हैं, जिन पर कल का पानी ऊपर से टपकता है। बंगले में जगह जगह पत्थर के टुकड़े रख कर नकली पर्वत बने हैं, जिनमें से झरना के समान कल का पानी निकलता है।

वाग के पूर्व भाग में विड़ियाखाना है, जिसमें विविध प्रकार के पक्षी और बाघ, मालू, हरिन, बंदर आदि बहुतेरे वनजंतु पाले गए हैं।

वाग के पश्चिमोत्तर अर्लमेयों की उत्तम प्रतिमा है। यह सन १८६९ से १८७२ तक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल और वाइसराय थे, जो १८७२ की फरवरी में एंडेमन टापू के एक खूनी के हाथ से मारे गए।

्र अजायबखाना—रामनिवास वाग के एक भाग में एलवर्ट हाल नामक दो मंजिली इमारत है, जिसकी नेव भिंस आफ वेल्स ने सन १८७६ ई० में दी और वह सन १८८० में खुली। इसमें एक बड़ा दबीर हाल और एक छन्दर मिडजियम (अजायबखाना) है। दबीर हाल की दीवारों पर भीतरी चारो ओर जयपुर के राजाओं की कम से तस्वीरें खेंची हुई हैं। तस्वीरों के पास उनका नाम लिखा है। अजायबखाना भारतवर्ष के प्रत्येक विभागों के हाल की मनोहर दस्तकारी और परिश्रम के कामों और पुराने समय की प्रतिमा आदि नाना प्रकार की चीजों की रिमेंसों (बचत) से भरा हुआ है । इसमें २२०० वर्ष से अधिक की एक स्त्री की छाञ्च, जो ऐस्त्रभी में मिली, रक्सी हुई है।

े अन्य इमारतें—रामनिवास बाग में मेयो अस्पताल पत्थर से बना हुआ है, जिसमें १५० रोगी रह सकते हैं। यहां घड़ी का एक बुर्ज है। रेलवे स्टेशन के मार्ग में सड़क से थोड़ा पश्चिम एक गिर्जा है। एक नई छुन्दर इमारत में कारीगरी का स्कूल है, जिसमें धातु, मीना, करचोबी आदि के कामों की शिक्षा दी जाती है। दूसरे स्थान पर मंस्कृत कालिज और एक स्थान पर बालिकी-विद्यालय है। महाराज का कालिज कलकत्ता-विश्वविद्यालय के आधीन कर दिया गया है। जयपुर की शिक्षा दूसरे राज्यों की शिक्षा की अपेक्षा अधिक उन्नति पर है। सन १८४४ ई० में कालिज खुलने के समय केवल ४० विद्यार्थी थे, परन्तु सन १८८९-१८९० में प्रति दिन १००० विद्यार्थी की हाजिरी होती थी।

शहरपनाह के बाहर पूर्वोत्तर एक बाग में राजाओं की छत्तरी हैं। वहां जाने पर पहले उत्तम मार्बुछ से बनी हुई सवाई जयसिंह की छत्तरी देख पड़ती है, जो वहांकी सब छत्तरियों से खन्दर है। यह चौखूटे चबूतरे पर नकाशी-दार २० स्तभों के उपर गुंवजदार बनी है। जयसिंह की छत्तरी से दक्षिण-पूर्व उनके पुत्र माधवसिंह की छत्तरी है, जिससे पश्चिम माधवसिंह के पुत्र मतापर्सिंह की छत्तरी है; जिसको मृत महाराज रामसिंह ने अलवर के उजले मार्बुछ से बनवाया।

मालिता गद्दी—जयपुर से १ ई मील पूर्व आसपास के मैदान से ३५० फीट ऊपर एक पहाड़ी पर सूर्य का मन्दिर है और चबूतरे के नीचे एक पवित्र झरने का पानी गिरता है। इसी स्थान पर रामानुज संप्रदाय का प्रसिद्ध स्थान गुलिता गदी है।

्र अम्बेर—जयपुर से लगभग ५ मील पूर्वीत्तर पहाड़ी झील के किनारे पर आम्बेर एक कसवा है, जो सन १७२८ इं० तक जयपुर की राजधानी था और उत्तम इमारतों के लिम प्रसिद्ध है। सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय आम्बेर में ५०३६ मनुष्य थे। अब तक आम्बेर के किले में कैंदलाना हैं, और राज्य का खजाना रहता है। बिना महाराज की आज्ञा के आम्बेर के पुराने महल देखने का अधिकार किसी को नहीं है। पुराना महल एक बड़ी इमारत है, जिसका काम लगभग सन १६०० ई० में राजा मानसिंह ने आरम्भ किया था। पुराने महल से ४०० फीट ऊपर पहाड़ी पर बड़ा किला है। पहाड़ी के छोर के पास आम्बेर कसवे मे एक सुंदर झील हैं।

एक बड़े आंगन से सीढ़ियों द्वारा प्रवेश करने पर संदर दीवानआप मिलता है। इसमें खंभों की दोहरी कत्तार हैं। दीवानआम के दहिने काली जी का एक छोटा मंदिर है। एक ऊंचे स्थान पर सवाई जयसिंह का खास कमरा है। एक छन्दर फाटक से वहां जाना होता है। ऊपर जालीदार खिड़ि-कियों के साथ छहागमन्दिर नामक एक छोटा मकान है। इसके बाद महलों से घेरा हुआ एक सब्ज और शीतल बाग है। यहां मार्बुल का वहुत काम है। बाग में फव्वारे लगे हैं। बाएं जयमन्दिर (विजय का मन्दिर) है, जिसमें श्वेत पत्थर के चौर्खंटे तख्ते जड़े हुए हैं। स्नान का कमरा मार्बुल का है। ऊपर यशमन्दिर है, जिसमें चमकी छे पत्थर जड़े हुए हैं। यशमन्दिर के खंभों और मेहरावों में नकाशी का छन्दर काम है। पूर्वोत्तर के कोने के समीप बालकानी है, जहांसे आम्बेर और मैदान का छन्दर हुआ देखपड़ता है। दीवार के बाहर दूसरे जयसिंह से पथम के राजाओं की कई एक छत्तरी हैं। जयमन्दि के सामने छुखनिवास है। चन्दन की लक्षड़ी के दरवाजे में हांथी-दांत जड़ा हैं। स्वीरी फाटक के रास्ते के निकट विष्णु का खन्दर मंदिर है, जिसके जगमोहन में नकाशी से कृष्ण और गोपियों की मूर्तियां बनी हैं। आम्बेर में पहले बहुतेरे छुन्दर देवमन्दिर थे, परन्तु अव जनमें से बहुतेरे उजड़े जाते हैं।

+संगानर—जयपुर से करीब ७ मील दक्षिण-पूर्व और संगानेर रेलवे स्टेशन से ३ मील दुर संगानेर एक प्रसिद्ध वस्ती है। जयपुर से रेजीडेंसी और मोती डूंगरी होकर संगानेर तक गाड़ी की सड़क है। ६६ फीट ऊंचे ऊजड़े हुए फाटक से होकर संगानर में जाना होता है। दहिने करपान जी का छोटा मन्दिर मिछता है, जिसके सामने सीताराम का मंदिर है। इसके प्रास ६ फीट ऊंचा मार्चुछ का स्तंभ है। यहां ब्रह्मा, विष्णु, ज्ञिव और गणेश की मूर्त्तियां है। वाएं ओर पुराने महछ की तवाहियां हैं। इससे उत्तर कुछ पूर्व ३ आंगनों के सहित वड़ा मंदिर है।

जयपुर राज्य—यह राज्य राजपूताने के उत्तर भाग में है। इसके उत्तर बीकानेर, लोहाक, झंझर और पटियाला; पूर्व अलबर, भरतपुर और करीली; दक्षिण ग्वालियर, बूंदी, टोंक और मेवाइ; और पश्चिम किछनगढ़, जोधपुर और बीकानेर राज्य है। राज्य का क्षेत्रफल १४४६५ वर्गमील है। महाराज को लगभग दे लाख रुपया मालगुजारी आती है। पहाड़ी देश होने पर भी इसका अधिकांश भाग समतल है। राज्य में सब निदयों से बड़ी बनास नदी है। बानगंगा जयपुर राज्य में पूर्व को बहती हुई, यमुना में जा मिली है। सावी नदी उत्तर ओर बहती है, जो जयपुर शहर से २४ मील उत्तर से निकली है। निमक की सांभर झील प्रख्यात है। खेतड़ी के पड़ोस में तांबा की खान है। अलबर की सीमा के पास रैवाला में मोटे किसिम का भूरा मार्बुल और कोट पुतली में नीला मार्बुल निकलता है। राज्य में नाहरगढ़, रणधंभोर, आंवेर, अंवागढ़ आदि बहुतेरे पहाड़ी किले हैं। यह राज्य ११ जिलों में विभक्त है। जयपुर, देवास, शिकावती, तारावती, सांभर, हिंडजन, गंगापुर, माया, मालपुर, माधवपुर और कोट कासिम।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय जयपुर राज्य के जयपुर शहर में १५८९०५, शिकार में १९८९७, फतहपुर में १६५८०, माधवपुर में १३९७२, हिंडडन में १२९९६, नवलगढ़ में १२५६७, सांभर में १२३६२, झंझुनू में १२२६७, रामगढ़ में १२१९७, उदयपुर में १०३६३, खंडेला में १००६७ मनुष्य थे। दूसरे १०००० से कम मनुष्यों के २३ कसवे हैं। पाटन, लालसोत, लक्ष्मणगढ़, मालपुर कोट पुतली, दोसा, तोडाभीम, श्रीमाधवपुर, विसाऊ, चाकिन, पामनियावास, जिलू, गंगापुर, वासवा, बैरथ, मंडरा, तोड़ा, चिरवा, खेतड़ी,

सिंहाना, सूर्यगढ़, गिजगढ़, और आंबेर।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय जयपुर राज्य में २८२४४४० मनुष्य थे, सन १८८१ में २५३४३५७ मनुष्य थे; अर्थात २३१५२१९ हिंदू, १७०९०७ मुसलमान, ४७६७२ जैन, ५५२ क्रस्तान, और ७ पारसी । हिन्दू और जैनों में ३५१००४ ब्राह्मण, २४२४७४ महाजन और वनिया, २२७३२१ जाट, २२१५६५ मीना, २०९०९४ चमार, १७१६३२ गूजर, १२४३४५ राजपूत, ५४६६५ अहीर थे।

राज्य की प्रधान फिसल अब, ऊख, कपास, पोस्ता, तेल के बीज और तंबाक हैं। और प्रधान दस्तकारी मार्बुल की मूर्तियां, और पत्थर की दूसरी चीजें, सोने पर मीनाकारी का काम, ऊनी कपड़े इत्यादि हैं। राज्य में बहुतेरे स्कूल हैं, जिनमें लड़िकयों के पढ़ने के लिये १२ स्कूल हैं।

सौनिक बल ३५७८ सवार, ९५९९ पैदल, २१६ तोपों के साथ २९ किले ६५ तोषें और ७१६ गोलंदाज हैं।

जयपुर राजधानी से २४ मील दक्षिण-पूर्व चतस् बस्ती में वर्ष भर में ८ मेले होते हैं, जिनमें से बहुतेरों में बहुत लोग आते हैं। राजधानी से लगभग ४२ मील दक्षिण मही की दीवार से घेरी हुई दीगी नामक बस्ती है, जिसमें कल्याण जी का मिसछ मेला वर्ष में एक बार होता है; जिसमें लगभग १५००० यात्री आते हैं। हिंडउन रोड रेलवे स्टेशन से सड़क द्वारा ३५ मील और करौली राजधानी से १४ मील उत्तर जयपुर राज्य में हिंडउन कसवा है, जहां वर्ष में एक मेला होता है; जिसमें लगभग १ लाख मनुष्य आते हैं। जयपुर शहर से लगभग ४३ मील उत्तर माधवपुर कसबा है, जहां ज्येष्ट और आखिन मास में मेला होता है। पित मेलों में लगभग १२००० मनुष्य आते हैं।

इतिहास—जयपुर-राजकुल कुशावह राजपूत है। (बाल्मीकि-रामायण-उत्तर कांड-१२१ वें सर्ग में लिखा है कि रामचन्द्र के पुत्र कुश के लिये विध्य पर्वत के तट पर कुशावती और लव के लिये श्रावस्ती नगरी बसाई गई)

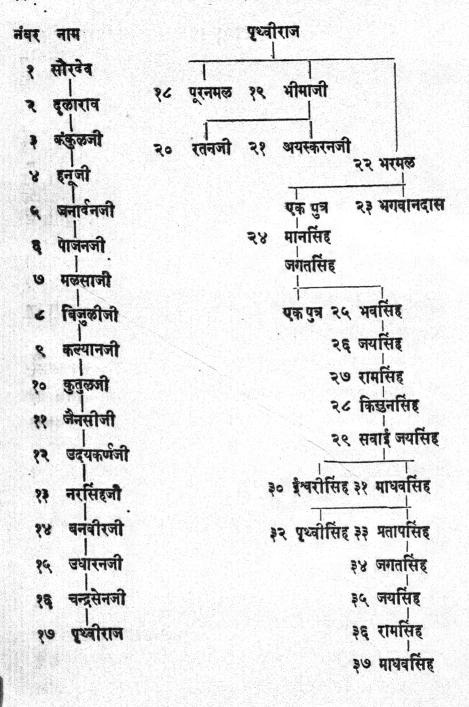
कुशावह बंश के सौरदेव ने ई० सन के दशवें शतक में नरवर राज्य से

आकर राजपूताने के मीना लोगों को जीत धुंधर राज्य की (जो अब जयपुर का राज्य है) प्रतिष्ठा की । उस समय माड़ी (रामगढ़) उनकी राज धानी थी। सौरदेव के पुत्र दूला राव ने सन ९६७ ई० में वर्तमान जयपुर से ३ मील पूर्व खो (गांव) के मीना राजा को परास्त कर वहां राजधानी नियत की। दूछा राव के बाद छठवीं पुश्त में बिजुली जी राजा था, जिसके राज्य के समय आम्बेर राजधानी हुआ। आंबेर को मीना छोगों ने कायम किया था। सन ९६७ ई० तक वह शहर उन्नति पर था। सन १०३७ में राजपूतों ने उसको छे लिया। राजा पृथ्वीराज के परास्त होने पर विजुली जी के पिता मुसलमानों के आधीन एक सेनापति थे। विजुली जी के पीछे ११ वीं पुष्ति में भगवान दास हुए जिन्हों ने अपने भाई के पुत्र मानसिंह को गोदलिया था। मानसिंह अकबर बादशाह की सेना का खबेदार बनाए गए । राजा मानसिंह के समय में राज्य के ऐश्वर्य की दृद्धि होने लगी और तब से आम्बेर के राजाओं ने राव की पदवी छोड़कर राजा की पदवी। राजामानर्सिंह के पुत्र कुमार जगतर्सिंह की अकाल मृत्यु होने पर जगतसिंह के पुत्र भवसिंह आंबेर के राज सिंहासन पर बैंदे। राजा भवसिंह के पुत्र राजा (पहिला) जयसिंह ने औरंगजेब के आधीन दक्षिण में अपना पराक्रम दिखाया । वादशाह ने उनको मिरजा राजा की पदवी दी। राजा जयसिंह अंत में दक्षिण के संग्राम में मारे गए।

जयसिंह के पोता सवाई (दूसरा) जयसिंह सन १६९९ में राजा हुए, जिन्हों ने सन १७२८ ई० में जयपुर शहर को नियत कर इसका नाम जयपुर रक्ता बादशाह फर्रुखशेर ने जयपुर राज्य को छीन छिया था, तब सवाई जयसिंह ने मारवाइ की राज कन्या से बिवाह कर उसके पिता की सहायता से अपने राज्य से मुसलमानों को भगा दिया और सांभर पर अधिकार करके मारवाइ के राजा सिंहत उसको बांट लिया। फर्रुखशेर के पश्चात मुगलों की दशा अधिक हीन हुई। भरतपुर के जाट स्वाधीन हो गए। उस समय सवाई जयसिंह ने उनके सर्दार को केंद्र करके वदनसिंह नामक एक जाट को भरतपुर का राजतिलक के दिया। दिल्ली के वादशाह ने इस कार्य से पसन्न हो जयसिंह

को सारमादाई राजाहाई हिन्दुस्तान की पदवी से खुशोभित किया। सन १७ ४३ में सवाई जयसिंह की मृत्यु हुई। सवाई जयसिंह के राज्य के पश्चात क्रम से ४ राजाओं ने स्वतंत्र राज्य शासन किया। सवाई प्रतापसिंह के राज्य के समय मांचेरी (अछवर) स्वाधीन राज्य हो गया और पिंडारी सर्दार अमीर खां ने टोंक राज्य नियत करके जयपुर राज्य का कुछ अंश अपने राज्य में मिला लिया। सवाई जगतिसह के राज्य के समय सन १८०३ ईस्वी में अंग-रेजों के साथ संधि होने पर जयपुर करद और मित्र राज्य हुआ। सवाई राम-रिंह के राजिसिहासन होने के १ ई वर्ष पीछे राज्य में अशांति फैली। एसिस्टेंट गवर्नर जनरल मिष्टर वेल्क साहव जयपुर में आए, जो अन्याय से मारे भए। इस अपराध से दीवान रामचन्द्र को फांसी हुई। और सिंगी ग्रंथाराम चुनार के किले में कैंद हुआ। सवाई रामसिंह के राज्य के समय जयपुर के सौंदर्य की दृष्टि हुई। सन १८५७ के वलवे के समय सवाई रामसिंह ने अंगरेजी सर्कार की सहायता की, इसलिये जनकी सलामी २१ तोपों की हो गई।

सवाई रामसिंह सन १८८० में निस्संतान पर गए, उसके उपरांत उनके वसीयतनाम के अनुसार वर्तमान जयपुर नरेश हिजहाईनेस सवाई सर माधव सिंह बहादुर जी० सी० एस० आई जयपुर के राज सिंहासन पर बैठे, जिनका जन्म सन १८६१ ई० में हुआ था। जयपुर की कमिक बंशावली नीचे हैं।



∠टॉक ।

जयपुर से करीब ६५ मील दक्षिण जयपुर से बूँदी जाने वाल्ये सड़क पर प्रायः दोनों के बीच में बनास नदी के दिहने किनार से १ मील दक्षिण राज-पुताने में देशी राज्य की राजधानी टोंक एक छोटा शहर है। यह २६ अंश १० कला ४२ विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ५० कला ६ विकला पूर्व देशान्तर में स्थित है। वहां रेल की सड़क नहीं गई हैं। शहर दीवार से घेरा हुआ है। घेरे के भीतर मही का किला है। शहर में नवाब का महल, इनकी कचहरियां और कई एक उद्यान देखने योग्य बस्तु हैं।

इस साल की जन-संख्या के समय टोंक में ४६०६९ मनुष्य थे, अर्थात २३२८९ पुरुष और २२७८० स्त्रियां । जिनमें २२५७९ हिन्दू, २१९२१ मुसलमान, १५५६ जैन और १३ क्रस्तान थे । मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ८६ वां और राजपूताने में ७ वां शहर है।

टोंक राज्य—टोंक, हारावती और टोंक एजेंसी के पोलिटिकल छपरिटेंडेंट के आधीन राजपूताने में यह देशी राज्य हैं । राजपूताने में केवल यही
छुसलमानी राज्य हैं । राज्य का क्षेत्रफल २५०९ वर्गमील हैं और इसकी
मालगुजारी लगभग १२ लाख रुपया आती हैं । इस वर्ष की मनुष्य-गणना
के समय टोंक राज्य में ३७९३३० मनुष्य और सन १८८१ में ३३८०२९ मनुष्य
थे, अर्थात २९३७५७ हिन्दू, ३८५६१ मुसलमान, ५६९३ जैन और १८
छुस्तान । हिन्दू और जैनों में ३४०२९ चमार, २०१६८ ब्राह्मण, १९५०१ महाजन, १६८२५ राजपूत, १६५६८ गूजर, १५७९८ मीना, १४५५३ जाट,
१०५०१ अहीर थे। मुसलमानों में १५५८३ पढान, १०५४९ सेख, २६९६ सैयद,
९१० मुगल और ८८२३ दुसरे थे। राज्य का सैनिक वल ५३६ सवार, २८८६
पैदल, ८ मैदान की और ४५ दुसरी तोपें और १७५ गोलंदाज हैं।

इतिहास—बादशाह मुहम्मद गाजी के समय ताला खां बोनर देश से आकर रुहेलखंड में नौकरी करने लगा। उसके प्रत्र ह्यात खां ने कुछ जमीन को अपने कब्जे में किया । हयात खां का प्रत्र अमीर खां सन १७९८ ई० में जब ३० वर्ष का था, तब हुलकर के आधीन एक बड़ी सेना का कमांडर हुआ। हुलकर ने सन १८०६ में टोंक का राज्य उसको वेदिया। अमीर खां ने सन १८०९ में ४०००० धोड़ सवार लेकर नागपुर के राजा पर चढ़ाई की। फिरते समय उसकी सैना ने देश को लूटा।

अंगरेजों ने सन १८१७ में पिंडारियों को दबाने के लिये अमीर खां को टोंक का राज्य देकर छल हकर लिया। अमीर खां सन १८३४ में मर गया। उसका पुत्र वजीर महम्मद खां उत्तराधिकारी हुआ। सन १८६४ में उसके मरने के उपरांत उसका पुत्र महम्मद अलीखां टोंक की गही पर बैठा, जो लावा के ठाकुर की सहायता करने के अपराध में सन १८६७ में तख्त से उतार दिया गया और उसका लड़का राजगही पर बैठाया गया जो टोंक का वर्तमान नवाब सर महंम्मद इब्राहिम अलीखां बहादुर सैलात जंग जी० सी० एस० आई० ४२ वर्ष की अवस्था का वोनर पठान है। टोंक के नवाबों को अंगरेजी सकार की तरफ से १७ तोपों की सलामी मिलती है।

तेरहवां अध्याय।

(राजपुताने में) सांभर, देवयानी, बीकानर, जोधपुर और जैसल्डमेर ।

+ सांभर।

जयपुर से ३५ मील (बांदीकुंई जंक्शन से ९१ मील) पश्चिम फलेरा जंक्शन है, जिससे ४ मील पश्चिमोत्तर सांभर स्टेशन है। सांभर झील के पास जयपुर के राज्य में सांभर एक कसवा है।

इस साल की मनुष्य-गणना के समय सांभर में ८२८० हिन्दू, ३९११ मुसलमान, १५८ जैन और १३ क्रस्तानकुल १२३६२ मनुष्य थे। स्टेशन से १ मील झील तक पकी सड़क है। चारो तरफ का देश खुला है, क्योंकि यह निमकदार चट्टानों से बना है। जब वर्षा चट्टानों को घोती है, तब निमक झील में चला जाता है। वर्षाकाल के पक्षात यह झील पूर्व से पश्चिम तक २१ मील लम्बी और उत्तर से दक्षिण तक औसत ५ मील चौड़ी रहती है। किनारे से १ मील भीतर तक इसकी गहराई केवल २ ६ फीट है। झील के पूर्व और उत्तर किनारों पर निमक का काम होता है। प्रतिवर्ष झील से औसत ३००००० से ४००००० टन तक निमक निकलता है। करीब एक मन निमक इकट्टा करने और निकालने में है आना खर्च पड़ता है। सत्रहवीं सदी से सन १८७० ई० तक निमक का काम जयपुर और जोधपुर के अंखित-यार में था, पश्चात अंगरेजी गवर्नमेंटने इसका ठीका लेलिया, जो दोनों राजाओं को प्रतिवर्ष सत्रह अटारह लाल रुपया देती है।

सांभर के निकट बरहना में दादूपन्थी सम्प्रदाय का मुख्य स्थान हैं, जहां दादूजी का देहान्त हुआ था। इस सम्प्रदाय का दृत्तांत निराना में देखो।

/देवयानी

निसांभर बस्ती से २ मील देवयानी नामक स्थान है । शुकाचार्य की पुत्री और राजा ययाति की स्त्री देवयानी के नाम से इस स्थान का यह नाम पड़ा है। यहां एक सरोवर के समीप कई छोटे मन्दिर हैं, जिनमें शुकाचार्य, देव-यानी आदि की मूर्तियां स्थापित हैं।

इसी स्थान पर द्वपपनी दैत्य की कन्या शर्मिष्ठा ने देवयानी को कूप में डाल दिया था। राजा ययाति ने उसको कूप से निकाला, इसलिये राजा का बिवाह देवयानी से हुआ।

यहां बैशाख की पूर्णिमा को एक मेला होता है, जिसमें राजपूताने के अनेक स्थानों से बहुत यात्री आते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(आदि पर्व ७८ वां अध्याय) शुक्राचार्य की कन्या देवयानी और दैत्यराज दृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा अन्य कन्याओं सहित एक बन में जलकीडा कर रही थीं। इन्द्र ने वायु रूप होकर उनके बस्तों को एक दूसरे से पिछा दिया । शर्मिष्ठा ने बस्तों की मिछावट न जान कर देवयानी का बस्त्र छेछिया । देवयानी बोली कि है असुरपुत्री तुम शिष्या होकर क्यों मेरा बस्त्र छे रही हो, तुम में शिष्टाचार नहीं है । शर्मिष्ठा ने देवयानी को बस्त्र के लिये बड़ी आसक्त देख उसको बहुत दुवैचन कहा और उसको एक कूप में डाल वह अपने गृह को चली गई।

राजा नहुष के पुत्र राजा ययाति मृगया के लिये उस बन में आए थे, उन्हों ने घोड़ों के बहुत थक जाने पर जल ढूंढते हुए एक खुला कूप पाया और जब देखा कि कूप में एक कन्या रो रही है, तब उसको कूप से निकाला। राजा ययाति ने उसी क्षण अपने नगर को प्रस्थान किया। देवयानी ने अपने पिता के पास यह संदेसा भेजा। शुकाचार्य वहां आए।

(८० वां अध्याय) शुक्राचार्य ने ट्रवंपर्वा के समीप जाकर उससे कहा कि मैं तुमको अब त्याग दूंगा । दैत्यराज ने कहा कि आप मुझ पर प्रसन्ध होइए । आप बिना मेरी कोई दूसरी गति नहीं है। शुक्र ने कहा कि देव- यानी को प्रसन्न करो । ट्रवंपर्वा ने देवयानी से कहा कि जो तुम्हारी कामना हो, सो कहो, उसे मैं पूर्ण करूंगा । देवयानी वोली कि मैं चाहती हूं कि सहस्र कन्याओं के साथ शर्मिष्ठा मेरी दासी बने । शर्मिष्ठा अपनी दासियों सहित देवयानी की दासी बनी ।

(८१ वां अध्याय) बहुत दिनों के पश्चात देवयानी पूर्व किथित बनमें खेळने गई ओर सहस्र दासी और शिंमष्ठा के सहित घूमने लगी। इसी समय राजा ययाति मृगया के लिये फिर वहां आ पहुंचे और बोले कि तुम कौन हो। परस्पर बात होने पर देवयानी पूर्व हत्तांत को जान कर राजा से बोली कि आपही ने पहिले मेरा पाणिग्रहण किया है, इससे मैं आप को अपना पित बनाऊंगी। ऐसा कह उसने शुकाचार्य से अपना मनोरथ कह छनाया। शुक्र की आज्ञा से राजा ययाति ने शास्त्रोक्त विधि के अनुसार देवयानी से बिवाह किया और शुक्र से २००० दासी और शिंमष्ठा सहित देवयानी को प्राप्त कर वह निज राजधानी को चले गए इत्यादि।

(वेवयानी और ययाति की यह कथा मत्स्यपुराण के २४ वें अध्याय और श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध के १८ वें अध्याय में भी है)

🗸 बीकानेर ।

फलेरा जंक्शन से १९ मील पश्चिमोत्तर राजपूताना मालवा बैंच का खतमी स्टेशन कुचामन रोड है, जिससे ७३ मील पश्चिम थोड़ा दक्षिण जोधपुर बीका-नेर रेलवे पर भर्ता रोड जंक्शन है। भर्ता रोड से १०३ मील उत्तर कुछ पश्चिम बीकानेर का रेलवे स्टेशन है।

बीकानेर राजपूताने में एक प्रसिद्ध देशी राज्य की राजधानी ज़ंची पथरीली मूमि पर कंगूरे दार पत्थर की शहरपन्नाह के भीतर एक छोटा शहर है। यह २८ अंश उत्तर अक्षांश और ७३ अंश २२ कला पूर्व देशांतर में स्थित है। शहर की दीवार ३६ मील लम्बी, ६ फीट मोटी और १५ से ३० फीट तक ऊंची है। इसमें ५ फाटक बने हैं और इसके ३ बगलों पर लाई है। शहर में बहुतेरे छन्दर मकान हैं, जिनके आगे नकाशीदार लाल बालूदार पत्थर के काम हैं। मकान तंग और मैली गलियों में हैं। नीचे दरजे के मकान लाल मही से रंगे हुए हैं।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय बीकानेर शहर में ५६२५२ मनुष्य थे। (२७८९६ पुरुष और २८३५६ स्त्रियां) इनमें ४१००८ हिन्दू, १०४९० मुसलमान, ४६८६ जैन, ४२ सिक्ख, १७ क्रस्तान, और ९ पारसी थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ६७ वां और राजपूताने में ४ था शहर है।

बीकानेर का किला, जिसमें महाराज का महल है, शहर के कोट फाटक से ३०० गज दूर है। किले के चारों ओर की खाई सिरे के पास ३० फीट चौड़ी और २० या २५ फीट गहरी है। राजा रायसिंह ने सम्बत १६४५ (सन १५८८ ई०) में इस किले को बनवाया। बीकाराव का बनवाया हुआ छोटा किला शहर की दीवार के बाहर दक्षिण ओर ऊंची चट्टानी भूमि पर है, जिसके भीतर बीकाराव और उनके उत्तराधिकारियों के अनेक समाधि-

मन्दिर हैं। महाराज के महल का घेरा १०७८ गज है, जिसमें २ फाटक लगे हैं। महाराज का महल पुरानी चाल का बहुत खुन्दर है। बीकानेर में ४१ कृप हैं। शहर के बाहर का अर्क सागर नामक कूप राज्य के सब कूपों से उत्तम है। बीकानेर के कूपों में ३०० या ४०० फीट नीचे पानी है। शहर में १३ मन्दिर, १४ मसजिद और ७ जैनों के मट हैं। डूंगरसिंह कालेज में अंग-रेजी पढ़ाई जाती है।

शहर से ३ मील पूर्व बीकानेर का तालाब है, जिसके चारों ओर कल्यान सिंह से रतनसिंह तक १२ राजाओं के गुंबजदार समाधि-मन्दिर हैं, जिनमें से कई एक उत्तम इमारत हैं। सबों में स्तम्भ लगे हैं। तालाब से थोड़ी दृर एक महल है। कभी कभी राजा और उनकी स्लियां देवीकुंड में पूजा करने के लिये आकर इसमें टिकती हैं। देवी कुंड पर बीकानेर के राजकुमारों का मुंडन होता है।

+ बीकानेर राज्य—बीकानेर राजपूताने के पोलिटिकल एजेंट और गवर्नर जनरल के एजेंट के पोलिटिकल छपरींटेंडेंट के आधीन राजपूताने में देशी राज्य है। इसके पश्चिमोत्तर बहावलपुर राज्य; पूर्वोत्तर पंजाब में सिरसा और हिसार अंगरेजी जिले; पूर्व जयपुर राज्य और दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम जोधपुर और जैसलमेर राज्य हैं।

राज्य का आनुमानिक क्षेत्रफल २२३४४ वर्गमील है। मनुष्य-संख्या इस वर्ष की मनुष्य-गंणना के समय ८३१२१० और सन १८८१ में ५०९०२१ थी, जिनमें ४३६१९० हिन्दू, ५०८७४ मुसलमान, २१९४३ जैन, और १४ क्रस्तान ६ कसबे और १७३३ गांवों में बसे थे। हिन्दू और जैनों में ५५८१६ ब्राह्मण, ४९९०७ वनियां और ४१६९६ राजपूत थे। यह राज्य राजपूताने के देशी राज्यों में क्षेत्रफल के अनुसार दूसरा और मनुष्य-संख्या के अनुसार चौथा है। इस राज्य में चुक (जनसंख्या १४०१४) और रतनगढ (जनसंख्या १०५३६) बढ़े कसबे और मुजनगढ भटनेर इत्यादि छोटे कसबे हैं। राज्य की मालगुजारी लगभग १८००००० हपया है। राज्य के दक्षिण और पूर्वोत्तर के अधिक भाग

मारवाड़ और जयपुर के उत्तर भाग को शामिली करते हुए बागर नामक बड़े वालूदार देश का हिस्सा बनते हैं। पश्चिमोत्त और उत्तर का भाग भारतवर्ष के वड़े मरुस्थल के भीतर हैं। राज्य में जयपुर और जोधपुर की सीमाओं पर चहानी पहाड़ियां हैं, जो मैदान के सतह से ५०० फीट से अधिक ऊंची नहीं हैं। बीकानेर शहर से दक्षिण-पश्चिम जैसलमेर की सीमा तक सख्त और पत्थरीला देश है, लेकिन देश के बड़े भागों में २० फीट से १०० फीट तक ऊंची बालू की पहाड़िया हैं। बस्ती दूर दूर पर हैं। यद्यपि घास और जंगली झाड़ियां जगह जगह बहुत हैं, परंतु देश का आकार उदास और उजाड़ है। चंद कसबों के निकट बैर के हक्ष लगाए गए हैं। वर्षाकाल में देश घासों से हरा भरा हो जाता है।

बीकानेर राज्य में कोई नदी या धारा नहीं है। वर्षा के समय कभी कभी शेखवाटी से राज्य की पूर्वी सीमा पर एक नाला बहता है, जो तुरतही बाख में गुप्त हो जाता है। बीकानेर राजधानी से लगभग २० मील दक्षिण-पश्चिम मीडे पानी की गजनर नामक झील है, जहां मैदान में मनोहर महल और बाग बने हैं। भील के चारो ओर जंगल है। उससे १२ मील आगे जैसलमेर की ओर एक पवित्र स्थान पर मीठे पानी की झील है, जिसके किनारे पर कई घाट बने हैं। खजनगढ़ जिले में ६ मील लंबी २ मील चौड़ी और बहुत कम गहरी, जो गर्मी के पहिलेही खख जाती है, निमक की झील है। निमक की दूसरी झील बीकानेर से करीब ४० मील पूर्वीत्तर है। इन झीलों का निमक अच्छा नहीं होता। सांभर निमक से इसका मूल्य आधा है। शहर के प्राय: सब कूप ३०० फीट से अधिक गहरे हैं, परंतु १० वा १२ मील उत्तर या पूर्वी-त्तर सतह से २० फीट के भीतर पानी मिछता है। देश के छोग बर्षी के पानी पर अधिक भरोसा रखते हैं। पोखरों और कुण्डों में वे बर्षा का पानी रखते हैं। बीकानेर और नागौड़ के रास्ते में नोखा के पास ४०० फीट गहरा ३ ६ फीट व्यास का एक कूप है। गर्म ऋतुओं में पानी की वड़ी तंगी हो जाती है। सर्दी के दिनों में अधिक सर्दी होती है। गरमी में बड़ी गरमी पड़ती है।

बंहुधा बाळू का भारी तूफान हुआ करता है। राज्य के बहुतेरे भागों में, खासकर बीकानेर शहर और खजनगढ़ कसबे के पड़ोस में चूना बहुत होता है। ३०
मील पूर्वोत्तर खारी में और बीकानेर के पिश्रम खान से लाल बालूदार पत्थर
निकलता है। ३० मील दिक्षण-पिश्रम बहुत सज्जी निकाली जाती है, जो
साबुन और कपड़े रंगने के काम में आती है। शहर से ७० मील पूर्व खजनगढ़
ज़िले में विडासर के निकट पहले एक पहाड़ी से तांबा निकाला जाता था,
पातु बहुतेरे बर्षों से खान में काम नहीं होता है। राज्य का मुख्य
फिसल बाजड़ा और मथ है। तरबूजा और ककड़ी भी होती है। यहांके
पालतू पशु भारतवर्ष के दूसरे भागों के पशुओं से अधिक अच्छे होते हैं,
मवेसी और भैसे प्रसिद्ध हैं और घोड़े मज़बूत होते हैं। निवासियों का प्रधान
धन जानवरों के झुंड हैं। प्रधान दस्तकारी ऊनी बनावट और कंवल हैं। ऊन,
सोडा, सज्जी, गल्ला, चमड़े की मसक़ हाथीदांत की चूड़ी आदि चीजं दूसरे
देशों में भेजी जाती हैं और राजपूताने में अधिक खर्च होती हैं।

इतिहास—बीकानेर का राजकुल राठौर राजपूत है। जोधपुर के बसाने बाले जोधराब का छठवें पुत्र बीकाराब ने, जिसका जन्म सन १४३९ ई० में था, बीकानेर को बसाकर अपनी राजधानी बनाई। सन १८०८ ई० में बीकानेर के महाराज खरतिसंह से अंगरेजी गवर्नमेंट का प्रथम संबंध हुआ। सन १८१८ में जब पिंडारी देश को लूटते थे, तब अंगरेज़ी फौजों ने राजिबद्रोहियों को हटाया। अंगरेजों ने ११ किलों को छीनकर महाराज को बेदिया। महाराज खरतिसंह सन १८१८ में मर गए और रतनिसंह उत्तराधिकारी हुए। सन १८४५ और १८४८ की सिक्खों की दोनों लड़ाइयों में महाराज ने अंगरेजों की सहायता की और सन १८५७ के बलवे के समय महाराज सरदारिसंह ने फीज द्वारा अंगरेजी गवर्नमेंट की सहायता की, इसके बदले में महाराज को ४१ गांव मिले। बीकानेर के वर्तमान महाराज गंगासिंह बहादुर ११ वर्ष अवस्था के दत्तक पुत्र हैं। यहां के राजाओं को अंगरेजी गवर्नमेंट की ओर से १७ तोपों की सलामी मिलती है। राज्य का फौजी बल ९६० सवार, १७०० पैदल,

२४ मैदान की और ५६ दूसरी तोषें और १८० गोछंदाज हैं।

⁄ जोधपुर ।

भर्ता रोड जंक्शन से पश्चिम-दक्षिण ६३ मील जोधपुर महल का स्टेशन और ६४मील जोधपुर का स्टेशन है।

जोधपुर राजपूताने के मारवाड़ मदेश के देशी राज्य की प्रसिद्ध राजधानी (२६ अंश १७ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश ४ कला पूर्व देशांतर में) एक छोटा शहर है। यहां चीफ और पोलिटिकल एजेंट रहते हैं।

इस साल की जन-संख्या के समय जोधपुर में ६१८४९ मनुष्य थे, अथात ३१७०६ पुरुष और ३०१४३ स्त्रियां। जिनमें ४३००८ हिन्दू, १३६७६ मुसल-मान, ५०४० जैन, ११३ क्रस्तान, ९ यहूदी और ३ बौद्ध थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ५८ वां और राजपूताने में तीसरा शहर है।

वालूदार पत्थर की पहाड़ियों का सिलसिला पूर्व और पश्चिम को गया
है, जिसके दक्षिण छोर के नीचे ६ मील की दृढ़ दीवार से घेरा हुआ जोधपुर
शहर है, जिसमें ७ फाटक हैं। शहर में अनेक उत्तम मकान, मन्दिर और
तालाव पत्थर से बने हैं। एक पुराने महल में अब दर्बारसिंह का स्कूल है।
धानमंडी में एक मन्दिर है। जोधपुर में २ स्कूल हैं। एक में ठाकुरों के लड़के
और दूसरे में अन्य लड़के पढ़ते हैं। नया बना हुआ १ बड़ा जेल है, जिसमें
३ महीने से अधिक मैंयाद बाले संपूर्ण केंद्री भेजे जाते हैं।

किले के चारो तरफ शहर है। शहर और मैदान से ३०० फीट ऊपर पहाड़ी पर किला है। दृढ़ दीवार पहाड़ी के सिर को घरती है, जिसमें बहुतेरें गोलाकार मुरव्वा पुश्र्त हैं। पहाड़ी के उत्तर किनारे के निकट १२० फीट खड़ी उंचाई पर किले के भीतर महाराज का उत्तम महल है। पहाड़ी के सिर के पास पुराने महल हैं, जहां आंगनों के भीतर आंगन हैं, जिनके बगलों में सुन्दर संगतरासी की खिड़ कियां हैं।

जोधपुर में प्रधान तालाब ये हैं,—(१) शहर के पश्चिमोत्तर भाग में चट्टान काटकर पद्मसागर नामक छोटा तालाब बना है।(२) उसी ओर पश्चिम द्रवाने के कदम के पास किले में रानीसागर तालाव है। (३) पूर्व ओर पत्थर का खन्दर गुलावसागर है। (४) शहर के दक्षिण बाईजी का तालाव फैला है, परंतु इसमें सर्वदा जल नहीं रहता। (५) पूर्वोत्तर हाल का बना हुआ सरदार सागर है। (६) एक मील पश्चिम एक झील है, जोअखेरा जी का तालाव कहलाता है। (७) शहर से ३ मील उत्तर एक खन्दर तालाव है, जिसके बांध पर एक महल और नीचे एक बाग है; जहां गर्मी के दिनों में महाराज टिकते हैं। वहां से शहर तक नहर गई है। पहले जोधपुर में पानी बहुत कम था, क्लियों को पानी के लिये मांडोर जाना पड़ता था, परंतु अब नल द्वारा पानी पहुंचाया जाता है।

शहर के दक्षिण-पूर्व रायका बाग महल है, जहां चीफ रहता है । उसके समीप कचहरी का बहुत बड़ा मकान है। जोधपुर में चैत्र में एक बड़ा मजहबी मेला होता है। शहर के पूर्वोत्तर कोन के बाहर करीब ई मील के अंतर पर पत्थर की दीवार के भीतर ८०० मकानों की शहरतली है।

मांडोर—जोधपुर से करीब ३ मील उत्तर मांडोर है, जो जोधपुर के बसने से पहले मारवाड़ की राजधानी था । वहां पहले के राजाओं की छत्तरी (समाधि-मन्दिर) हैं, जिनमें कई एक खन्दर हैं । अजितसिंह। की छत्तरी सन १७२४ की बनी हुई सब छतिरयों से बड़ी और उत्तम है । वहां से थोड़ी दूर सर्व देवालय है, जिसको लोग ३० कोटि देवताओं का मन्दिर कहते हैं। उसके पास अजितसिंह के बाद के राजा अभयसिंह का (जो सन १७२४ में राजा हुए थे) महल हीन दशा में पड़ा है। उसमें बहुत चमगादुर रहते हैं।

जोधपुर राज्य—यह पश्चिमी राजपूताने के राज्यों की एजेंसी के आधीन राजपूताने में प्रसिद्ध देशी राज्य है। इसके उत्तर बीकानेर राज्य और जयपुर का ग्रेखवाटी जिला; पूर्व जयपुर और किस्तुनगढ़ राज्य; पूर्वीत्तर अजमेर और मेरवाड़ा अंगरेजी जिले; दक्षिण पूर्व मेवाड़; दक्षिण सिरोही राज्य और पालनपुर; पश्चिम कच्छ कारन और सिंध प्रदेश में थर और परकर

जिला और पश्चिमोत्तर जैसलमेर देशी राज्य है। इसकी सबसे अधिक लंबाई पूर्वोत्तर से दक्षिण-पश्चिम तक लगभग २९० मील और सबसे अधिक चौड़ाई १३० मील है। इसका क्षेत्रफल राजपूताने के राज्यों से सबसे बड़ा अर्थात ३७००० वर्गमील है। राज्य से ४१ लाख ५० हजार रुपया मालगुजारी आती है।

सागरमती नदी अजमेर में झील से निकलती है। सरस्वती नदी पुष्कर झील से निकली है। गोविंदगढ़ के पास दोनों के संगम होने के उपरान्त इन का लूनी नाम पड़ता है, जो गोविंदगढ़ से मारवाड़ राज्य के दक्षिण-पश्चिम भाग में होकर वहती है और अंत में कच्छ के रन के सिर के पास दलदल भूमि में गुप्त हो जाती है। इसकी बहुत सहायक नदिया हैं, जो खीसकर अर्बली पहाड़ियों से निकली हैं। मारवाड़ के जिलों में नदी के विस्तर में कूएं खने जाते हैं, जिनसे बहुतेरे गेहूं और जब की भूमि पटाई जाती हैं। सुखी ऋतुओं में नदी के विस्तर में खरबूजे और सिंगहाड़े बहुत उत्पन्न होते हैं।

जयपुर और जोधपुर की सीमाओं पर प्रसिद्ध सांभर झील है। इसके वाद एक जोधपुर के उत्तर दिदवाना में और दूसरी पंचभद्रा में झील हैं, जिनसे सन १८७७ ई० में १४५०००० मन निमक निकला था। साकोर ज़िले में एक बड़ी झील है, जो वर्षाकाल में ४० या ५० मील क्षेत्रफल को छिपाती है। झील ख्खने पर उसके विस्तर में गेहूं और चने की अच्छी फ़सिल होती है। राज्य के लगभग ७० गांवों में निमक पैदा होता है।

राज्य का बड़ा हिस्सा वीरान है। बहुत रेगिस्तान और स्थान स्थान पर पहाड़ियां हैं। दक्षिण-पूर्व सीमाओं के भीतर का हिस्सा अर्बली पहाड़ियां हैं। जोधपुर शहर के उत्तर थल नामक बालू का बड़ा मैदान है, जिसमें पानी बहुत कम है। भूमि के सतह से २०० से ३०० फीट तक नीचे पानी है। जोधपुर में बहुधा वार्षिक औसत १४ ईच से अधिक बर्षा नहीं होती है। सन १८८१ में बहुत अधिक वर्षा थी; तब शहर में २२ ईच वर्षा हुई थी। उत्तर मकराना में खान से मार्चुल बहुत निकलता है और दक्षिण-पूर्व की सीमा पर धनीराओं के निकट उससे कम। कपूरी में सज्जी बहुत होती है, जिसको मुलतानी

मही भी कहते हैं। इससे देशी छोग वाल साफ करते हैं। वर्षा काल की प्रधान फिसल बाजड़ा, ज्वार, मथ इत्यादि हैं। राज्य के उपजाऊ हिस्से में गेहूं और जब अधिक उत्पन्न होते हैं।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय जोधपुर राज्य में २५२४०३० मनुष्य थे; और सन १८८१ में ३७८५ कसबे और गांबों में १७५०४०३ (मित वर्ग-मील में औसत ४७) मनुष्य थे। अर्थात १४२१८९१ हिन्दू, १७२४०४ जैन, १५५८०२ मुसलमान, २०७ क्रस्तान और ९९ दूसरे।

जोधपुर के बालूदार हिस्से में और मलानी में ठाकुरों के मकानों को छोड़कर अधिक मकान गोलाकार झोंपड़ी हैं। जंगली जानवरों और चोरों के भय से बहुतेरी बस्ती मजबूत घरे से घरी हुई हैं। जोधपुर राज्य को मारवाड़ अर्थात मौत का स्थान कहते हैं। यहांके मारवाड़ी ज्योहार और ज्यापार करने में प्रसिद्ध हैं, जो भारतवर्ष के सब विभागों में पाए जाते हैं। इनकी पगड़ी अजब तरह की होती है। इश देश में पगड़ी, रेशमी खत, चमड़े के बक्स और पीतल के बरतन बनते हैं। निमक, मबेसी, घोड़ा, कपास, ऊन, रंगा हुआ कपड़ा, चमड़ा, और अनार यहांसे दूसरे देशों में जाते हैं। मकराना से मार्बुल और मार्बुल की दस्तकारियां और बहुतेरी खानों से पत्थर अन्यवेशों में भेजे जाते हैं। गुड़, चावल, अफ़ीम, मसाला, गोंद, सोहागा, नारियल, रेशम, चंदन की लड़की और गल्ले दूसरे देशों से आते हैं।

जोधपुर राज्य में नागौड़ सबसे बड़ा कसबा है, जिसमें इस बर्ष की मनुष्य-गणना के समय १०३४० हिन्दू, ५१०२ मुसलमान और १७४९ जैन कुल १७१९१ मनुष्य थे। इसके अतिरिक्त पाली में १७१५०, कचवारा में १२८१६, मुजात में १२६२४, बिलारा में ११३८४, डिडवाना में ११३७६ और फतोदी में १०४९७ मनुष्य थे।

तिलवाड़ा में चैत्र मास में मेला होता है और १५ दिन तक रहता है। मुंदवा में पौष मास में मेला होता है, जिसमे ३०००० से ४०००० तक मनुष्य इकट्टे होते हैं। जोधपुर शहर से ६२ मील दक्षिण-पश्चिम लूनी नदी के दहिने किनारे पर बालोत्रा (जन-संख्या सन १८८१ में ७२७५) एक कसवा है, जिसमें प्रतिवर्ष चैत्र मास में मेला होता है और १५ दिन रहता है। मेले में ३०००० से अधिक मनुष्य आते हैं। परवस्तर में भादो में मेला होता है, जिसमें बैल की सौदागरी के निमित्त खास कर जाट लोग आते हैं। बिलारा और वरषना में भी मेला होता है।

जोधपुर के स्टेशन से २० मील दक्षिण लूनी नदी के पास लूनी जंक्शन है; और लूनी से ६० मील पश्चिम पंचभद्रा के पास निमक का कारखाना है, जहां लूनी से रेलवे की शाखा गई है।

इतिहास-जोधपुर का राजकुल राठौर राजपूत है। यहांके राजा अपने को स्प्यंशी रामचन्द्र के वंशधर कहते हैं। सन ११९४ ईस्की में कन्नौज के पिछले राठौर राजा के पोता शिवाजी मारवाड़ में आए। शिवाजी से १० वीं पुरूत के रावचन्दा के समय तक राठौर लोग मारवाड़ की राजधानी मांडोर को देखल नहीं कर सके। लगभग सन १३८२ के रावचंदा के समय से मारवाड़ पर राठौरों का सच्चा अधिकार कहा जा सकता है। रावचन्दा के उत्तराधि-कारी प्रसिद्ध बीर राव रीडमल हुए, जिनके पश्चात उनके पुत्र जोधराव ने सन १४५९ ई० में जोधपुर शहर को बसाया और उसको अपनी राजधानी बनाया। सन १५४४ ई० में अफगानी शेरशाह ८०००० आदिमयों की एक सेना मारवाड़ में लाया, परन्तु उसकी छोटी जीत हुई।

सन १५६१ में वादशाह अकवर ने मारवाड़ पर आक्रमण किया। संग्राम के अंत में राजा ने अधीनता स्त्रीकार करली। राजा के देहांत होने पर उनके पुत्र उदयसिंह उत्तराधिकारी हुए। उदयसिंह के पुत्र राजा स्रसिंह और स्रसिंह के पुत्र यशवंतिसिंह हुए। जब शाहजहां के चारों पुत्रों में झगड़ा हुआ, तब यशवंतिसिंह औरंगजेब के विरुद्ध फीज के कमांडर बनाए गए और परास्त हुए। पीछे यशवंतिसिंह ने औरंगजेब से खलह करली। उसके पीछे वह अजितिसिंह दत्तक पुत्र को छोड़कर सिंध नदी के उस पार मर गए। औरंगजेब

ने मारवाड़ पर आक्रमण करके जोधपुर और दृसरे बड़े कसबों को छूटा। अजितसिंह को उनके पुत्र बख्तसिंह ने मार डाला।

सिंधियां ने मारवाड पर ६००००० रुपया राज्य कर नियत किया और अजमेर शहर और किले को ले लिया । सन १८०३ ई० की महाराष्ट्रों की छड़ाई के आरंभ में शरीफों ने जोधपुर के मधान होने के लिये मानसिंह को चुना। मानसिंह ने हुलकर की सहायता की, इसलिये सन १८०४ में संधि तोड़ दी गई। सन १८१७ ई० में राजा मानसिंह के एकछौता छड़के छतरसिंह राजप्रतिनिधि हुए। पिंडारियों की लड़ाई आरंभ होने पर अंगरेजी गवर्नमेंट के साथ जोधपुर का प्रवंध आरंभ हुआ। सन १८१८ ई० की संधि से अंगरेजी गवर्नमेंट की रक्षा में जोधपुर हुआ। जोधपुर से जो खिराज सिंधिया को दिया जाता था, वह अंगरेजी गवर्नमेंट को दिया जाने लगा। संधि के पश्चात छत्तर-सिंह पर गए, जिसके पीछे उनके पिता मानसिंह, जो पहिले उन्मत्तता में थे, राजा हुए । मानसिंह के कुशाशन के कारण अंगरेजी गवर्नमेंट ने सन १८३९ ई० में जोघपुर में ५ महीने तक एक फौज रक्खी थी। मानसिंह ने अपनी चाल स्रुधारने का एकरार किया। ४ वर्ष पश्चात जब वह निस्संतान पर गए, तब राज के सरदारों और विधवाओं ने अजितसिंह की संतान अहमद नगर के प्रधान तस्त्तिसिंह को राजा पसंद किया और तस्त्तिसिंह और उनके पुत्र यशवंत सिंह को जोधपुर में बुछाया। तस्तिसिंह जोधपुर के राज सिंहासन पर बैठाए गए। सन १८७३ ई० में महाराज तस्त्रसिंह का देहान्त हुआ और उनके पुत्र जोधपुर के वर्तमान नरेश महाराज सर यशवंतिसंह वहादुर जी० सी० एस० आई०, जिनका जन्म सन १८३७ ई० में हुआ था, राज सिंहासन पर बैंटे; जिनके छयोग्य भ्राता कर्नल सर पतापसिंह और पुत्र युवराज सरदारसिंह हैं। जोधपर के राजाओं को अंगरेजी गवर्नमेंट की ओर से १९ तोपों की सलामी मिलती है।

⁄जैसलमेर्।

जोधपुर से १४० मील से अधिक पश्चिमोत्तर राजपूताने के पश्चिम विभाग में

समुद्र के जल से लगभग ८०० फीट ऊपर सख्त चट्टान पर देशी राज्य की राजधानी जैसलमेर एक कसबा है। यह २६ अंश ५५ कला उत्तर अक्षांश और ७० अंश ५७ कला पूर्व देशान्तर में स्थित है।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय इसमें १०५०९ मनुष्य थे; अर्थात ८२१८ हिन्दू, १८४१ मुसलमान और ४५० जैन।

कसबे के मकान खास करके पीछे पत्थर के हैं। कई धनो सौदागरों के मकान खन्दर हैं। कसबे के पास छगभग १०५० फीट छंबी और २५० फीट छंबी पहाड़ी पर किछा है, जिसकी दृढ़ दीवार २५ फीट छंबी है। महारावछ का महल किछे के प्रधान द्वींजे पर पीछे पत्थर का बना हुआ है। किछे में कई एक खन्दर जैन मन्दिर हैं। सबसे पुराना मन्दिर जो है, वहं सन १३७१ में बना था।

राजधानी से १० मील दूर वर्ष में एक बार एक बड़ा मेला होता है।

जैसलमेर राज्य—राज्य की सबसे अधिक लंबाई पूर्व से पश्चिम तक १७२ मील और सबसे अधिक चौड़ाई उत्तर से दक्षिण तक १३६ मील है। इसके उत्तर वहावलपुर राज्य; पूर्व बीकानेर और जोधपुर राज्य; दक्षिण जोधपुर राज्य और सिंध प्रदेश; और पश्चिम खैरपुर और सिंध हैं। राज्य का क्षेत्रफल १६४४७ बर्गमील है।

राज्य प्रायः बालूदार उजाड़ है। राजधानी के पड़ोस में लगभग ४० मील के घेरे के भीतर पथरीली भूमि है और चौड़े सिरवाले .बालूदार पत्थर के चहान हैं। राजधानी से ३२ गील दक्षिण-पूर्व चोरिया में ४९० फीट गहरा एक कृप है। लोग बर्षा का पानी पीते हैं। कम बर्षा होने पर गांबों के पानी के कुण्ड स्पल जाते हैं। इस राज्य में सर्वदा बहने वाली कोई धारा नहीं है। केवल ककनी नामक एक छोटी नदी है। कभी कभी वर्षा बहुत कम होती है। सन १८७५ ई० में केवल दो दिन बर्षा हुई। जैसलमेर का पानी पवन स्पता है। राज्य में केवल बसीती फिसल बाजरा, ज्वार, तिल इत्यादि होती है। गेहूं जब आदि बहुत कम होते हैं। बसीत के आरंभ में बालू की पहाड़ियां ऊंटों

से जोती जाती हैं और जमीन में अधिक नीचे वीज वोए जाते हैं।

सन १८८१ ईं० की मनुष्य-गणना के समय इस राज्य में एक कसबे और ४१३ गांवों में १०८१४३ मनुष्य (प्रति वर्गमील में औसत ६ ६) थे । इनमें ५७४८४ हिन्दू, २८०३२ मुसलमान, १६७१ जैन, २०९५५ दूसरे और १ क्रस्तान थे। हिन्दू और जैनों में २६६२३ राजपूत, ७९८१ महाजन, ६०५५ ब्राह्मण, और ४०३ जाट थे।

राज्य की मालगुजारी लगभग १५८००० रूपया है। वस्ती दृर दृर पर हैं, जिनमें गोले छप्पर वाले अधिकांश मकान हैं। बहुत जगहों में खारा जल है। कुंओं को औसत गहराई २५० फीट है। ऊंट, मबेसी, भेंड़ और वकरों के मुंड पाले जाते हैं। ऊन, घी, ऊंट, मबेसी और भेंड़ की तिजारत होती हैं। राज्य में वनाई हुई सड़क नहीं है। स्थानांतर गमन की प्रधान सवारी ऊंट हैं। महारावल को ४०० पैदल की एक सेना है, जिनमें से बहुतेरे ऊंट के सवार हैं और जागीरदारों के सवारों के साथ कुल ५०० घोड़ सवार हैं। इनके अतिरिक्त इनको १२ तोपें और २० गोलंदाज हैं।

इतिहास—जैसलमर का राजकुल यदुवंशी राजपूत है, जिसके नियत करने वाले देवराज का जन्म सन ८३६ ई० में हुआ था। देवराज से पीछं के छठवें राजा रावल जैसल ने सन ११५६ ई० में जैसलमर को बसाया और वहां किला बनाया। सन १२९४ में अलाउदीन ने राजधानी और किले को छीन लिया था। १७ वीं सदी में सबलिंस ने शाहजहां की आधीनता स्वीकार करली। सन १७६२ में रावल मूलराज जैसलमर के राजा हुए। उस समय राज्य का सौभाग्य बहुत जल्दी घट गया था। बाहर बाले देशों में से बहुतेरे, जो उत्तर सतलज तक और पश्चिम सिंघ तक फैले थे, छीन लिए गए थे। सन १८१८ में अंगरेजों से मूलराज के साथ संधि हुई। सन १८२० ई० में मूलराज के मरने के पश्चात उनकी पोते गजिंस उत्तराधिकारी हुए, जिनका देहांत सन १८४६ में हुआ। उनकी विधवा ने गजिंस के भतीजे रणजीतिस को गोद लिया। सन १८६४ में महारावल रणजीतिसंह के मरने पर उनके छोटे माई

महारावल बैरीशालसिंह राजसिंहासन पर बैठे। मृत महारावल बैरीशालसिंह बहादुर के शिशुपुत्र महारावल शालिबाहन बहादुर जैसलमेर के वर्तमान नरेश हैं। यहांके महारावलों को अंगरेजी सरकार की ओर से १५ तोपों की सलामी मिलती है।

चौदहवां अध्याय।

(राजपूताने में) निराना, किसुनगढ़, अजमेर और वियावर ।

+निराना।

फलेरा जंक्शन से ६ मील पश्चिम (बादीकुंई जंक्शन से ९७ मील) निराना का स्टेशन है, जिसके समीप निराना बस्ती में एक बड़ा तालाव और दाद्वंथी संप्रदाय का स्थान है।

दावू जी और उनके चेलों ने अपने मत और शिक्षा को बहुत करके पद्य भाषा में लिखा है। इस संपदाय के बहुत लोग जयपुर आदि राज्यों की फौजों में काम करते हैं। करीब ३५० वर्ष हुए, गुजरात के अहमदाबाद में नागर ब्राह्मण बिनोदी राम के गृह दाबू जी का जन्म हुआ। १२ वर्ष की अवस्था में वह सन्यास ग्रहण कर राजपूताने में आकर आम्बेर, सिकरी, निराना आदि नगरों में बिराजे। उनका बड़ा प्रताप फैला। सांभर के निकट बरहना में उनका बेहांत हुआ। दाबू जी के शिष्यों में सुन्दर स्वामी बहुत प्रसिद्ध हैं। उनका बनाया हुआ शाक्य ग्रंथ, ज्ञानसमुद्र और सुन्दरिवलास प्रचलित हैं। सुन्दर-दास के शिष्य नारायणदास, उनके शिष्य रामदास, रामदास के दयाराम, दयाराम के संतोषदास, संतोषदास के लालदास, लालदास के बालकुष्ण जी, बालकुष्ण जी के लक्षीराम और लक्षीराम के शिष्य क्षेमदास थे। क्षेमदास के शिष्य महंत गंगाराम मारवाड़ के फतहपुर रामगढ़ में हैं। इस पंथ बाले लोग सिरको मुंडवाते हैं श्रीर अपने धर्म का उपदेश करते हैं।

र्भ किसुनगद् । निराना से २५ मीछ (फलेरा जंक्शन से ३१ मीछ) पश्चिम-दक्षिण किछनगढ़ का स्टेशन है। स्टेशन से थोड़ी दूर राजपूताने में देशी राज्य की राजधानी किस्तुनगढ़ एक कसवा है। यह २६ अंश ३५ केला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश ५५ कला पूर्व देशान्तर में स्थित है।

इस साल की मनुष्य-गणना के समय किखनगढ़ में १५४५७ मनुष्य थे, अर्थात १०५०४ हिन्दु, ३३६८ मुसलमान, १५६२ जैन, १८ क्रस्तान और ५ पारसी।

किंद्यनगढ़ का कुसवा और किला एक छोटी झील के किनारों पर है, जिसके मध्य में महाराज का ग्रीष्म-भवन बना है। राजमहल के नीचे झील के पास फूलपहल नामक महाराज के बाग़ का मकान है, जिसमें यूरोपियन मोसाफिर टिकते हैं । कसबे में ब्रजराजजी, मोहनलालजी, मदनमोहनजी, नरसिंहजी और चिन्तामणिजी के खन्दर मन्दिर, कोठी वालों के मकान, एक पोष्ट आफिस और एक धर्मशाला है।

किछनगढ़ से लगभग १२ मील दूर सलीमाबाद में एक मन्दिर है, जहां बारों ओर के जिलों से यात्री जाते हैं।

किसुनगढ़ राज्य-राजपृताने के पूर्वी राज्यों के एजेंसी के पोलिटिकल छपरिंटेंडेंस के आधीन यह एक देशी राज्य है। राज्य के उत्तरी भाग होकर रेल गई है।

इस बर्ष की मनुष्य-गणना के समय राज्य का क्षेत्रफल ८११ बर्गमील, मनुष्य-संख्या १२५५१६ और माल गुजारी ३५७००० रुपया थी । सन १८ ८१ ई० में इस राज्य में ११२६३३ मनुष्य थे, अर्थात ९७८४६ हिन्दू, ८४९२ मुसलमान, और ६२९५ जैन । हिन्दू और जैनों में १४१५४ ब्राह्मण, १०५९९ महाजन, १०४५८ जाट, ८०५४ राजपूत, ७२०१ गूजर और ७१७७ बलाई थे।

ा राज्य का मैनिक बल ५५० सवार, ३५०० पैदल, ३६ तोप और १०० गोलंदाज हैं।

इतिहास—राजकुल राठौर राजपूत है। जोधपुर के राजा उदयसिंह के दूसरे प्रत्र किछनसिंह ने इस देश को जीता। सन १५९४ में अकवर के आधीन वह इस देश पर हुकूमत करने वाले हुए। सन १६१३ में किछन-सिंह भटी वंश के गोविन्ददास को मार कर किछनगढ़ के राजा बन गए। किछनसिंह के सहस्रमल, जगमल, और भरमल ३ प्रत्र थे।

सन १८१८ ई० में अंगरेजी गवर्नमेंट से किखनगढ़ के साथ सिन्ध हुई।
महाराज कल्यानसिंह, जो उन्मत्त ख्याल किए जाते थे, अपने पुत्र मखदूम
सिंह को राज्य देकर आप राज्य से अलग हो गए। मखदूमसिंह ने महाराजाधिराज पृथ्वीसिंह को गोद लिया, जो सन १८४० में उनके उत्तराधिकारी
हुए। महाराजाधिराज पृथ्वीसिंह सन १८७९ में ३ पुत्रों को छोड़ कर
मर गए। उनके वड़े पुत्र किखनगढ़ के वर्तमान नरेश महाराजाधिराज शार्दूलसिंह बहादुर, जिनका जन्म सन १८५४ में हुआ था, उत्तराधिकारी
हुए। इनके पुत्र राजकुमार मदनसिंह ७ वर्ष के हैं। यहांके राजाओं को
अंगरेजी गवर्नमेंट की ओर से १५ तोपों की सलामी मिलती है।

् अजमेर्।

किस्तनगढ़ से १८ मील (फलेरा जंब्ज्ञन से ४९ मील दक्षिण-पश्चिम) अजमेर जंक्ञन स्टेशन है। राजपूताने के मध्य भाग में (२६ अंश २७ कला १० विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश ४३ कला ५८ विकला पूर्व देशान्तर में) अजमेर एक प्रसिद्ध शहर अंगरेजी राज्य में है।

अजमेर शहर के पायः चारो तरफ पहाड़ियां हैं। तारा गढ़ पहाड़ी के पांव के पास समुद्र के जल से ३००० फीट ऊपर अजमेर शहर हैं। शहर के चारो ओर पत्थर की पुरानी दीवार है, जिसमें दिल्ली दर्वाजा, आगरा दर्वीजा, मदार दर्वीजा, उस्ती दर्वीजा, और त्रिपली दर्वीजा नामक ५ फाटक हैं।

इस साल की जन-संख्या के समय अजमेर में ६८८४३ मनुष्य थे, अर्थात १७९८५ पुरुष और ३०८५८ स्त्रियां। जिनमें ३७८२६ हिन्दू, २६४३३ मुस- छपान, २७७० जैन, १४९७ कुस्तान, १५९ सिख, १५७ पारसी और ११ यहूदी थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारत-वर्ष में ५० वां शहर है।

स्टेशन से थोड़ी दूर एक धर्मशाला है। टिकने के लिये किराए पर मकान मिलते हैं। शहर में वहुतेरे पत्थर के खन्दर मकान और सेटों की कई एक प्रसिद्ध कोठियां हैं। जलकल सर्वत्र लगी है। नई झील से और दो पक्के नालों द्वारा आनासागर से पानी आता है, जो ज़मीन में बने हैं और जगह जगह खुले हुए हैं। एक नाले से शहर में और दूसरे से बाहर पानी जाता है। झालरा और दीगी नामक दो स्वभाविक झरनों से भी पानी आता है। शहरपैनाह के भीतर कोई अच्छे कूप नहीं हैं।

आनास्नागर—शहर के उत्तर आनासागर झील है, जिसको सन देखी की ग्यारहवीं सदी में विशालदेव के पोते राजा आना ने बनवाया। झील से सागरमती, जो सरस्वती से मिलने के पश्चात लूनी नदी कहलाती है, निकली है। झील उत्तर अधिक फैली है। दक्षिण बांध के नीचे बाग है। झील के निकट बादशाह जहांगीर का बनवाया हुआ दौलतबाग नामक एक बड़ा बाग छुन्दर हक्षों से भरा है और झील के किनारे पर मार्बुल के मकानों का सिलसिला है, जो बहुत दिनों तक अजमेर में आम आफिस था; परन्तु अब इसका प्रधान मकान किमश्चर की कोठी है। सबसे छन्दर मकान, जिसमें बादशाह बहुधा आराम करता था, बहुत खर्च से छुधारा गया है।

अकबर का महल-अकबर ने शहरपनाह के बाहर एक किलाबन्दी महल बनवाया, जिसमें जहांगीर और शाहजहां आकर रहते थे। वह रेलवे स्टेशन से थोड़ीदूर है, जो पहले अंगरेजी शस्त्राग़ार था, अब तहसीली है।

ख्वाजा की दरगाह—शहर के पश्चिम बगल में ख्वाजे मुईनउदीन चिश्ती की प्रसिद्ध दरगाह है, जिसको वहांके हिन्दू और मुसलमान दोनों मानते हैं। दरगाह के एक मुसलमान ने सबेरे धर्मशाले में जाकर मुझको ख्वाजा साहब का प्रसाद पुष्प दिया, मैं दरगाह में गया। ऊंचे फाटक के रास्ते से आंगन में जाना होता है, जहां लोहे का एक बड़ा और एक छोटा डेग रक्ला है। धनी यात्री सालाना मेले के समय, जो ६ दिन रहता है, डेग का तवाजा करते हैं। भोजन की सामग्री से साधारण तरह से बड़ा डेग भरने में लगभग २०० रुपये और छोटा डेग भरने में १०० रुपये खर्च पड़ते हैं। तिहवार के समय २०००० के लगभग यात्री आते हैं। प्रवेत मार्चुल से बना हुआ मुख्बा और गुम्बजदार चिश्ती का मकवरा है, जिसमें २ दर्वा हैं। सदर दर्वा पर चांदी की महराबी लगी है। आगे की दीवार में छनहरा काम है। मकवरे में ख्वा जे मुझ्ने उद्दीन चिश्ती, उसकी २ स्त्री और कन्या, हाफिज जमाल और चिमनी बेगम, तथा बादशाह शाहजहां की एक पुत्री की कवर है। हिन्दू और मुसलमान जूता बाहर निकाल कर मकवरे में जाते हैं। कुश्चियन लोग मकवरे से २० गज के भीतर नहीं जाने पाते हैं। दरगाह के घेरे के दक्षिण एक गहरा तालाब है।

चिश्ती की दरगाह के पश्चिम बादशाह शाहजहां की बनवाई हुई खूबस्रत मसजिद है। यह श्वेत मार्बुछ से बनी हुई छगभग १०० फीट छम्बी है। इसमें ११ महराबी हैं। तमाम छम्बाई में खोदा हुआ पारसी छेख है। घेरे में श्वेश करने के समय दहिने अकबर की बनवाई हुई एक मसजिद मिछती है।

मुईनउदीन चिश्ती का जन्म मध्य एशिया के साजिहां नामक स्थान में एक दिर्द्र मुसलमान फकीर के घर सन ५३७ हिजरी (सन ११४२ ई०) में हुआ। जब वह १५ वर्ष का था, तब उसका पिता एक छोटा बाग और पनचकी यही जायदाद छोड़ कर मर गया। मुईनउदीन की एक सिद्ध फकीर से भेट हुई। इसके उपरांत उसने फकीर होकर समरकंद, बोखारा, खोरासान, इस्तराबाद, इंपहान, बोगदाद इत्यादि मध्य एशिया के प्रसिद्ध स्थानों में २० वर्ष पर्यन्त भ्रमण किया। जब उन जगहों के फकीरों और दरवेशों के संग से उसको बहुत ज्ञान छाम हुआ, तब वह ख्वाजा (पिवत्र) करके विख्यात हो गया। मुईनउदीन कुछ दिन बोगदाद में रहकर अपने गुरु सहित मक्का गया, वहां कुछ दिन रह कर उसने मदीना की यात्रा की और उसके उमरांत अनेक

देशों में पर्यटन करता हुआ कुछ काल हिरात में निवास किया।

ख्वाजा साहब ने ५२ वर्ष की अवस्था में अजमेर आकर, जिस स्थान में दरगाह की खांगारा मसजिद है, विश्राम लिया । वहांसे आनासागर के किनारे की पहाड़ी पर जाकर वह रहने लगा । पीछे लोगों की पार्थना से ख्वाजा ने उस स्थान पर, जहां वर्तमान दरगाह है, अपना निवास स्थान बनाया । उसने दो विवाह किए थे। प्रथम स्त्री के वंश वाले अब तक स्वाजे साहब की दरगाह के अधिकारी हैं। ख्वाजा मुईन उदीन सन ६३३ हिजरी (१२३५ ई०) में ९६ वर्ष की अवस्था में अजमेर में मर गया। उसकी कबर इसी जगह दी गई।

ख्वाजा साहब की दरगाह भारतवर्ष के मुसलमानी धर्म-स्थानों में प्रधान है। अकबर ने मन्नत किया कि अगर एक पुत्र पैदा होगा तो मैं पांवप्यादे मकबरे में आऊंगा। सन १५७० में उसका बड़ा पुत्र पैदा हुआ, बादशाह अजमर को पैदल आया। बादशाह अकबर साल में एक बार इस स्थान पर आता था। उसने फतहपुर सिकरी से अजमेर तक सड़क के प्रत्येक कोस पर एक खंभा बनवाया था, जिनमें से कई एक रेलवे से अब तक देख पड़ते हैं।

ढाई दिन का झेंपडा—यह शहर के फाटक के ठीक बाहर है। ढाई दिन का झोपड़ा ऐसे नाम पड़ने का कारण अनेक लोग अनेक तरह से कहते हैं, जिनमें एक यह है कि सन ईस्वी की तेरहवीं सदी के आएंभ में अल्तमस ने यहांके जैनमन्दिरों को ढाई दिन में तोड़वा कर उनके असबाबों से यह मसजिद बनवाई। दूसरे ऐसा कहते हैं कि प्रथम जैनमन्दिर बना, परंतु कुतुबुहीन ने ढाई दिन में उसको मुसलमानी पूजा का स्थान बना लिया, इससिये इसका नाम ढाई दिन का झोंपड़ा पड़ा।

यह मसजिद तीन ओर से खुळी हुई है। इसमें १८ खंभों के ४ कतार हैं। खंभों की दुरस्तगी पूरी है। प्रति खंभों की नकाशी भिन्न भिन्न तरह की है। मसजिद के पास पुरानी जैनमूर्तियां बहुत पड़ी हैं।

चौहान राजा बीसछदेव अर्थात् विग्रहराज के बनाए हुए (विक्रमी संवत

१२१० का) हरकेलि नामक नाटक का कुछ हिस्सा शिले के तख्तों पर खोदा हुआ, इस मसजिद में रक्षित है। लेख वर्त्तमान देवनागरी से बहुत मिलता है।

सीसे की खान-उन्नी दर्बाने के बाहर तारागढ़ के नीचे सीसा (धातु) की खान है, जिसमें से पहले सीसा निकलतो था। इस अंधेरी खान में रोशनी लेकर जाना होता है।

पुराना अजमेर—तारागढ़ के पश्चिम की घाटी में पुराना अजमेर है, जो पहले चौहान राजाओं की राजधानी था। दो एक टूटे हुए मकानों के अतिरिक्त यहां अब कुछ पुराना चिन्ह नहीं है। वर्तमान अजमेर शहर अगलों के राज्य के मध्यभाग का बना है।

तारागढ़—यह पहाड़ी यहां की सब पहाड़ियों से ऊंची अर्थात अपने पास की घाटी से १३०० फीट से अधिक ऊंची हैं। दो भील उपर चढने के उपरांत आदमी तारागढ के सिरे पर पहुंचते हैं। घोड़े वा झंपान की सवारी जाती है। चौहान राजाओं के समय तारागढ उनका पहाड़ी किला था। उपर के भाग में एक फाटक के अतिरिक्त पुराने किले का कुछ पुराना चिन्ह नहीं है। पहाड़ी अत्यंत स्वास्थ्यकर है, इसलिये रोगग्रस्त अंगरेज़ों के रहने के लिये उपर मकान बने हैं। तारागढ़ के उपर के भाग में मीरनहुसेन की दरगाह है, जिसके खर्च के निमित्त ४००० हपये वार्षिक आय की भूमि है।

राजकुमार कालेज—राजकुमारों के पढ़ने के छिये मेयो कालेज हैं, जिसमें ८ वर्ष से १८ वर्ष के बीच की अवस्था के लड़के पढ़ते हैं । मध्य की इमारत में श्वेत मार्बुल का खन्दर काम है। दूसरी इमारतों में राजकुमार और उनके नौकर रहते हैं, इस कालेज के अलावे अजमेर में अजमेर कालेज हैं।

आर्घ्य समाज—अजमेर में आर्च्य समाज की एक सभा है स्वामी दयानन्द सरस्वती का देहांत सन १८८३ की तारीख ३० अकतूवर को अजमेर ही में हुआ। इन्हीं से आर्च्य समाज की स्टिष्ट हुई है।

अजमेर प्रदेश-यह देश राजपूताने के मध्य में देशी राज्यों से घेरा

हुआ चीफ़ कमिश्वर के आधीन अंगरेजी राज्य है, जिसमें अजमेर और मेर-बाड़ा दो भाग हैं। जजमेर पर्वश के उत्तर किछनगढ़ और जोधपुर राज्य; पश्चिम जोधपुर राज्य; दक्षिण उदयपुर राज्य और पूर्व किछनगढ़ और जयपुर राज्य हैं। इसका क्षेत्रफल २७११ वर्गमील है।

अजमेर प्रदेश में प्रधान नदी बनास है, जो उदयपुर से ४० मील पश्चिमो-तर अर्बली पहाड़ियों से निकली है, और देवली छावनी के पास इस जिले में प्रवेश करती है। दूसरी खारी, दाई, सागरमती और सरस्वती ४ छोटी नदियां हैं। ४ छोटे स्वभाविक जलाशय पहाड़ियों के दबाव में हैं, जिनमें से सब से अधिक प्रसिद्ध पुष्कर की पवित्र झील है। तारागढ़ पहाड़ी में सीसे, तांबे, और लोहे होते हैं। जिले में पत्थर बहुत निकलता है। श्रीनगर और सिलोरा में पत्थर की उत्तम खान हैं। अतीतमंद, खेताखेरा, और देवगढ़ में भी पत्थर निकलता है।

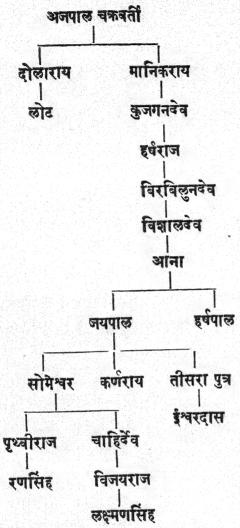
यहां चीनी कपड़ा दूसरे देशों से आते हैं। रूई, और यहां से गल्ला, दाना, दूसरे देशों में जाते हैं। रेल बनने के पहले ऊंट और बैलों से सौदागरी होती थी।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय अजमेर प्रदेश में ५४२३५८ मनुष्य थे अर्थात ४३७९८८ हिन्दू, ७४२६५ मुसलमान, २६९३९ जैन, २६८२ छस्तान, २१३ सिक्ख १९८ पारसी, ७१ यहूदी और २ अन्य। इनमें सैकड़े पीछे ५६ ई हिन्दी भाषा वाले ४२ ई मारवाड़ी भाषा वाले और १ ई अन्य भाषा बोलने वाले हैं।

अजमेर प्रदेश के शहर और कसबे, जिनमें इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय ५००० से अधिक मनुष्य थे ये हैं,—अजमेर विभाग में अजमेर (जन-संख्या ६८८४३), नसीराबाद (२१७१०) और केकड़ी (७१००) और मेरवाड़ा विभाग में वियावर (जन-संख्या २०९७८)।

इतिहास-कहावत के अनुसार संवत २०२ (सन १४५ ई०) में चौहान राजपूत राजा अजपाल ने तारागढ़ की पहाड़ी के पड़ोस में अजयमेरू नामक किला बनवाया और उसका नाम गढ़ विटली रक्खा। उसने पहाड़ी के नीचे इंद्रकोट नामक घाटी में एक शहर को बसा कर अपने नाम से उसका नाम अजमेर रक्खा। राजा अजपाल अपनी अंत अवस्था में बिरक्त होकर अपनी राजधानी से १० मील दुर चला गया, जहां अजपाल का मन्दिर अब तक उसके मरने के स्थान को स्मरण कराता है।

ठीक इतिहास का आएंभ अजमेर की हुकूमत करने वाळे दोलाराव चौहान से ज्ञात होता है। वह सन ६८५ ई० में अरव के महम्मद कासिम के आक्रमण को रोकने के लिये हिन्दुओं में शामिल हुआ और परास्त होकर दुश्मनों के हाथ से मारा गया। उसके उत्तराधिकारी मानिकराय ने सांभर को नियत किया। (मानिकराय से विशाल देव तक ११ राजाओं में से ६.का नाम नहीं मिलता) हर्षराज ने खबुकत्गीं से एक बड़ा सग्राम करके मुसलमानी को अजमेर से निकाल दिया और अरिमर्दन की पदवी पाप्त की । उससे पहले कुजगनदेव ने खबुकतग़ी से १२०० घोड़े,छीन कर खलतानग्रह की पदवी छी थी। बीर विलूनदेव गुजनी के महमूद से लड़ने के समय मारा गया। सन १०२४ में महमूद अजमेर होकर सोमनाथ गया । उसने अजमेर को छूटा, परंतु तारागढ़ के किले में अजमेर के लोग बच गए। उसके थोड़ेही पीछे विशालदेव अजमेर की हुकूमत करने वाला हुआ । उसने विशालसागर नामक तालाब बनवाया, तोमरों से दिल्ली को जीता और मेरवाड़ा की पहाड़ी कोमों को दवाया। विशालदेव के पोते आना ने आनासागर झील को बन-वाया। आना से तीसरी पीड़ी में सोमेश्वर हुआ, जिसने दिल्ली के तोमर राजा अनंगपाल की पुत्री से विवाह किया, जिसका पुत्र खविख्यात पृथ्वीराज (जिसको अनंगपाल ने गोद लिया था) दिल्ली के राजसिंहासन पर बैठा; जो सन ११९३ ई० में शहाबुद्दीन महम्मदग़ोरी से परास्त होकर मारा गया। उसका पुत्र रणसिंह भी उसी युद्ध में मरा। मुसलमानों ने अजमेर को लेलिया, रोकने वालों को मारा, शेष लोगों को दास बना कर रक्खा और अजमेर को अपने आधीन करके पृथ्वीराज के एक संबंधी को दे दिया; परंतु पीछे जब उस राजा ने मुसलमानों की अधीनता स्वीकार नहीं की, तब महम्मद गोरी के जनरल कुतुबुद्दीन ने दिल्ली से आकर अजमेर को अपने अधिकार में कर लिया। उस समय अजमेर का राजा निरास होकर किले में अपनी स्नियां के साथ अग्नि में जल गया। सन १२१० ई० में कुतुबुद्दीन के मरने पर राठौर और चौहानों ने रात्रि में किले पर चढ़ाई करके मुसलमानी सेना को मार डाला। किले के सेनापित सैयद हुसेन की कबर अब तक तारागढ़ में है। जब मुग़लों ने दिल्ली को लूटा और तुग़लक घराना नष्ट हो गया, तब मेनाइ के राणा कुम्भ ने अजमेर को छीन छिया, परंतु तुरंतही वह मारा गया। सन १४६९ में मालवा के मुसलमान वादशाह ने अजमेर को लेलिया। सन १५३१ तक यह देश मालवा के पिंसों के अधिकार में रहा, पश्चात मारवाड़ के राठौर राजा मालदेव ने अजमेर पर अधिकार किया। उसने तारागढ़ किले को इढ़ बनाया। सन १५५६ में अकवर ने इसको जीत लिया सन १७२० में अजित-सिंह राठौर ने मुग़लों से अजमेर को छीन लिया। महम्मदशाह ने इसको फिर छेकर अभयसिंह को दिया अभयसिंह के लड़के रामसिंह ने जयआपा सिंधिया के आधीन महाराष्ट्रों को बुळाया, परंतु रामसिंह मारा गया। सन १७५६ में रामसिंह के भाई विजयसिंह को अजमेर दिया गया। सन १७८७ में राठौरों ने अजमेर को फिर छेलिया, परंतु पाटन में परास्त होने के पश्चात इसको फिर सिंधिया को दिया। सन १८१८ में दौलतराव सिंधियां ने अंगरेजी गवर्नमेंट को अजमेर देदिया। अजमेर के चौहान राजवंश इस भांति है।



रेळवे—' बंबे बड़ोदा और सेंट्रल इंडिया रेलवे ' का सदर मुकाम अजमेर है। रेलवे स्टेशन के समीप बहुत फैला हुआ रेलवे का काम है, जिसमें थोड़े यूरोपियन के मातहत हजारहां देशी लोग काम कर रहे हैं। रेलवे लाइन के दूसरे पार सिविल स्टेशन फैला है, जिसमें पायः सब रेलवे अफसर रहते हैं। अजमेर से रेलवे लाइन ३ ओर गई हैं। तीसरे दर्जे का महस्रल प्रति मील २ पाई लगता है। (१) अजमेर से चितौरगढ़ तक दक्षिण, उससे आगे दक्षिण-पूर्व को लाइन गई है मील-प्रसिद्ध स्टेशन १५ नसीराबाद छावनी ११६ चितौरगढ़ १५० नीमच छावनी १८१ मंदसोर वा मंडेशर २१२ जावरा २३३ रतलाम जंक्शन २८२ फतेहाबाद जंक्शन जिससे १४ मील पूर्वोत्तर उज्जैन है ३०७ इंदौर ३२० मऊ छावनी ३५६ मोरतका (ओंकार नाथ के निकट) ३९३ खंडवा जंक्शन रतलाल जंक्शन से पश्चिम कुछ दक्षिण मील-प्रसिद्ध स्टेशन ७१ दोहद ११६ गोधड़ा १५० डांकौंर तीर्थ १६९ आनंद जंक्शन

(२) अजमेर से पालनपुर तक पश्चिम-दक्षिण, उससे आगे दक्षिण को लाइन गई है। मील-प्रसिद्ध स्टेशन ३३ वियावर ५४ हरिपुर ८७ मारवाङ जंक्शन १९० आबू रोड २२२ पालनपुर २४१ सिद्धपुर २६२ महसाना जंक्शन ३०५ अहमदाबाद जंक्शन मारवाड़ जंक्शन से उत्तर कुछ पश्चिम मील-प्रसिद्ध स्टेशन ४४ लूनी जंक्शन ६४ जोधपुर ६५ जोधपुर महल (३) अजमेर से फलेरा तक पूर्वीत्तर उससे आगे पूर्व को लाइन गई है मील-प्रसिद्ध स्टेशन १८ किसनगढ़ ४९ फलेरा जंक्ज्ञन ८४ जयपुर १४० बादीकुई जंक्शन २०१ भरतपुर २१८ अछनेरा जंकशन २३३ आगरा छावनी २३५ आगरा किला

/वियावर।

अजमर से ३३ मील दक्षिण-पश्चिम वियावर स्टेशन है। वियावर अजमर के मेरवाड़ विभाग में पत्थर की शहरपनाह के भीतर व्यापार का कसवा और एसिस्टेट कमिशनर का सदर स्थान है। कसवे में कई मील (कल कार-खाने), चौड़ी सड़क, पोष्ट आफ़िस और अस्पताल हैं। यहां लोहे के काम की दस्तकारी और पोस्त की सौदागरी होती है।

इस साल की मनुष्य-गणना के सयम इस में २०९७८ मनुष्य थे अर्थात १४५७२ हिंदू, ३६४१ मुसलमान, २४८४ जैन, २४६ क्रस्तान, २४ सिक्ख, १० पारसी, और १ अन्य ।

सन १८३५ में मेरवाड़ा के कमिश्नर कर्नल डिक्सन ने इस को क्साया। इसकी उन्नति बहुद्व जल्दी हुई है।

पंदरहवां अध्याय।

(राजपूताने में) पुष्कर ।

्रपुष्कर् ।

अजमेर शहर से ७ मील दूर २६ अंश ३० कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश ३६ कला पूर्व देशांतर में छोटी पहाड़ियों के वीच में भारतवर्ष में ब्रह्मा का एक मात्र तीर्थ और संपूर्ण तीर्थों का गुरु पुष्करराज है। अजमेर के आनासागर के पश्चिम किनारे होकर सड़क गई है। सरकार ने सम्बत १९२३-२४ के अकाल में आनासागर के दक्षिण की पहाड़ी होकर पुष्कर तक एक्के और वैलगाड़ी जाने योग्य पहाड़ी सड़क निकलवा दी। आनासागर और पुष्कर के वीच में अजमेर से ३ मील पर नासिर गांव है।

पुष्कर करीव ४००० मनुष्यों की खन्दर वस्ती है, जिसके सीमा के भीतर कोई मनुष्य जीवहिंसा नहीं कर सकता। इसके निकट भारत के संपूर्ण तालावों से अधिक पवित्र ज्येष्ठ पुष्कर नामक तालाब है। पुष्कर के बहुतरे पुराने मन्दिरों को औरंगजेब ने बिनाश करिदया। पुष्कर तालाव के किनारों पर बहुतरे जत्म घाट, राजपुताने के बहुत राजाओं के बनवाए हुए अनेक मकान, धर्म-शाले और मन्दिर बने हैं। पूर्व समय में असंख्या यात्री यहां आते थे। अब-तक भी कार्तिक के अंत में लगभग १००००० यात्री पुष्कर में एकत्र होत हैं। मेले में बहुत घोड़े छंट और बैल विकते हैं। और अनेक भांति की बस्तुओं का ज्यापार होता है कार्तिक शुक्त ११ से पूर्णिमा तक ५ दिन पुष्कर स्नान का बड़ा माहात्म्य है।

्ज्येष्ठ पुष्कर की परिक्रमा के अतिरिक्त पुष्कर तीर्थ की कई परिक्रमा हैं। पहुळी ३ कोस की, दूसरी ५ कोस की, तीसरी १२ कोस की और चौथी २४ कोस की, जिन में बहुतेरे देव ऋषियों के पुराने स्थान मिलते हैं।

ई पुष्कर ताळाच—पुष्कर वस्ती के निकट १ ई कोस के घेरे में कमल आदि नाना जल उद्भिज से पूर्ण ज्येष्ठ पुष्कर है जिससे सरस्वती नदी निकली है, जो सागरमती में मिलने के पश्चात लूनी नदी कहलाती है और कच्छ के रन में जाकर वालू में गृप्त हो जाती है। पुष्कर के किनारे पर गौघाट, ब्रह्माघाट, कपालमोचनघाट, यज्ञघाट, वदरीघाट, रामघाट और कोटितीर्थघाट पत्थर के बने हैं। तालाब के किनारों पर और इसके आस पास बहुत पक्के मकान और देव मन्दिर बने हैं। बहुत काल हुए परिहार राजपूत मांदर का राजा नहरराय मृगया करता हुआ पुष्कर झील के किनारे पहुंचा उसने पानी पीने के लिये इस में हाथ डाला पुष्कर के जल स्पर्ध से जब उसका चरम रोग लूट गया, तब उसने इस का घाट बनवा दिया। यात्री गण ज्येष्ठ पुष्कर की परिक्रमा करते हैं।

् ज्येष्ठ पुष्कर से करीब २ मील दूर मध्यम पुष्कर और किनष्ठ पुष्कर हैं। जसी के समीप शुद्ध वापी नाम से प्रसिद्ध गयाकुंड है और उससे ५ कोस दूर प्राची सरस्वती और नंदा दोनों निदयों का संगम है।

देवमन्दिर-पुष्कर में ५ मन्दिर प्रधान हैं ब्रह्मा, वदरीनारायण, वाराहजी,

आत्मेश्वर महादेव और सावीत्री के। (१) ब्रह्मा का मन्दिर—यह मन्दिर पुष्कर के सब मन्दिरों में प्रधान और सब से बड़ा है। महाराज सिंधिया के दीवान गोकुछपर्क ने वर्तमान मन्दिर को बनवाया। इसमें ब्रह्मा की चतुर्मुख मूर्ति के बाएं गायत्री देवी और दिहने सावित्री प्रतिष्ठत हैं। जगमोहन में सनकादिक चारो श्राताओं की मूर्तियां और एक छोटे मन्दिर में नारद की मूर्ति है। एक दूसरे छोटे मन्दिर में मार्बुछ के हाथियों पर इन्द्र और कुवेर बेटे हैं (२) बदरी नारायण का मन्दिर—(३) बाराह जी का मन्दिर—पुराने मन्दिर को जहांगीर ने तोड़ दिया था, वर्तमान मन्दिर जोधपुर के भक्तसिंह का बनवाया हुआ है। (४) आत्मेश्वर वा कपाछेश्वर महादेव का मदिर—इसको महाराष्ट्र स्वेदार गीमाराव ने बनवाया। गुफा के समान थोड़े रास्ते होकर मन्दिर में जाना होता है। इनके अतिरिक्त पुष्कर के किनारे पर विशालदेव, अमरराज, मानसिंह, अहिल्याबाई, भरतपुर के राजा जवाहरमल और मारवाई के राजा विजयसिंह के बनवाए हुए अनेक मन्दिर और मकान हैं।

्र च्येष्ट पुष्कर की परिक्रमा में एक पहाड़ी के नीचे नागकुण्ड, चक्रकुण्ड और गंगाकुण्ड नामक छोटे छोटे जलके कुण्ड मिलते हैं और एक ऊंची पहाड़ी पर सावित्री का मन्दिर हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—व्यास स्मृति—(चौथा अध्याय) कार्तिक की पूर्णिमा को ज्येष्ट पुष्कर में स्नान करने से बड़ा फल प्राप्त होता है। मनुष्य पुष्कर तीर्थ को करके सब पापों से छूट जाते हैं।

शंख स्पृति—(१४ वां अध्याय) पुष्कर में पितरों के निमित्त जो कुछ

दिया जाता है, उसका फल अक्षय होता है।

महाभारत—(बन पर्ब्ब-८२ वां अध्याय) तीनों लोकों में विख्यात मृत्युलोक में देवताओं का तीर्थ पुष्कर है, जिसमें तीनो संध्याओं के समय १० करोड़ तीर्थ एकत्र होते हैं। वहां सूर्च्य, वस्तु, रुद्र, साध्य, मरुत, गंधर्व इत्यादि सदाही निवास करते हैं। उस तीर्थ में सब लोकों के पितामह परम श्रीति के सहित सदा बसते हैं। ब्राह्मण, क्षत्री, बेंश्र्य, शूद्र कोई हो, उस तीर्थ में स्नान करके फिर गर्भ में नहीं आता। विशेष करके जो कार्तिक की पूर्णिमासी को पुष्कर में स्नान करता है, उसको अक्षय ब्रह्मछोक प्राप्त होता है। जैसे सब वेबताओं में पहछे विष्णु हैं, बैसेहीं सब तीर्थों में आदि पुष्कर है। जो पवित्र और जितेंद्रिय होकर १२ वर्ष पुष्कर में निवास करता है, वह सायुज्य मोक्ष पाता है। कार्तिक की पूर्णमासी में पुष्कर स्नान करने से १०० वर्ष पर्व्यन्त अग्नि होत्र करने के तुख्य फछ प्राप्त होता है। पुष्कर में ३ शिखर और पुष्करादि कारने सिद्ध हैं इत्यादि। (८९ वां अध्याय) जो मनस्त्री पुरुष मन से भी पुष्कर नाने की इच्छा करता है, उसके सब पाप नाश हो जाते हैं और उसको स्वर्ग का आनंद मिछता है।

(शल्य पर्व्य-३८ वां अध्याय) ब्रह्मा ने जब पुष्कर क्षेत्र में महायज्ञ किया, तब उसको देख कर देवता लोग भी घवड़ा गए थे और आश्रर्च्य करते थे। उस समय जब ऋषियों ने कहा कि यह यज्ञ अच्छा नहीं हुआ, क्योंकि सरस्वती नदी तो यहां है नहीं, तब ब्रह्मा ने सुप्रभा नामक सरस्वती को बुलाया।

जगत में ७ सरस्वती हैं, पुष्कर में खप्रभा १, नैमिषारण्य में कांचनाक्षी २, गया में विशाला ३, अयोध्या में मनोरमा ४, कुरुक्षेत्र में ओघवती ५, गंगाद्वार में खरेणु ६ और हिमालय में विमलोदका ७।

(शांति पर्व्य-२९८ वां अध्याय) पवित्र पुष्कर क्षेत्र में तपस्या आदि कमीं से शरीर को शोधन करना उचित है। (अनुशासन पर्व्व-१२५ वां अध्याय) कुरुक्षेत्र, गया, गंगा, प्रभास और पुष्कर (पंच तीथीं) के मनहीं मन ध्यान करके जल से स्नान करने पर पुरुष सब पापों से छुट जाता है। (१३० वां अध्या) ज्येष्ट पुष्कर में गोदान का वड़ा माहात्म्य है। पुष्कर तीर्थ में बेद जानने वाले ब्राह्मण को किपला गौ दान करना मनुष्य को उचित है। जो लोग पुष्कर में किपला गौ दान करते हैं, उन्हें रूषभ के सहित १०० गौदान करने का फल मिलता है और ब्रह्महत्या के समान पाप छूट जाता है; इसलिये

वहां जाकर शुक्क पक्ष में कपिला गौ अवश्य दान करना चाहिए।

बामनपुराण—(२२ वां अध्याय) ब्रह्मा जी की ५ बेदी हैं, जिनमें उन्होंने यज्ञ किया है,—मध्म-बेदी प्रयाग, पूर्व-बेदी गया, दक्षिण-बेदी विरुजा, पश्चिम-बेदी पुण्कर और उत्तर-बेदी स्यमंतपंचक (कुरूक्षेत्र)। (६५ वां अध्याय) कार्तिकी पूर्णिमा पुण्कर जी में बहुत पुण्य देने वाली है।

ब्रह्मबैवर्तपुराण—(प्रकृतिखंड-५६ वां अध्याय) पुण्कर के समान थीर्थः

नहीं है (गणेश्वाखंड-तीसरा अध्याय) तीथीं में पुण्कर श्रेष्ट है।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्छ ६६ वां अध्याय) पुष्कर तीर्थ सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाला और भुक्ति मुक्ति देने वाला है।

बाराहपुराण—(१५७ वां अध्याय) ज्येष्ट में पुष्कर के स्नान से बड़ा फल

भविष्यप्रराण—(पूर्वाद्ध-१६ वां अध्याय) संपूर्ण जगत ब्रह्मनय और ब्रह्मा में स्थित है, इसिल्ये ब्रह्मा जी सब के पूज्य हैं । जो ब्रह्मा जी को भिक्त से नहीं पूजता, वह राज्य, स्वर्ग और मोक्ष कभो नहीं पाता; इस कारण ब्रह्मा जी की सदा पूजा करनी चाहिए। ब्रह्मा जी के दर्शन से उनका स्पर्श करना उत्तम है।

(उत्तरार्छ-८९ वां अध्याय) बैंशाख, कार्तिक और माघ की पूर्णिमा स्नान दान के लिये अति श्रेष्ठ हैं। बैशाखी को गंगा में, कार्तिकी को पुष्कर में और माघी को काशी में स्नान करना चाहिए।

पद्मपुराण—(सृष्टि खंड-१५ वां अध्याय) ब्रह्मा जी ने विचार किया कि हम सब से आदि देव हैं, इससे जहां कि हम प्रथम विष्णु की नाभि से उपजे हुए कमल पर उत्पन्न हुए थे, वहां अपने यज्ञ करने के लिये एक अपूर्व तीर्थ वनावें। सो बनाना भी नहीं है, क्योंकि वह स्थान तो हई है। इसके उपरांत ब्रह्मा जी पृथ्वी पर पुष्कर तीर्थ में आए और सहस्र वर्ष पर्यंत वहां रहे। उसके पीछे ब्रह्मा जी ने अपने हाथ का कमल वहीं फेंक दिया, उस पुष्प की धमक से सब पृथ्वी कांप उटी, समुद्र में लहरें बड़े बेग से उटने लगी, यहां तक

कि उस शब्द से तीनों लोक के चराचर मूक, विधर और अंध होकर व्याकुल होगए। देवताओं ने जब बहुत काल तक ब्रह्मा की आराधना की, तब ब्रह्मा जी ने प्रकट होकर उन से कहा कि चल्रनाभ नामक अखर बालकों के मारने वाला था, वह तुम लोगों का आना खन इन्द्रादि सब देवताओं के मारने के लिये उठ खड़ा हुआ था; इसलिये हमने जोर से पृथ्वी पर कमल पटक दिया, जिससे वह मर गया। हमने इस स्थान पर पुष्कर अर्थात कमल हाथ से फेंका है, इससे यह स्थान पृथ्वी पर पुष्कर नाम से प्रसिद्ध होगा।

चन्द्र नदी के उत्तर सरस्वती के पश्चिम नन्दन स्थान के पूर्व और कान्य पुष्कर के दक्षिण जितनी भूमि है, ब्रह्माजी ने उसमें यज्ञ की बेदी बनाई, उस में प्रथम ज्येष्ठ-पुष्कर नाम से प्रसिद्ध तीर्थ बनाया जिसके देवता ब्रह्मा हैं; दूसरा मध्यम पुष्कर बनाया, जिसके देवता विष्णु हैं; और तीसरा किनष्ट पुष्कर तीर्थ बनाया, जिसके देवता रुद्र हैं। जो मनुष्य पुष्कर तीर्थ के जल में हूब कर प्राण छोड़ते हैं, उनको अक्षय ब्रह्म लोक मिलता है।

(१६ वां अध्याय) सव ऋषियों ने पुष्कर में आकर जब पुराण, हैद, स्मृति और संहिता पढ़ी, तब ब्रह्मा के मुख से बाराह जी उत्पन्न हुए। बाराह जी के मुख से प्रथम सब बेद, तब वेदांग उत्पन्न हुए और दांतों से यज्ञ करने के लिये स्तंभ पकट हुए। इसी प्रकार हाथ आदि अंगों से यज्ञ की बहुत सामग्री उत्पन्न हुई। बाराह जी के दांत के अग्रभाग पर्वत के शृंगों के समान उन्ते थे जिस पर रख कर उन्हों ने ब्रह्मा के हित के लियें पलय के जल के भीतर से पृथ्वी को लाकर जहां पुष्कर तीर्थ बना है वहां उसको स्थापन किया और आप अन्तर्द्धान होगए।

ब्रह्मा के यज्ञ में देव, नाग, मनुष्य, गंधर्व आदि सब आए। यज्ञ आरंभ हुआ। अध्वर्ध्य ने ग्रंथिबंधन होने के लिये सावित्री को बुलाया, पर वह स्त्रियों के कार्च्य करने में लगी थीं इसलिये न आई और बोली कि हम को अभी ग्रहकार्च्य करना है और लक्ष्मी, गंगा, इन्द्राणी, गौरी, अहंधती आदि अब तक न आई हैं। जब तक सब हमारी सखियां न आबेंगी, तब तक मैं अकेली न आऊंगी । ब्रह्मा जी से कहो कि वह एक मुहूर्त विलंब करे, हम इन सबों के साथ बहुत शीघ्र आवेंगी। अध्वर्य्युओं ने आकर यह द्यांत ब्रह्मा से कहा और यह भी कहा कि काल वीता जाता है। यह छन ब्रह्मा जी क्रुद्ध होकर इन्द्र से बोले कि तुम हमारे लिये कोई दूसरी स्त्री लाओ, जिससे यह हो। इन्द्र अति बेग से जाकर पृथ्घी पर ढूंढ़ने लगे। उन्हों ने लहमी के समान रूपवती गोरस बेचती हुई अहीर की एक कन्या को देखा, जिसके समान देवता, नाग, गन्धर्व आदि किसी की स्त्री नहीं थी। इन्द्र ने ब्रह्मा की पत्नी होने के लिये कन्या से कहा। वह बोली कि मेरे पिता से मांग कर मुझे ले चलो में ऐसे न चलूंगी, परंतु इन्द्र ने बल से उसको लाकर ब्रह्मा के आगे खड़ी कर दिया। जब ब्रह्मा जी ने उसका नाम गायत्री कह कर गांधर्व बिवाह की रीति से उसके संग बिवाह कर लिया, तब ब्राह्मणों ने उसको पित्नशाला में बैठाया।

(१७ वां अध्याय) गायत्री आकर ब्रह्मा के समीप बैठ गई । वेबताओं के सहस्र वर्ष पर्व्यन्त वह यज्ञ होता रहा। एक समय महावेच जी पंच सत्र धारण किए और एक वड़ी भारी मनुष्य की लोंपड़ी हाथ में लिए हुए भिक्षा मांगने के लिये यज्ञ शाला में आए और ऋत्विज आदिकों के निकट बैठ गए। ब्राह्मणों ने उन्हें बहुत दुत्कारा और खदेरा पर वह वहां से न उठे। उन्हों ने कहा अब भोजन कर लो और यहां से चले जाओ, तब महावेच जी अच्छा कह कर मुदें की लोंपड़ी आगे धर कर बैठ गए और भोजन करने के उपरांत जूठी लोंपड़ी को छोड़कर पुष्कर में स्नान करने के लिये चले गए। एक ब्राह्मण ने जब अपवित्र लोपड़ी को उठा कर सभा से बाहर फेंक दिया, तब जहां वह कपाल धरा था वहां दूसरा कपाल दिखाई दिया; इस मकार दूसरा, तीसरा, चौथा यहां तक हजारहवां तक फेका, परंतु कपालों का अंत नहीं मिला कि कितने हैं। जब सब देवताओं ने पुष्कर में जाकर महादेव जी की बड़ी स्तुति की, तब शंकर जी संतुष्ट होकर बोले कि अब हम ने अपना कपाल उठा लिया, तुम लोग यह कमें करो।

जब सावित्री सब देवताओं की स्त्रियों के संगयज्ञ में आई, तब इन्द्र बहुत डरे और ब्रह्मा जी ने नीचा मुख कर लिया । विष्णु और रुद्र बहुत लिजात हुए । सावित्री यज्ञ को देख क्रोध से युक्त हो ब्रह्मा से बोली कि तुम ने वड़ी लिजा का काम किया कि सब लोगों के आगे हमको नीचे डाल कर दासी को बैटा लिया । इसके अनन्तर उसने ब्रह्मा को शाप दिया कि ब्राह्मण समूहों में और सब तीथों में कोई ब्राह्मण आज से मृत्य लोक में तुम्हारी पूजा न करेंगे, केवल कार्तिक की पूर्णिमा को तुम्हारी पूजा होगी। इसके उपरांत सावित्री ने इन्द्र, विष्णु, रुद्र, अग्नि और ब्राह्मणों को भी भिन्न भिन्न प्रकार के शाप दिए।

गायत्री सभा से निकल ज्येष्ठ-पुष्कर के बाहर खड़ी हुई और विष्णु से ऐसा कह कर कि हम वहां यज्ञ करेंगी, जहां तुम लोगों का शब्द नहीं छन पड़ेगा, पर्वत के ऊपर चढ़ गई। विष्णु ने वहां जाकर सावित्री की वड़ी स्तुति की, सब उन्हों ने प्रसन्न होकर विष्णु से कहा कि तुम अब जाकर ब्रह्मा का यज्ञ पूर्ण कराओ, हम भी तुम्हारे कहने से कुरुक्षेत्र, प्रयाग आदि तीथों में अपने पति ब्रह्मा के समीप सदा निवास करेंगी। इसके पीछे यज्ञ होने लगा।

गायत्रों ने कहा कि जो मनुष्य कार्तिक की पूर्णिमा को सावित्री और गायत्रों सहित ब्रह्मा की मूर्ति का पूजन करेगा और मूर्तियों को रथ पर चढ़ा कर सब नगरों में फिरावेगा, वह ब्रह्म लोक में निवास करेगा इत्यादि।

(१८ वां अध्याय) ब्राह्मणों ने जब छना कि यहां एक पाची सरस्वती तीर्थ है, तब वहां जाकर देखा कि पुष्कर तीर्थ में पांच सोतों से पाची सरस्वती बहती है, जिनके नाम छप्रभा, कांचना, पाची, नन्दा और विशालिका हैं। वह ब्रह्मा की आज्ञा से वहां आकर वही थी। यह नदी पुष्कर में पूर्व ओर को बहती है, इससे ऋषियों ने इसका नाम पाची सरस्वती रक्खा है। ब्रह्मा जी ने सब से अधिक पुष्कर तीर्थ में सरस्वती नदी का माहात्म्य कहा है। कार्ति-की पूणिमा को मध्यम कुंड में स्नान करके कुछ भी ब्राह्मणों को देने से अध्व-मध्य यह का फल होता है। कनिष्ठ कुंड में स्नान करके ब्राह्मणों को एक

रेशमी बस्त देने से मरनांत में अग्नि लोक मिलता है। पुष्कर तीर्थ में पर्वत के के हांग हैं, जिनके जल बहने से के कुंड हुए हैं, जो ज्येष्ठ पुष्कर, मध्यम पुष्कर और किनष्ठ पुष्कर नामों से प्रसिद्ध हैं। सरस्वती पुष्करारण्य में जाकर फिर अंतर्द्धीन होकर पश्चिम दिशा को चली है और आगे खर्जूरी वन में जाकर नन्दा नामक सरस्वती कहाई है।

(१९ वां अध्याय) पुष्कर में विष्णु की मूर्ति आदिवाराह नाम से प्रसिद्ध है, जितने नीच वर्ण इस तीर्थ में स्नान करते हैं, वे सब मरने के उप-रांत ब्राह्मण कुछ में जन्म पाते हैं । जैसे सब देवताओं में प्रथम ब्रह्मा जी गिने जाते हैं, ऐसे ही सब तीर्थों में पुष्कर तीर्थ आदि है । यज्ञ पर्वत के समीप अगस्त जी का आश्रम है । ब्रह्मा जी ने कहा कि जो कोई पुष्कर तीर्थ की यात्रा करके अगस्त कुंड में स्नान नहीं करेंगे, उनकी यात्रा सफछ नहीं होगी । जो कोई यज्ञ पर्वत पर चढ़ कर गंगा जी के निकछने का स्थान देखेगा, जहां से उत्तर को सुख करके वह पुष्कर की ओर बहती है, वह छतार्थ हो जायगा।

(स्वर्ग खंड दूसरा अध्याय) महापद्म, शंख, कुलिक आदि नाग कश्यप जी के संतान हुए, जो मनुष्यों को देखते ही क्षण मात्र में भक्षण कर लेते थे। जब सब लोग ब्याकुल होकर ब्रह्मा की शरण में गए, तब ब्रह्मा ने नागों को शाप दिया कि बैबस्बत मन्वंतर में सोम वंशी राजा जनमेजय होगा, वह सप्प यज्ञ करके पञ्चलित अग्नि में तुम लोगों को भस्म कर डालेगा और बिनता की आज्ञा से गरुड तुम लोगों को भक्षण किया करेगा। इसके उपरांत जब नागों ने ब्रह्मा की स्तुति की, तब वह बोले कि जरत्कारु नामक ब्राह्मण अग्नि से तुम लोगों की रक्षा करेगा। कुल दिनों के जपरांत पुकर में जहां ब्रह्मा यज्ञ कर रहे थे, यज्ञ पर्वत की दीवार में नाग लोग जा बैठे। उनको थके हुए देख जल की बड़ी धारा उत्तर को निकली, उसी से वहां नाग तीर्थ उत्पन्न हुआ, जिसको नाग कुंड भी कहते हैं। यह तीर्थ सर्पों के भय को नाश करता है। का भय नहीं होता। ब्रह्मा ने नागों से कहा कि जो कोई इस तीर्थ में तुम को दूख चढ़ावे, उसको तुम कभी मत काटो।

(तीसरा अध्याय) एक समय दक्षिण देश के करोडों ब्राह्मण जब स्नान के लिये पुष्कर में आए, तब पुष्कर तीर्थ स्वर्ग को चला गया । सब लोगों ने कहा कि दक्षिणी ब्राह्मण अपिवत्र होते हैं, इसी से उनके आने पर पुष्कर स्वर्ग को चला गया है, अब कार्तिक की पूर्णिमासी को पुष्कर फिर अपने आप यहां आवेगा । यह तीर्थ सदा पुष्य दायक है, पर कार्तिकी को विशेष करके अति पुष्यदायक होता है, क्योंकि जब दक्षिणी ब्राह्मणों को देख यह तीर्थ आकास को चला गया था, तो सरस्वती नदी ने उदुम्बंर बन से आकर अपने जल से पुष्कर को फिर भरा है, जो दक्षिण ओर पर्वत पर अब भी शोभित होती है।

(चौधा अध्याय) प्रष्कर में यज्ञ पर्वत की मर्च्यादा के २ पर्वत विख्यात है। दोनों के मध्य में ज्येष्ट मध्यम और किनष्ट नामों से प्रसिद्ध ३ कुण्ड हैं। राम लक्ष्मण और जानकी ने प्रष्कर में जाकर विधि पूर्वक स्नान किया था।

अग्निपुराण—(१०८ वां अध्याय) पुष्कर क्षेत्र में दशकोटि हजार तीर्थ तीनों काल, अर्थात पातः, मध्यह और संध्या में पाप्त होते हैं। ब्रह्मा के सहित संपूर्ण देवता और ऋषिगण पुष्कर में स्नान और पितरों का अर्चन करके सिद्धि को पाप्त हुए हैं। उस तीर्थ में कार्तिक मास में अन्नदान करने से मनुष्यों को ब्रह्मलोक मिलता है। पुष्कर क्षेत्र का तप, दान और ध्यान दुर्लभ है। उसमें निवास, श्राद्ध और जप करने से १०० पुस्त का उद्धार हो जाता है। पुष्कर क्षेत्र में असंख्य तीर्थ और पवित्र नदियां सर्बदा निवास करती हैं।

कूर्मपुराण—(उपरि भाग-३४ वां अध्याय) संपूर्ण पापों को नाश करने वाला, लोक विख्यात ब्रह्मा का पुष्कर तीर्थ है, जिस स्थान पर किसी प्रकार से मृत्यु होने पर ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। मनुष्य मन में पुष्कर का स्मरण करने से संपूर्ण पापों से विमुक्त होकर अंत में इन्द्र के साथ आनंद करता है।

संपूर्ण देवता, यक्ष, सिद्ध आदि पुष्कर में आकर के ब्रह्मा की सेवा करते हैं। जो मनुष्य पुष्कर में स्नान करके ब्रह्मा का पूजन करते हैं, वे संपूर्ण पापों से विसक्त होकर ब्रह्मलोक में निवास करते हैं।

सोलहवां अध्याय।

(राजपूताने में) नसीराबाद, चितौरगढ़, उदयपुर और श्रीनाथद्वारा।

+ नसीराबाद।

अजमेर से १५ मील दक्षिण नसीराबाद का रेलवे स्टेशन है। नसीराबाद अजमेर के मेरवाड़ा ज़िले में फौजी छावनी है, जिसको सन १८१८ ई० में सर अक्टरलोनी ने नियत किया। छावनी एक मील फैली हुई है, जिसकी सीमा पर वेशी क़सवा है। छावनी में युरोपियन पैदल का एक रेज़ीमेंट, देशी पैदल का एक रेज़ीमेंट और देशी सवार की सेना का एक भाग है।

इस साल की जन-संख्या के समय नसीराबाद और छावनी में २१७१० मनुष्य थे; अर्थात १५१९८ हिन्दू, ५४७२ मुसलमान, ५६४ क्रस्तान, ३६७ जैन, ६० यहूदी ३३ पारसी, और १६ सिक्ख। सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय २१३२० मनुष्य थे; अर्थात १८४८२ कसबे में और २८३८ छावनी में।

सन १८५७ की तारीख २८ मई को नसीरावाद की सेना बाग़ी हुई, परन्तु छोगों से सहायता न पाने के कारण उसने दिछी की यात्रा की।

√ चितौर।

नसीराबाद से १०१ मील (अजमेर से ११६ मील) दक्षिण चितौर का स्टेशन है। चितौर राजपूताने के मेवाड़ प्रदेश के उदयपुर राज्य में पहाड़ी किले के नीचे दीवारों से घिरा हुआ एक कसवा है। जब चितौर मेवाड़ की राजधानी था, उस समय शहर किले में था। नीचे केवल बाहरी का बाजार

था। यह २४ अंश ५२ कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश ४१ कला पूर्व देशान्तर में स्थित है।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय चितौर में १०२८६ मनुष्य थे; अर्थात ७३३० हिन्दू, १९४२ मुसलमान, ७७१ जैन, २२९ एनिमिष्टिक, १३ क्रुस्तान और १ पारसी।

किला—िकला देखने के लिये उदयपुर के महाराज के कर्मचारी से चितौर में पास लेना चाहिए। रेलवे स्टेशन से पूर्व चितौर का विख्यात किला उजाइ हो रहा है। कहावत के अनुसार सन ७२८ ई० में बाप्पा रावल ने किसी से किले को छीन लिया, तबसे सन १५६८ तक यह मेवाड़ की राजधानी था।

सङ्क गंभारी नदी के पत्थर के पुल से होकर किले में गई है। पुल में १० महरावी हैं। कहा जाता है कि राणा लक्ष्मणसिंह के पुत्र श्रीसिंह ने इसको बनवाया था।

जिस पहाड़ी पर किला है, वह आस पास के देश से औसत ४५० फीट ऊंची और ३ ई मील लंबी है; जिसका सिर उजड़े पुजड़े बहुतेरे महल और मिन्दरों से भरा है। पहाड़ी के ढालुएं बगलों पर सघन जंगल लगे हैं। किले के आधे दक्षिण भाग में ५ वड़े तालाव हैं। अखीर दक्षिण के पास चितोरिया नामक गोलाकार छोटी पहाड़ी है। किले के भीतर छोटे बड़े ३२ सरोवर हैं। यद्यपि दीवारों के भीतर की बहुत भूमि चट्टानी है, तथापि उत्तरी आधे भाग के अधिक स्थान में ज्वार की खेती होती है। चढ़ाव की सड़क किले के सिरे तक १ मील लंबी है, जिस पर जगह जगह पदलपोल, भैरवपोल, हनुमान-पोल, गणेशपोल, जोरलापोल, लक्ष्मणपोल और रामपोल नामक ७ फाटक हैं; जिनके पास चितौर के मृत बीरों के स्मारक-चिन्ह के निमित्त छत्तरियां बनी हैं। पुराने शहर के सब स्थान उजड़ रहे हैं। दर्शनीय चीजों में से कीर्त्तना और जयस्तंभ नामक २ बुर्ज हैं। किले का क्षेत्रफल ६९३ एकड़ है। इसकी सबसे अधिक लम्बाई (एक दीवार से दुसरी दीवार तक) ५७३५ गज अर्थात ३ ई मील और सबसे अधिक चौड़ाई ८३६ गज है। किले की दीवारों

की छंबाई १२११३ गज अर्थात ७ मील से कुछ कम है।

पूर्व शहर पनाह के समीप ७५ फीट ऊंचा, जिसका व्यास नीचे ३० फीट और सिर के पास १५ फीट है, चौकोना स्तंभ है, जिसको लोग पुराना कीर्वना कहते हैं, जो कीर्तिस्तंभ का अपभ्रंश है। इस टावर अर्थात स्तंभ में नीचे से ऊपर तक संगतराशी का काम और इसमें सैकड़ों मूर्तियां बनाई हुई हैं। कीर्वना-स्तंभ ७ मंजिल का है। इसके भीतर तंग सीढ़ियां हैं। सबसे ऊपर का मंजिल खुद्धा हुआ है, जिस पर बिजुली से नुकसानी पहुंची हैं और घास तथा पौधे जम गए हैं। लोग कहते हैं कि एक जैन महाजन ने इसको बनवाया; दूसरों का कथन है कि खतनी रानी नामक एक स्ली का यह बनवाया हुआ है। यह स्तंभ १० वीं सदी का बना हुआ जान पड़ता है। यहां बंहुतेरे जैन लेख हैं। दक्षिण ओर आगे की भूमि पर कीर्वना से पीछे का बना हुआ एक मन्दिर है।

कीर्तना से दूर दूसरे स्थान पर स्वेत पत्थर से बना हुआ १२२ फीट ऊंचा जयस्तंभ है, इसके प्रत्येक बगळ की चौड़ाई नेव के पास ३५ फीट और गुम्बज के नीचे १७ ई फीट है। चितौर के छुपसिख राणा कुम्भ ने सन १४३९ ईस्वी में माळवा के बादशाह महमूद को जीत कर उस विजय के स्मारक चिन्ह के निमित्त सन १४४२ से १४४९ ई० तक इसको बनवाया। यह ९ मंजिल्प्र है, इसके भीतर की सीढ़ियां कीर्तना की सीढ़ियों से अधिक चौड़ी हैं। भीतर नकाशी में हिन्दुओं के देवताओं की मूर्तियां वनी हैं, नीचे उनके नाम लिखे हुए हैं। उपर वाले २ मंजिल चारों ओर से खुले हुए हैं और नीचे के मंजिलों से अच्छे हैं। जयस्तंभ में नीचे से उपर तक संगतराशी का काम है। पहले गुम्बज को बिजली से नुकसानी पहुंची थी, परन्तु महाराणा स्वरूपसिंह ने नया गुम्बज बनवा दिया। उपर के मंजिल में बड़े लेखों की २ तख्ती हैं। सड़क के पास नीचे के चबूतरे के कोने के समीप एक चौगोसे स्तंभ पर सन १४६८ ई० का सती संबंधी लेख है।

सूर्व्य फाटक के समीप २ वड़े तालाव हैं, जिनके पास राणा कुम्भ का

महल स्थित है। आगे के आंगन के चारो ओर पहरेदारों के लिये कोटिरियां और प्रवेश करने के स्थान पर महराबदार फाटक है। रतनसिंह का महल तेरहवीं सदी की हिन्दू कारीगरी का उत्तम उदाहरण है। उसकी पत्नी रानी पिंचनी का छन्दर महल तालाब की ओर मुख करके खड़ा है। बादशाह अकबर इन महलों में से एक के फाटकों को ले गया, जो अब आगरे के किले में है।

राणा कुम्भ का बनवाया हुआ ऊंचा शिखरदार देवी का मन्दिर है, जिसके निकट उसकी पत्नी मीरावाई का बनवाया हुआ उसी ढाचे का रण-छोर जी (कुष्ण) का मन्दिर है। चितौर में सबसे ऊंचा एक स्थान है, जहां से उत्तम हल्य देख पड़ता है। एक स्थान पर गोमुखी झरना है। दक्षिण-पश्चिम राणा मुकुलजी का बनवाया हुआ पत्थर का नकाशीदार मन्दिर है।

इतिहास—सन १४४ ईस्बी में स्व्यंवंशी कनकसेन राजा हुआ, जिस के कुछ में चितौर राजवंश है। डूंगरपुर, बांसवाड़ा और मतापगढ़ के राजा छोग इसकी शाखा है।

ऐसा प्रसिद्ध है कि एक समय मेवाइ के राजा की गर्भवती पत्नी तीर्थयात्रा को गई थी, पीछे किसी ने राजा को छल से मार डाला। जब लौटते
समय मालिया पहाड़ की गुफा में रानी को पुत्र उत्पन्न हुआ, तब वह कमलावती ब्राह्मणी को अपना पुत्र सौंप कर सती हो गई। कमलावती ने गुफा में
अर्थात गुहा में उत्पन्न होने के कारण उस पुत्र का नाम गोह रक्खा, जिससे
गोह घराना अर्थात गिहोटवंश चला। गोह भीलों के लड़कों के साथ खेलता
और शिकार करता था। भीलों ने शिकार के समय गोह को अपना राजा
पसंद किया। एक भील ने अपनी अंगुली काट उसके रुधिर से गोह को राज
तिलक कर दिया। गोह की आठवीं पीड़ी में नागदत्त हुआ, जिसको भीलों
ने मार डाला, परन्तु कमलावती के वंश के लोगों ने नागदत्त के पुत्र वाप्पा
रावल को बचा लिया।

वाष्पा रावल ने सन ७२८ ई० में चितौर में अपना अधिकार करके

खुरासान, तुर्किस्तान आदि देशों के मुसलमानों को जीता और बहुत राज-कुमारियों से विवाह कर अपने वंश का विस्तार किया। वाप्पा रावल के पीछे गिहोट वंशी १८ राजाओं ने ४०० वर्ष तक कम से चितौर के राज सिंहासन पर बैठ कर राज्य किया। अठारहवें राजा को २ पुत्र थे, जिनमें बड़ा समरसिंह और छोटा सूर्व्यमल था।

समरसिंह ने दिल्ली के राजा पृथ्वीराज की वहन पृथा और कर्म देवी से विवाह किया। वह सन ११९३ ईस्वी में महम्मद गोरी के संग्राम में हपद्वती नदी के तीर अपने शाले पृथ्वीराज के साथ मारा गया। समरसिंह का बड़ा पुत्र कल्यान अपने पिता के साथ मरा। कुम्भकर्ण वीदर चला गया। त्तीसरा पुत्र कमार्ज में गया, जिसके बंशधरों ने गोरखा में जाकर नैपाल राज्य को स्थापन किया। पृथादेवी सती हो गई। कर्मदेवी अपने वालक पुत्र कर्ण को राज सिंहासन पर बैटा कर उसकी रक्षा करने लगी। कुछ दिनों के पीछे उसने कुतुबुद्दीन की सेना को परास्त कर क्षत्री नारी का मभाव दिखा दिया।

कर्ण के देहांत होने पर उसका पुत्र माहुप राजिसहासन के योग्य नहीं था, इसिल्ये झालोर के सर्दार कर्ण के जमाता ने अपने पुत्र को सिंहासन पर बैठाने की इच्छा की, परन्तु चितौर के सर्दारों ने स्व्यंमल के पोते राहुप को राज सिंहासन पर बैठा दिया। राहुप से गिह्नोट वंश सिसोदिया वंश कहाने लगा। सन १२०१ में राहुप ने राणा की पदवी ली, तबसे इस कुल के राजा-गण राव से राणा कहलाने लगे। राहुप के पश्चात क्रम से ९. राजा चितौर के सिंहासन पर बैठे। नवें राजा का पुत्र राणा लक्ष्मणसिंह लड़का था, इसिल्ये उसका चचा भीमसिंह राजकाज करने लगा। भीमसिंह ने सिंहल के बौहान राजा हमीरशंकर की कन्या पश्चिनी से बिवाह किया।

सन १३०३ ई० में बादशाह अलाउदीन ने चितौर पर आक्रमण किया । राजपृतों ने लड़ाई में परास्त होने पर किले का द्वार बंद कर दिया। पित्रनी आदि संपूर्ण रनिवास दुसरी १३०० स्त्रियों के सहित चिता पर जल गई। तब राजपूत लोग किन्नाड़ खोल शत्रुओं से लड़कर मारे गए। राणा लक्ष्मण- सिंह और उसके पुत्र श्रीसिंह भी उसी संग्राम में मरे । बचे हुए राजपूत शर्वलो पर्वत की ओर चले गए। अलाउदीन विजय प्राप्त कर झालौर के सर्दार पालदेव को चितौर का शासक नियत कर अपनी राजधानी को चला गया।

राणा लक्ष्मणसिंह का पुत्र अजयसिंह उस समय दूसरे स्थान पर था। अजयसिंह के ज्येष्ठ स्त्राता अरिसिंह का पुत्र हमीर अपने निनहाल में रहता था, जिसने अजयसिंह के शत्रु एक भील राजा का सिर काट कर उसके निकट रख दिया । अजयसिंह ने पसन्न होकर उस मुंड के रक्त से हमीर के छलाट में राजतिलक दे दिया राणा हमीर ने एक बड़े संग्राम में मुसलमानों को परास्त करके चितौर पर अधिकार कर लिया । हमीर की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र क्षेत्रसिंह चितौर का राणा हुआ।

अजयसिंह के आजिम और छजनसिंह दो पुत्र थे । आजिम की अकाल-मृत्यु हुई । जब हमीर को राजतिलक मिला, तब छजनसिंह दक्षिण में जाकर रहने लगा; जिसके वंश में महाराष्ट्र प्रधान छविख्यात शिवा जी का जन्म हुआ।

हमीर का पुत्र क्षेत्रसिंह शत्रु के हाथ से मारा गया, उसका पुत्र राणा लाक्ष चितौर के सिंहासन पर बैटा । लाक्ष की प्रथम पत्नी से चन्द और रघु-देव और दुसरी पत्नी से, जो मारवाड़ के राजा रणमल की हंसा नामक बहन थी, मुकुल जी नामक पुत्र हुए । राणा लाक्ष के मरने के उपरांत उसकी प्रति-श्रानुसार मुकुलजी ने राज सिंहासन पाया। चन्द अपने छोटा भ्राता मुकुलजी के शुभ कामनार्थ राज काज करने लगा । राणा मुकुलजी के राज्य के समय तैमूर भारतवर्ष में प्रथम आया, जिसके समय मुसलमानों से राणा का एक संग्राम हुआ। यदचिए मुसलमान पराजित हुए, परंतु मुकुल जी मारे गए।

राणा मुकुल के मरने पर कुंभ चितौर का राजा हुआ, जिसका राज्य सन १४६८ ई० तक था। उसने मालवा के राजा महमूद और गुजरात के राजा कुतुवशाह को परास्त किया और विजय के उपरांत चितौर में जयस्तंभ बन-वाया। उस समय मेवाड़ और मारवाड़ राज्यों में परस्पर मित्रता थी, इसलिये राणा कुंभ के राज्य के समय चितौर की वड़ी उन्नति हुई । मेवाड़ राज्य में छोटे बड़े ८४ किले हैं, जिनमें कुंभमेरू मधान है। राणा कुंभ का विवाह मारवाड़ के मैरता के रहने वाला राठौर सर्दार जयमल की पुत्री मीरावाई से हुआ।

मीराबाई का जन्म संवत १४७५ (सन १४१८ई०) में हुआ था। वह बच-पनहीं से गिरिधरलाल (कृष्ण) की मूर्ति की सेवा अर्चना करती थी। मीरा बाई को ऐसी अनन्य भक्ति थी कि अपने पति के ग्रह जाने पर न तो बह किसी का सिखापन मानती और न कुलदेवता की पूजा करती, इससे राणा ने अवसन्त्र हो मीरा को भूतग्रह में पहुँचवा दिया । मीरावाई ने जो कुछ धन संपति अपने पिता के गृह से छाई थी, उससे उसी भूतपहल में एक मन्दिर बनवा कर गिरिधरलाल जी को पथरवाया । वह संतों की जमात जोड़ नित्य तृत्य, गीत, उत्सव, पूजन और कीर्तन कर काल विताने लगी । वह स्वयं तम्बूरा छे नवीन सरस पद रचना कर भगवान के सन्मुख गान किया करती थी। नित्य दूर दूर से साधु महात्माओं की जमात आती। मीरा उन की सेवा टहल बड़े आदर भक्ति से किया करती, परंतु मीराबाई के ऐसे चरित्र से उसके कुटुंब वाले बहुत अपसन्न होते थे । राणा कुंभ ने झालीर के सर्दार की कन्या छीन कर अपना दूसरा विवाह किया और वह कुंभमेर (कमलियर) किले में अपनी वृसरी पत्नी के साथ रहने लगे । मीराबाई गृह से निकल बृन्दावन के तुलसीवन में जा बसी । कुछ दिनों के पीछे वह गोकुल गई और कुछ काल के उपरांत साधु समाज के साथ द्वारिका में जाकर रहने लगी। कुछ समय के पश्चात राणा ने मीराबाई को लिया लाने के लिये अपने पुरोहित को द्वारिका में भेजा । पुरोहित ने द्वारिका में पहुंच मीरा से राणा का संदेशा कह छनाया और कहा कि जब तक तुम नहीं चलोगी, मैं अन जल ग्रहण नहीं करूंगा। उस समय मीराबाई अति घवड़ा कर श्रीरण छोड़ जी के शरण में पहुंच, गदगद हो, पाव में घुंचरू बांघ, हाथों में करताल छे, ईश्वर भक्ति में लवलीन हो छन्दर पद गाती गाती ईश्वर में लीन हो गई। अब तक मेवाड़ प्रदेश में रणछोड़जी के सहित मीराबाई की पूजा होती है। मीरावाई के वनाए हुए पद पश्चिमी भारत में प्रसिद्ध हैं।

राणाकुम्भ के ३ पुत्र थे, — ऊदो, रायमल और स्वर्णमल । ऊदो अपने पिता राणा कुम्भ को मार राज सिंहासन पर बैटा, उसके इस दुष्कर्म से राजपूत सर्दारों ने धीरे धीरे उसका संग त्याग दिया । रायमल उसको दंड देने के लिये उद्यत हुआ, उदो ने शत्रु दमन के लिये राठौर राजा को अजमेर और सांभर का राज्य छोड़ दिया और आबू का राज्य एक सर्दार को दे दिया। उसके उपरांत उसने अपनी सह।यता के लिये दिल्ली के बादशाह को अपनी कन्या देने को कहा; किन्तु दिल्ली के दरबार ग्रह से ज्योंही वह बाहर हुआ कि बिज्जुली के गिरने से पर गया। दिल्ली के बादशाह ने ऊदो के पुत्र जय-पुल और सिंहेसमल को साथ ले रायमल से युद्ध किया, परन्तु वह परास्त हो अपने ग्रह को लौट गया।

इदो की मृत्यु के पश्चात राणा कुम्भ का दूसरा पुत्र रायमल राज सिंहासन पर बैठा। रायमल के ३ पुत्र थे,—संग, पृथ्वीराज और जयमल । संग और पृथ्वीराज सहोदर और जयमल वैमात्रिक स्नाता थे। रायमल के जीवन काल ही में तीनों भाइयों में विवाद उठा। पहले संग और पृथ्वीराज लड़े। एक आंख फूट जाने पर संग ने भाग कर शिवाती नगर के राजपूतों का आश्रम लिया, परंतु परास्त होकर उसको वहां से भी भागना पड़ा पृथ्वीराज संग की खोज में लगा। संग भिक्षक वेष से रहने लगा। करीमवन्द नामक एक सर्दार ने संग में राज-लक्षण वेल अपनी पुत्री से उसका विवाह कर दिया और उसको अपने घर रक्ला।

रायमल ने जब यह इतांत छना, तब पृथ्वीराज को अपने राज्य से निकाल दिया। पृथ्वीराज केवल ५ सवारों सहित गड़वार के अंतर वाली नामक स्थान में चला गया। राणा कुंभ के मरने पर एक मीना सर्दार गड़वार पर अपना अधिकार कर उसकी राजधानी नादोल में रहता था। पृथ्वीराज ने वहां जाकर संग्राम में मीना सर्दार को मार गड़वार पर अपना अधिकार कर लिया। उस समय प्राचीन तक्षशिला अर्थात तोड़ातंक मुसलमानों के अधिकार में हुआ। तोडातंक के राजा राय खरतन की पुत्री तारा अपने पिता के सहित घोड़े पर चढ़ मुसलमानों के साथ लड़ने के कारण राजपूत देश में विख्यात हो गई थी। जयमल उससे बिवाह करने के लिये उसके समीप गया। तारा ने कहा कि तोड़ातंक पर अधिकार करो, तब तुम मुझसे व्याह कर सकते हो। जयमल ने बल से तारा को ले जाना चाहा, परंतु उसके पिता खरचन द्वारा मारा गया।

पृथ्वीराज गड़वार का उद्धार कर फिर अपने पिता का प्रिय हुआ और जयमल के मारे जाने पर तोड़ातंक के उद्धार का संकल्प किया । तारा भी अश्वारूढ़ हो पृथ्वीराज के पीछे चली। दोनों ने मुसलमानों को परास्त कर तोड़ातंक का उद्धार किया । पृथ्वीराज का बिवाह तारा से हुआ । उसके पश्चात स्वर्थमल से पृथ्वीराज के कई युद्ध हुए, अंत में स्वर्थमल परास्त हुआ और देवलिया में जाकर उसने राज्य कायम किया । प्रतापगढ़ के वर्तमान राजकुल उसीके वंशधर हैं।

पृथ्वीराज की बहन का व्याह सिरोही के राजा पातूराव से हुआ । पातूराव पृथ्वीराज की बहन को दुख देता था, इसिछये वह अपनी सेना छे पातूराव को मारने के छिये जा पहुंचा; परंतु पीछे अपनी बहन और बहनोई के क्षमा मांगने पर पृथ्वीराज शत्रुता छोड़ कुछ दिन सिरोही में रह गया । पातूराव ने भोजन में विष देकर पृथ्वीराज को मार डाछा, ताराबाई सती हो गई।

राणा रायमल की मृत्यु होने पर सन १५०९ ई० में उसका ज्येष्ठ पुत्र संग संग्रामिंस के नाम से चितौर के सिंहासन पर बैटा। इसने दिल्ली के बादशाह और मालवा के राजा गयाखदीन को युद्धक्षेत्र में १८ वार परास्त किया था, परंतु सन १५२८ ई० में फतहपुर सीकरी के संग्राम में शिलादित्य के विश्वातघात से सुग़ल बादशाह बाबर से परास्त हुआ। उस समय संग्रामिंस ने प्रतिज्ञा की कि जब तक सुग़लों से बदला न लेंगे, तब तक चितौर न जावेंगे। उस काल से वह वनहीं में रहने 'छगा और कुछ काल के उपरांत बुशारा नामक स्थान में मर गया।

राणा संग्रामिंह अर्थात राणा संग के मरने पर उसकी स्लियों में राज-सिंहासन के लिखे विवाद हुआ। अंत में संग्रामिंह के ७ पुत्रों में से तीसरा पुत्र रतनिंहि चितौर के सिंहासन पर बैटा, जिसने केवल ५ वर्ष राज्य किया। उसने आम्वेर के पृथ्वीराज की कन्या से गुप्त विवाह किया था। बूंदी राज्य के स्व्यंमल सहित उस कन्या का पुनः विवाह हुआ। राणा रतन दंड देने के लिये अहेर के बहाने से स्व्यंमल को बन में ले गया, वहां दोनों परस्पर लड़ कर मर गए।

राणा रतन के पश्चात उसका भाई विक्रमजीत सन १५३४ में चितौर का राणा हुआ। वह वहांके सर्दारों से अन्याय करने छगा। यहां तक कि उसने राणा संग को आश्रय देने वाछे करीमचंद को एक दिन अपने हाथ से पीटा, उसी समय माछवा के मुसळमान राजा ने अपना बदला छेने के छिये चितौर पर आक्रमण किया। सर्दार गण विक्रमजीत को युद्धस्थल में छोड़ कर चितौर की रक्षा करने छगे। मुसलमानी सेना विक्रम को परास्त करके किले की ओर दौड़ी, उस समय राठौर राज की कन्या चितौर की जौहरवाई ने मुसलमानों के दल में प्रवेश कर शत्रुओं को मार बीरनारी का प्रभाव दिखाया था। स्व्यंमल के वंश्वधर प्रतापगढ़ के राजा बाघाजी चितौर की रक्षा के लिये आया था। उसने बूंदी के राजा छरतन के हाथ राणा संग के शिशु पुत्र उदयसिंह को सौप सरदारों सहित मुसलमानों से लड़कर अपने जीवन को विसर्जन किया। चितौर माळवा के राजा के हाथ में गया। उस समय उदयसिंह की माता ने दिल्ली के बादशाह हुमायूँ से सहायता के लिये पार्थना की। बादशाह ने माळवा के राजा से चितौर को छीन कर राजपूतों को छौटा दिया।

विक्रमजीत फिर सिंहासन पर बैंड सरदारों से अत्याचार करने छगा । उसके उपरांत सरदारों ने पृथ्वीराज की उपपत्नी के पुत्र बनबीर की चितौर के सिंहासन पर बैंडाया । बनबीर ने सिंहासन पर बैंडतेही अपने हाथ से विक्रमजीत को मार डाला । चितौर में हाहाकार पड़ गया । उदयसिंह की धाय पन्ना ने उदयसिंह को एक टोकरी में रक्ख कर पत्र पल्लव से ढ़ांप एक नाई द्वारा पुर से बाहर कर दिया और अपने छोटे बालक को उदयसिंह के विछोने पर सोला रक्खा । बनबीर ने उदयसिंह के घर पहुंच उस बालक को उदयसिंह जान कर उसकी छाती में छूरी मारी। लड़का रोदन करके मर गया। पन्ना ने उदयसिंह की माणरक्षा के लिये अपने लड़के के मरने का शोक प्रकाश नहीं किया।

पन्ना उदयसिंह को लेकर वहांसे भागी और कमलियर के सरदार आशाशाह के पास पहुंची। आशाशाह ने अपने भाई का पुत्र कहकह उदय सिंह को कमलियर के किले में रक्खा। पीछे यह द्वांत प्रकाश होने पर भवाड़ के सरदार लोग कमलियर में पहुंचे। संगर्फ के सरदार अखिलराब की कन्या से उदयसिंह का न्याह हुआ। सरदारों ने एकत्र होकर इनको सिंहासन पर बैठाने के लिये चितौर पर आक्रमण किया। बनबीर दक्षिण को भाग गया, उसीके बंश से नागपुर के भोंसला वंश की सृष्टि हुई।

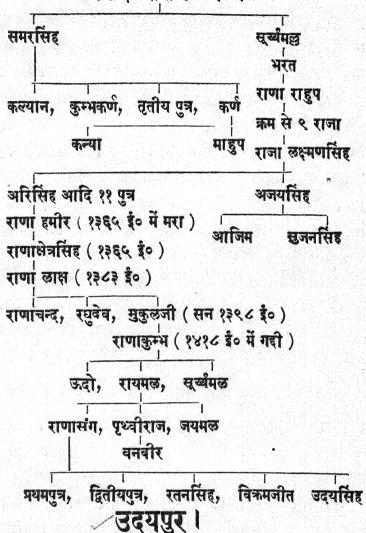
संवत १५९७ (सन १५४१ ई०) में उदयसिंह वितौर के सिंहासन पर वैठा। उसके पीछे वादशाह अकवर ने चितौर पर आक्रमण किया। उस लड़ाई में अकवर के हाथ उदयसिंह क़ैंद हुए। उदयसिंह की उपपत्नी बीरा मैवाड़ के सरदारों को धिकार वे बहुतेरे शत्रुओं को मार उदयसिंह को छीन लाई। उदयसिंह अपने सरदारों की निन्दा और पत्नी की प्रशंसा करने लगे, इससे सरदारों ने लज्जित हो बीरा को मार डाला।

अकवर की दूसरी चढ़ाई के समय सन १५६८ में उदयसिंह चितौर से भाग गए, परन्तु प्रतिष्ठित राजपूत छोग चितौर की रक्षा के छिये टिड्डियों की भांति युद्धस्थल में आ पहुंचे, जिनमें बिदनोर के राजा रायसिंह, चंदावत बंश से उत्पन्न जयमल और कैलवार के राजा फताजी थे। जब फताजी का पिता मारा गया, तब उन की माता कमलावती ने अपने पुत्र फताजी, फता की स्त्री और अपनी युवती कन्या को युद्ध के सामान से सज्जकर उनको साथ ले युद्ध यात्रा की। यह देख अन्य राजपूतों की स्त्रियां भी उनके पीछे लगीं। फताजी की माता, वहन और स्त्री ने बहुतेरे शत्रुओं को मारने के उपरांत जब अपनी रक्षा का दूसरा उपाय नहीं देखा, तब अपनी अपनी तलवार से अपने को मार युद्ध भूमि में मर गई। उस समय राजपूतों की ८००० स्त्रियां अग्नि में जल गई। राजपूत लोग बड़ी लड़ाई के बाद मुसलमानों के हाथ मारे गए। अकबर ने अपने हाथ की गोली से जयमल को मारा। चितौर अकबर के अधिकार में हुआ। इसी युद्ध में मरे हुए राजपूतों का भूषण और चितौर का रत्न एकत्र होने पर ७४॥ मन हुआ था, तभीसे सब लोग उतने रत्न चोरी के तिलाक का चिन्ह लिफाफे पर ७४॥ का अंक लिखते हैं। अकबर चितौर से अनेक बस्तु और दो फाटक आगरे में ले गया, जो किले में अब तक मच्छीमवन के पास है। उसने पत्थर के दो हाथियों पर जयमल और फताजी की प्रतिमा बनवा कर आगरे के किले में रक्खा, जिनके अंग भंग हो गए हैं। अब वे दिल्ली के जादूबर के द्वार पर रक्खी हुई हैं।

उदयसिंह ने चितौर से भागने के उपरांत मेवाड़ की वर्तमान राजधानी उदयपुर को बसाया । उदयपुर के वर्तमान राणा उदयसिंह ही के बंग्नधर हैं (आगे का इतिहास उदयपुर में देखों)।

चितौर के योद्धाओं में वाप्पारावल, समरसिंह, हमीर, चंद, राणा कुंभ पृथ्वीराज, और संग (संग्रामसिंह) बहुत प्रसिद्ध हुए। चितौर राजवंश नीचे लिखे हुए कम से हैं।

बाप्पा रावछ क्रम से १८ राजा ४०० वर्ष में



+ चितौर के स्टेशन से पश्चिम थोड़ा दक्षिण उदयपुर के समीप दीवारी तक द् मिळ की रेलवे लाइन का काम जारी है। चितौर से एक पहाड़ी सड़क उदयपुर को गई है। राजपूताने प्रदेश के दक्षिण हिस्से में समुद्र के जल से २०६४ फीट ऊपर अर्वली पर्वत के पूर्व मैवाड़ के देशी राज्य की राज्धानी उदयपुर एक छन्दर छोटा शहर है। यह २४ अंश ३५ कला १९ विकला

उत्तर अक्षांश और ७३ अंश ४३ कछा २३ विकला पूर्व देशांतर में स्थित है।

इस साल की जन-संख्या के समय उदयपुर में ४६६९३ मनुष्य थे; अर्थात
२४८७३ पुरुष और २१८२० क्लियां। जिनमें २८३१७ हिन्दू, ९४२३ मुसलमान, ६३२६ जैन, २५२७ एनिमिछिक, ९४ कुस्तान और ६ पारसी थे।
मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारत में ८३ वां और राजपूताने में ६ वां शहर है।

चाहर के चारों ओर दीवार है, जिसके भीतर दक्षिण ओर कई बाटिका
लगी हैं। शहर के पश्चिम ओर एक झील, उत्तर और पूर्व ओर खाई है (खाई
में झील से पानी आता है) और दक्षिण ओर एकलिंगगढ़ की पहाड़ी शहर
की किळाबन्दी करती है। शहर के ४ फाटक प्रधान हैं,—उत्तर हाथीपोल,
दक्षिण खेरवारा, पूर्व सूर्व्यपोल, (एक ओर दिल्ली फाटक) और झील की
ओर पश्चिम ३ मेहराबी बाला त्रिपोलिया नामक पानी का फाटक है। शहर
से बाहर किलों की जंजीर है।

शहर में कई देवमन्दिर हैं, जिनमें जगदीश का मन्दिर सबसे बड़ा और खन्दर है और खियों का एक अस्पताल और नया विक्टोरिया हाल है, जो जुबली के समय में बना । इसमें ३ कमरे हैं, जिनमें एक मेवाड़ की पैदावार का अजायब खाना, दूसरा लाइब्रेरी और तीसरा विद्यालय है। उदयपुर में थोड़ी तिजारत होती है।

हाथीपोल से प्रधान बाजार होकर महल को जाना चाहिए, दिल्ली फाटक अथवा स्टब्येंगेल से बाजारों को होते हुए गुलाबबाग को जाना चाहिए, जहां तालाब, सड़क और बाग देखने लायक हैं। गुलाब बाग होकर दूध तालाब को जाना चाहिए, जो पिछौला झील की एक बाखा है।

शहर के पश्चिम २ ई मील लंबी और १ ई मील चौड़ी पिछौला झील है, जिसके मध्य में जगनिवास और जगमन्दिर नामक दो महल हैं, जिनको १७ वीं सदी के मध्य माग में राणा जगतिसह ने बनवाया। जगनिवास ४ एकड़ भूमि पर माबुंल से बना हुआ है। जगह जगह दीवारों पर पश्चीकारी के काम बने हैं और फूलबाग, हम्माम, झरने, नारंगी की कुंजें इत्यादि हैं। शाहजहां ने अपने पिता जहांगीर से बाग़ी होकर कुछ दिन जगमन्दिर में निवास किया

था। वहां पत्थर का एक स्थान शाहजहां के यादगार के लिये है। झील में महा-राणा की कई नौका रहती हैं।

√ झील के किनारे पर शाही महल है। झील के पास का हिस्सा नया है। यह महल जमीन से १०० फीट ऊंचा चौकोने शकल का ग्रेनाइट पत्थर और मार्बुल से बना है। इसके बगलों पर अठपहले गुम्बजदार टावर हैं। पूर्व ओर संपूर्ण लम्बाई में महल के अगवास की प्रधान अटारी है, जिसके नीचे मेहराबों की ३ पंक्तियां हैं। मेहराबी दीवार की ऊंचाई ५० फीट है। गणेशदार से महल में प्रवेश करना होता है। भीतर बाड़ीमहल, शीशमहल, (जिसमें शीशे के काम हैं) और शंभुनिवास हैं। झील से ३ मील पूर्व महासती स्थान में मृत महाराणा जलाए जाते हैं, यहां ऊंची दीवार के घेरे में उन लोगों की छत्तियां बनी हैं, उत्तम दक्ष लगे हैं और उन लोगों के साथ जली हुई सिबयों की मूर्तियां हैं। इनमें दूसरे संग्रामसिंह की छत्तरी बड़ी और स्वूबस्रत है। उदय-सिंह के पोते अमरसिंह की भी छत्तरी अच्छी है।

उदयपुर-राज्य—यह मेवाड एजेंसी के पोछिटिकछ छपिर-टेंडेंट के आधीन राजपूताने में एक प्रसिद्ध देशी राज्य है। इसके उत्तर अजमेर और मेरवाड़ा का अंगरेजी देश; पूर्व बूंदी, कोटा, सिंधिया राज्य के नीमच जिले, टोंक राज्य का निवहरा जिला और प्रतापगढ़ राज्य; दक्षिण वांसवाड़ा, ढूंगरपुर और प्रतापगढ़ राज्य; दक्षिण-पश्चिम गुजरात प्रदेश में महिक्छा राज्य और पश्चिम अरवली पहाड़िया हैं, जो मारवाड़ और सिरोही राज्यों से इसको अलग करती हैं। राज्य की सबसे अधिक लम्बाई उत्तर से दिक्षण तक १४८ मील और सबसे अधिक चौड़ाई पूर्व से पश्चिम तक १६३ मील और इसका क्षेत्रफल १२६७० वर्गमील है। राज्य से लगभग ३८ लाख रुपये मालगुजारी आती है।

राज्य के उत्तरी और पूर्वी भाग में खुळा हुआ नीचा ऊंचा देश है । दक्षिण और पश्चिम का देश चट्टानी पहाड़ियों और घने जंगलों से छिपा हुआ है। राज्य के पूर्वी भाग में छोहा की छोटी खान है । उदयपुर शहर से २४ मील दक्षिण जावर में टीन और जस्ते पहिले निकाले जाते थे, परन्तु अब खानों में काम नहीं होता है। तांबे और सीसे भी कई जगहों में मिलते हैं। भिलवाड़ा देश में वहुमूल्य पत्यरों में से रक्तमणि निकलती है। राज्य की प्रधान नदी बनास है। राजधानी के दक्षिण और पश्चिम में अनेक धारा निकलिती हैं, जिनमें से बहुतेरी महिकटां होकर दक्षिण जाने के उपरांत सावरमती

राज्य में बहुतेरी झील औरबहुतेरे सरोवर हैं। इन में कई एक झील बहुत बड़ी हैं, जिनमें सबसे उत्तम देवर झील हैं, जिसको जयसमुद्र भी कहते हैं। उसके पश्चात राजनगर, जिसको राजसमुद्र भी कहते हैं, और उदय-सागर हैं। देवर झील उदयपुर शहर से लगभग २० मील दक्षिण-पूर्व है। यह कदाचित पृथ्वी में बनवाई हुई जितनी झील हैं, उन सब से बड़ी है। झील लगभग ९ मील लम्बी, ५ मील बौड़ी और २१ वर्गमील के बीच में फैली हुई है। इसका पक्का बांध १००० फीट लम्बा और ९५ फीट ऊंचा है, जिसकी चौड़ाई नेव पर ५० फीट और सिरे पर १५ फीट है। दूसरी राजसमुद्र झील ३ मील लम्बी और १३ मील चौड़ी राजधानी से २५ मील उत्तर कांक-रौली के पास है, जिसके बनने में ७ वर्ष लगे थे और कहा जाता है कि इसके बनवाने में ९६००००० रुपये खरच पड़े। इसके पानी के रोकाव के लिये २ मील लम्बा वांध बना है, जो बहुतेरे स्थानों में ४० फीट ऊंचा है। झील के दिक्षण किनारे पर द्वारिकाधीश का मन्दिर है। कांकरौली में श्रीनाथद्वारा के गोस्वामी का मकान है। तीसरी उदयसागर झील राजधानी से ६ मील पूर्व २३ मील लम्बी और १३ मील चौड़ी है।

इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय उदयपुर राज्य में १८३२४२० मनुष्य थे। सन १८८१ में ७ कसने और ५७१५ गांनों में १४९४२२० मनुष्य थे; अर्थात १३२१५२१ हिन्दू, ७८१७१ जैन, ५१०७६ भील ४३३२२ मुसलमान और १३० क्रस्तान। हिन्दू और जैनों में १२७०८६ राजपूत, ११४०७३ ब्राह्म-ण, १०४८७७ महाजन, ७०६१० जाट थे। राजपूतों में ५८७५१ सीसोदिया राजपूत थे। आदि निवासी पहाड़ियों पर हैं, अथीत पश्चिमोत्तर मेयर, दक्षिण भील और पूर्वोत्तर मीना जाति।

उदयपुर राज्य में भिलवाड़ा (जन-संख्या सन १८९१ में १०३४३), चित्तौंड़गढ़ (जन-संख्या सन १८९१ में १०२८६), नाथद्वारा और कांकरौली प्रसिद्ध बस्ती हैं।

मैदान में वसीत में कपास, तेल के बीज, ज्वार, बाजरा और मकई; जाड़े की ऋतु में गहूं, ऊख, पोस्त और तंबाकू बोए जाते हैं।

एक सड़क नसीराबाद से उदयपुर राज्य होकर नीमच छावनी को गई है। एक पक्की सड़क राजधानी से निवहेरा में जाकर नसीराबाद वाली सड़क में मिली है। एक सड़क राजधानी से दखरी घाटी तक वनाई गई है, जो राजनगर होकर ४० मील और अरबली रेंज होकर ७५ मील है। इस रास्ते के बनने से पहिले अरबली पहाड़ियां गाड़ियों के लिये अगम थीं। एक पक्की सड़क उदयपुर से मेवाड़ भील सेना के सदर स्थान खरबारा छावनी को गई है। रेलवे शाखा राज्य के पिश्वमी भाग होकर जाती है।

राज्य का फौजी बल ६२४० सवार, १५१०० पैदल, किले की सब पुरानी तोपों के साथ ४६४ तोपें और १३३८ गोलंदाज हैं।

जदयपुर राजधानी से ८० मील पूर्व कनेरा गांव हैं, जहां कंदरा के नीचे शुकदेवजी का मन्दिर है, जिसके निकट के एक छोटे कुण्ड से कुछ गरम पानी पतली धार से बहता है। यहां वर्ष में एक मेला होता है।

उदयपुर राज्य की पश्चिमी सीमा के निकट सदी घाटी में रामपुरा एक बस्ती है, जिसमें जैन तीर्थंकर पारसनाथ के पत्थर के र छन्दर मन्दिर बने हैं, जिनको छोग कहते हैं कि राणा कुम्भ के राज्य के समय सन १४४० ई० में धर्मसेट ने ७५ छाख रुपये के खर्च से बनवाया।

छोटा मन्दिर लंबा चौकोना है, जिसमें एक फाटक है; बड़े मन्दिर के बाहर का घेरा २६० फीट लंबा और २४४ फीट चौड़ा है । चारों बगलों में ४६ कोटरियां हैं। प्रत्येक कोटरी में पारसनाथ की प्रतिमा है। घेरे का दरवाजा पश्चिम बगल में है, जिसके भीतर तीन मंजिला गुम्बज है। आंगन के मध्य में लगभग ४२० स्तंभ लगा हुआ मंडप है, जिसके हर कोने के स्थान में पारसनाथ की प्रतिमा है। मंडप के मध्य में छन्दर नकाशी किया हुआ प्रधान मन्दिर है; इसमें ४ द्रवाजे हैं, प्रत्येक द्रवाज़े के सामने मनुष्य के समान बड़ी स्वेत मार्चुल की पारसनाथ की एक मूर्ति है। चैत्र और आश्विन मास में यहां मेला होता है और १० हजार से अधिक यात्री आते हैं।

एक छिंग जी का मंदिर चदयपुर राजधानी से १२ मील उत्तर एक घाटी में स्वेत मार्बुल का बना हुआ एक लिंगजी का विशाला मन्दिर है। श्विवर्लिंग के चारों ओर एक एक मुख है। मन्दिर के पश्चिम प्रधान दरवाजे के निकट बैल के समान बड़ा एक पीतल का नन्दी और चांदी जड़ा हुआ द्सरा एक नन्दी है। आस पास कई दूसरी वेबमूर्तियां हैं। मन्दिर के आगे छन्दर आंगन है। एक लिङ्ग जी मेवाड़ के राणाओं के ईष्ट्रवेव हैं। इनके शृंगार के सामान और भूषण कई लाल रूपये के खर्च से बने हैं। राणाओं की दी हुई भूमि के अतिरिक्त राज्य से २४ गांव एक लिङ्ग जी को अर्थण किए गए हैं। एक लिङ्ग शिव की पूजा का अधिकार राणाओं को और रावल जी (पुजारी) को है। मन्दिर के पास बस्ती है।

्छोग कहते हैं कि एकछिङ्ग जी के मन्दिर की स्थापना मैवाड़ राज्य के आदि पुरुष बाप्पा रावछ के समय से हैं। पहली मूर्ति छिङ्गकार थी, जो हूंगरपुर राज्य की ओर से इन्द्रसागर में पधरा दी गई और वर्तमान चतुर्मुखी मूर्ति स्थापित हुई। १५ वीं सदी में चित्तीर के महाराणा कुंभ ने एकछिङ्ग जी के मन्दिर का जीणोंद्धार करवाया।

पहाड़ियों के मध्य में एकलिङ्गजों के मन्दिर से तीन चार सौ गज दूर और १०० फीट की उंचाई पर एक खन्दर झील है, जिसके पास बहुतेरे मन्दिर बने हैं।

्र इतिहासन-उदयपुर के राणा स्वयंवशी सिसोंदिया राजपूत हैं और भारतवर्ष में सबसे बड़े दर्जे के राजपूत कहे जाते हैं। उदयपुर के राणाओं के समान भारतवर्ष के कोई राजा ने मुसलमानों के आक्रमण की रोकावट दिलेरी से या बहुत दिनों तक नहीं की।

सन १५६८ ई० में जब अकबर ने चितौर को लेलिया, तब उदयसिंह ने चितौर से भाग कर उससे ६० मील पश्चिम-दक्षिण पहाड़ियों के बीच उदयपुर को बसाया, जहां उन्होंने पहलेहीं से एक झील बना रक्ली थी, जो उदय-सागर करके प्रसिद्ध है।

सन १५७२ ई० में राणा उदयसिंह के मरने पर उनके खप्रसिद्ध पुत्र राणा प्रतापसिंह उत्तराधिकारी हुए, जो बार बार परास्त होने पर भी शत्रुओं की आधीनता का अनादर करते रहे। सन १५७७ में बादशाह अकबर के सेनापति महब्बतलां ने उदयपुर पर अधिकार कर लिया, राणा प्रतापसिंह उजाड़ देश में भाग गए; उसके पश्चात राणा प्रतापसिंह ने कुछ रुपया जमा करने के उपरांत इधर ज्यर फिरते हुए अपने पक्ष-पातियों को इकट्टा किया और सन १५८६ में अचा-नक आकर राजकीय सेनाओं को काट डाला। उन्होंने थोड़े परिश्रम में शीघ ही संपूर्ण मेवाड़ को ले लिया और अपनी मृत्यु के समय तक निवित्र अपने आधीन रक्खा। सन १५९७ में प्रतापसिंह के वेहांत होने पर उनके प्रतापशाली पुत्र राणा अमरसिंह उत्तराधिकारी हुए, जिन्होंने जहांगीर की सेना को दो बार परास्त किया; परंतु सन १६१३ में वह परास्त होकर जहांगीर के आधीन हुए। राणा अमर्रासह का अहंकारी आत्मा पराधीनता को नहीं सह सका। राणा सन १६१६ में अपने पुत्र कर्ण को राज्यभार सौंप कर एकांत वास करने लगे और सन १६२१ में मृत्यु को पाप्त हुए। राणा कर्णसिंह ने ७ वर्ष राज्य किया जनकी मृत्यु होने पर उनके पुत्र राणा जगतसिंह राजसिंहासन पर बैंटे, इन्ही के राज्य के समय पिछौछा ता<mark>लाब में जगमन्दिर और जगनिवास</mark> के महल बने। राणा जगतसिंह के देहांत होने पर सन १६५४ में उनके पुत्र सप्रसिद्ध बीर राणा राजसिंह उत्तराधिकारी हुए, जिन्हों ने सन १६६१ के अकाल में कांकरौली के तालाब का काम आरंभ फिया, जो उनके नाम से राजसमुद्र नाम से प्रसिद्ध है। सन १६८१ में राजसिंह की मृत्यु होने पर उनके पुत्र राणा जयसिंह को राजतिलक मिला, जिन्होंने २० वर्ष पर्यंत निर्विध राज्य किया और मगरे में जयसमुद्र नामक बहुत बड़ा तालाब बनवाया। सन १७०० इं० में जयसिंह की मृत्यु होने पर उनके पुत्र दूसरे अमरसिंह उत्तराधिकारी हुए। सन १७१६ में राणा अमरसिंह के वेहांत होने पर राणा संग्रामसिंह उत्तराधिकारी हुए, जिनके समय में सुग़ल वादशाह का बल जल्दी से घटा और महाराष्ट्रों ने मध्य भारत में लूट पाट आरंभ किया। संग्रामसिंह के उत्तराधिकारी राणा जगतसिंह हुए। सन १७३६ में वाजीराव पेशवा ने राणा के साथ संधि की. जिसके अनुसार राणा १६०००० रुपया चौथ देने के छिये छाचार हुए। सन १७५२ में राणा जगतसिंह के मरने पर उनके पुत्र प्रतापसिंह राज्याधिकारी हुए, जिनके ३ वर्ष की हुकूमत में महाराष्ट्रों ने मेवाड़ को लूटा । प्रतापिसह के पुत्र राणा राजिसंह ने ७ वर्ष हुकूमत किया । उनकी मृत्यु होने पर उनके चचा राणा उरसीसिंह सन १७६२ में उत्तराधिकारी हुए। उरसीसिंह के मारे जाने पर उनके पुत्र राणा हमीर गही पर बैठे। सन १७७८ में राणा हमीर की मृत्यु होने पर उनके भाई राणा भीमसिंह को राज्य मिळा । उनके राज्य के समय सन १८१७ तक सिंधिया, होलकर और पिंडारिये समय समय पर मेवाड़ में लूट पाट करते रहे। सन १८१७ में अंगरेजी गवर्नमेंट के साथ उदयपुर की संधि हुई।

सन १८२८ में महाराणा भीमसिंह के वेहांत होने पर उनके एकछोते पुत्र महाराणा युवनसिंह को राजितछक मिछा। जब युवनसिंह सन १८३८ में निःपुत्र मर गए, तब उस कुछ के समीपी वारिस बगोर के प्रधान सरदार-सिंह उदयपुर के सिंहासन पर बैठे। सन १८४२ में उनकी मृत्यु होने पर उनके छोटे भाई महाराणा स्वरूपसिंह राज्या धिकारी हुए, जिनकी मृत्यु के पश्चात सन १८६१ में उनके भतीजे और गोद छिए हुए पुत्र अंभुसिंह उत्तरा धिकारी हुए। महाराणा शंभुसिंह के मरने पर सन १८७४ में उनके चचेरे भाई महाराणा सज्जनसिंह जी० सी० एस० आई० उदयपुर के सिंहासन पर बैठे जिन्हों ने दो तीन बागों को मिछाकर 'सज्जन बिछास ' बाग बनवाया। महाराणा सज्जनसिंह सन १८८४ में २४ वर्ष की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त महाराणा सज्जनसिंह सन १८८४ में २४ वर्ष की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त

हुए, जिन के उत्तराधिकारी उदयपुर के वर्तमान नरेश महाराणा ससर फ़तहिं इहादुर जी० सी० एस० आई० ४२ वर्ष की अवस्था के हैं। उदयपुर के महाराणाओं को अंगरेजी गर्वनमेंट की ओर से २१ तोपों की सलामी मिलती है।

श्रीनाथद्वारा।

उदयपुर शहर से २२ मील उत्तर कुछ पूर्व नई रेलवे सड़क से पश्चिम बनास नदी के दिहने किनारे पर श्रीनाथद्वारा एक कसवा और वल्लभ-संप-दाय के वैष्णवों का प्रधान तीर्थस्थान है। पूर्व दिशा में पहाड़ियों की पीट से जहां चौपाए चरते हैं, पश्चिम बनास के तीर तक पवित्र स्थान है; इसमें कोई मनुष्य जीवहिंसा नहीं कर सकता।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय श्रीनाथद्वारा कृसवे में ८४५८ मनुष्य थे, अर्थात ७९०६ हिन्दू और ५५२ मुसलमान।

यहां श्रीनाथजी का उत्तम मन्दिर बना हुआ है और नित्य राग भोग की बड़ी तय्यारी रहती है। मन्दिर बछम संप्रदाय के गोस्वामियों के अधि-कार में है, जिनके शिष्य धनी महाजन छोग अधिक होते हैं; जो अपने व्यो-पार से कुछ अंश निकाछ कर भारत-वर्ष के प्रत्येक विभागों से यहां बहुत क्ष्पये भेजते हैं। श्रीनाथद्वारे में बहुतेरे यात्री आते हैं। कार्तिक शुक्र १ को यहां के अन्नकृट की तय्यारी देखने योग्य होतो है। यहांके वर्तमान गोस्वामी श्रीबाछकुष्णछाछजी हैं।

मदरास हाते—तैर्लंग देश के कांकरवल्ली गांव में भारद्वाज गोत्र तैलंग ब्राह्मण लक्ष्मणभट्टजी रहते थे। उन्होंने एक समय काशी-यात्री की। विहार प्रदेश के चम्पारण्य (चम्पारन) में चौरा गांव के निकट उनकी प्रती इल्लमगारू के गर्भ से सम्बत १५३५ (सन १४७८ ई०) वैशाष बदी ११ को श्रीवल्लभाचार्च्य जी का जन्म हुआ। इनके वड़े भाई का नाम रामकृष्ण भट्ट और छोटे का रामचन्द्र भट्ट था। बल्लभाचार्च्य जी ने काशी के पंडित माधवानंद तीर्थ, त्रिवंडी से विद्याध्ययन किया। आचार्च्य जी सम्बत १५४८ में

दिग्विजय को वले और पंडरपुर, त्रचम्बक, उज्जैन होते हुए ब्रज में आए। इसके पश्चात वह कई महीनों तक ब्रज में रह कर सोरों, अयोध्या और नैमिबारण्य होकर काशीजी पहुंचे और वहां से गया और जगन्नाथजी होते हुए
फिर दक्षिण चले गए। इस प्रकार से संवत १५५४ (सन १४९७ ई०) में
उन्होंने अपना पहला दिग्विजय समाप्त किया और दूसरे दिग्विजय में ब्रज के
गोबर्द्धन पर्वत पर श्रीनाथजी का स्वरूप पगट करके उनको स्थापित किया।
श्रीबल्लभावार्च्य जी ने ३ बार पर्चंटन करके सारे भारतवर्ष में वैष्णव मत फैला
कर सम्वत १५८७ (सन १५३० ई०) के अषाह छदी २ को काशीजी में
अपने शरीर का बिसर्जन किया। इनके बड़े पुत्र श्रीगोपीनाथजी और छोटे
पुत्र श्री बिट्ठलंगाथजी थे। गोपीनाथजी के प्रत्र प्रक्षोतमजी से आगे बंश
नहीं बढा, परंतु बिट्ठलजी के ७ प्रत्र थे, जिनमें से बड़े गिरधरजी और छोटे
यदुनाथजी का बंश अब तक वर्तमान है।

श्रीनाथजी की मूर्ति पहिले ब्रज के गोकुल में थी। लगभग सन १६७१ १० में जब औरंगजेब ने श्रीनाथजी के मन्दिर को तोड़ने की इच्छा की, तब उदयपुर के महाराणा राजसिंह ने श्रीनाथजी की मूर्ति को अपने राज्य में छाकर इस स्थान पर स्थापित किया और यहां कसवा बस गया।

सत्रहवां अध्याय।

(राजपूताने में) कोटा, बूंदी, (मध्य भारत में) नीमच छावनी, (राजपूताने में) झालरापाटन, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, (मध्यभारत—मालवा में) जावरा और रतलाम।

कोटा।

वित्तौर के रेलवे स्टेशन से लगभग ७० मील पूर्व नसीरावाद से सागर

जाने वाली सड़क के निकट चंबल नदी के वाएं किनारे पर राजपूताने में देशी राज्य की राजधानी कोटा एक कसवा है, जो २५ अंश १० कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ५२ कला पूर्व देशांतर में स्थित है।

सन १८९१ की जन-संख्या के समय कोटा में ३८६२४ मन्ष्य थे; अर्थात २०००५ पुरुष और १८६१९ स्त्रियां। जिनमें २८१२३ हिन्दू, ९८०६ मुसल-मान, ४६४ जैन, १७८ सिक्ख और ५३ क्रस्तान थे। कसवे में कई एक मस-जिद, १ अस्पताल, १ जेल, १ स्कूल और कसबे के पूर्व किशोरसागर नामक बनाई हुई एक झील है जिससे सिंचाव का काम होता है। कोटा कसबे में सैक-ड़ों देवमन्दिर हैं, जिनमें मधुरियाजी के कई एक मन्दिर प्रधान हैं। इनके खर्च के लिये कोटा के महाराव की ओर से बड़ी जागीर लगी है। मन्दिरों में भग-बान के भोगराग की भारी तैयारी रहती है।

कोटा राज्य—यह राज्य राजपूताने में कोटा एजेंसी के पोलिटिकल सुपिटेंडेंट के आधीन है । इसके उत्तर और पिश्रमोत्तर चंबल नदी, जो बूंदी राज्य से इसको अलग करती हैं; पूर्व ग्वालियर राज्य, टोंक का छपरा जिला और झालावार राज्य का हिस्सा; दिशण मक्दंदरा पहाड़ियां और झालावार राज्य और पश्चिम उदयपुर राज्य है। राज्य का क्षेत्रफल ३७९७ वर्गमील है। इसकी मालगुजारी सन १८८१—८२ ईं० में २९४१९७० रूपया थी।

कोटा को दक्षिण सीमा पर पहाड़ियों की पंक्ति है, जो झालावार राज्य से इसको अलग करती है। कोटा का राज्य बूँदी राज्य की शाला है। दोनों राज्य मिलकर हाड़ावती कहलाता है, क्योंकि दोनों के राजा हाड़ा राजपूत हैं।

सन १८९१ की जन-संख्या के समय कोटा राज्य में ५२६२६० मनुष्य और सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ५१७२७५ मनुष्य थे, अर्थात ४७ ९६३४ हिन्दू, ३२८६६ मुसलमान, ४७५० जैन, और २५ क्रस्तान। हिन्दू और जैनों में ४८८८२ चमार, ४६९२५ मीना, ४३४६९ धाकर, ४३४५८ ब्राह्मण, ३३४८८ गूजर, २०७१७ बनिया, १६७७३ बलाई, १५२५५ राजपूत, ८८०१ भील थे।

कोटा के महाराव को १५००० पर्यंत सेना रखने का अधिकार है। इनको २ मैदान की और ९० दूसरी तोपे हैं।

इतिहास-तन १६२५ के लगभग बूंदी के राव रतन के दूसरे पुत्र माधवलिंह को कोटा राज्य दिया गया। माधवराव ने राजा की पदवी लेकर कई वर्षी तक राज्य किया। उनके सबसे बड़े पुत्र मकुन्दसिंह उत्तराधिकारी हुए, जो अपने ४ भाइयों के साथ शाहजादे आलमगीर से उजैन में छड़े। उनके छोटे भाई किशोरिसंह के अतिरिक्त सबके सब मारे गए। मकुन्दिसंह के पुत्र राजा जगतसिंह राजा हुए। १८ वीं सदी के आरंभ में जब घरेऊ झगड़ों से राज्य कमजोर हो चुका था, जयपुर के राजा और महाराष्ट्रों ने इस पर आक्रमण किया और कोटा के राजा से खिराज देने को कबूल करवाया। १९ वें शतक के पारंभ में केवल दीवान जालियसिंह की चतुरता से कोटा तबाही से बच गया, जिसके हाथ में महाराव उमेदसिंह ने राज्य भार देदिया था। जालिमसिंह ने ४५ वर्ष में कोटा को राजपूताने में सबसे अधिक उन्नति वाले और बली राज्यों में से एक के मस्तवे को बना दिया। उसने अंगरेजी सरकार से मिलकर पिंड़ारियों को दवाया। सन १८१७ में अगरेजी गवर्तमेंट के साद जालिमसिंह से संघि हुई। जालिमसिंह की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र राज्य करने के योग्य नहीं था, इसलिये सन १८३८ में कोटा के प्रधान अर्थात महाराव की अनुमति सै जालिमसिंह के संतानों के लिये झालावार राज्य अलग कर दिया गया। सन १८५७ के वळारे में झाळावार और कोटा की फौज बागी हुई जिन्होंने, पीलिटिकल एजेंट ओर उसके २ लड़कों को मार दिया। महाराव ने उनके बचाने में सहायता नहीं की इसिछिये उनकी सलामी १७ तोपों से १३ तोपों की करदी गई। सन १८६६ में महाराव दूसरे छत्रज्ञाः लिसंह अपने पिता के स्थान पर कोटा के राजिसंहांसन पर बैंटे, जिन्होंने अपनी १७ तोपों की सलामी फिर पाई। इनकी मृत्यु होने के पश्चात कोटा के वर्तमान बरेश महाराव उमेदिसंह बहादुर, जिनकी अवस्था १८ वर्ष की है, कोटा की गदी पर बैटे । राजकुल हाड़ाचोहान राजपूत है।

कोटा के नरेश इस कम से हैं—राव माधविसह सन १५७९ ई०, राव मकुन्दिसह सन १६३० ई०, राव जगतिसह सन १६५७ ई०, राव केशविसह १६६९ ई०, राव रामिसह सन १६८५ ई०, राव भीमिसह सन १७०७ ई०, महाराव अर्जुनिसिह सन १७१९ ई०, महाराव दुर्जनशाल, महाराव अजितिसिह (विष्णुसिह के पोते), महाराव क्षत्रसाल, महाराव गुमानिसिह सन १७६५ ई० में अपने भाई लत्रसाल की गदी पर बैंटे, महाराव उमेदिसह सन १७७० और महाराव किशोरिसिह सन १८१९ ई०। (इनके पश्चात दूसरे)।

/ बूंदी।

कोटा से २० मील पश्चिमोत्तर पहाड़ियों के तंग स्थान में राजपूताने में देशी राज्य की राजधानी बूंदी एक छन्दर कसवा है।

सन १८९१ की जन-संख्या के समय बूंदी में २२५४४ मनुष्य थे, अर्थात १७००९ हिन्दू, ४५७५ मुसलमान, ९५७ जैन और ३ पारसी।

पहाड़ी के खड़े बगल पर राजमहल बना हुआ है। नीची ऊंची भूमि पर सड़क और मकान बने हैं। महल के नीचे अस्तवल के आंगन और दूसरे आफिसों की बड़ी पंक्ति है, जिससे ऊपर राजसम्बन्धी मकान हैं। इनसे ऊपर कचहरी की खानगी कोटरियां हैं, जिससे ऊपर पहाड़ी पर किला है।

कृसवा शहर पनाह से घेरा हुआ है, जिसमें ४ फाटक हैं। पश्चिम में महल फाटक, दक्षिण में चौगानफाटक, पूर्व में मीनाफाटक और पूर्वोत्तर जाटसा-गर फाटक। लगभग ५० फीट चौड़ी एक सड़क कृसवे की कुल लम्बाई होकर महल से मीनाफाटक, तक गई है दूसरी सड़कें तंग और नादुहस्त हैं।

किले की पहाड़ी पर एक बड़ा मन्दिर, दक्षिण की शहरतली में एक दूसरा मन्दिर, कसबे में १२ जैनमन्दिर और लगभग ४१५ छोटे मन्दिर हैं। किले की पहाड़ी के एक शिखर पर एक छत्तरी हैं, जिसके उत्तर फूलबाग; इससे दक्षिण कसबे से लगभग २ मील दूर नया बाग है। जाटसांगर के उत्तर किनारे पर कई एक छन्दर बाग हैं। बूंदो में एक खैराबी अस्पताल, एक अंग- रेजी स्कूल, एक पोष्टआफिस और एक टकशाल है, जहां सोना, चांदी और तांचे के सिक्के ढाले जाते हैं।

बूंदी राज्य—यह राज्य राजपूताने में हाडावती और टोंक एजंसी के पोलिटिकल छपिर्टेंडेंट के आधीन है। इसके उत्तर जयपुर और टोंक राज्य; पूर्व और दक्षिण कोटा राज्य और पश्चिम उदयपुर राज्य है। राज्य का क्षेत्रफल २३०० वर्गमील है। इसकी लम्बाई लगभग ७० मील और चौड़ाई ४३ मील है। संपूर्ण लम्बाई में पहाड़ियों के दो कत्तार हैं। राज्य में विशेष करके शालहक्ष का बड़ा जंगल है। प्रधान सड़क देवली छावनी से इस राज्य में होकर कोटा और झालावार की ओर गई है। एक सड़क राज्य के उत्तर-पूर्व कोने से होकर टोंक से देवली तक गई है। राज्य की अंदाजन मालगुजारी १०००००० रुपया है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय राज्य में २९५६२५ मनुष्य और सन १८८१ की जन-संख्या के समय राज्य के ८४२ गांव में २५४७०१ मनुष्य अर्थात २४२१०७ हिन्दू, ९४७७ मुसलमान, ३१०१ जैन, ९ सिक्ख और ७ क्रस्तान थे। हिन्दू और जैनों में ५५९८२ मीना, ३०३७७ गूजर, २३०२५ ब्राह्मण, १९२७८ चमार, १५४०६ वनिया, ९२७४ राजपूत, ७३०१ धाकर, ६५५४ भील थे।

राज्य के सेनिक वल ५९० सवार, २२८२ पैदल, १८ मैदान की और ७० दूसरी तोपें हैं।

इतिहास—बूंदी राजवंश चौहान राजपूतों की हाड़ा जाती है, जिन्होंने बहुत सदियों तक इस देश पर अधिकार रक्लो; इससे यह देश हाड़ावती कहलाता है। बूंदी के नरेशों को महाराव राजा की पदवी है।

बंगदेव के पुत्र राब देवसिंह ने बूंदी में अपना राज्य स्थापन किया और अपने पुत्र हरराजसिंह (सन १२४१ ई०) को बूंदी का राज्य देकर वह चले गए। हरराजसिंह ने कुछ दिनों तक राज्य किया। उनके भाई समरिसंह ने भीलों को जीता था। समरिसंह के पश्चात कम से ये राजा हुए—राव रनपाल-सिंह (सन १२७५ ई०), राव हमीर (सन १२८६ ई०), राव बीरिसंह

(सन १३३६ ई०), राव वैरीसाल वा बीरूजी (सन १३९३ ई०), राव सुभांड-देव (सन १४४० ई०) । सुभांडदेव के भाई समस्कंदी और अमस्कंदी ने उनको राजगद्दी से उतार कर १२ वर्ष राज्य किया। उसके पश्चात राव नारायणदास ने अपने पिता का राज्य अपने चचाओं से छीन लिया। राव राजा खरतनजी (सन १५३१ ई०) पागल थे, इसलिये सरदारों ने उनको राज्य से अलग करके नारायणदास के पुत्र अर्जुनराव को राजा वनवाया। यह थोड़ेही दिन राज्य करने के पश्चात चित्तौर के संग्राम में मारे गए । राव राजा खरजन (सन १५५४ इं०)—उन्होने बादशाह अकबर से चुनार और काशी पाया । राव राजा भोज (सन १५८५ ई०)--राव रतनजी (सन १६०७ ई०)-इनके पुत्र कुंवर माधवसिंह ने वादशाह जहांगीर से कोटा पाया और कुंवर गोपीनाथ युवराज हुए । कुंवर गोपीनाथ (सन १६१४ ई०) का वेहांत हो गथा इसल्लिये उनके पुत्र रावराजा शत्रुशाल राव रतनजी के गीद बैंटे (सन १६३१ ई०) और माधवसिंह कोटा के राजा हुए। रावराजा शत्रुशाल उज्जैन की लड़ाई में मारे गए। राव राजा भाव-सिंह (सन १६५८ ई०)—उन्होने औरंगजेब से औरंगाबाद की खबेदारी पाया। राव राजा अनरुद्धसिंह (सन १६८१ ई०)—यह भावसिंह के छोटे भाई के पौत्र थे। रावराजा बुधिसह सन १६९५ ई०)—इन्हों ने बहादुरशाह की सहायता की, परंतु जयपुर वालों ने इनको राज गद्दी से उतार दिया। महाराव राजा उमेदसिंह (सन १७४८ ई०)—उन्होने हुलकर की सहायता से बृंदी को लेलिया और फिर विरक्त होकर राज्य छोड़ दिया। महाराव राजा अजित-सिंह (सन १७७० ई०)। महारावराजा विष्णुसिंह (सन १७७३ ई०)— उन्होने सन १८१७ ई० में अंगरेजी सरकार से अहदनामा किया। उनके ४ पुत्र थे। ३ पुत्रों की मृत्यु हो जाने पर सबसे छोटे पुत्र १० वर्ष की अवस्था वास्त्रे महाराव राजा रामसिंह सन १८२१ ई० में बूदी के राज सिहांसन पर बैठे, जि-नको सन १८८७ के दिल्ली दरवार में जी० सी० एस० आई० की और २ वर्ष बश्चात सी० आई० ई० की पदवी मिली थी। महाराव राजा रामर्सिह के देहांत होने पर, जिनका जन्म सन १८०९ ई० में हुआ था, सन १८८९ ई० में उनके पुत्र वर्तमान बूंदी नरेश महाराव राजा रघुवीरसिंहजी को राज्य सिंहासन मिला, जिनकी अवस्था २२ वर्ष की है, इनके अनुज महाराज रंगराजसिंह और महाराज रघुराजसिंह हैं। यहां के नरेशों को अंगरेजी गवर्नमेंट की ओर से १७ तोपों की सलामी मिलती है।

√नीमच छावनी ।

वित्तौर से ३४ मील दक्षिण (अजमेर से १५० मील) नीमच का रेलवे स्टेशन हैं। राजपूताने और मध्य भारत की सीमा के निकट मालवा की पश्चिमोत्तर सीमा पर मध्य भारत ग्वालियर के राज्य में नीमच एक कसवा और अंगरेजी फौजी छावनी हैं। यहांका छोटा किला इस समय शस्त्राग़ार के काम में आता है। यहांकी आब हवा रमणीय हैं।

नीमच कसबा ग्वालियर राज्य के एक ज़िले का एक सदर स्थान है। कसबे की दीवारों के निकट तक छावनी की सीमा है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के सम कसवे और छावनी में २१६०० मनुष्य थे; अर्थात १४१६७ हिन्दू, ५४३२ मुसलमान, ७३४ जैन, ५८७ एनि-मिष्टिक, ५४३ कृस्तान, ११९ पारसी, १६ यहूदी और २ सिक्ख। सन १८८१ की जन-संख्या के समय कसवे में ५१६१ और छावनी में १३०६९ मनुष्य थे।

सन १८५७ के बलवे में देशी बंगाल सेना का एक भाग नीमच से दिल्ली को चला। अंगरेजी अफसर किले में थे। मंदसोर की सेना ने बाग़ी होकर किले का घेरा दिया। किले वाले अपना बचाव कर रहे थे, उसी समय उनकी रक्षा के लिये अंगरेजी सेना आ पहुंची।

झालरापाटन ।

नीमच के रेखवे स्टेशन से ८० मील पूर्व और कोटा राजधानी से ५२ मील दक्षिण कुल पूर्व राजपूताने में (२४ अंश ३२ कला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश १२ कला पूर्व देशांतर में) शालावार राज्य की राजधानी शालरापाटन है, जिसको पाटन भी कहते हैं। वहां अभी रेल नहीं गई है । नीमच से पाटन तक अच्छी सड़क गई है। सन १८०१ की मनुष्य-गणना के समय पाटन में १०७८३ मनुष्य थे; अर्थात ७८२० हिन्दू, २१८५ मुसलमान, ७७७ जैन और एक सिक्त । एक झील के बगल में झालरापाटन क़सवा है। झील की ओर छोड़ करके क़सबे के ३ ओर दीवार और खाई है। शहर की दीवार और पहाड़ियों के मध्य में कई एक उद्यान लगे हैं। क़सबे में बहुतेरे कोटीवाल लोग रहते हैं और एक टकशाल, एक सराय और द्वारिकानाथ का खन्दर मन्दिर है। कसबे से चार पांच सौ गज दक्षिण चन्द्रभभा नदी बहती है, जो पश्चिम से आकर पूर्वीचर को दौड़ती हुई कालीसिंध नदी में जा मिली है। कसबे से १५० फीट ऊपर एक पहाड़ी पर छोटा किला है।

झालरापाटन से ४ मील उत्तर छावनी तक पकी सड़क बनी है, जहां महाराज का महल है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय छावनी में २३३८१ मनुष्य थे, अर्थात् १५४५९ हिन्दू, ७३७५ मुसलमान, ४१२ जैन, ११७ सिक्ख और १८ इस्तान।

महाराज राणा के महल के चारो ओर मत्येक बगल में ७३५ फीट लंबी दीवार है, जिसके पूर्व बगल के मध्य में प्रधान दरवाजा और चारो कोनों पर ४ बुर्ज हैं। झालरापाटन, राज्य के परगना का सदर स्थान और छावनी झालावार कोर्ट का सदर है। यहां एक सराय, महाराज की कचहरियां और दूसरे अनेक आफिस हैं। महल से १ मील दक्षिण-पश्चिम एक जलाश्चय के निकट कई एक उद्यान लगे हैं।

भालरापाटन से ८० मील पूर्व कुछ उत्तर 'गूना' और ५२ मील उत्तर कुछ पूर्व 'बारा' है।

झालावार-राज्य-मध्य भारत राजपूताना, हाड़ावती और टोंक एजेंसी के पोलिटिकल खपरिटेंडेंट के आधीन राजपूताने में एक देशी राज्य झालावार है। यह राज्य अलग अलग ३ स्थानों में है। सबसे बड़े टुकड़े के (जिसमें झालरापाटन राजधानी है) उत्तर कोटा राज्य; पूर्व ग्वालियर राज्य; दक्षिण राजगढ़ का छोटा राज्य, सिंधिया और हुलकर के बाहरी के राज्यों के हिस्से, देवास राज्य का एक ज़िला और जावरा राज्य और पश्चिम सिंधिया और हुलकर के अलग के राज्य के जिले हैं। राज्य का क्षेत्रफल २६९४ वर्ग मील है। सन १८८२-८३ ई० में राज्य से १५२५२३० रुपया मालगुजारी आईथी। राज्य के शाहाबाद जिले में लोहा और लाल और पीली मट्टी, जो कपड़ा रगने के काम में आती है, पाई जाती है। राज्य का अधिक भाग पहाड़ी और शेष भाग जपजाऊ है। लगभग ई राज्य खेती के योग्य है। दक्षिण भाग में पोस्ता अधिक होता हैं। कूए से बहुत खेत पटाए जाते हैं।

सन १८९१ की जन-संख्या के समय झालावार राज्य में ३४३३१० मनुष्य और सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ३४०४८८ मनुष्य थे; अर्थात ३१९६१२ हिन्दू, २०८५३ मुसलमान और १३ क्रस्तान। हिन्दुओं में २७३१३ चमार, १८५९१ गूजर, १८४९८ ब्राह्मण, १७७८७ वलाई, १६४५९ भील, १६०८४ मीना, १३४७० वनिया, ११२६३ धाकर, १००७७ काली, ९४९१ राजपूत (जिसमें झाला और राटौर अधिक हैं) थे।

राज्य का सैनिक वल ४२५ सवार, ३२६६ पैदल, २० मैदान की और ७५ दूसरी तोपें और २४७ गोलंदाज हैं।

इतिहास—ग्रालावार का राजवंश झाला राजपूत है। महाराज के पुरुषे काठियावाड़ के झांलावार ज़िले में हलावाड़ छोटे प्रधान थे। लगभग सन १७०९ ई० में भावसिंह का पुत्र माधोसिंह कोटा में आया। कोटा के प्रधान ने माधोसिंह की बहिन से अपने पुत्र का बिवाह कर दिया और उसको नंदा की मिलकियत और फौजदार का काम देदिया। माधोसिंह के पीछे उसका पुत्र मदनसिंह; मदनसिंह के पीछे उसका भतीजा जालिम सिंह, जो उस समय केवल १८ वर्ष का था, फौजदार हुआ। जालिमसिंह ने ३ वर्ष पीछे जयपुर की फौज को जीत कर कोटा को बचाया। उसके उपरांत कुछ दिनों के बाद जब कोटा के राजा ने जालिमसिंह को निकाल दिया, तब

वह उदयपुर चला गया; परन्तु कोटा के राजा ने अपने मरने के समय जालिम-सिंह को बुलाकर अपने पुत्र उमेदिसिंह और अपने देश को उसको सौंप दिया। उस समय से जालिमिसिंह कोटा के असली हुकूमत करने वाला हुआ। सन १७९६ ई० में जालिमिसिंह ने झालरापाटन के वर्तमान कसबे को बसाया और उससे ४ मील उत्तर छावनी बनाई।

जालिमसिंह की मृत्यु होने पर सन १८३८ ईं० में कोटा के महाराव की अनुमति से जालिमसिंह की संतानों के लिये कोटा राज्य से झालावार राज्य अलग कर दिया गया। मदनसिंह ने महाराज राणा की पदवी माप्त की अ उनके उत्तराधिकारी महाराज राणा पृथ्वीसिंह हुए पृथ्वीसिंह की मृत्यु होने पर सन १८७६ में उनका गोद लिए हुए पुत्र वस्व्तसिंह, जो ११ वर्ष के थे उत्तराधिकारी हुए। सन १८८४ में वस्व्तसिंह को राज्य का अधिकार मिला और उनका नाम महाराज राणा जालिमसिंह पड़ा। यहांके महाराज राणाओं को अंगरेजी सरकार की ओर से १५ तोपों की सलामी मिलती है।

्र प्रतापगढ़ ।

नीमच के रेलवे स्टेशन से ३१ मील दक्षिण, मंडेसर का रेलवे स्टेशन है, जिसको मंदसोर भी कहते हैं। मंडेसर मध्य भारत के खालियर राज्य में चंवल नदी की एक शाखा पर छन्दर कसवा है, जिसमें सन ९८९१ की जन-संख्या के समय २५७८५ मनुष्य थे।

मंडेसर से १९ मील पश्चिम (२४ अंश २२ कला ३० विकला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश ५२ कला १५ विकला पूर्व देशांतर में) राजपूताने के एक देशी राज्य की राजधानी प्रतापगढ़ है, वहां अभी रेल नहीं गई है।

सन १८९१ वर्ष की जन-संख्या के समय प्रतापगढ़ में १४८१९ मनुष्य थे; अर्थात ८४२८ हिन्द्, ३५९४ जन, २६२६ मुसलमान, १६७ एनिमिष्टिक और ४ पारसी।

प्रतापगढ़ कसवे को महारावल प्रतापसिंह ने १८ वें शतक के आरंभ में नियत किया। शालमसिंह ने सन १७५८ में राजसिंहासन पर बैठने के पश्चात शहर पनाह बनाया, जिसमें ८ फाटक बने हुए हैं। दक्षिण-पश्चिम के छोटे किले में महारावल के परिवार के लोग रहते हैं। कसबे के मध्य में महल है। वर्तमान महारावल ने कसबे से लगभग १ मील पूर्व नया महल बनवाया है। मतापगढ़ में ३ वैष्णवमन्दिर, ३ शैवमन्दिर और ४ जैनमन्दिर हैं। मतापगढ़ मीनाकारी के काम के लिये मसिद्ध है।

राज्य की पुरानी राजधानी देविखया अब प्रायः छोड़ दी गई है, जो प्रतापगढ़ से ७६ मील पश्चिम है।

प्रतापगढ़ राज्य—मवाड़ एजेंसी के पोलिटिकल खपरिंटेडेंस के आधी-न राजपूताने में यह एक देशी राज्य है। इसके पश्चिमोत्तर और उत्तर मेवाड़ राज्य; पूर्वोत्तर और पूर्व नीमव और मन्दसोर सिंधिया के जिले और जावरा, पिपलोद और रतलाम के देशी राज्य और दक्षिण-पश्चिम बांसवाड़ा राज्य हैं। राज्य का क्षेत्रफल १४६० वर्गमील है। इससे लगभग ६ लाख रूपया मालगु-जारी आती है।

राज्य के पश्चिमोत्तर भाग में पहाड़िया हैं, जिन पर प्रायः सब भील बसते हैं। बनाई हुई सड़क राज्य में नहीं है, परंतु दिहाती सड़क ३२ मील उत्तर नीमच तक, १९ मील पूर्व मंडेसर तक और ३५ मील दक्षिण पूर्व जावरा तक हैं। गाड़ी की सड़क कानगढ़ घाढ होकर वांसवीरा तक है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस राज्य में ७९५६८ मनुष्य थे; अर्थात ७५०५० हिंदू, ४२४३ मुसलमान, २७० भील, और ५ दूसरे। राज्य का सैनिक बल २७५ सवार, ९५० पैदल, १२ तोष ओर ४० गोलंदाज हैं।

इतिहास— खप्रसिद्ध राणा कुंभ ने सन १४१८ ई० से १४६८ तक चितौरगढ़ का राज्य किया। उनके ऊदो, रायमल और स्र्यमल ३ पुत्र थे। स्र्यमल ने
रायमल के पुत्र पृथ्वीराज से परास्त होने के उपरांत चितौरगढ़ से भागकर
वेवलिया में जाकर वहां राज्य नियत किया; जिनके वंशधर प्रतापगढ़ के महारावल हैं। अठारहवीं सदी के आरंभ में वेवलियां के महारावल प्रतापगढ़ के
पतापगढ़ को बसाया मालवा में महाराष्ट्रों के बल बढ़ने के समय से प्रतापगढ़ के

प्रधान हुलकर को कर देते थे । सन १८१८ में प्रतापगढ़ अंगरेज़ी गवर्नमेंट की रक्षा में हुआ। महारावल दलपितिसिंह, जो सन १८४४ ई० में प्रतापगढ़ के सिंहासन पर बैठे, प्रतापगढ़ के महारावल के पोते थे, जिनको प्रथम हूंगरगढ़ के यशवंतिसिंह ने गोद लिया था और यशवंतिसिंह के गदी से उतार दिये जाने पर वह हूंगरगढ़ राज्य के उत्तराधिकारी हुए थे। पीछे दलपतिसिंह ने प्रतापगढ़ के राजिसिंहासन मिलने पर डूंगरगढ़ को छोड़ दिया। उनकी मृत्य होने के पश्चात सन १८६४ में उनके पुत्र उत्तराधिकारी हुए। प्रतापगढ़ के वर्तनान नरेश महारावल रघुनाथिसिंह बहादुर लगभग ३३ वर्ष की अवस्था के सीसोदिया राजपृत हैं। प्रतापगढ़ के महारावलों को अंगरेजी गर्वनमेंट की ओर से १५ तोपों की सलामी मिलती है।

< बांसवादा ।

प्रतापगढ़ से चालीस पचास मील दक्षिण-पश्चिम और रतलाम के स्टेशन से लगभग ५० मील पश्चिम राजपूताने में देशी राज्य की राजधानी बांसवाड़ा हैं। वह २३ अंश ३० कला उतर अक्षांश और ७४ अंश २४ कला पूर्व देशांतर में स्थित है। वहां रेल अभी नहीं गई है। राजधानी के चारो ओर दीवार है, जिसमें सन १८८१ की जन-संख्या के समय ७९०८ मनुष्य थे। महारावल का महल शहर के दक्षिण ऊंची भूमि पर दीवार के भीतर, जिसमें ३ फाटक हें, खड़ा है। राजधानी के दक्षिण जीची पहाड़ी पर बर्तमान महारावल का बनवाया हुआ शाहीविलास नामक दो मंजिला भवन स्थित है। पूर्व ओर वाई ताल है। राजधानी में कार्तिक महीने में एक मेला होता है, जो दो सप्ताह तक रहता है।

बासवाड़ा राज्य—मेवाड़ पोलिटिकल एजेंसी के आधीन राजपूताने में वांसवाड़ा एक देशी राज्य है। इसके उत्तर और पश्चिमोत्तर डूंगरपुर और मेवाड़ राज्य; पूर्वीत्तर और पूर्व प्रतापगढ़ राज्य; दक्षिण मध्यभारत एजेंसी के छोटे राज्य और पश्चिम बंबई हाते के रेवाकंटा राज्य हैं। राज्य की लंबाई उत्तर से दक्षिण तक ४५ मील और चौड़ाई पूर्व से पश्चिम तक ३३ मील और इसका क्षेत्रफल लगभग १३०० वर्गमील है। राज्य से लगभग २८०००० रूपया माल-गुजारी आती है। उत्तर और पूर्व की सीमा पर माही नदी बहती हैं, जिसके दोनो किनारे चालिस पचास फीट ऊंचे हैं। वर्षाकाल के अतिरिक्त इसको सर्वदा आदमी हेल जाते हैं। बनाई हुई कोई सड़क इस राज्य में नहीं है। राज्य का पश्चिमी भाग खेती के योग्य मैदान है। शेष भाग में पहाड़िया और जंगल हैं, जिनमें भील लोग रहते हैं। सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस राज्य में १७५१६५ मनुष्य थे।

राज्य का मैनिक वल ६० सवार, ५०० पैदल, ३ तोप और २० गोलंदाज हैं। इतिहास—बासवाड़ा के महारावल डूंगरपुर की शाखा सीसोदिया राजपूत हैं। १६ वीं सदी में डूंगरपुर और बांसवाड़ा दोनों राज्यों की भूमि एक सीसोदिया प्रधान के आधीन थी। प्रधान उदयसिंह के मरने पर सन १५२८ ई० में २ लड़कों में राज्य वट गया, एक डूंगरपुर का और हूसरा बांसवाड़ा का प्रधान हुआ। दोनों राज्यों की सीमा माही नदी है। १८वीं सदी के आरंभ में बांसवाड़ा राज्य थोड़ा बहुत महाराष्ट्रों के आधीन हुआ। सन १८१८ में अंग-रेजी गवर्नमेंत्र के साथ बांसवाड़ा से संधि हुई। यहांके महारावलों को १५ तोपों की सलामी मिलती है बांसवाड़ा के वर्तमान नरेश महारावल श्रीलक्ष्मणिसंह बहादुर ५७ वर्ष की अवस्था के हैं।

्र ढूंगरपुर्।

बांसवाड़ा से लगभग ४५ मील पश्चिमोत्तर नीमच से डीसा तक जो सड़क गई है, उसके पास नीमच से १३९ मील दक्षिण-पश्चिम राजपूताने में देशी राज्य की राजधानी डूंगरपुर है, जहां रेल नहीं गई है। यह २३ अंश ५२ कला उतर अक्षांश और ७३ अंश ४९ कला पूर्व देशांतर में स्थित है।

पहाड़ी के बगल पर महारावल का महल और पादमूल के पास एक झील है। राजधानी में एक जेल है और प्रतिवर्ष एक मेला होता है, जो १५ दिन तक रहता है। हूँगरपुर राज्य—राजपूताने के पोलिटिकल खपर्टिटेंडेंट के आधीन राजपूताने में यह देशी राज्य है, जिसकी लम्बाई पूर्व से पश्चिम तक ४० मील
और वीड़ाई उत्तर से दक्षिण तक ३५ मील है। राज्य के उत्तर उदयपुर राज्य;
पूर्व उदयपुर राज्य और माही नदी, जो वांसवाड़ा के राज्य से इसको अलग
करती है और दक्षिण और पश्चिम गुजरात में रेवाकंटा और माहीकंटा एजेंसियां हैं। राज्य का क्षेत्रफल १००० वर्गमील है। सन १८८२—८३ ई० में राज्य
से २०९३१० रुपया मालगुजारी आई थी। राज्य में पत्थरीली पहाड़ियां बहुत
हैं, जिन पर छोटे हुक्षों के जंगल हैं। राजधानी से लगभग द मील दक्षिण
मकान बनाने योग्य पत्थर निकलता है और द मील पूर्व कुल सब्ज मूरे रंग
का पत्थर होता है, जिससे देव मूर्तियां, मनुष्य और जानवरों की प्रतिमा और
प्याले डंगरपुर और दूसरे स्थानों में बनाए जाते हैं। राज्य में माही और सोम
नदी बहती हैं, जो बाणेश्वर के मन्दिर के निकट मिल गई हैं। वहां प्रतिवर्ष
एक बड़ा मेला होता है, जो १५ दिन रहता है। माही का विस्तर तीन चार सौ
पत्नीट चौड़ा पत्थरीला है। सोम नदी का जल जगह जगह पृथ्वी में अहण्य होकर फिर आगे जाकर निकल जाता है।

सन १८८१ ई० की मनुष्य-गणना के समय इस राज्य में १५३३८१ मनुष्य थे; अर्थात ७५२६० हिन्दू, ६६९५२ भील, ७५६० जैन और ३६०९ मुसल-मान।

. राज्य का सैनिक वल ४०० सवार, १००० पैदल, और ४ तोप हैं।

इतिहास — डूंगरपुर राजवंश सीसोदिया राजपूत है। चितौर के छम-सिद्ध समरसिंह सन ११९३ ई० में दिल्ली के पृथ्वीराज के साथ महम्मदगोरी के संग्राम में मारे गए। उनका बच्चा पुत्र कर्ण चितौर के सिंहासन पर बैठा। कर्ण के देहांत होने पर समरसिंह के भाई स्वमल का पोता राहुप चितौर की गद्दी पर बैठा और कर्ण का पुत्र माहुप मगरे की ओर चला गया और डूंगरपुर में राज्य करने लगा। सन १५२८ ई० में डूंगरपुर के उदयसिंह के देहांत होने पर राज्य वट गया। उनका एक पुत्र डूंगरपुर का और दूसरा बांसवाड़ा का प्रधान हुआ। मुगल राज्य की घटती के समय डूंगरपुर महाराष्ट्रों के आधीन हुआ था। सन १८१८ ई० में अंगरेजी गवर्नमेंट के साथ डूंगरपुर से संधि हुई। सन १८२५ में अंगरेजी गवर्नमेंट ने महारावल यश्वंतिसंह को राज्य के अयोग्य समझ गदी से उतार दिया। उनका गोद लिया हुआ पुत्र प्रतापगढ़ राजबंश का दलपति सिंह राज्याधिकारी बनाए गए, परंतु सन १८४४ में, जब दलपितिसिंह को पातपगढ़ का राजिसिहासन मिल गया, तब उसने डूंगरपुर के महारावल उदयसिंह बहादुर को, जो नावालिंग थे, गोद लिया। वह डूंगरपुर के राजिसिहासन पर बैटाए गए। यहां के महारावलों को अंगरेजी गवर्नमेंट की ओर से १५ बोपों की सलामी मिलती है।

/जावरा।

मंडेसर से ३१ मील दक्षिण (अजमेर से २१२ मील) जावरा का रेलवे स्टेशन है, जिसके पास पिरिया नामक एक छोटी नदी के निकट मध्यभारत के पिश्रमी मालवा में मुसलमानी देशी राज्य की राजधानी जावरा एक कसवा है। यह २३ अंश ३७ कला उत्तर अझांश और ७५ अंश ८ कला पूर्व देशांतर में स्थित है।

सन १८९१ की जन-संख्गा के समय जावरा में २१८४४ मनुष्य थे; अर्थात ९८९६ मुसलमान, ९३५० हिन्दू, १४०५ जैन, ११६७ एनिमिष्टिक, १९ पारसी और ७ क्वस्तान।

जावरा में पहले एक ठाकुर रहता था, जिस के परिवार के लोग पेंशन पाते हुए अब तक यहां रहते हैं। कसबा पत्थर की दीवार से घेरा हुआ है जो अब तक पूरी नहीं हुई है। कर्नल बूर्थवीक ने यहां की सड़कों को संवारा और एक पत्थर के खन्दर पुल बनवाया। यहां सोदागरी अच्छी होती है और अफीम तौलने की कोठी, पोष्ट आफिस, स्कूल और अस्पताल हैं। यहां से ३२ मील उत्तर मतापगढ़ को एक सड़क गई है।

जावरा राज्य—मध्य भारत-पश्चिमी मालवा एजेंसी के आधीन यह एक वैश्वी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८७२ वर्गमील है। इस राज्य से सन १८८१ में ७९९३०० रूपया मालगुजारी आई थी। सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय राज्य में १०८४३४ मनुष्य थे; अर्थात ८७८३३ हिन्दू, १३३१८ मुसलमान, ५२५८ आदि निवासी, २०१० जैन, १२ पारसी, और ३ क्रस्तान।

राज्य का सेनिक बल १२१ सवार, २०० नियमसील पैदल और २०० अनियमिक, १५ तोप, ६९ गोलंदाज और ४९७ पुलिस हैं।

इतिहास—हुछकर ने इसको अपनी मदद देने वाछी सेनाओं की पर-विरेश के छिये अमीरखां पठान को दिया। सन १८१८ ई० की महीदपुर की छड़ाई में अमीरखां का रिस्तामंद ग़फूरखां था। अंगरेजी गवर्नमेंट ने उसको जावरा राज्य पर अधिकार देदिया। बछवे की खैरखाही के ब्दछे में अंगरेजी गवर्नमेंट ने जावरा के नवाब की सछामी बढ़ाकर १३ तोपों की कर दी। यहां के वर्तमान नवाब महम्मद इस्माइछखां बहादुर फ़िरोजनंग ३५ वर्ष की अवस्था के हैं।

/रतलाम।

जावरा से २१ मील (अजमेर से २३३ मील दक्षिण कुछ पश्चिम) रतलाम का स्टेशन है। मध्य भारत के पश्चिमी मालवा में एक देशी राज्य की राजधानी रतलाम कसबा २३ अंश २१ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ७ कला पूर्व देशान्तर में स्थित है।

रतलाम से रेलवे की नई लाईन पश्चिम कुछ दक्षिण आनन्द जंगशन को गई है। रतलाम से ७१ मील दोहद, ११६ मील गोधड़ा, १५० मील डांकडर और १६९ मील आनन्द जंक्शन है।

सन १८९१ की जन-संख्या के समय रतलाम में २९८२२ मनुष्य थे, अर्थात १५३२२ पुरुष और १४५०० स्त्रियां, जिनमें १६७७५ हिन्दू, ७४०५ मुसलमान, ४३४१ जेन, १२२७ एनिमिष्टिक, ६१ क्रस्तान, ९ पारसी और ४ सिकल थे।

दीवारों के भीत्तर उत्तम राजमहल बना है। मुन्सी शहमतअली का बन-वाया हुआ एक चौक है, जिसके बाद चांदनी चौक में सराफ लोग रहते हैं। त्रिपोलिया फाटक के बाहर अमृतसागर तालाव है, जो बर्षाकाल में फैल जाता है। शहर में एक कालेज है, जिसमें करीब ५०० विद्यार्थी पढ़ते हैं। शहर के बाहर राजा का विला (मुफसिल की कोटी) और बाग है। रतलाम अफीम और गल्ले के व्योपार का बड़ा केन्द्र है। मालवे के अफीम की तिजारत के मिसद्ध स्थानों में से यह एक है।

रतलाम राज्य-यह मध्य भारत के पश्चिमी मालवा एजेंसी के आधी-न एक देशी राज्य है राज्य का क्षेत्रफल ७२९ वर्गमील है। इससे लगभग १३ लाख रुपया मालगुजारी आती है। सन १८८१ ई० में राज्य में ८७३१४ मनुष्य थें (४५७७९ पुरुष और ४१५३५ स्त्रियां)। इनमें ५४०३४ हिन्दू, ९९ १३ मुसलमान, ६०३८ जैन, १९ क्रस्तान, १३ पारसी और १७२९७ आदि निवासी थे। आदि निवासी में १६८१० मील, ४१७ मुगिया, ४८ म्हेयर और २२ मीना थे। राज्य का फौजी बल सन १८८२ में १३६ सवार, १९८ पैदल, ५ मैदान की तोपें, १२ गोलंदाज और ४६१ पुलिस वाले थे।

इतिहास—मारवाङ के राठौर रांजा मालदेव के पुत्र उद्यसिंह के ७ पुत्र थे। सात्रवें पुत्र दलपतिसिंह का महेशदास नामक पुत्र था, जिसका पुत्र रतनसिंह हुआ, जिसको सन इस्वी की सत्रहवीं सदी में दिल्ली के बादशाह शाहजहां ने मालवा में राज्य दिया।

स्तनसिंह ने इस कसबे को कायम किया, इससे इस का नाम रतलाम हुआ।
फतेहाबाद के संग्राम में रतनसिंह था जब शाहजहां के चारो पुत्रों में झगड़ा
हुआ, तब जोधपुर के यशवंतिमंह राठौर ३०००० राजपूतों के साथ औरंगजेब
और मुसद से लड़ा जिनके साथ संपूर्ण मुगल फौज थी वर्तमान रतलामनरेश
हैं, सर रणजीतिमंह के० सी० एस० आई रतनिमंह की वारहवीं पुष्त में
जिनकी अवस्था इस समय ३० वर्ष की है।

अठारहवां अध्याय।

(मध्यभारत के मालवा में) उज्जैन ।

- उज्जैन।

्रतलाम से ४९ मील (अजमेर से २८२ मील दक्षिण कुछ पूर्व) फतेहाबाद जंक्शन है, जिससे १४ मील पूर्वोत्तर उज्जैन को रेलवे शाखा गई है। उज्जैन से पूर्व भोपाल तक रेलवे वनरही है, जिस पर उज्जैन से ९० मील सिहोर छावनी और ११४ मील भोपाल है।

+ मध्यभारत के मालवा प्रवेश के सिंधिया राज्य में शिपा नदी कें दिहने किनारे पर (२३ अंश ११ कला १० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ५१ कला ४५ विकला पूर्व वेशांतर में) उज्जैन एक छोटा शहर है, जिसको अर्व-तिकापुरी भी कहते हैं, जो पवित्र सप्त पुरियों में से एक है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय उज्जैन में ३४६९१ मनुष्य थे; अर्थात १८२९२ पुरुष और १६३९९ स्लियां, जिनमें २३३२९ हिन्दू, ९४७६ मुसलमान, ९२४ जैन, ९१८ एनिमिष्टिक, ३२ क्रस्तान, ७ पारसी और ५ सिक्ख थे।

्र रेलवे स्टेशन से १ मील दूर ६ मील के घरे में नया शहर है। पुराना उज्जैन की तबाहियां शहर से करीब १ मील उत्तर है। शहर कीसड़कों के बगलों पर दो मंजिले मकान बने हैं। सड़कें पत्थर के बड़े बड़े ढोकों से पाटी हुई हैं, जिन पर गाड़ियों के पहिए ठोकर खाते हैं। सड़कों के बीच में मोरी हैं। प्रधान सड़क के ढोके निकाल कर अब कंकड बिछाया गया है। सवारी के लिये बैलगाड़ी और तांगा मिलते हैं। सन १८८० ईं० में, जब मैं पहली बार उज्जैन गया था, सब किसी जगह कंकड की सड़क न थी।

्डज्जैन में महाराज सिंधिया की ईसाफ की कचहरी दो मंजिली बनी है और बहुतेरे देवमन्दिर और कई एक अमिसद्ध मसजिद हैं। शहर की दक्षिण सीमा के पास जयपुर के राजा जयसिंह की बनवाई हुई अवजर बेटरी अर्थात प्रहादि दर्शन स्थान है, जिसके यंत्र नाकाम पड़े हैं। न उन्जैन में ७ सागर (सात तालाव) प्रसिद्ध हैं १ विष्णुसागर, २ रुद्र-सागर, ३ गोवर्द्धनसागर, ४ पुरुषोत्तमसागर, ५ क्षीरसागर, ६ पुष्करसागर और ७ वां रतनागरसागर। इनमें कई वे मरम्मत हैं।

ने जैसे इंदौर बढता जाता है वैसे उज्जैन शहर की घटती होती जाती है। यहां से यद्यपि शहर बहुत घट गया है तौ भी इसमें बड़ी तिजारत होती है। यहां से बहुत अफीम दूसरे देशों में भेजा जाता है। यहां के हिन्दू मुसलमान छोटे बड़े सब पगड़ी पहनते हैं। मुसलमानों में छोटे घेरे के जामा पहनने की चाल है। स्लियों में घाघड़ी पहनने की अधिक रीति है। वे पर्दे में नहीं रहती हैं। ब्राह्मण कियावान होते हैं। वे पायः सब लोग पाक बनाने के समय वा भोजन के समय रेशमी वां ऊनी वस्ल पहनते हैं। निमंत्रन के समय स्त्री और पुरुष दोनों एकही साथ पंक्ती में बैठकर भोजन करते हैं। घीमड़ आदि कई नीच जातियों के अतिरिक्त हिन्दू मात्र मद्य मांस नहीं खाते।

्कार्तिक की पूर्णिमा को उज्जैन का मेला होता है। १२ वर्ष पर जब दृश्चिक राश्चि के दृहस्पित होते हैं तब उज्जैन में कुम्भ योग का बड़ा मेला होता है, जो संबत १९४४ में हुआ था। उस समय भारतवर्ष के सम्पूर्ण प्रवेशों से सब संप्रदाय वाले कई लाख साधु और यहस्थ शिपा में स्नान करने के लिये वहां एकत्र होते हैं, जिनमें कितने नागा संन्यासी, जो नंगे रहते हैं, देखने में आते हैं। (कुम्भयोग का दृतांत पांचवं अध्याय में देखों)

्रिशा नदीं —उज्जैन के समीप शिष्ठा नदी के कई घाट पत्थर से बने हैं। यात्रीगण रामघाट पर स्नान और तीर्थ भेट करते हैं। घाट के पास कई देव मन्दिर हैं। शिष्ठा नदी १२० मील बहने के उपरांत चंबल नदी में गिरती हैं।

+ हरासिद्धिदेवी—घाट से थोड़े ही दूर पर एक मन्दिर में छिंगाकार अगस्त्य मिन हैं, जिनके पास विक्रमादित्य की कुलवेबी हरसिद्धीवेबी का शिखरदार विशाल मन्दिर है। मन्दिर के आगे एक दीप शिखर (दीप रखने का बुर्ज) बना है, जिसमें चारो ओर नीचे से उपर तक दीप रखने को हजारों स्थान बने हैं, जिन पर उत्सवों के समय दीप जलाए जाते हैं। नव हुर्गाओं में से एक का नाम हरसिद्धी है। भविष्यपुराण उत्तरार्द्ध-५४ वें अध्याय में नव दुर्गाओं के नाम ये हैं-महालक्ष्मी, नंदा, क्षेमकरी, शिवदूती, महारुण्डा, भ्रामरी, चन्द्रमंगला, रेवती और हरसिद्धी।

महाकालेश्वर शिव—खशिसद्ध १२ ज्योतिर्लिङ्गों में से एक और उज्जैन के प्रधान देवता महाकालेश्वर शिव हैं। एक पक्के सरोवर के बगल पर महाकालेश्वर का शिखरदार विशाल मन्दिर है।तालाब के बगलों में पत्थर की सीढियां, तीन बगलों पर पक्के मकान और एक ओर मन्दिर का दालान और दूसरे कई मन्दिर हैं।

महाकालेश्वर का मन्दिर पंच मंजिला है, नीचे के मंजिल में जो 'भूमि के सतह से नीचे है, वड़े आकार का महाकालेश्वर शिवलिंग है। मन्दिर का जगमोहन अर्थात बड़ा दालान सरोवर के बगल में है। मन्दिर दालान के पीछे हैं, परन्तु उसका दरवाजा दालान में नहीं है। दालान के एक बगल से गुफा के समान अंधेरे रास्ते से मन्दिर में जाना होता है। मन्दिर और रास्ते में दिन रात दीप जलते हैं। महाकालेश्वर के समीप पार्वतीजी और गणेशजी की मूर्तियां हैं। महाकालेश्वर का भांति भांति का शृङ्कार दिन रात में अनेक बार होता है और बहुत प्रकार की सामग्री समय समय पर भोग लगाई जाती है। कहते हैं कि भोग राग के लिये प्रति दिन ग्वालियर के महाराज ११ रुपये, इंदौर के महाराज ५ रुपये और दूसरे अनेक धनी लोग भी कुल कुल देते हैं।

्यात्री लोग मेवा, मिठाई, बेलपत्र आदि शिव पर चढाते हैं और शिव का प्रसाद खाते हैं तथा उसको अपने ग्रह लेजाते हैं। पहले का चढा हुआ बिल्वपत्र भी धोकर पुनः चढाने की यहां रीति है। बहुतरे लोग अधे और शिवलिंग की दबा दवा कर सेवा करते हैं। (शिवपुराण १० वें खंड के ५ वें अध्याय में है कि प्रसाद के अतिरिक्त शिव का नैवेद्य खाने से दुःख होता है और पद्मपुराण-पातालखंड-उत्तरार्द्ध के ११ वें अध्याय में लिखा है कि बाणकुण्ड से उत्पन्न, अपने आप उत्पन्न, चन्द्रकांत मणि की मूर्ति, मन में स्थित मूर्ति, इन शिव-मूर्तियों का नैबेद्य चन्द्रायणव्रत के समान होता है। लिंगपुराण के ९२ वें अध्याय

में है कि विल्वपत्र का त्याग कभी न करे अर्थात नया विल्वपत्र न मिले तो पूर्व दिन का चड़ा हुआ विल्वपत्र जल से घोकर लिंग पर चढ़ावे)

े मन्दिर के उपर दूसरे मंजिल में, जिसका तल सरोवर के ऊपर के फर्श पर है, ओंकारेश्वर नामक शिवलिंग हैं। महाकालेश्वर के मन्दिर के पीछे इस मन्दिर का द्वार है। फर्श की एक भंवारी से नीचे का तह, जहां महाकालेश्वर हैं, देख पड़ता है।

्ठाहर के अन्य देवता—(१) एक मन्दिर में नागचन्द्रेश्वर हैं। (२) क्षीर-सागर तालाब के किनारे एक मन्दिर में ब्रह्मा और लक्ष्मी के साथ क्षीरशायी भगवान की मार्बुल की चतुर्भुज मनोहर मूर्ति है। (३) एक मन्दिर में राम, लक्ष्मण, जानकी और हनुमान की मूर्तियां हैं। लोग कहते हैं कि यह मूर्तियां विष्णुसागर में मिली थीं। (४) सराफा महल्ले में ग्वालियर की महारानी बैजाबाई का बनवाया हुआ गोपालमन्दिर है, जिसके नीचे का भाग नीले मार्बुल का और शिखर श्वेत मार्बुल का है। इसके किवाइ और सिंहासन पर चांदी का पत्र जड़ा है। मन्दिर में सदावर्त जारी है। (६) क्षित्रा नदी के प्रयाग घाट के पास एक मन्दिर में रणमक्तेश्वर महादेव हैं।

चौबीस खम्भों का दर्वाजा—शहर के भीतर एक बहुत पुराना फाटक है, जिसको लोग विक्रमादित्य के किले का हिस्सा कहते हैं। फाटक के भीतर दोनों बगलों पर २४ खंभे लगे हुए हैं और बाहर दोनों बाजुओं पर देवी की घिसी हुई २ पुरानी मूर्तियां हैं, जिनको लोग पूजते हैं। नवरात्र के समय ग्वालियर के महाराज की ओर से यहां देवी की पूजा और बलिदान होते हैं।

े सिद्धबट—शहर से ३ मील दुर क्षिपा नदी के किनारे पर एक छोटा पुराना बट्छक्ष है। कार्तिक सुदी १४ को यहां मेला होता है। यात्रीगण क्षिपा में स्नान करके सिद्धबट की पूजा करते हैं। इसके समीप एक बड़ी धर्मशाला है।

सिद्धबट से छौटने पर थोड़े आगे कालभैरव का मन्दिर मिलता है। सांदीपनि मुनि का स्थान-शहर से २ मील दुर गोमती-गंगा नामक पक्के तालाब के समीप सांदीपिन मुनि का स्थान है। यहां छोटे छोटे पिन्दरों में सांदीपिन मुनि और कृष्ण, बलदेब, खदामा आदि विद्यार्थियों की मूर्तियां हैं। श्रीकृष्ण और बलराम ने मथुरा से आकर इसी स्थान पर सांदीपिन मुनि से विद्यापढ़ी थी। इस स्थान से कुछ दूर पर विष्णुसागर तालाब के समीप एक मन्दिर में जनार्दन भगवान और दूसरे में राम, लक्ष्मण और जानकी की मूर्तियां हैं।

राजा भरतरी की गुफा-शहर से १ ई मील उत्तर एक भुवेबरा है, जिसको लोग भरतरी (भर्तहरि) की गुफा कहते हैं। भुवेबरे में कई कोठ-रियां हैं। पुजारी दीप के प्रकाश से भुवेबरे में दर्शन कराता है। प्रथम की कोठरी में राजा विक्रमादित्य के अनुज भरतरी का योगासन (गद्दी) और उससे भीतर की कोठरी में भरतरी और गुरु गोरखनाथ की छोटी छोटी मूर्तियां हैं।

स्वाई जयसिंह के आज्ञानुसार स्रित नामक कवीश्वर ने बैतालप्वीसी को संस्कृत से ब्रजभाषा में अनुवाद किया, जो अब खड़ी बोली में छपी है। उसमें लिखा है कि धारानगर (धाड़) के राजा गंधर्वसेन की ४ रानियां थीं। उनके ६ पुत्र हुए। राजा के मरने पर उसका बड़ा पुत्र शंख राजा हुआ। कितने दिनों के पश्चात शंख के छोटे भाई विक्रम शंख को मार कर आप राजा हुए, जिन्होंने अवल राज्य करके संवत वांधा। कितने दिनों के पीछे राजा विक्रम अपने छोटे भाई भर्तृहरि को राज्य सौंप योगी बन वेश वेश और बन बन में भ्रमण करने लगे। एक ब्राह्मण उस नगर में तपस्या करता था। एक दिन वेवता ने प्रसन्न हो, उसे अमृतफल दिया। ब्राह्मण ने उस फल को राजा भर्तृहरि को वेकर उसके बदले में द्रव्य मांगा। राजा ने ब्राह्मण को लाख रुपये वे महल में आकर अपनी प्रिय रानी को वह फल वेदिया और कहा कि तुम इसे खालो, जिससे अमर होगी। रानी ने उस फल को अपने मित्र कोतवाल को, कोतवाल ने अपनी प्यारी एक बेश्या को, और बेश्या ने उस फलको राजा को दिया। राजा फल को वेख संसार से उदास हो कहने लगा कि तपस्या करना उत्तम काम है। उसने फल को लेजाकर रानी को

दिखाया। रानी देखतेहीं भौचकसी रह गई। राजा ने बाहर आ उस फल को धुलबाकर खाया और राजपाट छोड़ योगीवन विन कहे छने अकेले वन को सिधारा। राजा भर्त्हरि के जाने के समाचार छनतेही राजा विकम अपनी राजधानी में आए।

भरतरीचरित्र पद्य भाषा की एक छोटी पुस्तक है, उसमें लिखा है कि राजा इंद्र का पौत्र, गंधर्वसेन का पुत्र और विक्रमादित्य का भ्राता राजा भरतरी था। जब वह ४ वर्ष का था, तब उसकी माता मर गई । भरतरी ने ९ वर्ष की अवस्था में अनुपदेश की स्त्री से, १० वर्ष की अवस्था में चंपा देशी स्त्री से, ११ वर्ष की अवस्था में पिंगल देशी स्त्री से और १२ वर्ष की अवस्था में श्र्याम देशी स्त्रीं से विवाह किया। १३ वर्ष के होने पर वह तीर कमान बांधने छगा। एक दिन राजा भरतरी शिकार को गया। वहां वह एक मृग को मार अपने यह को छे चला। जंगल के बीच एक सिद्ध गोरखनाथजी उसको मिले। राजा उस योगी को देख उसके चरण छूने को चला । गोरखनायजी बोछे कि तुमको दोष छगा है, तुम हमारा चरण मत छूओ, क्योंकि उजाड़ का तापस जो यह मृग है, उसको बिना अपराध तुमने मारा है । राजा ने योगी से कहा कि हे बाबा, जो तुम सिद्ध योगी हो, तो मृग को जिला क्यों नहीं देते। यह छन सिद्ध गोरखनाथ ने भगवान का ध्यान करके चुटकी की बिभूति से मृग को मारा, जिससे वह उठ कर खड़ा हो गया और नाचता हुआ अपनी मृगी के पास चला गया। यह देख राजा को ज्ञान हुआ, वह गोरखनाथ से वोला कि आप मुझको अपना चेला बनाइए। प्रथम तो गोरख-नाथ ने राजा को योगी होने से मना किया, परंतु जब उसने हट किया, तब बोले कि, जो तुम्हारी योग की इच्छा है, तो पहले अपने महल से भिक्षा मांग लाओ और अपनी स्त्री को माता कह आओ। वह तुमको पुत्र कहकर भिक्षा दे। राजा ने अपने अंग का जामा फाड़ कर गले की गुदड़ी बनाई और सिर का चीरा फाड़ कर सिर की सेली बनाई । वह हाथ में खप्पर, कांधे पर कांवर और मुख पर भस्म लगाकर योगी हो बनको चला और बन से

अपनी नगरी में आकर खिड़की की राह से बोला, कि है माता भिक्षा लाओ। रानी श्यामदे ने योगी का शब्द खन रत्नआदि पदार्थीं से भरा हुआ थाछ चंपा नामक बांदी से योगी के पास भेजा। बादी रत्नों को अपने गृह रख चने से थाल भर योगी को देने गई। योगी बोला कि बांदी के हाथ की भिक्षा मैं नहीं छेता, तुम भोली पाता को भेज दो, उससे मैं भिक्षा छंगा। तब बांदी कोध कर छाठी छे योगी को मारने को दौड़ी। योगी बोला कि एक दिन वह था कि जब मैंने तुझको मोल खरीदा, अब योगी होने पर गुझको मारने दौड़ती है। यह छन बांदी राजा को पहचान पछाड़ खाकर गिर पड़ी और रोती पीटती रानी के पास आकर बोछी कि योगीबेष से राजा द्वार पर खड़े हैं। रानी शृङ्गार करके थार में मोती, हीरा, छाछ आदि रत्न छंकर द्वार पर आई और बोली की हे योगी भिक्षा छे जाओ । योगी ने कहा कि मोती मूंगा में क्या कहंगा, हे माता भिक्षा छे आओ और मुझको पुत्र कहके भिक्षा वे दो, जिससे मेरा योग अमर हो जाय। इतना छन रानी ने पर्दा चढा कर देखा कि राजा योगीवेष से खड़े हैं। यह देख वह पछाड़ खांकर गिर पड़ी। इसके उपरांत रानी ने पट्का पकड़ कर राजा को बहुत समझाया, पर राजा ने कुछ न छना। उसने कहा कि हमने गोरख के बचन से राज्य, नगर और १६०० रानियों को त्याग दिया । तब रानी बोली कि मुझको भी अपने साथ छे चिछए। जब राजा ने इस बात को स्वीकार नहीं किया, तब रानी ने कहा कि मेरे साथ चौसर खेलिए; मैं हाइंगी तो तुम्हारे संग चलूंगी और जीतूंगीं तव तुम को जाने न दूंगी । राजा बोछे ऐसा नहीं, जो तुम बाजी जीतोगी तो १० दिन हम यहां रहेंगे और जो हम जीतेंगे, तो तुमको साथ न छे जायंगे। इसी बात पर चौसर होने छगी। १६ और ७ दांव नियत हुए। रानी के पासा फेंकने पर काने तीन पड़ गए। पीछे जब राजा ने पासा फेंका, तब १६ और ७ पड़े। राजा जब बाजी जीत उठ चछे, तब रानी बोछी कि है कंत ! भोजन तय्यार है खा लो । राजा ने छोटा खप्पर निकाल कर कहा कि हे माता ? इस में लावो । रानी बोली कि हे महाराज ! तुम छोटे

गुरू के बालक हो, इससे छोटा वर्तन लाए हो। ऐसा कह उसने १६०० थार भोजन की सामग्री उस खप्पर में परोसी, परंतु वह भरा नहीं। तव रानी ने हार मान कर राजा को असीस दी और बोली कि हे पुत्र! तुम पूरे गुरू के बालक हो, यह भिक्षा लो। राजा भरतरी भिक्षा ले वहां से चल दिए।

सिंहासनवत्तीसी गद्य भाषा की पुस्तक है, जिसकी पहली कहानी में लिखा है कि शामस्वयंवर नामक ब्राह्मण अम्बावती नगरी का राजा था, जो बड़ा प्रतापी होने पर गंधर्वसेन नाम से विख्यात हुआ । राजा की चार रानी चार वर्ण की पुत्री थीं। ब्राह्मणी स्त्री से १ पुत्र, क्षत्राणी से शंख विक्रम और भरतारी नामक ३ पुत्र, वैश्यानी से चन्द्र नामक एक पुत्र और शूद्राणी से धन्वं-तिर नामक पुत्र हुए। ब्राह्मणी का पुत्र राजा का दीवान वना, पर जब उससे कुछ तकसीर हुई, तब राजा ने उसको काम से खारिज कर दिया। वह अम्बा-वती से धारापुर में (जिसको अब धाड़ कहते हैं) आया। कितने दिनों के पश्चात उसने धारापुर के राजा को, जो भोज के पुरुषे थे, मार उसका राज्य छे उज्जैन को अपनी राजधानी बनाई। थोड़े दिनों के पीछे अपने भाई ब्राह्म-णी के पुत्र की मृत्यु होने पर शंख आकर उज्जैन का राज्य करने लगा। उसके पीछे विकम अंख को मार कर उज्जैन के राजसिंहासन पर बैठा और न्याय से राज्य करने लगा। सिंहासनवत्तीसी के अंत में लिखा है कि विक्रमादित्य के देहांत होने पर उसके पुत्र जैतपाल को राजतिलक हुआ। वह अपने पिता के आज्ञानुसार उज्जैन और धारा नगरी को छोड़ अम्वावती में जाकर राज्य करने लगा; उडजैन और धारा नगरी उजड़ कर अम्बावती नगरी बसने लगी।

सिंहासनवत्तीसी के आरंभ में राजा भोज के उज्जैन में राज्य करने की और उसको वहां विक्रमादित्य के सिंहासन पाने की कथा है।

इतिहास—उडजैन एक समय मालवा की राजधानी था। कहा जाता है
कि, जब राजा अशोक का पिता पाटलीपुत्र (पटना) में राज्य करता था,
उस समय इंसा से क़रीब २६३ वर्ष पहले अशोक उज्जैन का स्बेदार था।
उज्जैन खप्रसिद्ध विक्रमादित्य की राजधानी था, जिसके नाम का संबत,

जो उत्तरी भारत में प्रचिलत है, इशा से ५७ वर्ष पहले आरंभ हुआ था। विक्रमादित्य ने सिदियन लोगों को भगा कर संपूर्ण उत्तरी भारत में राज्य किया। किव कालिदास ने अपनी ज्योतिर्विदाभरण पुस्तक के २२ वें अध्याय में, जिसको उसने गत कलियुग संवत ३०६८ तथा विक्रम संवत २४ में बना हुआ लिखा है, कहा है कि विक्रमादित्य की सभा में शंकु, वररुचि, मणि, अंशुदत्त, जिल्णु, त्रिलोचन, हरि, घटखर्पर, और अमरसिंह आदि किव; सत्य, बराहमिहर, श्रुतसेन, बादरागण, मणित्य, और कुमारसिंह आदि ज्योतिषी और धन्वन्तरी, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, बैतालभट, बटखर्पर, कालिदास, वराहमिहर और बररुचि ये ९ नवरत्न गिने जाते थे। विक्रमादित्य ने ९५ शक राजाओं को मार अपना शक, अर्थात संवत चलायां।

छगभग ७०० ई० में राजा भोज उजैन में राज्य करता था।

अलाउदीन खिलजी ने, जिसने सन १२९५ से १३१७ ई० तक दिल्ली में राज्य किया था, उज्जैन और समस्त मालवा देश को जीता। अफगान दिला-वर खां गोरी, जो सूबेदार था, सन १३८७ ई० में वहां का स्वाधीन राजा हुआ। उसने मांडू को राजधानी बनाया और सन १४०५ ई० तक राज्य किया। गुजरात के राजा बहादुरशाह ने सन १५३१ में और बादशाह अकबर ने सन १५७१ ई० में मालवा को जीता। औरंगजेब और मुराद और उनके भाई दारा के साथ सन १६५८ ई० में उज्जैन के पास लड़ाई हुई। यशवंतराव हुलकर ने सन १७९२ में उज्जैन को ले लिया और उसके हिस्से को जला-या; तब यह सिंधिया के हाथ में आकर उसकी राजधानी हुआ। पीछे सन १८१० ई० में दौलतराव सिंधिया ने उज्जैन को लोड़ कर म्वालियर को अपनी राजधानी बनाया।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व, ८२ वां अध्याय) एक महाकाल तीर्थ है। वहां कोटितीर्थों का स्पर्श होने से अश्वमेध का फल मिलता है।

(उदचोगपर्व, १९ वां अध्याय) अवंती के राजा विन्द और अनुविन्द २

अभीहिणी सेना और अनेक दक्षिणी राजाओं के सहित कुरुक्षेत्र के संग्राम में राजा दुर्योधन की और आए। (द्रोणपर्व ९७ वो अध्याय) अर्जुन ने अवंती-राज विन्द और अनुविन्द को मार ढाळा।

आदिब्रह्मपुराण—(४२ वां अध्याय) पृथ्वी की सव नगरियों में उत्तम अवंती नामक नगरी है, जिसमें महाकाल नाम से विख्यात सदाशिव स्थित है। वहां क्षिमा नामक नदी बहती है और विष्णु कई एक हुए से स्थित हैं, जिनके दर्शय से पूर्वीदित फल प्राप्त होता है।इन्द्रादि देवता और मातृगण भी वहां स्थित हैं। उसी नगरी में इन्द्रच्युन्त नामक राजा हुआ।

अग्निपुराण—(१०८ वां अध्याय) अवंती पुरी पाप का नाश करने वास्त्री और भुक्ति-मुक्ति देने वास्त्री है।

गरुड़पुराण—(पूर्वाद्ध, द्द वां अध्याय) महाकाल तीर्थ संपूर्ण पापों का नाशक और मुक्ति मुक्ति देनेवाला है। (वेतकल्प, २७ वां अध्याय) अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंतिका और द्वारिका ये सातो पुरियां मोक्ष देनेवाली हैं।

शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३८ वां अध्याय) शिव के १२ ड्योतिर्छिंग हैं—(१) सौरोष्ट्र देश में सोमनाथ, (२) श्रीशैंछ पर मिछकार्जुन, (३) उजैन में महाकाल, (४) ओंकार में अमरेश्वर, (५) हिमालय में केदार, (६) डांकिनी में भीमशंकर, (७) वाराणसी में विश्वेश, (८) गोदावरी के तट में त्र्यंवक, (९) चिताभूमि में वैद्यनाथ, (१०) दारुकावन में नागेश, (११) सेतुबंध में रामेश्वर और (१२) शिवालय में घुशमेश स्थित हैं । इन लिंगों के दर्शन करने से शिवलोक माप्त होता है । इनकी पूजा करने का अधिकार चारोवणीं को है। इनके नैवेद्य भोजन करने से संपूर्ण पाप विनाश होता है। इनका नैवेद्य अवश्य खाना चाहिए । नीच जाति में उत्पन्न मनुष्य भी ज्योतिर्छिंग के दर्शन करने से दूसरे जन्म में शास्त्रक ब्राह्मण होता है और उस जन्म के पश्चात मुक्ति लाभ करता है।

(४६ वां अध्याय) पाप के नाशने वाली और मुक्ति को देने वाली

अवंती नामक नगरी है, जहां पवित्र क्षिपा नदी बहती है । उसमें वेदपारण एक शिव-भक्त ब्राह्मण वसता था। उसके ४ पुत्र भी बड़े शिवभक्त थे। उसी समय रत्नमाल गिरि पर दृषण नामक अछर हुआ । वह ब्रह्मा के वरदान से बलवान होकर सबको दुल वेने लगा। उसके भय से संपूर्ण तीर्थ, वन और पर्वतों के मुनिगण भाग गए। दृषण शिवभक्तों का बिनाश करने के निमित्त अपनी सेना सहित जजैन में गया और चारों ओर से नगरी को घर कर शिव-भक्तों के निकट पहुंचा, परंतु शिवभक्त ब्राह्मण ऐसे शिव की पूजा में छव-छीन थे कि उसके ललकारने पर कुछ भी ध्यान नहीं वेते थे। उस समय शिव की लुपा से उस स्थान पर गर्च (गढ़ा) हो गया और उससे शिवजी. ने मकेंट होकर बेट्यों का बिनाश किया। शिव भक्तों ने शिवजी से विनय किया कि आप यहां स्थित होवें और आपने जगत के कालकप दृषण वेट्यय को मारा इसलिये आप का नाम महाकालेश्वर होवे। शिवजी उसी गर्व में ज्योतिलिंग होकर स्थित हुए। महाकालेश्वर की पूजा करने से स्थम में भी दु:ख नहीं रहता और मनोबांच्छितफल मिलता है।

बामनपुराण—(८३ वां अध्याय) प्रहाद ने अवंती नगरी में क्षिपा नदी के जल में स्नान करके विष्णु और महाकाल शिव का दर्शन किया।

स्कन्दपुराण—(ब्रह्मोत्तर खंड, ५ वां अध्याय) उज्जैन नगरी में चंद्रसेन नामक राजा था। वह सदा उस नगरी में ज्योतिर्छिंग महाकाळ शिवकी पूजा परम भक्ति से किया करता। इत्यादि।

(काशीखंड-७ वां अध्याय) शिवशर्मा ब्राह्मण महाकालपुरी में पहुंचा जहां कलिकाल की महिमा नहीं ब्यापी थी।

मत्स्यपुराण—(१७८ वां अध्यायं) शिव और अंधक की युद्ध अवंती नगरी के समीप महाकाल बन में हुआ था।

विष्णुपुराणं—(५ वां अंश, २१ वां अध्याय) कृष्ण और बंखदेव दोनों भाई अवंतिकापुरी के बासी सांदीपन नामक गुरू से विद्या पढ़ने गए। ६५ वें दिन सब विद्या पढ, जब बे लोग गृह को चलने लगे, तब मुनि से बोले कि इससे गुरुदक्षिणा मांगो। मुनि ने कहा कि प्रभासक्षेत्र में समुद्र की छहरों से डूबकर मरे हुए मेरे पुत्र को गुरुदक्षिणा में दो। दोनों भ्राताओं ने यम छोक से गुरुपुत्र को छाकर मुनि को दे दिया।

(श्रीमद्भागत दश्चम स्कंध-४५ वें अध्याय में भी यह कथा है। आदि-ब्रह्मपुराण ८६ वें अध्याय और ब्रह्मवैवर्त्तपुराण कृष्णजन्मखंड ५४ वें अध्याय में भी लिखा है कि कृष्ण और बल्लदेवजी ने अवंतिका नगरी में जाकर सांदी-पन मुनि से विद्या ग्रहण किया।)

भविष्यपुराण—(१४१ वां अध्याय) उज्जैन में विक्रमादित्य नामक राजा होगा, जो कड़ोरो म्लेक्षों को मार धर्म स्थापन कर १३५ वर्ष राज्य करेगा। इसके अनंतर बड़ा प्रतापी शालिबाहन राजा १०० वर्ष पर्यंत राज्य करेगा।

सौरपुराण—(६७ वां अध्याय) जो मनुष्य उज्जैन तीर्थ में महाकालेश्वर जिवलिंग का दर्शन करते हैं, वे सब पापों से विमुक्त होकर परमधाम में जाते हैं। महाकालेश्वर दिव्य लिंग हैं। उनके स्पर्श करने से मनुष्य शिवलोक में गमन करता है। वहां शक्तिभेद नामक एक तीर्थ है, जिसमें स्नान करके भद्रबट के दर्शन करने से मनुष्य संपूर्ण पापों से विमुक्त होकर स्कंदलोक में जाता है। उज्जैन में चारो ओर सहस्त्रों तीर्थ विद्यमान हैं, जिनका संपूर्ण माहात्स्य स्कंदजी ने स्कंदपुराण में कहा है।

उन्नीसवां अध्याय।

(मध्यभारत के मालवा में) इंदौर, देवास, मऊछावनी, मांडू और घाड़ ।

/इंदौर।

फतेहाबाद जंक्शन से २५ मील दक्षिण-पूर्व और उज्जैन से (रेलवे द्वारा) ३९ मील दक्षिण इन्दौर का स्टेशन है। इन्दौर मध्यभारत के मालवा मवेश में कटकी नदी के बांए किनारे पर समुद्र के जल से १७८६ फीट ऊपर एक देशी राज्य की राजधानी छोटा शहर है, जो २२ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ५४ कला पूर्व देशांतर में स्थित है।

सन १८९१ की जन-संख्या के समय इन्दौर में ९२३२९ मनुष्य थे; अर्थात ५२४२७ पुरुष और ३९९०२ स्त्रियां। इनमें ६७०३३ हिन्दू, १९९८१ मुस-ल्लमान, २६७६ जैन, १८१३ एनिमिष्टिक, ४१५ क्रस्तान, २५६ सिक्ख, १५४ पारसी, और १ जू थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारत में २९ वां और मध्यभारत में दूसरा शहर है।

इंदौर शहर को मल्हार राव के मरने के पीछे अहिल्याबाई ने सन १७७० में बसाया। पहली राजधानी १८ मील दक्षिण-पूर्व थी, जो अब एक गांव बन गई है। सन १८१८ में हुल्कर की कचहरी वहां से इंदौर में आई।

इंदौर ऊंचे और स्वास्थ्यकर स्थान पर है। प्रधान सड़कों पर रोशनी होती है। शहर में पानी का नल, खैराती अस्पताल और कोड़ीलाना है। इंदौर में राजमहल, गोपालमन्दिर, टकशालघर, बड़ा स्कूल, बाजार, अस्पताल, रूई की मिल और लालबाग देखने योग्य हैं। महाराज-कालिज में दिक्षणी ब्राह्मण पढ़ते हैं। शहर के पास रेलवे के दूसरे बगल में अंगरेजी रेजीडेंसी है, जिसमें मध्यभारत के लिये गवर्नर जनरल के एजेंट रहते हैं। गवर्नर जनरल की देशी फौज की बारक और राजकुमार-कालिज रेजीडेंसी की सीमा के भीतर हैं। एतबारी सड़क पर एतबार के दिन बाजार लगता है, इसके अंत में पुराना जेल है। शहर के बीच एक छोटी नदी है। रेलवे स्टेशन और शहर के बीच में सड़क के बगल पर छोटा मुसाफिरखाना है, जिसमें मैं टिका था। इन्दौर से ४ मील पर गुलाबवाग में महाराज की बहुत छन्दर नई कोटी है।

राज़महरू—रेलवे स्टेशन से १ मील महाराज हुलकर के उत्तम महल हैं। आसमानी रंग से रंगा हुआ दो मंजिले से चौ मंजिले तक मोतीभवन है, जिसके फाटक की ७ मंजिली इमारत शहर के मत्येक भाग से देख पड़ती है। इसके समीप गुलाबी रंग से रंगा हुआ इन्द्रंभवन नामक नया महल है, जो मोतीभवन से अधिक छन्दर और बिस्तार में उससे बड़ा है।

राजमहल से दक्षिण महाराज की माता कुष्णाबाई का बनवाया हुआ बहुत सुन्दर गोपालमन्दिर, पश्चिम सराफे की सड़क और पास ही हल्दी बाजार है।

लालवाग निवास से २ मील दूर भारतवर्ष के वड़े वागों में से एक कालवाग है, जिसमें एक जगह फूल पौधों के हजारों गमले सजे हुए हैं और बहुतरे लर्टकाए हुए हैं तथा पत्थर की अनेक पुतलियों के शरीर से दमकले का पानी झरता है। वाग में खुन्दर रीति से सड़कें बनी हैं, हुझ लगे हैं और एक नाले के किनारे पर महाराज की वड़ी कोटो है, जिसमें कभी कभी महाराज के महमान टिकते हैं।

बाग के पास छोटी पशुशाला है, जिसमें कई एक बाघ देख पड़े।

इन्दौरराज्य —यह मध्यभारत के मालवा में मध्यभारत के लिये गव-र्नर जनरल के एजेंट के आधीन एक बड़ा देशी राज्य है। इन्दौर के राज्य का क्षेत्रफल ८४०० वर्गमील है। सन १८८१-८२ में इसकी मालगुजारी ७०७४ ४०० रुपये थी।

यह राज्य अलग अलग कई टुकड़ों में विभक्त है। जिस देश में मऊ छावनी है, उसके उत्तर ग्वालियर राज्य का हिस्सा; पूर्व देवास और धाड़ राज्य और निमार अंगरेजी जिला; दक्षिण वस्वई हाते में खान देश जिला और पश्चिम वश्वनी और धाड़ राज्य हैं। इस भाग की लस्वाई उत्तर से दक्षिण तक १२० मील और चौड़ाई ८२ मील है। इसके बीच होकर नर्मदा नदी बहती है। दूसरे बड़े हिस्से में, जो इन्दौर के उत्तर है, रामपुरा, भान-पुरा और चन्दवाड़ा कसबे हैं; तीसरे हिस्से में महीदपुर कसवा है।

राज्य के उत्तरी भाग में चम्बल नदी और उसकी सहायक नदियां और दिक्षण भाग में नर्भदा नदी बहती हैं। इन्दौर राज्य की भूमि उपजाऊ है। काली मही में कपास बहुत उत्पन्न होती है। मुखा, पोस्ता, कपास, तेलहन,

ऊख और तम्बाकू राज्य की प्रधान फसिल हैं।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इन्दौर राज्य के ३७३४ कसबे और गांवों में १०५४२३७ मनुष्य थे; अर्थात ५५९६१६ पुरुष और ४९४६२१ क्लियां। जिनमें ८९२६७५ हिन्दू, ८६३९० आदि निवासी, ७२७४७ मुंस-छमान १६४५ जैन, ६०१ सिक्ख, १२७ पारसी और ५२ क्रस्तान थे। हिन्दू जैन और सिक्ख मत पर चलने वालों में ९३७६० राजपूत, ७८७५० ब्राह्मण, ४५९४० बनिया, ४३७९५ चमार, ३६०५३ गूजर, २५४५१ कुनवी थे। आदि निवासियों में ५५५८२ भील, ७३१२ गोंक थे।

राज्य का सैनिक वल २१०० नियमशील और १२०० अनियमित सवार, ३१०० नियमशील और २१५० अनियमित पैदल, २४ तोपें और ३४० गोलं-दाज हैं। नियमशील फौज पश्चिमोत्तर और अवध के अंगरेजी देशों से भरती की जाती है। पंजाब के सिक्खों की कम्पनी भी रहती हैं।

सन १८८१-८२ में राज्य के १०७ स्कूलों में ४९४२ विद्यार्थी पढ़ते थे । छड़िकयों के पढ़ने के लिये ३ स्कूल थे, जिनमें से २ राजधानी में थे। इन्दौर, मांडेसर्क्षशौर रामपुरा में जिले की कचहरियां और जेलखाने हैं।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इन्दौर राज्य के इन्दौर शहर में ९२ ३२९, मऊ में ३१७७३ और रामपुरा में ११९३५ मनुष्य थे। इस राज्य में मांडू और मण्डलेश्वर भी प्रसिद्ध बस्ती हैं।

इतिहास-हुलकर बंश महाराष्ट्र है। पूना से २० कोस दक्षिण नीरा नदी के तीर पर होल नामक गांव में कुंदजी नामक भेड़िहर थे। महाराष्ट्र भाषा में 'कर' शब्द का अर्थ 'अधिवासी' अर्थात रहने बाला है। कुंदजी के पूर्वज होल नामक गांव में रहते थे, इसलिये वे हुलकर कहलाए।

सन १६९३ देखी में कुंदजी के पुत्र मरुहारराव का जन्म हुआ। वह जब बारही पांच वर्ष के थे, तब कुंदजी का देहांत हो गया। उनके मरते ही उनकी स्त्री अपने पुत्र को लेकर खानदेश के टालांदा गांव में अपने भाई नारायण जी के यह चली गई। नारायणजी किसी महाराष्ट्र सर्दार के घर कुछ सवारों के नायक थे। कुछ दिनों के उपरांत नारायणजी ने मल्हारराव को होनहार देख पशु वराने के काम से निष्टत्त कर अपने साथ सवारों में भरती कर लिया और पश्चात मल्हारराव से अपनी कन्या का बिवाह करके अपने धन संपत्ति का खामी भी उन्हें बना दिया।

सन १७२४ ई० में मरहारराव वाजीराव पेशवा की सेना में ५०० घोड़ सवारों के अफसर हुए। पेशवा ने सन १७२८ ई० में नम्मेंदा के उत्तर तट के १२ गांव मरहारराव को वे दिए और फिर सन १७३१ ई० में और ७० गांव दिए। उस समय माळवा में महाराष्ट्रों और मुसलमानों में लड़ाई चलती थी। उस युद्ध में मरहारराव ने ऐसा पराक्रम दिखाया कि पेशवा ने उनको माल-वा देश का पूर्ण अधिकार देदिया और मुसलमानों पर विजय पाने के उपरांत इन्दोर का राज्य उनको जागीर में प्रदान किया। सन १७३५ में मरहारराव नमेदा के उत्तर महाराष्ट्र फीजों के कमांडर नियत हुए।

मल्हारराव के एकमात्र पुत्र खंडेराव थे, जिनका विवाह सिंधिया बंश में जन्मी हुई अहिल्यावाई से हुआ, जिसके गर्भ से मालीराव पुत्र और मच्छा बाई कन्या उत्पन्न हुई। खंडेराव सन १७५४ ई० में भरतपुर और दीग के बीच कुंभेरीदुर्ग में जाटों के हाथ से मारे गए, उस समय अहिल्यावाई की अवस्था १८ वर्ष की थी। सन १७६५ में मल्हारराव का देहांत हो गया। वह मरते समय ७५ लाख रुपए मालगुजारी का राज्य और १५ किरोड़ रुपए नक्द छोड़ गए।

मल्हारराव के मरने पर उनके पोते मालीराव राजा हुए, परंतु ९ महीने के पश्चात् उन्माद रोग से वे मर गए; उसके पीछे उनकी माता भारत-प्रख्यात अहिल्यावाई ने संपूर्ण राज्य का भार अपने सिर लिया और तुकाजी राव को अपना सेनापति बनाया।

हुलकर वंश की पुरानी राजधानी नर्म्मदा के किनारे निमार के अंतर्गत महेश्वर में थी, जहां अहिल्याबाई की छत्तरी है। अहिल्याबाई ने १७७० में इन्दौर बसाया, पर सन १८१८ तक प्रधान कचहरी महेश्वर में थी। अहिल्याबाई खुळी कचहरी में बड़ी चातुरी से न्याय का काम करती थी। जो समय बंचता उसको वह पूजा, धर्म और दान में विताती थी। वह जैसीही शांत और दयाशीला थी, वेसीही राजनीति में कुशल थी। अहिल्याबाई स्वयं तीथों में जाकर दर्शन पूजन और दान किया करती थी। उसके बनाए हुए देवमन्दिर धर्मशाला आदि पारमार्थिक काम बदरीनाथ से कन्याकुमारी तक और सोमनाथ से जगन्नाथजी तक भारत में खितराए हुए हैं। अहिल्याबाई ३० वर्ष राज्य करने के उपरांत सन १७९५ ई० में परमधाम को गई।

अहिल्याबाई की मृत्यु के पश्चात तुकाजी सेनापित के पुत्र यग्नवन्तराव इन्दौर के राजसिंहांसन पर बैंटे, जिन्होंने अंगरेजी अफसर लार्ड छेक से परास्त होने के उपरांत बुन्देलखंड अंगरेजों को छोड़ दिया।

यशवन्तराव के मरने पर सन १८११ ईस्वी में उनकी माता तुलसीवाईं ने मल्हारराव नामक लड़के को गोद लेकर राजिसहांसन पर बैठाया। मल्हारराव सन १८१८ में हमीदपुर के संग्राम में अंगरेजों से परास्त हुए। उन्होंने अंगरेजी गवर्नमेंट से संधि करके राजपूताने की संपूर्ण दावी और बहुतेरे राज्य लोड़ दिए।

मल्हारराव जब बिनापुत्र के मर गए, तब उनकी माता ने मार्तेडराव छड़के को गोद छिया । उस समय मल्हाररोव के चचेरे भ्राता हरिराव अंगरेजों की सहायता से मार्वेडराव को निकाल कर इन्दौर के राजा हुए।

हरिराव सन १८४३ में जब मरगए, तब उनके पालकपुत्र खंडेराव हुलकर राज्य के सिहांसन पर बैठे। खंडेराव का देहांत सन १८४४ में हो गया, उसके पश्चात उनके पालकपुत्र तुकाजीराव राजा हुए, जो सन १८५२ में बालिंग हुए और १७ जून सन १८८६ में स्वर्ग को गए।

सन १८८६ की १२ जुलाई को इन्दौर के वर्तमान नरेश महाराज सर शिवाजी राव हुलकर वहादुर जी० सी० एस० आई को राजसिंहासन मिला, जिनकी अवस्था इस समय ३१ वर्ष की है।

इन्दौरं के राजाओं को अंगरेजी सर्कार की ओर से सन्मान के छिये २१ तोपों की सलामी मिलती है।

/ देवास ।

इन्दौर शहर से लगभग २० मील पूर्वोत्तर मध्यभारत के मालवा में बेशी राज्य की राजधानी देवास एक कसवा है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इसमें १५०६८ मनुष्य थे; अयीत १०२९४ हिन्दू, ३६८५ मुसल्लमान, ७८६ एनिमिष्टिक, २९९ जैन और ४ सिक्ख।

बेबास राज्य के दोनों राजा कसबे के भिन्न भिन्न महछों में रहते हैं। कसबे में एक अस्पताल, एक बंगला और एक पोष्ट आफिस है।

कसबे के पश्चिमोत्तर ३०० फीट ऊंची एक छोटी गावदुमी पहाड़ी पर चामुण्डा देवी का मन्दिर है। खड़ी पहाड़ी के बगल में काटकर गुफा-मन्दिर बना है, जिसमें देवी की बड़ी प्रतिमा है। उससे नीचे पहाड़ी के किनारे पर एक चौकोना तालाव और महादेव का छोटा मन्दिर है। बहुत लोग देवी के दर्शन के लिये पहाड़ी पर जाते हैं।

देवास राज्य — यह मध्यभारत के मैन्पुर एजेंसी के आधीन एक छोटा देशी राज्य है। राज्य की प्रधान पैदाबार गृङ्घा, अफीम, ऊख और कपास है। इस राज्य में अलग अलग दो राजा है, बड़े राजा किश्चनजी राव, जिनको बाबा साहेब कहते हैं; और छोठे राजा नारायणराब हैं, जिनको दादा साहेब कहते हैं। दोनों राजा पवार राजपूत एकही कुल के हैं।

दोनों राजाओं के राज्य (अर्थात देवास राज्य) का क्षेत्रफळ २८९ वर्ग-मीळ है। मनुष्य-संख्या सन १८८१ में १४२१६२ थीं; अर्थात ७५६४७ पुरुष और ६६५१५ स्त्रियां। जिनमें १२३३८७ हिन्दू, १३९०४ मुसळमान, ४७०९ आदि निवासी, १५८ जैन और ४ पारसी थे। हिन्दू और जैनों में १३५०० राजपूत, ५४९५ ब्राह्मण थे।

बड़े राजा का सैनिक वल ८७ सवार, लगभग ५०० पैदल और पुलिस और १० तोप। छोटे राजा का १२३ सवार और लगभग ५०० पैदल ओर पुलिस हैं। इतिहास—बाजीराव पेशवा ने कालूजी के पूर्व पुरुषे को यह राज्य देदिया था। कालूजी के दो लड़के तूकाजी और जीवाजी ने झगड़ा करके राज्य को बांट लिया। सन १८१८ में अगरेजी गवर्नमेंट ने दोनों राज्यों को संधिद्वारा अपनी रक्षा में लेलिया। दोनों राजाओं को १५ तोपों की सलामी मिलती है।

+मऊ छावनी।

इन्दौर से १३ मील दक्षिण (अजमेर से २२० मील) मऊ का स्टेशन है।
मऊ इन्दौर के राज्य में औवल दर्जे के जिले का सदर स्थान समुद्र के. जल से १९१९ फीट ऊपर एक कसबा है, जिससे १ मील दक्षिण-पूर्व बंबई-फौज के एक डिवीजन का सदर स्थान मऊ की अंगरेजी छावनी है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मऊ और छावनी में ३१७७३ मनुष्य थे; अर्थात १८३०० पुरुष और १३४७३ स्त्रियां। जिनमें १९९१० हिन्दू, ८२३३ मुसलमान, २९१५ छस्तान, ४१९ पारसी, १९२ जैन, ५३ यहूदी और ५१ सिक्ख थे।

मऊ में अंगरेजी और देशी फौजों के लिये प्रसिद्ध छावनी है। सन १८१८ ई॰ के मंदसोर के छल्डनामे के मुताबिक यहां सेमा रहती है।

/ मांदू ।

मऊ छावनी के स्टेशन से ३० मील दिक्षण-पश्चिम मालवा की पुरानी राजधानी मांडू ८ वर्गमील भूमि पर उजड़ा हुआ पड़ा है, जो सन ३१३ ईस्वी में कायम हुआ था। वहां रेल की सड़क नहीं गई है। जंगली देश देखने में अच्छा है।

मांडू की बस्तुओं में जामामसजिद प्रधान है, जिसको वहां की दूसरी इमारतों से कम नुकसानी पहुंची है। किला, पानीमहल, मालवा के राजा हुशंगगोरी का वड़ा मकवरा, जो माबुल का है और मालवा के राजा बाज-बहादुर का महल, जो एक समय उत्तम इमारत था, यह सब अब भी हीन दशा में वर्तमान हैं। किलेबंदियों को हुशंगगोरी ने वनवाया, जिसने पंदरहवीं सदी के आरंभ में राज्य किया था। सन १५२६ ई० में गुजरात के बहादुरबाह ने मांडूगढ़ को छेकर अपने राज्य में मिछा छिया। सन १५७० में बादबाह अकवर ने उसको जीता।

√धाद ।

मऊ से बड़ोदा जाने वाली सड़क पर मऊ से ३३ मील पश्चिम और मांडू से १० मील उत्तर मध्य-भारत के मालवा मदेश में देशी राज्य की राजधानी धाड़ है, जिसको पूर्व समय में धारापुर और धारानगर लोग कहते थे । मांडू से धाड़ तक पकी सड़क है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय धाड़ में १८४३० मनुष्य थे; अर्थात् १३९४८ हिन्दू, ३३९३ मुसलमान, ६१५ जैन, ४६० एनिमिष्टिक, ९ पारसी, ४ सिक्स और १ क्रस्तान।

धाइ का वर्तमान क़सवा मही की दीवार से घेरा हुआ १६ मील लम्वा और ६ मील चौड़ा है, जिसमें वहुतेरे छुन्दर मकान बने हैं। धाइ में २ छोटे और ८ बड़े तालाव, लाल पत्थर की बनी हुई २ बड़ी पुरानी मसजिद और क़सबे से बाहर मैदान से ४० फीट ऊपर लाल पत्थर से बना हुआ क़िला है, जिसकी दीवार २४ गोलाकार और २ चौकोने टावरों के साथ ३० फीट से ३५ फीट तक ऊंची है। किले का फाटक पश्चिम बगल पर है। धाइ-नरेश का महल किले में है।

धाड़ राज्य—मध्यभारत में भोपावर एजंसी के आधीन यह देशी राज्य है। इसके उत्तर स्तलाम राज्य; पूर्व बाइनगर और सिंधिया के राज्य में उज्जैन और दिकथन और इन्दौर राज्य; दक्षिण नर्मदा नदी और पश्चिम झवुआ का राज्य और सिंधिया राज्य का अमझेर ज़िला है। राज्य के दक्षिणी भाग के आर पार विध्य पर्वत गया है, जिसकी उंचाई नर्मदा घाटी से १६०० से १७०० फीट तक है।

धाइ राज्य का क्षेत्रफल सन १८८१ ई० में १७४० वर्गमील और मनुष्य-मंख्या १४९२४४ थी, जिनमें ११५०५१ हिन्दू, १८७९८ आदि निवासी १२२६९ मुसल्लमान, ३०८७ जैन, २७ कुस्तान और १२ पारसी थे। प्रधान जाति राजपूत, कुनवी, महाराष्ट्र, भीछ और भिछाछा है । राज्य से छगभग ७३५००० रुपये मालगुजारी आती है।

सैनिक वल २७५ सवार, लगभग ८०० पैदल और पुलिस, २ तोपें और २१ गोलन्दाज हैं। यहां के राजाओं को १५ तोपों की सलामी मिलती है।

इतिहास—धाड़ के वर्तमान नरेश प्रमार (पंवार) राजपूत हैं, जो अपने को छप्रसिद्ध उज्जैन के विक्रमादित्य के बंशधर कहते हैं। प्रमारों में विक्रमादित्य और राजा भोज का नाम बहुत प्रसिद्ध है। धाड़ अर्थात धारा नगरी विक्रमादित्य के राज्य में एक प्रसिद्ध नगरी थी। (उज्जैन के द्वतंत में देखो) ऐसा कहा जाता है कि राजा भोज ने अपनी राजधानी को उज्जैन से धाड़ में कृायम की थी। लगभग सन ५०० ई० में प्रमारों का बल घट गया। दूसरे राजपूत घराने की उठती होने पर बहुतेरे पंबार पूना में चले गए।

सन १३९८ में दिल्ली का गवर्नर दिलावरखां आया, जिसने धाइ के बड़े बड़े हिन्दू-मन्दिरों की सामग्री से मसजिदें बनवाईं। उसका पुत्र अपने बाप की जगह राजमतिनिधि होने पर अपनी राजधानी को धाइ से मांडू में ले गया। सन १५६७ से महाराष्ट्रों के रोब दाव होने के समय तक धाइ सुगल बादशाहत के आधीन था।

पंचार राजपूत, जो दक्षिण में जाकर बसे थे, उन्होंने महाराष्ट्र-मधान शिवाजी और उनके उत्तराधिकारियों की सहायता की। सन १७४९ ई० में बाजीराव पेश्चवा ने आनन्दराव पंचार को धाड़ देदिया। वर्तमान धाड़नरेश उन्होंके बंशधर हैं। मालवा में अंगरेजी विजय के पहिले २० वर्ष के दिमयान धाड़ राज्य में सिंधिया और हुलकर लूटपाट करते रहे। दुसरे आनन्दराव की विधवा मीनाबाई के साहस से राज्य बरवादी से बचाया गया। सन १८१९ ई० में यह राज्य अंगरेजी रक्षा में आया। मीनावाई ने रामचन्द्र पंचार को गोदिलिया था। रामचन्द्र के मरने के उपरांत उनके गोद लिए हुए पुत्र यश्चत राव उत्तराधिकारी हुए। सन १८५७ में यश्चतराव की मृत्यु होने पर उनके वैमालिक भ्राता वर्तमान धाड़नरेश महाराज सर आनन्दराव पंचार के० सी०

एस॰ आई॰, जिनकी अवस्था लगभग ४७ वर्ष की है, उत्तराधिकारी हुए। सनं १८५७ के बगावत के कारण अंगरेज़ी गवर्नमेंट ने राज्य को छीन लिया था, परन्तु पीछे वर्तमान महाराज को बैरिसया जिले के अतिरिक्त संपूर्ण राज्य लौटा दिया।

'गोपीचन्द भरतरी 'नामक पद्य में भाषा की छोटी पुस्तक है, उसमें लिखा है कि गोपीचन्द नामक राजा धारानगर में धर्म से राज्य करता था, जिसकी १६०० स्त्रियां थों। एक समय गोपीचन्द की माता मैनावती ने कहा कि है पुत्र काल सब को मार डालता है, वह तेरे सिर पर गाज रहा है, तू शीघ्र बैराग है। राजा ने माता से पूछा कि मै कैसे योगी वनू और किसको गुरू बनाउर । मैनावती ने कहा कि हे पुत्र ! तेरे मामा (भरतरी) के गुरू (गोरखनाथ) गुफा में रहते हैं, उनकी सेवा करने से तू अपर हो जायगा। राजा गोपीचन्द अंग में विभृति लगाकर राज्य को छोड़ बन में चला गया । रनिवास में रोदन पड़ गया । सरदार सब रोने छगे । गोपीचन्द की राजा भरतरी से भेंट हुई। भरतरी गोपीचन्द को गोरखनाथ के पास गुफा में छे गए। गोरखनाथ ने बरदान दिया कि गोपीचन्द तू अमर हो जायगा । उसके जपरांत गोपीचन्द ने गुरू गोरखनाथ से कहा कि आपकी आज्ञा हो तो अळख ज़गा कर अपने महल से भिक्षा मांग लांऊ। अब मैं अपनी १६०० स्त्रियों को माता के समान जानता हूं। गोपीचन्द ने गुरू की आज्ञा पाकर अंग में विभृति छगा, कांधे पर झोली रख, धारा नगर की देवढ़ी पर पहुंच कर अलख जगा-या। बांदी भिक्षा छेकर आई। योगी बोला कि महल में १६०० रानी मेरी माता है, उनसे तू भिक्षा भेता। लौडी ने जाकर रानी से कहा कि राजकुमार ड्योड़ी पर खड़े भिक्षा मांगते हैं । रानी रतनकुवरि योगी के पास गई । योगी कानों में मुद्रा, गर्छ में शेली, अंग में विभृति लगाए था। वह बोला कि मैंने माता का बचन मान सबका मोह त्याग दिया, अब मैं तुम्हारा पुत्र हूं, तुम मेरी माता हो । रानी ने राजा गोपीचन्द को कई पकार से समझाया, परन्तु उसने कुछ नहीं माना। गोपीचन्द ने रानी से कहा कि राज्य के समय

तुम मेरी पत्नी थीं और अब योग के समय तुम मेरी माता हो, तुम सुझको पुत्र कह कर सम्बोधन करो, तब मेरा योग सफल होगा । इसके अनन्तर गोपी-चन्द वहांसे चलकर माता मैनावती के समीप गया और उनसे आसीस छे बिदा हुआ, इत्यादि।

बीसवां अध्याय।

(मध्यदेश में) ओंकारनाथ।

्ओंकारनाथ।

मऊ छावनी से ३६ मींछ दक्षिण, थोड़ा पश्चिम (अजमेर से ३५६ मींछ) नर्म्मदा के किनारे पर मोरतका नामक रेल का स्टेशन हैं। मऊ से ३ मींछ आगे पातालपानी का स्टेशन मिलता है। वहां दहिनी ओर बड़ा झरना देख पड़ता है और वहांसे पहाड़ की चढ़ाई उतराई आरंभ होती है, जो १२ मींछ आगे चोरला स्टेशन तक रहती है। पातालपानी से कलाकंद स्टेशन तक ६ मील के भीतर गाड़ी जाने के लिये पहाड़ फोड़ कर ३ जगह खरंगी रास्ता बना है। कलाकंद से गाड़ी के आगे पीछे २ एंजिन जोड़े जाते हैं। नर्म्मदा के पुल को लांघ कर गाड़ी मोरतका स्टेशन पर पहुंचती है। पुल के ऊपर रेल की लाईन है, जिसके नीचे गाड़ी की सड़क है।

मोरतका से ७ मील मध्यदेश के निमार जिले में नम्मैदा के किनारे पर मान्धाता नामक टापू में ओंकारनाथ शिव का मन्दिर है। मोरतका से टापू तक बैलगाड़ी की खन्दर सड़क है। मार्ग में दो जगह पकी बावली मिलती हैं। अमरेश्वर के पास नाब पर चढ़ नम्मैदा नदी पार होकर टापू में जाना होता है नम्मीदा में नाब का भी रास्ता है, परंतु स्टेशन से नाव द्वारा ओंकारनाथ के पास जाने में पानी का चढ़ाव. मिलता है।

∤टापू के पास नम्मदा नदी गंभीर भाव से पश्चिम को बहती है। खड़ी

पहाड़ियों के बीच नदी बहुत गहरी है, जिसमें मछिलयां और घड़ियाल बहुत रहते हैं।

नमीदा के दिहने अर्थात उत्तर किनारे पर मान्धाता टापू है। स्कंदपुराण के नम्मैदार्खंड में लिखा है कि स्व्यंबंशी राजा मान्धाता ने वहां शिव का पूजन किया था, इसलिये उसका नाम मान्धाता टापू पड़ा। टापू का क्षेत्रफल १ वर्गमील से कुछ कम है। नम्मैदा की उत्तर शाखा कावेरी नदी कहलाती है, जिसके होने से यह टापू बना है । यह शाखा ओंकारपुरी से एक मीछ पूर्व नमीदा से निकलकर टापू की उत्तरी सीमा को बनाती हुई ओंकारजी से १६ मील पश्चिम जाकर फिर नम्मदा में मिलगई है।

्रटापू के उत्तर की भूमि कम कम से ढालूआं है, परंतु दक्षिण और पूर्व की भूमि चार पांच सौ फीट ऊंची और खड़ी है। टापू के सामने नम्मीदा के दक्षिण किनारे की भूमि भी खड़ी है, पर बहुत ऊंची नहीं है।

टापू के सिर पर ओंकारपुरी के राजा का मकान है, राजा भिछाला जाति के हैं। भरतिसंह चौहान ने सन ११६५ ईस्बी में नाथू भील से मान्धाता टापू को छीन लिया। मृत राजा उस भरतसिंह की २८ वीं पीढी में थे। नम्मंदा के दोनों किनारों के मन्दिरों का प्रवन्ध पुस्तहा पुस्त से इसी खांदान के हाय में है। ओंकारजी का सब खर्च यही चलाते हैं, और जो पूजा चढ़ती है जसको यही छेते हैं। नाथू के बंशधर अब तक टापू के उत्तर बगळ और इसके सिर पर के पुराने मन्दिरों के पुश्तैनी रक्षक हैं।

नर्मंदा के किनारे से ऊपर राजा के मकान तक पहाड़ी के ढालूएं बगल पर ओंकारपुरी का मनोहर टुप्र्य दृष्टिगोचर होता है, उसको शिवपुरी भी कहते हैं। उसमें छोटा वाजार है, यात्री मोदियों के मकान में टिकते हैं। सन १८८१ की मनुष्य-संख्या के समय मान्धाता टावू में ९३२ मनुष्य थे । पुरी से पश्चिम नमीदा के तट पर राजा की छत्तरी है। कार्तिक की पूर्णिमासी को ओंकारपुरी में स्नान दर्शन का मेला होता है, उस समय लगभग १५००० यात्री जाते हैं।

ओंकारनाथ का मन्दिर टापू के दक्षिण बगल पर नम्मैदा के दिहने ओंकार-

पुरी में हैं। ओंकारनाथ के वर्तमान मन्दिर को और उसके पास के कई छोटे मन्दिरों को पेशवा ने बनवाया था। ओंकारनाथ के निज मन्दिर का द्वार उत्तर ओर दोमुहें मन्दिर में हैं, जिसका द्वार पिश्यमओर जगमोहन में है। ओंकारेश्वर शिविलिंग अनगढ हैं, पास में पार्वती जी की मूर्ति है। मन्दिर में दिन रात दीप जलता है। दोमुहेंमन्दिर में रात्रि के समय ओंकारजी का पर्लंग बिछाया जाता है, इसके बगल की कोठरी में शुकरेवजी की मूर्ति और लिंगस्बरूप राजा मान्धाता हैं। जगमोहन के आगे एक बहुत पुराना और दूसरा सुन्दर मार्बुल का नया नन्दी हैं। ओंकारजी के मन्दिर से ऊपर इससे लगा हुआ ईश्वान कोन पर महाकालेश्वर नामक शिव का शिवरदार बड़ा मन्दिर है, जिसके आगे का जगमोहन ओंकारजी के आगे के दोमुहंमन्दिर के ठीक ऊपर है। महाकालेश्वर के मन्दिर के ऊपर के तह में भी एक शिवलिंग है।

ओंकारजी के मन्दिर के समीप अविमुक्तेश्वर, ज्वाछेश्वर, केदारेश्वर, मणपित, काछिका, आदि देवताओं के मन्दिर हैं और मन्दिर से नीचे नम्मदा का कोटितीर्थ नामक पक्का घाट है, जहां स्नान और तीर्थ भेंट होती हैं।

टापू के भीतरही ओंकारपुरी की छोटी और वड़ी दो परिक्रमा हैं, जो . ओंकारनाथ के मन्दिर से आरम्भ होकर वहां ही समाप्त होती हैं। परिक्रमा करते समय इस क्रम से प्रसिद्ध मन्दिर मिछते हैं—(१) तिछभांडेन्दर शिव का मन्दिर; (२) ऋणमुक्तेन्दर के पुराने ढव का बड़ा मन्दिर; (३) गौरी-सोम-नाथ के पुराने ढव का मन्दिर हैं, जिसके आगे अंगभंग किआ हुआ बहुत वड़ा १ नन्दी हैं। सोमनाथ बहुत वड़ा छिड़्न है। एक सौ गज दूर २० फीट छंचा एक स्तम्भ है। छोटी परिक्रमा करने वाछे यात्री वहांसे ओंकारपुरी को चछे आते हैं; (४) टापू के पूर्व किनार के पास वहांके सब मन्दिरों से वड़ा और पुरा- ना सिद्धेन्दर महादेव का मन्दिर हैं। मन्दिर के पास के आंगन के बगलों पर मोटे खम्भे छगे हुए दाछान हैं। खम्भों में देवताओं की तस्बीर खुदी हुई हैं। १० फीट छंचे चबूतरे पर मन्दिर खड़ा है। चबूतरे पर चारो ओर ५ फीट छंचे बहुतेरे हाथी परस्पर छड़ते हुए पत्थर के बने हैं। दो हाथियों के अतिरिक्त सब हाथियों के अंगभंग हुए हैं। आगे के फाटक पर अर्जुन और भीम की ६। ६ हाथ की विशाल मूर्तियां हैं। इससे आगे जाने पर नर्मदा के तीर खड़ी पहाड़ी मिलती है, जिससे कूदकर पूर्व समय में अनेक मनुष्य अपनी मुक्ति के लिये आत्महत्या करते थे। इस रीति को अंगरेजी सर्कार ने सन १८२४ इंस्की में वन्द कर दिया पूर्वकाल में मुसलमानों ने परिक्रमा के पास के पाय: सम्पूर्ण पुराने मन्दिरों के हिससे तोड़ दिए थे और बहुत दवमूर्तियों के अंगभंग कर दिए थे। परिक्रमा करते समय छोटे पुराने किले की दृटी फूटी दीवार देख पड़ती है।

जिस-जगह नर्स्मदा से कावेरी निकली है, वहां कई तबाह फाटक और एक बड़ी इमारत है, जिसपर पत्थर में विष्णु के २४ औतारों की मूर्तियां बनी हैं। इमारत में शिव की मूर्ति है, जिसके पास का शिलालेख सन १३४६ ई० के स्रतांबिक होता है। वहांसे कुल द्र किनारे के नीचे रावण-नाले में १८६ फीट ल्रम्बी पड़ी हुई एक मूर्ति है, जिसके १० हाथों में सोटे और खोपड़ियां इत्यादि, छाती पर एक विच्लू और दिहने बगल में एक मूसा है।

ओंकारपुरी के सन्मुल नम्मेंदा के बांए अर्थात दक्षिण किनारे एक टीछे एर ब्रह्मपुरी और उससे पश्चिम दूसरे टीछे पर विष्णुपुरी तीर्थ हैं। दोनों के पध्य में किपछिधारा नामक छोटी धारा भूमि की नाछा से आकर गोमुखी द्वारा नम्मेंदा में गिरती है, उस स्थान का नाम किपछा-संगम है। वर्तमान सदी में नर्मेदा के दक्षिण किनारे पर बहुत मन्दिर बने हैं।

ब्रह्मपुरी में अमरेश्वर शिव का विशाल मन्दिर है, जिसके सामने पत्थर के खम्भे लगा हुआ मंडप बना है। दुसरे मन्दिर में ब्रह्मेश्वर शिवर्लिंग और ब्रह्मा की मूर्ति है। विष्णु रो के बिष्णु भगवान के मन्दिर में बिष्णु, लक्ष्मी और पार्षदों की मूर्तियां हैं। एक छोटे मन्दिर में कपिल मुनि का चरण-चिन्ह और एक स्थान में कपिलेश्वर महादेव हैं। ब्रह्मपुरी और बिष्णुपुरी के मध्य में काशी-विश्वनाथ का नया मन्दिर है, जिसको ओंकारपुरी के मृत राजा ने बनवाया।

विष्णुपुरी से थोड़ा पश्चिम नर्म्मदा के किनारे जल के भीतर मार्कडेय शिला नामक चट्टान है, जिसपर यमयातना से छुटकारा पाने के लिये यात्री लोग छोटते हैं। उसके समीप पहाड़ी के बगल पर मार्कडेय ऋषि का छोटा मन्दिर है।

† मिं मोस्तका स्टेशन से ऑकारपुरी बैलगाड़ी पर गया और ओंकारपुरी

में २॥ रूपये के किराए की नाव पर सवार हो मोस्तका पहुंचा । नम्मंदा
की धारा तेज है, स्थान स्थान पर पानी की धारा पत्थरों के होकों पर टक्कर
खाती है और जगह जगह बेग से ऊंचे से नीचे गिरती है । नदी का जल निर्मल है, हूथ्य छन्दर है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—मत्स्यपुराण—(१८५ वां अध्याय) नर्मादा के तट पर ओंकार, किपछा-संगम और अमरेश महावेव पापों के नाश करने वाले हैं (१८८ वां अध्याय) जहां काबेरों और नर्मादा का संगम है कुबेर ने वहां दिब्प १०० वर्ष तप किया और शिव से बर पाकर वह यक्षों का राजा हुआ। जो पुरुष वहां स्नान करके शिवजी की पूजा करता है उसको अश्वमेध यज्ञ का फल पाप्त होता है और रुद्रलोक मिलता है। जो मनुष्य वहां अग्नि में भस्म होता है अथवा अनशन ब्रत धारण करता है उसको सर्वत्र जाने की गति हो जाती है।

अग्निपुराण—(११४ वां अध्याय) नम्मंदा और काबेरी का संगम पवित्र स्थान है।

कूर्मणुराण—(ब्राह्मी संहिता—उतरार्छ ३८ वां अध्याय) कावेरी और नम्मैदा के संगम में स्नान करने से रुद्रलोक में निवास होता है। वहां ब्रह्म-निर्मित ब्रह्मेश्वर शिवलिंग है। उस तीर्थ में स्नान करने से ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। देवीभागवत—(७ वां स्कंध-३८ वां अध्याय) अमरेश में चंडी का स्थान है। पद्मण्राण—(भूमिलंड-२२ वहां अध्याय) जहां सिख्रेश्वर, अमरेश्वर और ओंकारेश्वर शिवलिंग हैं, वहां नम्मैदा के दक्षिण तीर पर ब्रह्मा को जानो। (२३ वां अध्याय) सिख्रेश्वर के निकट वैदुर्व्यं नामक पर्वत है। (८७ वां अध्याय) च्यवन ऋषि पर्व्यंटन करते हुए अमरकंटन स्थान में नम्मैदा नदी के दक्षिण तट पर पहुंचे, जहां ओंकारेश्वर नामक महालिंग है।

ऋषीश्वर ने सिद्धनाथ महावेब का पूजन और ज्वालेश्वर का दर्शन करके

अपरेश्वर का दर्शन किया। फिर वह ब्रह्मेश्वर, कपिछेश्वर और मार्केडेश्वर का दर्शन करके औंकारनाथ के मुख्य स्थान पर आए।

शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता–३८ वां अध्याय) शिव के १२ ज्योतिर्छिग हैं,

जिनमें से एक अमरेश्वर में ओंकारिंग हैं।

(४६ वां अध्याय) एक समय विध्यपर्वत औंकार चक्र में पाधिव बनाकर पूजन करने छगा। कुछ समय के पश्चात् महेश्वर ने प्रकट होकर विध्य के इच्छा- नुसार बरदान दिया। इसके अनंतर जब विध्य और देवताओं ने शिवजी से प्रार्थनां को कि है महाराज आप इसी स्थान पर स्थित होयं, तब वहां दो छिंग अत्यन्न हुए; एक ओंकार यंत्र से ओंकारेश्वर और दूसरा पाधिव से अमरेश्वर। संपूर्ण देवगण छिंग का पूजन और स्तुति करके निज निज स्थान को चछे गए। जों मनुष्य इन छिंगों की पूजा करता है, उसका पुनः गर्भवास नहीं होता।

सीरपुराण—(६९ वां अध्याय) रेवा नदी के तीर में ज्वालेश्वर शिवलिंग के निकट करोड़ो तीर्थ विद्यमान हैं। वहां नदी में स्नान करके ज्वालेश्वर के दर्शन करने से २१ कुळ का उद्धार हो जाता है और शिवलोक मिलता है।

इक्कीसवां अध्याय।

(मध्यदेश में) खंडवा जंक्शन, बुरहानपुर, हरदा, सिउनी, नरसिंहपुर, जबलपुर, मंडला और अमरकंटक।

√खंडवा।

मोरतका स्टेशन से ३७ मील दक्षिण, थोड़ा पूर्व (अजमेर से ३९३ मील)
मध्यप्रदेश नम्मदा विभाग के निमार जिले का प्रधान स्थान (२१ अंश ५०
कला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश २३ कला पूर्व देशांतर में) खंडवा एक
कसवा है। यहां 'वंवे वरोदा सेंद्रल इंडियन 'के 'राजपूताना मालवा ' ब्रैंच

और 'ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे 'का जंक्ज्ञन है और फौजों के उहरने के लिये छावनी बनाई गई है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय खंडवा में १५५८९ मनुष्य थे अर्थात् ९९७३ हिन्दू, ४७९० मुसलमान, ४६८ क्रस्तान, २४६ जैन, ८१ पारसी, २७ यहूदी और ४ एनिमिष्टिक।

खंडवा कसवा वहुत पुराना है। कसवे से २ मीछ पूर्व सिविछ स्टेशन में कवहरी की कोठी, एक गोछ मकान और एक गिर्जी है।

निमार जिला—यह मध्यदेश का पश्चिमी जिल्ला है। इसके उत्तर और पश्चिम थाड़ राज्य और हुलकर का देश; दक्षिण खानदेश जिल्ला और पश्चिम बरार और पूर्व हुशंगावाद ज़िला है। जिले का क्षेत्रफल ३३४० वर्गमील है।

जिले का सदर मुकाम खंडवा में है। जिले में २ कसबे हैं । बुरहानपुर और खंडवा। सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बुरहानपुर में, जो तापती नदी की घाटी में है, ३२२५२ और खंडवा में, जो नम्मदा की घाटी में है, १५५८९ मनुष्य थे।

इस जिले में असीरगढ़ का किला और मानधाता टापू, जिसमें ओंकारजी का मन्दिर है, दिलवस्पी की प्रधान वस्तु हैं। जिले के सिंगाजी में आधिन महीने में मान्धाता टापू में कार्तिक की पूर्णिमा को मेळा होता है। निमार जिले के जंगलों वाघ, भालू, सकर, इत्यादि बनजंतु रहते हैं।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय निमार जिछे के र कसवे और इर गांवों में २३१४४१ मनुष्य थे; अर्थात १२१००८ पुरुष और ११०३३३ स्त्रियां। इनमें १९९२९० हिन्दू, २४४२६ मुसलमान, ५२८२ आदि निवासी, १२४७ जैन, ७८९ कुस्तान, १०१ कवीरपंथी, ९७ पारसी, ५४ सतनामी, ० ४६ यहूदी और ९ सिक्ख थे। हिन्दुओं में २१०३६ कुमी, १९३२० वलाई, १९२९५ राजपूत, ११८९८ ब्राह्मण थे। अनार्थ और हिन्दुमत पर चलने वाले कुल आदि निवासी ३९०४१ थे, अर्थात १६९३५ भील, ९५४१ कुरक, ८६४८ मिलाला, ३०३६ नहाल, ७६१ गोंड, ९९ कोल, और २१ दूसरे।

रेळवे—खंडवा से रेळवे-लाइन ३ ओर गई है,—

(१) खंडवा से पूर्वोत्तर जबलपुर तक 'ग्रेट इंडियन पेनिनस्ला रेलवे' उससे आगे 'इष्टइंडियन रेलवे'— मील-शिसद्ध स्टेशन-६३ हरदा। ८९ सिउनी। ११० इटारसी जंक्शन। १८३ गाङ्ग्बाङा जंक्शन। २११ नरसिंहपुर। २६३ जबलपुर । ३२० कटनी जंक्शन। ३५९ माइहर। ३८१ सतना। ४२९ मानिकपुर्]जंक्शन। ४८७ नैनी जंक्शन। ४९१ इळाहाबाद। इटारसी जंक्शन से उत्तर; कुछ पूर्व 'इंडियन मिडलेंड रेलवे',— मील-प्रसिद्ध स्टेशन-११ हुजंगाबाद। ५७ भोपाछ। ८५ सांची। ९० भिलसा। १४३ बीना जंक्शन।

१८२ छछितपुर । २३८ झांसी जंक्शन। ३७५ कान्पुर जंक्शन। कटनी जंक्शन से पूर्व-दक्षिण 'बंगाल नागपुर रेखवे' मोळ-प्रसिद्ध स्टेशन-१३५ पेंड्रारोड। १९८ बिछासपुर । मानिकपुर जंक्शन से पश्चिम, कुछ उत्तर 'इंडियन मिडळेंड रेळवे',— मील-प्रसिद्ध स्टेशन-१९ करवी। ६२ बांदा। १८१ झांसी जंक्शन। (२) खंडवा से दक्षिण-पश्चिम 'ग्रेट-इंडियन पेनिनस्ला रेलवे',— मील-प्रसिद्ध स्टेशन-३१ चांदनी। ४३ बुरहानपुर।

७७ भुसावल जंक्शन।

१४९ चालीस गांव।

१९१ मनमार जंक्शन।

१२१ पचौरा।

१७५ नंदगांव।

२३७ नासिक। २७८ कसारा। ३२० कल्यान जंक्शन। ३३२ थाना। ३४७ दादर। ३५३ बंबई विकटोरिया स्टेशन। भुसावल जंक्शन से पूर्व ओर,— मील-प्रसिद्ध स्टेशन-१६३ बडनेरा जंक्शन। (अमरावती के लिये) १९५ बरदा जंक्शन। २४४ नागपुर। मनमार जंक्शन से दक्षिण,— मोळ-प्रसिद्ध स्टेशन ९५ अहमदनगर।

१४६ घोंद जंक्शन।

(३) खंडवा से चित्तौरगढ़ तक पश्चिमोत्तर, उससे आगे उत्तर 'राजपूताना मालवा रेलवे',—
मोल-प्रसिद्ध स्टेशन—
३७ मोरतका।
७३ मऊ छावनी।
८६ इंदौर।
१११ फतेहाबाद जंक्श्वन ।
१८१ जावरा।
२४३ नीमच छावनी।
२७७ चित्तौरगढ़।
३७८ नसीराबाद छावनी।
३९३ अजमेर जंक्शन।

्र बुरहानपुर् ।

खंडवा से ४३ मील दक्षिण-पश्चिम बुरहानपुर का रेलवे स्टेशन है। बुर-हानपुर मध्य-प्रवेश नर्मदा विभाग के निमार जिले में स्टेशन से लगभग ३ मील दूर तापती नदी के उत्तर किनारे पर शहरपनाह के भीतर बसा है। सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बुरहानपुर में ३२२५२ मनुष्य थे; अर्थात १६५३२ पुरुष और १५७२० स्त्रियां। जिनमें २१४६४ हिन्दू, १०४८० मुसलमान, २९१ जैन, ९ यहूदी, ७ कुस्तान और १ पारसी थे। बुरहानपुर में अक्तबर का बनवाया हुआ लाल किला नामक ईंटे का एक महल और औरंगजेब की बनवाई हुई जामा मसजिद है। लाल किले में अब तक कई एक खन्दर कमरे और शाही विभव की दूसरी वस्तुओं की निशा-नियां हैं। बुरहानपुर में एक ऐसिस्टेंट कमिश्नर और तहसीलदार रहते हैं। कई और रेशमी बनाबट की खन्दर दस्तकारी होती है।

निमार जिले के दक्षिण बेतूल जिला और बेतूल जिले के पूर्व चिन्दवाड़ा जिला है। दोनों जिलों में कोई बड़ा कसबा नहीं है।

इतिहास—खांनदेश के फ़र्रुखी खांदान के नासिरखां ने सन १४०० ई० में बुरहानपुर को कायम किया और दौछताबाद के मिसद्ध शेख बुरहानुदीन के नाम से इसका नाम रक्खा। सन १६०० में वादशाह अकवर ने इस को मुगल राज्य में मिला लिया। सन १६३५ तक यह डेकान सूबे की राजधानी था; जब औरंगाबाद सूबे की राजधानी हुई, तब बुरहानपुर खानदेश के बड़े सूबे की राजधानी बनाया गया। सन १७२० में आसफजाह निजामल मुल्क ने डेकान के राज्य शासन को छीन लिया और खास करके बुरहानपुर में रहने लगा, जहां वह १७४८ में मर गया। सन १७३१ में १६ वर्गमील भूमि को घरती हुई शहर की दीवार बनाई गई, जिसमें ९ फाटक बने। सन १७६० में निजाम ने पेशवा को बुरहानपुर देदिया, सन १७७८ में पेशवा ने सिधिया को दिया और सन १८०३ में यह अंगरेजों को मिला।

× हरदा ।

खंडवा जंगशन से ६३ मील पूर्वोत्तर हरदा का स्टेशन है। हरदा मध्य-प्रदेश के हुशंगाबाद जिले में तहसीली का सदर स्थान (२२ अंश २१ कला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश ८ कला पूर्व देशांतर में) तिजारती कसवा है। वहांसे बहुत गल्ले और तेल के बीज दूसरे प्रदेशों में जाते हैं।

सन १८९१ की मनुष्य-संख्या के समय हरदा में १३५५६ मनुष्य थे; अर्थात १००१० हिन्दू, २७३६ मुसलमान, ४१४ मुस्तान, २९३ जैन, ६४ प्रारसी ३८ प्रनिमिष्टिक और १ अन्य ।

- सिउनी

हरदा से २६ मील (खंडवा से ८९ मील पूर्वीत्तर) सिउनी का स्टेशन है। सिउनी मध्यपदेश के जवलपुर विभाग में जिले का सदर स्थान (२२ अंश ५ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ३५ कला पूर्व वैशान्तर में) एक छोटा कसवा है।

सन १८९१ की मनुष्य,गणना के समय सिउनी में ११९७६ मनुष्य थे। सन १७७४ में महम्मद अमीनलां ने सिउनी को बसाया। इसमें बड़ा प्रविक्षक उध्यान, छन्दर बाजार और एक छन्दर सरोवर है। कचहरी के मकान, जेल, स्कूल, अस्पताल और पोष्ट आफिस, सरकारी इमारत हैं।

सिउनी जिल्छा—जिल्ले के उत्तर जवलपुर जिला; पूर्व मंडला और बालाघाट जिल्ले; दक्षिण बालाघाट, नागपुर और भंडारा लिल्ले और पश्चिम नरसिंहपुर और खिंदवाड़ा ज़िल्ले हैं। जिल्ले का क्षेत्रफल ३२४७ वर्गमील है।

सतपुड़ा की जंबी भूमि के एक हिस्से पर पहाड़ियां हैं। घाटियां चौड़ी और नंगी हैं। जिले के दक्षिणी भाग में नोकदार बहुत पहाड़ियां हैं। जिले की प्रधान नदी बेन गंगा है, जो नागपुर और जबलपुर जाने वाली सड़क से ने मील पूर्व कुराईघाट के निकट निकली है और थोड़ा दक्षिण जाकर सिखनी और बालाघाट जिलों की सीमा बनती है। जिले में कई एक जगह लोहे की खान हैं, परंतु केवल एक जगह लोहा बनाया जाता है। जिले की छोटी निद्यों में से बहुतेरी में सोना मिलता है। कभी कभी अपिद निवासी कोमों में से मुंड़िया लोग, जिनको इस जिले के लोग सोनगिरिया कहते हैं, नदी की बालू धोकर सोना निकालते हैं।

सिउनी के निकट मुंडार में बेनगंगा के निकास के पास और छरइखा में व बेनगंगा और हीरी नदी के संगम के निकट मेला होता है। और छप्रे में मवेसियों का एक मेला होता है, जिसमें लगभग ७० हजार पशु एकत्र होते हैं।

सन १८८१ में एक कसवे और १४६२ गांवों में ३३४७३३ मनुष्य थे; अर्थात १७९७०५ हिन्दू, १३९४४४ आदि निवासी, १३४४२ मुसळमान, १४०८ जैन, ५९८ कबीरवंथी, ९९ कुस्तान, २५ सिक्ख, ९ सतनामी और ३ पारसी । हिन्दुओं में अहीर, मेहरा और पोनवार अधिक हैं । छगभग १ छाख ५० हजार गोंड़ हैं, जो हिन्दू और आदि निवासी दोनों में गिने गए थे।

् नरसिंहपुर्।

सिउनी से २१ मीछ (खंडवा से ११० मीछ) पूर्वोत्तर इटारसी में रेखवे का जंक्यन है। इटारसी से १५ मीछ पूर्वोत्तर बगरा स्टेशन के पास पहाड़ के छरंगी रास्ते होकर रेख निकली है। इटारसी से ७३ मीछ पर नरसिंहपुर जिले में गांडरवाड़ा जंक्यन है, जहांसे १२ मीछ दक्षिण-पूर्व रेखवे की एक शाला मोपानी के निकट कोयले की खान को गई है।

• गाइरवाड़ा से २८ मील (खंडवा से २११ मील पूर्वोत्तर) नरसिंहपुर का रेलवे स्टेशन है, नरसिंहपुर मध्यप्रदेश के नम्मदा विभाग में जिले का सदर स्थान सिंग्री नदी के पास (२२ अंश ५६ कला ३५ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश १४ कला ४५ विकला पूर्व देशांतर में) है। पहिले इसका नाम गड़ारिया खेड़ा था, पश्चात छोटा गाड़र वाड़ा इसका नाम पड़ा। नरसिंह जी के मन्दिर के बनने के पश्चात इसका नाम नरसिंहपुर हुआ।

चहां प्रधान सरकारी इमारतों में जिले की कवहरियां, दिपटी कलक्टर और पुलिस छपरिंटेडेंट के आफिस, १ जेल, १ अस्पताल, एक धर्मशाला और कई एक स्कूल हैं और रुई और ग़ल्ले की तिजारत होती हैं। √नर्रासहपुर में नर्रासहजी का विशाल मन्दिर बना है।

+ नरिसंहपुर जिला-इसके उत्तर भोपाल राज्य और सागर, दमोह और जबलपुर जिले; पूर्व सिउनी जिला; दिशण छिंदवाड़ा जिला; और पश्चिम दूधी नदी, जो हुसंगाबाद जिले से इसको अलग करती है। जिले का क्षेत्रफल

१९१६ वर्गमील है। इस जिले में प्रायः सब गांवों के निकट आम के कुंज और पुराने पीपल और बट के द्वक्ष हैं।

सन १८८१ में जिले के २ कसवे और ९८५ गांवों में ३६५१७३ मनुष्य थे, अर्थात ३०५१३७ हिन्दू, ४३९१० आदि निवासी, १३४२५ मुसलमान, २१०७ जैन, ४११ कवीरपन्थी, १०३ क्रस्तान, १४ सतनामी और ३ पारसी। हिन्दुओं में ३३१९७ लोधी, १२६६९६ ब्राह्मण थे, दूसरी जातियां इनसे कम थीं। संपूर्ण आदि निवासी ६३७३१ थे; अर्थात ४६६४५ गोंड, १२९०३ कबरा और ११८३ दूसरे। इनमें से बहुतेरे हिन्दू में गिने गए हैं।

जबलपुर्।

नरसिंहपुर से ५२ मीछ (खंडवा जक्शन से २६३ मीछ पूर्वेतर और नयनी जंक्शन से २२४ मीछ पश्चिम दक्षिण) जवछपुर का रेखवे स्टेशन है। जवछपुर मध्यमदेश में किस्मत और जिले का सदर स्थान (२३ अंश ११ कछा उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ५९ कछा पूर्व देशान्तर में) नम्मंदा नदी से ४ भीछ दूर एक शहर है, जो पहछे नागपुर के भोसले के अधिकार में था. और अब अंगरेजी राज्य में है।

सन १८९१ की जन संख्या के समय जवलपुर में ८४४८१ मनुष्य थे, अर्थात ४४९२३ पुरुष और ३९५५८ स्लियां। जिनमें ६०९६४ हिन्दू, १९४४० मुसलमान, २१७३ क्रस्तान, ११२९ जैन, ५९५ एनिमिष्टक ८५ बौद्ध ६४ पारसी, ७ अन्य और ४ यहूदी। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ३२ वां और मध्यमदेश में दूसरा शहर है।

स्टेशन के पास एक सराय, जबळपुर के निकट कोयळे की खान और शहर से ४ मील दूर नम्मंदा नदी का घाट है। शहर में व्यापार बड़ा होता. है। सिउनी; दमोह और मंडला पड़ोस के जिलो में जबलपुर से बहुत वस्तु जाती हैं। शहर में एक उत्तम तालाव है, जिसके चारों ओर बहुतेरे मन्दिर बने हैं। शहर और छावनी के बीच में उमती नामक एक छोटी सी नदी है। दुर्ग की सेना में एक युरोपियन पैदल रेजीमेंट, ६ कम्पनी वेशी पैदल का एक रेजीमेंट और वेशी सवार का एक भाग है।

मदन महळं—ज्ञहर से मदन महल तक ४ मील पक्षी सड़क है। प्रायः ४०० वर्ष हुए कि एक गोंड़ राजा ने एक फकीर के सन्मान के लिये एक पहाड़ी पर इसको बनवाया। महल के पास बहुतेरे छोटे कुंड हैं।

मार्बुल की पहाडी-जबलपुर शहर से ११ मीछ दक्षिण-पश्चिम और मीरगंज के रेलवे स्टेशन से ५ मील दूर मार्बुल की पहाड़ी है। शहर से तांगा जाने छायंक सड़क गईं है। ९६ मील जाने पर वाएं फिर कर सड़क की शाखा से वहां पंहुंचना होता है। नाव पर सवार हो पहाड़ी के पास पहुंचना होता है। वहां भ्वेत मार्बुछ की खड़ी पहाड़ी है, जो तोड़ने पर चमकीछी देख पड़ती है। नए बंगळे के पास, जहां कई श्वेत मन्दिर हैं, ८० फीट ऊंची खड़ी पहाड़ी है। वहां पानी १५० फीट गहरा है। एक मील आगे सरहद के चट्टान धार को रोकते हैं। नाव ख्ले मौसिम में जा नहीं सकती। वर्षी काल में नम्मदा नदी ३० फीट उठती है, उस समय धार बहुत तेज हो जाती है। । मील वाएं माधोराव पेशवा का खुदवाया हुआ वेवनागरी अक्षर का छेख है। है मील षाएं हाथीपांव नामक आश्रय्यं चट्टान है। चट्टानों की उंचाई किसी जगह ९० फीट से अधिक नहीं है। सरहद के चट्टानों के र मील आगे धुंआधार नामक एक वड़ा झरना है। वंगळे से ८० गज दूर एक गावदुमी पहाड़ी पर एक मन्दिर है। एक वगल से स्थान तक १०७ सी दियां गई है। यहां पत्थर खोद कर बहुतेरी देवमूर्तियां वनी हुई हैं, जिनमें से अधिक शिव की हैं। अनेक मूर्तियों कों मुसलमानों ने तोड़ दिया था। यहां कार्तिक में एक स्नान दर्शन का मेळा होता है। भेरा घाट मीरगंज के रेळवे स्टेशन से ३ मीळ है।

.जबलपुर जिला—मध्य देश में एक किस्मत और जिले का सदर स्थान जबलपुर है। जबलपुर जिले के उत्तर पन्ना और माईहर राज्य; पूर्व रीवां राज्य; दक्षिण मंडला, सिउनी और नरसिंहपुर के अंगरेजी जिले और पश्चिम दमोह जिला है। जिले का क्षत्रफल ३९१८ वर्गमील है। जबलपुर जिले में माहा नदी है, जो मंडला जिले में निकली है, उत्तर जाकर विजय राघवगढ़ के पास पूर्व को झुकती है और आग जाकर सोन नदी
में गिरती है। जवलपुर और दमोह जिलों के बीच में गुरया नदी ओर पन्ना
राज्य और जवलपुर जिले के बीच में पटना नदी हैं। जिले में पूर्व से पश्चिम
को ७० मील नर्मदा नदी बहती है। जिले में बाग की पैदाबार बड़ी है। जोली,
अगरिया, सखली और पतापपुर में लोहे की बड़ी खान हैं। सन १८८२ में
जिले की ४८ खानों में काम होता था। रामघाट, भेराघाट और सिगापुर के
पास कोयला निकलता है। इस जिले में मरबाड़ा और सिहोस्त दो छोटे
कसने हैं।

सन १८८१ की जन संख्या के समय जबलपुर जिले में ६८७२३३ मनुष्य थे। अर्थात ५६५३६१ हिन्दू, ६७८०४ आदि निवासी, ३४७९० मुसलमान, ५५१५ बौद्ध और जैन, १४२२ युरोपियन आदि, ५१ पारसी और ३३७ दूसरे। हिन्दू और जैनों में ६०४२० ब्राह्मण, ४५७६० लोघी, ३४५१३ कुमी, ३२९११ अहीर, ३२९०५ चमार थे। आदि निवासी जातियों में, जो हिन्दू और आदि निवासी दोनों में गिने गए थे, ९८३८४ गोंड, ४६३८३ कोल, और शेष में भरेआ, बैगा इत्यादि थे।

इतिहास—ग्यारहवीं और वारहवीं सदियों में जवळपुर का जिला हैहय वंश के राजाओं के अधीन था। सोलहवीं सदी में गढ़मंडला के गोंड राजा संग्रानी शा ने ५२ जिलों के ऊपर अपने वल को फैलाया, जिसमें जवलपुर का वर्तमान जिला भी था। उसके पोते भेमनारायण के वालकपन में गोंड रानी हुगीवती ने राजकाज का निर्वाह किया। उस समय खबेदार आसफ़ खांने राज्य पर आक्रमण किया। सिंगौरगढ़ की गढ़ी के नीचे युद्ध हुआ। आसफ क्वां का विजय हुआ। रानी दुगीवती मर गई। पहिले आसफ खां गढ़ का खांका विजय हुआ। रानी दुगीवती मर गई। पहिले आसफ खां गढ़ का खांत्र वालिक बना, परंतु पीछे उसको छोड़ दिया। सन १७८१ तक यह गढ़मंडला के राजाओं के आधीन रहा। उस वर्ष सागर के शासक ने गढ़ मंडला के राजाओं के आधीन रहा। उस वर्ष सागर के शासक ने गढ़ मंडला के राजाओं तो परास्त किया। सन १७९५ में पेशवा ने मंडला और

नर्भदा घाटी को नागपुर के भोंसले को दिया। सन १८१७ में अंगरेजी गवर्नमेंट ने भोंसले से इसको ले लिया। सन १८६१ में नागपुर के चीफ कमिश्नर के आधीन जवलपुर एक ज़िला कायम हुआ।

🗸 मंडला ।

जबलपुर शहर से लगभग ५० मील दक्षिण-पूर्व मंडला कसबे को एक सड़क गई है। मंडला मध्यप्रदेश जबलपुर विभाग में जिले का सदर स्थान (२२ अंश ३५ कला ६ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश २४ कला पूर्व देशांतर में) है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मंडला में ४७३२ मनुष्य थे; अर्थात ३७२६ हिन्दू, ७४४ मुसलमान, १५६ आदि निवासी, ८३ क्रस्तान और २३ कबीरपंथी।

क़सबे के ३ बगलों में नम्मैदा नदी बहती है, जिसके किनारे पर १७ देव-मन्दिर बने हैं, जो सन १६८० से १८५८ तक के बने हुए हैं।

मंडला जिला—इसके पूर्वोत्तर रीवा राज्य; दक्षिण-पूर्व विलासपुर -जिला; दक्षिण पश्चिम बालाघाट जिला और पश्चिम सिउनी और जबलपुर जिले हैं। जिले का क्षेत्रफल ४७१९ वर्गमील है।

सन १८८१ की पनुष्य-गणना के समय इस जिले के १७५१ कसवे और गावों में ३०१७६० पनुष्य थे; अर्थात १६७७४६ आदि निवासी, जो अपने असली पत पर हैं, १२३७९३ हिन्दू, ५६८६ कबीरपन्थी, ४०४८ मुसलमान, २८४ जैन, १२७ कुस्तान और ७६ सतनामी।

. कुल आदि निवासी, जो अपने असली मत पर हैं, अथवा हिन्दू में गिने जाते हैं, १८४५४८ थे, जिनमें १६४९६९ गोंड, ११४९३ बैगा, ७३०८ कोल, ७७८ दूसरे कोलारियन कोम थे। मध्यदेश के किसी जिले में इतने आदि निवासी या पहाड़ी कोम नहीं है। हिन्दू और जैन आदि में २१५२० अहीर, ११९०८ पंका, ९६८७ मेहरा, ६७१२ धीमर, ६१४९ ब्राह्मण, ५५२० राजपूत थे। नर्म्मंदा नदी जिले के मध्य होकर बहती है, जिसकी सहायक अनेक छोटी निदयां हैं। ३००० से अधिक आबादी की वस्ती केवल मंडला है। जिले में मामूली कपड़े की विनाई के अतिरिक्त कोई दस्तकारी नहीं है। मैकल पहाड़ियों में लोहे की ओर बहुत हैं। रामगढ़ के पास खानों में वेश-कीमत धातु निकलती हैं।

मंडला जिले में हृदयनगर एक गांव है, जिसको सन १६४४ ई० में राजा हृदयशाह ने बसाया था। यहां वर्ष में बंजर नदी के किनारे पर एक मेला होता है। मेले में बहुत क्रय विकय होता है।

इतिहास—गढ़ मंडला खांदान के ५७ वें राजा नरेंद्र शा ने सन १६८० में मंडला को राज्य शाशन की बैठक बनाई। उसने नदी के पास एक किला और उसके भीतर एक बड़ा महल बनवाया सन १७३९ में वालाजी वाजीराव पेशवा ने मंडला को लेलिया। महाराष्ट्रों ने दीवार और फाटकों से कसबे को मज़बूत किया। सन १८१८ में यह अंगरेजी गवर्नमेंट के हाथ में आया।

🗸 अमरकंटक ।

जबलपुर से ५७ मील पूर्वे त्तर मध्यप्रदेश में कटनी जंक्शन और कटनी से १३५ मील दक्षिण पूर्व मध्यप्रदेश में पेंड्रारोड रेलवे का स्टेशन हैं; जिससे करीब ७ मील दूर रींवा राज्य में विंध्याचल के अमरकंटक शिखर पर पूर्व समय के बहुतेरे देवमन्दिर हैं, जिनमें अमरनाथ महादेव और नम्मंदा देवी के स्थान प्रधान हैं। उसी शिखर से नम्मंदा नदी निकली है और सोन नदी का उत्पत्ति स्थान भी वही है। यह शिखर समुद्र के जल से लगभग ३४०० फीट ऊंचा छन्दर बुक्त लताओं से परिपूर्ण है। इससे अनेक छन्दर झरने निकल हैं। शिंवा दर्वार की ओर से मन्दिरों के भोगराग का बन्दोवस्त रहता है। चारो ओर जंगल और वीरान देश है। इस निर्जन देश में पंडों की एक नई छोटी बस्ती है। यह पुराना तीर्थ बहुत दिनों से अमसिद्ध हो गया है। यात्री कम जाते हैं। नम्मंदा नदी चिपटे शिखर पर प्रथम एक कुंड में गिरती है और वहांसे ३ मील बहने के छपरान्त अमर कंटक के छेटू के किदारे पहुंच कर खड़ी पहाड़ी

पर गिरती है। छोग वहां की धारा को कपिछ्धारा कहते हैं। मार्ग में अनेक

झरने नम्मेंदा में गिरते हैं। यह नदी अमरकंटक से कई सौ फीट नीचे उतर कर मध्यदेश में मंडला पहाड़ी के चारो ओर घूमकर रामनगर की उजाड़ दीवारों के नीचे आई है। इस प्रकार से एक सौ मील दौड़ने के उपरान्त यह मेंदान में पहुंचती है। और आर्यावर्त और दक्षिण प्रदेश के मध्य में अपने निकास के स्थान से लगभग ७५० मील पश्चिम बहने के उपरान्त बम्बई हाते के भड़ीच के नीचे खंभात की खाड़ी में गिरती है। जलपुर, हुशंगाबाद, इंडिया, ओंकारपुरी (मांधाता टापू) और भडौच प्रसिद्ध नगर इसके किनारे हैं। बहुतेरे यात्री नम्मेंदा के निकास के स्थान से और मुहाने तक जाकर इस पवित्र नदी की, परिक्रमा करते हैं।

े. संक्षिप्त प्राचीन कथा-जंखस्मृति—(१४ वां अध्याय) अमरकंटक और नम्मैदा का दान अनंत फल देता है।

महाभारत—(वनपर्ब्व ८४ वां अध्याय) जहां सोन और नम्मैदा निदयां अलग हुई हैं, वहां वांसों के झुंड के स्पर्श करने से अश्वमेध यज्ञ का फल्ड होता है।

(८९ वां अध्याय) पश्चिम दिशा में पश्चिम वहने वालो नम्मैदा नदी है। ब्रह्मा के सहित संपूर्ण देवता नम्मैदा के पवित्र जल में स्नान करने आते हैं।

(अनुशासन पर्व्ब-२५ वां अध्याय) नम्मैदा में स्नान करने से मनुष्य राजपुत्र होता है।

मत्स्यपुराण — (१८५ वां अध्याय) कनखळ में गंगा और कुरूक्षेत्र में सरस्वती प्रधान हैं। नम्मीदां नदी ग्राम अथवा वन में सर्वत्र उत्तम हैं। सरस्वती का जळ ५ दिनों में, यसना जळ ७ दिनों में और गंगा जळ तत्काळही पवित्र करता है, परन्तु नम्मीदा के दर्शन मात्र से जीव पवित्र हो जाता है। किलंग देश- के अमरकंटक वन में नम्मीदा नदी मनोहर और रमणीय है। जहां पर्वत के समीप रुद्रों को कोटि है, वहां नम्मीदा में स्नान कर जो रुद्रों का पूजन करता कि, उस पर ज्ञिव पसन्न होते हैं। वहां जो मनुष्य यवों से देवताओं और तिलों से पितरों का तर्पण करते हैं, उनके ७ पीड़ी के पुरुष स्वर्ग में वास करते हैं।

नर्मादा नदी की लम्बाई १०० योजन और चौड़ाई २ योजन है। उसके चारो ओर ६० करोड़ और ६० हजार तीर्थ हैं। जो पुरुष जितेंद्रिय रह कर उस तीर्थ पर प्राणों को त्यागता है, वह देवताओं के दिन्य १०० वर्ष तक स्वर्ग में बास करता है।

कूर्मपुराण—(ब्राह्मी संहिता—उत्तरार्छ—३८ वां अध्याथ) नर्मादा नदी रुद्र की वेह से निकली है, जो चराचर सर्व भूतों को उद्धार कर सकती है। कनस्वल में गंगा और कुरुक्षेत्र में सरस्वती नदी अति पवित्र है, परन्तु नर्भादा प्राम वा वन में सर्वत्र अति पवित्र है। सरस्वती का जल ३ दिन में, यम्रना का जल ७ दिनों में और गंगा जल तत्कालही पवित्र करता है, किन्तु दर्शन मात्रही से नर्मादा का जल पवित्र कर देता है। किलिंग वेश के पिश्रमार्ख में अमरकंटक पर्वत में १०० योजन से कुल अधिक लम्बी और २ योजन चौड़ी त्रिलोक में परम पवित्र नर्मादा नदी हैं। अमरकंटक पर्वत पर ६० कोटि और ६० सहस्र देवताओं का निवास है। उस पर्वत पर जितेन्द्रिय होकर निवास करने से मनुष्य सहस्र वर्ष पर्यंत स्वर्ग में खुल से निवास कर पृथ्वी में फिर आकर चक्रवर्ती राजा होता है और वहां मृत्यु होने से मनुष्य १०० वर्ष पर्यंत रुद्रलोक में निवास करता है। अमरकंटक पर्वत की मदक्षिणा करने से पुण्डरीक यज्ञ करने का फल मिलता है। (४० वां अध्याय) समुद्र और नर्म्मदा के संगम पर स्नान आदि कर्म करने से ३ अश्वमेध यज्ञ करने का फल मिलता है। एरंडी और नर्म्मदा के संगम पर स्नान आदि कर्म करने से बह्महत्यादि पापों का विनाश होता है।

अग्निपुराण—(११४ वां अध्याय) गंगा के जल में स्नान करने से जीव तत्कालही पिवत्र होता है, परन्तु नर्म्मदा जल के दर्शन मात्रही से जीव का पातक दूर हो जाता है। अमरकंटक में पर्यत के चारो ओर ६० कोटि और ६० सहस्र तीथों का निवास है।

गरुड़पुराण—(पूर्वीर्छ-८१ वां अध्याय) अमरकंटक उत्तम तीर्थ है। शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता-३८ वां अध्याय) नर्म्मदा नदी शिवव का रूप है, इसके तट पर असंख्य शिविष्ठिंग स्थित हैं।

४३२. भारत-भ्रमण, प्रथम खण्ड, इक्षीसवां अध्याय।

ृपद्मपुराण—(सृष्टिखंड-९ वां अध्याय) पितरों की कन्या नम्मैदा नदी भरतखंड में बहती हुई पश्चिम-समुद्र में जा मिली है।

(भृमित्वंड-२० वां अध्याय) सोमशम्मी नर्म्मदा के तट पर किपछा-संगम पुण्य तीर्थ में स्नान करके तप करने छगा। (२१ वां अध्याय) जब विष्णु भगवान उसको वरदान देकर चले गए, तब वह नर्म्मदा के तीर पुण्यदायक तीर्थ में, जिसका नाम अमरकंटक है, दौनपुण्य करने छगा।

मेरी प्रथम यात्रा समाप्त हुई। मैं नयनी जंक्शन और बक्सर होता हुआ अपने गृह चरजपुरा को छौंट आया और मेरे अनुज बाबू तपसीनारायण सुगृलसराय जंक्शन से बनारस गए।

> भारत-भ्रमण प्रथम खण्ड समाप्त

